देशी शब्दकोश

वाचना-प्रमुख
आचार्य तुलसी

प्रधान सम्पादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक
मुनि दुलहराज

सहयोगी

साध्वी अशोकश्री
साध्वी सिद्धप्रज्ञा
साध्वी विमलप्रज्ञा
समणी कुसुमप्रज्ञा

जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं—३४१ ३०६

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया

प्रकाशन वर्ष :
विक्रम सम्वत् २०४५
मार्च १९८८

पृष्ठांक : ५७०+६८

मूल्य : १००-०० रुपये
१२ डालर (U.S.A.)

मुद्रक :
मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

DEŚĪ ŚABDAKOŚA

Vācanā Pramukha
ĀCĀRYA TULSĪ

Chief Editor
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Editor
Muni Dulaharāj

Assistants

Sādhvī Aśokaśrī
Sādhvī Vimalprajñā
Sādhvī Siddhaprajñā
Samaṇī Kusumprajñā

JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI.
Ladnun—341 306

Managing Editor :
Shrichand Rampuria,

Year of Publication :
Vikram Saṁvat 2045
March 1988

Pages : **570+68**

Price : **Rs. 100**
$ 12

Printers :
JAIN VISHVA BHARATI PRESS,
[Established through the financial **co-operation of**
Mitra Parishad, Calcutta)
Ladnun (Rajasthan)

आशीर्वचन

शब्दकोश का निर्माण जितना कठिन है, उसका उपयोग उतना ही महत्वपूर्ण है। सस्कृत, प्राकृत, अग्रेजी, हिन्दी, राजस्थानी आदि सभी भाषाओं के शब्दकोश उपलब्ध है। आचार्य हेमचन्द्र ने सस्कृत शब्दकोश अभिधान-चिन्तामणि के साथ देशी नाममाला की भी रचना की। इसके अतिरिक्त देशी शब्दो का कोई स्वतत्र कोश प्राप्त नही है। आगम और उसके व्याख्या साहित्य मे प्राकृत के साथ देशी शब्दो का प्रचुर मात्रा मे प्रयोग मिलता हैं। उस साहित्य के देशी शब्दो का चयन करना और उनके प्रामाणिक अर्थ का निर्णय करना काफी दुरूह काम था। पर हमारे आगम सम्पादन कार्य मे संलग्न साधु-साध्वियां कठिन काम करने के अभ्यस्त हो चुके है। इस काम के लिए हमने विशेप रूप से साध्वियो को निर्देश दिया। लगभग पाच वर्ष के वाद उनके श्रम ने एक रूप लिया और 'देशी शब्दकोश' सुसम्पादित होकर सामने आ गया। इस कार्य मे प्रवृत्त साध्वी अशोकश्री, विमलप्रज्ञा, और सिद्धप्रज्ञा तथा समणी कुसुमप्रज्ञा के श्रम को संवारने मे मुनि दुलहराज ने पूरा समय लगाया। वह इस काम के साथ नही जुडता तो संभव है इसकी निष्पत्ति मे कुछ और अवरोध आ जाता। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे विनीत साधु-साध्विया पूरे मनोयोग के साथ साहित्य-सेवा अथवा धर्म-शासन की सेवा मे सलग्न है। उनकी कार्यजाशक्ति निरन्तर विकसित होती रहे, इस शुभाशंसा के साथ मैं इस ग्रन्थ की समीक्षा का काम विद्वानो को सौपता हूं।

१६ फरवरी, १६८८
भिवानी (हरियाणा)

—आचार्य तुलसी

पुरोवाक्

भगवान महावीर ने अर्धमागधी प्राकृत मे प्रवचन किया था। जनता सरलता से उनकी बात समझ सके—यही प्रयोजन था। जनता के लिए जनता की भाषा मे बोलना एक नया काम था। उस समय के अधिकांश धर्माचार्य पंडितो की भाषा मे ही बोलते और लिखते थे। उनकी बात बड़े लोगों तक पहुच पाती थी। पाद-विहार और जनता की भाषा मे प्रवचन—इन दोनो प्रवृत्तियो के कारण महावीर जनता के बन गए थे। उनके शिष्य भारत के अनेक प्रान्तो मे विहार करते थे और अनेक प्रान्तो के मुमुक्षु उनके शिष्य बनते थे। आगम साहित्य मे एक अर्थबोध के लिए अनेक शब्दो एवं धातु-पदों का प्रयोग मिलता है। व्याख्याकारो ने उसका कारण बताया है कि अनेक देशो के शिष्यो को समझाने के लिए अनेक शब्दो और क्रिया-पदो का प्रयोग किया गया।

संस्कृत की एक सीमा बन चुकी थी। उसमे विभिन्न देशो मे प्रचलित शब्दो के समावेश के लिए अवकाश नही रहा। प्राकृत जन-भाषा थी। उसका लचीलापन बना रहा। वह किसी घेरे मे नही बधी, इसलिए उसका सम्पर्क देशी शब्दो से बना रहा। देशी शब्द व्याकरण से बधे हुए नही है। उनके लिए 'शेष सस्कृतवत्'—इस सूत्र की कोई अपेक्षा नही है। उनके लिए 'प्रकृतिः सस्कृतम्' इस विधि की भी अपेक्षा नही है। त्रिविक्रम देव ने प्राकृत के तीन प्रकार बताए है—तत्सम, तद्भव और देश्य। सस्कृत के समान शब्द 'तत्सम' और सस्कृत की प्रवृत्ति से सिद्ध शब्द 'तद्भव' कहलाते है। देश्य और आर्ष शब्द इन दोनो से भिन्न है—

प्राकृतं तत्समं देश्यं, तद्भवं चेत्यदस्त्रिधा।
तत्समं संस्कृतसमं नेयं संस्कृतलक्ष्मणा ॥
देश्यमार्षं च रूढत्वात् स्वतंत्रत्वाच्च भूयसा।
लक्ष्म नापेक्षते तस्य संप्रदायो हि बोधकः ॥
प्रकृतेः संस्कृतात् साध्यमानात् सिद्धाच्च यद् भवेत्।
प्राकृतस्यास्य लक्ष्यानुरोधि लक्ष्म प्रचक्ष्महे ॥[1]

आचार्य हेमचद्र ने देशी शब्द की बहुत सुन्दर परिभाषा की है। यह परिभाषा बहुत सार्थक और व्यापक है—

१. श्रीत्रिविक्रमदेव, प्राकृतशब्दानुशासनम्, श्लोक ६-८।

जे लक्खणे ण सिद्धा ण पसिद्धा सक्कयाहिहाणेसु ।
ण य गउणलक्खणासत्तिसंभवा ते इह णिवद्धा ।।
देस विसेसपसिद्धीइ भण्णमाणा अणंतया हुंति ।
तम्हा अणाइपाइअपयट्टभासाविसेसओ देसी ।।[1]

प्राकृत के अध्ययन के लिए देशी शब्दो का अध्ययन बहुत आवश्यक है । उनके विना प्राकृत भाषा सस्कृत आश्रित बन जाती है । इसी आधार पर कुछ विद्वानो ने प्राकृत को सस्कृत से अर्वाचीन बतलाया । प्राकृत का विशाल स्वरूप देशी शब्दो का भण्डार है । उनका सम्बन्ध प्राचीनतम जनभाषा से है । प्रस्तुत देशी शब्दकोश मे कुछ शब्द कन्नड और तमिल के भी हैं, मराठी आदि भाषाओ के तो हैं ही । उत्तर और दक्षिण की सभी भाषाओ के शब्द आगम साहित्य मे मिलते हैं । कुछ शब्द यूनान आदि विदेशी भाषाओ के भी संदृब्ध हैं ।

प्रस्तुत देशी शब्दकोश मे आगम, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि और टीका आदि में प्रयुक्त देशी शब्दो का संकलन किया गया है । आगम के व्याख्याकारों ने स्थान-स्थान पर देशी शब्दों का प्रयोग किया है और वे किस अर्थ मे देशी हैं, इसका उल्लेख भिन्न-भिन्न शब्दावलियो मे किया है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

अतिराउल इति देशीपदं स्वामीकुलमित्यर्थः ।
अविहाड—देशीभाषया वालकः ।
आइंति (अव्यय) देशभाषायाम् ।
आरनाल—कंजियं देसीभासाए आरनालं भण्णति ।
उअपोते—देशीपदत्वात् आकीर्णे ।
उंड—देशीवयणतो उंडं मुहं ।
उग्गह—इति जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा ।
उग्घाडपोरिसि—समयभाषया पादोनप्रहरे ।
अमाघाय—अमारिरूढिशब्दत्वात् ।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे आचार्य हेमचन्द्र की देशी नाममाला का भी अविकल सकलन किया गया है । अंगविज्जा आदि अन्य स्रोतो से भी देशी शब्दो का संग्रहण किया है । इसके मूल मे लगभग दस हजार से भी अधिक शब्द संगृहीत है । आगम संपादन के साथ शब्दकोश की जो योजना है, उसके अन्तर्गत तीन कोश पहले प्रकाशित हो चुके हे—

१. आगम शब्दकोश
२. एकार्थक कोश
३ निरुक्त कोश

---

१. देशी नाममाला, आचार्य हेमचन्द्र, १।३,४ ।

यह देशी शब्दकोश चतुर्थ कोश है। यह आगम तथा प्राकृत भाषा के अध्ययन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी है। इसमे आगमकारो के व्यापक दृष्टिकोण, संग्राही मनोवृत्ति और अर्थाभिव्यक्ति के लिए सक्षम शब्दों के चयन की प्रवृत्ति का निदर्शन मिलता है। मुनि दुलहराजजी ने इस कार्य मे अत्यधिक निष्ठापूर्ण श्रम किया है। इस कार्य मे साध्वी अशोकश्री, साध्वी विमलप्रज्ञा और साध्वी सिद्धप्रज्ञा तथा समणी कुसुमप्रज्ञा ने पूर्ण योगदान किया है। श्रद्धासिक्त भाव से किया गया यह श्रम दूसरो के लिए अनुसरणीय वनेगा।

वृहद् आगम शब्दकोश का विशाल कार्य आचार्यश्री तुलसी के वाचना प्रमुखत्व मे हो रहा है। उनके मार्ग-दर्शन मे अनेक साधु-साध्विया इस कार्य मे संलग्न है। देशी शब्दकोश उसी कार्य का एक अग है। मैं आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न नही कर रहा हूं। यह प्रयत्न उनसे शक्ति-संबल पाने का प्रयत्न है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे जिन साधु-साध्वियो का योग है, उन सवको साधुवाद देता हू और मंगलकामना करता हू कि उनका श्रम इस कार्य की प्रगति मे निरन्तर नियोजित रहे। एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की सम-प्रवृत्ति मे योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव मे यह हम सवका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

१७ फरवरी १९८८ —युवाचार्य महाप्रज्ञ
भिवानी (हरियाणा)

भूमिका

देशी शब्दों का प्रयोग वैदिक युग की भाषा से होता आ रहा है। ग्रामीण या जनभाषा का प्रभाव वैदिक भाषा पर परिलक्षित होता है। ब्राह्मणकाल की आर्यभापा के तीन रूप देखे जा सकते है—उदीच्या, मध्य-देशीया एवं प्राच्या। उदीच्या परिनिष्ठित भाषा थी। प्राच्या भाषा पूर्व में रहने वाले वर्वर असुरवर्ग के लोगों की भाषा थी। मध्यदेशीया भाषा का स्वरूप उदीच्या और प्राच्या के बीचोबीच था। प्राचीन आर्यभाषा के इन तीनो रूपो के उदाहरण स्वरूप श्रीर, श्रील एव श्लील— ये तीन शब्द लिए जा सकते है। ये तीनो शब्द क्रमशः उदीच्या, मध्यदेशीया एवं प्राच्या आर्यभाषा के माने जा सकते है।

प्राकृत भापाओ के अन्तर्गत पालि भापा का भी एक विशिष्ट स्थान है। यह अवश्य एक वोलचाल की भाषा थी। इसे पूर्णरूपेण अकृत्रिम प्राकृत कहा जा सकता है, यद्यपि श्रीलका एवं वर्मा जैसे देशो मे इसमे कुछ कृत्रिमता भी आ गई थी, जो वर्मा मे अपने प्रकर्ष को पहुंच गई थी। इसी प्रकार 'आयारो' जैसे जैन आगमो मे हमे अकृत्रिम प्राकृतभाषा उपलब्ध होती है, जवकि उत्तरवर्त्ती प्राकृतसाहित्य मे कृत्रिमता भी दिखाई पडती है।

संस्कृत मे शब्दों के दो विभाग किए गए है—व्युत्पन्न एवं अव्युत्पन्न। व्याकरण के नियमो से सिद्ध होने वाले शब्द व्युत्पन्न कहलाते है। जिनकी सिद्धि व्याकरण सम्मत न होकर लोक-परम्परा या व्यवहार से होती है, वे अव्युत्पन्न शब्द कहलाते है।

प्राकृत वैयाकरणो द्वारा प्राकृत शब्द तीन भागो मे वांटे गए है—तत्सम, तद्भव एवं देश्य या देशी। इनमे देश्य शब्द व्युत्पत्ति-सिद्ध नही होते।

देशी शब्दो के निर्धारण मे आचार्य हेमचन्द्र ने कुछ कसौटिया प्रस्तुत की है। त्रिविक्रम ने देशी शब्दो का छह विभागो मे वर्गीकरण किया है। आधुनिक भाषा-वैज्ञानिको की दृष्टि मे ये कसौटियां एवं वर्गीकरण सही नही है। इन विद्वानो ने देशीशब्दो के निर्धारणार्थ काफी ऊहापोह किया है। इन विचार विमर्शो मे जार्ज ग्रीयर्सन का मतव्य काफी महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। वे देशी शब्दो का संवध आर्यो द्वारा वैदिक काल के पहले ही बोली जाने वाली जनभाषा से वताते है। इसके अतिरिक्त वे देशी शब्दो का संवध

प्रातीय बोलियों से भी बताते हैं। वे देशी शब्दो को आर्यो और आर्येतर जातियों के आपसी आदान-प्रदान से विकसित शब्द मानते है। उनका यह सुदृढ मत है कि देशी शब्दो मे अधिकतर शब्द आर्यों की ही प्रारंभिक बोलियो से लिए गए है। इनमे कुछ शब्द निश्चित रूप से द्रविड़ भाषाओ के हैं। द्रविड़ भाषाओं के शब्द किस रूप मे देश की विभिन्न आधुनिक भाषाओं मे उपलब्ध होते है एव आर्य भाषा के शब्दो मे कैसे परिवर्तन होते हैं इसके दो दृष्टांत हम यहा प्रस्तुत करते है—

अड् धातु (बाधा देना) से उत्पन्न शब्द

तमिल—अटइ
कन्नड—अड, अड्ड
तुलु—अटक, अडक
कुइ—अड
ब्राहूई—अड्
लह्न्दा—अडण्; अडक्
पजाबी—अड्ना; अड्कणा
कुमौनी—अड्णो
हिन्दी—अड्ना
गुजराती—अड्उ; अड्क्वु
मराठी—अड्णें; अडक्णे

प्सा धातु (खाना, भूखा रहना) से उत्पन्न शब्द

शतपथ-ब्राह्मण—प्सात (मुक्त)
पालि—छात, छातक (भूखा), छातता (भूख)
प्राकृत—छाय (भूखा)
सिंहली—सय, सा, साय (भूख, सूखा)।[1]

इस प्रकार के अनेक शब्द उद्धृत किए जा सकते हैं जिनके आधार पर हम यह कह सकते है कि प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक आर्यभाषाओं मे देशी शब्द विभिन्न रूपो मे प्रवेश पा गए, जिनका निर्धारण श्रम एवं गवेषणा साध्य है।

प्रस्तुत कोश की सपादन मडली को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होने अथाह परिश्रम पूर्वक इस विषय पर उपलब्ध सारी सामग्री का विद्वत्तापूर्ण उपयोग किया है तथा आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्राकृत व्याकरण

---

१. देखें—आर. एन. टर्नर : ए कोम्पैरेटिव डिक्शनरी ऑफ द इण्डो-आर्यन लेंग्वेजिज।

एव देशीनाममाला और इसके अतिरिक्त अन्य प्राकृत व्याकरण एव कोशग्रथो का यथेष्ट अनुशीलन किया है। समग्र जैन आगम तथा उन पर लिखे हुए व्याख्या-ग्रंथ—निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीकाओ का सूक्ष्म एवं व्यापक परिशीलन द्वारा प्राप्त देशीशब्द भी इस कोष मे सगृहीत है। 'अगविज्जा' जैसे पारिभाषिक शब्दों से परिपूर्ण ग्रंथ से भी देशी शब्दो का इसमे चयन हुआ है। स्थान स्थान पर व्याख्या-ग्रन्थो मे 'देशीपदत्वात्', 'देशीवचनत्वात्', 'देशीपदं'—ऐसे उल्लेख मिलते है, जिनका अविकल उल्लेख इस कोष मे किया गया है। यह इसकी एक नवीन विशेषता है। आधुनिक विद्वानो द्वारा वैज्ञानिक ढंग से सम्पादित प्राकृत एवं अपभ्रश साहित्य मे प्राप्त देशीशब्दो का संकलन भी ध्यानपूर्वक किया गया है। देशी शब्दो के सग्रह का ऐसा सर्वाङ्गीण उपक्रम पहली बार ही हुआ है। एक ही कोश में इतनी सामग्री का उपलब्ध होना भविष्य के शोधार्थियो के लिए देशी शब्दों पर गवेषणा के क्षेत्र मे एक ठोस आधार प्रदान करेगा। हमारे संघ के प्रबुद्ध साधु-साध्वियो एवं समणियो के सम्मिलित प्रयास से ही यह महान् कार्य सम्पन्न हो सका है। सम्मिलित प्रयत्न के बिना ऐसे ग्रथो का निर्माण होना संभव नही है।

विविध कोश-निर्माण की मौलिक कल्पना परमाराध्य आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री की प्रतिभा की देन है। फलस्वरूप तीन महत्वपूर्ण कोश हमारे सामने आ चुके है। उसी क्रम मे यह देशी शब्दकोश चतुर्थ है। यह धारा अविच्छिन्न है, एव भविष्य मे कई और अधिक उपयोगी कोश विद्वानो के समक्ष आएंगे। परमाराध्य आचार्यश्री की आध्यात्मिक प्रेरणा से कई दु साध्य कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाते है। उनकी आध्यात्मिक प्रेरणा का प्रभाव हम पुन· पुन. अपने जीवन मे अनुभव करते हैं, जिसका शब्दो मे वर्णन करना संभव नही है। हमारे संघ मे जो साहित्यिक एव वैचारिक क्राति आई है उसका उद्‌भव-स्थान परमाराध्य आचार्यश्री की आध्यात्मिकता ही है।

प्रस्तुत कोश की सर्वांगीण समायोजना मे मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है। मुनिश्री परम श्रद्धेय युवाचार्यश्री की साहित्यिक एवं दार्शनिक रचनाओ के सम्पादन मे सतत सहयोग प्रदान करते रहे है। युवाचार्यश्री के सुदीर्घ सान्निध्य के फलस्वरूप मुनिश्री ने जो दक्षता प्राप्त की है उसका प्रतिफलन प्रस्तुत कोश मे दृष्टिगोचर होता है।

मूल ग्रंथो से देशी शब्दो के चयन का कार्य साध्वी अशोकश्रीजी, साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी एवं साध्वी निर्वाणश्रीजी तथा समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने दक्षतापूर्वक सम्पन्न किया। यह गुरुभार-वहन उनकी विद्वत्ता एव स्थिर अध्यवसाय का ही सुपरिणाम है।

इस कोश में दो परिशिष्ट संलग्न किए गए है। पहले परिशिष्ट में आगम साहित्य के अतिरिक्त अनेक प्राकृत ग्रंथो तथा त्रिविक्रम के प्राकृत

शब्दानुशासन से देशीशब्द चुने गए है। दूसरे परिशिष्ट मे देशीधातुएं तथा धात्वादेश संकलित है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन का क्षेत्र उत्तरोत्तर प्रसार लाभ कर रहा है। कई विश्वविद्यालयो एव स्वतन्त्र शोध-संस्थानो में शोधछात्र एव अध्यापकगण इस क्षेत्र को समृद्ध बना रहे है। हमे पूर्ण विश्वास है, प्राकृत एव जैन शास्त्रो के अध्येताओ के लिए यह कोश लाभप्रद होगा एव और भी अधिक शोधपूर्ण ऐसे कोशो के निर्माण की दिशा मे उन्हे प्रेरित करेगा।

लाडनू (राजस्थान)
९-३-८८

नथमल टाटिया
निदेशक, अनेकांत शोधपीठ,
जैन विश्व भारती

संपादकीय

भाषा

भाषा विचारो के आदान-प्रदान का माध्यम है। संसार के कोने-कोने मे निवास करने वाले मनुष्य किसी न किसी भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते है। भौगोलिक कारणो से मनुष्यो की भांति भाषा के भी अनेक भेद पाए जाते है। महाभारत मे इसका स्पष्ट उल्लेख है।[1] विद्वानों के मत से वर्तमान मे १००० से अधिक जीवित भाषाएं प्रचलित है। इस विषय मे सैकड़ो पुस्तके भी प्रकाश मे आ चुकी है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय आर्यभाषाओ को तीन कालों मे विभक्त किया जा सकता है—

१ प्राचीन भारतीय आर्यभापा काल—इसमे वैदिक एवं लौकिक संस्कृत आती है।

२. मध्य भारतीय आर्यभाषा काल—इसमे पालि, प्राकृत एव अपभ्रंश भाषा का समावेश होता है।

३. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल—इसमे हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, असमिया, तेलगू, कन्नड़, तमिल आदि भाषाएं आती है।

प्राकृत—

प्रकृति शब्द के दो अर्थ है—स्वभाव और जनसाधारण। इन अर्थों के आधार पर प्राकृत शब्द के भी दो अर्थ समझे जा सकते है—

१. जो प्रकृति/स्वभाव से ही सिद्ध है, वह प्राकृत है।

२. जो प्रकृति/साधारण लोगों की भाषा है, वह प्राकृत है।

महाकवि वाक्पतिराज का अभिमत है कि जैसे पानी समुद्र मे प्रवेश करता है और समुद्र से ही वाष्प के रूप मे बाहर निकलता है। ठीक वैसे ही सब भाषाएं प्राकृत मे प्रवेश करती है और इसी प्राकृत से सब भाषाएं निकलती है।[2] इससे स्पष्ट है कि प्राकृत के आधार पर ही संस्कृत आदि का

---

१. महाभारत, शल्यपर्व ४४।९७,९८ :
नानावर्मभिराच्छन्ना, नानाभाषाश्च भारत! ।
कुशला देशभाषासु, जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वराः ॥

२. गउडवहो ९३ : सयलाओ इमा वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं ॥

विकास हुआ है।

प्राकृत भापा के भेदों के विपय मे विद्वानो के विभिन्न मत मिलते है। भरत ने अपने नाट्यशास्त्र मे प्राकृत की सात भापाओं का उल्लेख किया है—

१. मागधी	५. अर्धमागधी
२ अवन्तिजा	६. वाह्लीकी
३. प्राच्या	७. दाक्षिणात्या[1]
४. शौरसेनी	

संस्कृत नाटको मे विभिन्न प्राकृत भापा की वोलियां मिलती हैं। प्रसिद्ध वैयाकरण वररुचि ने महाराष्ट्री, पैशाची, मागधी और शौरसेनी—इन चार भापाओ को प्राकृत के अन्तर्गत माना है।

हेमचन्द्र ने इन चारों के अतिरिक्त चूलिका पैशाची, आर्प, अर्ध-मागधी और अपभ्रश का उल्लेख भी किया है। त्रिविक्रम, लक्ष्मीधर, सिंहराज, नरसिंह आदि वैयाकरणो ने हेमचन्द्र का अनुसरण किया है।

प्राकृत भापा के दस भेद भी मिलते हैं—

१. पालि	६. अशोकलिपि
२. पैशाची	७. शौरसेनी
३ चूलिका पैशाची	८ मागधी
४. अर्ध मागधी	९. महाराष्ट्री
५. जैन महाराष्ट्री	१०. अपभ्रंश

मार्कण्डेय ने प्राकृत की सोलह भापाओं का उल्लेख किया है।

प्राकृत मे तीन प्रकार के शब्दो का समावेश है—१. तत्सम २. तद्भव ३. देशी।[2]

संस्कृत-निष्ठ शब्द तत्सम है। ये विना किसी रूप परिवर्तन के प्राकृत मे प्रयुक्त है। जैसे—जल, कमल, देव आदि। संस्कृतसम[3], तत्तुल्य[4] और समान[5] शब्द भी तत्सम के वाचक हैं।

संस्कृत के जो शब्द वर्णागम, वर्णविकार या ध्वनि-परिवर्तन से अपना स्वरूप वदल लेते है, वे तद्भव है। जैसे—कार्य—कज्ज, ऋपभ—उसभ,

---

१. नाट्यशास्त्र १७।४८ : मागध्यवन्तिजा प्राच्या, शौरसेन्यर्धमागधी।
वाह्लीका दाक्षिणात्याश्च सप्त भाषाः प्रकीर्तिताः॥

२. नाट्यशास्त्र १७।३ : त्रिविधं तच्च विज्ञेयं नाट्ययोगे समासतः।
समानशब्दं विभ्रष्टं देशागतमथापि च॥

३. प्राकृतलक्षण १।१।

४. वाग्भटालंकार २।२।

५. नाट्यशास्त्र १७।३।

वर्धमान–वड्ढमाण आदि। इसके लिए आचार्य हेमचन्द्र ने संस्कृतयोनि[1], वाग्भट ने तज्ज[2] तथा भरत ने विभ्रष्ट[3] शब्द का प्रयोग किया है।

देशी शब्द सामान्यतया ग्राम्य या प्रान्तीय अर्थ का वाचक है। निरुक्तकार यास्क[4] तथा पाणिनि[5] ने देशी शब्द का प्रयोग प्रान्त अर्थ मे किया है।

वात्स्यायन ने कामसूत्र, विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस, बाण ने कादंबरी तथा धनञ्जय ने दशरूपक मे नाना देशो मे बोली जाने वाली भाषाओ को देशी भाषा कहा है। कामसूत्र, महाभारत, नाट्यशास्त्र आदि ग्रथो मे देशभाषा शब्द से देशी भाषा का अर्थ ग्रहण किया गया है। वैयाकरण चण्ड ने देशीभाषा के अर्थ मे देशीप्रसिद्ध, भरत ने देशीमत तथा देशागत शब्द का प्रयोग किया है।

अनुयोगद्वार मे शब्दो को पाच भागो मे विभक्त किया गया है। उनमे नैपातिक शब्दो को देशी के अन्तर्गत माना जा सकता है।[6]

सस्कृत मे तीन प्रकार की शब्द सम्पदा है –रूढ, यौगिक और मिश्र। इनमे रूढ शब्द देशी के अन्तर्गत आते है।

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र ने देशीनाममाला मे देशी शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है—जो शब्द व्याकरण ग्रथो मे प्रकृति, प्रत्यय द्वारा सिद्ध नही है, व्याकरण से सिद्ध होने पर भी सस्कृत कोशो मे प्रसिद्ध नही है तथा जो शब्द लक्षणा आदि शब्द-शक्तियो द्वारा दुर्बोध है और अनादि काल से लोकभाषा मे प्रचलित है, वे सब देशी है। महाराष्ट्र, विदर्भ आदि नाना देशो मे बोली जाने वाली नाना भाषाए होने से देशी शब्द अनंत है।[7]

इस विशाल दृष्टिकोण के बावजूद भी उन्होने इन अंतहीन शब्दो के सग्रहण की दुरूहता को ध्यान मे रखते हुए केवल प्राकृत भाषा से सम्बन्धित शब्दो को ही देशी मानकर उनका अविकल संकलन किया है।

त्रिविक्रम के अनुसार आर्ष और देश्य शब्द विभिन्न भाषाओ के रूढ प्रयोग है। अत: इनके लिए व्याकरण की आवश्यकता नही है।[8] उन्होने छह विभिन्न सूत्रो द्वारा देशी शब्दो को छह विभागो मे विभक्त किया है—

१. वा पुआय्याद्या.[9]— इसके अन्तर्गत स्वर आदि की विशेष आयोजना से उत्पन्न

---

१. प्राकृत व्याकरण १।१।
२. वाग्भटालंकार २।२।
३ नाट्यशास्त्र १७।३।
४. निरुक्त २।१।
५. अष्टाध्यायी १।१।७५।
६ अनुयोगद्वार २७०।
७. देशीनाममाला १।३,४।
८ प्राकृतशब्दानुशासन ७: देश्यमार्षं च रूढत्वात् स्वतंत्रत्वाच्च भूयसा।
लक्ष्म नापेक्षते तस्य सम्प्रदायो हि बोधकः॥
९. वही, १।२।१०९।

शब्द आते है। इनकी सस्कृत पर्याय खोजी जा सकती है। जैसे—पुआई इसका अर्थ है पिशाच। इसी प्रकार ऊणंदिअं—आनंदित, टोम्बरो—तुम्बुरु आदि।

२. गोणाद्या.[1]—ये वे देशी शब्द है जो प्रकृति, प्रत्यय, वर्णागम तथा वर्णविकार से रहित होते है। जैसे— गोणो—गाय, वणाइ—वनराजि, आओ—पानी।

३. गहिआद्या[2]—इस सूत्र मे शब्द निर्वचन के विषय बनते है तथा इनकी व्युत्पत्ति की जा सकती है। जैसे—णंदिणी—धेनु, वइरोड—जार, अजड—अनलस, संचारी—दूती।

४. वरइत्तगास्तूनाद्यैः[3]—इस सूत्र के अन्तर्गत वे शब्द सगृहीत है जो तद्धित के अनेक प्रत्ययो तथा स्वरो की विशेष आयोजना से युक्त होते है। जैसे—वरइत्त—वरयिता, नूतनवर, वाअड—शुक, मइलपुत्ती—रजस्वला, सद्दाल—नूपुर।

५. अपुण्णगा क्तेन[4]—इस सूत्र मे सारे क्त प्रत्ययान्त शब्द संगृहीत हैं। जैसे—अपुण्ण—आक्रान्त, उरुसोल्ल—प्रेरित, उक्खिण्ण—अवकीर्ण, णिसुद्ध—निपातित।

६. झाडगास्तु देश्याः सिद्धा[5]—इस सूत्र के अन्तर्गत वे शब्द संगृहीत है जो देश-विशेष मे व्यवहृत होते है, जो सिद्ध है, प्रसिद्ध हैं और निष्पन्न है। जैसे—झाड—लता आदि का गहन, गोप्पी—बाला, पाणाअअ—चाडाल, सोल्ल—मास।

आचार्य हेमचन्द्र ने 'गोणादय.'—इस सूत्र के अन्तर्गत देशी शब्दो का सग्रहण किया है।[6]

आधुनिक भाषावैज्ञानिको ने भी देशी के बारे मे पर्याप्त चिन्तन-मनन किया है। जानबीम्स, हार्नले, जार्ज ग्रियर्सन, सुनीतिकुमारचाटुर्ज्या, पी. डी. गुणे आदि ने देशी शब्दो की स्वरूप मीमांसा की है।

जानबीम्स का कहना है कि देशीशब्द वे है जो किसी भी सस्कृत शब्द से व्युत्पन्न नही किए जा सकते, इसलिए वे या तो आर्यों से पूर्व रहने वाले आदिवासियो की भाषा से लिए गए होगे या फिर सस्कृत भाषा के विकसित होने से पहले ही स्वय आर्यों द्वारा आविष्कृत होंगे।[7]

निष्कर्ष की भाषा मे कहा जा सकता है कि देशी का अर्थ यह नही कि केवल वे शब्द जो देशविशेष मे प्रचलित हो, किन्तु वे सभी शब्द देशी है, जिनका स्रोत सस्कृत मे नही है चाहे फिर वे किसी देश-भाषा के क्यो न हो।

१. प्राकृतशब्दानुशासन, १।३।१०५।
२. वही, १।४।१२१।
३. वही २।१।३०।
४. वही ३।१।१३२।
५. वही ३।४।७२।
६. प्राकृत व्याकरण २।१७४।
७. कम्पेरेटिव ग्रामर आफ माडर्न आर्यन लेंग्वेजज, पृष्ठ १२।

एफ. आर. हार्नले[1], श्री आर. जी. भण्डारकर[2], डॉ. पी. डी. गुणे[3] भी इस कथन से सहमत है। जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार देशी शब्दो का सबंध वैदिक काल से पूर्व आर्यो द्वारा बोली जाने वाली जनभाषाओ से है। प्रथम प्राकृत से उद्भूत होने के कारण देशी शब्दो को तद्भव कहा जा सकता है।[4]

ए. एन. उपाध्ये[5] तथा पी. एल वैद्य[6] ने भी देशीशब्दो की उत्पत्ति तथा उसके स्वरूप के बारे मे पर्याप्त चिन्तन किया है।

देशी शब्द का प्रयोजन

प्राचीनकाल मे गुरु के पास विभिन्न प्रदेशो के शिष्य दीक्षित होते थे। वे सूत्रो के गूढ़ रहस्यो को सरलता से समझ सके, इस दृष्टि से प्रशिक्षक विभिन्न देशो मे प्रचलित एक ही अर्थ के वाचक भिन्न-भिन्न शब्दो का प्रयोग करते थे। यहा दशवैकालिक सूत्र का भाषा-प्रयोग विषयक एक प्रसग द्रष्टव्य है। वहां कहा गया है कि मुनि इन सबोधनो से स्त्री को सम्बोधित न करे—

हले हले त्ति अन्नेत्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे॥(७।१६)

ये शब्द विभिन्न प्रदेशो मे प्रचलित सम्बोधन-शब्दो का परिज्ञान कराते है। दशवैकालिक सूत्र की अगस्त्यचूर्णि के अनुसार तरुणी स्त्री के लिए महाराष्ट्र मे 'हले' एवं 'अन्ने' संबोधन का प्रयोग होता था। लाट (मध्य और दक्षिणी गुजरात) देश मे 'हला' तथा 'भट्टे', गोल देश मे 'गोमिणी' तथा "होले', 'गोले', 'वसुले'—ये शब्द संबोधनरूप मे प्रयुक्त होते थे।[7] दशवैकालिक सूत्र की चूर्णि मे भोजन के लिए प्रयुक्त सदेण, वजण, कुसण, जेमण आदि शब्द भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे इनके प्रचलन का सकेत देते है—भिण्णदेसिभासेसु जणवदेसु एगम्मि अत्थे सदेणवंजणकुसणजेमणाति भिण्णमत्थपच्चायणसमत्थम-विप्पडिवत्तिरूवेण।[8]

---

१. कम्पेरेटिव ग्रामर आफ गौडियन लेंग्वेजेज, पृ ३९-४०।
२. विल्सन फिलोलोजिकल लेक्चर्स, पृ १०६।
३. इन्ट्रोडक्शन टु कम्पेरेटिव फिलोलोजी, पृ २७५-२७७।
४. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, पृ १२७,१२८।
५. कन्नडीज वर्ड्ज इन देशी लेक्सिकन्स, जिल्द १२, पृ १७१,१७२।
६. औब्जर्वेशन आन हेमचन्द्राज देशीनाममाला, जिल्द ८, पृ ६३-७१।
७. दशवैकालिक, अगस्त्यचूर्णि, पृष्ठ १९८ : हले अन्नेति मरहट्ठेसु तरुणित्थी मामंतणं। हलेति लाडेसु। भट्टेति ··· · लाडेसु। सामिणित्ति सव्वदेसेसु। गोमिणी गोल्लविसए। होले गोले वसुले त्ति देसीए··· ····।
८. दशवैकालिक, जिनदासचूर्णि, पृष्ठ १९०

ओदन शब्द के लिए निम्न पंक्तियां पठनीय हैं—

'पुव्वदेसयाणं पुग्गलि ओदणो भण्णइ, लाटमरहट्ठाणं कूरो, द्रविडाणं चोरो, आंध्राणं कनायुं।"[1]

वृहत्कल्प भाष्य मे आचार्यपद के योग्य शिष्य के लिए स्पष्ट निर्देश है कि वह देशी भाषाओ के परिज्ञान के लिए बारह वर्ष तक देशाटन करे। देशाटन का प्रयोजन और उससे होने वाली निष्पत्तियो पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि शास्त्रो मे प्रसिद्ध शब्द जिन-जिन देशो और प्रान्तो मे व्यवहृत होते है, देशभ्रमण के समय उन-उन देशो मे उनका प्रत्यक्षीकरण हो जाता है—पय· पिच्च नीरमित्यादयश्च शास्त्रप्रसिद्धाः शब्दास्तेषु तेषु देशेषु लोकेन तथा तथा व्यवह्रियमाणा देशदर्शनं कुर्वता प्रत्यक्षत उपलभ्यन्ते।[2]

दूसरी बडी उपलब्धि यह होती है कि सतत परिव्रजन करने वाला परिव्राजक मगध, मालव, महाराष्ट्र, लाट, कर्णाट, द्रविड, गौड, विदर्भ आदि नाना देशो की देशीभाषाओ मे कुशलता प्राप्त कर लेता है। इसमे एक बडी सुविधा यह हो जाती है कि वह नाना देशीभाषाओ मे निबद्ध सूत्रो के उच्चारण और उनके यथार्थ अर्थकथन मे दक्ष बन जाता है और जब वह आचार्यपद को अलकृत करता है तो समस्त देशीभाषाओ मे निष्णात होने से अभाषिकों (केवल अपने ही प्रदेश की भाषा जानने वालो) को भी उनकी अपनी भाषा मे प्रतिबोध देकर प्रव्रजित कर लेता है।[3]

देशीभाषाओ के भेद

आगमों मे अनेक स्थलो पर अठारह प्रकार की देशीभाषाओ का उल्लेख मिलता है।[4] राजकुमारो को भी अठारह भाषाओ का ज्ञान कराया जात था।[5] गणिकाएं भी इन भाषाओ मे निष्णात होती थीं।[6] ये अठारह

---

१. दशवैकालिक, जिनदासचूर्णि, पृष्ठ २३६।

२. वृहत्कल्पभाष्य, १२२३, टीका पृष्ठ ३८०।

३ वृहत्कल्पभाष्य, १२२६, १२३० :

णाणादेसीकुसलो, णाणादेसीकयस्स सुत्तस्स।
अभिलावअत्थकुसलो, होइ तओ णेण गंतव्वं ॥
कहयंति अभासियाण वि, अभासिए आवि पच्चयावेइ।
सव्वे वि तत्थ पीइं, वंधंति सभासिओ णे त्ति ॥

४. औपपातिक १४६; राजप्रश्नीय, ८०६।

५. ज्ञाताधर्मकथा, १।१।८८ :

एते णं से मेहे कुमारे···· 'अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए।

६. वही, १।३।८ :

देवदत्ता नामं गणिया ·······अट्ठारसदेसीभासाविसारया।

भाषाए कौन-सी थी—आगमो मे इसका स्पष्ट उल्लेख नही मिलता। बृहत्कल्प भाष्य की टीका मे मगध, मालव, महाराष्ट्र, लाट, कर्णाट, द्रविड, गौड और विदर्भ आदि देशो मे बोली जाने वाली भाषाओ को देशी कहा गया है।[1] कुवलयमाला मे विजयपुरी के बाजार मे एकत्रित अठारह देशो के व्यापारियों के मुह से अपने-अपने देश की भाषा के शब्द कहलवाये है।[2] उनके उदाहरण इस प्रकार है—

देश	भाषा-शब्द	अर्थ
१. गोल्ल	अडड[1]	पशुओ को हाकने का शब्द
२. मध्यप्रदेश	तेरे मेरे आउ[2]	तेरे, मेरे, आओ
३. मगध	एगे ले[3]	ऐसे ले (?)
४. अन्तर्वेद	कित्तो किम्मो[4]	
५. कीर (कश्मीर)	सरि पारि[5]	
६. ढक्क (पंजाब)	एह तेहं[6]	यहा-वहा, यह-वह
७. सिन्ध	चउडय मे[7]	सुन्दर (?)

---

१. बृहत्कल्पभाष्य, टीका पृ ३८२ :
नानाप्रकारा—मगध-मालव-महाराष्ट्र-लाट-कर्णाट-द्रविड-गौड-विदर्भादि-देशभवा या देशीभाषा···· ।

२. कुवलयमाला, पृष्ठ १५२, १५३ :

१. कसिणे णिट्ठुरवयणे बहुक-समर-भुंजए अलज्जे य।
'अडडे' त्ति उल्लवंते अह पेच्छइ गोल्लए तत्थ ॥

२. णय-णीइ-संधि-विग्गह-पडुए बहुजंपए य पयईए।
'तेरे मेरे आउ' त्ति जंपिरे मज्झदेसे य ॥

३. णीहरिय-पोट्ट-दुव्वण्ण-मडहए-सुरय-केलि-तल्लिच्छे ।
'एगे ले' जंपुल्ले अह पेच्छइ मगहे कुमरो ॥

४. कविले पिंगलणयणे भोयणकहमेत्तदिण्णवावारे।
'कित्तो किम्मो' पिय-जंपिरे य अह अंतवेए य ॥

५. उत्तुंग-त्थूल-घोणे कणयव्वण्णे य भार-वाहे य।
'सरि पारि' जंपिरे रे कीरे कुमरो पलोएइ ॥

६. दक्खिण्ण-दाण-पोरुस-विण्णाण-दया-विवज्जिय-सरीरे।
'एहं तेहं' चवंते ढक्के उण पेच्छए कुमरो ॥

७ सललिय-मिउ-मद्दवए गंधव्व-पिए सदेसगयचित्ते।
'चउडय मे' भणिरे सुहए अह सेंधवे दिट्ठे ॥

देश	भाषा-शब्द	अर्थ
८. मारुक (मरुदेश)	अप्पा तुप्पां[८]	हम-तुम
९. गुर्जर	णउ रे भल्लउं[९]	अरे ! यह अच्छा नहीं है
१०. लाट	अम्हं काउं तुम्हं[१०]	हमने किया, तुमने
११. मालव	भाउय भइणी तुम्हे[११]	तुम भाई-बहिन हो
१२. कर्णाटक	अडि पाडि मरे[१२]	
१३. ताजिक (परशियन या अरबिक)	इसि किसि मिसि[१३]	
१४. कोशल	जल तल ले[१४]	
१५. महाराष्ट्र	दिण्णल्ले गहियल्ले[१५]	दिया और लिया
१६- आन्ध्र	अटि पुटि रटि[१६]	वह जाना आना

इनमे १६ भाषाओ का उल्लेख है। शेष दो भाषाएं—ओड्री और द्राविडी होनी चाहिए।[१७] उपर्युक्त उदाहरणो में कर्णाटक की भाषा—कन्नड का उदाहरण तेलगु का-सा प्रतीत होता है।

---

८. वंके जडे य जड्डे वहु-भोई कढिण-पीण-सूणंगे ।
'अप्पां तुप्पां' भणिरे अह पेच्छइ मारुए तत्तो ॥

९. घय-लोणिय-पुट्ठंगे धम्म-परे संधि-विग्गह-णिउणे ।
णउ रे भल्लउ' भणिरे अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे ॥

१०. ण्हाओलित्त-विलित्ते कय-सीमंते सुसोहिय-सुगत्ते ।
'अम्हं काउं तुम्हं' भणिरे अह पेच्छए लाडे ॥

११. तणु-साम-मडह-देहे कोवणए माणजीविणो रोद्दे ।
'भाउय भइणी तुम्हे' भणिरे अह मालवे दिट्ठे ॥

१२ उक्कड-दप्पे पिय-मोहणे य रोद्दे पयंग-वित्ती य ।
'अडि पाडि मरे' भणिरे पेच्छइ कण्णाडए अण्णे ॥

१३ कुप्पास-पाउयंगे मासरुई पाण-मयण-तल्लिच्छे ।
'इसि किसि मिसि' भणमाणे अह पेच्छइ ताइए अवरे ॥

१४. सव्व-कला-पत्तट्ठे माणी पियकोवणे कढिण-देहे ।
'जल तल ले' भणमाणे कोसलए पुलइए अवरे ॥

१५. दढ-मडह-सामलंगे सहिरे अहिमाण-कलह-सीले य ।
'दिण्णल्ले गहियल्ले' उल्लविरे तत्थ मरहट्ठे ॥

१६ पिय-महिला-संगामे सुंदर-गत्ते य भोयणे रोद्दे ।
'अटि पुटि रटिं' भणंते अंधे कुमरो पलोएइ ॥

१७. इय अट्ठारस देसी-भासाउ पुलइऊण सिरिदत्तो ।
अण्णाइय पुलएई खस-पारस-वब्बरादीए ॥

विभिन्न प्रांतीय सीमाओं के साथ देशी भाषाओं के उच्चारण के बारे में विशेष जानकारी देते हुए भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र मे लिखा है[1]—

गगा और सागर के मध्यवर्ती क्षेत्रों के निवासी एकारबहुल भाषा का प्रयोग करते है। जैसे—भंते, समणे, महावीरे आदि। (गगा और सागर के मध्य मगध क्षेत्र होने से यह एकारबहुल मागधी भाषा होनी चाहिए)।

विन्ध्य और सागर के मध्य जो देश है वहा ण के स्थान पर नकार-बहुल भाषा का प्रयोग होता है। जैसे—नकरं, मइकनो आदि। (यह पैशाची प्राकृत होनी चाहिए)।

सौराष्ट्र, अवन्ती और वेत्रवती नदी के उत्तरी भाग में चकारबहुल भाषा का प्रयोग होता है। (यह प्राच्या या पैशाची प्रभावित प्राकृत भापा होनी चाहिए)।

हिमवान्, सिन्धु और सौवीर मे रहने वाले लोग उकारबहुल भाषा बोलते है। जैसे—अप्पणु, वक्कलु, फलु आदि (अपभ्रश प्राकृत उकारबहुल है)।

चर्मण्वती नदी के तट पर तथा अर्बुद पर्वतवर्ती क्षेत्रों मे ओकार प्रधान भाषा का प्रयोग होता है। जैसे—सुज्जो, सीसो आदि। (यह शौरसेनी प्राकृत होनी चाहिए)।

संस्कृत साहित्य-भाषा होने से उसमे देशी शब्दो का समावेश कम हुआ किन्तु प्राकृत जनभाषा होने के कारण उसमे देशी शब्दों का समावेश अधिक हुआ। निशीथ मे भी यह उल्लेख मिलता है कि अर्धमागधी प्राकृत भाषा अठारह देशी भाषाओं से युक्त है।[2]

कुवलयमाला के रचनाकार लिखते है कि देशी भाषा को जानने वाला व्यक्ति ही इस ग्रन्थ को पढे।[3]

इसी प्रकार तरगवई कहा,[4] लीलावई कहा,[5] पउमचरिउ[6]

---

१. नाट्यशास्त्र, १७।५९-६३।

२. निशीथभाष्य, ३६१८, चूर्णि पृष्ठ २५३ :
'अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागहं'।

३. कुवलयमाला, पृष्ठ २८१ :
जो जाणइ देसीओ भासाओ लक्खणाइं धाऊ य।
वय-णय-गाहा छेयं, कुवलयमालं पि सो पढउ॥

४. जेकोबी, सनत्कुमार की भूमिका, पृष्ठ १७८ :
पालित्तएण रइया वित्थरओ तस्स देसीवयणेहिं।

५. लीलावई कहा, गाहा ४१ :
एमेव युद्ध जुयई मणोहरं पाययाए भासाए।
परिवलदेसी सुलक्खं कहसु कहं दिव्व माणुसियं॥

६ पउमचरिउ, १।२।३,४ :
सक्कयपाययपुलिणालंकिय देसी भासा उभय तडुज्जला।

णायकुमारचरियं'[1] आदि के रचयिताओ ने अपने-अपने ग्रन्थों को देशी भाषा के प्रयोगो से युक्त बताया है । यद्यपि ये ग्रन्थ महाराष्ट्री प्राकृत या अपभ्रंश मे रचित है, किन्तु इनमे देशी शब्दो की प्रचुरता है ।

अपभ्रश तथा महाराष्ट्री प्राकृत को भी अनेक विद्वानो ने देशी भाषा माना है । लीलावई कहा[2] तथा कुवलयमाला मे कवि महाराष्ट्री प्राकृत को देशी के रूप मे स्वीकार करते है ।[3] महाराष्ट्र के संत कवि ज्ञानेश्वर ने भी देशी शब्द का प्रयोग मराठी के लिए किया है । शावरभाष्य मे देशी भाषा के सदर्भ मे अपभ्रंश का उल्लेख हुआ है ।

इसके अतिरिक्त और भी अनेक उल्लेख इन भाषाओ को देशी मानने के सन्दर्भ मे मिलते है । इनसे स्पष्ट है कि देशी शब्द का प्रयोग अपभ्रंश, महाराष्ट्री तथा जनपदीय बोलियो के लिए भी होता रहा है । ये दोनो — अपभ्रश और महाराष्ट्री भाषाए देशी है या नही - इसके विषय मे विद्वानो ने पर्याप्त चिन्तन किया है ।

अधिक संभव लगता है कि यहा देशी या देशीशब्द का प्रयोग प्रान्त या उस देशविशेष के लिए किया हो । प्रसिद्ध भाषाविद् जूलब्लाक तथा डा० कीथ ने यह सिद्ध किया है कि अपभ्रश देशीभाषा नही थी किन्तु आभीर एव गूजरो की भाषा थी ।

अपभ्रंश के आज अनेको ग्रन्थ मिलते हैं जिनमे प्रचुर देशी शब्दो का प्रयोग हुआ है । उदाहरण के लिए डा० देवेन्द्रकुमार शास्त्री द्वारा सम्पादित 'भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य' पुस्तक मे उल्लिखित कुछ देशी शब्दो एव धातुओ का नीचे निर्देश किया जा रहा है—[4]

तलाय (तलाव), हंसि (हसिनी), संड (सांड), घीवर, अट्ठारह, चउदह, चउसट्ठि, पासु (पास), आजु (आज), मंदलु, कायरा (कायर). गवार (गवार), अगवाणिय (अगवानी), वणिजारिय (वनजारा) आदि ।

इसी प्रकार इसमे देशी क्रिया-रूपो तथा सर्वनामो की भी प्रचुरता है । सर्वनाम के कुछ शब्द-रूप इस प्रकार है—जो, सो, ए, को, हउ, हउ, (हौ), कवणु (कौन), मइ (मैं), हमारे, अम्हारिय, इह, यहि, किह (कैसे) इस, जिह (जैसे), जे, ता और ज इत्यादि ।

देशी क्रियापदो के कुछ रूप—पूछिन, आयउ, तोडिय, देखेवि, लग्ग (लगे हुए) घल्लिय, ढोइय, छोडइ, पडिउ, छूटउ, हक्क दिंति (हांक देते है),

---

१ णायकुमारचरियं, १।१ : णीसेसदेसभासउ ····चवंति ।

२. लीलावई कहा, गाहा १३३० ·
भणियं च पियय भाए, रइयं मरहट्ठ देसी भासाए ।

३. कुवलयमाला, पृष्ठ ४ : पाइयभासारइया मरहट्ठय-देसि-वण्णय-णिबद्धा ।

४. भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य, पृष्ठ ३११ ।

चालावहि (चलवाये), चलु (चलो), फिरइ, गइय, देइ, बुलावइ, खायइ, खुल्लय (खुला हुआ) इत्यादि ।

देशी कोशकार

आज तक कितने देशी कोशकार हुए है, इसका ठीक-ठीक संकलन करना इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त दुरूह कार्य है । वर्तमान में देशी शब्दों का सबसे बडा कोश आचार्य हेमचन्द्र का मिलता है । त्रिविक्रम ने अपने प्राकृत शब्दानुशासन मे लगभग १६०० देशी शब्दो का उल्लेख किया है । धनपाल ने पाइयलच्छीनाममाला मे प्राकृत शब्दो के साथ कुछ देशी शब्दो का संग्रहण भी किया है । आचार्य हेमचन्द्र ने अनेक देशी कोशकारो का नामोल्लेख अपने ग्रन्थ—देशी नाममाला मे स्थान-स्थान पर किया है । उनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

अभिमानचिन्ह—इनका देशीकोश सूत्रात्मक था । इन्होने शब्दसूची और उदाहरणो से शब्दो के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया । इन सूत्रो की व्याख्या विद्वान् उदूखल ने की थी ।

अवन्तिसुन्दरी—यह भी कोई विदुषी महिला थी, जिसने प्राकृत मे काव्य रचना कर, उसमे अनेक देशी शब्दो को प्रयुक्त किया था । इसके विषय मे पर्याप्त जानकारी नही है ।

गोपाल—इन्होने देशी शब्दकोश की श्लोकबद्ध रचना कर संस्कृत मे उन शब्दों का अर्थ किया था । अनेक देशीकारो ने इनका उल्लेख किया है ।

देवराज—इन्होने छन्दवद्ध देशीकोश की रचना की और शब्दो के अर्थ प्राकृत मे दिये । इनका सम्पूर्ण कोश शब्दो की प्रकृति के आधार पर प्रकरणो मे विभाजित था ।

द्रोण—इन्होने देशीकोश की रचना अवश्य की थी और शब्दो का अर्थ प्राकृत भाषा मे प्रस्तुत किया था । परन्तु उस ग्रन्थ का स्वरूप अज्ञात है ।

धनपाल—संभवत: पाइअलच्छीनाममाला के कर्त्ता धनपाल से ये भिन्न थे । इनका देशी कोश हेमचन्द्र के समय मे प्रचलित रहा हो—ऐसी सभावना है । इनका विशेष परिचय ज्ञात नही है ।

पादलिप्ताचार्य—हेमचन्द्र के अनुसार ये भी देशीकोश के रचयिता थे । यह सम्भावना की जाती है कि इनके कोशगत विवरण से हेमचंद्र पूर्ण सहमत थे ।

राहुलक—इनके द्वारा रचित देशीकोश की कोई विश्वस्त जानकारी प्राप्त नही है । 'टोल' शब्द के सन्दर्भ मे हेमचन्द्र इनके मत को स्वीकार कर; अन्यान्य कोशकारो के अर्थ का प्रतिषेध करते है । सभवत: इनका कोई कोश रहा हो ।

निमीलन अर्थवाची 'अच्छिवडण' शब्द सस्कृत के 'अक्षिपतन' शब्द से निष्पन्न हो सकता है, तथापि सस्कृत मे इस अर्थ मे अप्रसिद्ध होने से इसे देशी मे निवद्ध किया है।[१]

'अहिहाण' का अर्थ है—वर्णना, प्रशंसा। यह सस्कृत के अभिधान शब्द से व्युत्पन्न किया जा सकता है, किन्तु जो व्यक्ति सस्कृत से अनभिज्ञ है, स्वयं को प्राकृत के पडित मानते है उनका ध्यान आकृष्ट करने के लिए ऐसे अनेक शब्दो का सग्रहण किया है।[२] संस्कृत मे 'अभिधान' शब्द वर्णना—प्रशंसा के अर्थ मे प्राप्त नही है।

उल्लिखित सदर्भो से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देशी शब्दो के सग्रहण मे आचार्य हेमचद्र वडे सतर्क एवं जागरूक रहे है। इस विषय मे उनकी दृष्टि वहुत स्पष्ट एवं विशाल थी, चितन युक्तियुक्त एवं गंभीर था। अन्य आचार्यो द्वारा देशी रूप मे स्वीकृत होने पर भी जहां आचार्य हेमचन्द्र को कोई शब्द युक्ति संगत नही लगा उसे संस्कृतसम या सस्कृतभव कह कर छोड दिया है। जैसे—

'अच्छलं अनपराध इति संस्कृतसमः।[३] 'अच्छोडणं मृगया, अलिजरं कुण्डम्, अमिलायं कुरण्टककुसुमम्, अच्छभल्लो ऋक्षः' इत्यपि संगृह्णन्ति। तत् संस्कृतभवत्वादस्माभिर्नोक्तम्।[४]

शब्दो के यथार्थ अर्थ को पकडना एक कठिन कार्य है। उसमे देशी शब्दो का सही ढ़ग से निर्णय तथा अर्थ-निर्धारण तो और भी कठिन कार्य है।

देशीनाममाला मे आचार्य हेमचन्द्र ने देशी शब्दो के वाचक जिन सस्कृत शब्दो का प्रयोग किया है, उनके अनेक अर्थ होते है, हो सकते है। उनको कौनसा अर्थ अभिप्रेत था—इसका प्रसग या संदर्भ के विना निर्णय करना अत्यत कठिन है। यही कारण है कि देशीनाममाला के अनेक शब्दो का भ्रम-पूर्ण एव अयथार्थ अर्थ भी कर दिया गया है। उदाहरण के लिए रामानुज स्वामी की शब्द सूची द्रष्टव्य है। उसमे कई शब्दों के अर्थ विमर्शणीय एवं सशोधनीय है। जैसे—

आचार्य हेमचन्द्र ने 'आउस' शब्द का सस्कृत अर्थ 'कूर्च' दिया है। कूर्च शब्द के दाढी और कूची—दो अर्थ होते हैं। रामानुज ने इसका अर्थ कूंची (Brush) किया है, किन्तु इसका वास्तविक अर्थ दाढी होना चाहिए। इसके सही या गलत अर्थ का निर्णय आचार्य हेमचद्र द्वारा प्रस्तुत इस उदाहरण गाथा से हो सकता है—

१ देशीनाममाला, १।३९ वृत्ति।
२. वही, १।२१ वृत्ति।
३. वही, १।२० वृत्ति।
४. वही, १।३७ वृत्ति।

"सआयाम-आसयसेन्नं तुह पेच्छिय जाय-आउर-आलीला ।
आलत्थपिच्छच्छत्ते छड्डिय रिउणो अणाउसा जंति ॥ १।५३।६५ ।

इसमे शत्रुओ की पराजय का सुन्दर चित्रण करते हुए कहा गया है कि हे राजन् ! तुम्हारी शक्तिशाली सेना को निकट आयी जानकर युद्ध के निकटवर्ती भय से भयभीत तुम्हारे शत्रु मयूरपिच्छीनिष्पन्न छत्रो को छोडकर बिना दाढी-मूछ वाले मर्द बनकर युद्ध-क्षेत्र से पलायन कर रहे है। इस वर्ण्य प्रसग के आधार पर यह स्पष्ट है कि यहां 'आउस' का अर्थ कूची नही, दाढी मूछ ही होना चाहिए।

इसी प्रकार 'आहुदुर' (१।६६) शब्द का अर्थ हेमचन्द्र ने 'बाल' किया है। रामानुजस्वामी ने 'वाल' का अर्थ पूछ (Tail) किया है, जो ठीक नही है। निम्न उदाहरण गाथा के संदर्भ मे इसका 'बालक' अर्थ उचित प्रतीत होता है—

आमोरय ! सिरिआसंग ! तए आहुंदुरा करि-हरीण ।
मित्त-आसवण-अमित्तआलयण-दुवारेसु संघडिया ॥१।५४।६६।

'हे विशेषज्ञ ! लक्ष्मी के वासगृह ! तुमने मित्रो के गृहद्वारो पर हाथी के बच्चो का तथा शत्रुओ के गृहद्वारो पर वंदर के बच्चो का संघटन/निर्माण किया है।'

डॉ. भयाणी का देशी शब्दो पर किया गया अनुसंधान अत्यन्त महत्व-पूर्ण है। इन्होने देशीनाममाला के शब्द-अनुक्रम मे रामानुजस्वामी द्वारा दिये गए इंग्लिस अर्थो की समालोचना करते हुए १७५ शब्दो की नोध प्रस्तुत कर उनके द्वारा कृत अर्थो को भ्रामक और अनभिप्रेत बताया है। इन्होने इन शब्दो का अर्थ जो हेमचद्र को अभिप्रेत था उसका निर्देश भी किया है। उनमे से कुछेक शब्द सही-गलत अर्थो के साथ इस प्रकार है[1]—

मूल शब्द	सही अर्थ	रामानुजकृत गलत अर्थ
अच्छिविअच्छी	परस्पर आकर्षण, आपसी खीचतान	Mutual attraction
अजराउर	उष्ण	Heat
आमलय	नूपुर-गृह, नूपुर रखने की पेटी	Dressing room
आरंदर	१. अनेकान्त, जनसकुल	Not alone
	२. सकट, संकीर्ण	Difficulty
आलीवण	प्रदीपनक, प्रदीप्त अग्नि	Illuminating
इदड्ढलअ	इन्द्रोत्थान, इद्रध्वज को हटाना	Awakening Indra
इरमदिर	करभ	A young elephent
उअहारी	दोग्ध्री, दूध दुहने वाली स्त्री	A milch cow

१ स्टडीज इन हेमचन्द्राज देशीनाममाला, पृ ५७-८२ ।

अधिकृत विद्वानो ने प्राकृत (अशिक्षितों की) भाषा कहा है। इस बात का समर्थन पतंजलि और भरत भी करते हैं। पाणिनि के धातु पाठ मे कई धातुएं ऐसी आई है जिनका प्रयोग उनके पूर्व की साहित्यिक भाषा मे नही मिलता। इनका विकास आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक आर्यभाषाओ, विशेषतया हिंदी मे मिलता है। जैसे—

संस्कृत	हिंदी
अड्ड	अड़ना
कड्ड	कडा
वाड	वाढ
जिमु	जीमना, भोजन करना

संस्कृत मे घोडे के लिए घोटक और अश्व—ये दो शब्द मिलते हैं। स्थिति के अनुसार प्रथम लोकभाषा से आया हुआ शब्द रहा होगा और द्वितीय शिक्षितो की भाषा का शब्द रहा होगा। शिक्षितो का अश्व शब्द आज हिंदी मे भी उसी वर्ग के लोगो का शब्द है, जबकि घोटक-घोडअ-घोड़ा आदि रूपों मे परिवर्तित होता हुआ सामान्यजनो द्वारा व्यवहृत होता है। इसी प्रकार कुत्ते के लिए कुक्कुर और श्वान, बिल्ली के लिए बिलाड़ी और मार्जारी शब्द व्यवहृत होते रहे है।[1]

वामन के मतानुसार 'जो देशी शब्द बहुत व्यापृत हों, उन्हे संस्कृत काव्यो मे प्रयुक्त किया जा सकता है।'[2] यही कारण है कि सैकडों शब्द संस्कृत कोशो एव देशी कोशो—दोनो में है। जैसे—

अमरकोश	अभिधानचिन्तामणि	देशीनाममाला
—	कङ्केल्लि ११३५	अंकेल्लि १।७
		कंकेल्लि २।१२
—	गोस १३८ टी	गोस २।९६
गोसर्ग १।४।३	गोसर्ग १३८ टी	गोसग्ग २।९६
जलनीली १।१०।३८	जलनीलिका ११६७	जलणीली ३।४२
डुलि १।१०।२४	दुलि १३५३	दुलि ५।४२
—	तम्पा, तम्रा १२६६	तंबा ५।१
तरस २।६।६३	तरस ६२२	तरस ५।४
तुङ्गी २।४।१३९	तुङ्गी १४३ टी	तुगी ५।१४
दाक्षाय्य २।५।२१	दाक्षाय्य १३३५	दक्खज्ज ५।३४
—	प्रखर, प्रक्षर १२५१	पक्खरा ६।१०
प्रतिसीरा २।६।१२०	प्रतिसीरा ६८०	पडिसारी ६।२२

१. देशी नाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ १७०-१७४।
२. काव्यालंकार ५।१।१३।

अभिधानचिन्तामणि कोश की स्वोपज्ञवृत्ति मे कही-कही शब्दो के देशी और सस्कृत—दोनो होने का स्पष्ट निर्देश भी किया गया है। यथा—

गोसो देश्याम्; संस्कृतेऽप्येके (१३८ टी)।
तुङ्गी देश्याम्; संस्कृतेऽपि (१४३ टी)।
विस्कल्लो देश्याम्; संस्कृतेऽपि (१०६० टी)।

इसी प्रकार दोहनपात्र के अर्थ मे पारी शब्द का प्रयोग शिशुपालवध (१२।४०) और देशीनाममाला (६।३७)—दोनो मे है।

कृश अर्थ के वाचक 'छात' शब्द की भी यही स्थिति है। इस शब्द के वारे मे हेमचन्द्राचार्य ने स्वय प्रश्न उपस्थित कर उस पर पर्याप्त विमर्श किया है। वे लिखते है—

'महाकवि माघ ने अपने सस्कृत महाकव्य शिशुपालवध में 'छात' शब्द का प्रयोग कृश अर्थ में किया है। प्रश्न होता है फिर यह शब्द देशी कैसे ? सस्कृत में 'छोंच्' धातु अतकर्म या छेदन अर्थ मे प्रयुक्त है और लोक-व्यवहार मे भी इसी अर्थ मे प्रचलित है। इस धातु से निष्पन्न 'छात' शब्द कृश अर्थ का वाचक नही वन सकता। यद्यपि धातुए अनेकार्थक होती है, किंतु उनका प्रयोग लोक-व्यवहार या लोक-प्रसिद्धि पर निर्भर है। कृश अर्थ मे 'छात' शब्द का प्रयोग माघकवि ने ही किया है। अन्यत्र छेदन अर्थ के अतिरिक्त इसका दूसरे अर्थ मे प्रयोग देखने मे नही आया।"[1]

देशीनाममाला मे 'दुल्ल' शब्द वस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त है। दुकूल शब्द भी वृक्ष तथा वृक्ष की छाल से निष्पन्न वस्त्र के अर्थ में देशी होना चाहिये। वाद में संस्कृत कोशो मे यह शब्द सूक्ष्म रेशमी वस्त्र के अर्थ मे प्रयुक्त होने लगा हो—यह अधिक सभव लगता है। नालिकेर, ताम्बूल आदि शब्द भी देशी होने चाहिये। वाद मे ये शब्द सस्कृत साहित्य मे स्वीकृत कर लिए गये। ऐसे अनेक देशी एवं रूढ शब्द सस्कृत भाषा की सम्पत्ति वन चुके है जिन्हे आज देशी कहना कठिन लगता है।

देशी धातुएं

इस कोश मे अनेक देशी धातुए परिशिष्ट २ (देशी धातु-चयनिका) में संगृहीत है। पाठक की सुविधा की दृष्टि से हमने इन धातुओ को मूल देशी

---

१ देशीनाममाला ३।३३ वृत्तिः 'छाओ वुभुक्षित' कृशश्च। ननु 'छातोदरी युवदृशां क्षणमुत्सवोऽभूत्' (माघ सर्ग ५ श्लोक २३) इत्यादौ 'छात' शब्दस्य कृशार्थस्य दर्शनात् कथमयं देश्यः ? नैवम्, छेदनार्थस्यैव 'छात' शब्दस्य साधुत्वात्। न च धात्वनेकार्थता उत्तरमत्र। अनेकार्थता हि धातूनां लोकप्रसिद्ध्या। लोके च 'छात' शब्दस्य छेदनार्थं मुक्त्वा अस्यैव कवेः प्रयोगः नान्येषाम्—इत्यलं वहुना।'

शब्दों के साथ न देकर इनका पृथक् संग्रहण किया है। इन धातुओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—

१. देशी धातुए।

२. आदेश प्राप्त धातुए।

प्रथम कोटि की धातुओं मे कही-कही व्याख्याकारो ने यह देशी वचन है, यह देशी पद है—ऐसा स्पष्ट निर्देश किया है। जैसे—

खलाहि देशीपदमपसरेत्यस्यार्थे।
जूहंति त्ति देशीशब्दत्वाद् आनयन्ति।
णिण्णाइंति देशीपदत्वादधोगच्छति।
फुरावेंति त्ति देशीपदमेतद् अपहारयन्ति।
रूसेह त्ति देशीवचनत्वाद् गवेषयत।
चाडुइत्ति देशीवचनमेतत् नश्यतीत्यर्थः।
विप्फालेइ देशीवचनमेतत् पृच्छतीत्यर्थः।

आदेश प्राप्त धातुओ को कुछ विद्वानो ने तद्भव के रूप मे स्वीकार किया है। हेमचन्द्राचार्य ने पूर्वाचार्यो की देशी अवधारणा को उल्लिखित कर इन्हे धात्वादेश प्रकरण मे समाविष्ट किया है। वे लिखते हैं—एते चान्यैर्देशीषु पठिता अपि अस्माभिर्धात्वादेशीकृता[1]—हमारे पूर्ववर्ती देशीकारो ने इन धातुओ को देशीधातुओ के रूप मे सगृहीत किया है, पर हमने इन्हे आदेश प्राप्त धातुओ के रूप मे ग्रहण किया है।'

किंतु आचार्य हेमचन्द्र देशीनाममाला मे स्थान-स्थान पर सकेत करते है कि अमुक धातु हमने धात्वादेश मे बता दी है, इसलिए यहां उसका कथन नहीं किया है। जैसे—

अइच्छइ, अक्कुसइ—गच्छति। अवक्खइ—पश्यति। अप्पाहइ—संदिशति। अल्लत्थेइ—उत्क्षिपति। एते धात्वादेशेषु शब्दानुशासने अस्माभिरुक्ता इति नेहोपात्ताः। (१।३७ वृ)

उप्फालइ—कथयति उद्धुमाइ—पूर्यते इत्यादयो धात्वादेशेष्वस्माभिरुक्ता इति नोच्यन्ते। (१।११७ वृ)

चुलुचुलइ—स्पन्दते इति धात्वादेशेषूक्तमिति नोक्तम्। (३।१८ वृ)

चोप्पडइ—म्रक्षति इति धात्वादेशेषूक्तमिति। (३।१९ वृ)

जूरइ खिद्यते क्रुध्यति च इति धात्वादेशेषूक्तमिति नोक्तम्। (३।५२ वृ)

टिविडिक्कइ मण्डयति, टिरिटिल्लइ भ्राम्यति धात्वादेशेषूक्ताविति नोक्तौ। (४।३ वृ)

इन निर्देशो से यह सम्भावना की जा सकती है कि हेमशब्दानुशासन के

१. प्राकृत व्याकरण ४।२ टीका।

धात्वादेश प्रकरण मे इन धातुओ का आख्यान यदि पहले नही किया होता तो वे अवश्य इन्हे देशीनाममाला में देशीरूप मे स्वतंत्र स्थान देते। और यह वास्तविकता भी है कि टिविडिक्क, टिरिटिल्ल आदि सैकडो शब्द ऐसे है जिनकी समानता/तुल्यता का वहन करने वाले शब्द सस्कृत मे उपलब्ध नही है। आगम-व्याख्या-ग्रंथो मे आचार्य हरिभद्र, आचार्य मलयगिरि आदि व्याख्याकारों ने कई स्थानो पर आदेश प्राप्त धातुओ के देशी होने का स्पष्ट निर्देश भी किया है। जैसे—साहइ त्ति देशीवचनतः कथयति (आवहाटी १ पृ १६०)। 'साह' धातु 'कथ' धातु के आदेशरूप मे प्राप्त है।[1]

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार है—

जोअ (दृश्) जोएइत्ति देशीवचनमेतद् निरूपयति।
झोस (गवेषय्) झोसेह त्ति देशीवचनत्वाद् गवेषयत।
दुरुह (आ+रुह्) आरोहणे देशी।
फव्वीह (लभ्) फव्वीहामो त्ति देशीपदत्वाद् लभामहे।

इसी आधार पर हमने सभी आदेश प्राप्त धातुओ को देशी धातु के अन्तर्गत रखा है। यद्यपि अनेक आदेश ऐसे है जिनका सस्कृत रूप सभव है, वे देशी जैसे प्रतीत भी नही होते, जैसे— भञ्ज् को 'सूड' आदेश होता है। सूदन विनाश के अर्थ मे सस्कृत मे भी प्रसिद्ध है, किन्तु आदेशप्राप्त होने से इसे देशी के अन्तर्गत रखा है। इसी प्रकार 'दुमण' शब्द दून् धातु का आदेश-प्राप्त रूप है।

देशी धातुओ के पृथक् सग्रहण के सदर्भ मे आचार्य हेमचन्द्र का अभिमत विशेष ज्ञातव्य है। उनका मन्तव्य है कि देशी शब्दसग्रह मे धात्वादेश-प्रकरण का सग्रह उचित नही है, क्योकि देशीसग्रह मे उन्ही शब्दो का ग्रहण उचित है जिनका अर्थ सिद्ध या प्रसिद्ध है, जो साध्यमान नही है। धात्वादेशो का अर्थ साध्य है, सिद्ध नही। दूसरी बात, त्यादि, तुम्, तव्य आदि प्रत्ययो की बहुलता के कारण धातुओ के अनेक रूप बनते है जिनका संग्रहण सम्भव नही है।[2]

देशीनाममाला मे अनेक धातुमूल शब्दो का प्रयोग हुआ है। यथा—आरोग्गिय, आहुडिय, आडुआलिय, आसरिअ। 'करवाना' अर्थ का सूचक 'णिच्' प्रत्यय लगाने से ये नामधातु बन सकती है। यथा—आरोग्ग करोति आरोग्गइ। आहुड करोति आहुडइ। आडुआलि करोति आडुआलइ इत्यादि।

---

१ प्राकृत व्याकरण, ४।२।

२. देशीनाममाला, १।३७ वृत्तिः 'न च धात्वादेशानां देशीषु संग्रहो युक्तः। सिद्धार्थशब्दानुवादपरा हि देशी साध्यार्थपराश्च धात्वादेशाः। ते च त्यादि-तुम्-तव्यादिप्रत्ययैर्बहुरूपाः संग्रहीतुमशक्या इति।'

इस प्रकार इन नामो से धातु तथा धातु से भूतकृदन्त आदि क्रियावाचक शब्द बनाये जा सकते है। सर्वत्र क्रियावाची शब्दो मे यह नियम लागू किया जा सकता है।[1] उदाहरण के लिए कुछ अन्य शब्दों को लिया जा सकता है—अविय (कथित), अट्टट्ट (गत), अज्झत्य (आगत)—यद्यपि ये तीनो शब्द क्रियावाचक भूतकृदन्त के रूप मे है, तथापि त्यादि के रूप में इनका प्रयोग ग्रन्थो मे उपलब्ध नही हुआ इसलिए धात्वादेश मे हेमचन्द्राचार्य ने इन्हे निबद्ध नही किया।[2]

अवरुण्डिय शब्द आलिंगन अर्थ मे देशी है। इसके मूल मे धातु है—अवरुंड। अवरुडइ, अवरुडिज्जइ, अवरुंडिऊण इत्यादि क्रियापदो का प्रयोग मिलने पर भी आचार्य हेमचन्द्र ने इसे धात्वादेश प्रकरण में समाविष्ट नही किया, क्योकि उनके पूर्ववर्ती आचार्यों ने भी इसे धात्वादेश मे स्थान नही दिया।[3]

आचार्य हेमचन्द्र अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते है कि अज्झस्सइ, अज्झसियं इत्यादि प्रयोगो के आधार पर अज्झस्स शब्द को धात्वादेश मे ग्रहण करना चाहिए था। प्राचीन देशीसग्रहकारो का अनुसरण करते हुए हमने इसे धात्वादेश मे न लेकर अज्झस्स (आक्रुष्ट) शब्द के रूप मे देशीसंग्रह मे सगृहीत किया है।[4]

इन शब्दो एव धातुओ को आधार मानकर इस कोश मे हमने कुछ ऐसी धातुओ का ग्रहण किया है जो अन्य शब्दकोशों मे नही है। जैसे—

आलक—लंगडा करना, पंगु करना।
आसगल—आक्रात करना, प्राप्त करना।
आसर—सम्मुख आना।
इघ सूघना।
इग्घ—तिरस्कृत करना।
इल्ल—आसिक्त करना, मीचना।

इन धातुओ का निर्माण/संग्रहण सर्वथा मनगढत या निराधार नही है। हेमचन्द्राचार्य के निम्नाकित संदर्भों को इनकी आधारशिला कहा जा सकता है। 'उग्गहिय' शब्द का अर्थ है रचित, जो 'रचि' धात्वादेश से ही सिद्ध है। अर्थात् रच् धातु को 'उग्गह' आदेश हुआ है। उस उग्गह धातु से ही 'उग्गहिय' शब्द रचित अर्थ मे निष्पन्न हुआ है।[5]

१. देशी नाममाला, १।६९ वृत्ति।
२. वही, १।१० वृत्ति।
३. वही, १।११ वृत्ति।
४. वही, १।१३ वृत्ति।
५. प्राकृत व्याकरण, ४।९४; देशीनाममाला, १।१०४ वृत्ति।

रम् धातु को उब्भाव आदेश होता है। इसी उब्भाव से निष्पन्न हुआ है—उब्भाविय (सुरत, रतिक्रीडा)। इसी प्रकार ऊमलिय, ऊसुभिय (उल्लसित) शब्द उल्लस् धात्वादेश द्वारा सिद्ध है।[1] पच्चुद्धार और पच्चोवणी—ये दोनो क्रियाशब्द है। पच्चुद्धरिअ और पच्चोवणिअ इन्ही क्रियाशब्दो से निष्पन्न हुए है।[2]

कुछ धातुमूल शब्द एव धातुए स्वरूप की दृष्टि मे तद्भव प्रतीत होती है, पर अर्थ की दृष्टि से पूर्णतया देशी है। जैसे—

आसरिअ का अर्थ है—सम्मुख आया हुआ, न कि आश्रित।

आलकिय का अर्थ है—लगडा, न कि अलकृत।

गुज का अर्थ है—हसना, न कि गूजना।

हण का अर्थ है—सुनना, न कि हिसा करना।

प्रस्तुत कोश के संकलन की प्रक्रिया

अनेक स्थलो पर आगम तथा आगमेतर ग्रथो के व्याख्याकारो ने यह 'देशीशब्द' है ऐसा निर्देश किया है। यह निर्देश विभिन्न रूपो मे मिलता है—

पहकरो त्ति देशीशब्दोऽयं समूहवाची।
पादाभरणं लोके पागडा इति प्रसिद्धा।
कप्पट्ठ समयपरिभाषया बालक उच्यते।
उत्तूइओ त्ति देशीपदमेतद् गर्वे वर्तते।
इगमवि देशीपदं क्वापि प्रदेशार्थे वर्तते।
अणोरपारम्मि देशयुक्त्या अपारे।
अचियत्तं देशीवचनं अप्रीत्याभिधायकम्।
उप्पित्थशब्दस्त्रस्तव्याकुलवाची देशीति क्वचित्।
खोल्लं देशीशब्दत्वात् कोटरम्।
लोकभाषायां अंबाडी इति प्रसिद्धा।
चिचइअं ति देशीवचनतः खचितमित्युच्यते।
चोल्लकं देशीभाषया भक्तमुच्यते।
जगारीशब्देन समयभाषया रब्बा भण्यते।
णगारो देसीवयणेण पायपूरणे।
चेल्ललकानि देशीवचनाद् देदीप्यमानानि।
चुल्लशब्दो देश्यः क्षुल्लपर्याय।
चुक्कारशब्दो देश्यां शब्दवाची।

---

१ प्राकृत व्याकरण, ४।२०२; देशीनाममाला, १।१४१, १४२ वृत्ति।
२ देशीनाममाला, ६।२४ वृत्ति।

निहुयं ति आर्षत्वाद् निह्नुतम्।
प्राकृते पुष्परजः शब्दस्य लिंगिछ इति निपातः देशीशब्दो वा।
तुंडियं थिग्गलं देसीभासाए सामयिगी वा एस पडिभासा।
दिगिंछ त्ति देशीवचनेन बुभुक्षोच्यते।
दुवग्ग त्ति देशीवचनत्वाद् द्वावपि।
अमाघातो रूढिशब्दत्वाद् अमारिरित्यर्थः।
मरहट्ठविसयभासाए वा इत्थी माउग्गामो भण्णति।
सहणं ति देसीभासा सहेत्यर्थः।
वाउप्पइय त्ति वातोत्पतिका रूढ्यावसेया।
वालग्गपोइयातो त्ति देशीपदं वलभीवाचकम् अन्ये त्वाकाशतटागमध्य-स्थितं क्षुल्लकप्रासादमेव वालग्गपोइया य त्ति देशीपदाभिधेयमाहुः।
संघाडिय त्ति देशीपदमव्युत्पन्नमेव मित्राभिधायि।
वियडिशब्देन लोके अटवी उच्यते।
विसालिसेहिं ति मागधदेशीयभाषया विसदृशैः।
संगेल्ली समुदायः देश्योऽयं शब्दः।
सासेरा देशीपदत्वाद् यंत्रमयी नर्तकी।
साहिशब्दो राजमार्गे देशी।
सुरं मदिराखोलः देशविशेषप्रसिद्धो वा कश्चिद् द्रव्यः।
सुरूची रूढिगम्या आभरणविशेषः इति केचित्।
हुरत्था नाम देसीभासातो बहिद्धा।
होले त्ति निट्ठुरमामंतणं देसीए भविलवचनमिव।
होला इति देशीभाषातः समवया आमन्त्र्यते।

प्रारम्भ मे हमने प्राय उन्ही शब्दो का सकलन किया जहां देशी आदि का उल्लेख था, किन्तु जब आचार्य हेमचद्र की देशीनाममाला का पारायण किया तब अनेक दृष्टिया स्पष्ट हुई। इसलिए सभी आगम एवं व्याख्याग्रंथों का पुन. अवलोकन किया। इससे हजारो शब्द इस कोश में और जुड़ गए।

यहा कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत हैं जहां हमने देशीनाममाला को आदर्श मानकर शब्दो का चयन किया है—

यद्यपि कोश मे नञ् समास वाले शब्दो का संग्रहण प्राय: नही किया जाता, किन्तु देशीनाममाला मे कुछ ऐसे शब्द भी मिलते है। जैसे—अणच्छिआर (अच्छिन्न), अणिझिय (अनिंदनीय)। इस आधार पर हमने भी ऐसे शब्दो का संकलन किया है। जैसे—अतितिण, अचोक्ख, अच्छिवक, अजढर आदि।

आचार्य हेमचंद्र ने ऐसे अनेक शब्दों को देशी माना है जिनकी संस्कृत छाया सभव है, किन्तु संस्कृत मे वे प्रसिद्ध नही है। जैसे—

अंक (अङ्क) निकट।

अक्खलिय (अस्खलित) आकुल-व्याकुल।

अदंसण (अदर्शन) चोर।

अमय (अमृत) चांद।

इसी आधार पर प्रस्तुत कोश मे भी अनेक शब्दो का समावेश किया गया है। जैसे—

अच्चिय (अर्चित) मूल्यवान्।

अवतंस (अवतंस) पुरुषव्याधि नामक रोग।

आयंस (आदर्श) घोडे का आभूपण।

तरमल्लिहायण (तरोमल्लिहायन) युवा।

पइरिक्क (प्रतिरिक्त) एकांत।

देशीनाममाला मे इल्ल और इर प्रत्यय वाले कुछ शब्दों का सग्रहण है। जैसे—अंबिर (आम), सच्चिल्लय (सत्य), तत्तिल्ल (तत्पर); लोहिल्ल (लोभी), णच्चिर (रमणशील)। इसी आधार पर दिट्ठिल्लिय, गतिल्लिय आदि शब्दों को हमने भी देशी की कोटि मे रखा है। आचार्य मलयगिरि ने पढमेल्लुग शब्द के लिए देशी का निर्देश किया है।[1] इसलिए सभव लगता है कि किसी क्षेत्र-विशेष मे इल्लादि-प्रधान शब्दों का व्यवहार अधिक प्रचलित रहा हो, उसी के आधार पर इसे देशी माना हो। 'इर', 'इल्ल' प्रत्यय से सम्बधित हजारो शब्द आगम एव व्याख्याग्रथो मे मिलते है। किन्तु सबका समावेश इसमे नही हो सका है।

प्राकृत शैली से जिन शब्दो का रूप परिवर्तित हो गया है, वैसे अनेक शब्द देशीनाममाला मे संगृहीत है। हमने भी कुछ शब्द इस कोश मे सम्मिलित किए हैं, जैसे—आघविय[2], तिगिंछ[3] आदि।

देशीनाममाला मे राजा तथा गाव-विशेष के नाम भी देशी रूप मे लिए गए है। राजा सातवाहन के लिए तीन शब्द आए है—कुतल, चउरचिंध और हाल तथा गुजरात के एक गाव 'मोढेरक' के लिए 'भयवग्गाम' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

इसी आधार पर हमने भी कुछ व्यक्तियो, देशो तथा नगरों के नामो को देशी के अंतर्गत लिया है। जैसे—गोब्बर, कुडक्क, कोक्कास, तुरक्क आदि।

आचार्य हेमचद्र ने संख्यावाची शब्दो को भी देशी के अतर्गत समाविष्ट

---

१. आवश्यक, मलयगिरि टीका पत्र ११६ : प्रथमा एव प्रथमेल्लुका देशीपदमेतत्।

२. आघवियं ति प्राकृतशैल्या छांदसत्वाच्च गुरोः सकाशादागृहीतम्।

३. प्राकृते पुष्परजःशब्दस्य तिगिंछ इति निपातः देशीशब्दो वा।

किया है। जैसे—पचावण्ण, पणवण्ण (पचपन) आदि। इसी आधार पर हमने भी पण, चालीस, पणयाल, अडयाल, पणपण्ण आदि संख्यावाची शब्द लिए है। सख्यावाची शब्दो के अतर्गत अडड, अडडग, हुहुय, हुहुयंग, अवव, अववग आदि शब्द भी महत्त्वपूर्ण है। ये शब्द संस्कृत कोशो मे तो अप्राप्त है ही, अन्य परम्पराओ मे भी नही मिलते। ये जैन गणित के विशेप पारिभाषिक शब्द है। अत इन्हे देशीशब्दो के रूप मे स्वीकृत किया है।

सामान्य कोशो मे क्त्वा प्रत्ययात शब्द नही मिलते। किन्तु हमने मूल-रूप मे प्रत्यय के साथ ही उन शब्दो का इस कोश मे समावेश किया है। जैसे—अगोहलेऊण, अप्पाहट्टु आदि। ऐसे शब्दो को लेने का कारण यह है कि कही-कही मूल शब्द का प्रयोग आगमो मे नही मिलने से इन शब्दो द्वारा उन अर्थों का ज्ञान हो जाता है।

अनुकरणवाची शब्दो के विषय मे विद्वानो मे मतभेद है। कुछ इन्हे देशी मानते है तथा कुछ इन्हे देशी रूप मे स्वीकार नही करते। किन्तु हमने इस कोश मे अनेक अनुकरणवाची शब्दो को देशी रूप में स्वीकार किया है। जैसे—घणघणाइय, चवचव, छडछडा, छु, छुक्कारण, थिविथिवित, दुहदुहग।

वाक्यालकार के रूप मे प्रयुक्त अव्यय भी देशी शब्दो के अंतर्गत समाविष्ट है। क्योकि कही-कही टीकाकारो ने भी इन्हे देशी रूप में स्वीकार किया है। जैसे—'आइ ति देशीभाषाया', 'खाइणं' ति देशीभाषया वाक्यालकारे। प्राकृत के पादपूरक अव्ययो को भी देशी के रूप मे स्वीकार किया है। जैसे—जे, मो, र, से, अदुत्तरं, बले। इनके देशी होने के कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं—

१ से शब्द· मागधदेशीप्रसिद्धो निपातस्तच्छब्दार्थः।

२ ऊति णाम मरहट्ठादिसु णादि दुगुछिज्जति।

३. णगारो देसिवयणेण पायपूरणे।

४. वाणमिति पूरणार्थो निपात·।

यद्यपि 'क' प्रत्यय स्वार्थ मे होता है किन्तु इस कोश मे मूलशब्द के साथ जहा भी स्वार्थ का द्योतक क, अ, य, ग और त आदि जुड गए है उन्हे अर्थ भिन्न न होने पर भी पृथक् रूप से ग्रहण किया है। जैसे—

अंछण, अंछणय—विस्तार।

कडच्छु, कडच्छुत, कडच्छुय—चम्मच।

इन्हे स्वतत्र रूप से ग्रहण करने के दो कारण है—

१. इन शब्दो का ग्रथो मे ऐसा प्रयोग मिलता है। अत. पाठक की सुविधा की दृष्टि से उनको अलग-अलग ग्रहण किया है। यदि साहित्य मे 'कुड' शब्द की अपेक्षा 'कुडग' का प्रयोग है तो पाठक 'कुडग' शब्द ही देखना चाहेगा। आचार्य हेमचंद्र ने देशीनाममाला मे कही-कही ऐसे शब्दो का निर्देश भी किया है। जैसे—

उवकययं कप्रत्ययाभावे उवकयं सज्जितम् (१।११६ वृत्ति)।
जच्छंदओ स्वच्छन्दः कप्रत्ययाभावे जच्छंदो (३।४३ वृत्ति)।

इसी प्रकार कही-कही दीर्घ-ह्रस्व मात्रा के अतर वाले, अ/आ/इ/उ/ग/घ/ह के अंतर वाले तथा व्यञ्जन-द्वित्व वाले शब्द समानार्थक होने पर भी पृथक् रूप से ग्रहण किए गए है। जैसे—

चुडलय, चुडलि, चुडलिय, चुडली, चुडल्लि, चुडिलीय—जलती हुई लकडी।

गुम्मी, गुम्ही, गोमी, गोम्मी, गोम्ही—कनखजूरा।
उयरिणिया, ऊरणिया, ऊरणीया—जंतु-विशेष।
भिलुगा, भिलुघा, भिलुहा—भूमि की रेखा।

२. इन्हे भिन्न ग्रहण करने का दूसरा कारण—कभी-कभी शब्द मे अ/आ/क/य/ग आदि जुडने से अर्थ मे बहुत भिन्नता आ जाती है। जैसे—

- अवल्ल—वैल। अवल्लय—नौका खेने का एक उपकरण।
- उद्धच्छवि - विपरीत। उद्धच्छविअ — सज्जित।
- उंड—१. मुख, २. ऊंडा। उंडअ—पाव मे पिंड रूप मे लगे उतना गहरा कीचड़। उंडग — स्थण्डिल।
- पयल— नीड। पयला— निद्रा। पयलाअ - सर्प। पयल्ल - प्रसृत।
- पडिसारिअ—स्मृत। पडिसारी —यवनिका।

इस कोश के मूलभाग मे आदि नकार वाले शब्दो को नही रखा गया है। आगमो मे जहां कही आदि नकार वाले शब्द प्राप्त हुए, उनके स्थान में 'ण' कर दिया गया है। क्योकि देशी शब्दो की आदि मे नकार का सर्वथा अभाव है। हेमचद्राचार्य के मतानुसार 'देश्य प्राकृत मे आदि नकार असंभव ही है। प्राकृत व्याकरण मे 'वा आदौ' सूत्र के द्वारा जो वैकल्पिक आदि ण का विधान किया गया है, वह तो मात्र सस्कृत शब्दो से निष्पन्न प्राकृत शब्दो की अपेक्षा से है।"[1]

सामान्यत सस्कृत या प्राकृत मे उपसर्ग जुडने पर अर्थ परिवर्तित हो जाता है। हेमचद्राचार्य के अभिमत मे देशी शब्दो का उपसर्ग के साथ कोई स्वतंत्र सम्बध नही है। जैसे—उच्छिल्ल—छिद्र (दे १/६५)। छिल्ल—छिद्र (दे ३/३५)। यहा उत्पूर्वक छिल्ल शब्द नही है, लेकिन छिल्ल और

---

१. देशीनाममाला, ५।६३ वृत्ति:
नकार आदयस्तु देश्याम् असम्भविन एवेति न निबद्धाः। यच्च 'वा आदौ' (प्रा १।२२९) इति सूत्रितम् अस्माभिः तत् संस्कृतभवप्राकृतशब्दापेक्षया न देशी अपेक्षया इति सर्वमवदातम्।

उच्छिल्ल—दोनो स्वतत्र शब्द है। दोनों का अर्थ एक ही है—छिद्र। इसी प्रकार फेस-उप्फेस, उज्झिखिय-झिखिय आदि शब्दो की स्थिति है।[1]

साहित्य मे हमे जो शब्द जिस रूप मे प्रयुक्त मिला उसका सकलन हमने उसी रूप मे किया है। जैसे - बौद्ध भिक्षु के लिए तच्चणिणय पाठ प्रसिद्ध है, किंतु कही-कही ग्रथो मे तव्वणिणय पाठ भी मिलता है। यहां बहुत अधिक सभावना है कि प्राचीन लिपि मे च और व की समानता से तच्चणिणय के स्थान पर तव्वणिणय शब्द पढा गया हो। हमे दोनो रूप प्राप्त हुए है। अत: दोनो का सकलन कर दिया है। यह भी बहुत सभव है कि 'तव्वणिणय' शब्द बौद्ध भिक्षु के अर्थ मे अनेक स्थानो पर प्रचलित रहा हो। आचार्य हेमचंद्र ने 'च', 'व', 'ब' के व्यत्यय के अनेक शब्द देशीनाममाला मे संगृहीत किए है। जैसे - चालवास-बालवास, चिद्दविअ-विद्दविअ, चुक्क-वुक्क, चुक्कड-वोक्कड आदि। इसी प्रकार मगदतिया मालती के लिए प्रसिद्ध है किंतु मदगंतिया पाठ भी मिलता है। संभव है लिपिकार द्वारा वर्ण-व्यत्यय हो गया हो या इसी रूप मे यह प्रचलित रहा हो।

कल्पसूत्र मे 'अवामसा' शब्द अमावस्या के अर्थ मे प्रयुक्त है। प्रथम दृष्टिपात मे लगता है कि यह 'अमावस' शब्द मे वर्णव्यत्यय होने से या लिपि-दोष होने के कारण 'अवामसा' रूप बन गया होगा। किंतु कल्पसूत्र की चूर्णि तथा टिप्पणक की सभी प्रतियो मे 'अवामंसा' शब्द मिलने से लगता है कि उस समय अमावस के लिए अवामंसा शब्द ही प्रचलित रहा होगा। मुनि पुण्यविजयजी ने इस पर पर्याप्त विमर्श किया है।[2]

'उत्तुहिय' के स्थान पर उड्डुहिय शब्द भी कही-कही मिलता है जो कि हेमचद्राचार्य की दृष्टि मे लिपिभ्रम ही है।[3] इसी प्रकार अइरिप-अइरिप्प, अबसमी-अंबमसी, उत्तम्पिअ-उत्तम्मिअ, झरंक-झरत—इन शब्दों मे भी लिपिभ्रम की संभावना की जा सकती है। इस विषय मे आचार्य हेमचंद्र अपना अभिमत प्रस्तुत करते हुए कहते है कि हो सकता है लिपिभ्रम न भी हो।

---

१. देशीनाममाला, १।९५ वृत्ति :
न हि देशीशब्दानामुपसर्गसम्बन्धो भवति।

२. कल्पसूत्र टिप्पनक, पृष्ठ १६ :
विश्वेष्वपि चूर्ण्यादर्शेषु टिप्पणकादर्शेषु च अवामंसा। इत्येव पाठो वरीवृत्यते इति सम्भाव्यते तत्कालीनभाषाविदां अमावसाऽर्थको अवामंसा-शब्दोऽपि सम्मतः इति नात्राशुद्धपाठाशंका विधेयेति।

३. देशीनाममाला, १।१०५ वृत्ति :
उत्तुहियं तकारसंयोगस्थाने डकारसंयोगं केचित् पठन्ति। स च लिपिभ्रम एव इति।

दोनो रूपो में ही शब्दो का प्रचलन रहा हो। इसमे बहुश्रुत या सर्वज्ञ ही प्रमाण है।[1]

लिपिभ्रम के कारण कही-कही अर्थ का आमूलचूल परिवर्तन भी परिलक्षित होता है। 'पडीर' शब्द का अर्थ है—चोरणिवह अर्थात् चोरो का समूह। लिपिभ्रम के कारण किसी ने 'चोरणिवह' के स्थान पर 'वोरणिवह' पढ लिया और इस सदर्भ मे 'पडीर' का अर्थ बेरो (बदरी फल) का समूह हो गया।[2]

देशीनाममाला की वृत्ति मे आचार्य हेमचद्र ने अन्य आचार्यो के अर्थभेद, शब्दभेद तथा उनके मतो का भी उल्लेख किया है। जैसे—

केचित् प्रिये कायरो इत्याहुः।
अलमलवसहो सप्ताक्षरं नामेति गोपालः।
ऊसाइअं उत्क्षिप्तमिति धनपालः।
जंबुलं मद्यभाजनमिति सातवाहनः।
टोलं पिशाचमाहुः सर्वे शलभं तु राहुलकः।
खेआल् निःसह, असहन इत्यन्ये।
पेढालं वर्तुलमिति द्रोणः।
पेंडारो महिषीपाल इति देवराजः।

हमने इन सबका समावेश कोश के मूलभाग मे किया है।

कही-कही आचार्य हेमचद्र ने पूर्वज देशी कोशकारो द्वारा मान्य या प्रयुक्त देशी शब्द-सघटना के विषय मे ऊहापोह किया है। जैसे—अच्छिघरुल्ल, अच्छिहरिल्ल तथा अच्छिहरुल्ल—इन तीन शब्द-प्रयोगो मे उन्होने केवल 'अच्छिहरुल्ल' को अपने ग्रथ मे स्थान दिया है। शेष दो के लिए 'बहुज्ञाः प्रमाणम्' कहकर छोड दिया है। हमने ऐसे सभी शब्दों का सकलन किया है।

देशी शब्द विभिन्न ग्रंथो मे भिन्न-भिन्न रूप से प्रयुक्त हुए है। व्याख्याकारो ने किसी एक रूप को मुख्य मानकर दूसरे रूपो को पाठभेद में उल्लिखित किया है। यत्र-तत्र हमने उन पाठभेदो मे प्रयुक्त कुछेक देशी रूपों को टि और पा के उल्लेख के साथ इस कोश मे समाविष्ट किया है। जैसे—

उस्सूलग-उच्छूलग। कुंडिल्लग-कुंटुल्लिग। फुग्गफुग्ग-फुग्गपुग्ग।
भंभब्भूय-भंभाभूय। भुंभर-भुंभल-सुंभल।

कही-कही मूलशब्द तो हमे जैसा मिला वैसा ही रखा है, किन्तु कोष्ठक

---

१. देशीनाममाला, १।३७ वृत्ति :
केषांचिद् भ्रमोऽभ्रमो वेति बहुदृश्वान एव प्रमाणम्।
२. वही, ६।८ वृत्ति।

मे उसका सभावित शुद्ध रूप भी दे दिया है। जैसे—

ओट्टिय (दोट्टिय, दोद्धिय ?)
गोमाणसिया (गोमासणिया ?)
तल्लकट्ट (तल्लवत्त ?)
तूमणय (णूमणय ?)

जो शब्द आगम एव आगमेतर ग्रंथो तथा देशीनाममाला दोनो मे मिले है, उन शब्दो के दोनो प्रमाण-स्थलो का उल्लेख किया है। जैसे—

अइराणी (अंवि पृ २२३; दे १।५८)
अंगुट्ठी (उसुटी प ५४; दे १।६)
अणह (ज्ञा १।१८।२४; दे १।१३)

इसी प्रकार अणुय, पक्खरा, पडिहत्थ, पणवण्ण आदि आदि।

अनेक स्थलो पर मूलपाठ मे प्रसंग से शब्द का अर्थ भिन्न प्रतीत होता है तथा व्याख्याकार उसका भिन्न अर्थ करते है। ऐसी स्थिति मे हमने दोनो अर्थो का सप्रमाण उल्लेख किया है। जैसे—आडोलिया। टीकाकार ने इसका अर्थ रुद्ध किया है जबकि प्रसग से उसका अर्थ खिलौना होना चाहिए।[1] कन्नड हिन्दी कोश मे आदु-आडु शब्द खेलने के अर्थ मे गृहीत है।

इसी प्रकार सपादको द्वारा किए गए अर्थो पर भी हमने विमर्श किया है। निशीथचूर्णि का एक शब्द है अत्थभिल्ल। पादटिप्पण में इसका अर्थ शस्त्र-विशेष किया गया है। शब्द के आधार पर यह अर्थ ठीक भी लगता है - अत्थ अर्थात्-अस्त्र, भिल्ल अर्थात्-भाला। वहा जगली जानवरो के प्रसग मे यह शब्द आया है, अत. अत्थभिल्ल का अर्थ भालू होना चाहिए।[2]

जिस किसी शब्द के एकाधिक अर्थ है उनमे से हमारे द्वारा निरीक्षित ग्रथो मे प्राप्त अर्थो के प्रमाण प्रस्तुत किए गये है। शेष अर्थ हमने 'पाइयसद्दमहण्णवो' से विना प्रमाण के ग्रहण किए है, क्योकि प्रमाण हमने उन्ही ग्रथो के प्रस्तुत किए है, जिनका हमने स्वयं निरीक्षण किया है।

इस कोश में अनेक ऐसे शब्दो का भी सग्रहण है जो देशी है या नही, इस दृष्टि से विमर्शणीय हो सकते है। किन्तु अन्यान्य विद्वानो तथा कोशकारो द्वारा वे देशी रूप मे मान्य रहे है, अत हमने उनका उसी रूप मे सकलन किया है। इस सकलन का एकमात्र उद्देश्य है कि विभिन्न विद्वानों द्वारा देशीरूप मे स्वीकृत सभी शब्दो की उपलब्धि एक ही ग्रन्थ मे हो जाए।

---

१ ज्ञाताधर्मकथा, १।१८।८ : अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिंदुसए अवहरइ··· ··। टीका पत्र २४४ : आडोलिआओ—रुद्धाः।

२. निशीथचूर्णि २, पृष्ठ ९३ :
अदेसिको वा अडविपहेण गच्छति, तत्थ वि तरच्छ-वग्घ-अत्थभिल्लादिभयं।

प्रस्तुत कोश की विशेषता

एक ही अर्थ के वाचक भिन्न शब्दो के सदर्भ मे अन्य कोशो की भाति 'देखो' का निर्देश न कर पाठक की सुविधा के लिए उस शब्द का अर्थ वही दे दिया गया है। कही-कही शब्द के अर्थ की विस्तृत जानकारी तथा तुलना की दृष्टि से दो-चार स्थानो पर 'देखो' का निर्देश भी किया है। जैसे—**आणंदवड—देखें वहूपोत्ति। उक्कोडभंग—देखें खोडभंग।**

कोशो मे कही-कही एक शब्द का अर्थ देखने के लिए तीन-चार शब्द देखने पर भी अर्थ नही मिलता। पाइयसद्दमहण्णवो मे अनेक स्थलो पर ऐसा हुआ है। जैसे– पज्जुसवणा देखो पज्जुसणा। पज्जुसणा देखो पज्जोसवणा। पलोहिय देखो पलोभिअ। पलोभिअ देखो पलोभविअ। रम्ह देखो रंफ। रंफ देखो रप। अनेक स्थलो पर शब्दो के पास-पास आने से पुनरुक्ति दोष-सा प्रतीत हो सकता है किंतु सुविधा की दृष्टि से हमने सभी शब्दो का अर्थ प्रायः उनके सामने ही दे दिया है।

जहा दो समस्त शब्द एक अर्थ के वाचक है वहां देशी शब्द को अलग से प्रदर्शित करने के लिए ' ' चिह्न लगा दिया है, जैसे—'कन्न'लइय', 'अट्टण' साला आदि।

इस कोश मे अनेक ऐसे शब्द है जो अर्थ की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। भिन्न-भिन्न प्रसगो मे उन शब्दो के भिन्न-भिन्न अर्थ मिलते है। जैसे—अव्वो, कडिल्ल, भंड, वल्लर आदि।

प्रस्तुत कोश में प्रयुक्त ग्रंथो मे कुछ ग्रंथ देशी शब्दों की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जैसे—अगविज्जा, भगवती, आवश्यकचूर्णि, कुवलय-माला, नंदीचूर्णि, निशीथभाष्य एवं चूर्णि, व्यवहार भाष्य, वृहत्कल्पभाष्य आदि-आदि। इनमे नवीन एव अप्रचलित देशी शब्दो का प्रयोग हुआ है। जैसे—अंबखुज्ज, अक्खु, इद्ध, चोप्प, चोरालि, तेह, वियडासय आदि।

इस कोश मे वनस्पति, जीवजतु, आभूपण, खाद्यपदार्थ से सवंधित अनेक ऐसे शब्द है जो भिन्न-भिन्न क्षेत्रो से सवंधित है। अनेक स्थलो पर स्वय व्याख्याकार क्षेत्र-विशेष का उल्लेख भी करते है। जैसे—

मूयग—मूयग त्ति मेदपाटप्रसिद्धस्तृणविशेषः।

विरालिया— गोल्लविसए वल्ली।

धरच्छ—मगधकं धराक्षं च रूढिगम्यम्।

देश विशेष मे प्रचलित एव व्यवहृत होने वाले शब्द देश्य की कोटि मे आते है। क्योकि इनका मूलरूप न सस्कृत मे मिलता है और न प्राकृत मे। हमने भी अनेक ऐसे शब्दो का समावेश इसमे किया है जो क्षेत्र-विशेष से संबधित है। जैसे—नारिकेल, ताम्बूल, घोडग आदि। यद्यपि ये शब्द संस्कृत

साहित्य एवं कोशों मे भी मिलते है, किन्तु ये शब्द क्षेत्र-विशेष मे प्रचलित भाषाओ के है। बाद मे इनका संस्कृत साहित्य मे प्रयोग होने लगा। इसी प्रकार वारक/वारग शब्द संस्कृत मे घड़े के लिए प्रसिद्ध है किन्तु यह शब्द मरुधर देश मे मंगलघट के अर्थ मे प्रसिद्ध था—'वारकः मरुदेशप्रसिद्धनाम्ना मांगल्यघटः।'

पण्णवणा सूत्र मे अनेक जीव-जतुओ एव वनस्पतियों का नामोल्लेख हुआ है। उनकी पहचान को कठिन बताते हुए स्वय टीकाकार कहते है—देशतोऽवसेयाः। सम्प्रदायादवसेयः। लोकप्रतीतः। रूढिगम्यम् आदि।

जहा हमे नाम के बारे मे निश्चित जानकारी मिली उसका नामोल्लेख किया है। अन्यथा वनस्पति-विशेष, लता-विशेष, पुष्प-विशेष का उल्लेख किया है। इसी प्रकार आभूषणो के बारे मे भी आभूषण-विशेष का उल्लेख किया है।

इस कोश मे ऐसे अनेक देशी शब्द सकलित है जो प्राचीन भारत की सभ्यता एवं सस्कृति पर प्रकाश डालते है। जैसे—

आवाह, विवाह, आहेणग, पहेणग, गिरिजन, तरड्डयभत्त, मदणगिह, एमिणिआ, अण्णाण, आणंदवड, वहूपोत्ति, भोयडा आदि आदि शब्द सामाजिक रीति-रिवाजो एव परम्पराओ के सवाहक है। अचिरमज्जणक, अवयार, इन्दड्ढलय आदि शब्द उत्सवों तथा अड्डराणी, इंदियाली, उत, उयणिसय, कोटल, विटल आदि शब्द विशेष अनुष्ठानो एव मंत्रो के वाचक है।

अप्पसत्थभ, आपुरायण, आमोसल, कडूमी, कक्कितजाण, गल्लोल आदि अनेक शब्द विविध गोत्रो के वाचक है।

इसी प्रकार नानाप्रकार के शिल्पकर्म, पुस्तकें, जातियां, सिक्के, यान-वाहन, शस्त्र, रोग, खेल, जाल, वाद्य, वेशभूषा, खानपान, घर के अवयव, घरेलु उपकरण, पारिवारिक सम्बंध आदि के संसूचक सैकड़ो शब्द इस कोष मे सगृहीत है।

अमोसली, कडजुम्म, उग्गह, अमुदग्ग, किट्टि, णिगोद, फड्डग, पउट्ट-परिहार आदि पारिभाषिक शब्द भी इसमे सगृहीत है।

इस कोश मे अनेक एकार्थक देशी शब्दो का संकलन है। जैसे—छोटी तलाई के वाचक तीन शब्द है—खल्लर खिल्लूर छिल्लर शब्दा देश्या एकार्थका.।

इसी प्रकार और भी उदाहरण द्रष्टव्य है—

१. विदग्ध—छलिआ छइल्ल छप्पण्ण।

२. मां—अल्ला अव्वा अम्मा।

३. दुष्टघोडा—तंडीति वा गलीति वा मरालीति वा एगट्ठा।

४. पैंवद—पडियाणिया थिग्गलयं छंदतो य एगट्ठं।

कोश परम्परा मे प्राय यह देखा जाता है कि पुंल्लिग शब्द लेने के बाद उसी का स्त्रीलिंग शब्द स्वतत्ररूप मे नही लिया जाता। किंतु हमने स्त्रीलिंग एवं पुंल्लिग दोनो प्रकार के शब्दो को सगृहीत किया है। जैसे— पिल्लक-पिल्लिका, सिंगक-सिंगिका, कब्बट्ठ-कब्बट्ठी आदि आदि। इनको सगृहीत करने का एक विशेष उद्देश्य यह भी था कि कही-कही शब्द मे लिंग-परिवर्तन के साथ अर्थ-परिवर्तन भी हो जाता है। जैसे—हालाहल – स्वामी। हालाहला—ब्राह्मणी (कीट-विशेष)।

ओवासण, उवासणा और उपासना—ये तीनो एकार्थक है। इनका अर्थ है– क्षुरकर्म। उपासना टीकाकारो द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ शब्द है, किन्तु सस्कृत से अर्थ भिन्न होने के कारण यह देशी है। ऐसे अनेक संस्कृत-निष्ठ देशी शब्द इस कोश मे संगृहीत है। जैसे --छेलापनक, परिपूणक आदि।

कोश का बाह्य स्वरूप

प्रस्तुत ग्रन्थ के मूल भाग मे लगभग दस हजार देशी शब्दो का सकलन है। प्राय: शब्दो के साथ सदर्भ-स्थल भी निर्दिष्ट है जिससे पाठक उस अर्थ को भली-भाति हृदयगम कर सके। जैसे—

१. अतोवगडा नाम उवस्सयस्स अब्भतरं अंगण।
२. एरडइए साणे त्ति हडक्कायित· श्वा।
३. कुब्बति निम्न क्षासमित्यर्थ:।
४. रज्ज कागिणी भण्णति।

जहा अर्थ की स्पष्टता के लिए सदर्भ-स्थल अपेक्षित या अत्यावश्यक नही समझे गये, वहा केवल शब्द का अर्थ और प्रमाण का उल्लेख मात्र किया गया है।

इस देशी शब्दकोश का उद्देश्य आगम एवं उसके व्याख्या-ग्रन्थों के देशी शब्दो को सकलित करना था किन्तु कुवलयमाला, पाइयलच्छीनाममाला, प्राकृत व्याकरण एव सेतुबध के देशी शब्द भी मूल भाग मे संकलित है।

प्रस्तुत कोश के साथ दो परिशिष्ट भी संलग्न हैं। प्रथम परिशिष्ट अवशिष्ट देशी शब्दो का है। इसमे आगमेतर प्राकृत तथा अपभ्रश ग्रन्थो के ३३८१ देशी शब्दो का समावेश है। ग्रन्थ के मूलभाग मे हमने मूल ग्रन्थो का दो या तीन बार पारायण किया तथा अर्थ-निर्धारण की दृष्टि से भी मूलग्रन्थो का अनेक बार अवलोकन किया। इस परिशिष्ट मे हमने मूलग्रथ को नही देखा, किन्तु उनके सपादको ने जहां अन्त मे देशी शब्दो की सूची दी है, अथवा शब्द-सूची मे जिन शब्दो को देशीचिह्न से चिह्नित किया है, उन शब्दों का इसमे सकलन कर दिया है। पाइअसद्दमहण्णवो के सैकडो शब्द जो कोश के मूल भाग मे नही आए उनको भी इसी के अन्तर्गत रखा है। त्रिविक्रम के प्राकृत-

शब्दानुशासन के अन्त मे १६०० देशी शब्दो की सूची है। उनमें से कुछ शब्द हेमचन्द्र के देशी संग्रह में आ चुके हैं। शेष सभी शब्द इस परिशिष्ट में समाविष्ट हैं। यह ग्रंथ हमे बहुत बाद मे प्राप्त हुआ अतः हम इसके शब्दो को ग्रन्थ के मूल भाग मे समाविष्ट नहीं कर सके।

समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक ग्रन्थों मे भी यदि कहीं देशी शब्दों की सूची मिली है, उन शब्दों को भी हमने इस परिशिष्ट में सम्मिलित किया है। जैसे—'हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन" में लेखक 'भाषा शैली और उद्देश्य'—अध्याय के अन्तर्गत कुछ देशी शब्दों का संकेत करते हैं। वे कहते हैं—'यहां कुछ देशी शब्दों की तालिका दी जाती है। यद्यपि इन शब्दो मे कुछ शब्दो को संस्कृत से व्युत्पन्न किया जा सकता है पर मूलतः इन शब्दों को देशी कहा गया है।' ऐसा कह कर लेखक ने लगभग १६३ शब्दो का अर्थ सहित उल्लेख किया है, जिनमें कुछ शब्द देशीनाममाला के भी हैं। इस प्रकार जहां भी हमें देशी शब्द मिले, उनका बिना संदर्भ एवं प्रमाण के अर्थ सहित संकलन कर दिया है। इस परिशिष्ट मे प्रयुक्त ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं—

१. मुणिचन्द कहाणयं, २. कंसवहो, ३. वज्जालग्गं, ४. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन, ५. जंबूसामिचरिउ, ६. पउमचरियं, ७, आख्यानकमणिकोश, ८. अपभ्रंश काव्यधारा, ९. चउप्पन्नमहापुरिसचरियं, १०. गउडवहो, ११. वड्ढमाणचरिउं, १२. सुदंसणचरिउ, १३. रावणवह-महाकाव्यम्, १४. महापुराणम्, १५. णायकुमारचरिउ, १६. पउमचरिउ-भाग १ से ३, १७. पुहविचंदचरियं, १८. करकंडुचरिउ, १९. मयणपराजयचरिउ, २०. जसहरचरिउ, २१. सिरिवालचरिउ, २२. प्राकृतशब्दानुशासन।

इस परिशिष्ट में एकत्रित कुछेक देशीशब्द विमर्शणीय हैं। किन्तु हमने तत् तत् ग्रन्थ के विद्वान् संपादको के चिन्तन को मान्य कर उन शब्दो का यहां अविकल संकलन कर दिया है। अधिक से अधिक देशी शब्द एक ही ग्रन्थ में प्राप्त हों, यह इस संकलन का उद्देश्य है। प्रत्येक शब्द की समीक्षा हमें अभिप्रेत नहीं रही। सुधी पाठक इस बात को ध्यान में रखें।

दूसरा परिशिष्ट देशी धातुओं से सम्बन्धित है। इसमें १७४५ धातुएं हैं। हमने सन्दर्भ सहित तथा बिना सन्दर्भ वाली— दोनों प्रकार की धातुओं को साथ में ही रखा है। इनमें प्राकृत व्याकरण की सभी आदेशप्राप्त धातुओं का समावेश है तथा आगम तथा आगमेतर साहित्य में अन्य विद्वानो द्वारा मान्य देशी धातुओं का भी संकलन है। जिस संस्कृत धातु को आदेश हुआ है उसे भी कोष्ठक में दिया गया है। यह परिशिष्ट छोटा होते हुए भी व्याकरण एवं धातुज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

पंचांग प्रणति

विक्रम सवत् २०४० । नाथद्वारा की ऐतिहासिक भूमि । मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता । एक गोष्ठी का आयोजन । इसका उद्देश्य था आगम के कार्य को गति देना । उसी समय आचार्य श्री ने मुझे तथा कुछ साध्वियो को लाडनू भेजा । एक दिन ग्रन्थागार मे जब मैंने साध्वियो, समणियो एव मुमुक्षु बहिनो द्वारा किए गए आगम-कार्य के विविध पहलुओ को देखा तो चिन्तन उभरा कि इस बिखरे कार्य को समेटना आवश्यक है । उस समय तीन कोशो को सम्पन्न करने का निश्चय किया । एकार्थक कोश और निरुक्तकोश तो उसी वर्ष प्रकाश मे आ गए । देशी शब्दकोश का कार्य चालू था । देशी शब्दो के चयन और अर्थ-निर्धारण के लिए शताधिक ग्रन्थो का अवलोकन आवश्यक था । अन्यान्य बाधाओ के कारण कार्य में गति नही आ सकी । कार्य स्थगित कर दिया गया । वि० स० २०४३ के लाडनू चातुर्मास में फिर कार्य प्रारम्भ किया, पर उसका नैरन्तर्य नही रहा । वि० स० २०४५ का पूरा वर्ष (२०४४ चैत्र शुक्ला १ से २०४५ चैत्र शुक्ला १ तक) इस कार्य की फलश्रुति/निष्पत्ति का वर्ष रहा । इसमें कार्य की निरन्तरता और सघनता भी रही ।

साध्वी अशोकश्री तथा साध्वी विमलप्रज्ञा इस कार्य मे प्रारम्भ से ही सलग्न रही है । कुछेक अनिवार्य कारणो से इन दो वर्षो मे इनकी सलग्नता व्यवहित रही, किन्तु इन दोनो की सपूर्ति कर दी साध्वी सिद्धप्रज्ञा ने । इन्होंने जिस निष्ठा, उत्साह और आनन्दप्रवणता से कार्य किया वह स्तुत्य है । शारीरिक अस्वास्थ्य के बावजूद भी इनका पूरा समय इसी कार्य में नियोजित रहा । ये तन्मना होकर कोश कार्य के प्रत्येक अवयव की संपूर्ति मे संलग्न रही । इस कार्य से इन्होने अपनी उपादेयता को बरकरार रखा । विधि-विधान के अनुसार आने-जाने में इन्हे एक साध्वी का सहयोग अपेक्षित था और वह अपेक्षा पूरी की साध्वी सूरजकुमारी ने । वे प्रसन्नता से इनके साथ आती और अपना पूरा समय आगम-स्वाध्याय मे बिताती । इनकी अनुपस्थिति में पूर्ण उत्साह एव प्रसन्नता से सहयोग किया अस्सी वर्षीया साध्वी सूवटाजी ने ।

साध्वी निर्वाणश्री ने भी प्रारम्भ मे कुछेक ग्रन्थो के देशी शब्द-चयन मे सहयोग दिया है ।

समणी कुसुमप्रज्ञा प्रारम्भ से ही देशी शब्द-सकलन मे सलग्न रही है । इस बार लगभग ८-१० माह का अधिकाश समय इस देशी शब्दकोश को संवारने मे लगाया । कोश की समायोजना में इनका सहयोग बहुत मूल्यवान है । समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने समणी श्रुतप्रज्ञा को इनके साथ नियोजित कर इनके कार्य को सुगम बना डाला । समणी श्रुतप्रज्ञा ने अपने समय का पूरा उपयोग किया और पूर्ण प्रसन्नता और उत्साह से सहयोग दिया । इनकी अनुपस्थिति मे अन्यान्य समणियो का नियोजन भी रहा और सभी ने कर्तव्य-

भावना से सहयोग किया।

मुमुक्षु बहिन निरंजना, इंदु, अमिता, मधु, आशा, जतन, गुलाब आदि-आदि ने देशीकोश के कार्डों की प्रतिलिपि करने तथा अन्यान्य कार्यों में पूर्ण सहयोग दिया।

यह सारा कोशकार्य के सहभागियों का स्मरणमात्र है। इन सबके सहयोग का स्मरण आत्मतोष की अनुभूति कराता है।

मैं श्रुत-परम्परा के संवाहक और संवर्धक प्राचीन आचार्यों तथा मुनिजनों के प्रति प्रणत हूं, जिन्होंने श्रुतपरम्परा को अविच्छिन्न रखने का सतत प्रयास किया है और उसे अपने ज्ञानकणों से सींचा है, विकसित किया है। उन सबकी श्रुतोपासना की ही यह फलश्रुति है कि जैन साहित्य भंडार उनके सारस्वत अवदान से भरा रहा है। उन्होंने श्रुतसागर का जो मंथन किया, वह अपूर्व है। उनकी ग्रन्थराशि में कुछेक ग्रन्थों का अवलोकन कर हमने इस कोश ग्रन्थ का निर्माण किया है। मैं सभी श्रुतसमृद्ध आचार्यों को श्रद्धाभिक्त भाव से नमन करता हूं।

इसी श्रुतपरम्परा के वर्तमान संवाहक तथा त्रिविध स्थविर भूमिकाओं के धनी अक्षर पुरुष हैं—आचार्य तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ। तेरापंथ धर्मसंघ को इनका सारस्वत अवदान अपूर्व है। आगम-सम्पादन इनका शलाका-कार्य है और है साहित्यिक प्रसाद जो तन-मन का कायाकल्प करने में समर्थ है। उसी आगम-सम्पादन महाकार्य का यह कोशकार्य एक स्फुलिंग है। ऐसे स्फुलिंग अनेक हैं। आचार्य श्री ने उन स्फुलिंगों के संवाहक अनेक मुनियों, साध्वियों और समणियों को तैयार किया है और अपने इन सहस्रकरों से कार्य करवा रहे हैं। नए-नए आयामों का सर्जन, पोषण और संरक्षण इन्हीं घटकों पर आवृत है। दोनों युगपुरुषों के मार्गदर्शन ने इस बहु आयामी आगम कार्य को सुगम बनाया है और कार्य की मंथरता में भी नई निष्पत्तियों की सर्जना की है। मैं उनके इस शाश्वतिक अवदान को सहस्रशः नमन करता हूं।

तीन साध्वियों को इस कोश-कार्य में नियोजित करने और उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करने में साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी का महान् योग रहा है। कोश के यात्रापथ की निर्विघ्न संपूर्ति में उनकी मंगलभावना बहुत ही कार्यकर रही है। मैं उनके इस भावना-योग के प्रति प्रणत हूं।

मैं उन सभी ग्रन्थकर्त्ताओं, व्याख्याकारों तथा कोशकारों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिनके ग्रन्थों के अवलोकन से हमारा दुरूह कार्य सुगम बना, दृष्टि परिमार्जित हुई और नए-नए उन्मेष आते रहे।

अनेकांत शोधपीठ के डाइरेक्टर डॉ० नथमल टाटिया ने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखकर हमें उत्साहित किया है। अभी-अभी एक मेजर आपरेशन

प्रयुक्त ग्रन्थ सूची

अंगविज्जा—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९५७)।

अंतकृद्दशा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

अंतकृद्दशा टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)।

अनुत्तरौपपातिकदशा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

अनुत्तरौपपातिकदशा टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)।

अनुयोगद्वार—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८६)।

अनुयोगद्वार चूर्णि—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम, सन् १९२८)।

अनुयोगद्वार मलधारीया टीका—(श्री केशरबाई ज्ञानमन्दिर, पाटण, सन् १९३९)।

अनुयोगद्वार हारिभद्रीया टीका—(सेठ देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई,सवत् १९७३)।

अपभ्रंश काव्यधारा—(सपादक डॉ. प्रेमसुख जैन, डॉ. कृष्णकुमार शर्मा, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद, सन् १९७४)।

अभिधानचिंतामणि नाममाला—(श्री जैनसाहित्यवर्धक सभा, अहमदाबाद, वि. स. २०३२)।

अमरकोश—(चौखम्बा संस्कृत सिरीज, वाराणसी, सन् १९६८)।

अल्पपरिचित शब्दकोश—(संपा आचार्य आनन्द सागर सूरि, देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, प्रथम संस्करण, १९७४)।

अष्टाध्यायी—(पणिनि'ज ग्रेमेटिक, १९७७, जोर्ज ओल्म्स वरलेग, हिलडेशियम, न्यूयार्क)।

आख्यानक-मणिकोश—(सपा मुनि पुण्यविजय प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् १९६२)।

आचाराग--(अगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

आचाराग चूर्णि—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वे सस्था, रतलाम, सन् १९४१)।

आचारांगचूला— (अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

आचाराग टीका—(मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, सन् १९७८)।

आचाराग निर्युक्ति—(मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, सन् १९७८)।

आवश्यक— (नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

आवश्यक चूर्णि १—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वे. संस्था, रतलाम, सन् १९२८)।

आवश्यक चूर्णि २— (श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वे. संस्था, रतलाम, सन् १९२९)।

आवश्यक टिप्पणकम्—(शाह नगीनभाई घेलाभाई जवेरी, बम्बई)।

आवश्यक निर्युक्ति—(भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८)।

आवश्यक निर्युक्तिदीपिका—(श्री विजयदानसूरीश्वर जैनग्रंथमाल, सूरत, मन् १९३९)।

आवश्यक मलयगिरि टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२८)।

आवश्यक हारिभद्रीया टीका १—(भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८)।

आवश्यक हारिभद्रीया टीका २—(भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८)।

इन्ट्रोडक्शन टु कम्पेरेटिव फिलोलोजी—(सम्पा. पी. डी. गुणे)।

इसिभासियाइ—(सुधर्मा ज्ञान मन्दिर, बम्बई, सन् १९६३; श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १९८४)।

उत्तराध्ययन—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय सस्करण, सन् १९८६)।

उत्तराध्ययन चूर्णि—(देवचन्द लालभाई, जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सं. १९९३)।

उत्तराध्ययन निर्युक्ति—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, भांडागार सस्था, बम्बई, सं १९७२, ७३)।

उत्तराध्ययन शान्त्याचार्य टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, भाडागार सस्था, बम्बई, सं. १९७२)।

उत्तराध्ययन सुखबोधा टीका - (पुष्पचन्द्र खेमचन्द्र, वलाद, वीर सं. २४९७)।

उपासकदशा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

उपासकदशा टीका— (श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय, कोटा, सन् १९४६)।

उर्दू हिन्दी शब्द कोश—(अजुमन तरक्की उर्दू (हिंद), नई दिल्ली, सन् १९५५)।

ओघनिर्युक्ति—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९, देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, स० १९८४)।

ओघनिर्युक्ति टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९, देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, सं० १९८४)।

ओघनिर्युक्तिभाष्य—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९! देवचन्द लालभाई, जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, सन् १९८४)।

ओब्जर्वेशन्स ऑन हेमचन्द्राज देशीनाममाला—(सम्पा. पी एल वैद्य, एनेल्स ऑफ भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट)।

औपपातिक—(उवंगसुत्ताणि (४) खण्ड १, जैन विश्व भारती, लाडनू सन् १९८७)।

औपपातिक टीका—(पण्डित दयाविमलजी ग्रन्थमाला, द्वितीय सस्करण, सं १९९४)।

कसवहो—(सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्याय, मोतीलाल बनारसीदास, द्वितीय सस्करण, १९६६)।

कन्नड हिन्दी शब्दकोश—(सम्पा डॉ एन. एस. दक्षिणामूर्ति हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम सस्करण, सन् १९७१)।

कन्नडीज वर्ईज इन देशी लेक्सिकन्स—(सम्पा. ए. एन. उपाध्ये, एनेल्स ऑफ भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट)।

कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ गौडियन लेंग्वेजिज—(सम्पा. हार्नले)।

कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ मॉडर्न आर्यन लेंग्वेजिज—(सम्पा. जान बीम्स)।

करकडचरिउ—(ले मुनि कनकामर, सम्पा डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९६४)।

कल्पसूत्र—(सम्पा. मुनि पुण्यविजयजी, साराभाई मणिलाल नवाव, अहमदाबाद, सन् १९५२)।

कुवलयमाला भाग १, २—(सम्पा. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, सन् १९५९)।

कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन—(सम्पा. डॉ. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत जैन शास्त्र एव अहिंसा शोध-संस्थान, वैशाली, सन् १९७५)।

गउडवहो—(बम्बई संस्कृत सिरीज, सं० १८८७)।

गच्छाचारपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

चउप्पन्नमहापुरिसचरिय—(सम्पा. पण्डित अमृतलाल मोहनलाल भोजक, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, सन् १९६१)।

चदावेज्झयपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १९८४)।

चन्द्रप्रज्ञप्ति—(उवगसुत्ताणि (४) खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८८)।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—(उवंगसुत्ताणि (४), खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८८)।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका—(नगीनभाई घेलाभाई झवेरी, बम्बई, सन् १९२०)।

जम्बूसामिचरिउ—(सम्पादक डॉ विमलप्रकाश जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९४४)।

जसहरचरिउ—(ले. महाकवि पुष्पदन्त सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९७२)।

जीतकल्प—(बवलचन्द्र केशवलाल मोदी, अहमदाबाद, स. १९९४)।

जीतकल्पभाष्य—(बवलचन्द्र केशवलाल मोदी, अहमदाबाद, सं १९९४)।

जीतकल्प विषमपद व्याख्या।

जीवाजीवाभिगम—(उवगसुत्ताणि (४), खण्ड १, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८७)।

जीवाजीवाभिगम टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, स. १९९५)।

ज्ञाताधर्मकथा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

ज्ञाताधर्मकथा टीका—(श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति, सूरत, सन् १९५२)।

डिंगलकोश—(सम्पादक डॉ. नारायणसिंह भाटी, राजस्थान शोध सस्थान, जोधपुर, द्वितीय संस्करण, सन् १९७८)।

णायकुमारचरिउ—(ले पुष्पदन्त, सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९७२)।

तंदुलवेयालियपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १९८४)।

तित्थोगालीपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १९८४)।

तुलसी मञ्जरी—(जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८३)।

तुलसीशब्दसागर—(सम्पा. हरगोविन्द)।

दशवैकालिक—(जैन विश्व भारती, लाडनू, द्वितीय सस्करण, सन् १९७४)।

दशवैकालिक अगस्त्यसिंहचूर्णि—(प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् १९७३)।

दशवैकालिक चूलिका—(जैन विश्व भारती, लाडनू, द्वितीय सस्करण, सन् १९७४)।

दशवैकालिक जिनदासचूर्णि—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर सस्था, रतलाम, सन् १९३३)।

दशवैकालिक निर्युक्ति—(प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् १९७३)।

दशवैकालिक हारिभद्रीया टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत)।

दशाश्रुतस्कन्ध—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि—(श्री मणिविजयजीगणिग्रन्थमाला, भावनगर, स. २०११)।

दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति—(श्री मणिविजयजीगणिग्रन्थमाला, भावनगर, सं. २०११)।

देशीनाममाला—(संपा० आर. पिशेल, बोम्बे सस्कृत सिरीज १७, सस्कृत विभाग, दूसरा सस्करण, सन् १९३८)।

देशीनाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन—(सम्पा शिवमूर्ति शर्मा, देवनागर प्रकाशन, जयपुर)।

देशीशब्दसंग्रह—(संपा० वेचरदास दोशी, श्री फार्बस गुजराती सभा, मुवई, प्रथम सस्करण, सन् १९४७)।

नदी—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८६)।

नंदी चूर्णि—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)।

नदी टिप्पणक—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)।

नदी टीका—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)।

नाट्यशास्त्र—(भरतमुनि)।

निरयावलिका—(उवंगसुत्ताणि (४), खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८८)।

निरयावलिका टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई)।

निरुक्तम्—(यास्क)।

निशीथ—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १६८६)।

निशीथचूर्णि भाग १-४—(सन्मति ज्ञानपीठ, दूसरा सस्करण, सन् १६८२)।

निशीथभाष्य—(सन्मति ज्ञानपीठ, दूसरा सस्करण, सन् १६८२)।

पउमचरिउ भाग १ से ३—(ले. स्वयम्भूदेव, सम्पा. डॉ. हरिवल्लभ चुन्नीलाल भायाणी, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्या भवन, बम्बई-७, वि. स. २००६, २०१७)।

पउमचरिय—(सम्पा. डॉ हर्मन जेकोबी, मुनि पुण्यविजयजी, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, सन् १६६८)।

पचकल्पभाष्य—(आगमोद्धारक ग्रन्थमाला, पारडी, वि. स. २०२८)।

पचवस्तु—हस्तलिखित।

पाइयलच्छीनाममाला—(सम्पा. बेचरदास दोशी, श्री शादीलाल जैन, बम्बई-३, सन् १६६०)।

पाइयसद्दमहण्णवो—(पण्डित हरगोविन्ददास सेठ, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, द्वितीय सस्करण, ईस्वी सन् १६६३)।

पिण्डनिर्युक्ति—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सन् १६१८)।

पिण्डनिर्युक्ति टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सन् १६१८)।

पिण्डनिर्युक्ति भाष्य—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सन् १६१८)।

पुहइचन्दचरिय—(ले. आचार्य शान्तिसूरि, सम्पा. मुनिश्री रमणीक विजय, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, सन् १६७२)।

प्रज्ञापना—(उवगसुत्ताणि (४) खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १६८८)।

प्रज्ञापना टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १६१८)।

प्रवचनसारोद्धार—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, द्वितीय सस्करण, स. १६८१)।

प्रवचनसारोद्धार टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, द्वितीय सस्करण, स १६८१)।

प्रश्नव्याकरण—(अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १६७४)।

प्रश्नव्याकरण टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १६१६)।

प्राकृतलक्षण—(चण्ड)।

प्राकृत वर्डस् विद प्राकृत टर्मीनेशन्स—(सम्पा. पी. एल वैद्य)।

प्राकृतव्याकरण—(हेमचन्द्र, जैन दिवाकर दिव्यज्योति कार्यालय, ब्यावर, स. २०१६)।

प्राकृत शब्दानुशासन—(त्रिविक्रमदेव, सम्पा. पी एल वैद्य, जैन सस्कृति सरक्षक सघ, शोलापुर, सन् १६५४)।

प्राचीनकर्मग्रन्थ टीका—(जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, वि. स. १६७२)।

बृहत्कल्प—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १६८६)।

बृहत्कल्प चूर्णि—(हस्तलिखित, लाडनू भडार)।

बृहत्कल्प टीका—(जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सन् १६३६)।

बृहत्कल्प भाष्य—(जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सन् १६३६)।

भगवती—(अंगसुत्ताणि भाग २, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १६७४)।

भगवती टीका, पत्र १-३२७—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १६१८)।

भगवती टीका, पृष्ठ ६०१-१२०८—(ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर सस्था, रतलाम, द्वितीय सस्करण, सन् १६४०)।

भत्तपरिण्णापइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, द्वितीय सस्करण, सन् १६८४)।

भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथा काव्य—(सम्पादक देवेन्द्रकुमार शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, सन् १६७०)।

भारतीय भाषाए—(सम्पा. कैलाशचन्द्र भाटिया, दिल्ली, सन् १६८१)।

भाषा विज्ञान कोश—(डॉ भोलानाथ तिवारी)।

मयणपराजयचरिउ—(ले. हरिदेव, सम्पा. डॉ हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सन् १६६२)।

मरणविभत्तिपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १६८४)।

महापच्चक्खाणपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १६८४)।

महापुराण—(ले. महाकवि पुष्पदन्त, सम्पा. परशुराम शर्मा, माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति)।

महाभारत—(भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, सन् १९६१)।

मुणिचन्द कहाणय—(सम्पा. के. आर. चन्द्र, जय भारत प्रकाशन एण्ड कं., अहमदाबाद, द्वितीय संस्करण, सन् १९७७)।

यशस्तिलकचम्पू का सास्कृतिक अध्ययन—(सम्पा. गोकुलचन्द्र जैन, अमृतसर)।

राजप्रश्नीय—(उवगसुत्ताणि (४) खण्ड १, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८७)।

राजप्रश्नीय टीका—(गूर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, अहमदाबाद, वि. सं. १९९४)।

राजस्थानी शब्दकोष—(सम्पा. सीताराम, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, प्रथम सस्करण, सं. २०१८)।

रावणवहमहाकाव्य—(सम्पा. डॉ. राधागोविन्द, संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता, सन् १९५९)।

लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया—(सम्पा. ग्रियर्सन)।

वज्जालग्गम्—(सम्पा. माधव वासुदेव पटवर्धन, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, प्रथम सस्करण, सन् १९६९)।

वड्ढमाणचरिउ—(सम्पादक डॉ. राजाराम जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९७५)।

वाग्भटालकार—(चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, सन् १९५७)।

वाचस्पत्यम् भाग ६—(सम्पादक तारानाथ, चौखम्बा सस्कृत सिरीज, वाराणसी, तृतीय संस्करण, स. २०२५)।

विपाकश्रुत—(अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

विपाकश्रुत टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)।

विलसन्स फिलोलोजिकल लेक्चर्स—(सम्पा. श्री आर. जी भडारकर)।

विशेषावश्यकभाष्य—(दिव्य दर्शन कार्यालय, अहमदाबाद, वीर स. २४८९)।

विशेषावश्यकभाष्य कोट्याचार्य टीका—(ऋषभदेव केशरीमल, रतलाम, सन् १९३६)।

विशेषावश्यकभाष्य मलधारीहेमचन्द्र टीका—(दिव्य दर्शन कार्यालय, अहमदाबाद, वीर स. २४८९)।

व्यवहार—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८६)।

व्यवहारभाष्य टीका—(वकील केशवलाल प्रेमचन्द, अहमदाबाद, सन् १९२६)।

शब्दकल्पद्रुम भाग १ से ५—(सम्पा. राधाकांतदेव, चौखम्बा सस्कृत सिरीज, वाराणसी, तृतीय सस्करण, वि. सं २०२४)।

शब्दार्थ कौस्तुभ—(रामनारायणलाल अग्रवाल, प्रयाग)।

संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर—(सम्पा. रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम सस्करण, सन् १९६६)।

संथारगपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम सस्करण, सन् १९८४)।

संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी—(सम्पा. वी. एस. आप्टे, प्रसाद प्रकाशन, पूना)।

संस्कृत इग्लिश डिक्शनरी—(सम्पा. मोनियर विलियम्स)।

संस्कृत प्राकृत जैन व्याकरण और कोश की परम्परा—(श्री कालूगणी जन्म-शताब्दी समारोह समिति, छापर, सन् १९७७)।

समवायांग—(अगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

समवायाग टीका—(कांतिलाल चुन्नीलाल, अहमदाबाद, सन् १९३८)।

सारावलीपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

सिरिवालचरिउ—(ले. नरसेन देव, सम्पा. डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, सन् १९७४)।

सुदंसणचरिउ—(ले. नयनन्दी, सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, प्राकृत शोध-सस्थान, वैशाली, सन् १९७०)।

सूत्रकृताग—(अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

सूत्रकृताग चूर्णि (प्रथमश्रुतस्कन्ध)—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, वाराणसी, सन् १९७५)।

सूत्रकृतांग चूर्णि (द्वितीय श्रुतस्कन्ध)—(ऋषभदेव केशरीमल श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सन् १९४१)।

सूत्रकृतांग टीका १ (प्रथम श्रुतस्कन्ध)—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९)।

सूत्रकृताग टीका २ (द्वितीय श्रुतस्कन्ध)—(श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन ग्रन्थमाला, सन् १९५३)।

सूत्रकृतांग निर्युक्ति—(मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, मन् १९७८)।

सूरशब्दसागर—(सम्पा. हरदेव बाहरी, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, सन् १९८१)।

सूर्यप्रज्ञप्ति—(उवंगसुत्ताणि (४), जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९८८)।

सूर्यप्रज्ञप्ति टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९)।

सेतुबन्ध—(सम्पा. पण्डित शिवदत्त, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, सन् १९८२)।

स्टडीज इन हेमचन्द्राज देशीनाममाला—(सम्पा. हरिवल्लभ सी. भयाणी, पी. वी. रिसर्च इस्टीट्यूट, जैनाश्रम हिन्दी यूनिवर्सिटी, बनारस)।

स्थानाग—(अगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनू, सन् १९७४)।

स्थानांग टीका—(सेठ माणेकलाल चुनीलाल, अहमदाबाद, सन् १९३७)।

हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन—(सम्पा. डॉ. नेमीचद शास्त्री, प्राकृत शोध सस्थान, वैशाली, सन् १९६५)।

हिन्दीशब्दसागर ११ भाग—(सम्पा. श्यामसुन्दर, शम्भुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, वाराणसी, प्रथम सस्करण, वि. सं. २०२२)।

हिन्दी शब्दानुशासन—(सम्पा. किशोरीदास वाजपेयी)।

संकेत सूची

अंत	अंतकृद्दशा
अतटी	अतकृद्दशा टीका
अंवि	अंगविज्जा
अचि	अभिधानचिंतामणि नाममाला
अनु	अनुत्तरौपपातिकदशा
अनुटी	अनुत्तरौपपातिकदशा टीका
अनुद्वा	अनुयोगद्वार
अनुद्वाचू	अनुयोगद्वार चूर्णि
अनुद्वामटी	अनुयोगद्वार मलधारीयटीका
अनुद्वाहाटी	अनुयोगद्वार हारिभद्रीयटीका
आ	आचाराग
आचू	आचारागचूर्णि
आचूला	आचारागचूला
आटी	आचाराग टीका
आनि	आचाराग निर्युक्ति
आव	आवश्यकसूत्र
आवचू-१	आवश्यक चूर्णि १
आवचू-२	आवश्यक चूर्णि २
आवटि	आवश्यक टिप्पणकम्
आवदी	आवश्यक निर्युक्तिदीपिका
आवनि	आवश्यक निर्युक्ति
आवमटी	आवश्यक मलयगिरीटीका
आवहाटी-१	आवश्यक हारिभद्रीयटीका १
आवहाटी-२	आवश्यक हारिभद्रीयटीका २
इ	इसिभासियाइं
उ	उत्तराध्ययन
उचू	उत्तराध्ययन चूर्णि
उनि	उत्तराध्ययन निर्युक्ति
उपा	उपासकदशा

उपाटी	उपासकदशा टीका
उशाटी	उत्तराध्ययन शान्त्याचार्यटीका
उसुटी	उत्तराध्ययन सुखबोधा टीका
ओटी	ओघनिर्युक्ति टीका
ओनि	ओघनिर्युक्ति
ओभा	ओघनिर्युक्तिभाष्य
औप	औपपातिक
औपटी	औपपातिक टीका
कु	कुवलयमाला
ग	गच्छाचारपइण्णय
च	चदावेज्झयपइण्णय
चन्द्र	चन्द्रप्रज्ञप्ति
जबू	जबूद्वीपप्रज्ञप्ति
जबूटी	जबूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका
जीत	जीतकल्प
जीभा	जीतकल्पभाष्य
जीव	जीवाजीवाभिगम
जीवटी	जीवाजीवाभिगम टीका
जीविप	जीतकल्प विषमपदव्याख्या
ज्ञा	ज्ञाताधर्मकथा
ज्ञाटी	ज्ञाताधर्मकथा टीका
तदु	तंदुलवेयालियपइण्णय
ति	तित्थोगालीपइण्णय
द	दशवैकालिक
दअचू	दशवैकालिक अगस्त्यसिंहचूर्णि
दचूला	दशवैकालिकचूलिका
दजिचू	दशवैकालिक जिनदासचूर्णि
दनि	दशवैकालिक निर्युक्ति
दश्रु	दशाश्रुतस्कन्ध
दश्रुचू	दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि
दश्रुनि	दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति
दहाटी	दशवैकालिक हारिभद्रीया टीका
दे	देशीनाममाला; देशीशब्दसग्रह
नदीचू	नदी चूर्णि
नदीटि	नंदी टिप्पणक

नंदीटी	नंदी टीका
नि	निशीथ
निचू १, २, ३, ४.	निशीथचूर्णि भाग १ से ४
निभा	निशीथभाष्य
निर	निरयावलिका
निरटी	निरयावलिका टीका
पंक	पंचकल्पभाष्य
पंव	पंचवस्तु
पा	पाइयलच्छीनाममाला
पिटी	पिण्डनिर्युक्ति टीका
पिनि	पिण्डनिर्युक्ति
पिभा	पिण्डनिर्युक्ति भाष्य
प्र	प्रश्नव्याकरण
प्रज्ञा	प्रज्ञापना
प्रज्ञाटी	प्रज्ञापना टीका
प्रटी	प्रश्नव्याकरण टीका
प्रसा	प्रवचनसारोद्धार
प्रसाटी	प्रवचनसारोद्धार टीका
प्रा	प्राकृतव्याकरण
प्राक	प्राचीनकर्मग्रन्थ टीका
बृ	बृहत्कल्प
बृचू	बृहत्कल्प चूर्णि
बृटी	बृहत्कल्प टीका
बृभा	बृहत्कल्प भाष्य
भ	भगवती
भटी	भगवती टीका
भत्त	भत्तपरिण्णापइण्णय
म	मरणविभत्तिपइण्णय
महा	महापच्चक्खाणपइण्णय
राज	राजप्रश्नीय
राजटी	राजप्रश्नीय टीका
विपा	विपाकश्रुत
विपाटी	विपाकश्रुत टीका
विभा	विशेपावश्यकभाष्य
विभाकोटी	विशेपावश्यकभाष्य कोट्याचार्यटीका

विभामहेटी	विशेषावश्यकभाष्य मलधारीहेमचन्द्रटीका
वृ	देशीनाममालावृत्ति
व्य	व्यवहार
व्यभाटी १-१०	व्यवहारभाष्य टीका भाग १-१०
सं	संथारगपइण्णय
सम	समवायाग
समटी	समवायांग टीका
सा	सारावलीपइण्णय
सू	सूत्रकृतांग
सूचू-१	सूत्रकृतांग चूर्णि, प्रथमश्रुतस्कंध
सूचू-२	सूत्रकृतांग चूर्णि, द्वितीयश्रुतस्कंध
सूटी-१	सूत्रकृतांग टीका प्रथमश्रुतस्कन्ध
सूटी-२	सूत्रकृताग टीका द्वितीयश्रुतस्कंध
सूनि	सूत्रकृताग निर्युक्ति
सूर्य	सूर्यप्रज्ञप्ति
सूर्यटी	सूर्यप्रज्ञप्ति टीका
से	सेतुवन्ध
स्था	स्थानाग
स्थाटी	स्थानाग टीका

अनुक्रम

देशी शब्दकोश

अअंख—निःस्नेह, स्नेह रहित (दे १।१३)।

अइगय—१ मार्ग का पश्चाद् भाग। २ समागत। ३ प्रविष्ट (दे १।५७)।

अइण—गिरि-तट, तराई, पहाड का निम्न-भाग (दे १।१०)।

अइणिअ—लाया हुआ (दे १।२४)।

अइर—१ अतिरोहित (पिनि ५६०)। २ गांव का मुखिया, राज्य द्वारा नियुक्त गाव का अधिकारी (दे १।१६)।

अइरजुवइ—नववधू (दे १।४८)।

अइराउल—स्वामीकुल–'देशीपदमेतत्' (प्रज्ञाटी प २५३)।

अइराणी—१ इन्द्राणी (अंवि पृ २२३; दे १।५८)। २ सौभाग्य प्राप्त करने के लिए इन्द्राणी का व्रत करने वाली स्त्री (दे १।५८)।

अइरिंप—कथाबंध, कहानी (दे १।२६)।

अइरिका—देवी-विशेष, इन्द्राणी (अवि पृ ६९)।

अइहारा—विद्युत्, बिजली (दे १।३४)।

अंक—निकट (दे १।५)।

अंककरेलुय—जलज-वनस्पति (आचूला १।११३)।

अंकार—सहायता, मदद (दे १।९)।

अंकिअ—आलिंगन (दे १।११)।

अंकिल—नर्तक (ज्ञाटी प ४४)।

अंकिल्ल—नट (औपटी पृ ४)।

अंकुसइअ—अकुश के आकार वाला (दे १।३८)।

अंकेल्ल—नट (निचू २ पृ ४६८)।

अंकेल्लण—चाबुक-विशेष (जबू ३।१०९)।

अंकेल्लि—अशोक वृक्ष (दे १।७)।

अंकोल्ल—१ अकोठ वृक्ष (प्रज्ञा १।३५।१)। २ गुच्छ-विशे (प्रज्ञा १।३७।५)। ३ नर्तक (ज्ञाटी प ४६)।

अंगवड्डण—रोग (दे १।४७)।

अंगवलिज्ज—शरीर को मोडना (दे १।४२)।

अंगारइय—घुण कीट द्वारा खाया हुआ—'घुणकाणियं अगारइयं वा वुत्तयं होति' (निचू ४ पृ ६६)।

अंगालिअ—ईख का टुकडा, गडेरी (दे १।२८)।

अंगुजट्ठ—अगूठा (आचू पृ ३५२)।

अंगुट्ठी—१ घूघट—'रगम्मि नच्चियाए, अलाहि अगुट्ठिकरणेण' (उसुटी प ५४; दे १।६)। २ अगूठा (प्रसा २००)।

अंगुत्थल—अगूठी (दे १।३१)।

अंगुलिणी—प्रियगु, वृक्ष-विशेष (दे १।३२)।

अंगोहली—१ देश-स्नान, शरीर को पोछना, हाथ-मुह आदि धोना '(नदीटि पृ १३४)।

अंगोहलेऊण—देश-स्नान कराकर—'अगोहलेऊण दारग पेसेइ' (व्यभा १० टी प ५२)।

अंघोलि—देश-स्नान, शरीर को पोछना, हाथ-मुह आदि धोना (आवचू १ पृ ५४५)।

अंचित—दुर्भिक्ष—'अचित नाम दुर्भिक्षम्' (आवटि प ५३)।

अंचिय—१ नाट्य का एक प्रकार—'नट्ट चउव्विह—अचियं रिभियं आरभडं भसोल ति' (निचू ४ पृ २)। २ दुर्भिक्ष (निचू २ पृ ११६)।

अंछण—विस्तार, फैलाव (निचू २ पृ २२३)।

अंछणय—विस्तार, फैलाव (निभा १५२६)।

अंछणिका—रज्जु-विशेष (अंवि पृ ११५)।

अंछिय—आकृष्ट, खीचा हुआ (प्र १।२६; दे १।१४)।

अंजणइसिआ—तमाल का वृक्ष (दे १।३७)।

अंजणई—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

अंजणईस—तमाल का वृक्ष (दे १।३७)।

अंजणिआ—तमाल का वृक्ष (दे १।३७)।

अंजणी—१ आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)। २. भांड-विशेष (अंवि पृ २६०)।

अंजणेकसक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

अंजस—ऋतु (दे १।१४)।

अंडअ—मत्स्य (दे १।१६)।

अंतरिज्ज—कटीसूत्र, करधनी (दे १।३५)।

अंतरिया—समाप्ति, अंत (जवू २)।

अंतालूहण—प्रिय–'अंतालूहणो मम एस पुत्तो' (कु पृ ४७)।

अंतोहरी—दूती (दे १।३५)।

अंतेल्ली—१ मध्य। २ जठर, पेट। ३ तरंग (दे १।५५)।

अंतोखरियत्ता—१ नगर मे रहने वाली वेश्या। २ विशिष्ट-वेश्या (भ १५।१८६)–'अतोखरियत्ताए त्ति नगराभ्यन्तर-वेश्यात्वेन' विशिष्टवेश्यात्वेनेत्यन्ये' (टी पृ १२७६)।

अंतोवगडा—घर का आगन (बृ २।१)—'अतोवगडा नाम उवस्सयस्स अब्भतरं अंगणं' (चू प १४१)।

अंतोहुत्त—अधोमुख (दे १।२१)।

अंधंधु—कूप, कुआ (दे १।१८)।

अंधक—फल-विशेष, वृक्ष-विशेष (अवि पृ २३८)।

अंधग—वृक्ष (भ १८।९५)।

अंधगवण्हि—स्थूल अग्नि (भ १८।९५)।

अंधार—अन्धकार (पव २५७)।

अंधारइअ—अन्धापन (आचू पृ ३७२)।

अंधिया—चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (भ १५।१८)।

अंबकधूवि—खाद्यपदार्थ-विशेष (अवि पृ ७१)।

अंबकूणग—आम्रफल (भटी पृ १२५७)।

अंबकोइलिया—१ आम्रविष्ठा। २ आम की छाल के टुकड़े (दअचू पृ २३)।

अंबखुज्ज—तलवे का मध्य भाग–'यदाम्रकुब्जं पादतलमध्यम्' (बृटी पृ १०६२)।

अंबट्टिक—भोज्य-विशेष–'अवट्टिकघतउण्हे पोवलिका ....' (अंवि पृ २४६)।

अंबड—कठिन (दे १।१६)।

अंबपिंडी—भोज्य-विशेष (अवि पृ ७१)।

अंबप्पहार—प्रहार से दुःखी (उशाटी प १९३)।

अंबमसी—गूंदा हुआ बासी गीला आटा–'अंबसमीत्यत्र सकारमकारयोर्व्यत्यये अब मसीति केचित् पठन्ति' (दे १।३७ वृ)।

अंबर—मत्स्य का मद–'अम्बरशब्देनात्र मत्स्यमदोऽभिधीयते स हि किलात्यन्त-सुगन्धो भवति' (आवटि प ६५)।

अंबसमी—गूदा हुआ वासी गीला आटा (दे १।३७)।

अंबाडग—बहुबीज वाला आम्रातक फल (प्रज्ञा १।३६)।

अंबाडगधूवि—खाद्यपदार्थ-विशेष (अवि पृ ७१)।

अंबाडिय—तिरस्कृत (वृटी पृ ५४)।

अंबिर—आम्र (दे १।१५)।

अंबिलिका—इमली (अवि पृ ७०)।

अंबुसु—सिंह से भी अति बलवान पशु, शरभ (दे १।११)।

अंबेट्टिआ—मुष्टिद्यूत, बालकों द्वारा मुट्ठी से खेला जाने वाला जूआ–'मा रमं अवेट्टिआइ पुत्त ! तुमं' (दे १।७ वृ)।

अंबेट्टी—मुष्टिद्यूत, बच्चों की क्रीडा-विशेष जो 'एकीबेकी' के रूप मे खेली जाती है (दे १।७)।

अंबेल्ली—खट्टी राब–'एहि किराइ सीतलीहोति अबेल्ली' (आवचू १ पृ १११)।

अंबेसी—घर का द्वार-फलक (दे १।८)।

अंबोच्ची—फूलों को चुनने वाली स्त्री (दे १।९)।

अकंडतलिम—१ निःस्नेह। २ अविवाहित (दे १।६०)।

अकरंडुय—मांस के उपचित होने के कारण जिसके पीठ के पास की हड्डी दिखाई न पड़े (प्र ४।७ टी प ८१)।

अकारय—भोजन की अरुचि, रोग-विशेष (ज्ञा १।१३।२८)।

अकासि—निषेध-सूचक अव्यय, पर्याप्त (दे १।८)।

अकोप्प—रम्य (प्र ४।८)।

अक्क—दूत (दे १।६)।

अक्कंत—प्रवृद्ध, बढा हुआ (दे १।९)।

अक्कंद—परित्राता, रक्षा करने वाला (दे १।१५)।

अक्कबोंदि—वल्ली-विशेष (भ २२।६)।

अक्कसाला—१ बलात्कार। २ उन्मत्त-सी स्त्री (दे १।५८)।

अक्का—भगिनी, बहिन (दे १।६)। अक्का (कन्नड)।

अक्कुट्ठ—अध्यासित, अधिष्ठित (दे १।११)।

अक्कोड—बकरा (दे १।१२)।

अक्कोडिय—चुभाना, घुसाना–'तंबियाओ सुईओ····वीससु वि अंगुलीनहेसु अक्कोडियाओ' (वृटी पृ ५७)।

अक्ख—उत्कृष्ट उपकरण (बृभा १५४५)।

अक्खक—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६०)।

अक्खणवेल—१ मैथुन। २ संध्याकाल (दे १।५६)।

अक्खणिया—विपरीत मैथुन (पा ४३२)।

अक्खपूप—खाद्यपदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

अक्खर—आख का रोग-विशेष (आवचू २ पृ १०२)।

अक्खरा—आख की पुतली—'आसमक्खिया अक्खिमि अक्खरा उकड्ढिज्जइ त्ति' (आवहाटी २ पृ ६०)।

अक्खल— १ अखरोट वृक्ष। २ अखरोट वृक्ष का फल (प्रज्ञा १६)।

अक्खलिअ—१ प्रतिफलित, प्रतिबिंबित। २ आकुल-व्याकुल (दे १।२७)।

अक्खवाया—दिशा (दे १।३५)।

अक्खिवण—अपहरण (बृभा २०५४)।

अक्खु—आम की छाल—'अक्खु—अंबसालमित्यर्थः' (निचू ३ पृ ४८२)।

अक्खुय—आम की छाल (निभा ४७००)।

अक्खेवि—वशीकरण के द्वारा चोरी करने वाला (प्र ३।३)।

अक्खोड—१ राजकुल मे दातव्य द्रव्य, बेगार तथा सैनिक आदि की भोजन-व्यवस्था (व्यभा २ टी प १०)। २ वह भूभाग, जो बिना बोया हुआ तथा जनता से अनाक्रात हो (आवटि प ६०)।

अक्खोडभंग—राजकुल मे दातव्य द्रव्य की राजा द्वारा दी जाने वाली छूट—'खोडभंगोत्ति वा उक्कोडभगोत्ति वा अक्खोडभंगोत्ति वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ २८०)। देखे—खोडभंग।

अक्खोल—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

अक्खोला—ककडी (अंवि पृ ७१)।

अखरय—भृत्य-विशेष (पिनि ३६७)।

अगअ—दानव (दे १।६)।

अगंडिगेह—यौवन से उन्मत्त बना हुआ (दे १।४०)।

अगड—१ कूप (स्था २।३६०)। २ कूप के पास पशुओ के जल पीने का गर्त्त।

अगत्थि—गुल्म-विशेष (जीव ३।५८०)।

अगय—असुर (प्रा २।१७४)।

अगहण—कापालिक, वाममार्गी (दे १।३१)।

अगिला—अवगणना, अवज्ञा (दे १।१७)।

अगुज्झहर—रहस्यभेदी, गुप्त बात को प्रकाशित करने वाला (दे १।४३)।

अग्ग—१ ताजा–'अग्गेहि वरेहिं पुप्फेहिं जक्खमच्चेइ' (उसुटी प ३५)। २ परिहास। ३ वर्णन।

अग्गक्खंध—रणमुख, युद्ध का अग्रिम मोर्चा (दे १।२७)।

अग्गवेअ—नदी का पूर (दे १।२९)।

अग्गहण—अवगणना, अवज्ञा (दे १।१७)।

अग्गाधमक—मत्स्य की एक जाति (अवि पृ ६३)।

अग्गाहार—१ उच्च जीविका, बहुमान–'दिट्ठो सक्कारिओ अग्गाहारो य से दिन्नो' (उसुटी प २३)। २ छोटी बस्ती–'अत्थि णाइदूरे सरलपुर णाम बभणाण अग्गाहारं' (कु पृ २५८)।

अग्गिअ—१ इन्द्रगोप कीट। २ मन्द (दे १।५३)।

अग्गिचुल्लक—अग्नि का स्थान (अवि पृ २४४)।

अग्गिरस—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

अग्गिलिय—आगे, पहले (पवटी प ५६)।

अग्गुमर—घर का प्रवेश द्वार–'गिहमुहं अग्गुमरो' (आचू पृ ३७०)।

अग्घाड—अपामार्ग, लटजीरा (दे १।८)।

अग्घाडग—अपामार्ग, लटजीरा (प्रज्ञा १।३७।४)।

अग्घाण—तृप्त (दे १।१९)।

अग्घातित—आख्यात (आचू पृ ३०३)।

अघ—१ गढा। २ ह्रद–'अघा गर्त्ता ह्रदो वा' (बृटी पृ २०२)।

अचल—१ गृह। २ कहा हुआ। ३ घर का पिछला भाग। ४ निष्ठुर, निर्दय। ५ नीरस, विरस (दे १।५३)।

अचाइ—अशक्त, असमर्थ (आ ६।३०)।

अचिट्ठ—अप्रगाढ–'अचिट्ठ कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठ परिचिट्ठति' (आ४।१८)

अचियत्त—१ अप्रीतिकर (द ५।१७)। २ अप्रीति–'अचियत्तं देशीवचनं अप्रीत्याभिधायकम्' (आवहाटी १ पृ १२७)।

अचोक्ख—अपवित्र (आवचू १ पृ १२२)।

अचोक्खलिणी—जल आदि से हाथ न धोने वाली (पिनि ६०२)।

अच्चंकारिय—असत्कारित, अपूजित–'अच्चकारिओ उवघातं करेस्सति' (निचू ३ पृ ४१८)।

अच्चाइय—व्यथित–'अच्चाइओ सागडिओ' (दहाटी प ६१) ।
अच्चिग–व्यथा (कन्नड) ।

अच्छ—१ प्रचुर । २ शीघ्र (दे १।४६) । ३ वृक्ष (से ६।४७) ।

अच्छंत—आसीन (उ १६।७८) ।

अच्छण—१ बैठना (अच्छणघर-विश्रामगृह) (ज्ञा १।३।१६) । २ अवस्थान, आसन (उ २६।७) । ३ अपसर्पण—'अच्छण ति ओसक्कणं' (निचू १ पृ ८३) । ४ अवलोकन (व्यभा ३ टी प १०२) । ५ सेवा, शुश्रूषा (वृ ३) ।

अच्छभल्ल—यक्ष, देव-विशेष (दे १।३७) ।

अच्छराणिवात—१ चुटकी । २ चुटकी बजाने जितना समय (सूचू २ पृ ३५६) ।

अच्छरानिवाय—चुटकी (जीव ३।८६)–'अप्सरोनिपातो नाम चप्पुटिका' (टी प १०६) ।

अच्छहल्ल—रीछ (पा ३०२) ।

अच्छारिय—नौकर, कर्मचारी–'तत्थ सरदकाले अच्छारियभत्ताणि दधि-कूरेण णिसट्ठं दिज्जंति' (आवचू १ पृ २६१) ।

अच्छिक्क—अस्पृष्ट (व्यभा ४।२ टी प २४) ।

अच्छिघरुल्ल—१ अप्रीतिकर । २ वेश, पोशाक (दे १।४१ वृ) ।

अच्छिय—फल-विशेष (आटी प ३४६) ।

अच्छिरोड—चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१) ।

अच्छिरोडय—चार इन्द्रिय वाला जीव-विशेष (उ ३६।१४८) ।

अच्छिल—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष (उ ३६।१४८) ।

अच्छिवडण—निमीलन, आंखो का मूदना (दे १।३६) ।

अच्छिविअच्छि—आपस की खीचतान, परस्पर आकर्षण (दे १।४१) ।

अच्छिवेह—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१) ।

अच्छिवेहय—चार इन्द्रिय वाला जतु-विशेष (उ ३६।१४७) ।

अच्छिहरिल्ल—१ अप्रीतिकर, द्वेष्य । २ वेश, पोशाक (दे १।४१ वृ) ।

अच्छिहरुल्ल—१ अप्रीतिकर । २ वेश, पोशाक (दे १।४१) ।

अच्छुल्लूढ—निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (बृभा ५७५) ।

अज—सर्प की एक जाति (अंवि पृ० ६३) ।

अजढर—नया, ताजा (सूचू २ पृ ३१२) ।

अजराउर—उष्ण, गरम (दे १।४५)।

अजिणविलाल—पर्वत की गुफा मे रहने वाले सिंह की एक जाति (अवि पृ २२७)।

अजुअ—सप्तच्छद, सतौना का वृक्ष (दे १।१७)।

अजुअलवण्णा—इमली का वृक्ष (दे १।४८)।

अजुअलवन्न—सप्तपर्ण, छितवन का पेड़ (पा ८६५)।

अजुगित—शरीर तथा जाति से अजुगुप्सित (निचू ३ पृ ४५७)।

अज्ज—जिन, अर्हत्, बुद्ध (दे १।५)।

अज्जअ—१ सुरस नामक तृण। २ गुरेटक नामक तृण (दे १।५४)।

अज्जणी—भाड-विशेष (अंवि पृ ६३)।

अज्जय—१ वनस्पति-विशेष, लघु तुलसी का पौधा (प्रज्ञा १।४४।३)। २ दादा। ३ नाना (द ७।१८)।

अज्जा—१ वृक्ष विशेष (भ २१।२१)। २ दुर्गा देवी का प्रशात रूप—'दुर्गाया' पूर्वरूप अत्र कुष्माडिवत् तघाठिता अज्जा भन्नति' (अनुद्वाचू पृ १२)। ३ यह स्त्री (पा ८४३)।

अज्जिआ—१ दादी। २ नानी (द ७।१५)। आजी—दादी (मराठी)। अज्जी (कन्नड)।

अज्जिड्डीय—दिया, प्रस्तुत किया—'आसेण हिसियं, पट्ठी अज्जिट्ठीया' (व्यभा २ टी प ६४)।

अज्जुण—तृण-विशेष (भ २१।१६)।

अज्जोरुह—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १)।

अज्झ—यह (पुरुष) (दे १।५०)।

अज्झअ—पडौसी (दे १।१७)।

अज्झत्थ—आगत (दे १।१०)।

अज्झवसिअ—मुडित मुख (दे १।४०)।

अज्झसिअ—दृष्ट, देखा हुआ (दे १।३०)।

अज्झस्स—आक्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे १।१३)।

अज्झा—१ असती, कुलटा। २ प्रशस्त स्त्री। ३ नववधू। ४ तरुणी। ५ यह (स्त्री) (दे १।५०)।

अज्झियक—उपयाचित, मांगा हुआ (वृटी पृ १३२७)।

अज्झियग—उपयाचित, मागा हुआ (वृभा ४६६२)।

अज्झीण—अध्ययन, विभाग–'अज्झयणं अज्झीण आओ झवणा य एगट्ठा' (निचू १ पृ ५)।

अज्झेल्ली—बार-बार दोहन-योग्य गाय (दे १।७)।

अज्झोल्लिआ—वक्षस्थल के आभूषण मे की जाती मोतियो की रचना-विशेष (दे १।३३)।

अज्झोस—अध्यवसाय, भावना–'अज्झोसो भावण त्ति एगट्ठं' (आचू पृ ३७३)।

अझिखिय—अनिन्दनीय (दे ३।५५ वृ)।

अटिट्टियाविज्जमाण—टिट्-टिट् की आवाज नही करता हुआ (ज्ञा १।३।२६)।

अट्ट—१ आकाश–'अट्टे इ वा वियट्टे इ वा आधारे इ वा' (भ २०।१६)। २ कृश। ३ महान्। ४ तोता। ५ सुख। ६ घृष्ट। ७ आलसा। ८ ध्वनि। ९ असत्य (दे १।५०)।

अट्टग—आटा (सूचू १ पृ १७८)।

अट्टट्ट—गया हुआ (दे १।१०)।

अट्टट्टहास—खिलखिलाकर हसना (पंवटी प २३०)।

'अट्टण' साला—व्यायामशाला (भ ११।१३८)।

अट्टमट्ट—१ निरर्थक, ऊटपटाग–'अट्टमट्ट च सिक्खेज्जा, सिक्खियं ण णिरत्थयं। अट्टमट्टपसाएण, भुजए गुडतुबयं ॥' (उशाटी प २४५)। २ आलवाल, क्यारी (प्रा २।१७४)। ३ अशुभ संकल्प-विकल्प।

अट्टयकल्ली—कमर पर हाथ देकर खडा रहना (पा ७२८)।

अट्टरुसग—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४)।

अट्टालग—प्राकार के भीतर आठ हाथ चौडा मार्ग (आचू पृ ३६९)।

अट्ठिओ—पुनः पुनः–'अट्ठिओ पुणो पुणो' (निचू १ पृ १२४)।

अट्ठित्तो—पुनः पुन. (निभा ३५७)।

अट्ठिल्लय—बिनौला (पिनि ६०३)।

अट्ठीलय—बिनौला (पिनि ६०३)।

अड—१ लोमपक्षी (जीवटी प ४१)। २ कूप, कुआ (पा ३०८)। ३ कूप के पास मे पशुओ के पानी पीने के लिए बनाया हुआ गढा (प्रा १।२७१)।

अडउज्झिअ—विपरीत मैथुन (दे १।४२)।

अडंबइल्ला—देश-विशेष (आवहाटी १ पृ ९९)।

अडखम्मिअ—जागरूकता, देखभाल (दे १।४१)।

अडड—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अडडंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अडणि—धनुष्य का प्रांतभाग (?) (से १५।५६)।

अडणी—मार्ग (इ २६।३; दे १।१६)।

अडय—१ आत्मवान्। २ प्रशंसनीय (इ १।५)।

अडयणा—असती, कुलटा (दे १।१८)।

अडया—कुलटा (दे १।१८)।

अडयाल—१ अड़तालीस (निभा २१३२)। २ प्रशंसा—'अडयालशब्दो देशी-वचनत्वात् प्रशंसावाची' (प्रज्ञाटी प ८६)।

अडयालग—प्राकार का एक भाग—'अडयालग त्ति अट्टालक. प्राकारावयव. सम्भाव्यते' (उपाटी पृ १००)।

अडाड—बलात्, जबरदस्ती—'अडाडाए बला हरंतो अक्कंतिओ' (निचू ३ पृ २५६, दे १।१६)।

अडिल—चर्मपक्षी-विशेष (जीवटी प ४१)।

अडिला—चतुष्पद प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

अडिल्ल—चर्मपक्षी का एक भेद (प्रज्ञा १।७८)।

अड्ड—१ तिर्यक् (आवटि प ४६)। २ जो आड़े आता हो, बीच मे बाधक होता हो, वह।

अड्डग—जो आडे आता हो, बीच मे बाधक बनता हो—'गलए अड्डगं अट्टं वा कट्ठं वा' (सूचू २ पृ ३५५)।

अड्डपलाण—यान-विशेष, थिल्लि (भटी पृ ७३०)।

अड्डपल्ल—लाट देश मे प्रसिद्ध खच्चरो से वाह्य यान (ज्ञाटी प ४७)।

अड्डपल्लाण—लाट देश मे प्रसिद्ध यान-विशेष (औपटी पृ ११२)।

अड्डवियड्ड—१ आडा-टेढा, अस्त-व्यस्त—'वितिकिण्ण विप्रकीर्णं अणाणुपुव्वीए अड्डवियड्डं ति वुत्तं भवति' (निचू ४ पृ ३७)।

अड्डित—चढाया, आरोपित किया—'खवे य अड्डितो' (व्यभा २ टी प ६४)।

अड्डिय—१ भिडने की क्रिया-विशेष (निचू ३ पृ ३४८)। २ आरोपित (व्यभा २ टी प ६४)।

अड्डूपल्लाण—लाट देश मे प्रसिद्ध यान-विशेष (अनुद्वाहाटी पृ १४६)।

अड्डयक्कली—कमर पर हाथ रखना (दे १।४५)।

अड्ढेऊण—रोककर–'अड्ढेऊण सणियं विगिचइ, जह उज्जरा न जायति' (आवहाटी २ पृ ८७)।

अड्डोरुग—जैन साध्वी के पहनने का एक वस्त्र (पक १४८१)।

अण—पाप (भटी प ३५)।

अणंगण—गुल्म-विशेष (अवि पृ ६३)।

अणंत—१ अगूठी (अंवि पृ ६५)। २ निर्माल्य, देवता को चढाया गया उपहार (दे १।१०)।

अणंतग—वस्त्र (नि १।१३)।

अणंतिक्क—जुलाहा, बुनकर (आवचू १ पृ १५६)

अणक्क—१ म्लेच्छ जाति। २ म्लेच्छ देश-विशेष (प्र १।२१)।

अणघ—नीरोग (निचू १ पृ १२७)।

अणच्छिआर—अच्छिन्न, नही छेदा हुआ (दे १।४४)।

अणड—जार पुरुष (दे १।१८)।

अणत्त—निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (दे १।१०)।

अणप्प—खड्ग, तलवार (दे १।१२)।

अणप्पज्झ—१ पराधीन–'देशीपदमनात्मवशवाचकम्' (वृटी पृ १०३३)। २ भूताविष्ट (निचू २ पृ २६)।

अणप्फुण्ण—अव्याप्त, अस्पृष्ट (अनुद्वाचू पृ ५६)।

अणप्फुन्न—अनापूर्ण, अस्पृष्ट (अनुद्वा ४३८)।

अणफुण्ण—अपूर्ण, अस्पृष्ट, अनाक्रात (अनुद्वाहाटी पृ ८६)।

अणरामय—अरति, बेचैनी (दे १।४५)।

अणराह—शिर पर वाधी जाने वाली रग-विरंगी पट्टी (दे १।२४)।

अणरिक्क—१ अवकाश रहित, व्यस्त (दे १।२०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य (निचू १६)।

अणवदग्ग—१ अनन्त, निस्सीम–'अणवदग्ग····ससारकंतार अणुपरियट्टइ' (भ १।४५)। २ अविनाशी (सू २।५।२)।

अणवयग्ग—अनन्त, अपरिमित (आचू पृ १५६)।

अणवरिक्क—अवकाश सहित (दे १।२० वृ)।

अणह—१ अक्षत, सुरक्षित–'कयकज्जे अणह-समग्गे' (ज्ञा १।१८।२४, दे १।१३)। २ नीरोग (निचू १ पृ १२७)।

अणहप्पणय—अनष्ट, विद्यमान (दे १।४८)।

अणहारअ—खल्ल, वह भूमी जिसका मध्यभाग नीचा हो (दे १।३८)।

अणागलिय—अपरिमित (उपा २।३४)।

अणाड—जार पुरुष (दे १।१८)।

अणाडिया—१ कुचेष्टा, विक्रिया (आवचू १ पृ ४६७)। २ नटखटपन—'एक्का वि मए पुत्तस्स अणाडिया न दिट्ठा' (वृटी पृ ५७)।

अणाढायमाण—अस्मरण (आचू पृ ३०३)।

अणादुआल—विना हिलाये (सूचू १ पृ १२२)।

अणालिआ—कुचेष्टा, विक्रिया—'अणालिआ करेइ' (आवहाटी १ पृ २४७)।

अणिट्ठुह—अविगलक, नहीं थूकने वाला (सू २।२।६६)।

अणिट्ठुहअ—१ अनिष्ठीवक। २ सचेष्ट, जागरूक (भ २५।५७१)।

अणिड्डुगलित—अत्यधिक लिप्त—'अणिड्डुगलिते अतीव लेत्यरिय' (निचू २ पृ ३०१)।

अणिदा—अनुभव शून्य, ज्ञानशून्य—'सव्वे असण्णी असण्णीभूतं अणिदाए वेदण वेदेति' (भ १।७८)।

अणिदाय—ज्ञान का अभाव (भटी पृ १४१७)।

अणिदोच्च—१ भय का होना। २ अस्वास्थ्य (व्यभा ६ टी प ५१)।

अणिय—अग्रभाग (प्र ७।२)।

अणियण—कल्पवृक्ष का एक प्रकार (प्रसाटी प ३१४)।

अणिलुक्क—प्रकट, अतिरोहित—'अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मण्णइ' (भ १५।१०२)।

अणिल्ल—प्रभात (दे १।१६)।

अणिह—१ सदृश। २ मुख (दे १।५१)।

अणु—चावल की एक जाति (दे १।५)।

अणुअल्ल—प्रभात (दे १।१६)।

अणुआ—यष्टि, लकडी (दे १।५२ वृ)।

अणुइअ—चना (दे १।२१)।

अणुज्जल—अचंचल (अवि पृ ४)।

अणुदवि—प्रभात (दे १।१६)।

अणुद्धरी—कुंथु आदि कीट-विशेष (निचू ३ पृ १२४)।

अणुबंधिअ—हिक्का रोग, हिचकी (दे १।४४)।

अणुय—१ धान्य-विशेष (दनि १५५; दे १।५२)। २ आकृति (दे १।५२)।

अणुरंगा—गाड़ी—'अणुरगा णाम घंसिओ' (निचू ४ पृ १११)।

अणुल्लय—द्वीन्द्रिय जतु-विशेष (उ ३६।१२६)।

अणुव—बलात्कार (दे १।१९)।

अणुवज्जण—सेवा-शुश्रूषा, देखभाल (दे १।४१ वृ)।

अणुवज्जिअ—१ जागरूकता, देखभाल (दे १।४१)। २ गत (वृ)।

अणुवहुआ—नववधू (दे १।४८)।

अणुसंधिअ—निरंतर हिचकी आना (दे १।५९)।

अणुसुत्ति—अनुकूल (दे १।२५)।

अणुसूआ—शीघ्र ही प्रसव करने वाली स्त्री (दे १।२३)।

अणेकज्झ—चंचल (दे १।३०)।

अणोभट्ठ—अप्रार्थित, अयाचित (ओनि १४८)।

अणोयविय—अपरिकर्मित (निचू २ पृ ४२६)।

अणोरपार—१ अनादि-अनन्त—'ससारे घोरम्मि अणोरपारे' (सू २।६।४९)।
२ प्रचुर—'अणोरपारमिति देशीवचनं प्रचुरार्थे' (आवहाटी १ पृ २३०)।
३ अपार—'अणोरपारम्मि देशयुक्त्या अपारे' (आवदी प १६१)।

अणोलय—प्रभात (दे १।१९)।

अणोहट्टय—उच्छृखल (ज्ञाटी प २४५)।

अणोहट्टिय—स्वच्छद (ज्ञा १।१८।१७)।

अणोहट्ठ—अनिच्छित, अप्रार्थित—'अणोहट्ठं अजाणियं' (निचू २ पृ १९९)।

अण्ण—१ पुरुष के लिए प्रयुक्त सम्बोधन (द ७।१९)—'अण्णं' इति मरहट्ठाणं आमंतणवयण' (दअचू पृ १६९)। २ आरोपित। ३ खण्डित।

अण्णअ—१ तरुण। २ धूर्त्त। ३ देवर (दे १।५५)।

अण्णइअ—तृप्त (दे १।१९)। २ सर्वार्थ-तृप्त, सभी विषयों मे तृप्त (वृ)।

अण्णत्ति—अवज्ञा, अनादर (दे १।१७)।

अण्णमय—पुनरुक्त, पुन. कहा हुआ (दे १।२८)।

अण्णाण—१ विवाह-काल मे वधू को दिया जाने वाला उपहार—दहेज। २ विवाह के लिए वर को वधू का दान—कन्यादान (दे १।७)।

अण्णाय—आर्द्र, गीला (से ४।९)।

अण्णिआ—१ देवरानी। २ ननद। ३ फूफी (दे १।५१)।

अण्णी—१ देवरानी, देवर की पत्नी। २ ननद, पति की वहिन। ३ फूफी, पिता की वहिन (दे १।५१)।

अण्णे—१ महाराष्ट्र मे प्रयुक्त तरुणी स्त्री के लिए संबोधन-शब्द—'अण्णे त्ति मरहट्ठेसु तरुणित्थीसामतणं'(द ७।१६; अचूपृ १६८)। २ महाराष्ट्र मे वेश्याओ के लिए प्रयुक्त चाटु वचन—'मरहट्ठविसए आमंतणं दोमूलइखरगाणं चाटुवयण अण्णेत्ति (जिचू पृ २५०)।

अण्णोसरिअ—अतिक्रान्त, उल्लंघित (दे १।३९)।

अण्हेअअ--भ्रान्त (दे १।२१)।

अतितिण--बड-बड न करने वाला, वकवास न करने वाला (द ८।२९)।

अतिकिमण—अलस, मथर—'अलसमभारो भीरू अतिकिमणो मंथरो त्ति वा' (अंवि पृ २४१)।

अतित्थित—अतिक्रान्त (व्यभा १० टी प ६)।

अतिप्पणया—अश्रु न वहाना (भ ७।११४)।

अतिर—निरन्तर—'अतिर णिरंतरं भण्णति' (जीभा १६८०)।

अतिराउल—स्वामीकुल—'अतिराउले इति देशीपदं, स्वामिकुलमित्यर्थः' (प्रज्ञाटी प २५३)।

अतिस—अप्रीति (अंवि पृ १२)।

अतीत्थित—अतिक्रान्त (व्यभा १० टी प ६)

अत्ता—१ फूफी। २ सासू। ३ सखी (दे १।५१)।

अत्थ—अनवसर, अकस्मात् (दे १।१४)।

अत्थक्क—अकस्मात् (से ११।२४)। २ अखिन्न। ३ अनवरत।

अत्थग्घ—१ मध्यवर्ती (ओनि ३४)। २ अगाध, गहरा। ३ आयाम, लंबाई। ४ स्थान (दे १।५४)।

अत्थणिउर--संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अत्थणिउरंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अत्थभिल्ल—रीछ (निचू २ पृ ९३)।

अत्थयारिआ—सखी, सहेली (दे १।१६)।

अत्थाक्क—अकस्मात् (से ११।२४)।

अत्थार--सहायता, सहयोग (दे १।१९)।

अत्थारिय—कर्मकर, मूल्य लेकर खेत मे धान आदि काटने वाला नौकर—'अत्थारिएहिं तु ये मूल्यप्रदानेन शालिलवनाय कर्मकराः' (व्यभा ६ टी प ३८)।

अत्थाह—१ अगाध, गहरा, ऊंडा। २ आयाम, लम्बाई। ३ स्थान। ४ मध्यवर्ती, वीच का (दे १।५४)।

अत्थिय—१ वृक्ष-विशेष। २ बहुत बीज वाला फल (भ २२।३)।

अत्थिल—क्षुद्र जंतु (अवि पृ २५३)।

अत्थुड—लघु (दे १।९)।

अत्थुरण—आस्तरण (निचू ३ पृ ३२३)।

अत्थुरणग—आस्तरण-विशेष (निचू ३ पृ ५६८)।

अत्थुरिय—फैलाया हुआ, बिछाया हुआ (बृभा ६१०)।

अत्थुवड—भल्लातक, भिलावा वृक्ष का फल (दे १।२३)।

अत्थेक्क—आकस्मिक, अचिन्तित (से १२।४७)।

अथक्क—१ अकस्मात्, अनवसर (ओटी प ८७) २ प्रसरणशील, फैलने वाला।

अदंतवणय—अदन्तधावन, दतौन का निषेध (स्था ९।६२)।

अदंसण—चोर (दे १।२९)।

अदक्खेयव्व—ग्राह्य (ओनि)।

अदिसल्ल—अंधा (निचू ४ पृ १०९)।

अदु—१ अब (आ ९।३।१०)। २ अथ, इसलिए (सू १।२।२४)। ३ अथवा (उ २।२३)। ४ अधिकारान्तर का सूचक। ५ इससे।

अदुत्तरं—आनन्तर्य सूचक अव्यय, अब (सू २।२।१८)।

अदुल—आम आदि का रूछा (अनुद्वाहाटी पृ ७६)।

अदुव—अथवा (द ६।२)।

अदुवा—अथवा (द ५।७५)।

अदूयालिय—मिश्रित—'जत्तियाणि भरहे धण्णानि........ताणि सव्वाणि अदूयालियाणि' (उशाटी प १४६)।

अद्द—१ अभिमुख (आवचू १ पृ २७८)। २ परिहास। ३ वर्णन।

अद्दण—आकुल (दे १।१५)।

अद्दण्ण—१ व्याकुल (पक ६६१, दे १।१५)। २ असत्य (व्यभा ६ टी प ३)।

अद्दन्न—आकुल-व्याकुल (बृभा ३६३३)।

अद्दाइअ—आदर्श, पवित्र आचरण वाला (बृ १)।

अद्दाग—दर्पण (स्था ४।४३१)।

अद्दाय—१ दर्पण, आदर्श,—'जे भिक्खू अद्दाए अप्पाणं देहति' (नि १३।३२; दे १।१४)। २ वह विद्या जिससे दर्पण मे प्रतिबिम्बित रोगी के

बिम्ब को पोंछने से रोगी नीरोग हो जाता है।
(व्यभा ५ टी प २६)।

अद्धंत—१ पर्यन्त, अंतभाग (दे १।८)। २ कतिपय, कई एक।

अद्धक्खण—१ प्रतीक्षा (दे १।३४)। २ परीक्षण—'परीक्षणमिति केचित्' (वृ)।

अद्धक्खिअ—संकेत करना (दे १३४)।

अद्धजंघा—'मोचक' नाम का जूता-विशेष (दे १।३३)।

अद्धजंघिया—पाद-रक्षक, जूता-विशेष (दे १।३३ वृ)।

अद्धविआर—१ मंडन, भूषण (दे १।४३)। २ मंडल, गोल (वृ)।

अद्धा—१ समय (स्था २।३९)। २ लब्धि, शक्ति-विशेष। ३ वस्तुतः। ४ साक्षात्। ५ दिन। ६ रात्रि। ७ संकेत।

अद्धाण—महान् अटवी—'अद्धाणं महंता अडवी' (निचू १ पृ ८०)।

अद्धुट्ठ—साढे तीन—'अद्धुट्ठणावि कुमारकोटीणं' (प्र ४।५)।

अधंकण—अमायी (सूचू १ पृ १८९)।

अधवण—अथवा (वृभा ४१९३)।

अधिकरणिखोडि—अहरन को रखने का काष्ठ-विशेष (भ १६।७)।

अधिवक्कमणक—उत्सव-विशेष (अंवि पृ १२१)।

अनिदोच्च—भयभीत, अस्वस्थ—'अणिदोच्चमित्यनिर्भयमस्वस्थमित्यर्थः (व्यभा ७ टी प ५१)।

अन्न—पुरुष के लिए प्रयुक्त संबोधन-शब्द (द ७।१९)।

अन्नइलाय—वासी भोजन करने वाला (प्रटी प ११०)।

अन्नओहुत्त—पराङ्मुख—'रोसेण य अन्नओहुत्तो जाओ राया' (उसुटी प २९)।

अन्नतिलाय—वासी भोजन करने वाला (प्रटी प ५०६)।

अन्ना—१ तरुण स्त्री का सम्बोधन-शब्द (द ७।१६)। २ माता।

अपडिच्छिर—जड-मति, मूर्ख (दे १।४३)।

अपडिहत—भोज्य पदार्थ-विशेष—'पूणे वा फेणके वा अक्खपूणे वा अपडिहते वा' (अंवि पृ १८२)।

अपलोकणिक—सिर का आभरण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

अपातय—अकाल (?)—'अपातयं सस्सवापत्ति' (अंवि पृ ११२)।

अपारमग्ग—विश्राम (दे १।४३)।

अपुप्फिय—स्वच्छ, सुगंधित (वृभा ४३८)।
अपोल—पोल रहित, अशुषिर (पंवटी प ६७)।
अपोल्ल—अशुषिर, निविड (प्रसा ६७४)।
अप्प—पिता (दे १।६)।
अप्पगुत्ता—कपिकच्छू, कवाछ, (दे १।२६)।
अप्पजूहिअ—पके हुए चावल आदि (आटी प ३३४)।
अप्पज्झ—आत्मवश, स्वस्थचित्त (वृभा ३७३२, दे १।१४)।
अप्पत्तिय—१ अप्रीति। २ अविश्वास (दश्रु ६।४)।
अप्पद्दुण्ण—आत्मरक्षा मे तत्पर, स्वयं को बचाने मे तत्पर (बृभा ११५३)।
अप्पसत्थभ—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।
अप्पाह—संदेश (व्यभा ७ टी प २६)।
अप्पाहट्टु—जानकर, कहकर (सू २।१।१२)।
अप्पाहण—सदेश (वृभा २३६)।
अप्पाहणी—सदेश (पिनि ४३०)।
अप्पाहित—सदिष्ट (वृभा ३२८४)।
अप्पाहिय—सदिष्ट (वृटी पृ ७४)।
अप्पोया—आस्फोता, वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।
अप्पोल—पोल रहित (निभा २१७०)।
अप्पोल्ल—पोल रहित, निगर (ओभा ३२२)।
अप्फच्चिय—अपरिचित (निचू ३ पृ ३३७)।
अप्फच्चित—अपरिचित (निचू २ पृ ११७)।
अप्फाया—वनस्पति-विशेष (जीवटी प ३५१)।
अप्फुण्ण—१ पूर्ण, भरा हुआ (विपा १।२।५३; दे १।२०)। २ आक्रांत, स्पृष्ट (अनुद्वाचू पृ ५६)। ३ आच्छादित (से २।४)।
अप्फुन्न—आपूर्ण, स्पृष्ट, आक्रान्त (अनुद्वा ४३६)।
अप्फेया—आस्फोता, वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।
अप्फोता—वनस्पति-विशेष (जीव ३।२९६)।
अप्फोतिका—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।
अप्फोय—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।
अप्फोया—१ वनस्पति-विशेष (राज १८४)। २ वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।३)।

अप्फोव—१ लता (उ १८।५)। २ वृक्ष आदि से आकीर्ण, गहन (उशाटी प ४३८)।

अफुण्ण—परिपूर्ण (प्रज्ञा २६।५६)।

अफुन्न—स्पृष्ट (प्रसाटी प ३०४)।

अबीय—दुर्भिक्ष (निचू ४ पृ १२८)।

अबोट—अनाक्रमणीय (ओटी प ६२)।

अब्बुद्धसिरी—इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति (दे १।४२)।

अब्भ—अध्यारोह वृक्ष, वृक्ष पर उत्पन्न होने वाला विजातीय वृक्ष—'अब्भेति वृक्षे समुत्पन्नो विजातीयो वृक्षविशेषोऽध्यवरोहकः' (भटी पृ १४७६)।

अब्भंगिएल्लअ—घी आदि से चुपड़े हुए शरीर वाला (ओनि ८२)।

अब्भक्खण—अकीर्ति (दे १।३१)।

अब्भड—आहत, टकराना (आवहाटी १ पृ २८८)।

अब्भडवंचिउ—अनुगमन करके (प्रा ४।३९५)।

अब्भपिसाअ—राहु (दे १।४२)।

अब्भवालुय—अभ्रक का चूर्ण (उ ३६।७४)।

अब्भाकारिय—कर्मजीवी (?) (अंवि पृ ६७)।

अब्भायत्त—प्रत्यागत, वापस आया हुआ (दे १।३१)—'अब्भायत्ता भमन्ति तुह रिउणो' (वृ)।

अब्भायत्थ—पश्चाद्गत, फिर गया हुआ—'अब्भायत्थो पश्चाद् गत इति तु गोपाल' (दे १।३१ वृ)।

अब्भिडिअ—१ सार, मजबूत। २ संगत, युक्त (दे १।७८)।

अब्भिडिऊण—टकरा कर—'सो चक्के अब्भिडिऊण भग्गो' (उशाटी प १४९)।

अब्भुट्ठि—हिंसक—'आउट्टि त्ति वा अब्भुट्ठि त्ति वा एगट्ठा' (आचू पृ २७५)।

अब्भुत्त—प्रदीप्त, चमकदार (निचू ३ पृ ३२१)।

अब्भुत्तिअ—१ प्रदीप्त, प्रकाशित। २ उत्तेजित्त (से १५।३८)।

अब्भूआण—उफनता हुआ—'आकठा आदाणस्स भरिया, तो तप्पमाणी भरिया अब्भूआणा छड्डिज्जति, अग्गि पि विज्झावेति' (निचू ३ पृ ८५)।

अभिचार—उच्चाटन आदि (निचू १ पृ १६३)।

अभिणूम—१ माया (सू १।२।७)। २ कर्म (सूचू पृ ५३)।

अभिणणपुड—खाली पुडिया जिसको बच्चे लोगों को ललचाने के लिए रास्ते पर रख देते है (दे १।४४)।

अभिनिपिया—प्रत्येक का पृथक्-पृथक् चूल्हा (व्य ९।१०)।

अभिनिव्वगड—१ अनेक और निश्चित परिक्षेप वाला स्थान। २ पृथग्-पृथग् परिक्षेप वाला स्थान (बृ १।११ टी पृ ६४९)। ३ वह परिक्षेप जिसमे प्रवेश और निष्क्रमण का एक द्वार हो पर भीतर अनेक घर हो (व्यभा ८ टी प ४)।

अमंगुल—इष्ट (निचू ३ पृ १४२)।

अमज्जाइल्ल—अमर्यादित, अव्यवस्थित (निभा ४०३)।

अमणाम—मन के लिए अप्रिय (स्था २ २३३)।

अमय—१ चन्द्रमा, चाद (दे १।१५)। २ असुर, दैत्य।

अमयणिग्गम—चन्द्रमा (दे १।१५)।

अमाघाय—अमारि—'अमाघातो रूढिशब्दत्वात् अमारिरित्यर्थः' (उपाटी पृ ९१)।

अमिय—प्राप्त—'अमिया गावीतो, जुज्झं संपलग्ग' (निचू ३ पृ १९७)।

अमिल—१ मेष, भेड (ओनि ३६८)। २ भांड-विशेष (अंवि पृ ७२)।

अमिला—१ भेड की ऊन से वना वस्त्र (आचूला ५।१४)। २ देश-विशेष मे सूक्ष्म रोओं से निर्मित वस्त्र (निचू २ पृ ३९९)।

अमुदग्ग—अतीन्द्रिय मिथ्याज्ञान-विशेष, जीव पुद्गलो से वना हुआ नही है—ऐसा ज्ञान (स्था ७।२)।

अमुय—अस्मृत, अज्ञात (भ १।४२९)।

अमोग्गतिया—सम्मुख जाना, त्वरित गति से जाना—'तस्सागमणवेलाए सव्वो परियणो पच्चोवणीए णिग्गतो अमोग्गतिया एति' (निचू ३ पृ ४११)।

अमोसली—अप्रमादयुक्त प्रतिलेखना का एक प्रकार (स्था ६।४६)।

अम्मका—मा (आवदी प ८०)।

अम्मगा—मा (भ ९।१४८)।

अम्मणअंचिअ—अनुगमन, पीछे-पीछे जाना (दे १।४९)।

अम्मया—माता, अम्बा (ज्ञा १।९।४)।

अम्मा—मां (अत ५।१६, दे १।५)।

अम्माइआ—अनुगमन करने वाली, पीछे-पीछे जाने वाली (दे १।२२)।

अम्मिय—प्राप्त (बृटी पृ ७७९)।

अम्मो—१ माता का सम्बोधन (ज्ञा १।१४।२६)। २ आश्चर्यसूचक अव्यय (प्रा २।२०८)।

अम्मोगइया—सम्मुख-गमन, स्वागत करने के लिए सामने जाना—'राया सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ' (उसुटी प २३)।

अम्मोगतिया—सम्मुख-गमन (आवचू १ पृ ३६५)।

अय—१ विस्मृत। २ आदरणीय। ३ परित्यक्त (दे १।४६)।

अयक्क—दानव (दे १।६)।

अयग—दानव (दे १।६)।

अयड—कुआ, कूप (दे १।१८)।

अयतंचिअ—हृष्ट-पुष्ट, मासल (दे १।४७)।

अयसा—सुरा-विशेष (अवि पृ १८१)।

अयालि—मेघाच्छन्न दिवस, आकाश मे बादलों के छा जाने से होने वाला अन्धकार, दुर्दिन (दे १।१३)।

अयोइल्ल—कारावास—'डड पुरस्कृत्य राया अयोइल्लए ठवेति' (दश्रुचू प ३९)।

अरइय—१ अर्श, मसा (आचूला १३।२८)। २ अजीर्ण (नि ३।३४)।

अरंजरग—जलघट (सूचू १ पृ ११७)।

अरक—कृमि-विशेष (अवि पृ ६९)।

अरतीअ—मसा, अर्श (आचू पृ ३७२)।

अरबाग—१ एक अनार्य देश, अरब देश (प्रसा ८३)। २ अरब देश के वासी (कु पृ ४०)।

अरल—१ कीट-विशेष, चीरी। २ मच्छर (दे १।५२)।

अरलाया—चीरी, चार इन्द्रिय वाला छोटा प्राणी जो रात को लयबद्ध ध्वनि करता है, पर दृष्टिगोचर नही होता (दे १।२६)।

अरलूसा—अडूसा का वृक्ष (अवि पृ ७०)।

अरविंदर—दीर्घ (दे १।४५)।

अरहट्ट—रहट (ओटी प १९)।

अरिअल्लि—व्याघ्र (दे १।२४)।

अरिज्ज—अग्र, परिमाण (आचू पृ ३३६)।

अरिसिल्ल—बवासीर रोग वाला (विपा १।७।७)।

अरिहइ—निश्चित, अवश्य (दे १।२२)।

अरुग—व्रण, फोडा (बृभा ६०२८)।

अरुण—कमल (दे १।८)।

अरुय—व्रण (बृभा २२२५)।

अलंदक—कटोरा (अंवि पृ ६५)।

अलंदिका—थाली के आकार का पात्र (अंवि पृ ७२)।

अलंदिग—पात्र-विशेष (आचू पृ ३४५)।

अलंप—कुक्कुट (दे १।१३)।

अलक्कडअ—पागल कुत्ता (बृटी पृ ८२९)।

अलग्ग—कलंक, आरोप (दे १।११)।

अलमंजुल—आलसी, सुस्त (दे १।४६)।

अलमल—दुर्दान्त वृषभ, दुष्ट बैल (दे १।२५)।

अलमलवसह—दुर्दान्त वृषभ, दुष्ट बैल—'अलमलवसहो सप्ताक्षरं नामेति गोपाल' (दे १।२५ वृ)।

अलय—विद्रुम, प्रवाल (दे १।१६)।

अलस—१ मोम। २ कुसुभ रंग से रंगा हुआ (दे १।५२)। २ मंद-मधुर ध्वनि (पा ६०२)।

अलसंदक—अतसी, धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।

अलाहि—पर्याप्त, परिपूर्ण (ज्ञा १।१।६१)।

अलिय—विच्छू का डक, काटा (विपा १।६।२३)।

अलिअल्ली—१ कस्तूरिका। २ व्याघ्र (दे १।५६)।

अलिआ—सखी (दे १।१६)।

अलिआर—दुग्ध (दे १।२३)।

अलिंजरअ—रंगने का वडा पात्र (पा ६२३)।

अलिंद—पात्र-विशेप (अनुद्वा ३७५)।

अलिंदिगा—एक प्रकार का जलपात्र (आवचू २ पृ ७०)।

अलिण—वृश्चिक, विच्छू (दे १।११)।

अलित्तय—नौका खेने का वडा वास—'अलित्तओ कोट्टिवियाए फिट्टो महल्लो वंसो' (आचू पृ ३५७)।

अलियाण—अकुशल (प्र २।१४)।

अलिसिंद—धान्य-विशेष—'अलिसिंदा चवलागारा' (निचू २ पृ १०६)।

अलीपट्ट—विच्छू के डंक की आकृति वाली तीखी खूटी (विपा १।६।२०)।

अलीसअ—शाक वृक्ष (दे १।२७)।

अलेभड—अस्थिर—'तत्थ नवमो वासारत्तो कओ, सो य अलेभडो जाओ' (आवहाटी १ पृ १४१)।

अल्ल—दिन (अंवि पृ २४२; दे १।५)।

अल्लअ—परिचित (दे १।१२)।

अल्लकम्म—१ दैनिक व्यवहार की कला। २ सिंचन-कला (कु पृ २३३)।

अल्लट्टपलट्ट—पार्श्व का परिवर्तन (दे १।४८)।

अल्लट्टपलट्टया—पार्श्व का परिवर्तन (दे १।४८ वृ)।

अल्लत्थ—१ पानी से भीगा हुआ। २ केयूर, बाजूबंद (दे १।५४)।

अल्लपल्ल—बिच्छू के डक की आकृति वाली तीखी खूटिया (विपाटी प ७१)।

अल्लमुत्था—कद-विशेप (प्रसा २३८)।

अल्लल्ल—मयूर (दे १।१३)।

अल्लविय—उठाना, भार ढोना—'तेण तस्स सत्थकोत्थलओ अल्लविओ' (उसुटी प २७)।

अल्ला—१ जननी, माता (दे १।५)। २ अवमीलन, आख बंद करना (से १३।४३)।

अल्लिय—पास मे आना (पव ६३७)।

अल्लियअ—समीप—'गतू साहूणमल्लियओ' (पंक ६००)।

अल्लियाव—१ छीना हुआ (पक ४९२)। २ प्रवेश (आवचू १ पृ ४४६)।

अल्लीण—आया—'न कोइ कयगो अल्लीणो' (व्यभा २ टी प ४६)।

अवअक्खिअ—मुडाया हुआ मुह (दे १।४०)।

अवअच्चिअ—मासल (दे १।४७ वृ)।

अवअच्छ—१ कौपीन, कक्षावस्त्र (दे १।२६)। २ काख, वगल (वृ)।

अवअच्छिअ—निर्वापित मुख, मुडाया हुआ मुह (दे १।४०)।

अवअणिअ—असघटित, अयुक्त (दे १।४४)।

अवअण्ण—उदूखल, उलूखल (दे १।२६)।

अवइ—अनतकाय वनस्पति-विशेष (भटी पृ १४८५)।

अवउज्जिअ—नीचे झुककर—'अवउज्जिअत्ति अधोऽवनम्य' (आटी प ३४२)।

अवएज—पात्र-विशेप (ज्ञाटी प ४८)।

अवएड—पात्र-विशेप (ज्ञाटी प ४७)।

अवएडय—तापिकाहस्त, तवे का हाथा (भ ११।१५९)।

अवओडय—गले को मरोड़ना (विपा १।२।१४)।

अवओडयबंधणय—वह व्यक्ति जिसके गले और हाथों को मरोडकर उनको पृष्ठभाग के साथ रस्सी से बांध दिया जाए (अत ६।२२)।

अवंग—कटाक्ष (दे १।१५)।

अवंगुणित्ता—खोलकर (भ १५।१४२)।

अवंगुणेत्ता—खोलकर (ज्ञा १।१६।६५)।

अवंगुत—उद्घाटित (वृभा ४०७१)।

अवंगुय—उद्घाटित (भ २।६४)।

अवकड्ढित—पराजित—'अवकड्ढिते पराहूते पराजित परम्मुहे' (अवि पृ १०८)।'

अवकीरिअ—विरहित (दे १।३८)।

अवकोडक—गले को मरोडना, कृकाटिका—गले के पिछले भाग को नीचे ले जाना (प्र ३।१२)।

अवक्करस—मद्य, मदिरा (दे १।४६)।

अवग—जलीय वनस्पति-विशेष (सू २।३।४३)।

अवगद—विस्तीर्ण, विशाल (दे १।३०)।

अवगर—कूडा (भटी पृ ७३०)।

अवगूढ—अपराध (दे १।२०)।

अवचुल्ल—छोटा चूल्हा (निचू ३ पृ १०६)।

अवचुल्ली—छोटा चूल्हा—'चुल्लीए समीवे अवचुल्ली' (निचू ३ पृ १०६)।

अवच्छुरण—क्रोध के वशीभूत होकर अनर्गल बोलना—'किमिह जुत्तं पिअम्मि अवच्छुरणं' (दे १।३६ वृ)।

अवछुरण—क्रोध के वशीभूत होकर अनर्गल बोलना (दे १।३६)।

अवज्झर—निर्झर-विशेष (ज्ञाटी प १०६)।

अवज्झस १ कटि, कमर। २ कठिन (दे १।५६)।

अवठंभ—ताम्बूल (दे १।३६)।

अवड—१ कूप। २ आराम, बगीचा (दे १।५३)।

अवडअ—१ तृण-पुरुष, घास की बनी हुई पुरुषाकृति (दे १।२०)। २ कूप। ३ बगीचा (दे १।५३ वृ)।

अवडक्किअ—कूप आदि मे गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्महत्या की हो वह (दे १।४७)।

अवडाहिअ—१ अभिशप्त ।(दे १।४७) । २ उत्क्रुष्ट ।

अवडिअ—खिन्न (दे १।२१) ।

अवडिच्छि—अनपेक्षित (से १०।४१) ।

अवडुअ—उलूखल, ऊखल (दे १।२६) ।

अवड्डा—कृकाटिका (भटी पृ १२५७) ।

अवण—१ पानी की तीव्र धारा जो नीचे से ऊपर की ओर निकलती है ।
२ घर का फलहक (दे १।५५) ।

अवण्ण—अवगणना, अवज्ञा (दे १।१७) ।

अवतंस—'पुरुषव्याधि' नामक रोग-विशेष (वृभा ६३३६) ।

अवतासाविय—अवश्लिष्ट (विपा १।१।५५) ।

अवतासित—बलात् आलिंगित—'बलामोटिकया आलिंगितः'
(वृटी पृ १५१०) ।

अवत्त—उपलिप्त (वृभा ५८४) ।

अवत्तय—विसस्थुल, अव्यवस्थित (दे १।३४) ।

अवत्थरा—पाद-प्रहार (दे १।२२) ।

अवद्दुस—ऊखल, छाज आदि सामान्य उपकरण (दे १।३०) ।

अवधिका—उपदेहिका, दीमक (प्र १।३३) ।

अवपक्क—तवा (ज्ञाटी प ४७) ।

अवपुसिअ—संघटित, सयुक्त (दे १।३९) ।

अवमद्द—भाजन-विशेष (जंबूटी प १००) ।

अवमिय—जिसको घाव हो गया हो वह, जख्मी (वृ ३) ।

अवयक्का—कड़ाही (भ ११।१५९) ।

अवयक्खिअ—मुडित मुख (दे १।४०) ।

अवयग्ग—अंत, अवसान—'अवयग्ग ति देशीवचनोऽन्तवाचक.' (भटी प ३५) ।

अवयच्छिय—१ प्रसारित (ज्ञाटी प १४४) । २ मुण्डित मुख (दे १।४०) ।

अवयड्डिय—युद्ध-क्षेत्र में अपहृत (दे १।४६) ।

अवयत्थिय—प्रसारित—'अवयत्थिय-महल्ल-विगय-वीभच्छरत्ततालुयं'
(ज्ञा १।८।७२) ।

अवयरिअ—विरह, वियोग (दे १।३६) ।

अवयाण—आकर्षण-रज्जु, खीचने की डोरी (दे १।२४) ।

अवयार—माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव-विशेष, जिसमे इक्षु-खंड से दतवन करना आदि क्रियाए की जाती हैं (दे १।३२)।

अवयास—आलिंगन (पिनि ५८१)।

अवयासण—आलिंगन (कु पृ १७३)।

अवयासाविअ—आलिंगित (विपाटी प ६७)।

अवयासिअ—आलिंगित (वृभा ५७१०)।

अवयासिणी—नासा-रज्जु, नाक मे डाली जाती डोर (दे १।४६)।

अवयि—रोग-विशेष (अवि पृ २०३)।

अवरज्ज—१ गत दिवस। २ आगामी दिवस। ३ प्रभात (दे १।५६)।

अवरत्तअ—पश्चात्ताप (दे १।४५)।

अवरत्तेअ—पश्चात्ताप, अनुताप (दे १।४५ वृ)।

अवरद्धिग—१ लूतास्फोट, मकडी के काटने से होने वाला फोडा। २ सर्पदंश (पिनि १४)।

अवराह—कटि, कमर (दे १।२८)।

अवरिक्क—अवकाश-रहित, व्यस्त (दे १।२०)।

अवरिज्ज—अद्वितीय (दे १।३६)।

अवरिद्धि—१ मकडी के काटने से होने वाला फोडा। २ सर्पदश (पिटी प १६३)।

अवरिहट्टपुसण—१ अकीर्ति। २ असत्य। ३ दान (दे १।६०)।

अवरुंडण—परिरभण, आलिंगन (पा ४६२)।

अवरुंडिअ—आलिंगन (आवहाटी १ पृ १८३; दे १।११)।

अवरेय—रिक्तता (उशाटी प ३०५)।

अवरोह—कटि, कमर (दे १।२८)।

अवलय—घर, मकान (दे १।२३)।

अवलिंब—१ बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (ओलिंद ?)। २ दीमक का ढूह (ओलिंभा दे १।१५३ ?)। (स्था २।३६१)।

अवलिच्छिअ—अप्राप्त–'अवलिच्छिअसेससाअरो मअरहरो' (से ६।७८)।

अवलिय—असत्य (दे १।२२)।

अवलुआ—कोप (दे १।३६)।

अवल्ल—बैल (आवचू २ पृ १५३)।

अवल्लक—नौका खेने का उपकरण-विशेष (सूचू १ पृ ३६)।

अवल्लय—नौका खेने का उपकरण-विशेष (आचूला ३।१९)।

अवल्लाव—असत्य कथन, अपलाप (दे १।३८ वृ)।

अवल्लावअ—अपलाप, असत्य कथन (दे १।३८)।

अवव—संख्या-विशेष—'चतुरशीतिरववाङ्गा शतसहस्राणि एकमववम्' (जीवटी प ३४५)।

अववंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अवसंतुइय—बाहर निकालकर (दअचू पृ ११५)।

अवसमिआ—गूंदा हुआ बासी आटा (दे १।३७)।

अवसह—१ उत्सव। २ नियम (दे १।५८)

अवसावण—१ काञ्जिका—'अवसावणं लाडाण कंजियं भण्णई' (वृटी पृ ८७१)। २ भात वगैरह का पानी।

अवह—शरीर का अवयव (अवि पृ ६६)।

अवहट्ठ—अभिमानी, अहंकारी (दे १।२३)।

अवहड—मुसल (दे १।३२)।

अवहण्ण—उलूखल (दे १।२६ वृ)।

अवहत्थरा—पाद-प्रहार (दे १।२२ वृ)।

अवहन्न—ऊखल (वृभा २६३३)।

अवहाअ—विरह (दे १।३६)।

अवहित्था—मन की अस्त-व्यस्तता, अकुलाहट (से ११।९ टी)।

अवहेअ—दया-पात्र, अनुकंपा का पात्र (दे १।२२)।

अवहेडग—आधासीसी रोग (उशाटी प १४३)।

अवहेडय—आधासीसी रोग, आधे सिर का रोग (उनि १५०)।

अवहेडिय—नीचे की तरफ मुड़ा हुआ, झुका हुआ—'अवहेडिय पिट्ठसउत्तमंगे' (उ १२।२९)।

अवहेरी—तिरस्कार, अवहेलना (उसुटी प १९२)।

अवहोडय—बन्धन का एक प्रकार, हाथ और सिर को पीठ से बांधना—'अवहोडएण जक्खस्सेव पुरओ बधेऊण' (उसुटी प ३५)।

अवार—बाजार, दुकान (निचू २ पृ १६०; दे १।१२)।

अवारी—दुकान, बाजार (दे १।१२)।

अवालुआ—होठ का प्रान्त भाग (दे १।२८)—'अवालुआ फुडइ फुडइ' (वृ)।

अविअ—कहा हुआ (दे १।१०)।

अविच्छिय—प्रसारित (ज्ञाटी प १४४)।

अविणयवइ—जार-पुरुष (दे १।१८ वृ)।

अविणयवर—जार-पुरुष (दे १।१८)।

अवियत्त—अप्रीति (व्यभा २ टी प ३४)।

अवियाउरी—१ प्रसव करने पर जिसकी संतान तत्काल मर जाती हो, वह स्त्री (ज्ञा १।२।८)। २ वन्ध्या (आवचू १ पृ २६४)।

अविरल्ल—अविस्तारित, एकत्रित (व्यभा ४।४ टी प १०)।

अविरल्लण—अविस्तारित, एकत्रित (व्यभा ५ टी प १०)।

अविराय—अविध्वस्त (जी ३।११८)।

अविरिक्क—अविभक्त (व्यभा ६ टी प ६)।

अविल—१ पशु। २ कठिन (दे १।५२)।

अविला—गड्डरिका (पिटी प २०)।

अविहाड—१ बालक, बच्चा—'देशीभाषया बालक' (वृटी पृ ६०८)। २ अप्रकट (व्यभा ७ टी प ५)।

अविहाविअ—१ दीन। २ मौन (दे १।५६)।

अवेलि—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ ७१)।

अवेसि—द्वार-फलक (दे १।८)।

अवेसिण—चौखट, द्वार-फलिह (पा ७६१)।

अवोगिल्ल—अवाचाल—'महाराष्ट्रकमवोगिल्लमवाचालं' (व्यभा ७ टी प २५)।

अवोच्चत्थ—अविपरीत (निचू २ पृ १२६)।

अवोवच्छ—अविपर्यस्त (व्यभा ८ टी प ६)।

अव्वंग—अक्षत (व्यभा ६ टी प ६६)।

अव्वा—जननी, माता (दे १।५)।

अव्वो—सम्बोधन-सूचक अव्यय (उसुटी प २१)।

अव्वोकड्ढ—खींचा हुआ—'उक्कड्ढमोकड्ढे त्ति वा पुणो' (अंवि पृ ८६)।

अव्वोगड—१ अविभक्त—'अव्वोगडमविभत्तं' (बृभा ४७६६)। २ अविकृत—'अव्वोगडं अविगड' (व्यभा ७ टी प ६१)।

असंखड—वाचिक कलह (निचू १ पृ ४६)।

असंखडिय—कलह करने वाला (ओभा २२६)।

असंखडी—कलह (प्रसाटी प २२८)।

असंगय—वस्त्र (दे १।३४)।

असंगिय—१ अश्व। २ अनवस्थित, चंचल (दे १।५५)।

असंथड—असमर्थ (आचूला ४।३२)।

असंथडिय—अतृप्त (वृचू प २०८)।

असंथडी—अतृप्त (वृभा ५८१७)।

असंथर—१ दुर्भिक्ष–'असंथर दुब्भिक्ख'। २ असमर्थ (निचू १ पृ ११६)। ३ अप्राप्ति। ४ अतृप्ति (व्यभा ४ टी प ८)।

असंथरंत—१ तृप्त न होता हुआ (ओनि १८३)। २ समर्थ न होता हुआ (ओनि २१०)।

असंथरण—१ निर्वाह का अभाव (आचू पृ ३३७)। २ असमर्थता (निचू १)। ३ पर्याप्त लाभ का अभाव (पंव ३)।

असंथरमाण—१ तृप्त न होता हुआ (नि १०।३२)। २ समर्थ न होता हुआ। ३ खोज न करता हुआ (व्यभा ४ टी प ७१)।

असंफर—नग्न पैर (वृभा ३८६५)।

असंफुर—ऐसा रोगी जिसकी शक्ति क्षीण होने के कारण पैर सकुचा जाते हैं और जो ठीक से सो नहीं पाता (वृभा ३९०७)।

असण—वृक्ष विशेष, एकास्थिक वृक्ष (भ ८।२१९)।

असधीण—प्रवास मे गए हुए (निचू २ पृ १४२)।

असरमाण—अनिर्वाह (निचू १ पृ ४१)।

असराल—प्रचुर–'असराललोहपडिबद्धो' (कु पृ ३७)।

असरासअ—कठोर हृदय वाला, निष्ठुर (दे १।४०)।

असवत्तअ—तृणविशेष–'दब्भो कुभीचक्को वा गोल्लविसए असवत्तओ भण्णति' (आचू पृ ३५७)।

असहीण—परदेश-गमन (निचू २ पृ १६१)।

असाढय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

असारा—कदली-वृक्ष, केले का वृक्ष (दे १।१२)।

असारिय—निर्जन स्थान (वृटी पृ १३७१)।

असिअय—दात्र, दाती (भ १४।८५)।

असिय—दात्र, दांती–'असिएहिं लुणंति' (ज्ञा १।७।१५; दे १।१४)।

असियग—शस्त्र-विशेष, दाती–'सत्थं वा असियगमादी' (सूचू २ पृ ३४१)।

असिया—मसा का रोग (आचू पृ ३७२)।

असीमालिका—कंठ का आभूषण (अंवि पृ १६२)।
अह—दुख (दे १।६)।
अहट्ट—आडम्बर, उपाधि (आवचू १ पृ ४४६)।
अहर—असमर्थ (दे १।१७)।
अहवण—१ अथवा–'अहवण' त्ति अखण्डमव्यय अथवार्थे वर्त्तते' (वृटी पृ ३०३)। २ वाक्यालंकार मे प्रयुक्त होने वाला अव्यय।
अहव्वा—असती, कुलटा (दे १।१८)।
अहासंथड—निष्कम्प, निश्चल–'अहासथड नाम णिप्पकपं' (निचू २ पृ १७०)।
अहिअल—कोप, क्रोध (दे १।३६)।
अहिआर—लोकयात्रा, लोक-व्यवहार, जीवन-यात्रा (दे १।२६)।
अहिक्खण—१ उपालभ (दे १।३५)। २ बार-बार–'अभीक्ष्णमित्यन्ये' (वृ)।
अहिगर—अजगर (जीव १)।
अहिगरणसाला—लोहकारशाला (भटी पृ १२८२)।
अहिगरणिखोडि—अहरन को रखने का काष्ठ-विशेष (भटी पृ १२८२)।
अहिगरी—अजगरी (जीव २)।
अहिड्डुय—पीडित (पा ५४६)।
अहिणुका—साप की एक जाति (अंवि पृ २२६)।
अहिणूका—सर्पिणी (अंवि पृ ६६)।
अहिपच्चुइअ—१ अनुगमन, पीछे-पीछे चलना (दे १।४६)। २ आयात, आगत।
अहिमर—१ वधक (निचू ३ पृ ३७)। २ आघात करने वाले चोर, अश्व आदि को चुराने वाले चोर–'अहिमरा णाम दहरचोरा, अस्सहरणं वा मारण वा काउकामा' (निचू १ पृ ५३)।
अहिमार—पुष्प-फल वाला वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३२)।
अहिमारु—वृक्ष-विशेष–'एग अहिमारुदारुय' (उशाटी प १४३)।
अहिरिक्क—उत्त्रास,भय (व्यभा ३ टी प ६२)।
अहिरीअ—निस्तेज, फीका (दे १।२७)।
अहिरेमइअ—पूर्ण, भरा हुआ (पा १४२)।

अहिलिअ—१ अभिभव, पराभव। २ कोप (दे १।५७)।

अहिलूका—चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (अवि पृ २३७)।

अहिलोडिका—जीव-विशेष, गोपालिका (बृटी पृ १५४८)।

अहिलोढी—सरटी, मादा गिरगिट—'अहिलोढी सरडी वि भण्णति' (दश्रुचू प ६८)।

अहिल्ल—ईश्वर, धनवान् (दे १।१०)।

अहिवण्ण—पीले और लाल रंग वाला (दे १।३३)।

अहिविण्णा—उपपत्नी (दे १।२५)।

अहिसंधि—वार-वार, पुन-पुन (दे १।३२)।

अहिसाय—परिपूर्ण (दे १।२०)।

अहिसिअ—१ अनिष्ट ग्रहों की आशंका से खेद करना, रोना (दे १।३०)। २ अनिष्ट ग्रह से भयभीत।

अहिहर—१ देवकुल, पुराना मन्दिर। २ वल्मीक (दे १।५७)।

अहिहाण—प्रशसा, स्तुति (दे १।२१)।

अहोरण—उत्तरीय वस्त्र (दे १।२५)।

आ

आअ—१ अध्ययन, परिच्छेद—'अज्झयणं अज्भीण आओ झवणा य एगट्ठा' (निचू १ पृ ५)। २ बहुत। ३ दीर्घ। ४ कठिन। ५ लोहा। ६ मुसल (दे १।७३)।

आअड्डिअ—दूसरे की प्रेरणा से चलित (दे १।६८)।

आअड्डि—आकृष्ट (से १।१९)।

आअर—१ उदूखल। २ कूर्च, दाढी (दे १।७४)।

आअल्ल—१ रोग। २ चचल (दे १।७५)।

आअलिल—लताओं से सघन प्रदेश (दे १।६१)।

आअल्ली—लताओं से सघन प्रदेश (दे १।६१)।

आइं—वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त अव्यय—'आइं ति देशभाषायाम्' (ज्ञाटी प १९५)।

आइंखणा—कर्णपिशाची देवी (प्रसा ११३)।

आइंखणिया—१ कर्णपिशाचिका देवी। २ डोंबी, चाडाली—'आइंखणिय त्ति ईक्षणिका दैवज्ञा आख्यात्री लोकसिद्धा डोंबी' (पवटी प २३२)।

आइंखिणिया—१ डोमिनी, चंडालिनी (बृभा १३१२)। २ कर्ण-पिशाचिका देवी (निभा ४२६०)।

आइण्ण—१ कुलीन घोड़ा (प्र ४।७)। २ पिरोना—'मोत्तिय आइण्णंतो आगासे उक्खिवित्ता' (आवहाटी १ पृ २८५)।

आइद्ध—प्रेरित (से ६।७)।

आइप्पण—१ चूर्ण, आटा। २ उत्सव मे गृह-शोभा के लिए चूना आदि की पुताई (दे १।७८)। ३ उत्सव के प्रसंग पर गृह, गृहद्वार को सजाने के लिए गीले चावल के आटे से विभिन्न आकृतियो का निर्माण करना (बृ)।

आइसण—उज्झित, त्यक्त (दे १।७१)।

आउ—१ नक्षत्र देव-विशेष (स्था २।३२४)। २ जल (सू २।१।२७, दे १।६१)।

आउंबालिय—आप्लावित (पा १३६)।

आउट्ट—१ आदर, सम्मान—'किं मम एद्देहेण आउट्टेण' (उशाटी प १४६)। २ प्रणत (व्यभा ६ टी प १८)। ३ करना—'करणार्थे आउट्ट शब्द.' (दश्रुचू प ६८)।

आउट्टण—निवेदन (बृभा २९३)।

आउट्टणा—आराधना, प्रसन्न करना (निचू २ पृ १०९)।

आउट्टि—असंयम (व्यभा १ टी प २४)।

आउट्टित—आराधित—'आउट्टिता इट्ठदाण देहिति' (निचू २ पृ १०९)।

आउट्टिया—जानबूझकर—'आउट्टिया णाम आभोगो—जानान इत्यर्थः' (निचू ३ पृ ३१७)।

आउडिज्जमाण—१ आसवध्यमान। २ परस्पर आहन्यमान (भटी प २१६)। ३ पीटे जाते हुए (सू २।२।४०)।

आउर—संग्राम (दे १।६५)।

आउल—अरण्य (दे १।६२)।

आउलि—वृक्ष-विशेष (राजटी पृ ८९, दे ५।५)।

आउस—१ क्षुरकर्म (नंदीटि पृ १३८)। २ कूर्च, दाढी (दे १।६५)।

आऊडिअ—जुए मे की जाने वाली प्रतिज्ञा (दे १।६८)।

आऊर—१ अत्यधिक । २ उष्ण, गरम (दे १।७६) ।

आऊसिय—प्रविष्ट, संकुचित (ज्ञा १।८।७२) ।

आएस—अतिथि, पाहुना (व्य ६।१) ।

आओडण—मजबूत करना, दृढ करना (से ६।६) ।

आओडिम—दबाकर या कूटकर बिठाना, जैसे किसी धातु आदि मे मूर्ति या अक्षर उकेरना,–'आओडिम जहा रूवओ विवेण विवेओ ओवीलिज्जति' (दअचू पृ ३६) ।

आओस—सन्ध्या–'आओसे सगारो अमुइ वेलाए निग्गए ठाण' (ओभा ६१) ।

आंविली—इमली (व्यभा ६ टी प ८) ।

आकर—१ भाजन-विशेष–'आकरो नाम गृहस्थ-सम्बन्धि मक्तुभृत-स्थाल्यादिभाजनम्' (आवटि प ६६) । २ भीलो की वस्ती । ३ भीलो का कोट्ट, दुर्ग–'आकरो नाम भिल्लपल्ली भिल्लकोट्टं वा' (वृटी पृ ११०४) ।

आगत्ति—कूपतुला–कूप से पानी खींचने का साधन (दे १।६३) ।

आगर—१ भीलो की वस्ती । २ भीलो का गाव या दुर्ग (वृभा ४०३५) ।

आगल—आगामी काल मे होनेवाला–'आगलफलाणि वि मग्गइ त्ति' (सूचू १ पृ ११८) ।

आगल्ल—ग्लान–'से कम्मण तेण एस आगल्लो' (वृभा ५३२१) ।

आघतण—वध-स्थान (आवहाटी २ पृ १६६) ।

आघयण—वध-स्थान–'तत्थ ण महं एगं आघयण पासति' (ज्ञा १।६।२५) ।

आघवण—कथन (अत ३।८६) ।

आघविय—गुरु के पास ग्रहण करना–'आघविय ति प्राकृतशैल्या छांदसत्वाच्च गुरोः सकाशादागृहीतम्' । (अनुद्वाहाटी पृ १५) ।

आचमणिका—भाण्ड-विशेष (अवि पृ २५५) ।

आडंवर—पाणजातीय लोगो का यक्ष-विशेष (व्यभा ७ टी प ५५) ।

आडा—पक्षिणी-विशेष (अवि पृ ६६) ।

आडाडा—वलात्कार (दे १।६४) ।

आडुआलि—मिश्रण (दे १।६६) ।

आडुआलित्त—मिश्रित (आवहाटी १ पृ २२८) ।

आडुताल—मिश्रित करना, ठंडा करने के लिए हिलाना (दअचू पृ २८; दे १।६६) ।

आडोलिया—१ खिलौना-विशेष (ज्ञा १।१८।८)। २ रुद्ध, रोका हुआ (?) (टी प २४४)।

आडोविअ—कुपित (दे १।७०)।

आढत्त—१ आरब्ध (उशाटी प २२३)। २ आक्रान्त।

आढिअ—१ अभीष्ट। २ माननीय। ३ अप्रमत्त। ४ गाढ, सघन (दे १।७४)।

आणंदवड—आनन्दपट–प्रथम बार रजस्वला वधू के रक्त से रंजित वस्त्र। विवाह की सुहागरात्रि मे पति अपनी नवोढा पत्नी के कुवारेपन का अपहरण करता है। उस समय योनिद्वार से रुधिर निकलता है। उस रुधिर से रगा हुआ वस्त्र अन्यान्य वधुजनो को आनंदित करता है, इसलिए इस पट का नाम 'आणंदवड' है (दे १।७२)। देखे—वहूपोत्ति।

आणक्खिऊण—परीक्षा करके (आवहाटी १ पृ १९४)।

आणाइ—शकुनिका पक्षी, चील (दे १।६४)।

आणामा—१ एक प्रकार की प्रव्रज्या। २ वैनयिकवादियो का एक भेद (सूचू १ पृ २०७)।

आणावचरणिग—जलचर प्राणी-विशेष (अवि पृ २२७)।

आणिअ—१ अभीष्ट। २ माननीय। ३ अप्रमत्त। ४ गाढ, सघन (दे १।७४)।

आणिक्क—१ तिर्यक् मैथुन (दे १।६१)। २ तिरछा–'आणिक्क तिर्यगर्थे देशी' (से ९।८६ टी)।

आणिमल—हाथी का मल–'दिट्ठोऽणलगिरिस्स (गधहत्थिणो) आणिमलो' (निचू ३ पृ १४५)।

आणुअ—१ मुख। २ आकृति (दे १।६२)।

आणूव—श्वपच, डोम (दे १।६४)।

आतिण्ण—पूजित–'आतिण्ण-ति वा पूजित ति वा एगट्ठा' (दजिचू पृ २०४)।

आदंचण—शुद्धि के साधन–गोमूत्र, गोवर, खारी मिट्टी आदि (व्यभा ३ टी प १३)।

आदण्ण—आकुल (दअचू पृ २५)।

आदिल्ल—आदि, प्रथम (पक १२१)।

आदुयाल—मथित, विलोडित (आवचू १ पृ १२३)।

आद्दहण—श्मशान–'तत्त्वविगत शरीरं आद्दहणं परेहिं णिज्जू' (सूचू २ पृ ३१६)।

आधारिका—तापसों का चर्ममय 'थोकनउ' जो कांख में धारण किया जाता है (नंदीटि पृ १०१)।

आपुरायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

आफकी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

आफर—द्यूत जुआ (दे १।६३)।

आभट्ठ—विज्ञप्त, संभाषित (उशाटी प १७३)।

आभोग—उपकरण—'एगाभोग पडिग्गह केई सव्वाणि न य पुरओ', आभोगः उपकरणम्' (ओनि ३६, टी प ३३)।

आभोगिणी—मानसिक निर्णय कराने वाली विद्या-विशेष (वृभा ४६३३)।

आमंड—आवला (आवहाटी १ पृ २६१)।

आमंडण—भाण्ड, पात्र (दे १।६८)।

आमंथिय (ओमंथिय ?)—औंधा किया हुआ (कु पृ २७)।

आमडाग—१ कच्चे पत्ते। २ अर्द्धपक्व या अपक्व अरणिक-तंदुलक (आटी प ३४८)।

आमलक—बहुबीजक वनस्पति-विशेष—'नवरमिहामलकादयो न लोक-प्रसिद्धा: प्रतिपत्तव्या:, तेषामेकास्थिकत्वात्, किन्तु देशविशेष-प्रसिद्धा बहुबीजका एव केचन' (प्रज्ञाटी प ३१)।

आमलय—१ नूपुर रखने की पेटी। २ सज्जागृह (दे १।६७)।

आमलिता—पूपिका (?) (आचू पृ ३४२)।

आमली—छोटे आंवलों का वृक्ष (अंवि पृ ७०)।

आमिल—समस्त प्रकार के रोम, केश—'आमिलं सव्वरोमजाति' (दनि १५८, अचू पृ १४१)।

आमेल—केशों का एक प्रकार का जूडा, बालों को बांधने की एक पद्धति (दे १।६२)।

आमेलअ—आमोडक, बालों को बांधने का पुष्प-निर्मित बंध-विशेष (उशाटी प १४३)।

आमेलिअ—आपीड, पुष्पमाला (से ६।२१)।

आमोअ—हर्ष (दे १।६४)।

आमोड—केशों का एक प्रकार का जूडा, बालों को बांधने की एक पद्धति (दे १।६२)।

आमोरअ—विशेषज्ञ, दक्ष (दे १।६६)।

आमोसल—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

आय—१ कुहन वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४७)। २ वनस्पति-विशेष से बना वस्त्र—'आयं णाम तोसलिविसए सीयतलाए अयाण खुरेसु सेवालतरिया लग्गंति, तत्थ वत्था कीरति' (निचू २ पृ ३९९)। ३ देश-विशेष की अजा—बकरी के सूक्ष्म रोम से निर्मित वस्त्र (आटी प ३९३)।

आयंचण—गोमूत्र, गोबर, मेगनी तथा खारी मिट्टी आदि (निचू ४ पृ ३५८)।

आयंचणिया—कुभकार का वह पात्र, जिसमे वह घडा आदि बनाते समय मिट्टी का पानी रखता है (भटी पृ १२५७)।

आयंस—बैल आदि के गले का आभूषण—'आदर्शस्तु वृषभादिग्रीवाभरण' (अनुद्वामटी प ४३)।

आयड्ढि—विस्तार (दे १।६४)।

आयल्ल—रोग (पा ८२)।

आयल्लय—बेचैन करने वाला, दर्दनाक—'आयल्लयवुत्ततो जइ वि तए साहिओ' (कु पृ १८१)।

आयाबल—बाल-आतप, प्रात कालीन सूर्य का आतप (दे १।७०)।

आयाम—१ बल। २ दीर्घ (दे १।६४)।

आयावल—सुबह की धूप (दे १।७०)।

आयावलय—सुबह की धूप (पा ६०९)।

आयासतल—प्रासाद का पिछला भाग (दे १।७२)।

आयासलव—पक्षिगृह, नीड (दे १।७२)।

आयुस—क्षुरकर्म, हजामत—'ण्हाविता पुच्छिता—केण आउसं कारित ?' (नंदीटि पृ १३९)।

आयोइल्लाग—कैदी (दश्रुचू प ३९)।

आरंदर—१ जनसकुल। २ सकीर्ण (दे १।७८)।

आरंभिअ—मालाकार, माली (दे १।७१)।

आरकुड—धातु-विशेष, पीतल (अवि पृ १६२)।

आरडिअ—१ विलाप, क्रन्दन। २ सचित्र (दे १।७५ वृ)।

आरण—अधर, होठ (दे १।७६)।

आरणाल—१ कमल (दे १।६७)। २ काजी (वृ)।

आरद्ध—१ प्रवृद्ध। २ उत्सुक। ३ घर मे आया हुआ (दे १।७५)।

आरनाल—१ काजी—'कंजिय देसीभासाए आरनाल भण्णति' (निचू १ पृ ७४)। २ कमल (दे १।६७)।

आरबी—देश-विशेष की दासी, अरब देश की दासी (ज्ञा १।१।८२)

आराइअ—१ स्वीकृत। २ प्राप्त (दे १।७०)।

आराडि—क्रन्दन (आवचू २ पृ १६५)।

आराडी—१ विलाप। २ चित्रों से मंडित (दे १।७५)।

आरिग—आरी, शस्त्र-विशेष (पक २०२४)।

आरिल्ल—तत्काल उत्पन्न (दे १।६३)।

आरेइअ—१ मुकुलित। २ मुक्त। ३ भ्रान्त। ४ रोमाञ्चित, पुलकित (दे १।७७)।

आरोग्गिअ—भक्षित, खाया हुआ (दे १।६९)।

आरोट्ट—१ 'अरोडा' जाति-विशेष। २ छात्रजाति का संबोधन (कु पृ १५१)।

आरोस—म्लेच्छ जाति-विशेष (प्र १।२०)।

आरोह—स्तन (दे १।६३)।

आल—१ व्यर्थ, निरर्थक—'मए आलो अब्भुवगओ, किं सक्का इयाणिं निव्वहिउ ?' (वृटी पृ ५६)। २ कलक, दोषारोपण (प्रसाटी प १४५)। ३ छोटा प्रवाह। ४ कोमल, मृदु (दे १।७३)।

आलइअ—पहना हुआ, आविद्ध—'आलइअमालमउडो' (आवहाटी १ पृ १२३)। देखे—लइअ।

आलंकिअ—लगडा किया हुआ (दे १।६८)।

आलंब—भूमिछत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा मे उत्पन्न होती है (दे १।६४)।

आलक—चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (अवि पृ २३७)।

आलजाल—ऊलजलूल, निरर्थक—'आलजाल अणेगविहाइ सदेसकहं तेसिं दूर' (निचू ३ पृ ३५५)।

आलत्थ—मयूर (दे १।६५)।

आलप्पाल—१ आल-जजाल—'एयं आलप्पाल अव्वो दूरं विसवयइ' (उसुटी प २१)। २ दुराचार, कलंक—'आलप्पालं आढत्त' (कु पृ ४७)।

आलयण—शय्यागृह (दे १।६६)।

आलास—वृश्चिक, विच्छू (दे १।६१)।

आलि—वनस्पति-विशेष (जवूटी प ४५)।

आलिंगिणी—१ जानु, कूर्पर आदि के नीचे रखने का तकिया (वृभा ३८२४)। २ रूई का वडा विछौना (व्यभा १० टी प ७१)।

आलिसद—धान्य-विशेष (प्रज्ञा १।४५।१)।

आलिसंदग—धान्य-विशेष, चवला (भ ६।१३०)।

आलीघरय—वनस्पति-विशेष (ज्ञा १।६।२०)।

आलील—निकट भविष्य मे होने वाला भय (दे १।६५)।

आलीवण—प्रदीप्त अग्नि (दे १।७१)। पलेवणु (गुज)।

आलु—आलू, कन्द-विशेष (भ २३।२)।

आलुका—कुण्डिका, छोटा घडा (अनुटी पृ ५)।

आलुगा—छोटा घडा (सूचू १ पृ ११७)।

आलुय—आलू, कद-विशेष (भ २३।१)।

आलुया—कुडिका (अतटी पृ ५)।

आवंग—अपामार्ग का वृक्ष (दे १।६२)।

आवट्टिआ—१ नववधू। २ परतन्त्र स्त्री (दे १।७७)।

आवडिअ—१ संवद्ध। २ सार (दे १।७८)।

आवरेइअ—कारिका, मद्य परोसने का पात्र (दे १।७१)।

आवलिका—कंठ का आभूपण—'हार-अद्धहार-आवलिका' (अवि पृ १६२)।

आवल्ल—बलीवर्द, बैल (उशाटी प १६२)।

आवल्लक—१ नौका चलाने का एक साधन। २ वलयवाहा—नौका का लवा काष्ठ जिस पर ध्वजा वाधी जाती है—'दीर्घकाष्ठलक्षणवाहूपु आवल्लकेष्विति सम्भाव्यते' (ज्ञाटी प १४३)।

आवाडा—चिलात, एक अनार्य जाति—'आवाडा नाम चिलाता परिवसति' (आवचू १ पृ १६४)।

आवाल—जल के निकट का प्रदेश (दे १।७० वृ)।

आवालय—जल के निकट का प्रदेश (दे १।७०)।

आवाह—१ वरपक्षसवंधी भोज (व्यभा ६ टी प ८)। २ नव विवाहित वर-वधू को लाना—'आवाह अभिनवपरणीतस्य वधूवरस्यानयनम्' (प्रटी प १३६)।

आवि—१ प्रसव-पीडा। २ नित्य। ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १।७३)।

आविअ—१ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष। २ मथित (दे १।७६)। ३ पिरोया हुआ (पा ६५५)।

आविअज्झा—१ नववधू। २ पराधीन स्त्री (दे १।७७)।

आविद्ध—प्रेरित (दे १।६३)।

आवेल्लक—नौका चलाने का साधन, डांड (ज्ञाटी प १४३)।

आवेल्लय—यानपात्र चलाने का साधन—'चालियाइं आवेल्लयाइं' (कु पृ ६७)।

आसंग—शयनकक्ष, वासगृह (दे १।६६)।

आसंघ—१ अध्यवसाय, परिणाम (से १।२५)। २ श्रद्धा। ३ आशंसा।

आसंघा—१ इच्छा (दे १।६३)। २ आस्था (वृ)। ३ आसक्ति।

आसंघिअ—१ अध्यवसित। २ अवधारित (से १०।६६)। ३ संभावित।

आसक्खअ—पक्षि-विशेष (दे १।६७)।

आसय—निकट (दे १।६५)।

आस'मिठ'—अश्व-प्रशिक्षक (नि ६।२५)।

आसरिअ—सम्मुख आया हुआ (दे १।६६)।

आसल—स्वादिष्ट (जीवटी प ३५१)।

आसवण—शयनकक्ष, वासगृह (दे १।६६)।

आसातिका—कृमि-विशेप (अवि पृ २२६)।

आसालिका—द्वीन्द्रिय जन्तु (अवि पृ २३७)।

आसिअअ—लोहमय, लोह-निर्मित (दे १।६७)।

आसित्तिया—खाद्य विशेप—'विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्ज साधेति' (सूर्य १०।१२०)।

आसिय—जाना, निकलना—'आसियं ति णिग्गच्छति' (निचू २ पृ २७६)।

आसियग—लोह निर्मित शस्त्र-विशेप (सूचू १ पृ ११६)।

आसियावण—अपहरण—'तुच्छलोभेण य आसियावणादी भवे दोसा' (निभा २४५२)।

आसियावित—अपहृत (निचू ३ पृ २१)।

आसीवअ—दरजी, वस्त्र सीने वाला (दे १।६६)।

आसीसा—आशीर्वाद (प्रा ३।१७४)।

आसूणिय—श्लाघा, प्रशंसा—'आसूणिक णाम श्लाघा, येन परैः स्तूयमानः सुज्जति' (सूचू १ पृ १७८)।

आसूय—औपयाचितक, मनौती (पिनि ४०५)।

आसेक्क—नपुंसक-विशेप (अवि पृ २२४)।

आहच्च—१ आकर, उपस्थित होकर—'संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंतिय' (आ १।१६४)। २ कदाचिद् (प्रज्ञा १७।२)।

३ अत्यधिक (दे १।६२)। ४ शीघ्र। ५ व्यवस्था करके। ६ छीनकर। ७ अन्यथा। ८ निष्कारण।

आहट्ट—प्रहेलिका, पहेलिया—'तेसु न विम्हयइ सयं, आहट्ट-कुहेडएहिं च' (बृभा १३०१)—'आहट्ट त्ति प्रहेलिका (प्रसाटी प १८०)।

आहरणा—खर्राटे, घोरण—'आहरणा-घोरयति घोरणं करोति महता शब्देन' (ओटी प ५८)।

आहाडक—बिलाशयी प्राणी (अंवि पृ २२९)।

आहाडीय—बार-बार आना-जाना (आवटि प २४)।

आहित्थ—१ आकुल—'आहित्थं उप्पिच्छ च आउल रोसभरियं च' (जीवटी प १९४, दे १।७६)। २ कुपित। ३ चलित (दे १।७६)।

आहिरिक्क—प्रतीकार (दश्रुचू प ४३)।

आहु—उल्लू (दे १।६१)।

आहुंदुर—बालक—'आहुंदुरा करि-हरीण' (दे १।६६)।

आहुंदुरु—बालक (दे १।६६ वृ)।

आहुड—१ अनुराग की आवाज, सीत्कार—'रति मे 'सी' 'सी' की ध्वनि। २ बेचने योग्य वस्तु (दे १।७४)।

आहुडिअ—निपातित, गिराया हुआ (दे ६९)।

आहेण—१ विवाह के बाद वधू-प्रवेश के समय किया जाने वाला भोज। २ अन्य घरो से लाई जाने वाली भोजन-सामग्री। ३ जो भोज्य-पदार्थ वधू के घर से वर के घर मे ले जाया जाता है, वह। ४ वरपक्ष और वधूपक्ष का पारस्परिक लेन-देन—'जमन्नगिहातो आणिज्जति तं आहेण, जं बहूगिहातो वरगिह णिज्जति त आहेण, अहवा वरवहूण जं आभव्वं परोप्पर णिज्जति त सव्वं आहेणक' (निचू ३ पृ २२२-२३)।

आहेणक—देखे—आहेण (निचू ३ पृ २२३)।

आहोडिय—सप्रधूमित, धूप-वासित (आचू पृ ३६३)।

इ

इंखिणि—कर्ण-पिशाचिका देवी—'विज्जाभिमतिया घटिया कण्णमूले

चालिज्जति, तत्थ देवता कावित्ति, कहेतस्स पसिणापसिणं भवति, स एव इंखिणि भण्णति' (निचू ३ पृ ३८३)।

इंखिणिया—१ अवहेलना—'अदु इंखिणिया उ पाविया' (सू १।२।२४)।
२ घुघरु, घटिका—इंखिणियाओ—घटियाओ' (आवचू १ पृ १५७)।

इंखिणी—१ खिसणा, निन्दा—'अहऽसेयकरी अण्णेसि इंखिणी' (सू १।२।२३) —'इंखिणी णाम खिसणा निन्दणा हीलणा' (सूचू १ पृ ५६)।
२ किंकिणी, छोटी घटिका (आवदी प ६०)।

इंगाली—इक्षुखण्ड (दे १।७६)।

इंघिय—घ्रात, सूघा हुआ (दे १।८०)।

इंचक—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)—'इंचका कुडुकालक सित्थमच्छका....'

इंदगाइ—वे कीट जो युक्त होकर एक के ऊपर एक चढकर घूमते हैं (दे १।८१)।

इंदग्गि—हिम, बर्फ (दे १।८०)।

इंदग्गिधूम—हिम, बर्फ (दे १।८०)।

इंदट्ठलअ—'इन्द्रमह' उत्सव की संपन्नता पर विधिपूर्वक 'इन्द्रध्वज' को हटाना (दे १।८२)

इंदट्ठलय—'इन्द्रमह' उत्सव की संपन्नता पर विधिपूर्वक 'इन्द्रध्वज' को हटाना (दे १।८२)।

इंदमह—१ कार्तिकेय। २ कुमारावस्था (दे १।८१)।

इंदमहकामुय—कुत्ता (दे १।८२)।

इंदिआलि—भूमीकर्म की विद्या का अभीष्ट शब्द, मंत्र-विशेष का शब्द—'इमा भूमीकम्मस्स विज्जा—इंदिआली इंदिआलि माहिंदे मारुदि स्वाहा' (अंवि पृ ८)।

इंदिआली—भूमिकर्म की विद्या का अभीष्ट शब्द, मंत्र-विशेष का शब्द (अंवि पृ ८)।

इंदिदिर—भ्रमर (दे १।७६)—'कैश्चित् इंदिदिर शब्दोऽपि देश्य उक्त.'।

इंदोवत्त—इन्द्रगोपक, वर्षाऋतु मे होने वाला लाल या सफेद रंग का कीट-विशेष (दे १।८१)।

इक—प्रवेश—'इकमप्पए पवेसणमेयं' (विभा ३४८३)—'इकशब्दो देशीवचन. क्वापि प्रवेशार्थे वर्तते' (टी पृ ३४३)।

इक्कड—तृण-विशेष–'वणस्सतिभेदो इक्कडा लाडाण पसिद्धा' (निचू २ पृ ४८१)।

इक्कण—चोर (दे १।८०)।

इक्कलिया—अकेली (उसुटी प १४५)।

इक्कल्लय—अकेला (उसुटी प ११२)।

इक्कास—१ रस-विशेष (अवि पृ १३४)। २ भोज्य (अवि पृ १०१)। ३ गुग्गुल वृक्ष का गोंद (अवि पृ २३२)।

इक्कुस—नीलोत्पल (दे १।७९)।

इग—अवयव, प्रदेश–'इगमवि देशीपद क्वापि प्रदेशार्थे वर्तते' (आवहाटी १ पृ ३१६)।

इग्ग—भयभीत (दे १।७९)।

इग्घिअ—भर्त्सित (दे १।८०)।

इज्जा—१ मा। २ देवी। ३ देवपूजा–'इज्जत्ति वज्जा माया मज्जा भणिया देवपूया वा इज्जा' (अनुद्वाचू पृ १३); 'देशीभाषया इज्येति माता' (अनुद्वामटी प २६)।

इट्टग—खाद्य-विशेष,सेवई (पिनि ४६१)।

इट्टगा—खाद्य-विशेष, सेवई (जीभा १३९७)।

इट्टाल—ईंट (द ५।६५)।

इड्डुकार—वर्धकी, वढई (अंवि पृ १६१)।

इड्डुर—१ धान्य रखने का कोठा (अनुद्वा ३७५)। २ गाडी का एक अवयव (ओटी पृ ३७४)। ३ ढक्कन (भटी प ३१३)।

इड्डरक—वडी पेटी–'इड्डरक महत् पिटक येन समस्तापि रसवती स्थग्यते' (राजटी पृ ३२५)।

इड्डुरग—ढक्कन–'पईव इड्डुरय अंतो अंतो ओभासेइ........, नो चेव इड्डुरगस्स वाहिं' (भ ७।१५९)।

इड्डरय—ढक्कन–'त पईवं इड्डुरएणं पीहेज्जा' (भ ७।१५९)।

इड्डुरिका—१ खाद्यविशेष, इडली–'रात्रिपरिवसनेन सम्पन्न इड्डुरिकादि, यतस्ता पर्युषित-कलनीकृता अम्लरसा भवन्ति' (स्थाटी प २१३)। २ एक प्रकार की मिठाई (प्रसाटी प ५१)। इड्डलिगे–'चावल का रवा और उडद से निष्पन्न खाद्य-विशेष (कन्नड)।

इड्डिर—गाड़ी का एक अवयव (ओनि ४७८)।

इड्ढिसिय—याचक-विशेष (भटी पृ ८८४)।

इणं—यह (दे १।७९ वृ)।

इण्हि—अब (पिनि ६३४, दे १।७९ वृ)।

इणमो—यह (दे १।७९ वृ)।

इतिपिंडि—भोज्य-विशेष—'सत्तुपिंडि........तप्पणपिंडि त्ति इतिपिंडि त्ति' (अवि पृ ७१)।

इत्ताहे—इस समय (व्यभा ४।३ टी प १९)।

इत्तोप्पं—इत प्रभृति, यहा से लेकर (पा ४४८)।

इत्थीदोस—व्यभिचारिणी—'इत्थीदोसो णाम व्यभिचारिणी' (सूचू १ पृ १०८)।

इदूर—सूत आदि से बुना हुआ धान्य रखने का साधन-विशेष—सुम्बादिव्यूत ढञ्चनकादि तदिदूर' (अनुद्वामटी प १३९)।

इद्दंड—भ्रमर (दे १।७९)।

इद्ध—चित्त—'इद्ध चित्त भण्णति' (जीभा २५२६)।

इब्भ—वणिक्, व्यापारी (दे १।७९)।

इय—१ इस प्रकार (बृभा २१५२)। २ प्रवेश।

इर—किल—सभावना, निश्चय आदि अर्थो का सूचक अव्यय (प्रा २।१८६)।

इरमंदिर—करभ, ऊट (दे १।८१)।

इरहा—अथवा—'जइ रायवसेण अन्नेण समं वसेज्जा। इरहा वभचारिणी' (उसुटी प ३०)।

इराव—हाथी (दे १।८०)।

इरिआ—कुटी, झोपडी (दे १।८०)।

इरिकाक—पुष्प-विशेष—'तधा चपगपुप्फं ति इरिकाक ति वा पुणो' (अवि पृ ६३)।

इरिण—१ स्वर्ण (दे १।७९)। २ सुन्दर—'रमणीयेसु इरिण वा' (अवि पृ १३४)।

इरिमंदिर—लक्ष्मी-मंदिर—'इरिमदिरि ,पत्तहारतो गततो मज्झ कतो वणिजारतो' (दसचू पृ २८)।

इलअ—छुरिका—'इलएण छिहलिं छिंदित्ता भणति' (निचू १ पृ २१)।

इलिका—क्षुद्र जतु, इल्ली (अवि पृ २२९)।

इलिया—क्षुद्र जन्तु (बृभा १२०)।

इल्ल—१ दरिद्र। २ कोमल। ३ प्रतीहार, द्वारपाल। ४ लवित्र। ५ कृष्णवर्ण वाला (दे १।८२)।

इल्लि—१ व्याघ्र। २ सिंह। ३ छाता (दे १।८३)। ४ व्याघ्र-चर्म से बना प्रावरण (अंवि पृ ७१)।

इल्लीर—१ गृहद्वार। २ वृषी, ऋषियो का आसन। ३ वर्षा से बचने का साधन (दे १।८३)।

इसिय—तृणमय शलाका (सू २।१।१७)।

इहरा—अन्यथा (उशाटी प १६०)।

ई

ईय—इस प्रकार (वृभा २१५३)।

ईस—कीलक (दे १।८४)।

ईसअ—'रोझ' नामक मृग की एक जाति (दे १।८४)।

ईसर—कामदेव (दे १।८४)।

ईसिअ—१ भील के सिर पर बांधा जाने वाला पत्रपुट, पत्तो का वेष्टन। २ वशीकृत (दे १।८४)।

ईसिणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

ईसी—भूमि—'ईसिं पाडेइ त्ति भूम्या पातयति' (भटी पृ १२६४)।

उ

उअ—१ देखो—'उअ निच्चल-निप्फंदा भिसिणीपत्तम्मि रेहइ बलाआ। निम्मल-मरगय-भायण-परिट्ठिआ संखसुत्तिव्व॥' (प्रा २।२११)। २ सरल, ऋजु—'उअउण्णमदेहलिमुल्लघिअ' (दे १।८८ वृ)।

उअअ—ऋजु, सरल (दे १।८८)।

उअक्किअ—पुरस्कृत (दे १।१०७)।

उअचित्त—अपगत (दे १।१०८)।

उअचिय—परिकर्मित (औपटी पृ ३२)।

उअट्टी—नीवी, स्त्री का कटिवस्त्र या कटिवस्त्र के दी जाने वाली रस्सी की गांठ, नाडा (नारा) (पा ४९१)।

उअत्त—निष्क्रांत, अतिक्रांत–'जाहे जलं वेलाए उअत्तं भवति' (निचू ३ पृ १४०)।

उअपोत—आकीर्ण, व्याप्त–'उअपोते देशीपदत्वाद् आकीर्णे' (बृटी पृ ८८९)।

उअरी—शाकिनी, देवी-विशेष (दे १।९८)–'उंछयवाडे मज्जारिरुवयाओ भमन्ति उअरीओ' (वृ)।

उअह—देखो–'उअह त्ति पेच्छहत्थे' (दे १।९८)।

उअहारी—दोहन करने वाली स्त्री (दे १।१०८)।

उआलि—अवतंस, शिरोभूषण (दे १।९०)।

उइंतण—उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १।१०३)।

उंगुणी—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

उंचहिआ—चक्रधारा (दे १।१०९)।

उंछ—१ गर्ह्य, जुगुप्सनीय (सूटी १ प १०८)। २ छींपा, कपड़ों को छापने वाला (पा ७७०)।

उंछय—वस्त्र छापने का काम करने वाला (दे १।९८)।

उंजण—उत्सेचन (दजिचू पृ १५६)।

उंड—१ मुख–'देसीवयणतो उंडं–मुहं' (अनुद्वाचू पृ १३)। २ ऊंडा, गहरा (औपटी पृ ५; दे १।८५)–'खणिआ उड्डेहिं कूवया य अइउंडा' (वृ)।

उंडअ—पांव में पिण्डरूप में लग जाए उतना गहरा कीचड़ (ओभा ३३) –'उंडका–पिण्डकास्तद्रूपो यो भवति, पादयोर्यः पिण्डरूपतया लगति स पिण्डक इत्यर्थः' (टी प २९)। उंडे–मिट्टी, गोबर (कन्नड)।

उंडग—१ स्थण्डिल (द ४।२३)। २ पिण्ड, लोयड़ा–'वालाई मंसउंडग मज्जाराई विराहेज्जा' (ओभा २४६)।

उंडणाही—अंतरिक्ष में होने वाले क्षुद्र जंतु–'अंतलिक्खेसु संताणका उंडणाही घुक्कभरखा वा वि विण्णेया' (अंवि पृ २२९)।

उंडय—मांसपिण्ड–'तेसिं जीवंतगाणं चेव हियउंडए गिण्हावेइ' (विपा १।५।१४)।

उंडलक्क—मुंह से वृषभ की भांति शब्द करना–'देसीवयणतो उंडं–मुहं तेण

रुक्कति सद्दकरणं, त च वसभढिक्कियाइ' (अनुद्वाचू पृ १३)।

उंडल—१ मच, मचान। २ समूह (दे १।१२९)।

उंडि—मुद्रा (व्यभा ६ टी प ३५)।

उंडिअ—मुद्रा वाला (व्यभा ६ टी प ३५)।

उंडिय—मास-पिण्ड—'तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउडियाओ गिण्हावेइ' (विपा १।५।१५)।

उंडिया—मुद्रा-विशेष, पत्र पर लगाई जाने वाली मुहर (बृभा १८९)—उडिया लेहस्स मुद्दा इति चूर्णी' (टी पृ ६१)।

उंडी—पिंड, गोलाकार वस्तु—'तत्थ ण एगा वणमयूरी दो पुट्ठे परियागए पिट्टुंडीपडुरे निव्वणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए पसवइ' (ज्ञा १।३।५)।

उंडुय—स्थान—'सपिंडपायमागम्म उडुयं पडिलेहिया' (द ५।१।८७)।

उंडेरग—एक प्रकार का धान्य (आवचू २ पृ ३१७)।

उंडेरय—खाद्य वस्तु, वडा (आवचू २ पृ १६८)।

उंढिय—सकुचित—'जह वा उढियपादे पाअ काऊण हत्थिणो पुरिसे' (व्यभा १० टी प ७३)।

उंत—मत्र का अभीष्ट शब्द, देव-विशेष (अवि पृ ९)।

उंदर—चूहा (उशाटी प १६९)।

उंदु—मुख—'देशीवचन उन्दु—मुख' (अनुद्वामटी प २६)।

उंदुक—स्थान—'उदुक इति स्थानम्' (बृटी पृ ३८०)।

उंदुय—स्थान (बृभा १२२३)।

उंदुर—१ वृक्ष पर रहने वाला प्राणी-विशेप (अवि पृ २२६)। २ पर्वत की कन्दरा मे रहने वाला प्राणी-विशेष (अवि पृ २२७)।

उंदुरअ—लम्बा दिन (दे १।१०५)।

उंदुरी—चुहिया (अवि पृ ६९)।

उंदुरुक्क—मुह से वृषभ की भाति शब्द करना—'उंदुरुक्क त्ति देशीवचनं उन्दु—मुख तेन रुक्कं—'वृषभादिशब्दकरणमुन्दुरुक्कं देवतादिपुरतो वृषभगर्जितादिकरणमित्यर्थ' (अनुद्वामटी प २६)।

उंदोइया—चुहिया (बृटी पृ ३६०)।

उंबभरिया—एकास्थिक वृक्ष-विशेप (भ ८।२१९।२)।

उंबर—प्रचुर (दे १।९०)।

उंबरउप्फ—नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति (दे १।११९)।

उंबा—बन्धन (दे १।८६)।

उंबी—पका हुआ गेहूं (दे १।८६)।

उंबेभरिया—एकास्थिक वृक्ष-विशेष (प्रज्ञा १।३५)।

उकरड—कूडा-करकट डालने का स्थान—'भाषायाम् उकुरडो इति प्रसिद्धं मलनिक्षेपणस्थानम्' (राजटी पृ २६)।

उकुरटिका—अकुरड़ी, कूडा डालने का स्थान (ओटी प १६२)।

उक्क—पाद-पतन, पैरों मे गिरना (दे १।८५)।

उक्कंचण—१ बंधन—'वंसग कडणोक्कचण छावण छेवण दुवार भूमी य' (बृभा ५८३)। २ माया (दश्रुचू प ४०)। ३ झूठी प्रशसा, चापलूसी, अगुणी के गुण बताना (ज्ञाटी प ८६)। ४ घूस, रिश्वत। ५ मूर्ख या भोले पुरुष को ठगने वाले धूर्त्त का, समीपस्थ विचक्षण व्यक्ति के भय से, कुछ समय के लिए निश्चेष्ट रहना (ज्ञाटी प २४५)। ६ मानोन्मान मे कुटिलता करने वाले ठग का, अधिकारी की उपस्थिति मे, कही यह राजा को मेरी शिकायत न कर दे, इस चिन्तन से छुप जाना (सूचू २ पृ ४६२)।

उक्कंठुलय—उत्सुक (कु पृ १३४)।

उक्कंडा—रिश्वत, लचा (दे १।६२)।

उक्कंति—कूपतुला, कुए से पानी खीचने का साधन (दे १।८७)।

उक्कंती—कूपतुला (दे १।८७)।

उक्कंदि—कूपतुला, कूप से पानी खीचने का साधन (दे १।८७)।

उक्कंदी—कूपतुला (दे १।८७)।

उक्कंपित—वास की खपचियो से बांधा हुआ (दश्रुचू प ६५)।

उक्कंबिय—बास की खपचियों से बांधा हुआ—'कडिए वा उक्कंविए वा छन्ने वा लित्ते वा' (आचूला २।१०)।

उक्कड—त्रीन्द्रिय जतु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उक्कडिअ—तोड़ा हुआ, छिन्न (पा ४६६)।

उक्कल—मकडी (उ ३६।१३७)।

उक्कलिय—१ त्रीन्द्रिय जन्तु, मकड़ी (प्रज्ञा १।५०)। २ उबला हुआ।

उक्कली—मकडी, लूता (दअचू पृ १८८)।

उक्का—कूपतुला, कुएं से पानी खीचने का साधन (दे १।८७)।

उक्कारिका—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

उक्कारिग—अलग होने का भेद-विशेष, जैसे एरंड के बीज से छिलका अलग होता है (सूचू १ पृ १३०)।

उक्कासिअ—उत्थित, उठा हुआ (दे १।११४)।

उक्किकट्ठि—निन्दा—'पाणिए निव्वुड्डो, उक्किट्ठी कया, एव डंभएहिं लोगो खज्जइ त्ति' (आवहाटी १ पृ २७५)।

उक्कुंड—उन्मत्त (दे १।९१)।

उक्कुट्ठ—आनन्द की महाध्वनि—'उत्कृष्टिनाद—आनन्दमहाध्वनिरित्यर्थः' (प्रटी प ४९)।

उक्कुट्ठि—१ खुशी की ध्वनि (ति १३५)। २ ऊंचे स्वर से पुकारना—'उक्कुट्ठी पुक्कारो' (जीभा १७२२)। ३ निंदा—'ण य कोलाहल करे, ण उक्कुट्ठिबोल वा करेज्ज रायससारिय वा' (सूचू १ पृ १८२)।

उक्कुडनिक्कुडिया—बार बार उठ-बैठकर झाकना—'उक्कुडनिक्कुडियाहिं पलोएइ भिक्खा वेला हूया न व त्ति' (आवमटी प २८१)।

उक्कुडिक—कूडा-करकट डालने का स्थान (अवि पृ २०६)।

उक्कुडुनिउडिया—बार बार उठ-बैठकर झाकना—'उक्कुडुनिउडियाहिं पलोएति क वेल देसकालो भविस्सइ त्ति' (आवचू १ पृ २८९)।

उक्कुरुड—१ ईंट, काठ आदि का ढेर (बृभा २६५३)। २ अकुरडी, घूरा, कचरा डालने का स्थान (बृभा १९२५; दे १।११०)। ३ रत्नो की राशि—'उक्कुरुडो रत्नादीनामपि राशिः' (वृ)।

उक्कुरुडय—ढेर, कूडा डालने का स्थान (अनुद्वा ३४६)।

उक्कुरुडिक—घूरा, कूडा डालने का स्थान (अवि पृ २०६)।

उक्कुरुडिया—कूडा डालने की जगह—'एयं तुमं दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झाहिं' (विपा १।१।६५)।

उक्कुरुडी—घूरा, कचरा डालने का स्थान (दे १।११०)—'णच्चसि चडिअ उक्कुरुडिं' (वृ)।

उक्कुलिणी—गृह-उपकरण, भाड-विशेष (अंवि पृ ७२)।

उक्केर—१ समूह (ओनि ७०४)। २ उपहार, भेट (दे १।९६)।

उक्केलाविय—उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ—'राइणा उक्केलावियाइं चोल्लयाइ, निरूवियाइं समतओ' (उसुटी प ६५)।

उक्केल्ल—उकेलना, एक-एक कर उखाडना (दजिचू पृ १२४)।

उक्कोड—१ राज्यकर (प्र ३।११)। २ रिश्वत (आचू पृ २३७)।

३ राजकुल मे दातव्य द्रव्य, वेगार तथा सैनिक आदि की भोजन-व्यवस्था (निचू ४ पृ २८०)।

उक्कोडभंग—राजकुल मे दातव्य की राजा द्वारा दी जाने वाली छूट, देखें—'खोडभंग' (निचू ४ पृ २८०)।

उक्कोडा—रिश्वत, लचा (विपा १।१।४६; दे १।६२)।

उक्कोडी—प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (दे १।६४)।

उक्कोल—घाम, गरमी (दे १।८७)।

उक्कोस—अरुण रग का पक्षी-विशेप (अवि पृ २२५)।

उक्ख—जैन साध्वियो के पहनने के वस्त्र-विशेप का एक अंश—'परिधाण-वत्थस्स अब्भितरचूलाए उवरिकण्णो नाभिहेट्ठा उक्खो भण्णइ' (वृटी पृ ३३४)।

उक्खंड—१ सघात। २ विपमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उक्खंडिय—आक्रात (दे १।११२)।

उक्खंद—छावनी, घेरा डालना (निचू २ पृ ४२७)।

उक्खडमड्डा—पुन पुनः—'उक्खडमड्डा इति देशीपदमेतत् पुन· पुन शब्दार्थश्च' (व्यभा २ टी प ४७)।

उक्खणण—खाडना, निस्तुपीकरण (दे १।११५ वृ)।

उक्खणिअ—कडित, निस्तुपीकृत (दे १।११५)।

उक्खल—ओखली (निचू ३ पृ ३७८)।

उक्खलित—उन्मूलित, चलित (आचू पृ ३३६)।

उक्खलिय—उन्मूलित, उत्पाटित (से ६।२६)।

उक्खलिया—१ स्थाली, पात्र-विशेप (पिनि २५०) २ उलूखल, ऊखल (आवचू २ पृ ३१७)।

उक्खली—थाली, पिठर—'अलिंदक त्ति पत्ति त्ति उक्खली थालिक त्ति वा' (अवि पृ ७२; दे १।८८)।

उक्खलुंपिय—खुजला कर—'णो गाहावइं अगुलियाए उक्खलुपिअ-उक्खलुपिअ जाएज्जा'—(आचूला १।६२)

उक्खल्लय—अगूठे को आच्छादित करने वाला जूता (आचू पृ ३५२)।

उक्खा—पिठर, स्थाली—'दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए' (आचूला १।२१)।

उक्खिण्ण—१ अवकीर्ण। २ गुप्त, आवृत। ३ पार्श्व मे शिथिल, एक तरफ से ढीला (दे १।१३०)।

उक्खिन्न—व्याप्त (बृचू प १४१)।

उक्खिरण—दान, उपहार—'रहग्गतो य विविधफले खज्जगे य कवड्डगवत्थमादी य उक्खिरणे करेति' (निचू ४ पृ १३१)।

उक्खिरणग—दान, उपहार (निभा ५७५४)।

उक्खुंड—१ उल्मुक, अलात। २ समूह। ३ वस्त्र का एक भाग, अंचल (दे १।१२५)।

उक्खुडहुंचिय—उत्क्षिप्त, उछाला हुआ (दे १।४ वृ)।

उक्खुरुहुंचिय—उत्क्षिप्त, उछाला हुआ (दे १।४ वृ)।

उक्खुलंपिय—खुजला कर (आटी प ३४०)।

उक्खुलंबिय—खुजला कर (आचूला १।६२ पा)।

उक्खुलणियत्थ—जिसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हों, वह (बृभा ४११२)।

उक्खुलि—ऊखली (अवि पृ १६३)।

उखड्डुमड्डा—बार बार—'उखड्डुमड्डु त्ति वा बहुसो त्ति भूयो भूयो त्ति वा पुणो पुणो त्ति वा एगट्ठ' (निचू ४ पृ ३०८)।

उखलिका—ऊखली (अंवि पृ २२१)।

उखली—उलूखल, ऊखली (आवहाटी २ पृ २४३)।

उखा—थाली (भटी प ३२६)।

उखुल—अस्तव्यस्त (बृटी पृ ११२१)।

उगारिया—क्षुद्र जन्तु, दीमक (सूचू १ पृ १४५)।

उगाल—फलक (व्यभा ४।४ टी प १०२)।

उगाली—फलक (व्यभा ४।४ टी प १०२)।

उग्गह—योनिद्वार—'उग्गह इति जोणिदुवारस्स सामइकी सण्णा' (निचू २ पृ १८९)।

उग्गहिय—अच्छे प्रकार से ग्रहण किया हुआ (दे १।१०४)।

उग्गाल—पान की पिचकारी (पंव ३८)।

उग्गाहिय—१ गृहीत। २ उत्क्षिप्त। ३ प्रवर्तित (दे १।१३७)। ४ उच्चालित (पा ५४६)।

उग्गुंडिय—धूल से सना हुआ—'पंसुउग्गुडियंगमगा' (भ ७।११९)।

उग्गुतिय—उत्तेजित—'सिंगाररसुग्गुतिया मोहकुवितफुफगा' (दअचू पृ ५९)।

उग्गुलुंछिआ—हृदय-रस का उछलना—१ भावोद्रेक। २ वमन के संवेदन के कारण होने वाली उथल-पुथल (दे १।११८)।

उग्घट्टि—अवतंस, शिरोभूषण (दे १।९०)।

उग्घाडपोरिसि—प्रहर का तीन चौथाई भाग—'उद्घाटपौरुष्या समयभाषया पादोनप्रहरे' (प्रसा ५९० टी प १६६)।

उग्घाय—१ संघात। २ विषमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उग्घुट्ठ—१ पौरुष, शूरता (दे १।९९)। २ लुप्त, विनष्ट।

उचूलयालग—नीचा सिर और ऊपर पांव कर पानी मे डुबोना (विपाटी प ७२)।

उच्च—नाभितल (दे १।८६)।

उच्चंतग—दंतराग, दांतों को रंगने की मसी—'उच्चंतगो दंतरागो भन्नइ' (प्रज्ञाटी प ३६२)।

उच्चंपिअ—१ दबाया हुआ, रौंदा हुआ—'सीसं उच्चपिअं कवंधम्मि' (तंदु १४९)। २ दीर्घ (दे १।११६)।

उच्चड्डिय—उत्क्षिप्त, ऊपर उछाला हुआ (दे १।१०६)।

उच्चत्त—निश्चित अवधि तक स्वामी के कथनानुसार कार्य करने वाला (भृतक)—'एच्चिरकालोच्चत्ते, कायव्वं कम्म जं वेंति' (निभा ३७२०)।

उच्चत्तवरत्त—१ दोनो पार्श्व मे स्थूल। २ अनियत भ्रमण (दे १।१३९)।

उच्चत्तवरत्तय—दोनो पार्श्वो को ऊचा-नीचा करना, इधर-उधर करना (पा ६६३)।

उच्चत्थ—दृढ, मजबूत (दे १।९७)।

उच्चप्प—आरूढ, ऊपर बैठा हुआ (दे १।१००)।

उच्चरग—कमरा, कक्ष (निचू १ पृ ६७)।

उच्चाड—विपुल (दे १।९७)।

उच्चाडिर—१ रोकनेवाला। २ अफसोस करने वाला (प्रा २।१९३)।

उच्चात—परिश्रान्त (व्यभा ६ टी प २५)।

उच्चाय—परिश्रान्त (ओनि ५१८)। २ आलिंगन, परिरम्भ।

उच्चार—विमल, स्वच्छ (दे १।९७)।

उच्चारिय—गृहीत (दे १।११४)।

उच्चिइय—आभूषण-विशेष (जीवटी प १४७)।

उच्चिवलय—गंदा पानी (पा १५८)।

उच्चिडिम—मर्यादा-रहित, निर्लज्ज—'उच्चिडिमं मुक्कमज्जायं' (पा ५११)।

उच्चुंच—दृप्त, अभिमानी (दे १।९९)।

उच्चुप्पिय—आरूढ (दे १।१००)।

उच्चुलउलिय—कुतूहलवश त्वरता से जाना (दे १।१२१)।

उच्चुल्ल—१ उद्‌विग्न। २ अधिरूढ, चढा हुआ। ३ भयभीत (दे २।१२७)।

उच्चूर—विविध प्रकार—'उच्चूरपउरलभे' (व्यभा ४।२ टी प ८२)।

उच्चेल्लर—१ हल आदि से बिना जोती हुई भूमी। २ साथल के रोम (दे १।१३६)।

उच्चेव—प्रकट (दे १।६७)।

उच्चोल—१ विश्रान्त। २ नीवी, स्त्री के अधोवस्त्र के दोनो छोरो पर दी जाने वाली गाठ (दे १।१३१)। ३ चुल्लू, चुलुक—'पाणिए उच्चोलएहिं मारिज्जइ' (आवहाटी २ पृ १२५)।

उच्चोली—गठरी—'परिकरेण वंधह चुण्णस्स उच्चोलीओ' (सूचू १ पृ १६३ टि)।

उच्छ—आंतों का आवरण (दे १।८५)।

उच्छंगिय—पुरस्कृत (दे १।१०७)।

उच्छंट—जल्दी-जल्दी चोरी करना (दे १।१०१)।

उच्छंटअ—शीघ्र चोरी करना (पा ६७६)।

उच्छंद—छीला हुआ, तोडा हुआ (आचू पृ ३४४)।

उच्छंदण—मर्दन, अभ्यंगन—'मक्खणऽब्भंगण उच्छदण उव्वट्टण' (अंवि पृ १६३)।

उच्छट्ट—चोर, डाकू (दे १।१०१)।

उच्छडिय—चुराई हुई वस्तु (दे १।११२)।

उच्छय—व्याप्त—'देवेहि य देवीहि य समतओ उच्छयं गयणं' (आवहाटी १ पृ १२३)।

उच्छल्लिउं—एक ओर ले जाकर—'उच्छल्लिउ ति एकपार्श्वे नयित्वा' (निचू १ पृ ६८)।

उच्छल्लित्तु—एक ओर ले जाकर (निचू १ पृ ६८)।

उच्छल्लिय—१ एक ओर ले जाकर (निभा २८१) २ जिसकी छाल छील दी गई हो वह (दे १।१११)।

उच्छविय—शय्या, विछौना (दे १।१०३)।

उच्छाह—सूत का ततु (दे १।६२)।

उच्छिदण—१ व्याज पर लेना। २ उधार लेना (पिनि ३१७)।

उच्छिपक—चोरो का एक प्रकार (प्र ३।३)।

उच्छित्त—१ विक्षिप्त। २ उत्क्षिप्त (दे १।१२४)।

उच्छिल्ल—छिद्र (दे १।९५)।

उच्छु—१ राई (उसुटी प ५६)। २ वायु, पवन (दे १।८५)।

उच्छुअ—भय से की हुई चोरी (दे १।९५)।

उच्छुअरण—ईक्षु का खेत (दे १।११७)।

उच्छुआर—संछन्न, ढका हुआ (दे १।११५)।

उच्छुआरिअ—छादित, ढका हुआ (दे १।११५ वृ)।

उच्छुंडिअ—१ बाण आदि से अत्यन्त व्यथित। २ अपहृत (दे १।१३५)।

उच्छुच्छु—दृप्त, अभिमानी (दे १।९९)।

उच्छुड्ड—आहत–'ततो उच्छुड्डं फुमति रागो लग्गति' (निचू २ पृ २२०)।

उच्छुद्ध—१ विक्षिप्त–'उच्छुद्धणयणकोसे' (अनु ३।५२)। २ रोगग्रस्त –'उच्छुद्धसरीरे वा, दुब्बलतवसोसिते व जो होज्जा' (बृभा ४५५८)। ३ परित्यक्त (बृभा ३१३२)। ४ बिखरा हुआ (ओभा २२१)।

उच्छुर—अविनश्वर (दे १।९०)।

उच्छुरण—१ ईख का खेत (दे १।११७)। २ ईख—'उच्छुरणं इक्षुरिति केचित्' (वृ)।

उच्छुल्ल—१ अनुवाद। २ विश्रान्त (दे १।१३१)।

उच्छूढ—चुराना, अपहरण करना–'सायं एकल्लयाइं जायाइं चोरेहिं उच्छूढाइं' (वृटी पृ १०८)।

उच्छूर—१ असमय, विलंब–'रन्धनवेला तामुच्छूर एव करोति येन साधोरपि भक्तं भवति' (ओटी प १४८)। २ प्रचुर (निचू ३ पृ २०६)।

उच्छूरिय—सुप्रावृत–'उच्छूरिया णडी विव दीसति कुप्पासगादीहिं' (बृभा ४१२५)।

उच्छूलग—परिखा, शत्रु-सेना का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त-विशेष (उ ९।१८ पा)।

उच्छेव—१ छत का नीचे गिरना–'परिपेलवच्छातिते णेव्वे गलणं उच्छेवो' (निचू २ पृ ३३८)। २ दीवार का छेद (व्यभा ४।४ टी प ६)।

उच्छेवण—घृत (दे १।११६)।

उच्छोलणा—प्रचुर जल (द ४।२६)–'उच्छोलणा–पभूओदगेण' (जिचू पृ १६४)।

उजल्ल—बलवान् (प्रा २।१७४)।

उज्जंगल—१ बलात्कार। २ दीर्घ (दे १।१३५)।

उज्जग्गिर—जागृति, अनिद्रा (दे १।११७)।

उज्जग्गुज्ज—स्वच्छ (दे १।११३)।

उज्जड—उजाड, वस्ती-रहित स्थान (दे १।९६)।

उज्जणिअ—टेढा, वक्र (दे १।१११)।

उज्जर—१ प्रवाह (आवहाटी २ पृ ८७)। २ मध्यगत, भीतर का।
३ निर्जरण, क्षय।

उज्जल—अत्यधिक–'वेयणा पाउब्भूया–'उज्जला विउला कक्खडा....'
(अंत ३।९०)।

उज्जला—छोटी संघाटी (व्यभा ७ टी प ४५)।

उज्जल्ल—१ पसीने से लथपथ, मलिन–'मुडा कंडू विणट्ठंगा, उज्जल्ला
असमाहिया' (सू १।३।१०)। २ हठ (प्रा २।१७४)।

उज्जल्ला—१ अत्यन्त मलिन (वृभा २४५७)। २ बलात्कार (दे १।९७)।

उज्जाण—प्रतिलोमगामी नौका (निभा १८३)।

उज्जाणिय—नीचा किया हुआ (दे १।११३)।

उज्जात—(विवेक) शून्य (सूचू १ पृ ९१)।

उज्जीरिय—अपमानित, तिरस्कृत (दे १।११२)।

उज्जुग—विल–'उज्जुग विल' (दश्रुचू प ६८)।

उज्जूरिय—१ क्षीण (दे १।११२)। २ शुष्क (वृ)।

उज्जूहिगा—जंगल की ओर जाने वाली गायों का समूह–'गोसंखडी
उज्जूहिगा भन्नति' (निचू ३ पृ ३४८)।

उज्जोमिआ—रस्सी, डोरी (दे १।११५)।

उज्जोवण—१ गायो को चरने के लिए खुला छोडना। २ गाडी आदि
को चलाने मे प्रवृत्त होना–'उज्जोवणं ति गावीण पसरणं
सगडादीणं वा पयट्टण' (निचू २ पृ ९)।

उज्झंखणी—१ लोकापवाद (निभा ६५८)। २ फुहार, शीतल वायु–
'दगवातो सीतभरो, सा य उज्झखणी भण्णति' (निचू २ पृ ३३८)।

उज्झमण—पलायन (दे १।१०३)।

उज्झरिय—१ टेढी नजर से देखा हुआ, कानी आख से देखा हुआ। २ विक्षिप्त,
पागल। ३ क्षिप्त, फेका हुआ। ४ त्यक्त (दे १।१३३)।

उज्झस—उद्यम, प्रयत्न (दे १।९५)।

उज्झाइ—विरूप, मैला (बृभा ३९१३)।

उज्झाइग—विरूप (बृभा ३९९४)।

उज्झिखिअ—लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३।५५ वृ)।

उट्ट—१ जल-जतु विशेष। २ सिंधु देश के कोमल चमड़ी वाले मत्स्य-विशेष—'उट्टा मच्छा सिंधुविसए, तेसिं चम्मयं मउयं भवति' (आचू पृ ३६४)। ३ कुत्ते की आकृति वाले जलचर प्राणियों का चर्म (निचू २ पृ ४००)। देखे—'उद्द'।

उट्टिक—वडा भाजन-विशेष (अवि पृ २१४)।

उट्टिया—पात्र-विशेष (अवि पृ २२१)।

उट्ठ—१ घड़े आदि का किनारा, कागरा—'वोडो जस्स उट्ठा णत्थि' (आवचू १ पृ १२२)। २ कुत्ते की आकृति वाले जलचर प्राणियो का चमडा—'सुणगागिती जलचरा सत्ता तेसिं अजिणा उट्ठा' (निचू २ पृ ४००)।

उट्ठल—उल्लास (दे १।९१)।

उट्ठल्ल—उल्लास (दे १।९१)।

उट्ठी—१ मुट्ठी। २ अंश—'महीए एका उट्ठी छुब्भइ' (आवहाटी २ पृ ९०)।

उट्ठोणा—उठकर—'उट्ठोणा (? उट्ठित्ता) से णं इमं लोगं तिरियं करेति' (सूचू १ पृ २११)।

उडद—उरद, माष (निरटी पृ २७)।

उडिद—उरद, माप (दे १।९८)।

उडु—तृण का आच्छादन (दे १।८६)।

उडुक्किय—दातो से काट कर दागी करना—'सव्वतउसाणि दंतेहिं उडुक्कियाणि' (दअचू पृ २९)। उडि—काटना, टुकडे करना (कन्नड)।

उडुरुक्क—मुह से वृषभ की भाति शब्द करना (अनुद्वाहाटी पृ १९)।

उडुरुक्ख—मुह से वृषभ की भाति शब्द करना—'उडुरुक्खं ति देशीवचनं वृषभगर्जितकरणाद्यर्थम्' (अनुद्वाहाटी पृ १९)।

उडुहिय—१ विवाहित स्त्री का कोप। २ जूठा, उच्छिष्ट (दे १।१३७)।

उड्डु—१ दीर्घ, वडा (सू १।५।३४)। २ उड़ीसा देश का वासी (प्र १।२१)। ३ कुआ आदि खोदने वाला (निभा ३७२०; दे १।८५)। ओड्डु (कन्नड)। ४ तीव्र (आचू पृ १४३)। ५ कूप (आवटि प २४)।

उड्डंचक—उड्डाह, उपहास—'देशीपदमेतत्' (बटी पृ १६०)।

उड्डंचग—१ उपहास करने वाला (निभा १०९५)। २ याचक—'उदञ्चका याचकाः' (बृटी पृ १६०)।

उड्डंचय—अवहेलना—'वदणादिसु उड्डचये करेज्ज' (निचू २ पृ १७२)।

उड्डंडग—वे भिक्षु जो पाणिपात्र होते हैं (आचू पृ १६६)।

उड्डंबालग—कोतवाल—'तत्थ चारियत्ति काऊण उड्डंबालगा अगडे पक्खिविज्जति' (आवहाटी १ पृ १३६)।

उड्डंस—खटमल (उ ३६।१३७)।

उड्डुण—अंगीकार—'तत्थोड्डुणं अप्पणो कुणति' (व्यभा ४।३ टी प १८)। २ दीर्घ। ३ बैल (दे १।१२३)।

उड्डुरुट्ठ—प्रद्विष्ट (आचू पृ १४३)।

उड्डुस—खटमल (दे १।९६)।

उड्डुहण—१ लोकापवाद (निचू ३ पृ ४९८)। २ चोर (दे १।१०१)।

उड्डाअ—उद्गम, उदय (दे १।९१)।

उड्डाण—१ प्रतिध्वनि। २ कुरर पक्षी। ३ विष्ठा। ४ अभिमानी। ५ मनोरथ (दे १।१२८)।

उड्डावणक—आकर्षण—'तस्स कड्ढणट्ठाए उड्डावणकं करेति' (निचू ४ पृ ७६)।

उड्डास—संताप, परिताप (दे १।९९)।

उड्डाह—निन्दा (पिनि ४१४)।

उड्डिआहरण—छुरी के अग्रभाग पर रखे हुए फूल को पाव की अंगुलियों से लेकर ऊपर उछलना (दे १।१२१)।

उड्डिय—१ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ—'अस्सेण हेसिय पट्ठी च उड्डिया' (निचू ४ पृ ३४३)। २ वेचने के लिए रखना (आवहाटी १ पृ २६४)।

उड्डिहिअ—ऊपर फेंका हुआ (पा ५१७)।

उड्डुय—डकार (आचूला ८।२९)।

उड्डुयर—जो मलमूत्र का विसर्जन करते हुए चचलता के कारण हाथ आदि पर भी लेप लगा लेता है (बृटी पृ ५१४)।

उड्डुहिअ—छिन्न (दे १।१०५ वृ)।

उड्डोय—१ डकार (जीभा ९०८)। २ उबाक, ओकाई (निचू ३ पृ ८०)।

उड्ढ—१ दीर्घ, बड़ा (सू १।५।३४)। २ वमन (बृटी पृ १५३९)। ३ पात्र का किनारा (निचू ४ पृ १५७)।

उड्ढल—उल्लास (दे १।९१)।

उड्ढल्ल—उल्लास (दे १।९१)।

उणुयत्त—अवस्थित, ठहरा हुआ—'सावि तं पलोएंती तहेव उणुयत्तेति' (आवहाटी १ पृ १८२)।

उण्णम—समुन्नत (दे १।८८)।

उण्णलिय—१ कृश, दुर्बल। २ ऊंचा किया हुआ (दे १।१३६)।

उण्णुइअ—१ हुंकार। २ आकाश की ओर मुंह किए हुए कुत्ते की आवाज (दे १।१३२)। ३ गर्वित (व्यभा ४।२ टी प ६९)।

उण्हाली—चतुष्पद प्राणी-विशेष—'मज्जारी मुगसी व त्ति उण्हाली अडिल त्ति वा' (अवि पृ ६९)।

उण्हिआ—खिचड़ी (दे १।८८)।

उण्हेला—कीट-विशेष, घृतपिपीलिका—'उण्हेला णाम तेल्लपाइयाओ, तातो तिक्खेहिं तुडेहिं अतीव दंसंति' (आवमटी प २८९)।

उण्होदयभंड—भ्रमर (दे १।१२०)।

उण्होलक—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

उण्होला क्षुद्र जन्तु-विशेष—'उण्होला-तेल्लपातियाओ। तातो तिक्खेहिं अतीव दसति' (आवचू १ पृ ३०४)।

उतपोत—आकीर्ण (बृभा ३१७२)।

उत्तइय—उत्तेजित (दअचू पृ ५९ पा)।

उत्तंपिअ—खिन्न, उद्विग्न (दे १।१०२)।

उत्तप्प—१ गर्वित। २ अधिक गुण वाला (दे १।१३१)।

उत्तम्मिअ—खिन्न (दे १।१०२)।

उत्तरणवरंडिआ—उडुप, नौका, जहाज आदि (दे १।१२२)—'समुद्रनद्यादौ जलतरणोपकरण प्रवहणादि' (वृ)।

उत्तरणवरंडी—जलसतरण के साधन नौका आदि—'भवउत्तरणवरंडि संभर सव्वण्णुमण्णहा तुज्झ। णरगोत्तिरिविडिमज्झे होही उत्थल्ल-पत्थल्ला॥' (दे १।१२२ वृ)।

उत्तरिविडि—एक के ऊपर एक रखे हुए भाजनो का ढेर (दे १।१२२ पा)।

उत्तलहअ—वृक्ष (दे १।११६)।

उत्ताणपत्त—एरण्ड से संबधित, एरण्ड के पत्ते (दे १।१२० वृ)।

उत्ताणपत्तय—एरण्ड-सबंधी, एरण्ड के पत्ते (दे १।१२०)।

उत्ताणय—तत्पर (आवचू १)।

उत्ताल—लगातार रुदन, अंतर रहित क्रन्दन की आवाज (दे १।१०१)।

उत्तावल—१ उतावल, शीघ्रता। २ शीघ्रकारी, आकुल–'उत्तावलो सहिसत्थो' (कु पृ १८०)।

उत्ताहिय—ऊपर उछाला हुआ (दे १।१०६)।

उत्तिग—१ चीटियों का बिल (आ ८।१०६)। २ सर्पच्छत्र वनस्पति (द ८।११)। ३ छिद्र–'उत्तिगो पुण छिड्डं' (निभा ६०१८)।

उत्तिरिविडि—एक के ऊपर एक रखे हुए भाजनो का ढेर (दे १।१२२)। उतरड (गुज), उत्तरंड (मराठी)।

उत्तुइय—उत्तेजित (दनि १११ पा)।

उत्तुण—अभिमानी, गर्वयुक्त (उसुटी प २३४; दे १।९९)।

उत्तुपित—चिकना किया हुआ (प्रटी प ५९)।

उत्तुपिय—स्निग्ध, चिकना (प्र ३।१६)।

उत्तुयय—उत्तेजित (व्यभा ६ टी प ३२)।

उत्तुरिद्धि—१ अभिमानी (दे १।९९)। २ दर्प, गर्व (वृ)।

उत्तुहिअ—उत्खोटित, छिन्न, नष्ट (दे १।१०५)।

उत्तूइय—गर्व–'एव भणितो संतो उत्तूइओ सो कहेइ सव्वं–उत्तूइओ त्ति देशीपदमेतद् गर्वे वर्तते' (व्यभा ४।२ टी प ६९)।

उत्तह—तटशून्य कूप (दे १।९४)।

उत्तेड—बिन्दु–'भंडगपासवलग्गा उत्तेडा बुब्बुया न सम्मंति' (पिनि १९)।

उत्थंघिय—उत्थापित (से ५।६०)।

उत्थग्घ—संमर्द, उपमर्द (दे १।९३)।

उत्थरिय—१ उत्थित (दे ७।९२)। २ आक्रात (पा ५८५)। ३ निर्गत।

उत्थलिअ—१ गृह। २ ऊंचा गया हुआ (दे १।१०७)।

उत्थल्ल—उथलना, पलटना (दअचू पृ ११५)।

उत्थल्लण—धकेलना, उछालना (प्र ३।१०)।

उत्थल्लपत्थल्लण—उथल-पुथल–'उत्थल्ल-पत्थल्लणेण भुक्तम्' (ओटी प १९२)।

उत्थल्लपत्थल्ला—दोनो पार्श्वों से परिवर्त्तन, उथल-पुथल (दे १।११२)।

उत्थल्ला—१ परिवर्त्तन (दे १।९३)। २ उद्वर्तन।

उत्थाण—अतिसार रोग (व्यभा ७ टी प ८५)।

उदअ—गढा, अवपात–'गर्त्ताविशेषेषु उदक इत्येवंरुढेपु' (प्रटी प २२)।

उदंक—जल का पात्र-विशेष जिससे जल ऊंचा छिडका जाता है (जीवटी प १४६)।

उदकघसर—नाली, मोरी (ओटी पृ ३६५)।

उदग—अनतकायिक वनस्पति–'तत्थ उदग नाम अणंतवणप्फई, से भणिय च उदए अवए पणए सेवाले' (दजिचू पृ २७७)।

उदरिय—१ आजीविका के लिए इधर उधर घूमने वाले। २ पाथेय युक्त यात्री–'उदरिया णाम जहिं गता तेहिं चेव रुवगावी छोढु समुद्दिसंति पच्छा गम्मति। गहियसंवला उदरिया' (निचू ४ पृ ११०)।

उदसी—छाछ–'तक्कं उदसी छासि त्ति एगट्ठं' (निचू १ पृ ९२)।

उदाण—वनस्पति का एक प्रकार (अंवि पृ २६६)।

उदूक्खल—मुशल–'मुशलं उक्खलं वा' (आचू पृ ३३९)।

उद्द—१ सिन्धु देश के मत्स्य-विशेष–'उद्रा सिन्धुविषये मत्स्याः'। २ मत्स्य-चर्म का वना हुआ वस्त्र-विशेष (आचूला ५।१५; टी प ३९३)। —देखे–'उट्ट'। ३ जल-मानुष। ४ ककुद, वैल के कधे का कूवड़ (दे १।१२३)।

उद्दंसग—मत्कुण, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उद्दद्दर—सुभिक्ष–'दुविधा दरा–धण्णदरा पोट्टदरा य, ते उद्दं जाव भरिया तं उद्दद्दर भण्णति। पर्यायवचनेन सुभिक्षमित्यर्थः' (निचू ३ पृ ८०)।

उद्दरिअ—१ उखाडा हुआ (दे १।१००)। २ स्फुटित, विकसित (पा ५१३)। ३ उद्दर्पित (नंदीटि पृ १०१)। ४ युद्ध से पलायित।

उद्दा—ऊदविलाव, जलमार्जार (सू १।७।१५)।

उद्दाइंत—शोभमान (ज्ञा १।१।३३)।

उद्दाइय—दीमक, कीट (निचू १ पृ १५५)।

उद्दाण—१ परित्यक्त (निचू २ पृ १४)। २ मृत–'उद्दाणे भोइयम्मि चेइयाइ वदामि' (उसुटी प २)। ३ चुल्हा (दे १।८७)।

उद्दाणग—मृत–'उद्दाणग जायं तं मए विगिंचियं' (आवहाटी २ पृ १४०)।

उद्दाणभत्तारा—पति के द्वारा परित्यक्त स्त्री–'उद्दाणभत्तारा भत्तारेण परिठविता' (निचू २ पृ १४)।

उद्दास—१ संघात। २ विषमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उद्दाल—वृक्ष-विशेष (जीव ३।५८१)।

उद्दालक—वृक्ष-विशेष (जीवटी प १४५)।

उद्दिक—घट का एक प्रकार (अवि पृ २५५)।

उद्दिट्ठा—अमावस्या (स्था ४।३६२)।

उद्दिसिअ—उत्प्रेक्षित (दे १।१०९)।

उद्दीढ—भक्षित, खाया हुआ (निचू ३ पृ ५८७)।

उद्दुंडुग—उपहास का पात्र (बृभा ४००२)।

उद्दूढ—१ चुराया हुआ, मुषित–'देशीवचनत्वाद् मुषित' (बृटी पृ ८२५)।
२ पराजित (अवि पृ २५०)।

उद्देसग—जंतु-विशेष, दीमक (जीवटी प ३२)।

उद्देहि—उपदेहिका, दीमक (दे १।९३)।

उद्देहिगा—१ दीमक। २ दीमक द्वारा कृत वल्मीक की मिट्टी
(पिटी प २०)।

उद्देहिया—दीमक–'उद्देहियाखइय वा कट्ठं दुब्बलं' (आचू पृ २१२)।

उद्धइय—आभ्यंतर–'उद्धइयाहि देसीभासातो जं अब्भंतरं वुच्चति'
(आचू पृ २१५)।

उद्धच्छवि—विसंवादित, विपरीत, अप्रमाणित (दे १।११४)।

उद्धच्छविअ—सज्जित (दे १।११९)।

उद्धच्छिअ—निषिद्ध (दे १।१११)।

उद्धट्ट—ऊंचा (सूचू १ पृ १०४)।

उद्धट्टक—उपहास पैदा करने वाली भाषा या आवाज (बृटी पृ १६७०)।

उद्धत्थ—विप्रलब्ध, वंचित (दे १।९६)।

उद्धरण—उच्छिष्ट, जूठा (दे १।१०६)।

उद्धवअ—उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ (दे १।१०६)।

उद्धविअ—पूजित (दे १।१०७)।

उद्धाअ—१ ऊबड-खाबड प्रदेश, ऊंचा-नीचा प्रदेश। २ श्रान्त, थका हुआ।
३ संघात, समूह (दे १।१२४)।

उद्धाण—उद्वसित, उजड़ा हुआ (व्यभा ४।४ टी प ७०)।

उद्धाविय—समुद्रचारी डाकू आदि अत्यन्त क्रूर मनुष्य–'किं वा अहं सभग्गो
त्ति चिंतयंतो च्चिय सहसा उद्धाविएहिं बद्धो' (कु पृ ६९)।

उद्धि—गाड़ी का एक अवयव (सूर्य १०।३७)। उध (गुज)।

उद्धुमात—व्याप्त (नदीचू पृ ६)।

उद्धुमाय—पूर्ण (पा १४२)।

उधेइ—दीमक (निचू ३ पृ १२४)। उदई (राज)।

उन्नालिअ—उन्नामित, ऊंचा किया हुआ (पा ५०८)।

उपघसर—नाली, मोरी (ओटी पृ ३६५ पा)।

उपासना—नापित-कर्म, हजामत—'उपासना नाम श्मश्रुकर्त्तनादिरूपं नापित-कर्म' (आवमटी प १६६)।

उप्पंक—१ कर्दम, पंक। २ ऊंचाई। ३ समूह। ४ अत्यधिक (दे १।१३०)।

उप्पर—ऊपर (जीभा १४६२)।

उप्पल—संख्या-विशेष—'चतुरशीतिरुत्पलाङ्गा-शतसहस्राणि एकमुत्पलम्' (जीवटी प ३४५)।

उप्पलंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

उप्पल्लाणित—अश्व से पलाण उतारना—'उप्पल्लाणितो आसो। विस्सामितो राया' (उसुटी प २५१)।

उप्पाडक—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अवि पृ २६७)।

उप्पातिका—मत्स्य की एक जाति (अवि पृ २२८)।

उप्पाय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उप्पाहल—उत्कण्ठा (पा ८०३)।

उप्पि—ऊपर (अनु ३।६)।

उप्पिगलिआ—करोत्संग, हाथ को गोदरूप बनाना (दे १।११८)।

उप्पिजल—१ मैथुन। २ धूल। ३ अपकीर्ति, अपयश (दे १।१३५)।

उप्पिच्छ—१ त्वरित। २ तीव्र श्वास—'श्वासयुतं त्वरितं वा' (अनुद्वाचू पृ ४६)। ३ त्रस्त, भीत (ज्ञाटी प १६८)। ४ आकुल। ५ कुपित—'उप्पिच्छ नाम आकुलम् आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च' (जीवटी प १६४)।

उप्पित्थ—१ व्याकुल—'उप्पित्थशब्दस्त्रस्तव्याकुलवाची देशीति क्वचित्' (से ११।४०)। २ लयबद्ध श्वास (राजटी पृ १८६)। ३ कुपित। ४ विधुर (दे १।१२६)।

उप्पियण—बार-बार श्वास लेना (व्यभा ४।४ टी प ५०)।

उप्पीड—समूह, राशि (से ४।३७)।

उप्पील—१ संघात, समूह—'पसरिओ बहुलो धूमुप्पीलो' (कु पृ १०८; दे १।१२६)। २ विषमोन्नत-प्रदेश (दे १।१२६)।

उप्पुय—उत्सुक (प्रटी प ५२)।

उप्पेअ— अभ्यंग, तैल आदि से मालिस—'उप्पेअं देशीपदमेतत् अभ्यङ्गम्' (व्यभा ६ टी प १०)।

उप्पेस—त्रास (से १०।६१)।

उप्पेहड—१ उद्भट, तीव्र (दे १।११६)। २ आडंबरयुक्त (पा ६०)।

उप्फंदोल—अस्थिर (दे १।१०२)।

उप्फल्ल—दुर्जन, खल (ति ६०१)।

उप्फाल—दुर्जन (ति ६००; दे १।६०)।

उप्फिस—उफनना (वृटी)।

उप्फुंकिआ—धोबिन, कपड़ा धोने वाली (दे १।११४)।

उप्फुंडिअ—बिछाया हुआ, आस्तृत (दे १।११३)।

उप्फुण्ण—आपूर्ण, भरा हुआ (दे १।६२)।

उप्फुन्न—स्पृष्ट, छुआ हुआ (प्रसाटी प ३०४)।

उप्फुरुहंसिगा—प्रज्वलित अगीठी (सूचू १ पृ १२५)।

उप्फेणउप्फेणिय—क्रोध से उफनते हुए—'उप्फेणउप्फेणिय सीहसेणं राय एवं वयासी' (विपा १।६।१८)।

उप्फेणओफेणीय—क्रोध से उफनते हुए (विपाटी प ८३)।

उप्फेस—१ मुकुट (स्था ५।७२)। २ त्रास, भय (दे १।६४)। ३ अपवाद, निन्दा (वृ)।

उप्फेसण—त्रास, भय (उसुटी प ५८)।

उप्फेसया—निन्दा—'असरिसजण उप्फेसया ण हु सहियव्वा कुले पसूएण' (दे १।६४ वृ)।

उप्फोअ—उद्गम, उदय (दे १।६१)।

उप्फोस—१ त्रास (निभा १४८०)। २ प्रक्षालन (निभा ४०८५)।

उप्फोसण—सिंचन, छिडकाव—'आवरिसण पाणिएण उप्फोसणं' (निचू २ पृ १७५)।

उबेड्डु—अन्तःप्रविष्ट (आवचू २ पृ १६५)।

उब्बिब—१ खिन्न। २ शून्य। ३ भयभीत। ४ उद्भट, उग्र। ५ क्रांत। ६ प्रकट वेष वाला (दे १।१२७)।

उब्बिबल—कलुषित जल, मैला पानी (दे १।१११)।

उब्बुक्क—१ प्रलपित। २ सकट। ३ बलात्कार (दे १।१२८)।

उब्बुड्डु—अन्त प्रविष्ट, गडी हुई—'उब्बुड्डुणयणकोसे' (अनुटी प ७)।

उब्बूर—१ अधिक । २ सघात, समूह । ३ स्थपुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६) ।

उब्भ—१ खडा हुआ (निचू १ पृ ५४) । २ ऊर्ध्व (दे १।८६ वृ) ।

उब्भंड—फूहड, अस्त-व्यस्त वेशभूषा (वृभा ६१५७) ।

उब्भंत—ग्लान (दे १।६५) ।

उब्भग्ग—व्याप्त (दे १।६५)–'तिमिरोब्भग्गणिसाए' (वृ) ।

उब्भज्जी—क्षीरपेया–'कलमोतणो उ पयसा, उक्कोसो हाणि कोद्दवुब्भज्जी' (ओभा ३०७) ।

उब्भट्ठ—मांगा हुआ–'उब्भट्ठपरिन्नायं अन्नं लद्धं पलोयणे घेत्थी' (पिनि २८१) ।

उब्भाअ—शात (दे १।६६) ।

उब्भालण—१ धान्य को छाज आदि से साफ-सुथरा करना (दे १।१०३) । २ अपूर्व (वृ) ।

उब्भालिअ—सूर्प आदि से साफ किया हुआ (पा ५३८) ।

उब्भावण—परिभव (ओनि १४८) ।

उब्भावणा—अपभ्राजना, तिरस्कार (उशाटी प १६६) ।

उब्भाविअ—मैथुन (दे १।११७ वृ) ।

उब्भासुअ—शोभा-हीन (दे १।११०) ।

उब्भुआइअ—उभरा हुआ (दे १।१०५ वृ) ।

उब्भुआण—उफनता हुआ, अग्नि से तप्त दूध आदि का उछलना (दे १।१०५) ।

उब्भुग्ग—चल, अस्थिर (दे १।१०२) ।

उब्भुत्तिअ—उद्दीपित, प्रदीपित (पा १६) ।

उब्भुभंड—भाड-विशेष (अवि पृ १६३) ।

उब्भे—तुम सब (दे १।८६ वृ) ।

उभज्झी—क्षीरपेया (ओटी प १६६) ।

उमत्थिय—बाधकर–'सव्वोवही (एगट्ठा कज्जति भायणं उमत्थिए) एगट्ठाणे पुढो कज्जति' (निचू ३ पृ ३७४) ।

उमाण—प्रवेश–'उमाणं ति प्रवेशः' (आटी प ३२६) ।

उमुत्तिल्लय—१ बहु-मूत्र रोगवाला । २ मूत्राशय मे सूजनवाला–'जेण वा कट्ठाइणा संचालेति तं सविसं उमुत्तिल्लयं वा खय वा कट्ठेण हवेज्जा' (निचू २ पृ २८) ।

उम्मइअ—मूढ, मूर्ख (दे १।१०२)।

उम्मंड—१ हठ, आग्रह। २ उद्वृत्त, बचा हुआ (दे १।१२४)।

उम्मच्छ—१ असंबद्ध। २ भगयुक्त, विकल्प से कथित। ३ क्रोध (दे १।१२५)।

उम्मच्छविअ—उद्‌भट, तीव्र (दे १।११६)।

उम्मच्छिअ—१ रुष्ट। २ आकुल (दे १।१३७)।

उम्मड्डा—बलात्कार (दे १।९७)।

उम्मत्त—१ धतूरा (दे १।८९)। २ एरण्ड (वृ)।

उम्मत्थ—अधोमुख, विपरीत (दे १।९३)।

उम्मर—देहली (आचू पृ ३६४, दे १।९५)।

उम्मरिअ—उत्खात (दे १।१००)।

उम्मल—जमा हुआ, स्त्यान, कठिन (दे १।९१)।

उम्मल्ल—१ नृप। २ मेघ। ३ पुष्ट, पीवर। ४ बलात्कार (दे १।१३१)।

उम्मल्ला—तृष्णा (दे १।९४)।

उम्माल—देवता को चढाई गई वस्तु, निर्माल्य (पा ३५२)।

उम्मुह—अभिमानी (दे १।९९)।

उम्हाविअ—मैथुन (दे १।११७)।

उयचित—परिकर्मित, सस्कारित (ज्ञाटी प १७)।

उयचिय—परिकर्मित (ज्ञाटी प १७)।

उयट्टिणी—जंघा—'उयट्टिणीए णीणेऊण दरिसिओ'—जघाया निष्काश्य दर्शित:' (उशाटी प ११८)।

उयट्टी—१ कटी। २ जंघा—'जेण घेत्तु उयट्टीए छूढो—येन गृहीत्वा कट्या (जंघायां ?) क्षिप्त.' (उशाटी प ११८)।

उयणिसय—रहस्य-कला, जादू-टोना, मुगटनी कला (कु पृ २२)।

उयरिय—उतरकर—'मज्झे वा उयरिय पाणियं पियह' (ओटी पृ ३६२)।

उयरी—गर्भवती (कु पृ १६२)।

उयल्ल—मृत—जाहे अदिस्सो जाओ ताहे तहठिया चेव रागसंमोहियमणा उयल्ला' (आवहाटी १ पृ १८२)।

उयविय—जीत लेने पर—'उयविए प्रसाधिते अर्धभरते' (व्यभा ६ टी प ४५)।

उर—आरम्भ (दे १।८६)।

उरंउरेण—साक्षात्–'रहवलेण वा चाउरंगेण पि उरउरेणं गिण्हित्तए' (विपा १।३।५०)।

उरंमुह—औंधेमुंह–'परंमुहा पडंतु उरंमुहा पासेल्लिया (वा)' ? (आवहाटी १ पृ २८५)।

उरच्छक—मद्य का बड़ा पात्र (अंवि पृ २५९)।

उरणा—वेणी में गूथा जाने वाला ऊन का आभरण (अंवि पृ ६४)।

उरणि—जन्तु-विशेष (बृभा ५८८३)।

उरणी—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अवि पृ २३७)।

उरत्त—खण्डित, विदारित (दे १।९०)।

उरत्थय—कवच, वर्म (पा २७४)।

उररि—पशु, बकरा (दे १।८८)।

उरल—१ स्थूल, बड़ा। २ असघन, विरल–'उरलं ति विरलं न तु घनम्' (प्रज्ञाटी प २६९)।

उराल—१ सुन्दर–'अणुस्सुओ उरालेसु जयमाणो परिव्वए' (सू १।९।३०)। २ प्रधान (स्था १०।१०३)। ३ भीषण–'भीमा भय भेरवा उराला' (उ १५।१४)। ४ विशाल, विस्तृत–'भण्णट य तहोरालं वित्थरवंतवणस्सति पप्प। पयतीय णत्थि अण्णं एद्दहमेत्तं विसालंति ॥' (अनुद्वाहाटी पृ ८७)। ५ हरित वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।

उरालक—धान्य-विशेष (अंवि पृ ६६)।

उरालिय—औदारिक शरीर–'मंसट्ठिण्हारुबद्धं उरालियं समयपरिभासा' (अनुद्वाहाटी पृ ८७)।

उरिणण—कपास निकालना (ओटी पृ ३७३ पा)।

उरुणण—कपास निकालना (ओटी पृ ३७३)।

उरुणी—गृह-उपकरण (अवि पृ १४२)।

उरुपुल्ल—१ अपूप, पूआ। २ धान्यों के मिश्रण से बना खाद्य, खिचड़ी आदि (दे १।१३४)।

उरुमिल्ल—प्रेरित (दे १।१०८)।

उरुलुंचग—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उरुसोल्ल—प्रेरित (दे १।१०८)।

उलइय (ओलइय ?)—लटका दिया (व्यभा १० टी प ८०)।

उलग—हल चलाने वाला–'उलगादिमतओ भतीए घेप्पति' (दश्रुचू प ३८)।

उलणा—देवी-विशेष (अवि पृ २२३)।

उलवी—पानी को सुगधित करनेवाला एक प्रकार का घास (पा ६२८)।

उलाण—बाज पक्षी—'उलाणसिंगतससयाण जालच्छइयाए' (निचू २ पृ २८१)।

उलिअ—निकूणित आंख वाला, टेढी आख वाला (दे १।८८)।

उलित्त—ऊचा कुआ, ऊची भूमी पर स्थित कुआ (दे १।८९)।

उलुउंडिअ—१ प्रलुठित। २ विरेचित (दे १।११९)।

उलुकसिअ—पुलकित (दे १।११५)।

उलुखंड—उल्मुक, अलात (दे १।१०७)।

उलुफुंटिअ—१ विनिपातित। २ प्रशान्त (दे १।१३८)।

उलुहंत—काक, कौआ (दे १।१०९)।

उलुहलिअ—जो कभी तृप्त नही होता, अतृप्त (दे १।११७)।

उल्लअण—अर्पण (से ११।५१)।

उल्लंकय—काष्ठपात्र—'उल्लकओ कट्ठमओ पत्तो' (निभा ४११३)।

उल्लंचिय—खाली करना—'सो तस्स कए समुद्द उल्लंचिउमाढत्तो' (आवहाटी १ पृ २७६)।

उल्लंठ—उद्धत—'उल्लंठवयणा विग्घाणि करेति' (उसुटी प ६६)।

उल्लंडग—मिट्टी का गोला—'उल्लंडगा परिवज्झति मृद्गोलकमित्यर्थः' (निचू ३ पृ १६०)।

उल्लंडिअ—वाहर निकाला हुआ, रिक्त किया हुआ (पा ५९२)।

उल्लग—कृश, क्षीण—'सा उल्लगसरीरा जाया' (उशाटी प ३००)।

उल्लढ—शुष्क, सूखा (ओटी पृ ३५६ पा)।

उल्लण—छाछ से गीला किया हुआ ओदन, खाद्य-विशेष (पिनि ६२४)।

उल्लणिया—शरीर पोछने का वस्त्र, तोलिया (उपा १।२९)।

उल्लत्थपल्लत्थ—असमजस, उलट-पलट, अव्यवस्थित—'उल्लत्थपल्लत्था से आलावया दिज्जति' (आवहाटी २ पृ ९१)।

उल्लद—उतार कर—'तत्थ वइल्ले उल्लदेत्ता उवक्खडेति' (आवहाटी १ पृ १९४)।

उल्लरय—कौडिओ का आभूषण (दे १।११०)।

उल्ललिअ—शिथिल, ढीला (दे १।१०४)।

उल्लसिय—पुलकित (दे १।११५)।

उल्लाय—पाद-प्रहार (तंदु १६२)।

उल्लायक—कर्मजीवी (अंवि पृ ६०)।

उल्लिअ—१ खींचा हुआ, छीला हुआ—'उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ य अणतसो' (उ १६।६४)। २ उपागत (कु पृ १६१)।

उल्ली—काई, शैवाल—'पणओ उल्ली' (निचू २ पृ १६७)। २ दांत पर जमनेवाली पपडी—'उल्ली दंतेसु दुग्गंधा' (आवचू २ पृ ७२)। ३ चुल्हा, चुल्ली (दे १।८७)।

उल्लुंटिअ—चूर्णित, चूरा-चूरा किया हुआ (दे १।१०६)।

उल्लुक्क—त्रुटित, टूटा हुआ (दे १।९२)।

उल्लुग—विकृत, त्रुटित (प्रटी प २२)।

उल्लुट्ट—मिथ्या (दे १।८६)।

उल्लुरुह—छोटा शंख (दे १।१०५)।

उल्लूड—विध्वस (व्यभा ५ टी प ७)।

उल्लूडित—विध्वसित, नष्ट (व्यभा ५ टी प ७)।

उल्लूढ—१ आरूढ (दे १।१००)। २ अंकुरित (वृ)।

उल्लूरधूविता—खाद्य-पदार्थ-विशेष (अवि पृ ७१)।

उल्लूरिया—मिठाई (उसुटी प ८६)।

उल्लूह—शुष्क, सूखा—'उल्लूहं च नलवणं हरियं जाय' (ओटी प ३५६)।

उल्लेव—हास्य, हंसी (दे १।१०२)।

उल्लेवअ—हसी, हास्य (दे १।१०२ वृ)।

उल्लेहड—लम्पट, लुब्ध (दे १।१०४)।

उल्लोइय—खड़ी आदि से भीत को पोतना (जंबू १।३७)।

उल्लोग—थोडा, अल्प (वृभा १६०५)।

उल्लोच—वितान, चदोवा (दे १।९८)।

उल्लोट्ट—अपवर्तन, मुडना (प्रटी प ८६)।

उल्लोपिक—भोज्य-पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

उल्लोय—चदोवा, वितान (वृभा ५६८१)।

उल्लोल—१ शत्रु (ति ८८५; दे १।९९)। २ जलतरंग (पा ५६)। ३ कोलाहल।

उल्लोहित—पुता हुआ—'उल्लोहितं उव्वलित तधा उच्छाडितं ति वा' (अवि पृ १०६)।

उल्हक—छोटा चूल्हा (पिनि ५४)।

उल्हसिअ—उद्भट, तीव्र (दे १।११६)।

उव—पक्षी-विशेष (अवि पृ ६२)।

उवअ—हाथी को पकडने के लिए बनाया गया गढा (पा ६००)।

उवइक—दीमक (बृटी पृ १६६६)।

उवइग—दीमक (निचू १ पृ ६६)।

उवइय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव १।८८)।

उवउज्ज—उपकार (दे १।१०८)।

उवएइआ—मद्य परोसने का पात्र (दे १।११८)।

उवक—गढा, खातिका (बृटी पृ २२२)।

उवकय—सज्जित (दे १।११६)।

उवकयय—सज्जित (दे १।११६ वृ)।

उवकसिअ—१ सन्निहित, पास मे पडा हुआ। २ परिसेवित। ३ सर्जित, सृष्ट (दे १।१३८)।

उवक्खडाम—कोरडू, जो धान्य-कण पकाने पर भी नही पकता—'उवक्खडामं णाम जहा चणयादीण उक्खडियाण जे ण सिज्झंति ते ककडुया, तं उवक्खडामं भण्णति' देखे—'ककडुय' (निचू ३ पृ ४८४)।

उवग—१ योग्य—'उवगा नाम योग्याः' (सूचू १ पृ ४५)। २ गढा (निचू ४ पृ ४८)।

उवचिक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अवि पृ २६७)।

उवचुल्ल—छोटा चूल्हा (निचू १ पृ ८२)।

उवचुल्लग—छोटा चूल्हा (निचू १ पृ ८२)।

उवजंगल—दीर्घ (दे १।११६)।

उवट्टिअ—अनाथ, अशरण—'उवट्टितो अणाहो असरणेत्यर्थः' (निचू १ पृ १२२)।

उवतिग—दीमक—'संचारोवतिगादी, संजमे आयाऽहि विच्चुगादीया' (बृभा ६३२२)।

उवत्थवण—अस्तमन (वेला) (निचू १ पृ ८७)।

उवदीव—द्वीपान्तर, अन्यद्वीप (दे १।१०६)।

उवयिय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीवटी प ३२)।

उवर—कक्ष, कोठरी, तलघर (निभा १७३)।

उवरिग—माल का निरीक्षण करने वाला अधिकारी—'सामि ! पेनेह उवरिगो जो भंड निरवेइ' (उसुटी प ६५)।

उवरिल्ल—ऊपर (पंक १४१)।

उवरिल्लअ—मजबूत वस्त्र, मोटा कपड़ा—'विरइओ उवरिल्लएण पासो, णिवद्धो य कीलए' (कु पृ ५३)।

उवरेग—व्यापाररहित—'तत्थ वरिसगेत्तं उवरेगं गओ' (उसुटी प ७६)।

उवलभत्ता—कगन (दे १।१२०)।

उवलयभग्गा—कंगन (दे १।१२०)।

उवललय—मैथुन (दे १।११७)।

उवलुअ—लज्जायुक्त, लज्जालु (दे १।१०७)।

उवलेद्द—सन्तुष्ट—'तीसे महिलाए कप्पासगोल्लं दिन्न, सा य उवलेद्दा' (उशाटी प १६२)।

उवसग्ग—मंद (दे १।११३)।

उवसेर—रति-योग्य (दे १।१०४)।

उवहत्थिय—समारचित, सज्जित (दे १।११६ वृ)।

उवहा—मच्छ (निभा ४२२३ पा)।

उवहावण—परिभव (ओटी प १३१)।

उवाई—'पोताकी' विद्या की प्रतिपक्षी विद्या (उसुटी प ७३)।

उवातिय—खाद्य-विशेष (निचू ३ पृ ५२१)।

उवारस—एक प्रकार का प्रावरण—'उवारसा कंबला खरडगपारिगादि पावारगा' (निचू २ पृ ४००)।

उवासणा—क्षौरकर्म, हजामत (वृभा २०६७)।

उविअ—१ सस्कारित, परिकर्मित (ज्ञा १।१।२४)। २ शीघ्र (दे १।८६)।

उव्वक्क—धौत, दूध मे भिगोकर निकाला हुआ—'जह पुण ते चेव तिला उसिणोदगधोयखीरउव्वक्का' (व्यभा ३ टी प ११०)।

उव्वट्ट—१ नीराग, रागरहित। २ गलित (दे १।१२६ वृ)।

उव्वट्टी—नीवी, स्त्री के कटिवस्त्र की नाडी (दे १।१५१ पा)।

उव्वण्ण—उत्कण्ठित (व्यभा ७ टी प ६)।

उव्वत्त—१ रागरहित। गलित (दे १।१२६)।

उव्वर—१ कक्ष, तलघर—'पुव्वखओ जो भूघरोव्वरो' (निचू १ पृ ६७)। २ धान्य रखने का कोठा (वृभा ३२६६)। ३ घाम, ऊष्मा (दे १।८७)।

उव्वरअ—कोष्ठागार–'उव्वरओ त्ति वा कोट्ठगो त्ति वा एगट्ठं' विशेषचूर्णी (बृटी पृ ९२६)।

उव्वरग—कोठरी–'सव्वोवगरण उव्वरगे छुभंति, अह णत्थि उव्वरगो तो सव्वोवकरण एगकोणे करेति' (निचू २ पृ १७८)।

उव्वरिअ—१ अधिक। २ अनीप्सित। ३ निश्चित। ४ ताप। ५ अगणित (दे १।१३२)। ६ अतिक्रान्त, उल्लंघित।

उव्वविय—तीन इन्द्रिय वाला जन्तु-विशेष (जीव १।८८)।

उव्वहण—महान् आवेश (दे १।११०)।

उव्वा—घर्म, ताप (दे १।८७)।

उव्वाअ—खिन्न (दे १।१०२)।

उव्वाउल—१ गीत। २ उपवन (दे १।१३४)।

उव्वाडुअ—१ विपरीत मैथुन। २ मर्यादा-शून्य मैथुन (दे १।१३३)।

उव्वाढ—१ विस्तीर्ण, विशाल। २ दुःखमुक्त (दे १।१२९)।

उव्वात—श्रान्त, थका हुआ (निचू ४ पृ २८७)।

उव्वाय—परिश्रान्त, थका हुआ–'धावतो उव्वाओ, मग्गन्नू किं न गच्छइ कमेणं' (बृभा ३२०)।

उव्वाह—घर्म, ताप (दे १।८७)।

उव्वाहिअ—उत्क्षिप्त, ऊपर उछाला हुआ (दे १।१०६)।

उव्वाहुल—१ कामासक्ति से उत्पन्न उत्सुकता। २ द्वेष्य, द्वेष-पात्र (दे १।१३६)।

उव्विडिम—१ अधिक प्रमाणवाला। २ मर्यादारहित, स्वच्छंद (दे १।१३४)।

उव्विवार—भूकंप–'उव्विवारा जलोहंता तेतणीए मतोद्दितं' (इ ४५।१४)।

उव्विव्व—१ उद्भट वेषयुक्त (पा ५६७)। २ क्रुद्ध।

उव्वीढ—उत्खात, खोदा हुआ (दे १।१००)।

उव्वुण्ण—१ उद्विग्न। २ उत्सिक्त। ३ उद्भट, तीव्र। ४ शून्य (दे १।१२३)।

उव्वेत्ताल—निरन्तर रुदन (दे १।१०१)।

उव्वेल्लय—त्वरा–'एसो सो चेय मओ चल-चल्लुव्वेल्लयं करेऊण' (कु पृ १८६)।

उव्वेल्लिर—१ उत्फुल्ल, चंचल (कु पृ ७८)। २ शीघ्रगामी (कु पृ २०१)।

उव्वेहलिया—वनस्पति-विशेष (भ २३।४)।

उव्वेहासित—ऊंचा किया हुआ (अंवि पृ १४८)।

उसणसेण—बलभद्र (दे १।११८)।

उसणी—एक प्रकार का धान्य जिसमे से तेल निकलता है (अंवि पृ २३२)।

उसद्ध—उत्कृष्ट–'उसद्धं–उत्कृष्टं' (आचू पृ ३६२)।

उसध—पुष्प-विशेष (अंवि पृ २३२)।

उसीर—पद्मनाल, कमलनाल (दे १।९४)।

उसु—बालक का इपु के आकार का एक आभरण (पिनि ४२४)।
२ तिलक–'उसू तिलगा' (निचू ३ पृ ४०७)।

उसुअ—दूषण, भूल (दे १।८६)।

उसुक—तिलक, आभरण-विशेष (निचू ३ पृ ४०७)।

उसुकाल—उदूखल (निचू ३ पृ ३७८)।

उसुयाल—ऊखल, उदूखल (आचूला ५।३६)।

उस्स—ओस (स्था ४।६४०)।

उस्सण्ण—१ प्राय (बृभा २०४)। २ प्रभूत (व्यभा २ टी प ९२)।

उस्सन्न—प्राय. (भ १५।१८६ वृ)।

उस्सयण—अभिमान–'पलिउंचणं च भयणं च थंडिल्लुस्सयणाणि च।
(सू १।९।११)।

उस्सरण—वपन, बुआई–'निच्चुदग नदी कुडंगमुस्सरणं' (बृभा ४०३५)।

उस्सा—गाय (दे १।८६ वृ)।

उस्सिघण—मर्दन–'उस्सिघण-मक्खणऽब्भंगण उच्छंदण उव्वट्टण'
(अंवि पृ १९३)।

उस्सुग—मध्य-भाग (आचूला १।११६ पा)।

उस्सूलग—परिखा, खाई (उ ९।१८)। देखे–'उच्छूलग'।

उस्सूलय— १ परिखा। २ शत्रु सेना का नाश करने के लिए ऊपर से
आच्छादित गर्त्त-विशेष (उशाटी प ३१०)।

उस्सेल्लय—सर्पपनाल से निष्पन्न शाक–'एगेण साहुणा सासवणालुस्सेल्लयं
सुसंभृतं लद्धं' (निचू ३ पृ २६४)।

उहर—१ छोटा घर, उपगृह (प्र १।१२)–'उहर त्ति उपगृहाणि आश्रय-
विशेषाः' (टी प ११)। २ छोटा–'उहरग्गाममयंमी'
(व्यभा ७ टी प ५६)।

उहरक—छोटा गाव (व्यभा ७ टी प ५६)।

उहावणा—अपमान (व्यभा ६ टी प ५)।

ऊ

ऊ—१ गर्हा, निन्दा सूचक अव्यय—'ऊति णाम मरहट्टादिसु णादिदुगुच्छिज्जति' (आचू पृ २३३)। २ प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटना। ३ विस्मय। ४ सूचना।

ऊआ—यूका, जू (दे१।१३९)।

ऊढिअय—१ प्रावृत, आच्छादित। २ आच्छादन, प्रावरण (पा ९३७)।

ऊणंदिअ—आनन्दित (दे १।१४१)।

ऊणिमा—पूर्णिमा—'तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भडस्स पत्थिओ' (उसुटी प ६४)।

ऊणिस—तकिया 'सामायति मुहाइं ऊणिसगहियाण व थणाण' (कु पृ १७)।

ऊमुत्तिअ—दोनों पार्श्वों मे आघात करना (दे १।१४२)।

ऊयरिणिया—जंतु-विशेष—'पत्तगबंधे ऊयरिणिया लग्गा' (निचू १ पृ ९८)।

ऊर—१ ग्राम। २ संघ (दे १।१४३)।

ऊरणिया—जन्तु-विशेष (निभा २८१)।

ऊरणी—मेष, भेड (दे १।१४०)।

ऊरणीया—जंतु-विशेष। (निचू १ पृ ९८)

ऊल—गतिभंग, उतावल (दे १।१३९)।

ऊसढ—श्रेष्ठ, वर्ण आदि गुणों से युक्त, ताजा—'ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा' (आचूला १।५७)।

ऊसण—कामासक्ति से उत्पन्न उत्सुकता (दे १।१३९)।

ऊसत्थ—१ जम्भाई। २ आकुल (दे१।१४३)।

ऊसय—उपधान, तकिया (दे१।१४०)।

ऊसल—पीन, पुष्ट (दे १।१४०)।

ऊसलिअ—१ रोमाचित, पुलकित (दे १।१४१)। २ उल्लसित (वृ)।

ऊसविअ—१ उद्भ्रात। २ ऊंचा किया हुआ (दे १।१४३)।

ऊसाइअ—१ विक्षिप्त (दे १।१४१)। २ उत्क्षिप्त—'ऊसाइअ उत्क्षिप्तमिति धनपालः' (वृ)।

ऊसायंत—खेद होने पर शिथिल (दे १।१४१)।

ऊसार—विशेष प्रकार का गढा (दे १।१४०)।

ऊसिक्किअ—प्रदीप्त (पा १६)।

ऊसिग—मध्यभाग (आचूला १।११६ पा)।

ऊसुंभिअ—१ अवरुद्ध गले से रोना, धीरे रोना (दे १।१४२)। २ उल्लसित (वृ)।

ऊसुक्किअ—विमुक्त (दे १।१४२)।

ऊसुय—मध्य-भाग (आचूला १।११६)।

ऊसुर—ताम्बूल, पान (प्रा २।१७४)।

ऊसुरुसुंभिअ—अवरुद्ध गले से रोना, धीरे रोना (दे १।१४२)।

ऊहट्ठ—उपहसित (दे १।१४०)।

ए

एआवंती—इतने—'एआवन्ती सव्वावन्ती ति एतौ द्वौ शब्दौ मगधदेशी-भाषाप्रसिद्धया एतावन्तः सर्वेऽपीत्येतत्पर्यायौ' (आटी प २६)।

एकल्ल—अकेला (ज्ञा १।१।१५७)।

एकहेला—एक साथ (प्रटी प ४६)।

एकाणंसा—देवी-विशेष (अवि पृ २२३)।

एकुडिया—तीतर आदि का मांस पकाने की प्रक्रिया—'आतंकाभिभूता रसगादिहेउं वगतित्तिरादीहि य एकुडियाओ पकरेंति' (आचू पृ १६)।

एक्क—स्नेहिल (दे १।१४४)।

एक्कंग—चन्दन (दे १।१४४)।

एक्कक्कम—परस्पर (से ५।५६)।

एक्कघरिल्ल—देवर, पति का छोटा भाई (दे १।१४६)।

एक्कणड—कथिक, कथा कहने वाला (दे १।१४५)।

एक्कमुह—१ धर्म रहित। २ दरिद्र। ३ प्रिय, इष्ट (दे १।१४८)।

एक्कमेक्क—परस्पर (प्र ४।६) ।

एक्कयाण—अकेला—'किमगराय तुम हरिणजातीण एक्कयाण परिनिव्विट्ठो', (व्यभा ४।३ टी प ८) ।

एक्कल्लग—एकाकी (अनुद्वाहाटी पृ ३५) ।

एक्कल्लपुडिंग—अल्प बिन्दु वाली वृष्टि (दे १।१४७) ।

एक्कल्लय—अकेला (उसुटी प ८६) ।

एक्कल्लु—अकेला (उसुटी प ८०) ।

एक्कवई—रथ्या (दे १।१४५ वृ) ।

एक्कसरय—एक बार (व्यभा ६ टी प २) ।

एक्कसराए—१ एक साथ। २ एक बार (बृटी पृ ४६६) ।

एक्कसरिअं—१ शीघ्र (आवचू १ पृ २४६) । २ संप्रति, आजकल (प्रा २।२१३) ।

एक्कसाहिल्ल—एक स्थान मे रहने वाला, स्थिरवासी (दे १।१४६) ।

एक्कसि—एक बार (व्यभा १० टी प ६०) ।

एक्कसिंबली—शाल्मली पुष्पों के साथ नूतन फली (दे १।१४६) ।

एक्कसिय—एक बार (बृचू प २०८) ।

एक्कार—लोहकार (दे १।१४४ वृ) ।

एक्कावण्ण—इक्यावन (निचू ४ पृ ११३) ।

एक्केक्कम—अन्योन्य, परस्पर (दे १।१४५) ।

एगओवत्त—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४६) ।

एगट्ठिया—नौका—'एगट्ठियाए मग्गण-गवेसणं करेति' (ज्ञा १।१६।२८२) ।

एगल्ल—एकाकी (जीभा २१५) ।

एगसरग—एक बार—'एगसरगं ति एक्कं वारं दिज्जति' (निचू ४ पृ ३४६) ।

एगायत—अकेला—'एगायताऽणुक्कमण करेति' (सू १।५।४८) ।

एगाहच्च—एक ही प्रहार से मारना—'तं पुरिसं एगाहच्च कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ' (भ ७।२०२) ।

एगुणि—उन्नीस (उशाटी प ६) ।

एडण—उत्सर्जन—'तए णं सा नागसिरी.......तित्तालाउयस्स वहुसंभार-सभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्ठयाए' (ज्ञा १।१६।१४) ।

एडावण—उत्सर्जन—'अंवकूणग-एडावणट्ठयाए एगतमते संगार कुव्वति' (भ १५।१३४) ।

एडिज्जमाण—उत्सृज्यमान, उत्सर्जन करता हुआ (ज्ञा १।१६।७५)।

एडेत्ता—उत्सृज्य, उत्सर्जन करके (ज्ञा १।१६।७३)।

एणुवासिअ—मेंढक (दे १।१४७)।

एत्ताहे—अत्र (दे १।१४४ वृ)।

एत्तोप्पं—यहां से लेकर, यहां से (दे १।१४४)।

एद्दह—इतना (दे १।१४४ वृ)।

एमाण—प्रवेश करता हुआ (दे १।१४४)।

एमिणिआ—वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से नाप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है (दे १।१४५)।

एयावंति—इतना (आ १।७)।

एरंडइल—पागल—'एरंडइए साणे त्ति हडक्कायितः श्वा' (वृटी पृ ८२६)।

एरंडइत—पागल (दश्रुचू प ५१)।

एरग—नागरमोथा (वृभा १२२३)।

एराणी—१ इन्द्राणी। २ इंद्राणीव्रत का पालन करने वाली स्त्री (दे १।१४७)।

एरावण—गुच्छ-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४)।

एल—कुशल (दे १।१४४)।

एलवालुंकी—एक प्रकार की ककड़ी की बेल (प्रज्ञा १।४०।१)।

एलविल—१ धनाढ्य। २ वृषभ, बैल (दे १।१४८)।

एलालुय—आलू की एक जाति, कंद-विशेष (अनु ३।५१)।

एलालुग—ककड़ी—'एलालुग मातुलिंग फलमादी' (वृभा २४४२)।

एलावालुंकी—वनस्पति-विशेष (भ २२।६)।

एवड्डु—इतना—'एवड्डुं आलावगं सक्केहिति गेण्हिउं' (आवहाटी १ पृ ६९)।

एवण्हं—वाक्यालंकार—'एवण्हमिति वाक्यालङ्कारे (वृटी पृ १४९१)।

एव्वेल—अधुना, अभी—'एव्वेलं पहामोत्ति नमोक्कारं घोसंतस्सेव' (आवहाटी १ पृ ३०३)।

ओ

ओअ—वार्त्ता, कहानी (दे १।१४६)।

ओअंक—गर्जारव, गर्जित (दे १।१५४)।

ओअग्गिअ—१ अभिभूत। २ केश आदि को एकत्रित करना (दे १।१७२)।

ओअग्घिअ—घ्रात, सूघा हुआ (दे १।१६२)।

ओअल्ल—१ पर्यस्त, प्रक्षिप्त। २ प्रकप, थरथराहट। ३ गौओ का वाडा। ४ लटकता हुआ (दे १।१६५)। ५ खराव आचरण। ६ जिसकी आखे निमीलित होती हों वह (से १३।४३)।

ओआअ—१ गाव का स्वामी। २ अपहृत जिसका अपहरण कर लिया गया हो वह। ३ आज्ञा। ४ हाथी आदि को बाधने के लिए बनाया हुआ गर्त्त (दे १।१६६)।

ओआअव—अस्त-समय, अस्तमन-वेला (दे १।१६२)।

ओआल—छोटा प्रवाह (दे १।१५१)।

ओआलित—द्रवित किया, पिघाला—'रण्णो चित्त ओआलितं' (आवहाटी १ पृ २३४)।

ओआली—१ खड्ग का एक दोष। २ पक्ति (दे १।१६४)।

ओआवल—बाल-आतप, सुवह का सूर्य-ताप (दे १।१६१)।

ओइत्त—परिधान, वस्त्र (दे १।१५५)।

ओइत्तण—परिधान, वस्त्र (दे १।१५५)।

ओइल्ल—आरूढ (दे १।१५८)।

ओउंबालग—कोट्टपालक, आरक्षक (आवचू १ पृ २८६)।

ओएल्ल—कुण्ठित—'तत्थ वि य से धारा ओएल्ला' (ज्ञा १।१४।७७)।

ओंडल—केश-रचना, धम्मिल्ल (दे १।१५०)।

ओंडि—मुट्ठी (आवचू २ पृ १०१)।

ओकड्ढक—१ घर से धन आदि ले जाने वाले चोर। २ जो चोरो को बुला-कर चोरी कराते है। ३ चोरों के पृष्ठवाहक—सहायक (प्र ३।३)।

ओकासक—कर्ण का आभूपण जो नीचे लटकता रहता है (अंवि पृ १६२)।

ओक्कणी—यूका, जू (दे १।१५९)।

ओक्कतल्लिय—चवाकर निकाला हुआ, वमन किया हुआ—'अवकोइलियाओ कुक्कुडएहि ओवकतल्लियाओ हरिएसेहि णिज्जाइयातो' (दअचू पृ २३)। ओक्करिसु (कन्नड)।

ओक्किअ—१ निवास, अवस्थान (दे १।१५१)। २ वमन (वृ)।

ओक्कुट्ठ—सचित्त वनस्पति का चूर्ण—'सचित्तवणस्सती चुण्णो ओक्कुट्ठो भण्णति' (निचू २ पृ २६०)।

ओक्खंडिअ—आक्रान्त (दे १।११२)।

ओक्खंद—शत्रु-सेना द्वारा नगर का घेराव—'कोसलेण रण्णा ओक्खंद दाऊण भेल्लियं त संणिवेसं' (कु पृ ६६)।

ओक्खिण्ण—१ अवकीर्ण। २ आच्छादित। ३ जिसके दोनों पार्श्व अत्यंत शिथिल हो, वह (दे १।१३० वृ)।

ओखंद—१ सेना का पडाव या सेना का घेराव (निभा २४०१)। २ डाका, धाटी (वृभा ४८३८)।

ओगुंठी—घूंघट, मस्तक पर डाला हुआ वस्त्र—'कंवलरयणोगुंठि काउं रण्णो ठिओ पुरतो' (ति ७६१)।

ओग्गाल—जल का लघु प्रवाह (दे १।१५१)।

ओग्गिअ—अभिभूत, पराजित (दे १।१५८)।

ओग्गीअ—हिम, वर्फ (दे १।१४६)।

ओघसर—१ अनर्थ। २ घर से निकलने वाला जलप्रवाह (दे १।१७०)।

ओचार—धान्य रखने का कोठा या पात्र-विशेष—'अपचारि—दीर्घतरधान्य-कोष्ठाकारविशेषः' (अनुद्वामटी प १४०)।

ओच्चिय—आरोपित (जीवटी प १६६)।

ओचुल्ल—चुल्ली का एक भाग (दे १।१५३)।

ओचूलयालग—नीचा सिर और ऊपर पांव कर पानी में डुवोना (विपाटी प ७२)।

ओच्चेल्लर—१ खिल भूमि, ऊपर भूमि, हल आदि से विना जोती हुई भूमि। २ सायल के रोम (दे १।१३६)।

ओच्छग—वस्त्र (आवहाटी २ पृ १२८)।

ओच्छट्ट—चोर (दे १।१०१ वृ)।

ओच्छत्त—दतौन, दतवन (दे १।१५२)।

ओच्छविय—आच्छादित (ज्ञाटी प ३१)।

ओच्छाइय—आच्छादित (प्रटी प १३४)।

ओच्छिअ—केशों को संवारना (दे १।१५०)।

ओच्छुपीय—बीज, धान्य–'एगत्थ ओच्छुपीया णीणिज्जंति' (आवचू १ पृ १११)।

ओछाडित—आच्छादित (अंवि पृ २४४)।

ओज्जल्ल—बलवान्, प्रबल (दे १।१५४)।

ओज्जाय—गर्जित (दे १।१५४)।

ओज्झ—मैला, अस्वच्छ (दे १।१४८)।

ओज्झमण—पलायन (दे १।१०३ वृ)।

ओज्झर—निर्झर (से १।५६)।

ओज्झरिय—१ टेढी नजर से देखा हुआ, कानी आख से देखा हुआ। २ विक्षिप्त, पागल। ३ क्षिप्त, फेका हुआ। ४ त्यक्त (दे १।१३३ वृ)।

ओज्झरी—ओझ, आत का आवरण (दे १।१५७)।

ओज्झाय—दूसरे को धक्का देकर छीन लेना (दे १।१५९)।

ओट्टिय (दोट्टिय, दोद्धिय ?) तुबा (आवहाटी १ पृ २८३)।

ओड—१ भूमि खोदने वाला (स्थाटी प १९६)। २ कूप (आवटि प २४)।

ओडड्ड—अनुरक्त, रागी (दे १।१५६)।

ओडिका—अंश, खड (आवटि प ९७)।

ओड्डु—वस्त्र-शिल्पी (अवि पृ १६१)।

ओड्डुय—छिपाव, गुप्त–'तेसिं च पोत्ताणि हीरंति, ओड्डुएण अच्छति' (आवचू १ पृ १११)।

ओड्ढण—ओढन, उत्तरीय वस्त्र (दे १।१५५)।

ओड्ढिय—ओढा हुआ, धारण किया हुआ–'परिहिअमोड्ढणमोड्ढिअमोड्त्त' (दे १।१५५ वृ)।

ओणिव्व—वल्मीक, कृमि-पर्वत, चीटियों द्वारा खोदी गई मिट्टी का ढेर (दे १।१५१)।

ओणीवी—नीव्र, छत का प्रान्त भाग (दे १।१५०)।

ओणुणअ—अभिभूत, पराभूत (दे १।१५८)।

ओणेज्ज—साचे मे मोम आदि की विभिन्न आकृतियों की रचना–'ओणेज्ज मदणविच्छित्ति-विसेसा' (दअचू पृ ३९)।

ओत्तलहअ—वृक्ष (दे १।११९ वृ)।

ओत्थइअ—व्याप्त (से ११।५९)।

ओत्थय—१ पिहित, ढका हुआ–'अत्थरयमिउमसूरगोत्थयं' (दश्रु ८।४२)। २ अवसन्न, खिन्न (दे १।१५१)।

ओत्थर—उत्साह (दे १।१५०)।

ओत्थरिअ—१ आक्रांत, जिस पर आक्रमण किया हो वह। २ आक्रमण करता हुआ (दे १।१६६)।

ओत्थल्लपत्थल्ला—उथल-पुथल, दोनों पार्श्वों से परिवर्तन (दे १।१२२ वृ)।

ओथुक्कित—अत्यंत जुगुप्सित–'धिद्धि त्ति ओथुक्कित-तालियस्स' (बृभा ४११५)।

ओद्दंपिअ—१ आक्रांत। २ नष्ट (दे १।१७१)।

ओपल्ल—कुण्ठित, अपदीर्ण (ज्ञाटी प १६६)।

ओपविका—क्षुद्र जंतु (अंवि पृ २२६)।

ओपित—संस्कारित, परिकर्मित (प्रटी प ७६)।

ओपुप्फ—निष्फल, व्यर्थ–'जुण्ण ओपुप्फनिप्फलं' (अंवि पृ ८१)।

ओपेसेज्जिक—धान्य पीस कर आजीविका चलाने वाला (अंवि पृ १६०)।

ओप्प—चमक–'तूवरिया सुवण्णस्स ओप्पकरणमट्टिया' (दअचू पृ ११०)।

ओप्पा—शाण आदि पर मणि आदि रत्नों का घर्षण करना (दे १।१४८)।

ओप्पिअ—शाण पर घिसा हुआ (दे १।१४८ वृ)।

ओप्पील—समूह (पा १८)।

ओप्फिट्ट—अलग होना, पृथक् होना–'ताहे सो (गोसालो) सामिस्स मूलओ ओप्फिट्टो' (आवचू १ पृ २६६)।

ओब्भालण—१ सूर्प आदि से धान्य को साफ करना। २ अपूर्व (दे १।१०३ वृ)।

ओभंजलिया—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

ओभट्ठ—प्रार्थित, वांछित (ओनि १४७)।

ओमंथ—नत, अधोमुख (बृभा ६६५)।

ओमंथिय—नमाया हुआ, अधोमुख किया हुआ–'ओमंथियवयणनयणकमला' (ज्ञा १।१।३४)।

ओमच्छग—अधोमुख (निचू २ पृ १२७)।

ओमत्थ—अधोमुख (अनुद्वाचू पृ ५०)।

ओमत्थग—अन्तिम–'चरिमस्स आदिसमयातो आरब्भ ओमत्थगं' (नंदीचू पृ २५)।

ओमत्थिय—नत, अधोमुख किया हुआ (ओनि ३८६)।

ओमालय—शोभित (कु पृ २२८)।

ओमालिय—पूजित (कु पृ २५)।

ओमोदरिता—दुर्भिक्ष–'ओमोदरिता दुब्भिक्ख' (निभा ३४२)।

ओयड्ढिया—चादर, दुपट्टा (उसुटी प ४५)।

ओयड्ढी—दुपट्टा, चादर–'घेत्तु ओयड्ढीए छूढो' (उसुटी प ४५)।

ओयम—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

ओयल्ल—मृत (आवटि प ३८)।

ओयविय—१ परिकर्मित, सस्कारित–'ओयविय-खोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छन्ने' (दश्रु ८।२०)। २ खेदज्ञ–'ओयविय खेदज्ञ' (ओटी प ५१)।

ओयाण—अनुस्रोत मे चलने वाली नौका (निभा १८३)।

ओयिघण—उपबृहण, वृद्धि (सूचू १ पृ ११५)।

ओर—१ चारु, सुदर (दे १।१४६)। २ समीप।

ओरंपिअ—१ आक्रान्त। २ नष्ट (दे १।१७१)। ३ छिला हुआ (पा ५८१)।

ओरत्त—१ विदारित। २ अभिमानी। ३ कुसुभ रंग से रंगा हुआ (दे १।१६५)।

ओरल्ली—दीर्घ और मधुर ध्वनि (दे १।१५४)।

ओराणि—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

ओराल—१ उदार, प्रधान (स्था ४।४५१)। २ भयंकर–'ओराले त्ति भीमो भयानक' (ज्ञाटी प ८)। ३ विस्तृत, विशाल–'ओराल नाम वित्थराल विसाल ति भणिय होई'। ४ मास आदि से युक्त शरीर –'समयपरिभाषया....' (प्रज्ञाटी प २६६)।

ओरालिय—१ व्याप्त। २ उपलिप्त–'दिट्ठो रुहिरोरालियसिरो' (उसुटी प ५)। ३ पोछा हुआ। ४ फैलाया हुआ।

ओरिल्ल—अचिरकाल का, थोडे समय का, नया (दे १।१५५)।

ओरुंज—वह क्रीडा जिसमे बार-बार 'नही-नही' कहा जाता है (दे १।१५६)।

ओलअ—१ बाज पक्षी (दे १।१६०)। २ अपलाप (वृ)।

ओलअणी—नववधू, नवोढा (दे १।१६०)।

ओलइणी—प्रिया, प्रिय पत्नी (दे १।१६०)।

ओलइय—१ सलग्न, लगा हुआ, चिपका हुआ (जीभा ५३८)। २ छिपाया हुआ–'आउहाणि ओलइयाणि' (उशाटी प ११६)। ३ शरीर से

सटा हुआ, पहना हुआ—'अगपिणद्धम्मि ओलइअ' (दे १।१६२)।

ओलंडण—अवलंघन (ज्ञा १।१।१८६)।

ओलंडिय—अवलंघित—'तुम मेहा ! राओ समणेहिं····अप्पेगइएहिं ओलंडिए अप्पेगइएहिं पोलंडिए' (ज्ञा १।१।१५५)।

ओलंभ—उपालम्भ—'भगवया महावीरेणं····अप्पोलंभनिमित्त पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते' (ज्ञा १।१।२१३)।
(राज० ओलंभ।)

ओलगय—सेवक (दजिचू पृ २९६)।

ओलग्गअ—सेवक—'कुमारोलग्गएहिं सद्धिं····पव्वतितो' (उशाटी प ११५)।

ओलग्गग—ग्रामवासी (दश्रुचू प ६५)।

ओलवणी—छत—'कडणं उडगोवरि ओलवणी' (पंवटी प ११२)।

ओलायग—बाज पक्षी—'वीरल्लो ओलायगो' (निचू २ पृ १३७)।

ओलावय—बाज पक्षी (दे १।१६०)।

ओलावी—मादा बाजपक्षी (आवचू १ पृ ४२५)।

ओलिप—खोलना—'ओलिपमाणे वि तहा तहेव काया कवाडंमि विभासियव्वा' (पिनि ३५४)।

ओलिभा—दीमक (दे १।१५३)।

ओलित्ती—खड्ग आदि का एक दोष (दे १।१५६)।

ओलिप्प—हास, हंसी-मजाक (दे १।१५३)।

ओलिप्पंती—खड्ग आदि का एक दोष (दे १।१५६)।

ओलिया—कुलपरिपाटी—'अह ओलिया कहिज्जामि' (सूचू २ पृ ४१४)।

ओली—१ फली—'ओली सिंगा' (आचू पृ ३४१)। २ कुलपरिपाटी, कुल का आचार (दे १।१४८)। ३ पंक्ति (वृ)।

ओलुंकी—१ बालकों की क्रीडा-विशेष, लुकाछिपी का खेल (दे १।१५३)। २ आखमिचौनी—'ओलुकी छन्नरमणम्। नष्ट्वा यत्र शिशव. क्रीडन्ति। चक्षु.स्थगनक्रीडेति केचित्' (वृ)।

ओलुंपअ—तापिका-हस्त, तवे का हाथा (दे १।१६३)।

ओलुग्ग—१ जीर्ण, रुग्ण (ज्ञा १।१।३४)। २ कृश, निर्बल (विपा १।२।२४)। ३ सेवक। ४ निस्तेज (दे १।१६४)।

ओलुट्ट—१ अघटमान, अनुचित। २ मिथ्या, असत्य (दे १।१६४)।

ओलेहड—१ दूसरे मे आसक्त। २ तृष्णापर। ३ प्रवृद्ध, बूढा (दे १।१७२)।

ओल्ल—१ ओला, हिमपात (जीचू पृ ६)। २ पति। ३ राजपुरुष-विशेष।

ओल्लणी—इलायची, दालचीनी आदि मसालों से संस्कारित दही, श्रीखंड (दे १।१५४)।

ओल्लरण—सोना, शयन (दे १।१६३ वृ)।

ओल्लरिअ—सुप्त (दे १।१६३)।

ओव—हाथी आदि को बांधने के लिए किया गया गर्त्त (दे १।१४६)।

ओवइय—तीन इन्द्रियवाला क्षुद्र जन्तु-विशेष (जीव १।८८)।

ओवग—गढा—'ओवग कूडे मगरा, जइ घुटे तसे य दुहतो वि' (बृभा २३६०)

ओवग्गिअ—आक्रांत, अभिभूत (पा ५८५)।

ओवट्टिअ—खुशामद, चाटुकारिता (दे १।१६२)।

ओवट्टी—नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाडी (दे १।१५१ पा)।

ओवट्ठ—१ मेघ के पानी का सिंचन, छिडकाव (दे १।१५२)। २ वृष्टि, वारिश (से ६।२५)।

ओवड—गढा, गर्त्त—'ओवड त्ति खड्डातीते पडेज्ज' (निचू ४ पृ ४८)।

ओवड्ढी—पहनने के वस्त्र का एक भाग (दे १।१५१)।

ओवयण—प्रोह्णणक (ज्ञा १।१।६०)।

ओवर—निकर, समूह (दे १।१५७)।

ओवरअ—समूह (दे १।१५७ वृ)।

ओवसेर—१ चन्दन। २ मैथुन-योग्य (दे १।१७३)।

ओवात—आचार्य-निर्देश'—'ओवातो णाम आचार्यनिर्देश' (सूचू १ पृ२२१)।

ओवातिका—जलचर प्राणी-विशेष (अवि पृ ६६)।

ओवारि—१ धान्य भरने का कोठा। २ भीतरी कमरा (अवि पृ १६५)। ओरी (राजस्थानी)।

ओवारिया—१ भीतरी अपवरक। २ धान्य भरने का कोठा (व्यभा ७ टी प १०)।

ओवास—कान का आभूषण-विशेष—'वतसक ओवास कण्णपीलक कण्णपूरक' (अवि पृ १८३)।

ओवासण—नापित-कर्म, हजामत (आवचू १ पृ१५६)।

ओविय—१ परिकर्मित (ज्ञा १।१।२४)। २ सुन्दर (ज्ञा १।१।६५)। ३ प्रकाशित—'ओपिताना—उज्ज्वलितानाम्' (ज्ञाटी प २२६)।

४ आरोपित (जबूटी प ४३ , दे १।१६७) । ५ रुदित । ६ खुशामद । ७ मुक्त, परित्यक्त । ८ हृत, छीना हुआ (दे १।१६७) । ६ व्याप्त, खचित (आवमटी) १० विभूषित ।

ओवुलीक—प्राणी-विशेष (अवि पृ ६६) ।

ओव्वरग—ओरी, भीतर का कमरा (दअचू पृ ४२) ।

ओस—ओस, निशाजल (भ १५।१८६) ।

ओसअ—ओस (से १३।५२) ।

ओसक्क—अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे १।१४६) ।

ओसट्ट—ऐसा भोजन, जिसमे फेकना अधिक होता है (निभा २४६४) ।

ओसण—उद्वेग, खेद (दे १।१५५) ।

ओसण्ण—त्रुटित, खडित (दे १।१५६) ।

ओसण्णं—१ अनेक बार—'ओसण्णति—अणेगसो एक्केक्क पात्रायतण हिंसादि आयरति' (दश्रुचू प ४०) । २ प्राय (जीभा १६०) । ३ प्राचुर्य, बाहुल्य (स्थाटी प १८३) ।

ओसद्ध—पातित, गिराया हुआ (पा ५६५) ।

ओसन्न—१ प्राय—'ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे' (दचूला २।६) । २ खडित, अपूर्ण—'ओसन्नो खुतायारो सवलायारो' (दश्रुचू प ६) ।

ओसर—छोटा कमरा (अंवि पृ १३६) । आसरा (राजस्थानी) ।

ओसरिअ—१ अधोमुख । २ आख को संकुचित कर देखना, कानी आख से देखना । ३ आकीर्ण, व्याप्त (दे १।१७१) ।

ओसरिआ—अलिंदक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (दे १।१६१) ।

ओसव्विअ—१ शोभा-रहित । २ अवसाद (दे १।१६८) ।

ओसा—१ ओस, निशाजल (आव ४।४) । २ हिम (दे १।१६४) ।

ओसाअ—प्रहार की पीडा (दे १।१५२) ।

ओसाणिहाण—विधि-पूर्वक अनुष्ठित (दे १।१६३) ।

ओसायंत—१ जभाई खाता हुआ आलसी । २ दुःख करता हुआ । ३ वेदना-युक्त (दे १।१७०) ।

ओसार—गो-वाट, गो-वाड़ा (दे १।१४६) ।

ओसिअ—१ बलरहित (दे १।१५०) । २ अपूर्व ।

ओंसिंघिअ—घ्रात, सूघा हुआ (दे १।१६२)—'ओंसिंघिअशब्दोऽपि देश्य एव' (वृ) ।

ओसिक्खिअ—१ गमन मे व्याघात । २ अरति-निहित (दे १।१७३) ।

ओसित्त—उपलिप्त (दे १।१५८)।

ओसीअ—अधोमुख, अवनत (दे १।१५८)।

ओसीस—अपवृत्त, दुश्चरित्र (दे १।१५२)।

ओसुंखिअ—उत्प्रेक्षित, कल्पित (दे १।१६१)।

ओसुद्ध—१ नीचे गिरा हुआ, विनिपतित (दे १।१५७)। २ विनाशित (से १३।२२)।

ओस्स—ओस, निशाजल (नि १३।८)।

ओहुंक—हास, हास्य (दे १।१५३)।

ओहुंजलिया—चतुरिन्द्रिय जीव की जाति-विशेष (जीवटी प ३२)।

ओहुंस—१ चंदन। २ चदन घिसने का शिलापट्ट (दे १।१६८)।

ओहट्ट—१ घूघट। २ कटि-वस्त्र। ३ अपसृत (दे १।१६६)।

ओहट्टिअ—दूसरे को धक्का देकर छीन लेना (दे १।१५९)।

ओहट्ठ—१ प्रार्थित, वाछित–'ओभट्ठमणोभट्ठ लब्भइ ज जत्थ पाउग्ग' (ओटी प ६७)। २ हास्य (दे १।१५३)।

ओहडणी—अर्गला (दे १।१६०)।

ओहत्त—अवनत (दे १।१५६)।

ओहरण—१ विनाशन, हिंसा। २ असभव अर्थ की सभावना (दे १।१७४)। ३ अस्त्र। ४ आघ्रात।

ओहरिय—१ प्रहत–'खुरधारे असी खधंसि ओहरिए' (ज्ञा १।१४।७७)। २ उत्तारित, उतारा हुआ–'ओहरियभारोव्व भारवहे' (उ २९।१३)। ३ प्रक्षिप्त, फेका हुआ (से १३।३)। ४ नीचे गिराया हुआ (से ३।३७)।

ओहरिस—१ घ्रात, सूघा हुआ। २ चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा (दे १।१६९)।

ओहसिअ—१ वस्त्र। २ कम्पित (दे १।१७३)।

ओहाइअ—अधोमुख (दे १।१५८)।

ओहाडण—१ प्रायश्चित्त का एक प्रकार। २ पिधानक (निचू ४ पृ ४२८)।

ओहाडणी—पिधानक, ढकनी (जीव ३। २६४, दे १।१६१)।

ओहाडिअ—ढका हुआ–'ओहाडियचिलिमिलियागंसि' (बृ १।१४)।

ओहामिअ—१ तिरस्कृत (ओनि ६०)। २ तोला हुआ (पा ५३९)। ३ स्थगित। ४ अभिभूत।

ओहार—१ जलजंतु-विशेष, मत्स्य (प्र३।७)। २ कछुआ। ३ नदी आदि का अन्तर द्वीप, मध्यद्वीप। ४ अंश, विभाग (दे१।१६७)।

ओहावण—अपभ्राजन, तिरस्कार (उशाटी प १६२)।

ओहिंजलिया—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१४८।

ओहिज्जंत—अतीत, अतिक्रांत, क्षीण (अंवि पृ ८१)।

ओहित्थ—१ विषाद। २ वेग। ३ विचारित (दे १।१६८)।

ओहीरमाणी—नींद लेती हुई (ज्ञा १।१।१८)।

ओहीरिअ—१ उद्गीत (दे १।१६३)। २ अवसन्न,खिन्न–'ओहीरिअ उद्गीतम्। अवसन्नमित्यन्ये' (वृ)।

ओहुअ—अभिभूत (दे १।१५८)।

ओहुड—विफल (दे १।१५७)।

ओहुप्पंत—जिस पर आक्रमण किया जाता हो, वह (से ३।१८)।

ओहुर—१ खिन्न (दे१।१५७)। २ अवनत। ३ स्रस्त, खिसका हुआ–'ओहुर खिन्नम्। 'ओहुरं अवनत स्रस्तं चेत्यवन्तिसुन्दरी' (वृ)।

क

कइअंक—निकर, समूह (दे २।१३)।

कइअंकसइ—निकर, समूह (दे २।१३)।

कइउल्ल—थोडा, अल्प (दे २।२१)।

कइक—कोई (अंवि पृ २५१)।

कइतविय—कृत्रिम?(सूनि ५९)।

कइलवइल्ल—स्वच्छन्दचारी वृषभ, चिन्हित सांड (दे २।२५)–'कइलवइल्लोव्व तुम घरा घरं किं भमेसि णिल्लज्ज !' (वृ)।

कइल्लिय—कृत–'अणुकंपा कइल्लिया होहित्ति' (उशाटी प ८६)।

कइवाह—तत्काल, शीघ्र–'सव्व ते पज्जत्तं णणु कइवाहं पडिच्छामि' (ति ६५६)।

कइविया—पात्र-विशेष, पीकदान (ज्ञाटी प ४७)।

कउअ—१ प्रधान। २ चिह्न (दे २।५६)।

कउल—१ करीष, कंडा। २ कंडे का चूरा (दे २।७)।

कउह—नित्य (दे २।५)।

कंकडुय—चना आदि धान्य जो अग्नि से नही पकता, कोरडू—'चणयादीणं उवक्खडियाण जे ण सिज्झति ते कंकडुया' (निचू ३ पृ ४८४)। देखे—उवक्खडाम

कंकण—चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (उ ३६।१४७)।

कंकदुय—कोरडू धान, वह धान जो पकाए जाने पर भी नही पकता (कु पृ २१०)।

कंकिल्लि—अशोक वृक्ष (प्रसा ४४०)।

कंकेल्लि—अशोक वृक्ष (औपटी पृ १७; दे २।१२)।

कंकोड—१ वनस्पति-विशेष, ककरैल की सब्जी (दे २।७)। २ साप की एक जाति।

कंगु—१ धान्य-विशेष—'बृहच्छिरा कगू' (निचू २ पृ १०९)। २ पीत तण्डुल (प्रसा ६६६)।

कंगुलिया—मलमूत्र—'कगुलिका—लघ्वी महती च नीतिं विधत्ते' (प्रसा ४३३)।

कंचणिका—भाजन-विशेष (अवि पृ ७२)।

कंचणिया—रुद्राक्ष की माला (भ २।३१)।

कंचिक्क—नपुसक—'भेसेति कतो इधेस कंचिक्को' (बृभा ५१८३)।

कंची—मुसल के मुख पर रहने वाला लोह-वलय (दे २।१)।

कंजुसिणोदेहि—काजिका—'कजुसिणोदेहि त्ति इह च लाटदेशेऽवश्रावणं काञ्जिकं भण्यते' (बृटी पृ ८७१)।

कंटउच्चि—कण्टकप्रोत, काटों से बीधा हुआ (दे २।१७)।

कंटक—बिच्छु की विष-प्रधान पूछ—'वृश्चिकस्य महाविषलागूल कण्टकं उच्यते' (व्यभा ६ टी प ५७)।

कंटाली—वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका (दे २।४)।

कंटासक—फल-विशेष, पनस (?) (अवि पृ ६४)।

कंटिका—करधनी—'जवूका मेखल त्ति वा कटिक त्ति व जो वूया' (अवि पृ ७१)।

कंटुल्ल—ककरैल, एक प्रकार की सब्जी जो वर्षा मे ही होती है (पा ३८२)।

कंटेण—पशु-विशेष (अवि पृ ६२)।

कंटोल—ककरैल वनस्पति की सब्जी (दे २।७)।

कंठ—१ सूकर, सूअर। २ मर्यादा, सीमा (दे २।५१)।

कंठकप्पड—कंधे पर रखी जाने वाली चादर—'णिबद्धं च णेण कंठकप्पडे तं पुट्टलय' (कु पृ १०५)।

कंठकुंची—१ वस्त्र आदि के अन्त मे लगाई गई गांठ। २ कंठ के ऊपर उभरी नाडिग्रन्थि 'रसोली' (दे २।१८)।

कंठदीणार—बाड का छिद्र (दे २।२४)—'आवंति कंठदीणारएण कुडिय-भमिरा भुयग त्ति (वृ)।

कंठमल्ल—१ शव को वहन करने का साधन (दे २।२०)। २ यानपात्र, वाहन (वृ)।

कंठमुखी—आभूषण-विशेष (भ ६।१६०)।

कंठाकंठि—गले मिलना—'अब्भुट्ठेत्ता कंठाकंठि अवयासेइ' (ज्ञा १।२।६६)।

कंठाकंठिय—गले मिलना (ज्ञा १।२।६०)।

कंठाल—मोटे कंठ वाला (कु पृ १३५)।

कंठिअ—द्वारपाल, दौवारिक (दे २।१५)।

कंड—१ दुर्बल। २ विपन्न। ३ फेन (दे २।५१)।

कंडपडवा—यवनिका, परदा (दे २।२५)।

कंडरा—शरीर का एक अवयव (अंवि पृ ११६)।

कंडरिय—अनतकाय वनस्पति-विशेष (भ २३।१)।

कंडु—पात्र-विशेष (सूचू १ पृ १२४)।

कंडूर—बगुला (दे २।६)।

कंडूसग—रजोहरण का बंधन-विशेष (नि ५।७०)—'कंडूसगबंधो णाम जाहे रयहरण तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेण वेढिय भवति' (निचू २ पृ ३६७)।

कंडूसी—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

कंतार—मार्ग—'कंतारं नाम अध्वान' (निचू १ पृ १६४)।

कंतु—कन्दर्प, कामदेव (दे २।१)।

कंथा—टुकडा, अश—'कण्हेण भेरी जोयाविया जाव कथा कया' (बृभा ३५६)।

कंद—१ दृढ। २ उन्मत्त। ३ आच्छादन (दे २।५१)।

कंदल—१ प्रत्यग्र लता (ज्ञा १।६।२०) २ कपाल (दे २।४)। ३ पुष्प-विशेष (अंवि पृ ६३)।

कंदी—मूला, कन्द-विशेष (दे २।१)।

कंदुग्घुसिय—नील कमल (?) (कु पृ ३५)।

कंदुट्ट—नील कमल (पा ५७)।

कंदोट्ट—नील कमल (दे २।६)।

कंपड—पथिक (दे २।७)।

कंबर—विज्ञान, प्रज्ञा, कलाकौशल (दे २।१३)।

कंबलिक—धान्य-विशेष (अवि पृ २२०)।

कंबिया—पुस्तक का आवरण पृष्ठ (जीव ३।४३५)।

कंसार—कसार, एक प्रकार की मिठाई (बृटी पृ ४०३)।

कंसारिआ—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (बृटी पृ ८००)।

कंसारिका—कसारी, त्रीन्दिय जंतु-विशेष (बृटी पृ ६६७)।

कंसारी—त्रीन्द्रिय जतु-विशेष (जीत १८)।

कंसाल—वाद्य-विशेष (भटी पृ ८८३)।

ककाणय—गरदन—'आरुस्स विज्भति ककाणओ से' (सू १।५।४२)।

ककितजाण—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

कक्की—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३६)।

ककुलुंडि—पात्र-विशेष (अंवि पृ २१४)।

ककुह—१ राजचिन्ह—'अवहट्टु रायककुहाइ' (प्रसाटी प १३)। २ प्रधान (ज्ञाटी प २४०)।

कक्ककुरुय—माया (प्रसा ११५)।

कक्कडग—तर्कशास्त्रगत हेतु का एक प्रकार—'कक्कडगहेऊ जत्थ भणिते उभयहा वि दोसो भवति' (निचू ३ पृ ३८०)।

कक्कडय—वायु-विशेष जो पेट मे उत्पन्न होती है—'कक्कडए नामं वाए समुच्छइ जेणं' (भ १०।३६)।

कक्कडी—ककडी (बृभा १०५१)।

कक्कडीय—मत्स्य-विशेप (अंवि पृ १८३)।

कक्कब—इक्षुरस का विकार, गुड की पूर्व अवस्था (पिनि २८३)।

कक्कय—गुड़ की पूर्व अवस्था—'गिल्लसन्निही-गुलकक्कयघयतेल्लाई' (जीचू पृ १४)।

कक्कर—मधुर—'कक्कर नाम महुरं' (उचू पृ १६०)।

कक्करपिंडग—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ २४६)।

कक्करी—घट-विशेष (जबूटी प १००)।

कक्कस—दध्योदन, करंबा (दे २।१४)।

कक्कसार—दध्योदन, करम्बा (दे २।१४)–'मयकरिअं लहसि कक्कसार' (वृ)।

कक्कावंस—पर्व वनस्पति, बांस का एक प्रकार (भ २१।१७)।

कक्किकड—कृकलास, गिरगिट (दे २।५)।

कक्कुस—तुष–'तुस त्ति कोटको व त्ति कक्कुसो तप्पणो त्ति वा' (अवि पृ १०६)।

कक्खड—पीन, पुष्ट (दे २।११)।

कक्खडंगी—सखी, सहेली (दे २।१९)।

कक्खल—कठोर, कर्कश–'कक्खलफासाहिं कमणीहिं' (निभा ६२६)।

कक्खारुग—फल-विशेष (अवि पृ ६४)।

कग्घाड—१ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा। २ किलाटी, मावा (दे २।५३)।

कग्घायल—किलाटी, दूध का विकार (दे २।२२)।

कचक्खी—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

कच्च—कार्य (दे २।२)।

कच्चग—पात्र-विशेष (व्यभा ८ टी प २२)।

कच्चाल—प्रवृत्ति या व्यापार का स्थान, कार्यालय (दे २।५२ पा)।

कच्चोल—कलश, पात्र-विशेष (उसुटी प २८०)।

कच्छ—गुठली का एक अवयव जो तुष रहित हो (आचू पृ ३४०)।

कच्छभाणिया—साधारण वनस्पति-विशेष (सू २।३।४३)।

कच्छभाणी—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

कच्छभी—तापस का उपकरण-विशेष–'हत्थकयकच्छभीए–कच्छपिका तदुपकरणविशेष' (ज्ञाटी प २२७)।

कच्छर—पंक, कीचड (दे २।२)।

कच्छवी—पुस्तक का एक प्रकार जिसके दोनों किनारे छोटे तथा मध्यभाग मोटा हो–'कच्छवि अंते तणुओ मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो' (प्रसा ६६५)।

कच्छा—कच्छा, लाट देश मे पहना जाने वाला स्त्रियो का परिधान-विशेष–'लाडाण कच्छा सा मरहट्ठयाणं भोयडा भण्णति' (निचू १ पृ ५२)।

कच्छुरिअ—ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की गई हो वह (दे २।१६)।

कच्छुरी—कपिकच्छू, केवाच (प्रज्ञा १।३७।१, दे २।११)।

कच्छुल्ल—१ गुल्म-विशेष (प्रज्ञा १।३८।२)। २ खाज रोग से ग्रस्त—'तत्थं ण पासइ एग पुरिसं—कच्छुल्लं कोढिय दाओयरियं' (विपा १।७।७)।

कच्छोटक—लंगोटी धारण करने वाला (भटी प ५०)।

कच्छोट्टग—कच्छा, लगोटी (आवहाटी १ पृ २७६)।

कज्ज—कचरा (ओटी प १६२)।

कज्जउड—अनर्थ (दे २।१७)।

कज्जत्थ—कूडा-करकट डालने का स्थान, अकुरड़ी—'कज्जत्थोकुरटिकास्थानम्' (ओटी प १६२)।

कज्जलमाणी—डूबती हुई (नि १८।१६)।

कज्जलावेमाणा—डूबती हुई—'णावं कज्जलावेमाणं पेहाए' (आचूला ३।२२)।

कज्जव—१ तृण आदि का समूह (दे २।११)। २ विष्ठा (वृ)।

कज्जवय—कूडा-कचरा (अनुद्वा ३४६)।

कज्जूरी—खजूर का वृक्ष (अवि पृ ७०)।

कज्जोव—उल्का (अवि पृ २४५)।

कज्झाल—सेवाल, एक प्रकार की घास जो जलाशयो मे होती है (दे २।८)।

कटार—छुरी (प्रा ४।४४५)।

कट्ट—१ खंड, टुकड़ा (अनुटी प ५)। २ काट, जंग (व्यभा ५ टी प ६)।

कट्टर—१ खड, अंश—'चित्तकट्टरे इ वा' (अनु ३।४०)। २ कढी मे डाला हुआ घी का बड़ा—'तीमनोन्मिश्रघृतवटिकारूपस्य देशविशेषप्रसिद्धस्य' (पिटी प १७२)।

कट्टरिगा—शस्त्र-विशेष, छुरी (निचू २ पृ ५९)।

कट्टारिया—कटार, छुरी (निचू २ पृ ५९)।

कट्टारी—क्षुरिका, छुरी (दे २।४)।

कट्टित—कटा हुआ (अंवि पृ २५५)।

कट्ठ—आभूषण-विशेष, एक प्रकार का हार (अंवि पृ ६५)।

कट्ठंसालुक—कठ का रोग-विशेष (अवि पृ २०३)।

कट्ठकरण—खेत—'कट्ठकरणं णाम छेत्त' (आवहाटी १ पृ १५२)।

कट्ठखोड—आसन-विशेष—'भद्दासणं पीढगं वा कट्ठखोडो नहट्ठिका' (अवि पृ १५)।

कट्ठगंध—नौका खेने का बड़ा बांस (आचू पृ ३५७)।

कट्ठाहार—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

कट्ठिअ—द्वारपाल (दे २।१५)।

कट्ठियव्वग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २४१)।

कट्ठेवट्टक—कण्ठ का आभूषण (अंवि पृ १६३)।

कट्ठोरग—कटोरा (निचू १ पृ ५१)।

कड—१ क्षीण। २ मृत (दे २।५१)।

कडअल्ल—द्वारपाल (दे २।१५)।

कडअल्ली—कण्ठ, गला (दे २।१५)।

कडइअ—स्थपति, बढई (दे २।२२)।

कडइल्ल—द्वारपाल (दे २।१५)।

कडत—१ मूली का शाक। २ मुसल (दे २।५६)।

कडंतर—पुराना छाज आदि उपकरण (दे २।१६)।

कडंतरिअ—विदारित (दे २।२०)।

कडंव—करटिका, वाद्य-विशेष (राज ७७)।

कडंभुअ—१ कुम्भग्रीव नामक पात्र-विशेष (दे २।२०)। २ घड़े का कण्ठ-भाग—'कडंभुअं घटस्यैव कण्ठ इति शीलाङ्कः' (वृ)।

कडग—१ यवनिका, परदा (आवहाटी २ पृ १७८)। २ वांस की चटाई से बना घर (व्यभा ४।४ टी प १०१)।

कडच्छकी—कडछी—'दव्वी तध कवल्ली य दीविक त्ति कडच्छकी' (अंवि पृ ७२)।

कडच्छु—लोहे की कर्छी, डोई (दे २।७)।

कडच्छुत—कर्छी (निचू २ पृ २५१)।

कडच्छुय—चम्मच (ज्ञा १।८।५५)।

कडजुम्म—युग्म राशि जिसमे चार शेष रहते हैं—'सर्वासां दिशां प्रत्येक ये प्रदेशास्ते चतुष्केनापह्रियमाणाश्चतुष्कावशेषा भवन्तीति कृत्वा तत्प्रदेशात्मिकाश्च दिश आगमसंज्ञया कडजुम्मत्ति शब्देनाभिधीयन्ते' (आटी प १३)।

कडणा—१ छत (भ ८।२५७)। २ त्रट्टिका, वाड़ (भटी पृ ६६१)।

कडतला—लोहे का वह हथियार जो एक ओर से धारवाला और वक्र होता है (दे २।१९)।

कडपल्ल—धान्यशाला–'कडपल्ल त्ति वा तणपल्ल त्ति वा धन्नसालत्ति वा वलय त्ति वा एगट्ठा' (बृचू प १४१)।

कडप्प—१ निकर, समूह (बृटी पृ ५४; दे २।१३)। २ वस्त्र का एक भाग (बृ)।

कडयडाविअ—कड्-कड् आवाज से चबा जाना (कु पृ ६८)।

कडला—पैर का आभूषण (जवृटी प १०६)।

कडवय—समूह (बृटी पृ ५४)।

कडवल्ल—१ बास की टोकरी (निचू ४ पृ १९२)। २ सूखे मास से बना भोज्य–'मसा सुक्खाविति सुक्खस्स वा कडवल्ला कता' (आचू पृ ३३५)।

कडसक्करा—वास की शलाका–'बहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य चम्म-पट्टाण य' (विपा १।६।२०)।

कडसी—श्मशान (दे २।६)।

कडार—नालिकेर, नारियल (दे २।१०)।

कडाली—घोड़े के मुख को बाधने का उपकरण-विशेष (अनु ३।५२)।

कडाहक—कडाही (अंवि पृ २१४)।

कडाहपल्हत्थिअ—दोनों पार्श्वों को बदलना, दोनों पार्श्वों का अपवर्तन (दे २।२५)।

कडिक—खिडकी (अंवि पृ २६)।

कडिखंभ—१ कमर पर रखा हुआ हाथ (दे २।१७)। २ कमर पर किया हुआ आघात–'कडिखभो कटीन्यस्तो हस्तः। कट्याघात इति केचित्' (वृ)।

कडिण—तृण-विशेष (सू २।२।४)।

कडिल्ल—१ माड आदि पकाने का वर्तन (उपा २।२१)। २ तवा–'तत्तकडिल्ले व जह विंदु' (पक १८७४)। ३ गहन (बृभा ५५६६, दे २।५२)। ४ कटीवस्त्र (जीविप पृ ५३, दे २।५२)। ५ द्वारपाल। ६ शत्रु। ७ आशीर्वाद। ८ जगल। ९ निश्छिद्र (दे २।५२)। १० गहन-प्रदेश (व्यभा ४।१ टी प ६०)।

कडिल्लक—लोहे का वडा पात्र (पिटी प १५८)।

कडिल्लग—अटवी, जंगल–'सो अभिमुहेति लुद्धो ससारकडिल्लगम्मि अप्पाण' (पक २३७८)।

कडिल्लय—कटि-वस्त्र—'अहवा रज्जसि पावे एयं पि कडिल्लयं णत्थि' (कु पृ ८१)।

कडिल्हक—लोहे का बड़ा पात्र (प्रसाटी प १५३)।

कडुआल—१ घण्टा। २ छोटी मछली (दे २।५७)।

कडुइया—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।

कडुच्छ—चम्मच (भ ५।१८६)।

कडुच्छय—चम्मच (भ ११।५६)।

कडुच्छिका—कर्छी डोई (ओटी प १६६)।

कडुच्छुग—कर्छी (जंबू १।४०)।

कडुच्छुत—चम्मच—'कडुच्छुते घयं ताविज्जति' (निचू २ पृ २५१)।

कडुच्छुय—चम्मच (अनुद्वा ३६२)।

कडुभ—कूब, पीठ का उभरा हुआ भाग (निचू २ पृ १६१)।

कडुभंड—मसाला—'वेसणं कडुभंडं जीरयं' (निचू २ पृ २५)।

कडुमाय—पशु-विशेष (अंवि पृ ६२)।

कडुय—अपराधी को दंड का निर्देश देनेवाला—'कडुओ उ दंडकारी' (बृभा ३५७६)।

कडुयाल—छोटी मछली (पा ३०१)।

कडुयालय—छोटी मछली (कु पृ १६१)।

कडुहुंड—भोजन में प्रयुक्त सामग्री-विशेष—'तत्थ भोयणे उवउज्जति कडुहुंडाइं' (आवचू १ पृ २८०)।

कडूकीका—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

कडेवर—१ शरीर (भटी पृ १२६०)। २ निश्चेतन देह, शव। ३ द्वीन्द्रिय आदि जीव (भटी पृ १३७१)।

कड्ढिढण—तृण-विशेष (निचू २ पृ ४३०)।

कढ—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

कढिआ—कढी—'तक्कोल्लणमूवकंजिककढियाइं' (पिनि ६२४; दे २।६७)।

कढिण—तृण-विशेष (आवचू २ पृ १२७)।

कढिणग—तृण-विशेष (प्र ८।१०)।

कढिय—कढी, खाद्य पदार्थ विशेष (जीभा ३६४)।

कणइअ—१ आर्द्र, गीला। २ किया हुआ। ३ चित्रित। ४ कण-धान्य से आकीर्ण (दे २।५७)।

कणइल्ल—शुक, तोता (दे २।२१)।

कणई—लता (दे २।५)।

कणंगर—पाषाणमय लंगर (विपा १।६।१७)।

कणक—बाण—'नाराय-कणक-कप्पणि-वासि-परसु' (प्र १।२८)।

कणकाली—अस्तर-विशेष (ज्ञाटी प १६)।

कणग—१ ग्रह-विशेष—'कणगा गिम्हे सिसिरे पंच वासासु सत्त उवहणति' (निचू ४ पृ २४५)। २ चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

कणय—१ बाण (भ २।८९; दे २।५६)। २ बिल्व, बेल (उशाटी प १४९)। ३ अवचय, फूलो का चुनना (दे २।५६)।

कणयंदी—पाटला, पाढर वृक्ष (दे २।५८ वृ)।

कणिआरिअ—कटाक्ष, टेढी नजर से देखना, कानी आख से देखना (दे २।२४)।

कणिवक—मत्स्य की एक जाति (जीवटी प ३६)।

कणिक्का—समित, आटा—'समिता-कणिक्का सा महुघएहि तुप्पेउं मद्दिउ च भगदले छुभति ते किमिया तत्थ लग्गति' (निचू १ पृ १००)।

कणिस—शस्य का तीक्ष्ण अग्रभाग (उपाटी पृ ६६; दे २।६)।

कणिसवाया—धान्य का अग्रभाग (कु पृ १५३)।

कणी—फडकना, धडकना (पा ९८५)।

कणुय—१ त्वक् का अवयव-विशेष। २ गुठली का तुषरहित अवयव (आचू पृ ३४०)।

कणेरु—हथिनी (अवि पृ ६९)।

कणोड्डिआ—गुजा, घुङ्गची (दे २।२१)।

कणोवअ—गरम किया हुआ जल, घृत, तैल आदि (दे २।१६)।

कण्ण—१ गोल आकृति—'जहानामए कण्णावली य गोलावली य वट्टावली य' (अनु ३।३९)। कण्णे—गोला, गोलाकृति (कन्नड़)। २ कोण (निचू १ पृ ९९)।

कण्णंबाल—कान का आभूषण, कुण्डल आदि (दे २।२३)।

कण्णच्छुरी—गृहगोधा, छिपकली (दे २।१९)।

कण्णत्तिय—खेचर पचेन्द्रिय प्राणी-विशेष (जीवटी प ४१)।

कण्णरोडय—कानो को बहरा करने वाला (शब्द)—'सो तीसे कण्णरोडयं असहतो भणति' (आवहाटी १ पृ ६०)।

कण्णविवोड—कान खीचना (वृटी पृ १५२३) ।

कण्णस्सरिअ—कानी नजर से देखना, कटाक्ष (दे २।२४) ।

कण्णाआस—कान का आभूपण, कुण्डल आदि (दे २।२३) ।

कण्णाइंधण—कान का आभूपण, कुडल आदि (दे २।२३) ।

कण्णाउडय—कान मरोडना—'कुभकारेण तस्स खुड्डगस्स कण्णाउडओ दिण्णो' (आवचू १ पृ ६१४) ।

कण्णाकण्णि—आकठ—'कण्णाकण्णि भरिते' (निचू ४ पृ १५६) ।

कण्णास—पर्यन्त, अन्त भाग (दे २।१४) ।

कण्णासय—पर्यन्त—'रच्छाकण्णासयम्मि दट्ठूण' (दे २।१४ वृ) ।

कण्णाहड—कर्णाकर्णिकया—'अम्ह आयरियाणं सुतीए कण्णाहडं च नोड जे' (ति ७०७) ।

कण्णाहाडिय—कानो से गुपचुप सुनकर जान लेना—'तेण तेमि पासओ विज्जा कण्णाहाडिया' (आवहाटी १ पृ २७४) ।

कण्णाहेडित—कान लगाकर सुनना—'गुरुसमीवातो तेणागतं, ण कण्णाहेडितं' (अनुद्वाचू पृ ८) ।

कण्णिवल्लि—वनस्पति-विशेप (अवि पृ ५) ।

कण्णु—मकान का अग्रभाग आदि (?)—'तत्थ जूय खेल्लिमो, खत्तं खणिमो कण्णु तोडिमो, पथ मूसिमो' (कु पृ ५७) ।

कण्णोच्छडिया—१ दत्तकर्णा, ध्यानपूर्वक सुनने वाली स्त्री । २ प्रत्युत्तर करने के लिए दूसरे की वात को पकड़ने वाली (दे २।२२) ।

कण्णोड्डिया—नीरगिका, घुघट, आवरण (दे २।२०) ।

कण्णोड्डी—घुघट, नीरंगिका—'मुच कण्णोड्डिं' (दे २।२० वृ) ।

कण्णोढत्ती—१ दत्तकर्णा, ध्यानपूर्वक सुनने वाली स्त्री । २ प्रत्युत्तर करने के लिए दूसरे की वात को पकडने वाली (दे २।२२) ।

कण्णोल्ली—१ चोंच । २ अवतंस, कलंगी (दे २।५७) ।

कण्णोस्सरिअ—१ कानी नजर से देखना, कटाक्ष, टेढी नजर से देखना (दे २।२४) । २ टेढ़ी नजर से देखा हुआ (वृ) ।

कण्ह—१ वल्ली-विशेष, जटामासी (प्रज्ञा १।४०) । २ हरित वनस्पति-विशेष, कृष्ण तुलसी (प्रज्ञा १।४४) ।

कण्हगुलिका—विलाशयी जंतु-विशेप—'तत्थ विलासयेसु कण्हगुलिका सेतगुलिका खुल्लिका' (अवि पृ २२९) ।

कण्हाकडभु—वनस्पति-विशेष (भ २३।१)।

कण्हाल—काली मिट्टी की भूमी–'जहा कण्हाले जं पाणिय पडति तं ण कतोवि ओलुटति' (आवचू १ पृ १२१)।

कण्हुइ—१ कुतश्चित्, कही भी (उ १।७)। २ किंचित् (दश्रुचू प ६१)।

कण्हेरी—मादा पशु-विशेष (अवि पृ ६६)।

कतवार—तृण आदि का समूह (दे २।११)।

कत्ता—अन्धिका द्यूत की कपर्दिका, कौडी (दे २।१)।

कत्तोइ—कही (विपाटी प ८३)।

कत्थइ—क्वचित् (प्रा २।१७४)।

कत्थभाणी—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३४)।

कत्थलायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कत्थूल—गुल्म-विशेष (जीव ३।५८०)।

कदुक्का—नालिकाक्रीडा (सूचू १ पृ १७६)।

कद्दमिअ—महिष, भैसा (दे २।१५)।

कद्दुइय—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।२)।

कनंगर—पाषाणमय लगर (विपाटी प ७१)।

कन्न 'लइअ'—कानों मे पहिना हुआ, कानो मे पिनद्ध (पिनि ५६१)।

कन्नामोडि—कान मरोडना, कान खीचना (बृचू प २०६)।

कन्नारोडग—कानों को बहरा करने वाला (शब्द) (आवचू १ पृ ११०)।

कन्नारोडय—कानों के लिए अवरोधक, रोडा (बृटी पृ ५३)।

कन्नोली—कान का आभूषण (पा ८४)।

कपिह—दुष्ट घोडा (उचू पृ ३०)।

कप्पट्ठ—१ बच्चा (व्यभा ७ टी प ४०)। २ ईश्वर–पुत्र, धनिक-पुत्र (व्यभा ४।२ टी प ३७)।

कप्पट्ठग—बच्चा (निभा ३८०)।

कप्पट्ठिया—श्रेष्ठिवधू। २ कुलपुत्री (स्थाटी प २५३)।

कप्पट्ठी—१ तरुण स्त्री (बृभा १८४२)। २ बालिका (व्यभा ४।४ टी प १२)। ३ कुलवधू (व्यभा ४।३ टी प ५२)।

कप्पड—कपडा, वस्त्र (प्रसा ४३४)।

कप्पणिय—जाति-विशेष–'मुरुडोड्डगोडकप्पणिया' (कु पृ ४०)।

कप्पयारी—दासी–'दासीओ कप्पयारीउ त्ति' (सूचू १ पृ २०१)।

कप्परिअ—विदारित, फाडा हुआ (दे २।२०)।

कप्पाग—डंडा, शस्त्र-विशेप—'सो य मणिप्पहं कप्पाग मग्गइ' (आवहाटी २ पृ १४०)।

कप्पासट्ठिमिंज—त्रीन्द्रिय जतु-विशेष (उ ३६।१३८)।

कप्पासट्ठिसमिंजिय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

कप्फाड—कदरा, गुफा (पा ६६८)।

कफाड—गुफा, गुहा (दे २।७)।

कब्बट्ठ—वालक—'कल्पस्थः समयपरिभापया वालक उच्यते' (वृभा ८६५ टी)।

कब्बट्ठी—१ तरुण स्त्री (वृभा १८४२)। २ छोटी लडकी—'इह समय-परिभापया कव्वट्ठी लध्वी दारिका भण्यते' (पिटी प ६१)।

कब्बाल—ठेके पर भूमि खोदने वाला—'चत्तारि भयगा पण्णत्ता, त जहा—दिवसभतए⋯कब्बालभयए' (स्था ४।१४७)।

कभल्ल—१ मिट्टी का पात्र-विशेप, खप्पर—'भज्जणयकभल्लेइ वा' (अनु ३।३७)। २ खोल, कपाल—'यथा कच्छभो⋯⋯अगाणि कभल्ले सहरति' (दअचू पृ १६५)।

कभेइका—कृमि-जाति (अवि पृ ७०)।

कम—मार्ग—'भणंति आयरिया—वेण्णे ! कमं देहि त्ति' (निचू ३ पृ ४२५)।

कमढ—१ मैल—'जल्लो तु होति कमढं' (निभा १५२२), 'खरंटो उ जो मलो त कमढं भण्णत्ति' (निचू २ पृ २२१)। २ साध्वियों का पात्र-विशेप (पव ७६०)। ३ दही की कलशी। ४ वलदेव। ५ मुख, मुह। ६ पिठर, स्थाली (दे २।५५)। ७ कच्छप (व्यभा ३ टी प ६२)।

कमढग—पात्र-विशेप (व्य २।२६)।

कमढय—पात्र-विशेप—'लेपिततुम्बकभाजनरूपं कांस्यमयवृहत्तरकरोटिका-कारमेकैक सयतीनां निजोदरप्रमाणेन विज्ञेयम्' (प्रसाटी प १२५)।

कमढित—घूर्णित, निमग्न—'निद्दाकमढितो जोण्हं मण्णमाणो दिवा' (निचू ३ पृ २६७)।

कमणिल्ल—जूते पहने हुए (निभा ६२५)।

कमणी—निःश्रेणी, सीढी (दे २।८)।

कमल—१ हरिण, मृग (अनुद्वहाटी पृ १६, दे २।५४)। २ पिठर, स्थाली। ३ पटह, ढोल। ४ मुख, मुह (दे २।५४)। ५ झगड़ा।

कमिअ—उपसर्पित; पास आया हुआ (दे २।३)।

कमेड—छिपकली, गिलहरी (?)—'एमेव अडति 'वोडो लुक्कणिलुक्को उ कमेडो' (जीभा १२३७)।

कम्मणण—कंकड आदि (अवि पृ ५)।

कम्हिअ—माली, मालाकार (दे २।८)।

कयंत—भाग्य (प्र ३।२४)।

कयग—कैतव, माया (निभा २१७४)।

कयल—अलिंजर, पानी भरने का बड़ा घडा (दे २।४)।

कयवर—कचरा (आ १।८५)।

कयार—१ कचरा (विभा ११६७, दे २।११)। २ धूल—'कयारो त्ति जो बूया·······धूली रयो त्ति रेणु त्ति' (अंवि पृ १०६)।

कयाह—उत्तम जाति का अश्व (कु पृ २३)।

करइल्ली—शुष्क वृक्ष, सूखा पेड (दे २।१७)।

करंक—१ बडा बर्तन (सूचू १ पृ ११९)। २ भिक्षापात्र। ३ अशोक वृक्ष (दे २।५५)।

करंज—१ एक अस्थि वाला वृक्ष-विशेष (प्रज्ञा १।३५)। २ सूखी छाल (दे २।८)।

करंडय—पीठ के पास की हड्डी—'अणगारस्स पिट्ठिकरंडयाणं अयमेयारू तवरूवलावण्णे होत्था' (अनु ३।३९)।

करंडुक—पीठ के पास की हड्डी (प्रटी प ८४)।

करंडुय—पीठ के पास की हड्डी (जवू २।४७)।

करक—शव—'उक्खित्तं तं करकं' (कु पृ २२५)।

करकर—१ तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)। २ अत्यंत व्यक्त (शब्द) (आवहाटी १ पृ १९५)।

करकराण—करकर शब्द करना (व्यभा ४।३ टी प १९)।

करकी—भाजन-विशेष (अवि पृ ७२)।

करगिल्ल—पात्र (आवमटी प ३९७)।

करघायल—दूध का विकार, मावा (दे २।२२)।

करच्छोडिया—ताली बजाना—'दिन्ना य करच्छोडिया' (उसुटी प २८)।

करटिका—वाद्य-विशेष (नंदीटि पृ ९९)।

करड—१ श्राद्ध-विशेष—'सिवढोढसिवाइ करड वा' (निभा ३४८३)। २ व्याघ्र। २ चितकबरा (दे २।५५)।

करडयभत्त—मृतभोज, श्राद्ध-विशेष (आचू पृ ३३५)।

करडा—चिड़िया (दे २।५५ वृ)।

करडाक—धूम्रपान का साधन (अंवि पृ २५४)।

करडि—वाद्य-विशेष (जंबूटी प १००)।

करडुयभत्त—मृतभोज (पिनि ४६४)।

करणि—१ शपथ, सौगंध—'अण्णहा तेहिं भणितो—मज्जे णिज्जीवे को दोसो ? तेहिं य सो भणंतेहिं करणिं गाहितो लज्जमाणो एगंते परेण आणियं पियति' (निचू ३ पृ ५२१)। २ क्रिया, कर्म (आवचू २ पृ २८१)। ३ सादृश्य, समानता—'तेण चाणक्कभज्जा ओलग्गिता, ताहे सो करणिं गाहितो····' (आवहाटी २ पृ २१८)। ४ रूप, आकार (दे २।७)। ५ अनुकरण। ६ स्वीकार।

करणी—आकार, रूप (पा ७८६)।

करडुय—मृत्यु के उपलक्ष मे किया जाने वाला भोज—'मरणे त्ति करडुयादीणि कारवेइ वा' (आचू पृ १६)।

करधाण—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ १८७)।

करम—क्षीण, दुर्बल (दे २।६)।

करमंद—१ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३१)। २ फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

करमद्द—गुच्छवनस्पति, करौंदा (प्रज्ञा १।३७।४)।

करमरिअ—बलात् अपहृत स्त्री (पा २१२)।

करमरी—अपहृत स्त्री (दे २।१५)।

करयंदी—मल्लिका, मोगरा (दे २।१८)।

करयडी—स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा (दे २।१६ वृ)।

करयरी—स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा (दे २।१६)।

करल—भोजन से संबंधित रोग-विशेष—'सव्वाहारगते खंडोट्ठं वा गुरुलं वा करलं वा वूया' (अंवि पृ २०३)।

करह—धनुष का वह भाग जहां प्रत्यंचा आरोपित होती है (पिटी प २०)।

कराइणी—शाल्मली वृक्ष, सेमल का पेड़ (दे २।१८)।

कराटिया—मिट्टी का वर्तन (ज्ञाटी प ११७)।

करायणी—शाल्मली वृक्ष (दे २।१८ वृ)।

कराली—दतवन, दतौन (दे २।१२)।

करिआ—मदिरा परोसने का पात्र (दे २।१४)।

करिण्हुका—उद्‌भिज्ज जंतु-विशेष (अंवि पृ २२९)।

करिमअर—जलहस्ती (से ५।५७)।

करिलेग—करील वृक्ष, करील (अंवि पृ २३८)।

करिल्ल—१ वंशाकुर, बांस का कोपड़ (दे २।१०)। २ अंकुर (अनु ३।३५)। ३ करैला (विभा २९३)। ४ करील वृक्ष। ५ वंशांकुर के समान।

करुल्ल—कपाल, खप्पर, फूटे घड़े का टुकड़ा—'गोवालाणं जेणं जं करुल्लं आसाइयं सो तत्थ पजिमिओ' (आवहाटी १ पृ १३४)।

करेडु—कृकलास, गिरगिट (दे २।५)।

करेडुयभत्त—मृतभोज—'वणियकुले मयकिच्चं करेडुयभत्त' (निचू ३ पृ ४१८)।

करोड—१ कटोरा (निभा ३२८३)। २ नारियल। ३ कौआ। ४ वैल (दे २।५४)।

करोडक—कटोरा (अंवि पृ ६५)।

करोडय—पात्र-विशेष (सूचू १ पृ ११८)।

करोडि—परोसने का एक उपकरण (जीवटी प १४६)।

करोडिया—मिट्टी का पात्र (भ २।३१)।

करोडी—१ एक प्रकार की चीटी (दे २।३)। २ शव। ३ भाजन-विशेष, कटोरी (अंवि पृ ७२)।

कलअ—१ फली (आचू पृ ३४१)। २ अर्जुन वृक्ष। ३ स्वर्णकार (दे २।५४)।

कलंक—१ वास की वनाई हुई जालीदार वाड (ज्ञा २।१।१९)। २ वार्स (दे २।८)।

कलंकल—अनिष्ट, अशुभ—'कम्मकलंकलवल्लि छिंदइ सथारमारूढो' (महा १३०)।

कलंकवई—वृति, वाड (दे २।२४)।

कलंबचीरपत्त—एक प्रकार का शस्त्र—'खुरपत्ताण य कलबचीरपत्ताण य' (विपा १।६।१९)।

कलंबचीरिया—तृण-विशेष जिसका अग्रभाग अत्यत तीक्ष्ण होता है (जीव ३।८५)।

कलंबु—नालिका नाम की वल्ली (दे २।३)।

कलंबुया—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६) ।

कलकल—चूने से मिश्रित जल—'अप्पेगइया कलकलभरिएहिं अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति' (विपा १।६।८) ।

कलम—१ उत्तम चावल (जीभा ३९८) । २ चना—'कलमो चणगो भण्णति' (निचू १ पृ ७०) । ३ चोर (पा १२४) ।

कलमल—दुर्गन्ध, अशुचि (तंदु १४९) ।

कलयंदि—१ पाटला, पाढर वृक्ष । २ विख्यात (दे २।५८) ।

कलव—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०) ।

कलवू—तुम्बी-पात्र (दे २।१२) ।

कलह—तलवार की म्यान (दे २।५) ।

कलहिभी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३८) ।

कलाय—सुवर्णकार (प्रटी प ३०) ।

कलाल—१ घोडों की देखरेख करने वाला (आवहाटी २ पृ ६८) । २ मदिरा बनाने-बेचने वाला (अनुद्वाहाटी पृ ७२) ।

कलासिक—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९) ।

कलि—शत्रु (दे २।२) ।

कलिअ—१ अभिमानी । २ नेवला, नकुल । ३ मित्र, सखा (दे २।५६) ।

कलिआ—सखी (दे २।५६ वृ) ।

कलिओअ—वह युग्म-राशि जिसमे एक शेष रहता है—'एगपज्जवसिए कलिओए' (आटी प १३) ।

कलिंच—बास की खपाची (नि १।२) ।

कलिंचि—तृणपूलिका—'कलिंचि त्ति तणपूलिया इति विशेषचूर्णौ' (वृटी पृ ४४३) ।

कलिंज—१ बास की टोकरी—'कलिंजो णाम वंसमयो कडवल्लो सट्टती वि भण्णति' (निचू ४ पृ १९२) । २ छोटी लकडी (दे २।११) ।

कलिंदक—गाय आदि पशुओं का भोजन-पात्र (प्रसाटी प २७) ।

कलिंब—सूखी लकडी (कु पृ १७९) ।

कलिग—कंगण (उचू पृ १७९) ।

कलिम—नीलकमल (दे २।९) ।

कलिमाजक—फल-विशेष (अंवि पृ ६४) ।

कलुय—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४९) ।

कलेर—१ कंकाल । २ भयंकर (दे २।५३) ।

कलोवाइ—पात्र-विशेष (आचूला १।२१) ।

कल्किक—मास (सूचू १ पृ २०१ टि) ।

कल्पिक—मास—'मासं कल्पिक इत्यपदिश्यते' (सूचू १ पृ २०१) ।

कल्ल—बीता हुआ कल—'गयसुकुमालेण अणगारेणं ममं कल्लं पच्चावरण्ह-कालसमयंसि वदइ नमंसइ' (अंत ३।१०१) ।

कल्लविअ—१ भिगोया हुआ, आर्द्रित । २ विस्तारित (दे २।१८) ।

कल्ला—मद्य (आवचू २ पृ २९७, दे २।२) ।

कल्लाकल्लि—१ प्रतिदिन (ज्ञा १।८।४१) । २ प्रातःकाल (विपाटी प ८६) ।

कल्लाडक—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८) ।

कल्लाण—१ वृक्ष-विशेष (आचू पृ ३४१) । २ चक्रवर्ती का आहार-विशेष (निभा ५७२) ।

कल्लाणग—चक्रवर्ती का आहार-विशेष—'कल्लाणगं णाम आहारो' (निचू २ पृ २१) ।

कल्लाल—कलाल, मदिरा बेचनेवाला (जीभा ४२६) ।

कल्लुग—नुकीला—'कोंकणविसए णदीसु अंतो जलस्स कल्लुगा पासाणा भवंति' (निचू ३ पृ ३७०) ।

कल्लूरिका—मिष्ठान्न, मिठाई (आवमटी प ३९०) ।

कल्लेउय—कलेवा—'कल्लेउयं च करेइ' (ओटी प १७२) ।

कल्लोल—शत्रु (दे २।२) ।

कल्हार—सफेद कमल (प्रज्ञा १।४६) ।

कल्होड—बछड़ा (दे २।९) ।

कल्होडक—बछडा (बृटी पृ ६६६) ।

कल्होडी—वत्सतरी, बछिया (दे २।९) ।

कवचिका—उपकरण-विशेष (अंवि पृ ७२) ।

कवचिया—पात्र-विशेष (भ ११।१५९ पा) ।

कवय—वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र (दे २।३) ।

कवल—प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६४) ।

कवल्ल—१ तवा—'तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा' (भ ३।१४८)। २ कडाही (सू १।५।१५)।

कवल्लि—कडाह—'डज्झतेण वि गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए' (सं ११६)।

कवल्ली—१ पकाने का भाजन-विशेष (विपा १।३।२)। २ कडाह (अंवि पृ ७२)।

कवल्लुय—कडाही (ति ६५१)।

कवल्लूर—कडाही (सूचू २ पृ ४४४)।

कवास—अर्धजंघा, एक प्रकार का जूता (दे २।५)।

कविचिया—पात्र-विशेष, कलाचिका (भ ११।१५६)।

कविड—घर का पिछला आंगन (दे २।६)।

कविल—कुत्ता (दे २।६)—'अलस! ण लज्जसि कविलोव्व कडसीए' (वृ)।

कविल्ली—पात्र-विशेष (अनुद्वामटी प १४६)।

कविल्लुय—कडाही (आचू पृ ३७३)।

कविस—मद्य, मदिरा (दे २।२)।

कविसा—अर्धजंघा, एक प्रकार का जूता (दे २।५)।

कवेली—पात्र-विशेष (अनुद्वाचू पृ ५४)।

कवेल्लक—लोहे का पात्र-विशेष (भ ३।४८)।

कवेल्लुअ—खपरैल (स्था ८।१०)।

कवेल्लुग—१ तवा (जंबू २।१४१)। २ खपरैल, खापड़ (आवचू २ पृ २३)।

कवेल्लुय—कडाही (जंबूटी प २२)।

कवोडी—कावर (निचू ३ पृ २१३)।

कव्व—१ पानी उलीचने का पात्र-विशेष—'उत्तिगादिणावाए चिट्ठमुदगं अण्णयरेण कव्वादिणा उस्सिचणएण उस्सिचइ' (निचू ४ पृ २०६)। २ मांस।

कव्वय—काष्ठपात्र—'कव्वयं त पि कट्ठमयं (पत्तं)' (निचू ३ पृ ३४३)।

कव्वाड—१ ठेके पर भूमि खोदने वाला (स्था ४।१४७ पा)। २ दाहिना हाथ (दे २।१०)।

कव्वाल—१ ठेके पर भूमि खोदने वाला—'कव्वालो खितिखणतो उड्डमादी' (निचू ३ पृ २७३)। २ कर्म-स्थान, प्रवृत्ति का स्थान। ३ घर (दे २।५२)।

गायरी—कलशी, छोटा घड़ा (दे २।८९)।

गार—१ गीली मिट्टी, कर्दम (निभा ४२३६)। २ कंकड़ (व्यभा ४।४ टी प ९)।

गारि—गीली मिट्टी, कर्दम (निचू ३ पृ ३७०)।

गावाण—पर्वत (प्रा ३।५६)।

गाविआलोग—जहां गायों को बाटा आदि खिलाया जाता है—'गाविआलोगे जत्थ गाविओ लिहंति' (आचू पृ ३७०)।

गावी—गाय (द ५।१२)।

गाह—घर—'गाह त्ति वा गिह त्ति वा एगट्ठं' (आचू पृ ३३८)।

गाहा—घर—'गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा' (व्यभा ८ टी प १)।

गाहावइ—१ गृहपति, गृहस्थ (वृ १।३२)। २ धनी कौटुम्बिक (स्थाटी प २५८)। ३ आश्रयदाता (स्थाटी प ३२२)।

गाहुलि—क्रूर जलचर प्राणी-विशेष (दे २।८९)।

गाहुल्लिया—गाथा—'अण्णा गाहुल्लिय पढइ' (कु पृ २६)।

गिंधुअ—स्तन पर गांठ देकर बांधा हुआ वस्त्र—'कयगंठि थणोवरि विरइ-अंसुअं गिंधुअं जाण' (पा ६५९)।

गिंधुल्ल—कञ्चुक, चोली (पा ११६)।

गिड्डिया—गेंद को फेंकने वाली वक्र यष्टिका (प्रसा ४३५)।

गिणि—स्वजन (व्यभा ५ टी प २६)।

गिर—बीज-कोश (निचू २ पृ १८५)।

गिरि—बीजकोश (दे ६।१४८)।

गिरिकण्णइ—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

गिरिजन्न—१ कोंकण देश में होने वाला सायंकालीन भोज—'गिरियज्ञो नाम कोंकणादिदेशेषु सायाह्नकालभावी प्रकरणविशेषः। आह च चूर्णिकृत्—'गिरियज्ञ. कोंकणादिषु भवति उस्सूरे त्ति'। २ लाट देश में वर्षा ऋतु में होने वाला भोज—'गिरिजन्नो मत्तवालसंखडी भन्नइ सा, लाडविसए वरिसारत्ते भवइ त्ति। ३ भूमिदाह—'गिरिकं(ज)न्न त्ति भूमिदाहो त्ति भणितं होइ' (वृटी पृ ८०७)।

गिरोलिया—छिपकली, गृहगोधा (कु पृ १८४)।

गिल्ल—गीला, आर्द्र—'गिल्ल-सन्निही-गुल-कक्कय-घयतेल्लादिया मुणेतव्वा' (जीचू पृ १४)।

गिल्लि—१ दो पुरुषों द्वारा उठाई जाने वाली पालकी, शिविका (दश्रु ६।३)। २ अंबाडी, हौदा—'हस्तिनः उपरि कोल्लररूपा या मानुषं गिलतीवेति। लोकभाषाया अबाडी इति प्रसिद्धा' (राजटी पृ १७)।

गिल्लिरी—जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

गिहेलुग—दहलीज, देहली (आचू पृ ३६४)।

गिहेलुय—दहलीज (नि १३।६)—'गिहेलुओ उंबरो उ णायव्वो' (निभा ४२६८)।

गुंगुयंत—भय से आकुल-व्याकुल—'ते गुगुयता अच्छति' (उशाटी प १७९)।

गुंछा—१ बिंदु। २ अधम। ३ मूछ (दे २।१०१)।

गुंजेल्लिअ—पिंडीकृत, एकत्रित किया हुआ (दे २।९२)।

गुंठ—१ घोड़ा—'गुठो घोडगो' (निचू ४ पृ १११)। २ महिष—'गुण्ठो नाम घोटको महिषो वा' (बृटी पृ ८६४)। ३ मायावी (व्यभा ४।३ टी प ६९)। ४ दुष्ट घोड़ा (दे २।९१)।

गुंठा—माया (व्यभा ४।३ टी प ७०)।

गुंठी—नीरंगी, घुघट (दे २।९०)।

गुंड—मुस्ता से उत्पन्न होने वाला 'लचक' नाम का तृण-विशेष (दे २।९१)।

गुंदा—१ बिन्दु। २ अधम (दे २।१०१)।

गुंपा—१ बिन्दु। २ अधम (दे २।१०१)।

गुंफ—गुप्ति, कारावास (दे २।९०)।

गुंफी—शतपदी, कनखजूरा (दे २।९१)।

गुज्झक्खिणी—स्वामिनी (बृभा ५७०४)।

गुट्ठ—स्तम्ब, तृण-काण्ड (उपा २।२१)।

गुट्ठी—मित्र—'दो गुट्ठिओ गोट्ठिया वा पव्वाविता' (निचू ३ पृ २८४)।

गुट्ठीय—मित्र (निचू ३ पृ २८४)।

गुडदालिअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे २।९२)।

गुडधाना—गुडपपडी—'गुडपर्पटिका लोकप्रसिद्धा गुडधाना' (भटी प ३२६)।

गुडोलद्धिआ—चुबन (दे २।९१)।

गुणनिया—व्यायाम-विशेष (ज्ञाटी प २४)।

गुण्हुपय—कृमि-विशेष (अवि पृ २२६)।

गुत्तण्हाण—पितृतर्पण, पितरों को जलाजलि देना (दे २।९३)।

गुत्ति—१ बंधन, जेल। २ इच्छा। ३ वचन। ४ लता। ५ मुकुट की माला, शिरोमाल्य (दे २।१०१)।

गुत्थंड—भासपक्षी (दे २।६२)।

गुप्पंत—१ शय्या, बिछौना। २ रक्षित (दे २।१०२)। ३ व्याकुल (से १।२; दे २।१०२)

गुफगुमिअ—सुगन्धयुक्त (दे २।६३)।

गुब्बर—गाव-विशेष, गोवर गाव (आवमटी प ३३७)।

गुमिल—१ मूढ। २ गहन। ३ प्रस्खलित। ४ आपूर्ण (दे २।१०२)।

गुम्म—१ समूह–'गुम्मो समूहो' (दश्रुचू प ६१)। २ स्थान (ओटी प ८१)।

गुम्मइअ—१ मूढ (ओनि १३६; दे २।१०३)। २ संचलित। ३ स्खलित। ४ विघटित। ५ पूरित (दे २।१०३)।

गुम्मिअ—उन्मूलित, मूल से उखाडा हुआ (दे २।६२)।

गुम्मिय—१ स्थान-विशेष का रक्षक, कोतवाल (ओनि १६३)। २ जेल-रक्षक, गुप्तिपाल (ओनि ७६६)। ३ घूर्णित।

गुम्मी—१ कनखजूरी (उ ३६।१३८)। २ राशि, ढेर (दश्रुचू प ६१)। इच्छा (दे २।६०)।

गुम्हि—कनखजूरा–'गुम्हि-विच्छुग-सप्पादिया पविसति' (निचू २ पृ १६७)।

गुरुल—भोजन से सबधित रोग-विशेष (अवि पृ २०३)।

गुल—चुम्बन (दे २।६१)।

गुलइय—गुल्मित, गुल्मवाला (औप ५)।

गुलखित—चुंवित (अवि पृ १४८)।

गुलगुलाइय—हाथी का हर्ष से चिंघाडना (जीव ३।४४७)।

गुलमग—गोल पात्र (अंवि पृ ६५)।

गुललावणिया—गुड से निष्पन्न खाद्य-विशेष (पंक ७२८)।

गुलिअ—१ मथित (दे २।१०३)। २ गेद (पा ८४६)।

गुलिका—१ पिटक। २ बुसपुञ्ज (वृटी पृ ८०५)।

गुलिया—१ पिटक (वृटी पृ ८०५)। २ बुसपुज, भूसा (वृटी पृ ८०५; दे २।१०३)। ३ वल्कल–'विशेप-चूर्णी–गुलियत्ति ववकलाणि घेप्पति' (वृटी पृ ८१६)। ४ मथित, विलोडित। ५ गेंद। ६ गुच्छा (दे २।१०३)।

गुलुइय—गुल्मित, लताओं से युक्त (भ ११५०)।

गुलुगुंछिअ—१ वाड से व्यवहित (दे २।९३)। २ उन्नमित (वृ)।

गुलुगुलिय—हाथी की चिंघाड़ (उसुटी प ६४)।

गुलुच्छ—१ घुमाया हुआ (दे २।९२)। २ गुच्छा (पा ३४७)।

गुवित—क्षुब्ध, उद्वेलित (स्था ३।४६५)।

गुविल—१ गहन, सघन (वृभा ६४८९)। २ जंगल—'जर-मरण-चउगई-गुविल' (महा ४४)। ३ चीनी से निष्पन्न वस्तु।

गुहा—१ समवाय, साधुओं का समूह। २ उपाश्रय—'गुहास्तु समवायाः प्ररूपणगुहा वा गृह्यन्त इति' (नंदीटी पृ ९)।

गुहिर—गम्भीर (पा ३२३)।

गेंठुअ—स्तन के ऊपर के वस्त्र की गाठ (दे २।९३)।

गेंठुल्ल—कञ्चुक, चोली (दे २।९४)।

गेंड—स्तन के ऊपर की वस्त्र-ग्रन्थि (दे २।९३)।

गेंडुई—क्रीडा (दे २।९४)।

गेज्ज—मथित (दे २।८८)।

गेज्जल—कंठ का आभूपण (दे २।९४)।

गेड्डु—१ पक, कर्दम। २ यव (दे २।१०४)।

गेण्हिअ—मुक्ता-माला जो छाती पर लटकती है (दे २।९४)।

गेल्लि—हौदा (भटी प १८७)।

गेहि—आसक्ति, गृद्धि (आ ६।३७)।

गोअंट—१ गाय के चरण (दे २।९८)। २ जमीन पर उगने वाले सिंघाड़े—'गोअटो स्थलशृगाट इत्यन्ये' (वृ)।

गोअग्गा—गली (दे २।९६)।

गोअला—दूध वेचने वाली (दे २।९८)।

गोआ—छोटा घड़ा, गगरी (दे २।८९)।

गोआलिआ—वर्षा ऋतु मे होने वाला कीट-विशेष (दे २।९८)।

गोंजी—मजरी (दे २।९५)।

गोंठी—मजरी (दे २।९५)।

गोंड—कानन, वन (दे २।९४)।

गोंडी—मंजरी, मांजर (दे २।९५)।

गोंदी—मजरी (कु पृ ३२)।

गोंदीण—मोर का पित्त (दे २।९७) ।

गोकिलंज—पात्र-विशेष (भटी प ३१३) ।

गोकिलिंज—गाय को चारा आदि खिलाने के लिए बास का बना हुआ भाजन-विशेष (भ ७।१५९) ।

गोखलक—गवाक्ष (व्यभा ३ टी प ६३) ।

गोच्चअ—कोड़ा (दे २।९७) ।

गोच्चिय—राज्य का अधिकारी, कोतवाल (पिटी प ६९) ।

गोच्छणव—१ कृषि का उपकरण-विशेष । २ खाद (इ २६।११) ।

गोच्छय—मुनि का एक उपकरण जो पात्र तथा वस्त्र का प्रमार्जन करने के काम आता है—'होइ पमज्जणहेउं तु गोच्छओ भाणवत्थाणं' (पंव ८००) ।

गोच्छा—मंजरी (दे २।९५) ।

गोज्ज—१ गायक (जीभा ६१४) । २ शारीरिक दोष वाला बैल ।

गोज्झ—नाटक, नृत्य-विशेष—'गोज्झपेक्खिया—नृत्यविशेषप्रेक्षका' (आवहाटी १ पृ ६२) ।

गोज्झक्खिणी—स्वामिनी (बृ टी पृ १५०९) ।

गोट्ठ—आभीरपल्ली (कु पृ ७७) ।

गोट्ठग—मित्र—'गोट्ठगेहिं लड्डुगा सामण्णं कता' (निचू ३ पृ ४३७) ।

गोट्ठिय—मित्र (निचू ३ पृ २८४) ।

गोट्ठी—मित्र (निचू ३ पृ २८४) ।

गोडी—मिट्टी की गुटिका—'गोडीए घडो भिण्णो' (दअचू पृ ४४) ।

गोड्ड—१ गुड़ से बनी मिठाई (भ १८।१०७) । २ घुटना (आवचू १) ।

गोड्डिका—गेंद खेलने की लकडी जो अन्त मे मुड़ी हुई होती है (प्रसा ४३५) ।

गोण—१ गाय (प्रज्ञा १।६४) २ बैल (इ २६।१२; दे २।१०४) । ३ साक्षी (दे २।१०४) ।

गोणक—पात्र-विशेष (उपाटी पृ १०१) ।

गोणपोतल—बछड़ा (आवहाटी १ पृ १३२) ।

गोणिक्क—गायों का समूह (दे २।९७) ।

गोणिय—गौओं का व्यापारी (व्यभा ९ टी प ५) ।

गोणी—१ गाय (पिनि २२४) । २ पात्र-विशेष (उपाटी पृ १०१) ।

गोतिहाणी—गोवत्सा, बछिया–'तिवासजायाए गोतिहाणीए' (तंदु ८८)।

गोत्तफुसिया—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

गोत्थूभग—बकरा (निचू १ पृ ६)।

गोद्दह—नट, नर्तक–'गाममज्झयारे गोद्दहे रममाणे....' (निचू १ पृ १०३)।

गोध—१ ग्रामीण। २ म्लेच्छ व्यक्ति (उचू पृ १४८)।
३ राजपुरुष (आवचू १ पृ ५१७)।

गोधसालक—सुरा-विशेष (अंवि पृ ६४)।

गोप—चतुरिंद्रिय प्राणी-विशेष (निचू १ पृ ९७)।

गोपच्छेलक—प्राणी-विशेष (अंवि पृ ९२)।

गोप्फणण—चमड़े की डोरी से बना पत्थर फेंकने का साधन–'गोप्फण्णेण धणुएण वा वग्घादीण अभिभवति' (निचू २ पृ ६)।

गोफणा—पत्थर फेंकने का साधन–'गोफणा चम्मदवरगमया पसिद्धा, ताए लेट्ठुओ उवलओ वा वत्तिज्जंति' (निचू २ पृ ६)।

गोवर—गोवर (वृटी पृ ५११)।

गोव्वर—१ गोवर (वृभा १७३१)। २ एक गांव का नाम–'मगहा गोव्वरगामो' (आवनि ४९३)।

गोमट्ठा—गली (दे २।९६)।

गोमाणसिया (गोमासणिया ?)–शय्यारूप स्थान-विशेष
(जीव ३।३९८ टी प २३०)।

गोमिणी—स्त्री का संबोधन, चाटुवचन–'गोमिणी गोल्लविसए, सामिणी-गोमिणीओ चाटुवयणं' (दअचू पृ १६८)।

गोमियं—१ आदरसूचक संबोधन (द ७।१९)–'भट्टि सामिय गोमिया पूयावयणाणि निद्देसातिसु सव्वविभत्तिसु' (अचू पृ १६९)। २ कोतवाल (निभा ३३७१)। ३ कारावास का आरक्षक, जेलर (प्र २।१२)।

गोमी—१ शृगाली, सियारिन (व्यभा ६ टी प ५७)। २ कनखजूरा
(व्यभा ८ टी प ७)।

गोमुहिय—वक्षस्थल का आच्छादक वस्त्र (ज्ञाटी प २४६)।

गोम्मि—कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

गोम्मी—कनखजूरा (व्यभा ८ टी प ७)।

गोम्हि—कनखजूरा (निभा १२४५)।

गोम्हिय—कनखजूरा (अनुद्वा ५२५)।

गोम्ही—कनखजूरा, कर्णशृगालिका (प्रज्ञा १।५०)।

गोर—गेहूं–'गोर त्ति गोधूमा' (निचू ४ पृ १११)।

गोरंफिडी—गोधा, गोह (दे २।९८)।

गोरह—वाहनयोग्य तथा रथयोग्य बैल (आचूला ४।२७)।

गोरहग—१ तीन वर्ष का बैल (द ७।२४)। २ रथ की भांति तीव्र गति से दौडने वाला बैल। ३ प्रसव-समर्थ (दजिचू पृ २५३)।

गोरा—१ हल का दड। २ चक्षु। ३ ग्रीवा (दे २।१०४)।

गोल—१ युवा के लिए प्रयुक्त प्रिय संबोधन–'गोल जुवाणप्रियवयण' (दअचू पृ १६९)। २ गोलदेश मे व्यवहृत अवमानना सूचक शब्द–'होल इति वा गोल इति वा एतौ च देशान्तरेऽवज्ञा-संसूचकौ' (आटी प ३८८)। ३ साक्षी (दे २।९५)। ४ गोत्र-विशेष (अवि पृ १४९)।

गोला—१ गाय। २ गोदावरी नदी। ३ नदी। ४ सखी (दे २।१०४)।

गोलिका—रथ के आकार का यान-विशेष (अवि पृ १६६)।

गोलिय—छाछ आदि बेचने वाला–'एमेव तेल्लि-गोलिय-पूविय-मोरंड-दुस्सिए चेव' (बृभा ३२८१)।

गोलिया—१ गुटिका–तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्नो' (दनि २)। २ बड़ी थाली–'भंडिका–स्थाल्य. ता एव महत्यो गोलिका:' (स्थाटी प ३९८)।

गोलियालिंग—विशेष प्रयोजनों के लिए बनाए जाने वाले चुल्ली-स्थान –'अग्नेराश्रयविशेषा.। अन्ये तु देशभेदनीत्या पिष्टपाचन-काग्न्यादिभेदेनैतेषां स्वरूपं कथयन्ति तदप्यविरुद्धम्' (जीवटी प १२३)।

गोलियालिंछ—विशेष प्रयोजनों के लिए बनाए जाने वाले चुल्लीस्थान (जीव ३।११८)।

गोली—मथनी (दे २।९५)।

गोलुंकि—वितत वाद्य का एक प्रकार (नि १७।१३६)।

गोलोम—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४९)।

गोल्ला—बिम्बी फल, कुदरुन का फल (आवमटी प १९३)।

गोल्हा—१ बिम्बी, कुन्दरुन की वल्ली (प्रटी प ८१; दे २।९५)। २ बिंबीफल (जबूटी प ११२)।

गोवर—गोबर (दे २।९६)।

गोवहिया—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

गोवालिया—वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होने वाला अहिलोडिका नामक कीट (वृभा ५८७०)–'गोवालिया णाम अहिलोडिकाख्यो जीवविशेषः' (चू प २१३)।

गोविअ—अजल्पाक, नही बोलने वाला (दे २।९७)।

गोविल्ल—कञ्चुक, काचली (दे २।९४)।

गोवी—बाला (दे २।९६)।

गोव्वर—गोबर (दे २।९६)।

गोस—प्रभात, प्रातःकाल–'गोसे य पभायम्मी' (पंक ५७३; दे २।९६)।

गोसंखडी—जंगल की ओर जाने वाली गायों का समूह–'गोसंखडी उज्जूहिगा भन्नति' (निचू ३ पृ ३४८)।

गोसग्ग—प्रभातकाल–'विती गोसग्गम्मी पभाते पव्वावइस्सामो' (पंक ६०१; दे २।९६)।

गोसण्ण—मूर्ख (दे २।९७)।

गोह—१ गाव का मुखिया (दजिचू पृ ५५; दे २।८९)। २ राजपुरुष (निचू १ पृ १०४)। ३ ग्रामीण (निचू ३ पृ १३९)। ४ जार, उपपति (आवहाटी १ पृ २७७)। ५ अधम (आवहाटी २ पृ १३४)। ६ क्रूर मनुष्य (उसुटी प ७५)। ७ योद्धा। ८ पुरुष (दे २।८९ वृ)।

गोहट्ठाण—प्रदेश-विशेष–'जह ते गोहट्ठाणे वोसट्ठनिसट्ठचत्तदेहगा' (व्यभा १० टी प ८०)।

गोहातक—कोतवाल, राजपुरुष (अंवि पृ १६१)।

गोहिया—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

गोही—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।९)।

गोहुर—गोबर (दे २।९६)।

घ

घंघ—१ बृहत्, बड़ा (आवहाटी २ पृ १०९)। २ गृह (दे २।१०५)।

घंघल—१ झगड़ा (प्रा ४।४२२)। २ घबराहट।

घंघसाला—१ अनाथालय (निचू २ पृ १८) । २ कार्पटिक भिक्षुओं का आवास-स्थल (आवचू २ पृ २३०) ।

घंघोर—भ्रमणशील (दे २।१०६) ।

घंसा—भूमि की रेखा (जीवटी प १५२) ।

घंसिय—गाडी, यान (निचू ४ पृ १११) ।

घंसिया—गाड़ी (वृटी पृ ८६४) ।

घग्गर—घाघरा, स्त्रियों का वस्त्र-विशेष (निचू ४ पृ १४३; दे २।१०७) ।

घच्चण—उपमर्दन (ओनि १६८) ।

घट्ट—१ कुसुभ रग से रंगा हुआ वस्त्र । २ नदी का घाट । ३ वेणु, वास (दे २।१११) ।

घड—मित्र, समवयस्क (निचू ३ पृ ४६८) ।

घडभोज्ज—गोष्ठी, मंडली—'घडभोज्जं नाम महत्तरग-अणुमहत्तरग-ललिता-सणिता कडुगदड-धारपरिग्गहिता गोट्ठी' (दश्रुचू प ५०) ।

घडा—गोष्ठी (निभा ११७५) ।

घडाभोज्ज—गांव-प्रधान और अनुप्रधान द्वारा गांव के वाहर दिया जाने वाला भोज (व्यभा १० टी प ६) ।

घडिअघडा—गोष्ठी (दे २।१०५) ।

घडिगा—घटी, वच्चों का खिलौना—'घडिगा णाम कुडिल्लगा चेडरूवरमणिका' (सूचू १ पृ ११८) ।

घडिया—गोष्ठी (नदीटि पृ १४२) ।

घडी—गोष्ठी (दे १।२०५) ।

घडुल्लय—घडा (दअचू पृ ११२) ।

घडोपल—चतुष्पद परिसर्प-विशेष (अवि पृ २२६) ।

घढ—टीला, स्तूप (पा ९५६) ।

घण—छाती, वक्षस्थल (वृभा ६१६८) ।

घणघणाइय—अनुकरणवाची शब्द, रथ की आवाज (भटी पृ ८८७) ।

घणपिच्छिलिका—आभूषण-विशेष (अवि पृ ७१) ।

घणवाहि—इन्द्र (दे २।१०७) ।

घणसंताण—जाल का कीडा, मकडा (पंक २७४) ।

घण्ण—१ वक्षस्थल । २ रगा हुआ (दे २।१०५) । ३ घात्य, मार डालने योग्य ।

घतण—भाड, विदूपक (वृभा ६३२५) ।

घम्मकरक—पानी छानने का कपडा—'घम्मकरकादि परिपूयं घेप्पति' (निचू १ पृ ७४)।

घम्मोई—तृण-विशेष (दे २।१०६)।

घम्मोडी—१ मध्याह्न। २ मच्छर। ३ ग्रामणी नामक तृण (दे २।११२)।

घयगोलिय—घी वेचने वाला (निचू २ पृ ३६२)।

घयघट्ट—घी का मैल (पव ३७६)।

घयण—भाण्ड, वहुरूपिया (नदी ३८।३)।

घयमढु—घृतसार, ऊपर का घी (व्यभा ३ टी प १०६)।

घर—गृह (अनु ३।२४)।

घरकुडी—१ घर के वाहर का कमरा। २ घर के चौक मे स्थित कमरा (ओनि १०५)।

घरकुडीरी—स्त्री का शरीर—'किह ताव घरकुडीरी कई सहस्सेहिं अपरितंतेहिं' (तदु १२०)

घरघंट—चिडिया, गोरैया पक्षी (दे २।१०७)।

घरघुला—छिपकली (अवि पृ २२६)।

घरट्ट—१ अरहट, पानी निकालने का यंत्र—'घरट्टे वाहेऊण तुसे खवावेइ' (उसुटी प ६६)। २ कच्चा चावल—'लोट्टः—घरट्टादिचूर्ण. (पिटी प १०)।

घरणी—गृहिणी (उ २१।४)।

घरतोलिया—छिपकली (दश्रुचू प ६८)।

घरत्थ—गृहस्थ (दअचू पृ ४)।

घरपूपल—विलशायी जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

घरपोपलिका—छिपकली (अंवि पृ २३७)।

घरयंद—दर्पण (दे २।१०७)।

घरास—गृहवास (निभा १६८५)।

घरिणी—घरवाली, पत्नी, गृहिणी (उसुटी प १३७)।

घरिल्ली—पत्नी (दे २।१०६)

घरोइला—छिपकली (प्रज्ञा १।७६)।

घरोल—घर मे बना हुआ भोजन-विशेष (दे २।१०६)।

घरोलिका—छिपकली (ओटी प १२६)।

घरोलिया—छिपकली (प्र १।८)।

घरोली—छिपकली–'भमइ जं उमत्ता घरोलिव्व' (दे २।१०५)।
घल्ल—अनुरक्त (दे २।१०५)।
घल्लिअ—१ क्षिप्त, डाला हुआ (दे ६।११६ वृ)। २ निर्मित किया हुआ।
घल्लित—आक्रांत होना, दबना–'सो रायगिहच्छणपिंडोलगो वेभारगिरिसिलाए घल्लितो' (सूचू १ पृ २३२)।
घसा—१ पोली भूमि (द ६।६१)–'घसा नाम जत्थ एगदेसे अक्कममाणे सो पदेसो सव्वो चलइ सा घसा भण्णइ' (जिचू पृ २३१)।
२ भूमिरेखा।
घसी—१ पोली भूमि। २ पुराने भूसे का ढेर–'गसति सुहुमसरीरजीव-विसेसा इति घसी अंतोसाणो भूमिपदेसो पुराणभूसातिरासी वा' (दअचू पृ १५६) ३ ढालू भूमि–'घसी नाम स्थलादधस्तादवतरण' (आटी प ३३७)। ४ भूमि-रेखा (जीव ३।६२३)। ५ अवतरण, नीचे उतरना।
घाड—मस्तक के नीचे का भाग (ति ९५३)।
घाडा—मस्तक के नीचे का भाग (जबूटी प १७०)।
घाडिय—मित्र–'घाडिउ त्ति वयंसो' (निचू २ पृ ५२)।
घाडियय—मित्र (ज्ञा १।२।६५)।
घाण—१ पावा, कडाही आदि मे एक बार डालने का परिमाण (प्रसाटी प ५३)। २ कोल्हू–'तिलपीडनयन्त्रे' (पिटी प ९)।
घाणक—कोल्हु, घानी (प्रसाटी प १४३)।
घाणी—दुर्गन्ध (निचू २ पृ ४१)।
घायण—गायक (दे २।१०८)।
घार—प्राकार, परकोटा (दे २।१०८)।
घारंत—घृतपूर, घेवर (दे २।१०८)।
घारिया—मिष्टान्न-विशेष (दअचू पृ २१७)। घारी (गुजराती)।
घारी—१ चील पक्षी (दे २।१०७)। २ छन्द-विशेष।
घालइ—एक प्रकार के तापस (निरटी पृ २५)।
घासिआ—घास लाने वाली (ओटी प ९७)।
घिं—१ ग्रीष्म ऋतु–'घिं-सिसिरवासे' (ओभा ३१०)। २ गरमी।
घिंघिणोपित—घूर्णित (?) (अंवि पृ १४८)।
घिंसु—१ गरमी–'घिंसु मे विहुयण विजाणाहि' (सू १।४।४१)। २ ग्रीष्म ऋतु।

घिसुरि—गरमी (सूचू १ पृ १४७)।

घिट्ट—कुब्ज (दे २।१०८)।

घिय—निन्दित (दे २।१०८)।

घिरोलिया—छिपकली (आवहाटी १ पृ २१२)।

घिसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।

घुंघुरुड—उत्कर, ढेर (दे २।१०६)।

घुंट—घूट (बृभा २३६०)।

घुंटिय—घूट (तदु ११७)।

घुंटिआ—घूट—'जाव अडसाउरस त्ति अंजलीहिं घुटिया तेण' (उसुटी प ३७)।

घुंटित—घुटा हुआ (जंबूटी प २०)।

घुक्कभरध—अंतरिक्ष मे समुद्भूत क्षुद्रजतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

घुक्किय—चपल, कपि-चेष्टा—'दे मदभग्ग ! घुक्किय, तूससि त णाममेत्तेणं' (जीभा ८३८)।

घुग्घुच्छण—खेद (दे २।११० वृ)।

घुग्घुच्छणय—खेद (दे २।११०)।

घुग्घुरक—टखना, गुल्फ (आवहाटी १ पृ १३७)।

घुग्घुरि—मेढक (दे २।१०६)।

घुग्घस्सुसय—आशका युक्त वचन (दे २।१०६)।

घुघुयंत—'घु-घु' आवाज करना, उल्लू का बोलना (ज्ञा १।८।७२)।

घुट्टघुणिअ—पर्वत की बड़ी शिला (दे २।११०)।

घुणघुणिआ—कर्णोपकर्णिका, अफवाह (दे २।११०)।

घुणाहुणी—कर्णोपकर्णिका, एक कान से दूसरे कान, कानाकानी (उसुटी प १६२)।

घुत्तिय—गवेषित (दे २।१०६)।

घुरुघुरि—मेढक (दे २।१०६)।

घुल्ला—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

घुल्लिका—द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (जीवटी प ३१)।

घुसिणिअ—गवेषित (दे २।१०६)।

घुसिरसार—अवस्नान, विवाह आदि के अवसर पर किया जानेवाला मसूर आदि का उबटन (दे २।११०)।

घुसुली—विलौना करने वाली स्त्री (पिनि ५७३)।

घूरा—१ जंघा। २ खलक–शरीर का अवयव-विशेष (सू २।२।२२)।

घूरीया—१ जंघा। २ खलक—शरीर का अवयव-विशेष (सूटी २ प ६६)।

घेइण—बहुरूपिया–'घेइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेतो कंदप्पा भवंति (निचू ४ पृ २५)।

घेवर—मिष्टान्न-विशेष, घृतपूर (दे २।१०८)।

घोट्ट—घूट–'आउवकाए जति सो घोट्टे करेइ ततिया चउलहुगा' (निचू ४ पृ ४८)।

घोड—१ धूर्त्त (निभा १७१३)। २ कामासक्त (निचू २ पृ ४४०)। ३ नीच जाति के लोग, डगर आदि (व्यभा ७ टी प ४१)। ४ राज्य-कर्मचारी (बृभा २०६६)। ५ सफाई करने वाले (बृभा २६३४)।

घोडग—घोड़ा (आचू पृ ३७३)।

घोडा—घोड़ा (जीवटी प ३८)।

घोडिय—मित्र (वृ ५)।

घोर—१ विनष्ट। २ गीध पक्षी (दे २।११२)।

घोरण—खर्राटे भरना (ओटी प ५८)।

घोरि—शलभ-विशेष (दे २।१११)।

घोरुइणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञाटी प ४७)।

घोल—१ वेष्टित (आवहाटी १ पृ २८३)। २ वस्त्र से छाना हुआ दही (प्रसा २२६)।

घोलचम्म—एक प्रकार का थैला (नंदीटि पृ १३८)।

घोलवड—खाद्य पदार्थ, दहीबड़ा (प्रसा २२६)।

घोलिय—१ अत्यंत लीन–'अज्जरक्खिओ जविएसु अईव घोलिओ पुच्छइ' (उसुटी प २४)। २ शिलातल। ३ बलात्कार (दे २।११२)।

घोलिर—घूमने वाला (उसुटी प ६०)।

घोसालई—लता-विशेष (प्रज्ञाटी प ३३)।

घोसाली—शरद् काल मे होने वाली लता-विशेष (दे २।१११)।

घोसेडिय—पटोल का शाक (राजटी पृ ८६)।

घोहणुमच्छ—मत्स्य-विशेष (अवि पृ २२८)।

च

चउक्क—१ चौराहा (औप १)। २ आंगन, चौक (दे ३।२)—'हिअयचउक्के' (वृ)।

चउक्कर—कार्तिकेय (दे ३।५)।

चउरंचिध—राजा सातवाहन (दे ३।७)।

चउर—पर्वत—'पत्ता य इमे चउरसिहरम्मि' (कु पृ १६२)।

चंग—सुन्दर, मनोहर (दे ३।१)।

चंगवेर—१ काष्ठ पात्र—'कट्ठमय समितातितिम्मणमलण चंगेरिगासंठितं चंगवेर' (दअचू पृ १७२)। २ बाँस से बना पात्र (दजिचू पृ २५४)।

चंगिमा—सौन्दर्य (विभा १००)।

चंगेरि—तृण से निर्मित पात्र, टोकरी (जीभा २३६७)।

चंगेरिया—टोकरी (राज १२)।

चंगेरी—१ बास का पात्र (दजिचू पृ २५४)। २ काष्ठ का बड़ा पात्र। ३ बड़ी पट्टलिका (प्रटी प १३)।

चंगोड—सिक्के, रुपये आदि रखने का कोष्ठागार (वृभा ५११६)।

चंचइय—१ उपचित, खचित। २ शोभित (कु पृ २०८)।

चंचट—क्षुद्रकीट-विशेष (जीवटी प २८२)।

चंचपुड—आघात, प्रहार (जंबू ३।१०६ पा)।

चंचप्पर—असत्य (दे ३।४)।

चंचुच्चिय—कुटिल गमन, टेढी चाल (औप ६४)।

चंचुमालइय—रोमाचित, पुलकित—'धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चचुमालइयतणुए' (भ ११।१३४)।

चंचुय—जाति-विशेष (कु पृ ४०)।

चंडातक—अर्धोरुक, स्त्रियों का वस्त्र-विशेष (दे ३।१३)।

चंडिअ—छिन्न (दे ३।३)।

चंडिकित—क्रोधी (निचू २ पृ ३८४)।

चंडिक्क—क्रोध, रौद्रता—'कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे' (भ १२।१०३; दे ३।२)।

चंडिक्कय—अत्यधिक कुपित, भयंकर—'रुट्ठा कुविया चंडिक्किया' (भ ३।४५)।

चंडिज्ज—१ पिशुन, चुगलखोर। २ क्रोध (दे ३।२०)।

चंडिल—पीन, पुष्ट (दे ३।३)।

चंदइल्ल—मयूर (दे ३।५)।

चंदट्ठिआ—१ कधा। २ गुच्छा (दे ३।६)।

चंदण—द्वीन्द्रिय जतु, वेहडा या रुद्राक्ष के पेड मे होनेवाला जीव (जीवटी प ३१)।

चंदणि—वर्चोगृह, शौचालय (आवहाटी २ पृ १२८)।

चंदणिउयय—आचमन का पानी वहने का स्थान (आचूला १।६२)।

चंदणिका—१ वर्चोगृह, शौचस्थान (उशाटी प १०६)। २ पुष्प-विशेष (अवि पृ २३२)।

चंदणिया—१ गदे पानी की नाली—'ताए चदणियाए छूढो—गृहस्रोतर्सि इत्यर्थः' (उसुटी प ३१)। २ वर्चोगृह, शौचालय (आवहाटी १ पृ २३९)।

चंदणी—रोहिणी, चाद की पत्नी—'बंभदत्तो वि गुरुगुणवरधणुकलिओ त्ति माणिउ मणइ। रयणवइ रयणिवई चंदो इव चदणीजोगो' (उसुटी प १९२)।

चंदवडाया—वह स्त्री जिसका आधा शरीर ढका हुआ हो (दे ३।७)।

चंदाणिउदय—१ जूठे बर्तन धोने का स्थान—'चदाणिउदकं जहि उच्छिट्ठ-भायणादि धुव्वति' (आचू पृ ३३८)। २ कुल्ला करने का स्थान—'चंदाणिउदयत्ति आचमनोदकप्रवाहभूमि.' (आटी प ३४०)।

चंदालग—पूजा के लिए ताम्र-पात्र (सू १।४।४४ पा)।

चंदिल—नापित, नाई (दे ३।२)।

चंदोज्ज—चन्द्र विकासी कमल, कुमुद (दे ३।४)।

चंदोज्जय—कुमुद (दे ३।४ वृ)।

चंपय—ढक्कन—'गोयमा! नो पदीवे झियाइ,····नो तेल्ले झियाइ, नो दीव-चपए झियाइ, जोती झियाइ' (भ ८।२५६)।

चंपिय—आक्रमण, दबाव (तंदु १४९)।

चंभ—१ हल से जोतने योग्य खेत—'करिसए एवकेक्कं हलचभं देह' (उसुटी प ४५)। २ हल द्वारा विदारित भूमिरेखा (दे ३।१)।

चकप्पा—त्वक्, छाल (दे ३।३) ।

चकोरित—विद्योतित (नदीचू पृ ६) ।

चक्कणभय—नारंगी का फल (दे ३।७) ।

चक्कणाहय—ऊर्मि, तरग–'णीसासचक्कणाहयताविय' (दे ३।६) ।

चक्कल—१ सिंहासन के चार पादों के नीचे का वर्तुलाकार भाग (जवूटी प ५५) । २ गोलाकार तकिया (वृटी पृ १०५५) । ३ कुंडल । ४ वर्तुल । ५ झूले का फलक । ६ विशाल (दे ३।२०) ।

चक्कलंडा—दुमुही सर्पिणी (आवदी प १६३) ।

चक्कलित—गोलाकार टुकड़ा (आचू पृ ३४४) ।

चक्कलिय—गोल (निचू ३ पृ ४८१) ।

चक्कवुंडा—दुमुही सर्पिणी (आवमटी प ४६७) ।

चक्किम—अति उत्तम–'चक्किमातिउत्तमा ते णियमा तप्पमाणजुत्ता भवति' (अनुद्वाचू पृ ५२) ।

चक्किय—समर्थ–'चक्किया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए' (भ १३।८७) ।

चक्कुलंडा—सर्प-विशेष (दे ३।५) ।

चक्कुलेंडा—दुमुही सर्पिणी (आवहाटी १ पृ २३८) ।

चक्कोडा—अग्नि-विशेष (दे ३।२) ।

चक्खडिअ—जीवितव्य, जीवन (दे ३।६) ।

चक्खणिक—आस्वादनिक, चखने योग्य (अंवि पृ २५८) ।

चक्खिअ—चखा हुआ, आस्वादित (प्रा ४।२५८) ।

चक्खुड्डुण—प्रेक्षणीय नाटक आदि (दे ३।४) ।

चक्खुमेंट—एक आख को खोलना और दूसरी आंख को बंद करना–'चक्खुमेटा णाम एक्क अच्छि उम्मिल्लेति, वितिय णिमिल्लेति' (निचू ४ पृ ३५४) ।

चक्खुरक्खणी—लज्जा (दे ३।७) ।

चच्च—विलेपन (दे ६।७६) ।

चच्चपुट—घोड़ों का विशेप पादघात जिससे उनकी उन्मत्तता द्योतित होती हो (जंवू ३।१०६ पा) ।

चच्चपुड—आघात, घोड़ों का पाद-प्रहार—'खुरचलणचच्चपुडेहिं धरणियलं अभिहणमाणं अभिहणमाणं' (जंबू ३।१०९)।

चच्चय—विलेपन—'गोसीसचदणेण चच्चए दलयइ (राज ३५१)।

चच्चरिक्का—फोड़ा-फुन्सी (आवचू २ पृ १६८)।

चच्चसा—वाद्य-विशेष (राजटी प १२६)।

चच्चा—१ विलेपन, शरीर पर सुगंधित द्रव्य लगाना (ज्ञा १।१।१२७)। २ हस्तबिंब, कुंकुम आदि से लिप्त हथेली का छापा। ३ हस्ततल का आघात, हथेली से धक्का मारना (दे ३।१९)।

चच्चाग—सुगन्धित द्रव्य से उपलिप्त (राज १३१)।

चच्चाय—सुगंधित द्रव्य से उपलिप्त (जीव ३।४४६)।

चच्चिक—स्थासक, सुगंधित वस्तु का विलेपन (प्रा २।१७४)।

चच्चिक्क—विभूषित—'साहू गुणरयणचच्चिक्को' (चउ ३९; दे ३।४)।

चच्चिर—विलेपित (कु पृ १२८)।

चट्टुलग—खड-खड किया हुआ (आवटि प १०४)।

चट्ट—१ हर किसी का द्वार खोलने वाला व्यक्ति, धूर्त्त—'चट्टा वारउग्घट्टगादि' (आचू पृ ३२९)। २ विद्यार्थी (आवचू २ पृ ६०)। ३ आवारा (निचू ३ पृ २४५)। ४ सफाई करने वाले कर्मचारी (वृटी पृ ७४०)। ५ तत्र-मत्र का ज्ञाता—'राइणा वाहराविया गारुडिया भोइयभट्टचट्टाइणो' (उसुटी प १७४)। ६ ब्राह्मण (आवहाटी १ पृ २६६)। ७ बुभुक्षा।

चट्टक—काष्ठनिर्मित चम्मच (नदीटि पृ १३९)।

चट्टसाला—पाठशाला (वृटी पृ १७१)।

चट्टिय—चाट गया—'घय····सुणएहिं चट्टियं' (वृटी पृ १०८)।

चट्टु—दारुहस्त, काठ का चम्मच (दे ३।१)।

चट्टुअ—दारुहस्त, काष्ठ-चम्मच (दे ३।१ वृ)।

चट्टुक—काठ की बड़ी कड़छी (पिटी प ४९)।

चड—१ चोटी (दे ३।१)। २ शीघ्र (वृटी पृ १३१६)।

चडकर—१ समूह (जंबू २।६५)। २ बार-बार कहना (वृटी पृ १६१३)। ३ विस्तार (विपाटी प ३६)।

चडक्क—१ चटत्कार (प्रा ४।४०६)। २ शस्त्र-विशेष।

चडगर—१ समूह—'भडचडगरपहकरवदपरिक्खित्ते' (अंत ३।९४)। २ बहाना, आरोप (जीभा ८७०)। ३ अधिक कहना, बार-बार

कहना (वृभा ६१०५)। ४ वढा-चढा कर कहना—'महता चडगरत्तणेण अत्थकधा हणति' (सूचू १ पृ २३५)। ५ विस्तृत (भटी पृ ८५२)।

चडप्फडंत—छटपटाना—'चडप्फडंते य त्ति अभीक्ष्णमितस्ततो भ्राम्यत.' (वृटी पृ १६६६)।

चडफड—हलचल (आचू पृ ३५७)।

चडवेला—चपेटा (प्रटी प ५७)।

चडाविय—प्रेषित—'तिण्णिवि छिन्नकडए चडावियाणि' (दहाटी प ६६)।

चडिय—चढा हुआ, आरूढ (प्रा ४।४४५)।

चडिआर—आटोप, आडंवर (दे ३।५)।

चडुग—पात्र-विशेष (व्यभा ८ टी प २२)।

चडुत्तर—चढना-उतरना (वृटी पृ ११४५)।

चडुलग—खण्ड-खण्ड किया हुआ—'विदुलगचडुलगछिन्ने' (सूनि ६९)।

चडुला—रत्न-तिलक, तिलक के स्थान पर पहना जाने वाला मस्तक का आभूपण-विशेप (दे ३।८ वृ)।

चडुलातिलय—स्वर्ण-शृंखला मे लटकता हुआ रत्न-तिलक, मस्तक का आभूपण-विशेप—'चडुलातिलय कंचणसकलियालविरयण-तिलयम्मि' (दे ३।८)।

चड्डु—१ पिठर के आकार का पात्र (वृभा १९५१)। २ उद्दंड। ३ वहुभक्षी (ति ११९३)।

चड्डुग—काष्ठपात्र-विशेष—'कट्ठमयवारचड्डुग' (निभा ३०६०)।

चड्डुय—काष्ठपात्र—'वारओ चड्डुयं कव्वयं त पि कट्ठमयं' (निचू ३ पृ ३४३)।

चणट्ठिया—गुञ्जा (अनुद्वाहाटी पृ ७६)।

चणविका—चना, धान्य-विशेप (अंवि पृ २२०)।

चणा—वुद्धि, निपुणता, चतुराई—'दव्व चणाए सव्वं आकड्ढितं' (आवचू १ पृ ५२४)।

चणोठिया—गुजा (अनुद्वामटी प १४३)।

चण्णाडीतय—ऊर्ध्व ग्रीवा—'दव्वुण्णतो जो चण्णाडीतएण विणिहालितो जाति' (दअचू पृ १०२)।

चत्त—तकली, सूत कातने का उपकरण (दे ३।१)।

चत्ताल—चालीस (निचू ४ पृ ११३)।

चत्थरि—हास्य (दे ३।२)।

चदुलग—तिर्यक्—'चदुलगछिन्नं तिर्यक्छिन्न' (आवहाटी २ पृ १०७)।

चप्पडग—काष्ठ-यन्त्र-विशेष (प्र ३।१२)।

चप्पडय—१ चार पल के भार वाला (?) (बृभा ५९७५)। २ चपटा (निभा ८४४)।

चप्पडिज्जंत—आक्रान्त होता हुआ (सूचू १ पृ १९१)।

चप्पाचप्प—ठूस-ठूस कर भरना—'ताहे सुक्कस्स चप्पाचप्प भरेइ' (निचू ४ पृ १४६)।

चप्पाचप्पि—ठूस-ठूस कर भरना—'चप्पाचप्पिं भरेमाण दट्ठु भणति' (निचू ४ पृ १५९)।

चप्पुट्टिका—जादू-टोना—'विंटलानि खिटिका चप्पुटिकादीनि प्रयुञ्जते' (व्यभा ७ टी प ४१)।

चप्पुडिया—चुटकी (ज्ञा १।३।२९)।

चप्पुडी—चुटकी (दे ८।४३)।

चप्फल—१ शेखर-विशेष, शिरोभूषण। २ असत्य, झूठ (दे ३।२०)। ३ झूठा, मिथ्याभाषी (कु पृ २२७)।

चप्फलया—मिथ्याभाषिणी (प्रा ३।३८)।

चप्फलिग—शेखर, मुकुट (नंदीटि पृ १४२)।

चप्फलिगाइय—असत्य, कुतूहलपूर्ण—'सो भणइ—चप्फलिगाइयं कहेइ' (आवहाटी १ पृ २८८)।

चब्बच्चब—भोजन करते समय चब-चब शब्द करना—'पूवलियं खायंतो चब्बच्चबसद्दं सो पर कुणइ' (बृभा २६२४)।

चमढण—१ खिन्नता, उद्विग्नता (बृभा ५२९६)। २ गर्हणा, खिसना (ओनि ७९)। ३ कदर्थना (ओनि १९३)। ४ जिसकी कदर्थना की जाय वह (ओनि २३७)। ५ मर्दन, अवमर्दन (ओटी प १२६)। ६ आखे बंद करना (निभा १७३०)। ७ आक्रमण। ८ भोजन।

चमढणा—१ उद्विग्नता (बृभा १५८४)। २ पादप्रहार आदि (ओनि १९३)। ३ मर्दन (ओभा १८७)।

चमढिय—विनष्ट, विनाशित (व्यभा ४।२ टी प २०)।

चमढेत्ता—तिरस्कार कर—'चमढेत्ता गओ—तिरस्कृत्य गत.' (आवहाटी १ पृ १३६)।

चम्मडिल—पक्षी-विशेष (अवि पृ २२६)।

चम्मरुक्ख—पुरुष—'दवावेसु इमस्स चम्मरुक्खस्स दीणाराणं अद्धलक्खं' (कु पृ ३२)।

चम्मिरा—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

चम्मिराज—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

चम्मेट्ठ—व्यायाम में काम आने वाला उपकरण मुद्‌गर आदि (भटी पृ १४१३)।

चरक्ख—पशु-विशेष (दश्रु ७।२४)।

चरु—१ नाम, आख्या (निचू ३ पृ २२५)। २ मंत्रित खाद्य-विशेष—'मा मम पुत्तोवि एव नासउत्ति तीए खत्तियचरू जिमिओ' (आवहाटी १ पृ २६१)। ३ चरु-पात्र मे तैयार किया गया चावल आदि द्रव्य जो वलि के काम आता है (निरटी पृ ३२)।

चरुग—१ नाम, आख्या (निभा ३४६०)—दाणरुई सड्ढो वा णिवेयण-चरुववदेसं कातु सावूण देति' (चू ३ पृ २२५)। २ मंत्रित खाद्य-विशेष—'अहं ते चरुगं साहेमि जेणं ते पुत्तो वंभणस्स पहाणो होहिति' (आवहाटी १ पृ २६१)।

चरुल्लेव—नाम, आख्या (दे ३।६)।

चरेडिया—छेना (नंदीटि पृ १८२)।

चलणि—पैर तक लगने वाले कीचड़ का स्थान—'पंकवहुला पणगवहुला चलणिवहुला' (भ ७।११८)।

चलणिया—उपकरण-विशेष (पंव ७८२)।

चलणी—पैरो का स्पर्श करने वाला कीचड़—'चलनी चरणमात्रस्पर्शी कर्दमः' (जीवटी प २६२)।

चलिका—फल-विशेष (अवि पृ ७०)।

चल्ल—चरण (अंवि पृ ६०)।

चवग—भट्टी—'महल्ले चवगे चुल्लीसु य दहंति' (सूचू १ पृ १२५)।

चवचव—चवाते समय होने वाली 'चव-चव' की आवाज (भ ७।२५)।

चवलग—धान्य-विशेष (दअचू पृ १४०)।

चवलय—धान्य-विशेष (दश्रुचू प ३८)।

चवला—अन्न-विशेष (बृटी पृ ६०)। चवला (राज)।

चवलिका—धान्य-विशेष, चवला (भटी प २७४)।

चवलिय—भाजन-विशेष—'थाल-मल्लग-चवलिय-दगवारक' (जीव ३।५८७)।

चवेडी—१ श्लिष्ट करसंपुट, बद्धांजलि (दे ३।३)। २ संपुट (वृ)।

चवेण—निन्दा (दे ३।३)।

चसणिका—बहुपाद-प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

चहित—१ दृष्ट, वांछित। २ चन्दन आदि से चर्चित—'चहिता मनोरथ-दृष्टिदृष्टा अथवा गोशीर्षचन्दनादिचर्चिता' (नंदीचू पृ ४६)।

चहिय—अभिलषित, वांछित, चाहा हुआ—'सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए' (उपा ७.१०)।

चहुट्ट—१ निमग्न, लीन—'चहुट्टणक्खो त्ति कुणइ चंडिक्कं' (दे ३।२)। २ चिपका हुआ।

चाउरंतय—लग्न-मंडप, चवरी—'तत्थ कयं धवलहरस्स बहुमज्झदेसभाए सव्वधण्णविरूढकुरा चाउरतयं' (कु पृ १८१)।

चाउल—१ चावल (स्था ३।३७६, दे ३।८)। २ चावल का, चावल से संबंधित—'तहेव चाउल पिट्ठं' (द ५।२।२२)।

चाउलय—चावल (दे ३।८ वृ)।

चाउल्ल—चपल (अवि पृ ३)।

चाड—१ चुगलखोर, धूर्त (दअचू पृ २५५, दे ३।८)। २ पलायन—'पलायन चाडो णासणं इति चूर्णौ' (बृटी पृ ४०८)।

चाडय—चुगलखोर (निचू ३ पृ ४२)।

चाय—कद-विशेष (अंवि पृ १८१)।

चार—१ चिरौंजी का पेड (अनुद्वामटी प ४२; दे ३।२१)। २ बंधन-स्थान, कारावास। ३ इच्छा (दे ३।२१)। ४ फल-विशेष (प्रज्ञा १६।५५)।

चारक्खपाल—कैदखाने का अध्यक्ष, जेलर (आवचू २ पृ १८२)।

चारण—ग्रन्थिच्छेदक (दे ३।६ वृ)।

चारणअ—ग्रन्थिच्छेदक, पॉकेटमार (दे ३।६)।

चारवाय—ग्रीष्म ऋतु का पवन (दे ३।६)।

चारायण—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

चारि—चारा (ओनि २३८)।

चारुपीणय—पात्र-विशेष (जंबूटी प १००)।

चालणा—पूछताछ—'ता किं करेमि किंचि से चालणं, अहवा ण करेमि, कज्जं पुणो विहडइ' (कु पृ १५१)।

चालवास—मस्तक का आभूषण-विशेष (दे ३।८)।

चालीस—चालीस (उसुटी प १६१)।

चावल्ल—धान्य-विशेष (निचू २ पृ १०६)।

चाववंस—पर्व-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४१।१)।

चास—हल द्वारा विदारित भूमि-रेखा (दे ३।१)।

चाहित—प्रेक्षित—'चहित ति चाहितं प्रेक्षित निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरं' (नंदीचू पृ ४६)।

चिंच—इमली (दश्रुचू प ३८)।

चिंचइअ—१ खचित—'चिंचइअं ति देशीवचनतः खचितमित्युच्यते' (आवहाटी १ पृ १२३)। २ मण्डित, शोभित—'समणो समण-गुणनिउणचिंचइओ' (ति ७०२)। ३ चलित (दे ३।१३)।

चिंचणिया—इमली (व्यभा ६ टी प ८)।

चिंचणी—१ घरट्टिका, धान पीसने की चक्की (दे ३।१०)। २ इमली का पेड़।

चिंचा—इमली, इमली का पेड़ (विपा १।६।१६; दे ३।१०)।

चिंचिणिआ—१ इमली (ओनि २६)। २ इमली का पेड़ (निभा २६१३; दे ३।१०)।

चिंचिणिंचिचा—इमली—'कैश्चित् चिंचिणिंचिचाशब्द. समस्त एव अम्लिकावाचकत्वेन प्रोक्त' (दे ३।१० वृ)।

चिंचिणी—इमली का पेड (निचू ६ पृ ७४; दे ३।१०)।

चिंचिय—१ मेंढक की चिं-चिं की आवाज (उसुटी प ३०५)। २ मंडित, भूषित।

चिंचिल्लिअ—भूषित (पा १४६)।

चिंधाल—१ रम्य। २ उत्तम (दे ३।२२)। ३ नये रंगे वस्त्र की पगडी (कु पृ ४७)।

चिंफलक—बैठने का आसन-विशेष—'फलकी भिसी चिंफलको मंचकोऽथ मसूरको' (अंवि पृ १५)।

चिंफुल्लणी—अर्धोरुक, स्त्रियों का ऐसा अधोवस्त्र जो साथल तक आता हो (दे ३।१३)।

चिकिचिकि—चिक्-चिक् करना, फुसफुसाना (सूचू २ पृ ३६८)।

चिक्कण—१ चिकना, दारुण, सघन—'विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं' (द ६।६५)। २ श्लक्ष्ण (भ १६।५२)।

चिक्कदोरिया—द्वार पर पर्दे के रूप मे लगाई जाने वाली चटाई आदि (दजिचू पृ २५६)।

चिक्का—१ अल्प वस्तु। २ पानी आदि की पतली धारा (दे ३।२१)।

चिक्खय—परिष्कृत (?) (निचू ३ पृ ४४३)।

चिक्खल्ल—कर्दम, कीचड—'चिच्च करोति खल्लं च भवति चिक्खल्ल' (अनुद्वा ३६८, दे ३।११)।

चिक्खित—खुला हुआ—'चिक्खितदार पिहए' (पंक ५६६)।

चिक्खिलिच्चिय—कीचडयुक्त (आवचू १ पृ १३१)।

चिक्खिल्ल—कर्दम—'चिक्खिल्लशब्द कर्दमे देशी' (से १०।४३)।

चिगचिगंत—चमकता हुआ, चकचकाहट करता हुआ—'मुग्गसेलो चिगचिगंतो अच्छइ' (वृटी पृ १०१)।

चिच्च—१ चिक्-चिक् होना (अनुद्वा ३६६)। २ त्याज्य (पंक ३७१)। ३ चिपटी नासिका वाला (दे ३।६)। ४ रमण, कटिभाग—'चिच्चठिअविल्ला उअ धावइ जणणी' (दे ३।१०)। (रमण—The hip and the loins, Apte)।

चिच्चर—चपटी नासिका वाला (दे ३।६ वृ)।

चिच्चरय—चपटी नाक वाला (दे ३।६)।

चिच्चि—अग्नि (दे ३।१०)।

चिच्ची—चीत्कार—'महया महया चिच्चीसद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए' (विपा १।२।३४)।

चिट्ठं—१ निश्चेष्ट (आ ८।८।२०)। २ गाढ—'चिट्ठंति वा गाढति वा' (आचू पृ १४१)।

चिट्ठणा—अवस्था—'अवत्थाणं अवत्था या एगट्ठा चिट्ठणा ति व' (जीभा १६६६)।

चिडग—पक्षि-विशेष (प्रज्ञा १।७६)।

चिडिग—चटक पक्षी (प्र १।६)।

चिणोट्ठी—गुजा (दे ३।१२)।

चित्त—काष्ठ-विशेष—'चित्तशब्देन किलिञ्जादिकं वस्तु किञ्चिदुच्यते' (अनुटी प ५)।

चित्तठिअ—परितोषित, सन्तुष्ट (दे ३।१२)।

चित्तदाउ—मधुपटल, मधुमक्खियों का छाता (दे ३।१२)।

चित्तपक्ख—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

चित्तपत्तय—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेप (उ ३६।१४८)।

चित्तपरिच्छेय—लघु, छोटा (औप ५७)।

चित्तपरिच्छोक—लघु, छोटा—'चित्तपरिच्छोको—लघुः' (भटी प ३१८)।

चित्तपरिच्छोय—लघु (भटी प ३१८)।

चित्तल—१ गोलाकार टुकड़े (दजिचू पृ १६८)। २ हरिण की आकृति वाला जंगली पशु-विशेष (प्रटी प १०)। ३ विभूषित (दे ३।४)। ४ रमणीय (वृ)। ५ चित्रविचित्र, चितकबरा (पा १६७)।

चित्तविय—प्रोत्साहित किया—'चित्तविया आडत्तिया' (कु पृ ६५)।

चित्ताचिल्लडय—जगली पशु-विशेष (आचूला १।५२)।

चित्ताचेल्लरय—जगली पशु-विशेष (आचूला १।५२ पा)।

चित्ति—चिता—'गहियाइ कट्ठाइं, रइया महाचित्ती, लाइओ जलणो' (कु पृ १०८)।

चिट्ठविअ—विनष्ट (दे ३।१३)।

चिप्पग—कूटी हुई छाल (वृटी पृ १०२१)।

चिप्पिडय—धान्य-विशेप (दश्रुचू प ३८)।

चिप्पित—१ नपुसक-विशेप—'चिप्पितो णाम जस्स जायमेत्तस्सेव अंगुट्ठपदेसिणीमज्झियाहि चड्डिज्जति' (निचू ३ पृ २४६)। २ चिपका हुआ, आक्रात—'गृद्धा नरा कामेसु चिप्पिता' (सुचू १ पृ ६३)।

चिप्पिय—नपुसक-विशेप, जन्म के समय अंगूठे से मर्दन कर जिसका अण्डकोष दवा दिया गया हो (वृभा ५१६७)।

चिप्पिस—नपुसक-विशेप—'जातमेत्ताण चेद जेसि मिलितेहि चोतिआ ते चिप्पिसा' (निचू २ पृ ४५२)।

चिमिटा—चपटी—'पेल्लिया णासिका चिमिटा भविस्सति' (निचू ३ पृ ४०६)।

चिमिण—रोमश, दाढी आदि न बनाने के कारण जिसके केश लंबे हो गए हो वह—'चिल्लिरि-डसिया तुह अरिणो चिमिणा' (दे ३।११)।

चियत्त—१ सम्मत—'चियत्तोवहि-साइज्जणया' (स्था ३।३८२)। २ प्रीतिकर—'चियत्तं पविसे कुल' (द ५।१।१७)।

चियाय—त्याग (स्था १०।१६)।

चिरंडिहिल्ल—दही (दे ३।१४ पा)।

चिरड्ढिहिल्ल—दही (पा २८१)।

चिरया—झोंपड़ी, कुटीर (दे ३।११)।

चिरिंचिरा—जलधारा (दे ३।१३)।

चिरिंडिहिल्ल—दही (दे ३।१४ पा)।

चिरिका—फोडा-फुन्सी–'कोढियरूवेणं निविट्ठो तं चिरिका फोडित्ता सिचइ' (आवहाटी २ पृ १२७)।

चिरिक्का—१ छींटे–'लोहियचिरिक्काहिं भरिज्जंतो–रुधिरच्छटाभिः' (उशाटी प ११६)। २ मशक, पानी भरने का चर्म-भाजन। ३ प्रातःकाल। ४ लघु प्रवाह (दे ३।२१)।

चिरिचिरा—जलधारा, पानी का लघु प्रवाह (दे ३।१३)।

चिरिड्डिहिल्ल—दही (दे ३।१४)।

चिरिहिट्टी—गुंजा (दे ३।१२)।

चिलमीणि—पर्दा (पंक ८५०)।

चिलाई—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

चिलातिया—किरात देश की दासी (भ ९।१४४)।

चिलिचिलि—शब्द-विशेष–'चिलिचिलिसद्दो पुन्नो सामए सूलिसूलि धन्नो उ'। (प्रसाटी प ४१०)।

चिलिचिलिय—भीगा हुआ (तंदु ११६)।

चिलिचिल्ल—कर्दमयुक्त (प्रटी प ४९)।

चिलिच्चिल—कीचड़ से लथपथ (मार्ग)–'कद्दमचिलिच्चिलपहे' (प्र ३।५; दे ३।१२)।

चिलिच्चील—आर्द्र, गीला (दे ३।१२)।

चिलिण—मलिन, आर्द्र–'सेयागयरोमकूवपगलतचिलिणगत्ता' (भ ९।१६८)।

चिलिमिणि—पर्दा (आवनि १४०१)।

चिलिमिणी—पर्दा (पक ७२३)।

चिलिमिलि—पर्दा (नि १।१४)।

चिलिमिलिका—पात्र को प्रमार्जित करने का वस्त्र-विशेष (प्रसाटी प ११८)।

चिलिमिलिगा—परदा (सू २।२।२५)।

चिलिमिलियाग—परदा (बृ १।१४)।

चिलिमिली—यवनिका, पर्दा (आचूला २।८६)।

चिलीन—गीला, कर्दममय (प्रटी प ६६)।

चिलीय—पर्दा (बृभा ३५०१)।

चिल्ल—१ लड़का (दे ३।१०)। २ शिष्य, चेला। ३ सूर्प, छाज।

चिल्लक—१ देदीप्यमान (आवचू १ पृ २५७)। २ वृक्ष-विशेष, चीट का वृक्ष (अवि पृ ६३)।

चिल्लग—१ चमकीला, देदीप्यमान—'चिल्लगं दप्पण गहेऊण (ज्ञा १।१६।१६३)। २ बच्चा (आवहाटी २ पृ १२०)। ३ लीन (प्रटी प ७१)। ४ नर्तकों की विशेष वेषभूषा (कु पृ ४७)।

चिल्लगग—बच्चा, शिशु (उसुटी प ५३)।

चिल्लय—१ अपचक्षु (प्र १।३७)। २ देदीप्यमान (ओप ४६)।

चिल्लल—१ कर्दमयुक्त जलाशय (भ ५।१८६)। २ चीता (जीव ३।६२०)।

चिल्ललग—१ देदीप्यमान—'चिल्ललगानि देशीवचनत्वात् देदीप्यमानानि' (प्रज्ञाटी प ६६)। २ चीता (भ ६।२५१)।

चिल्ललय—चीता, श्वापद पशु-विशेष (प्रज्ञा ११।२१)।

चिल्ला—चील (दे ३।६)।

चिल्लिक—नपुसक का एक प्रकार (अंवि पृ ७३)।

चिल्लिका—१ लीन, आसक्त। २ देदीप्यमान—'चिल्लिकाहिं' ति लीनैः दीप्यमानैः' (प्रटी प ७७)।

चिल्लिय—१ देदीप्यमान—'विचित्तउल्लोगचिल्लियतले' (भ ११।१३३)। २ लीन (ज्ञाटी प ६१)।

चिल्लिया—देदीप्यमान—'देशीपदमेतत् दीप्यमानं' (जबूटी प १०२)।

चिल्लिरि—मच्छर (दे ३।११)।

चिल्ली—पत्ते वाली वनस्पति-विशेष (आटी प ५७)।

चिल्लूर—मुसल, चावल आदि कूटने की मोटी लकड़ी (दे ३।११)।

चीड—१ मास के टुकड़े—'मंसं चीडं वा आमिसं पुंजेसु ठविज्जइ' (अनुद्वाचू पृ १५)। २ काले काच की मणि वाला।

चीण—१ छोटा—'चीणचिमिढ-वकभग्गनासं' (ज्ञा १।८।७२)। २ धान्य-विशेष, व्रीहि का एक प्रकार—'चीणाकूरं छेलियातक्केण दिन्नं' (उसुटी प २४१)।

चीप—भौंह-'चीपादीण पमज्जण' (निभा १५१६)।

चीर—चिथडों को जोडकर बना वस्त्र, फीता (कु पृ १४५)।

चीवट्टी—भाला, शस्त्र-विशेष (दे ३।१४)।

चीही—मुस्ता का तृणविशेष (दे ३।१४)।

चुंचुअ—शेखर, मस्तक की माला, किलगी (दे ३।१६)।

चुंचुण—इभ्यजाति-विशेष (प्रज्ञा १।६४)।

चुंचुणिअ—चलित, कम्पित (दे ३।२३ वृ)।

चुंचुणिआ—१ च्युत, भ्रष्ट। २ गोष्ठी की प्रतिध्वनि। ३ रमण, संभोग। ४ इमली का वृक्ष। ५ मुष्टिद्यूत। ६ यूका, जू (दे ३।२३)।

चुंचुमालइय—रोमाञ्चित-'चुंचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे तं सुमिणे ओगिण्हइ (ज्ञा१।१।२०)।

चुंचुमालि—आलसी (दे ३।१८)।

चुंचुलि—१ चोंच। २ चुलुक (दे ३।२३)।

चुंचुलिअ—१ अवधारित, निश्चित। २ सस्पृहता, लालच (दे ३।२३)।

चुंचुलिपूर—चुलुक, चुल्लू (दे ३।१८)।

चुंचुली—१ चोंच। २ चुल्लु (दे ३ २३ वृ)।

चुंच्चु—गुच्छ-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।२)।

चुंछ—परिशोषित, सूखा हुआ, (दे ३।१५)।

चुंटिर—चुनने वाला (दे ६।११६ वृ)।

चुंढी—थोडे पानी वाला अखात जलाशय-'चुंढीसु य जूहेसु य कच्छेसु य नदीसु य' (ज्ञा १।१।६७)।

चुंदप्पडिय—काठ से बना हुआ आच्छादन-विशेष (निचू २ पृ ३६६)।

चुंपाल—झरोखा, गवाक्ष (कु पृ २४६)।

चुंभल—१ पुष्पनिष्पन्न आभरण-विशेष (अवि पृ ६४)। २ शेखर, कलगी (दे ३।१६)।

चुक्क—१ विस्मृत (वृभा ५१८१)। २ स्खलना (पक ३६८)। ३ मुष्टि (दे ३।१४)। ४ चूर्ण (कु पृ २२३)। ५ अनवहित (से १।६)।

चुक्कय—गलती-'समायरीए किंचि चुक्कयं कय खलित वा' (निचू ३ पृ २५२)।

चुक्कार—आवाज, सिंहनाद-'चुक्कारशब्दो देश्या शब्दवाची' (से १३।२५)।

चुक्कितक—खाद्य-विशेष, चूरमा (अंवि पृ २४६)।

चुक्कुड—बकरा, छाग (दे ३।१६)।

चुचय—अनार्य देश की एक जाति (भ ३।६५)

चुज्ज—आश्चर्य (दे ३।१४)।

चुडण—जीर्णता (पिनि २५)।

चुडलग—खण्ड खण्ड किया हुआ (सूनि ७१)।

चुडलय—अलात (निचू १ पृ १६३)।

चुडलि—उल्मुक, जलती हुई लकडी (बृभा ३१०२)। २ जलता हुआ घास का पूला—'चुडलि तणपिंडी अग्गे पज्जलिता' (नंदीचू पृ १६)।

चुडलिया—जलता हुआ घास का 'पूला' (नंदी १२)।

चुडली—अलात, जलती हुई लकड़ी (उशाटी प ३३०)।

चुडल्लि—जलता हुआ घास का पूला (भटी पृ ८६३)।

चुडिलीय—उल्का, अलात (अवि पृ ६२)।

चुडुप्प—छाल उतारना (दे ३।३ वृ)।

चुडुप्पा—त्वक्, छाल (दे ३।३)।

चुडुल—उल्का, जलती हुई लकड़ी (जीभा ४२)।

चुडुलि—गुरु-वन्दन का एक दोष (आवनि १२११)।

चुडुलिय—गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह घुमाते हुए वन्दन करना (प्रसाटी प ३८)।

चुडुली—अलात, जलती हुई लकड़ी (जीभा ४०; दे ३।१५)।

चुडुल्ली—उल्का (प्रज्ञाटी प २६)।

चुणअ—१ चंडाल। २ अल्प। ३ बालक। ४ मुक्त। ५ छंद, अभिप्राय। ६ अरोचक, अरुचिकर। ७ व्यतिकर, प्रसंग (दे ३।२२)। ८ 'विअरअ' (?)। ९ आघ्रात, सूघा हुआ—'चुणओ विअरओ इति धनपाल। आघ्रातार्थेऽपीति केचित्' (वृ)।

चुणय—पुत्र (व्यभा ७ टी प ८५)।

चुणिअ—निधारित, विशेष रूप से धारण किया हुआ (दे ३।१५)—'सा अच्छइ आसततुचुणिअप्पा' (वृ)।

चुण्णइअ—चूर्ण से आहत, जिस पर चूर्ण फेका गया हो वह (दे ३।१७)।

चुण्णय—भयभीत, संत्रस्त (विपा १।२।१४)।

चुण्णाआ—कला, विज्ञान (दे ३।१६)।

चुण्णासी—दासी (दे ३।१६)।

चुप्प—स्नेहिल, स्नेहयुक्त (दे ३।१५)।

चुप्पल—शेखर, मस्तक की माला, कलंगी (दे ३।१६)।

चुप्पलिअ—रंगा हुआ नया वस्त्र (दे ३।१७)।

चुप्पालअ—वातायन, गवाक्ष (दे ३।१७)।

चुप्पुडिआ—चुटकी (उशाटी प १०८)।

चुप्फुल—शेखर-विशेष, शिरोभूषण। २ असत्य (दे ३।२० पा)।

चुब्भल—कलगी, शेखर (पा ३४६)।

चुरु—कृमि-विशेष (अवि पृ २२६)।

चुलचुल—उत्कंठा, गुदगुदी—'तहमोहकम्मपामावियणाए चुलचुलेत सव्वगे' (कु पृ २२१)।

चुलुक—हाथ के सम्पुट की आकृति वाला जलाशय—'विकटाशयो जलाशय, अमु च प्रस्तावात् चुलुकमाहुर्वृद्धा' (भटी पृ १२२७)।

चुलुग—चुल्लू—'पसयमिति पसती चुलुगो भण्णति' (निचू २ पृ २२०)।

चुलुचुलिअ—स्पन्दित (पा ५५१)।

चुलुप्प—बकरा (दे ३।१६)।

चुल्ल—१ भोजन (पिनि ३८३)। २ चूल्हा (जीभा १२०५)। ३ छोटा—'चुल्लशब्दो देश्यः क्षुल्लपर्याय' (जंबूटी प ६६)। ४ शिशु। ५ दास (दे ३।२२)।

चुल्लक—१ चूल्हा (अवि पृ २५४)। २ भोजन—'चुल्लको देशयुक्त्या भोजनम्' (आवदी प १६०)।

चुल्लग—१ भोजन (आवनि १०७२)। २ बारी-बारी से भोजन—'परिपाटी-भोजनम्' (उशाटी प १४५)।

चुल्लमाउया—सौतेली मा, विमाता (विपा १।६।१४)

चुल्लमातुय—छोटी मा, चाची (अवि पृ २१६)।

चुल्लि—१ चूल्हा (वृभा १६५६; दे १।८७)। २ चूल्हे की अग्नि (अंवि पृ २५४)।

चुल्ली—१ चूल्हा (सूचू १ पृ १२५)। २ शिला, पाषाणखंड (दे ३।१५)।

चुल्लोडअ—जेठ, पति का बडा भाई (दे ३।१७)।

चूअ—चूचुक, स्तन का अग्रभाग (दे ३।१८)।

चूचु—दूधी (उपाटी पृ २२)।

चूड—चूडा, बाहु-भूषण (दे ३।१८)।

चूडलिक—१ उल्का, जलती हुई लकड़ी। २ वंदना का एक दोष। (प्रसाटी प ३५)।

चूरिम—मिष्टान्न-विशेष (प्रसाटी प ५६)। चूरमा (राजस्थानी)।

चूलय—चूडा, बाहु-भूषण (उचू पृ १५८)।

चूलियंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

चूलिया—संख्या-विशेष—'चतुरशीति चूलिकाङ्गशतसहस्राणि एका चूलिका' (जीव ३।८४१ टी प ३४५)।

चेच्च—विशेषरूप से जड़ित (जंबूटी प ५५)।

चेट्ट—बच्चा, बालक (निचू ३ पृ ४०८)।

चेड—१ बालक (पिनि ४१, दे ३।१०)। २ लघु, छोटा (व्यभा ३ टी प ७)।

चेडरूव—शिशु, कुमार (दश्रुनि ६७)।

चेडी—बालिका (आवनि १३६)।

चेढ—राज्यकर्मचारी (आवचू १ पृ ४८०)।

चेला—१ अनार्य देश में उत्पन्न स्त्री। २ दासी—'चेलाहि ति चेटिकाभिः अनार्यदेशोत्पन्नाभिर्वा' (औपटी पृ १४५)।

चेलिक—वस्त्र (अवि पृ १८)।

चेलुंप—मुसल (दे ३।११)।

चेल्ल—शिष्य (आचू पृ १३३)।

चेल्लग—शिष्य (दअचू पृ २१)।

चेल्लय—१ शिष्य (आवचू २ पृ ६५)। २ बच्चा—'एगो हत्थी जाए जाए हत्थिचेल्लए मारेइ' (आवहाटी २ पृ १२८)।

चेल्ललक—देदीप्यमान—'देशीवचनाद् देदीप्यमानानि' (जीवटी प १७३)।

चेल्लिक्क—बालपुत्र—'नलदामकोलियस्स य चेल्लिक्कं मक्कोडएण खतितं' (दअचू पृ २६)।

चेवइय—अलंकृत, शोभित (आचूला १५।२८।८)।

चोअक—सुगंधित द्रव्य (जंबूटी प ८२)।

चोंकण—नोचना—'करेति चोंकण-णत्थण-वाहण-मारणातिगं' (दअचू पृ १७९)।

चोंवग—माया—'चाड-चोंवग-कूडसक्खिसमुब्भावितदुव्वरारंभं' (दअचू पृ २५५)।

चोक्ख– पवित्र, शुद्ध—'चोक्खा परमसूईभूया' (दश्रु ८।६६)।

चोक्खतरय—अच्छा—'अणागए चेव तस्स कालस्स छड्डेति अण्णं चोक्खतरय कसाइमं लद्धूण ति' (निचू ३ पृ ५६६)।

चोक्खलिणी—शुद्धता रखने वाली स्त्री (पिनि ६०२)।

चोज्ज—आश्चर्य (ज्ञा १।१८।१७, दे ३।१४)।

चोट्टी—चोटी (दे ३।१)।

चोढ—बिल्व-फल या बिल्व का वृक्ष (दे ३।१६)।

चोत्त—चाबुक (दे ३।१६)।

चोत्तय—प्रतोद, बास का बना हुआ प्राजन-दण्ड (पा ६२४)।

चोदग—छाल— चोदगं उच्छितोदय छल्ली' (आचू पृ ३४४)।

चोद्द—पुत्र–'चारभडचोद्देण पण्णे मग्गितो' (निचू ४ पृ ३१२)।

चोपग— राज्याधिकारी—'चोर-पारदारिय-सूय-चोपगादिबहुजण' (सूचू १ पृ १६७)।

चोपलय—गवाक्ष, वरण्डा (दजिचू पृ १७४)।

चोप्प—मूर्ख–'हिंडति चोप्पायरितो, निरकुसो मत्तहत्थिव्व' (बृभा ३७३)।

चोप्पग—राज्याधिकारी—'राया रायअमच्चो वा चोप्पगसमीवातो सोउ' (निचू ३ पृ १०३)।

चोप्पड—१ चिकनाहट (पंव २६५)। २ घी, तैल (प्रसाटी प ७५)। ३ मलिन (पक ४६६)।

चोप्पाल—१ देवता की आयुधशाला—'जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे' (भ ३।११२)। २ वरण्डा (जीव ३।६०४)।

चोप्पालक—देवता की आयुधशाला (जीवटी प २३२)।

चोप्पालग—वरंडा (जंबू २।१६)।

चोप्पालय—१ खिडकी। २ खुला आकाश—'छिड्डाते पुणो लोए चोप्पालयां भण्णति' (निचू १ पृ ८४)।

चोप्फाल—वरण्डा (जंबूटी प १२१)।

चोप्फुच्च—स्नेहिल, प्रेमयुक्त (दे ३।१५)।

चोय— १ छाल (प्र १०।१६)। २ आम आदि का रुंछा—'ण्हारुणिभागा जे केसरा तं चोयं भण्णति' (निचू ३ पृ ४८१)। ३ सुगन्धित द्रव्य-विशेष (राज ३०)।

चोयग—१ सुगंधित द्रव्य-विशेष (भ ११।१५६) २ छाल (आटी प ४०५)।

चोयट्ठि—चौंसठ (भ १३।१२१)।

चोयय—१ छाल (भ १५।१३७)। २ फल-विशेष (अनुद्वा ३७६)—'चोयओ फलविशेष:'। ३ आम आदि का रुंछा (निचू ३ पृ ४८१)।

चोयाल—चवालीस (निभा ५६०५)।

चोरग—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।

चोरली—श्रावण कृष्णा चतुर्दशी (दे ३।१६)।

चोरा—वनस्पति-विशेष (भ २१।२१)।

चोरालि—खाद्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।

चोल—१ पुरुषचिन्ह, लिंग—'चोलस्य—पुरुषचिन्हस्य' (प्रसाटी प १२२)। २ ठिगना, वामन (दे ३।१८)।

चोलपट्ट—जैन-मुनि का कटिवस्त्र (जीभा १७२७)।

चोलाडिगा—क्षुद्र जंतु-विशेष (अंवि पृ २३८)।

चोल्लक—भोजन—'देशी-भाषया भक्तमुच्यते' (प्रसाटी प १४३)।

चोल्लग—भोजन (जीभा १२७७)।

चोल्लय—१ भोजन (वृभा ३१२७)। २ थैला, बोरा—'मम समक्ख तोलेह चोल्लए' (उसुटी प ६५)।

चोवालय—ऊपर की मंजिल का कमरा (दहाटी प ६८)।

छ

छइल्ल—विदग्ध, पटुप्रज्ञ (दे ३।२४)।

छउअ—पतला, दुबला (दे ३।२५)।

छंकुई—कपिकच्छू, कवाछ का वृक्ष (दे ३।२४)।

छंछइय—कुलटा—'अण्णा छंछइओ इय परपुरिसदंसणे....' (कु पृ ७)।

छट—१ जल का छींटा। २ शीघ्रता करने वाला (दे ३।३३)।

छंटा—जल का छींटा, जल का छिड़काव (पा ६५०)।

छंटित—ऊखल मे कूटे हुए—'उदूखले च्छंटितेषु तन्दुलेषु' (व्यभा १० टी प ५)।

छंटेउं—छींटा देकर, छिड़काव कर–'चालणीए पाणियं छोढूणं गंतूणं तिण्णि वारे छंटेउ उग्घाडाणि भविस्संति' (आवहाटी २ पृ २०७)।

छंदंत—पैबद–'पडियाणिया थिग्गलय छंदंतो य एगट्ठं' (निचू २ पृ ५६)।

छंदड़िया—चर्ममय आसन-विशेष (निचू १ पृ ६४)।

छक्कट्ठ—१ घर के बाह्य द्वार का प्रकोष्ठ। २ द्वार–'षट्काष्ठकं गृहस्य बाह्यालन्दक षड्दारुकमिति यदागमप्रसिद्ध, द्वारमित्यन्ये' (ज्ञाटी प १६)।

छक्किय—छींक (निचू १ पृ ८४)।

छग—पुरीष, विष्ठा (बृभा ३७७०)।

छगण—गोमय, गोबर (पिनि २४६)।

छगणि—कडा (अवि पृ २५४)।

छगणिय—गोबर (ओनि ३६६)।

छगणिया—गोबर का ढेर (अनु ३।४२)।

छगली—शरीर का एक अवयव (अंवि पृ ६६)।

छज्जिय—१ टोकरी, पुष्प-पात्र (राज १२)। २ राजित, शोभित।

छज्जिया—पुष्पपात्र, चगेरी–'पुप्फछज्जियाए अच्चण काऊण वच्चइ' (आवहाटी २ पृ १६)।

छड्डि—छिद्र, दोष–'जो जग्गइ परछड्डि, सो नियछड्डीए किं सुयइ' (उसुटी प ८८)। २ हृदय का रोग-विशेष। ३ अतिसार (अवि पृ २०३)।

छडक्खर—स्कन्द, कार्त्तिकेय (दे ३।२६)।

छडछड—वमन करते समय होने वाली ध्वनि (विपा १।६।२३)।

छडछडा—सूर्प से अन्न को झाड़ते समय होने वाली अव्यक्त ध्वनि–'अखंडाणं अफुडियाणं छडछडायाण सालीणं मागहए पत्थए जाए' (ज्ञा १।७ १५)।

छडा—विद्युत् (दे ३।२४)।

छड्डग—बास से बनी हुई टोकरी (आचू पृ ३४४)।

छड्डुछड्डु—सूर्प से अन्न को झाड़ते समय होने वाली अव्यक्त ध्वनि (ज्ञा १।७।१५ पा)।

छड्डियल्लय—बचा हुआ या छोड़ा हुआ (बृटी पृ १०८)।

छण्णालय—त्रिदड, संन्यासी का एक उपकरण (भ २।३१)।

छण्णी—१ वाहन-विशेष, रथ—'छण्णी सगडं वा' (आचू पृ ३४७)। २ कडा, छाणी (आचू पृ ३४६)।

छत्त—१ आचार्य—'छत्तो आयरिओ' (निचू २ पृ १३३)। २ इन्द्रजाल—छत्तो कउग्गो भण्णति' (निचू ३ पृ १६)।

छत्तधन्न—घास-विशेष (पा २०४)।

छट्टी—शय्या (दे ३।२४)।

छन्नालय—तिपाई, संन्यासियो का एक उपकरण (ज्ञा १।५।५२)।

छप्पंती—नियम-विशेष जिसमे पद्म लिखा जाता है; छह रेखाओं मे कमल का आलेखन करने का नियम (दे ३।२५)।

छप्पग—पात्र-विशेष (आवचू २ पृ ७०)।

छप्पणय—१ चतुर, चालाक। २ विदग्ध, गणितियो और चित्र-वचनों के प्रयोग मे दक्ष कवि (कु पृ ३)।

छप्पण्ण—विदग्ध, चतुर, पटुप्रज्ञ (दे ३।२४)।

छप्पण्णय—दक्ष (पा १९३)।

छब्ब—१ पानक आदि छानने के लिए वास का वना हुआ उपकरण-विशेष (आचूला १।१०४)। २ पात्र-विशेष (पिनि ५६१)।

छब्बग—पात्र-विशेष (पिनि २७८)।

छब्बय—वंशपिटक—पानक आदि छानने का उपकरण विशेष—'मूइंगाई-मक्कोड-एहिं संसत्तगं च नाऊण। गालिज्ज छव्वएणं—वंशपिटकेन (ओनि ५६०)।

छमलअ—सप्तपर्ण, सतौना का वृक्ष (दे ३।२५)।

छम्माणि—गाव-विशेष का नाम—'ततो भयवं छम्माणि नाम गामं गतो' (आवमटी प २६७)।

छलंत—सेटिका करता हुआ (अंवि पृ १३५)।

छलिअ—विदग्ध, पटुप्रज्ञ (दे ३।२४)।

छलिक—प्रिय (अवि पृ १२०)।

छल्लिया—छाल—'मूलाछल्लिया इ वा वालुकछल्लिया इ वा' (अनु ३।५०)।

छल्ली—छाल, त्वक् (अनु ३।३१; दे ३।२४)।

छवडी—चर्म (ओटी प २१७, दे ३।२५)।

छवण—गोवर—'छवणमट्टियाए लिंपणं उवलेवणं' (निचू २ पृ ३३४)।

छवाविय—प्रावृत, (घर को) छवाया, आच्छादित किया—'घरं....छवावियं' (आवहाटी १ पृ १७५)।

छवि—फली (द ७।३४)।

छव्विय—१ चटाई आदि बनाने वाला (प्रज्ञा १।९७)। २ पिहित, आच्छादित।

छव्वी—वेत्रासन (आवहाटी २ पृ ७३)।

छाअ—१ भूखा। २ कृश (दे ३।३३)।

छाइ—माता, देवी, (दे ३।२६ वृ)।

छाइल्ल—१ प्रदीप। २ सदृश। ३ न्यून। ४ सुरूप, सुन्दर (दे ३।३५)।

छाइल्लय—दीप—'जोइक्खं तह छाइल्लय च दीव मुणेज्जाहि' (व्यभा ७ टी प ६२)।

छाई—जगदम्बा आदि देवी माताएं (दे ३।२६)।

छाउव्वाय—भूख से व्याकुल (कु पृ ७६)।

छाएल्लय—छाया का इच्छुक (उशाटी प ११९)।

छाण—१ छाद, दर्भपटल (भ ८।२५७)। २ गोबर (बृभा ३३१२; दे ३।३४)। ३ धान्य आदि का मलना (दे ३।३४)। ४ वस्त्र (जीव ३; दे ३।३४)।

छाणन—छानना (प्रटी प २५)।

छाणिय—गालित, छानना (बृभा ५१७)।

छाणी—१ छाणा, कंडा (प्रसा ४३४)। २ धान्य आदि का मलना। ३ गोमय, गोबर। ४ वस्त्र, कपडा (दे ३।३४ वृ)।

छात—बुभुक्षित (निभा १११७)।

छातक—भूखा, गरीब (अवि पृ २५१)।

छातता—भूख (अंवि पृ १३५)।

छातेल्लय—भूखा, बुभुक्षित (उचू पृ ७६)।

छाद—भूखा—'छादो वेयावच्चं ण तरति काउ' (जीभा १६५९)।

छाय—१ बालक (भ १८।१५९)। २ बुभुक्षित, भूखा (द ९।२।७; दे३।३३)। ३ कृश (दे ३।३३)।

छाया—१ कीर्त्ति। २ भ्रमरी (दे ३।३४)।

छायाल—छयालीस (निचू ४ पृ ३६७)।

छार—भालू (दे ३।२६)।

छारय—१ ईख का टुकडा या ईख की छाल। २ मुकुल, कली (दे ३।३४)।

छासी—छाछ, मट्ठा—'उदसी छासि त्ति एगट्ठ' (निचू १ पृ ९२, दे ३।२६)।

छाही—गगन, आकाश (दे ३।२६)।

छिछ—शलाटु-फल (दे ३।३६ वृ)।

छिछअ—१ शरीर। २ जार-पुरुष (दे ३।३६)। ३ शलाटु-फल (वृ)।

छिछई—कुलटा, व्यभिचारिणी (उसुटी प २५०)।

छिछटरमण—आंखमिचौनी (दे ३।३०)।

छिछोली—लघु जल-प्रवाह, छोटी नाली (दे ३।२७)।

छिड—१ चूडा, चोटी। २ छत्र। ३ धूपयंत्र (दे ३।३५)।

छिडिका—१ बाड का छिद्र (ज्ञाटी प ८७)। २ अपवाद, आगार (प्रसाटी प २७८)।

छिडिया—अपवाद, छूट—'छ छिडियाओ जिणसासणम्मि' (प्रसा १४८)।

छिडी—वृत्ति-छिद्र, बाड का छेद (ज्ञा १।२।११)।

छिडीया—छोटा द्वार (बृभा २५७)।

छिपक—वस्त्र छापने वाला (व्यभा ३ टी प १०)।

छिपा—कपडे रगने व छापने का काम करने वाला (प्रसाटी प २३०)।

छिक्क—१ स्वीकृत (निचू ३ पृ १४०)। २ स्पृष्ट, छुआ हुआ। ३ छींक (दे ३।३६)। ४ गुल्म का एक प्रकार (अंवि पृ ६३)।

छिक्कप्परोइया—वनस्पति-विशेष जो स्पर्शमात्र से संकुचित हो जाती है—'छिक्कप्परोइया छिक्कमेत्तसंकोयओ कुलिगोव्व' (विभा १७५४)।

छिक्का—१ छी-छी आवाज से पुकारना (ओभा १२४)। २ छींक।

छिक्कार—छी-छी की आवाज से बुलाना (निचू २ पृ २४६)।

छिक्कारिय—छी-छी की आवाज से आहूत—'वीरसुणिआ····छिक्कारिआ तित्तिराईणि गिण्हेइ' (ओटी प ९६)।

छिक्कोअण—असहन, असहिष्णु (दे ३।२९)।

छिक्कोट्टली—१ पैर की आवाज। २ पांव से धान्य का मलना। ३ गोमय-खण्ड (दे ३।३७)।

छिक्कोलिअ—पतला (दे ३।२५)।

छिक्कोवण—असहिष्णु, असहनशील (बृभा ६१५७)।

छिग्गल—मैल—'छिग्गल जल्लो भण्णति' (निचू २ पृ २२१)।

छिच्चोलय—१ अरुचिप्रकाशक मुखविकार-विशेष। २ विकूणित मुख (पा ६६७)।

छिच्छिक्कार—१ निवारणसूचक या घृणासूचक शब्द, छि -छि (पिनि ४५१) । २ घोड़े की आवाज–'छिच्छिक्कार हयाणं' (जीभा १३७७) ।

छिड्डु—१ खुला आकाश । २ वरंडा, खिड़की (निचू १ पृ ८४) ।

छिण्ण—१ नि:स्नेह (ज्ञाटी प १७५) । २ जार-पुरुष (दे ३।२७) ।

छिण्णंगाल—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३६) ।

छिण्णच्छोडण—शीघ्र (दे ३।२६) ।

छिण्णयड—टक से छेदा हुआ (पा ३६१) ।

छिण्णा—कुलटा (दे ३।२७ वृ) ।

छिण्णाल—जार-पुरुष (दे ३।२७) ।

छिण्णालिगा—सुवर्ण वाला पक्षी-विशेष (अंवि पृ २२६) ।

छिण्णाली—कुलटा (दे ३।२७ वृ) ।

छिण्णोब्भवा—दर्भ, दूर्वा (दे ३।२६) ।

छित्त—१ छींक (निचू १ पृ ८५) । २ स्पृष्ट (नदीटि पृ १३४; दे ३।२७) ।

छित्तर—१ बांस की खपचिया जिन पर घास आदि छाया जाता है (भ ८।२५७)–'छित्वराणि–वशादिमयानि छादनाधारभूतानि किलिञ्जानि' (टी पृ ६६१) । २ पुराना छाज आदि गृह-उपकरण ।

छिद्द—१ अवसर–'हत्थिजूहेण सम चरती छिद्देण आगतूण थण देइ' (आवहाटी २ पृ १२३) । २ लघु मत्स्य (दे ३।२६) ।

छिधा—पत्र (नदीटि पृ १३४) ।

छिन्न—व्यभिचारी, छिनरा (वृभा २३१५) ।

छिन्नगाली—पक्षी-विशेष की ध्वनि–'विगतदारुणेसु छिन्नगालीय रतं । इत्ति पक्खिगतरतं ति' (अंवि पृ १८३) ।

छिन्नाल—तुच्छ जाति का बैल, दुष्ट बैल (उ २७।७) ।

छिप्प—१ भिक्षा । २ पूछ (दे ३।३६) ।

छिप्पंती—१ व्रत-विशेष । २ उत्सव-विशेष (दे ३।३७) ।

छिप्पंदूर—१ गोमय-खड, कंडे का टुकड़ा । २ विषम (दे ३।३८) ।

छिप्पाल—धान्य खाने मे आसक्त बैल (दे ३।२८) ।

छिप्पालुअ—पूछ (दे ३।२६) ।

छिप्पिय—क्षरित, झरा हुआ (पा १३९)।

छिंप्पडी—१ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष। ३ पीसा हुआ आटा (दे ३।३७)।

छिप्पीर—पलाल (दे ३।२८)।

छिप्पोली—बकरी की विष्ठा–'ततो जंमि पदेसे छगणछिप्पोली वरिसो-वट्ठाविया ततो घेप्पति' (निचू १ पृ ६६)।

छिया—लोहे की पतली छडी (सू २।२।१२)।

छिर—प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३७)।

छिरिया—अनंतकाय वनस्पति-विशेष (भ ७।६६)।

छिल्ल—१ छिद्र। २ कुटी (दे ३।३५)। ३ वाड़ का छिद्र (वृ)। ४ पलाश का पेड।

छिल्लर—१ अखात जलाशय, छोटा तालाब–'छिल्लराणि—अखाताः स्तोक-जलाश्रयभूताः भू प्रदेशाः गिरिप्रदेशा वा' (प्रज्ञा २।४ टी; दे ३।२८)। २ असार।

छिल्ली—शिखा (दे ३।२७)।

छिवअ—१ समूह। २ नीवी, अधोवस्त्र का नाड़ा (दे ३।३६)।

छिवा—चिकना चावुक (प्र ३।१३)।

छिवाडिआ—फली (जंवूटी प ३५)।

छिवाडी—१ फली–'छेवाडी शब्दो देश्यः' (राज २९ टी पृ ९०)। २ पतले पन्नों वाली ऊंची पुस्तक–'तणुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी' (निचू ३ पृ ३२१)। ३ जिसके पन्ने विशेष लंबे और कम चौड़े हों तथा जो मोटी हो ऐसी संपुट फलक वाली पुस्तक–'दुमाइ-फलगसंपुडं दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पवाइल्लो छेवाडी' (निचू ३ पृ ३२१)।

छिविअ—१ ईख का टुकड़ा (दे ३।२७)। २ स्पृष्ट (से २।८)।

छिव्व—कृत्रिम, वनावटी (दे ३।२७)।

छिव्वोल्ल—१ निन्दासूचक मुख की आकृति-विशेष (दे ३।२८)। २ विकूणित मुख (वृ)।

छिहंडअ—दही का वना हुआ मिष्टान्न, श्रीखंड–'छिहंडेहिं धवल ! पुट्ठोसि' (दे ३।२९)।

छिहंडि—दही (दे ३।३० पा)।

छिहंडिभिल्ल—दही (दे ३।३० पा)।

छिहली—शिखा (वृभा ५।१७७)।

छिहिंडिभिल्ल—दही (दे ३।३०)।

छु—पशुओ को निषेध करने का अनुकरणवाची शब्द—'छुत्ति हडि त्ति वा भन्नइ' (निचू ४ पृ ६२)।

छुई—बलाका (दे ३।३०)।

छुंछिका—छुछुंदरी (अंवि पृ ६९)।

छुंछुई--कपिकच्छू, कवाछ का वृक्ष (दे ३।२४)।

छुंछुमुसय—कामासक्ति से होने वाली उत्सुकता (दे ३।३१)।

छुंद—अधिक (दे ३।३०)।

छुक्कारण—निषेधकारक अनुकरणवाची शब्द (निभा ५४०५)।

छुट्ट—१ मुक्त (व्यभा ४।३ टी प ५७)। २ छोटा, लघु (पा ४७)। ३ बन्धनमुक्त।

छुट्टगुल—गीला गुड़, फाणित—'छुट्टगुलो फाणिय' (वृभा ३४७६)।

छुड्ड—१ सुष्ठु—'तेण भणति—छुड्ड अब्भासत्थो होउ तो सक्केमि' (उशाटी प २४५)। २ यदि, जो (प्रा ४।३८५)। ३ शीघ्र (प्रा ४।४०१)।

छुड्डिया—आभरण-विशेष, अंगूठी (प्र १०।१४)।

छुद्दहीर—१ शिशु। २ शशी, चन्द्रमा (दे ३।३८)।

छुद्दिया—आभरण-विशेष (प्र १०।१४)।

छुब्भत्थ—अप्रिय (दे ३।३३ वृ)।

छुरमड्डि—नाई, नापित (दे ३।३१)।

छुरहत्थ—नाई, नापित (दे ३।३१)।

छुरिया—मृत्तिका (दे ३।३१)।

छुस—भूसा (निचू २ पृ ४३२)।

छुहिअ—लिप्त (दे ३।३०)।

छेअ—१ विशुद्ध (आवनि ११३८)। २ अन्त, सीमा (क १।३९)। ३ देवर (दे ३।३८)। ४ एक देश, एक भाग (से १।७)। ५ निर्विभाग अंश (क ४।८२)। ६ कालोपयुक्त हित।

छेंड—१ चूडा, चोटी। २ छत्र। ३ कूपयन्त्र (दे ३।३५ वृ)।

छेंडा—१ चोटी। २ नवमालिका, लता-विशेष (दे ३।३९)।

छेंडी—छोटी गली (दे ३।३१)।

छेणक—१ झाग, फेन । २ कल्लोल (अंवि पृ २५५) ।

छेत्तर—पुराना छाज आदि गृह-उपकरण (दे ३।३२) ।

छेत्तसोवणय—खेत मे जागना (दे ३।३२) ।

छेध—स्थासक—कुकुम, चदन आदि सुगंधित द्रव्यो से दिए गए हाथ के पाचो अगुलियों के छापे, हस्तविंब । २ स्थासक—चदन आदि सुगंधित द्रव्य से शरीर का विलेपन करना । ३ चोर (दे ३।३९) ।

छेप्प—पूछ (विपा १।२।२४) ।

छेभअ—हथेली का थापा, हस्तविम्ब (दे ३।३२) ।

छेरित्ता—लीद करके—'गद्दभी····छेरित्ता गया' (उसुटी प ७३) ।

छेल—बकरा (उसुटी प ५४, दे ३।३२ वृ) ।

छेलअ—बकरा (दे ३।३२) ।

छेलण—हर्ष ध्वनि, आनन्द की आवाज—'छेलणं णाम उक्कट्ठी हसितादि' (आवचू १ पृ १५७) ।

छेलापनक—बालक्रीडा, उत्कृष्ट हर्षध्वनि, सीत्कार करना आदि—'छेलापनक-मिति देशीवचनमुत्कृष्टबाल-क्रीडापन सेण्टिताद्यर्थवाचकमिति' (आवहाटी १ पृ ८६) ।

छेलावण—१ उत्कृष्ट हर्षध्वनि । २ बाल-क्रीडापन । ३ सीत्कार करना—'छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावण च सेंटाइ' (आवमटी प २०१) ।

छेलावणय—हर्ष-ध्वनि, हसना आदि—'छेलणं णाम उक्कट्ठीहसितादि' (आवचू १ पृ १५७) ।

छेलित—सेंटिका करता हुआ (अंवि पृ ४६) ।

छेलिका—बकरी (प्रटी प १५) ।

छेलिय—सेंटित, सीत्कार करना, अव्यक्त ध्वनि-विशेष (प्र ३।५) ।

छेलिया—बकरी (उसुटी प २४१) ।

छेल्लिय—नाक से छीकने का शब्द (दजिचू पृ २३९) ।

छेली—थोड़े फूल वाली माला (दे ३।३१) ।

छेवग—महामारी (व्यभा ५ टी प १८) ।

छेवट्ट—सहनन का एक प्रकार, अस्थि-रचना-विशेष (जीव १।१७) ।

छेवट्ठ—सहनन का एक प्रकार, अस्थि-रचना-विशेष (स्था ६।३०) ।

छेवडित—महामारी से पीड़ित (निचू २ पृ १७२)।

छेवाडिया—फली (जीवटी प १९१)।

छेवाडी—१ फली—'छेवाडी शब्दो देश्य:' (राजटी पृ ९०)।
२ पुस्तक का एक प्रकार (निचू ३ पृ ३२१)। देखे—'छिवाडी'।

छेह—क्षेपण, प्रेरण (से ४।१७)।

छोअ—छिलका—'अयमाउसो ! खोयरसे, अय छोए' (सू २।१।१७)।

छोइअ—दास, नौकर (दे ३।३३)।

छोइया—छिलका, ईख आदि की छाल—'उच्छुखडे पत्थिए छोइय पणामेइ' (उसुटी प ६१)।

छोटि—१ उच्छिष्टता, जूठन—'छोटिरिति कृत्वा लोके गर्हा स्यात्' (पिटी प १०६)। २ नखच्छोटिका (व्यभा १० टी प ३०)।

छोट्टि—उच्छिष्टता, जूठाई—'भुजती आयमणे उदगं छोट्टी य लोगगरिहा य' (पिनि ५८७)।

छोढूण—१ घुसेडकर—'अवाणे सूल छोढूण मुहेण णिक्कलिज्जति' (सूचू २ पृ ३६५)। २ रखकर, भरकर—'चालणीए पाणिय छोढूण' (आवहाटी २ पृ २०७)।

छोति—१ छिलका (आचू पृ ३६७)। २ जुगुप्सा (व्यभा ८ टी प ४७)।

छोब्भ—पिशुन, दुर्जन (दे ३।३३)।

छोब्भत्थ—अप्रिय (दे ३।३३)।

छोब्भाइत्ती—१ अस्पृश्य स्त्री, छूने के अयोग्य स्त्री। २ अप्रीतिकर स्त्री, द्वेष्या (दे ३।३९)।

छोभ—१ निस्सहाय, दीन (प्र ३।२४)। २ झूठा आरोप (बृभा ३३५४)। ३ वंदन का एक प्रकार—नर्तन करते हुए वंदन करना (आवनि ११२७)। ४ आघात। ५ पिशुन, दुर्जन।

छोभग—१ झूठा आरोप—'छोभगो अब्भक्खाणं' (निभा ४३८५)। २ अपयश (निचू ४ पृ ५५)।

छोय—छिलका (सू २।१।१७)।

छोह—१ आघात—'ताव य सो मायगो, छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि' (उसुटी प ९१)। २ समूह। ३ विक्षेप (दे ३।३९)।

ज

जंकयसुकल—अल्प उपकार से अधीन होने वाला (दे ३।४५)।

जंगय—शिविका-विशेष–'अवरे जपाणेसु, अवरे जंगएसु' (कु पृ २४)।

जंगल—जंगल, वन (उसुटी प २३७)।

जंगलिक—जंगली (अवि पृ २२९)।

जंगा—गोचर भूमी, पशुओं के चरने की भूमि (दे ३।४०)।

जंगोल—विषापहार विद्या, विषविघातक तन्त्र (विपा १।७।१५)।

जंघाछेअ—चौराहा (दे ३।४३)।

जंघामअ—तीव्र गति से चलने वाला (दे ३।४२)।

जंघालुअ—तीव्र गति से चलने वाला (दे ३।४२)।

जंपण—१ अकीर्ति। २ मुह (दे ३।५१)।

जंपिच्छअ—जिसको देखे उसी को चाहनेवाला (दे ३।४४ वृ)।

जंपुलिग—कुल्माष-विशेष–'जपुलिगादि कुम्मासा' (व्यचू पृ १२४)।

जंपेच्छिरमरिगर—जो-जो देखता है, उसी की मांग करनेवाला (दे ३।४४)।

जंवाल—१ जरायु, गर्भवेष्टन चर्म (स्था २।२६६)। २ सेवाल (दे ३।८२ वृ)।

जंवालय—सेवाल (दे ३।८२)।

जंवुअ—१ वेतसवृक्ष, बेंत। २ पश्चिम दिक्पाल (दे ३।५२)।

जंवुल—१ वानीर वृक्ष, बेंत (दे ३।४१)। २ मदिरा-पात्र–'जवुलं मद्य-भाजनमिति सातवाहन.' (वृ)।

जंवुल्ल—वाचाल (पा १११)।

जंवूका—कन्धनी (अंवि पृ ७१)।

जवूलय—पात्र-विशेष (उपा ७।७)।

जंभ—तुष, भूसा (ति ६६१; दे ३।४०)।

जंभणअ—इच्छानुसार बोलने वाला, स्वच्छन्दभाषी (दे ३।४४)।

जंभणभण—स्वच्छन्दभाषी (दे ३।४४ वृ)।

जंभल—जड, मन्द (दे ३।४१)।

जक्खरत्ती—यक्षरात्री, दीवाली (दे ३।४३)।

जग—जीव–'विरते गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा' (सू १।११।३३)।

जगडिअ—१ कदर्थित (दे ३।४४)। २ लड़ाया हुआ।

जगडिज्जंत—उत्तेजित होते हुए–'धन्नाण तु कसाया जगडिज्जता वि परकसाएहिं' (चं १४१)।

जगडित—प्रेरित (निभा ३५१)।

जगल—१ पंकवाली मदिरा, मदिरा का नीचे का भाग (दे ३।४१)। २ पंकिल सुरका–'पंकिलसुरको जगल इत्यन्ये' (वृ)।

जगार—राब, यवागू (प्रसाटी प ५१)।

जगारी—राब, यवागू–'जगारीशब्देन समयभाषया रब्बा भण्यते' (प्रसाटी प ५१)।

जग्गह—जो मिले वह लूटने की राजाज्ञा–'रन्ना जग्गहो घोसितो' (आवचू १ पृ ३१८)।

जंगिक—जंगम जीवों के रोम का बना वस्त्र (अवि पृ २३२)।

जच्च—पुरुष (दे ३।४०)।

जच्चंदण—१ गंध द्रव्य-विशेष, अगर। २ कुंकुम (दे ३।५२)।

जच्छंद—स्वच्छंद, स्वतंत्र (दे ३।४३ वृ)।

जच्छंदअ—स्वच्छंद, स्वतंत्र (दे ३।४३)।

जडिअ—जडित, खचित (दे ३।४१)।

जडियाइल—एक महाग्रह (स्था २।३२५ पा)।

जडियाइलग—एक महाग्रह (स्था २।३२५)।

जडियाइलय—एक महाग्रह (चन्द्र २०)।

जडिलय—राहु, ग्रह-विशेष (सूर्य २०)।

जड्ड—१ हाथी (विनि ३८६)। २ मोटा (निचू ३ पृ ३)। ३ अशक्त, असमर्थ (ति ११९३)।

जड्डतरी—जाडी, मोटी (निचू ३ पृ ५१५)।

जड्डू—रहित, त्यक्त (प्रसाटी प ३८)।

जढ—परित्यक्त–'वाहिओ वा अरोगी, वा सिणाणं जो उ पत्थए। वोक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो॥' (द ६।६०)।

जणउत्त—१ ग्राम-प्रधान, गांव का मुखिया। २ विट, भांड (दे ३।५२)।

जणक—कान का कुंडल जैसा आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६२)

जणत्ता—बराती (आवहाटी २ पृ ४६)

जणणत्ता—बराती (आवहाटी २ पृ ४६)।

जण्णोहण—राक्षस (दे ३।४३)।

जण्ह—१ छोटी थाली। २ कृष्ण, काला (दे ३।५१)।

जण्हली—नीवी, नारा (दे ३।४०)।

जण्हुआ—जानु, घुटना (पा ८५६)।

जप्पसरीर—अनेक रोगों से ग्रस्त शरीर (निभा ६३३७)।

जमइत्ता—अति परिचित कर, स्थिर कर—'पुन' पुनरावर्तनेन अतिपरिचितं कृत्वा' (औप २६ वृ)।

जमग—पक्षि-विशेष, शकुनी (जीवटी प २८६)।

जमगसमगं—एक साथ (भ ६।१८२)।

जमण—विषम को सम करना—'जमणं विसमाण समकरण' (निभा ६६४)।

जमल—एक साथ—'महागइंददतजुवल-जमलाहएण' (कु पृ ५७)।

जम्मपक्क—मत्स्य-विशेष (विपाटी प ८०)।

जयण—घोड़े का बख्तर (दे ३।४०)।

जयार—एक प्रकार का अपशब्द—'जत्थ जयार-मयार समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्ख' (ग ११०)।

जरंड—वृद्ध (दे ३।४०)।

जरड—वृद्ध (दे ३।४० वृ)।

जरढ—१ जीर्ण, पुराना (औप ५)। २ मजबूत (से १।४३)। ३ कठिन (ज्ञाटी प ५)।

जरल—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

जरलद्धिअ—ग्रामीण (दे ३।४४)।

जरलविअ—ग्रामीण (दे ३।४४)।

जरुला—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

जलणीली—सेवाल (दे ३।४२)।

जलूसक—जलोदर रोग (आवचू २ पृ १८१)।

जल्ल—१ शरीर का मैल (भ १।४९)। २ रस्सी पर खेलने वाला नट (जीव ३।६१६)। ३ स्तुति-पाठक (नि ९।२२)—जल्ला राज्ञः स्तोत्रपाठका.' (चू २ पृ ४६८)। ४ एक म्लेच्छ देश। ५ जल्ल देश मे रहने वाली जाति-विशेष (प्रटी प १५)।

जल्लिय—१ शरीर के मैल से खरटित—'वत्थस्स जल्लियस्स वा पंकियस्स वा' (भ ६।२३)। २ मल, शरीर का मैल—'जल्लियं नाम मलो, णो कप्पइ उवट्टेउ' (दजिचू पृ २७९)।

जल्लिया—शरीर का मैल—'जल्लिया मलो' (दअचू पृ १८६)।

जल्लूसत—जलोदर (आवहाटी २ पृ १३४)।

जल्लूसय—जलोदर रोग (आवहाटी २ पृ १३४)।

जल्लोसहि—एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग नष्ट होता है—'खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं' (प्र ६।६)।

जवअ—यव-अंकुर (दे ३।४२)।

जवण—हल का ऊपरी भाग (दे ३।४१)।

जवरअ— यव-अकुर (दे ३।४२)।

जहणरोह--जंघा (दे ३।४४)।

जहणूसव—अर्धोरुक, आधी साथल तक पहनने का वस्त्र, स्त्रियों का वस्त्र-विशेष (दे ३।४५)।

जहाजाअ—जड, मूर्ख—'जहाजायपसुभूया' (प्र ३।२४; दे ३।४१)।

जहिमा—विद्वान् द्वारा रचित गाथा (दे ३।४२)—'तुह जहिमं तत्थ गायन्ति' (वृ)।

जाइ—१ गुल्म वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८।२)। २ मदिरा (दे ३।४५)। ३ मदिरा-विशेष—सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च' (विपा २।२४)।

जाइंभर—मादक—'जाइभराइं मण्णे इमाइं णयणाइं होंति लोयस्स' (कु पृ २२४)।

जाउ—कपित्थ का फल (बृटी पृ ५४)।

जाउर—कपित्थ वृक्ष (दे ३।४५)।

जाउलग—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)।

जाउलया—क्षीरपेया (ओटी प १९६)।

जागु—खाद्य-विशेष, लपसी आदि (अंवि पृ ७१)।

जाडी—गुल्म, लता-प्रतान (दे ३।४५)।

जामइल्लय—पहरेदार (कु पृ १२३)।

जामिलिका—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७)।

जार—मणि का लक्षण-विशेष (राज २४)।

जारु—अनतकाय वनस्पति-विशेष (भ २३।१)।

जारुकण्ह—गोत्र-विशेष (स्था ७।३७)।

जालगद्दह—रोग-विशेष—'एयस्स हत्थो पादो वा जालगद्दहमादिणा सडितो' (निचू ३ पृ ४४८)।

जालघडिआ—अट्टालिका, अटारी (दे ३।४६)।

जाली—सघन झाडी (पा ८७६)।

जावइ—१ कन्द-विशेष (उ ३६।९७)। २ गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)।

जावति—वृक्ष-विशेष (भ २२।१)।

जाहे—यदा, जब (उशाटी प १४८)।

जिंघिअ—सूघा हुआ (पा ४९७)।

जिंडह—गेंद—'जिंडहगेड्डिआइरमण' (प्रसा ४३५)।

जिंडुह—कन्दुक (प्रसा ४३५)।

जिग्घिअ—सूघा हुआ (दे ३।४६)।

जिण्णोब्भवा—दूब, दूर्वा (दे ३।४६)।

जिमिअ—भुक्त (बृभा ३६९५)।

जिम्ह—मंद—'जिम्हीभवति उदया कम्माणं' (बृभा १२३)।

जोण—१ जीन, अश्व की पोठ पर बिछाया जाने वाला ऊनमय या चर्ममय आसन (प्रसाटी प १९१)। जीणपोस (फारसी)। २ ऊन का बना वस्त्र-विशेष (भटी पृ ११५२)।

जीवयमई—अन्य मृगो को आकर्षित करने के लिए शिकारी द्वारा बनाई गई कृत्रिम मृगी, व्याधमृगी (दे ३।४६)।

जुअल—तरुण (दे ३।४७)।

जुअलिअ—द्विगुणित, दुगुना (दे ३।४७)।

जुंगलिका—त्रीन्द्रिय प्राणी-विशेष (अवि पृ २६७)।

जुंगित—जाति, कर्म या शरीर से हीन (पक २०१)।

जुंगिय—१ खंडित (पिनि ४४९)। २ जाति, कर्म या शरीर से हीन। ३ दूपित।

जुंजिय—बुभुक्षित, भूखा (ज्ञाटी प ७३)।

जुंजुरुड—अपरिग्रही, परिग्रहरहित (दे ३।४७)।

जुक्कार—प्रणाम (बृटी पृ ५३)।

जुगय—पृथक् (दहाटी प ४७)।

जुण्ण—विदग्ध, दक्ष (दे ३।४७)।

जुयक—पृथक्, अलग (दअचू पृ २५)।

जुयग—पृथक्–'तओ जुयगं घरं कयं' (आवहाटी २ पृ २०६)।

जुरुमिल्ल—गहन, निविड (दे ३।४७)।

जुरुमिल्लय—गहन, गहरा (दे ३।४७ पा)।

जुवय—चन्द्र-प्रभा और संध्या-प्रभा का मिश्रण–'सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यद् युगपद् भवतस्तत् जुयगोत्ति भणितम्' (स्थाटी प ४५१)।

जुहार—जयकार, जुहार, नमस्कार (आवहाटी १ पृ ६७)।
जुहार (राज)।

जूअअ—चातक (दे ३।४७)।

जूयत—सध्या और चन्द्रमा की प्रभा का मिश्रण (स्था १०।२० पा)।

जूरण—खेदन (सू २।२।३१)।

जूरणया—खेदन (भ १२।५४)।

जूरावणया—खेदापन (भ ३।१४५)।

जूरिय—खिन्न (पा ५७५)।

जूरुम्मिलय—गहन (दे ३।४७ वृ)।

जूवय—१ ऐसा स्थान जिसके चारो ओर पानी हो–'जूवय णाम विट्ठ (वीउं) पाणियपरिक्खित्त' (निचू ४ पृ ५४)। २ द्यूतकार (कु पृ १७२)।

जूह—काजी, माड या मूग का पानी–'जूहं च काजिकं, तंदुलोदगं मुद्गरसो वा जूहं भण्णति' (निचू ३ पृ १०३)।

जे—१ पाद-पूर्ति मे प्रयुक्त अव्यय (उ २२।२१) २ अवधारण सूचक अव्यय।

जेमण—मीठा भोजन (ओटी प ४९)।

जेमणय—दक्षिण अग, दाहिना हाथ आदि (दे ३।४८)।

जोअ—१ युगल (ज्ञाटी प ४७)। २ चन्द्र, चाद (दे ३।४८)।

जोअण—आंख, लोचन (दे ३।५०)।

जोइंगण—कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे ३।५०)।

जोइक्ख—१ दीप–'जोइक्खं तह छाइल्लय च दीव मुणेज्जाहि' (व्यभा ७ टी प ६२)–'जोइक्खशब्दः देश्यो दीपे वर्तते' (प्रसाटी प ४६; दे ३।४९)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश (ओनि ६५४)।

जोइज्जमाण—दृष्ट (अनु ३।५२)।

जोइय—१ दृष्ट, देखा हुआ (आवचू १ पृ ५२८)। २ खद्योत (दे ३।५०)।

जोइर—स्खलित (दे ३।४९)।

जोइल्लय—कीट-विशेष, इन्द्रगोप (आवचू २ पृ ८३)।

जोइस—नक्षत्र (दे ३।४९)।

जोई—विद्युत् (दे ३।४९)।

जोक्ख—मलिन (दे ३।४८)।

जोग्गा—चाटु, खुशामद (दे ३।४८)।

जोड—१ नक्षत्र (दे ३।४९)। २ रोग-विशेष। ३ जोड़ी, युगल।

जोडिअ—१ व्याध, शिकारी (दे ३।४९)। २ जोडा हुआ, संयुक्त किया हुआ।

जोडिऊण—जोडकर, सयुक्त कर—'जोडिऊण करजुयलं कहिओ मुविणगवइयरो' (उसुटी प ६३)।

जोण्णलिआ—धान्य-विशेष, जुआरि (दे ३।५०)।

जोय—युग्म, जोड़ा (भ ११।१५९)।

जोयण—देखना—'उवओग चंदजोयण, साहुत्ति विगिचणे णाणं' (जीभा १४१७)।

जो रं—वाक्य के आदि मे प्रयुक्त 'जो' का अर्थ है—यह तथा 'रं' का अर्थ है—निश्चय—'जो रं घ जो किरहयम्मि' (दे ३।४८)।

जोव—१ विन्दु। २ अल्प (दे ३।५२)।

जोवण— १ यन्त्र। २ धान्य का मर्दन। ३ धान की बुवाई—'जोवणं—धान्य-प्रकर। प्रकरो मर्दन धान्यस्य, लाटविपये जोवण धण्णपडरणं भण्णइ' (ओटी पृ १६६)।

जोवारि—धान्य-विशेष, जुआरि (दे ३।५०)—'जोवारी शब्दोऽपि देश्य एव (वृ)।

जोव्वण—मध्य भाग (से २।१)।

जोव्वणणीर—वृद्धत्व, बुढापा (दे ३।५१)—'जोव्वणणीरं तरुणत्तणे विजिएन्दिआण पुरिसाण' (वृ)।

जोव्वणवेअ—बुढापा, वृद्धत्व (दे ३।५१)।

जोव्वणोवय—बुढापा, वृद्धत्व (दे ३।५१)।

जोहार—जयकार, नमस्कार—'जयोत्कारकरणं पित्रादीनाम्' (प्रसाटी प १०५)।

झ

झंकक—हाथ का आभूषण-विशेष—'तधेव झक्को व त्ति कडग खड्ग ति वा' (अवि पृ ६४)।

झंकारिअ—अवचयन, फूल आदि चुनना (दे ३।५६)।

झंख—१ तुष्ट, तृप्त (दे ३।५३)।

झंखणय—क्रोधी (अनुद्वाहाटी पृ २९)।

झंखर—सूखा पेड (दे ३।५४)।

झंखरिअ—फूलो को चुनना (दे ३।५६)।

झंझ—कलह—'अज्झीणझंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ' (सम ३०।१।९)।

झंझडिय—डाट-फटकार—'रिणे अदिज्जते वणिएहि अणेगप्पगारेहिं दुव्वयणेहिं झडिया—झझडिया' (निचू ३ पृ २७०)।

झंझा—१ व्याकुलता (आ ३।६९)। २ कलह (स्था ८।१११)। ३ क्रोध। ४ माया (सूटी १ पृ २४०)।

झंझिय—बुभुक्षित (ज्ञा १।१।१६०)।

झंटलिआ—चंक्रमण, भ्रमण (दे ३।५५)।

झंटिय—प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह (निचू ३ पृ २६४; दे ३।५५)।

झंटी—छोटे किन्तु खडे केश (दे ३।५३)।

झंडली—कुलटा, असती (दे ३।५४)।

झंडुअ—पीलु का वृक्ष (दे ३।५३)।

झंडुली—१ असती, कुलटा। २ क्रीडा (दे ३।६१)।

झंपक—बुझाने वाला—'झंपको णिव्वावको' (निचू १ पृ ७९)।

झंपणा—स्थगन, आच्छादन (निभा २७०३)।

झंपणी—पक्ष्म, आख की बरौनी, आख के बाल (दे ३।५४)।

झंपिअ—१ त्रुटित, टूटा हुआ। २ घट्टित, आहत (दे ३।६१)।

झंपित—आहत (व्यभा ७ टी प ३०)।

झंपुल्लिया—ऊंची छलाग—'झपुल्लिया खेल्लणइं' (कु पृ ११२)।

झक्किअ—लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३।५५)।

झज्झरी—स्वय को कोई न छूए—यह बताने के लिए चाण्डाल आदि जाति के लोग अपने हाथ मे एक यष्टि रखते हैं, वह । इसका दूसरा नाम 'खिक्खिरी' है (दे ३।५४) ।

झड—१ झडा हुआ—पत्र-पुष्पों से रहित—'वणसडे····जुण्णे झडे परिसडिय-पंडुपत्ते' (राज ७८२) । २ शीघ्र (बृटी पृ १३१६) ।

झडप्पड—शीघ्र (प्रा ४।३८८) ।

झडप्पिअ—छीना हुआ (दे ५।३४ वृ) ।

झडिज्जंत—आहत होता हुआ, खिन्न होता हुआ—'वासेण झडिज्जंत दट्ठूण वानरं थरथरेंत' (आवमटी प ३४५) ।

झडित—झडा हुआ (निचू ३ पृ २७०) ।

झडिय—१ डाटना, फटकारना (निचू ३ पृ २७०) । २ शिथिल, ढीला । ३ श्रान्त, खिन्न (म ४४७) । ४ झडा हुआ, गिरा हुआ ।

झडी—निरन्तर वर्षा (दे ३।५३) ।

झड्डरविड्डर—जादू-टोना (व्यभा ४।३ टी प ४९) ।

झत्थ—१ गत, गया हुआ । २ नष्ट (दे ३।६१) ।

झपित—कम्पित (अवि पृ १४३) ।

झमाल—इन्द्रजाल (दे ३।५३) ।

झरअ—सुवर्णकार (दे ३।५४) ।

झरंक—तृण का बनाया हुआ पुरुष, चञ्चा (दे ३।५५) ।

झरंत—तृण-पुरुष, चञ्चा (दे ३।५५ वृ) ।

झरक—१ स्मरण करने वाला—'सुत्तत्थे मणसा झायंतो झरको' (नदीचू पृ ८) । २ ध्यान करने वाला (नदी टी पृ १२) ।

झरणा—१ स्मरण—'एवं सो झरणाए दुब्बलो जातो' (आवचू १ पृ ४१०) । २ झरना, टपकना (बृभा ६००७) ।

झरय—ध्यान करने वाला—'जो दुब्बलिओ सो झरओ' (आवचू १ पृ ४०९) ।

झरुअ—१ मच्छर, मशक (दे ३।५४) । २ झींगुर—'मशकवाचकशब्दाश्चीर्यामपि वर्तन्ते । यदाह—मशकाख्याश्चीर्यामप्युच्यन्ते काव्यतत्त्वज्ञैः' (वृ)।

झलक्किय—दग्ध, सतप्त (प्रा ४।३९५) ।

झलज्झल—पानी का शब्द (ओटी प ३७६) ।

झलझलिआ—थैली (दे ३।५६) ।

झला—मृगतृष्णा, मृगमरीचिका (दे ३।५३) ।

झलुंकिअ—जला हुआ, दग्ध (दे ३।५६)।

झलुसिअ—जला हुआ (दे ३।५६)।

झल्लमल्ल—परिपूर्ण, भरा हुआ (विभाकोटी पृ २६४)।

झस—१ अयश, अकीर्ति। २ तट, किनारा। ३ छैनी से कटा हुआ। ४ तटस्थ, मध्यस्थ।। ५ दीर्घ-गभीर, लंबा और गभीर, बहुत गहन (दे ३।६०)। ६ शस्त्र-विशेष (कु पृ १६८)।

झसिअ—१ पर्यस्त, उत्क्षिप्त। २ आक्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३।६२)।

झसुर—१ ताम्बूल, पान। २ अर्थ, प्रयोजन (दे ३।६१)।

झाउल—कर्पास-फल, डोडा (दे ३।५७)।

झाड—झाडी, निकुज (निचू ३ पृ २६७; दे ३।५७)।

झाम—दग्ध (जीव ३।६६)।

झामण—जलाना (जीभा २३२३)।

झामणिक—जलानेवाला (अंवि पृ २५४)।

झामर—वृद्ध, बूढा (दे ३।५७)।

झामल—आंखो का रोग-विशेष—'पुत्तसोगेण य, से किल झामलं चक्खु जायं रुयंतीए' (आवहाटी १ पृ ६६)। झावला (राज)। झामरो (गुज)।

झामित—दग्ध (जीभा २३२१)।

झामिय—१ जलाया हुआ, दग्ध (भ ५।५१, दे ३।५६)। २ श्यामल। ३ कलंकित।

झारुआ—झींगुर, क्षुद्र कीट-विशेष (दे ३।५७)।

झिखिअ—लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३।५५)।

झिंगिर—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, झींगुर (प्रज्ञा १।५०)।

झिंगिरिड—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

झिंझिय—बुभुक्षित, भूखा—'आउरे झिंझिए पिवासिए तवस्सी' (बृ ४।२८)।

झिज्झिरि—वल्ली-विशेष (आचूला १।१०८)।

झिज्झिरी—वल्ली-विशेष (आचू पृ ३४१)।

झिमिय—जडता, शरीर के अवयवो का अकड जाना (आ ६।८)।

झिरिंड—जीर्ण कूप (दअचू पृ १००, दे ३।५७)।

झिल्लिय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, झिल्ली (प्रज्ञा १।५०)।

झिल्लिरिआ—१ 'चीही' नामक तृण। २ मशक, मच्छर (दे ३।६२)।

झिल्लिरी—मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

झिल्ली—१ अनन्तकाय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४८।४२)। २ तरंग।

झीण—१ अंग, शरीर। २ कीट (दे ३।६२)।

झीम—मन्द—'झीमीभवंति ति मंदीभवति त्ति चूर्णी' (बृटी पृ ३८)।

झीरा—लज्जा (दे ३।५७)।

झुंख—तुणय नामक वाद्य (आवनि १ पृ ३०६; दे ३।५८)।

झुंझिडित—सेवा करने वाला—'झुंझिडिओ णाम उवचरतो' (दश्रुचू प ५०)।

झुंझिय—१ भूखा (प्र ३।६)। २ मुरझा हुआ (भ १६।४)।

झुंझुमुसय—मन का दुःख (दे ३।५८)।

झुंटण—१ प्रवाह (दे ३।५८)। २ पशु-विशेष।

झुंपडा—झोंपड़ी, कुटिया—'मह कतहो गुट्ठट्ठिअहो कउ झुम्पडा बलंति' (प्रा ४।४१६ टी)।

झुंबनक—लटकने वाला आभूषण, झूमका (भटी पृ ८७६)।

झुझुरायित—जीर्ण-शीर्ण (अवि पृ १४८)।

झुट्ठ—असत्य (दे ३।५८)।

झुत्ती—विच्छेद (दे ३।५८)।

झुपित—दग्ध, झुलसा हुआ (अंवि पृ १४८)।

झुमुझुमुसय—मन का दुःख (दे ३।५८ वृ)।

झुरित—क्षीण, मुरझाया हुआ (भटी पृ १२६७)।

झुल्लुरी—गुल्म (दे ३।५८)।

झुसिय—बुभुक्षित—'आउरे झुसिए पिवासिए' (भ १६।५२)।

झूर—टेढा, कुटिल (दे ३।५६)।

झूसरिअ—१ अत्यन्त। २ स्वच्छ, निर्मल (दे ३।६२)।

झूसिय—१ बुभुक्षित—'आउरं झूसियं पिवासियं' (अंत ३।६५)। २ परित्यक्त, क्षपित (स्याटी प २२५)।

झेंडुअ—गेंद, कन्दुक (दे ३।५६)।

झेर—पुराना घण्टा (दे ३।५६)।

झोंडलिआ—रास के सदृश एक प्रकार की क्रीडा (दे ३।६०)।

झोट्टी—अप्रसूत अवस्था वाली भैंस (दे ३।५६)।

झोड—पत्रविहीन वृक्ष, ठूंठ (ज्ञा १।११।२)।

झोडण—शाटन, पातन (प्र १।३५)।

झोडप्प—१ चना (दे ३।५९)। २ सूखे चने का शाक–'झोडप्पो चणकधान्यम्। शुष्कचणकशाकमित्यन्ये' (वृ)।

झोडय—वीणा-विशेष (नि १७।१३७)।

झोडिअ—बहेलिया, व्याध, शिकारी (दे ३।६०)।

झोलिआ—१ शिविका-विशेष (कु पृ २४)। २ थैली, झोली (दे ३।५६)।

झोलिका—झोली, थैली–'झोलिकाशब्दो यदि सस्कृते न रूढस्तदायमपि देश्य:' (दे ३।५६ वृ)।

झोस—१ समीकरण–'झोस त्ति वा समकरणं ति वा एगट्ठ' (निचू ४ पृ ३२३)। २ झाड़ना, दूर करना।

झोसण—१ क्षपणा, छोड़ना–झोसण खवणा मुचण एगट्ठा' (जीभा २२७६)। २ आसेवन, मार्गण–'आभोगणं ति वा मग्गण ति वा झोसण ति वा एगट्ठ' (व्यभा ४।१ टी प २४)।

ट

टंक—१ तलवार (प्र १।२८; दे ४।४)। २ एक दिशा मे छिन्न पर्वत–'छिन्न तडं टंक' (नंदीचू पृ ६४)। ३ किनारा (निचू १ पृ ४४; दे ४।४)। ४ भित्ति (उसुटी प १९५; दे ४।४)। ५. कुदाल। ६ छिन्न, काटा हुआ। ७ खात. खुदा हुआ जलाशय। ८ जंघा (दे ४।४)।

टंकण—टंकण देश मे रहने वाली म्लेच्छजाति, पर्वतीय लोग–'अक्कोसे सरणं जंति टंकणा इव पव्वयं' (सू १।३।५७)।

टंका—जघा (पा ८५१)।

टंकिअ—फैला हुआ (दे ४।१)।

टंबरअ—भारी (दे ४।२)।

टक्क—म्लेच्छ जाति (कु पृ १५३)।

टक्कर—१ मुद्गरविशेष (प्रटी प ४८)। २ ठोकर, आघात (उसुटी प १३)।

टक्करा—टकोरा, मुड-सिर पर अगुली का आघात (निचू ४ पृ ३१२)।

टक्कारा—टकोरा, आघात (व्यभा २ टी प ५२)।

टक्कारिआ—अरणि का फूल (दे ४।२)।

टक्कारी—१ वृक्ष-विशेष (अवि पृ ७०)। २ अरणि का फूल (दे ४।२ वृ)।

टट्टइआ—पर्दा (दे ४।१)।

टप्पर—१ विकराल कान वाला (प्रटी प ८१)। २ छाज के आकार के कान (उपाटी पृ ९६)।

टप्परअ—विकराल कान वाला (दे ४।२)।

टमर—केशों का समूह (कु पृ ७३, दे ४।१)।

टसर—१ सूती वस्त्र (निचू २ पृ ६८)। २ मोडना (दे ४।१)।

टसरोट्ट—अवतंस (दे ४।१)।

टार—१ दुष्ट अश्व (दे ४।२)। २ टट्टू, छोटा घोटा।

टाल——फल की वह अवस्था जिसमें गुठली न पड़ी हो (द ७।३२)—'टालाणि नाम अवद्धट्ठिगाणि भण्णंति' (जिचू पृ २५६)।

टिंबरु—तेंदू का वृक्ष (दे ४।३)।

टिंबरुय—तेंदु का वृक्ष (दजिचू पृ १८४)।

टिक्क—१ तिलक (दे ४।३)। २ सिर पर फूलों का गुच्छा (वृ)।

टिक्किद—तिलक वा 'टीकी' से विभूषित—'मटियटिक्किदविभूसिया एगा साहुणी' (उसुटी प ५४)।

टिग्घर—स्थविर, वृद्ध (दे ४।३)।

टिट्टि—टिट्-टिट् की आवाज, बछडे आदि को प्रतिषेध करने का शब्द (वृभा ७७)।

टिट्टिभीय—टिट्टिभ, टि-टि करने वाला प्राणी (अंवि पृ १८३)।

टिप्पी—तिलक (दे ४।३)।

टिविडिक्किय—अलंकृत, विभूषित—'संजइ पासति मंडिय-टिविडिक्किया' (उशाटी प १३८)।

टुंट—छिन्न-हस्त, कटे हुए हाथ वाला (प्रसा ७९५; दे ४।३)।

टुंटय—छिन्न-हस्त (दे ४।३ वृ)।

टेंकण—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

टेंटा—१ जूआ खेलने का स्थान (दे ४।३)। २ अक्षि-गोलक। ३ छाती का शुष्क व्रण।

टेंटिअ—द्यूतक्रीडा के स्थान पर रहने वाला (दे ४।३ वृ)।

टेंबरूय—तेंदु का फल (आटी प ३४९)।

टेक्कर—स्थल, प्रदेश (दे ४।३)।

टेक्करय—स्थल (दे ४।३ वृ)।

टेट्टिकालक—पक्षी-विशेष (अवि पृ २३८)।

टेट्टिवालक—चित्र-विचित्र रंगों वाला पक्षी-विशेष, तितली (?) (अंवि पृ २२५)।

टेणग—छाग (अनुद्वाचू पृ १३)।

टोक्कण—दारू मापने का वर्तन (दे ४।४)।

टोक्कणखंड—दारु मापने का पात्र (दे ४।४ वृ)।

टोक्कर—जाली या डोरी (वृटी पृ १६४१)।

टोप्परिया—पात्र-विशेष (आवहाटी १ पृ २७५)।

टोल—१ अप्रशस्त (जवू २।१३३)। २ ऊंट (भटी प ३०८)। ३ टिड्डी—'टोलोव्व उप्फिडंतो' (प्रसा १५७)। ४ शलभ—'टोलोव्व मा पड तुम उज्जाणे' (दे ४।४)। ५ पिशाच—'टोल पिशाचमाहुः सर्वे शलभं तु राहुलक' (वृ)। ६ टोली, यूथ।

टोलंब—महुआ का पेड (दे ४।४)।

'टोल' गति—१ टेढी-मेढी गति (भ ७।११६)। २ गुरुवंदन का एक दोष, टिड्डी की तरह फुदक-फुदक कर वदना करना (प्रसाटी प ३६)।

टोला—टिड्डी—'टोला तिड्डुया इति चूर्णौ विशेपचूर्णौ' (वृटी पृ ६७५)।

टोल्ल—मुड सिर पर अगुली का आघात, ठुनकाना (व्यभा १ टी प १३)। ठोला मारना (राज)।

ठ

ठइअ—१ उत्क्षिप्त (दे ४।५)। २ अवकाश (वृ)।

ठक्कुर—ठाकुर (वृटी पृ ५४)।

ठरिअ—१ सम्मानित। २ ऊर्ध्वस्थित (दे ४।६)।

ठल्ल—निर्धन (दे ४।५ वृ)।

ठल्लय—निर्धन (दे ४।५)।

ठविआ—प्रतिमा (दे ४।५)।

ठाग—अवकाश, स्थान (वृभा ४८५०)।

ठाण—अभिमान (दे ४।५)।

ठाणइल्ल—कोतवाल—'ठाणइल्ला रायपुरिसा गहण-कड्ढण करेज्ज' (निचू ३ पृ १६६)।

ठाणिज्ज—१ सम्मानित (दे ४।५)। २ गौरव।

ठिअअ—ऊर्ध्व, ऊंचा (दे ४।६ वृ)।

ठिक्क—शिश्न, पुरुष-चिह्न (दे ४।५)।

ठिक्करिया—ठीकरी, कपाल—'ठिक्करियं अच्चेहि' (आवहाटी १ पृ २६४)।

ठिक्किरिया—ठीकरी, घड़े का टूटा हुआ अंश—'सरक्खाणं ढुक्काहि ठिक्किरियं च अच्चेहि' (आवचू १ पृ ५२२)।

ठियल्ल—अवस्थित (उसुटी प ७२)।

ठिविअ—१ ऊर्ध्व। २ निकट। ३ हिचकी (दे ४।६)।

ठुंठ—स्थाणु—'छिन्नावशिष्टवनस्पतीनां शुष्कावयवाः ठुंठा इति लोकप्रसिद्धा' (जंवूटी प ६६)।

ठोठिका—एक प्रकार की मिठाई (प्रसाटी प ५१)।

ड

डआलुय—नौका-विशेष (अंवि पृ १४६)।

डउर—जलोदर रोग (निभा २६५)।

डंक—१ (विच्छू आदि का) दंश (प्र १।२३)। २ क्षत-विक्षत (निचू २ पृ ८८)।

डंगर—नीच जाति के लोग—'डंगरा पादमूलिया' (निचू ३ पृ ५२१)। २ लाठी रखने वाले चोर—'लाकुटिकाः डङ्गरा.' (वृटी पृ ११५७)।

डंड—वस्त्र के जोड़े हुए टुकडे (दे ४।७)।

डंडअ—रथ्या (दे ४।८)।

डंडपरिहार—जीर्ण-शीर्ण बडी कम्बल—'महंता जुण्ण कंवली सरडिता डंड-परिहारो भण्णति' (निचू २ पृ ३२२)।

डंडि—साधा हुआ जीर्ण वस्त्र (निचू ३ पृ ६०)।

डंडी—सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४।७ वृ)।

डंबर—घर्म, गर्मी (दे ४।८)।

डंभण—सूची की भांति तीक्ष्ण शस्त्र-विशेष (विपा १।६।२१)।

डंभिअ—द्यूतकार (दे ४।८)।

डक्क—१ सांप द्वारा डसा हुआ (निचू १ पृ ८२)। २ दन्तगृहीत (दे ४।६)। ३ वाद्य-विशेष।

डक्कुरिज्जंत—पीड़ित होता हुआ—'महाणगरडाहे वा डक्कुरिज्जतेसु वा णगरगामेसु वा समता हाहाकाररवा' (सूचू १ पृ १३१)।

डगण—यान-विशेष (बृभा ३१७१)।

डगल—१ फल का छोटा और विषम गोल टुकडा (नि १५।७)। २ खण्ड—'डगल तु होइ खड' (निभा ४६६८)। ३ आधाभाग—'डगल अद्ध भण्णति' (निचू ३ पृ ४८२)। ४ ईंट का टुकडा (ओनि ३६०)। ५ पाषाण-खड (ओभा ७८)।

डगलग—ईंट, पाषाण आदि के टुकडे (पिनि ३७)।

डग्गल—घर के ऊपर का भूमितल (दे ४।८)। डागला (राजस्थानी)।

डड्ढाडी—दवमार्ग, अग्निमार्ग (दे ४।८)।

डड्ढाली—दवमार्ग, दावानल से निर्मित मार्ग (दे ४।८ पा)।

डप्फ—सेल्ल नामक आयुध (दे ४।७)।

डब्ब—वाया—'चउरगुल मुहपत्ती उज्जुए डव्वहत्थ रयहरण' (आवनि १५४५)।

डमर—अशोभनीय—'पच्चता करिंति डमराइं' (आवहाटी २ पृ ४५)।

डल—लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ४।७)।

डल्ल—१ वांस की वडी छावडी—'गवा चरणार्थ यद्वशदलमय महद्भाजन तद्गोकिलञ्जं डल्ले त्ति यदुच्यते' (उपाटी पृ ९६, दे ४।७)।

डल्ला—वास का वना हुआ भाजन-विशेष (भटी प ३१३)।

डव्व—वायां हाथ (दे ४।६)।

डहर—१ वालक (सू १।२।२, दे ४।८)। २ छोटा—'जे यावि नाग डहर ति नच्चा आसायए से अहियाय होइ' (द ९।१।४)। ३ अकुलीन—'डहरो अकुलीणो त्ति' (जीविप पृ ४१)।

डहरप्फर—हडवडाहट (दअचू पृ ८)।

डहरय—छोटा (उसुटी प २४)।

डहराक—छोटा (अंवि पृ ११९)।

डहरिया—छोटी, अठारह वर्ष तक की लडकी (आवचू २ पृ १५४)।

डहरी—१ छोटी (दश्रुनि ५)। २ अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा (दे ४।७)।

डाअ—पत्ती वाला हरित शाक-विशेष (दश्रु ३।३) ।

डाअल—नेत्र, लोचन (दे ४।९) ।

डाउ—१ फलिहंसक वृक्ष । २ गणपति की प्रतिमा-विशेष (दे ४।१२) ।

डाग—१ पत्ती वाला शाक (जीभा १२१३) । २ हरा शाक—'मूलफलं हरियग डागो' (पंक ७२८) । ३ डाली (आटी प ४११) ।

डागल—फल का गोल टुकड़ा (नि १५।७) ।

डागवच्च—पत्र-प्रधान शाक सुखाने का स्थान (आचूला १०।२६) ।

डामित—ज्ञामित, जलाया हुआ (व्यभा ७ टी प ५५) ।

डाय—१ बैंगन, ककड़ी, चना, पत्ती आदि का शाक । २ मसालों से पकाई हुई वथुआ, राई आदि की भाजी (प्रसा १३९) ।

डायलअ—चक्षुष्मान्, आंख वाला—'ता तरलिअडायलओ गुत्तिद्दहे डिड्डुरोव्व डिफेसु' (दे ४।९ वृ) ।

डायाल—हर्म्यतल, प्रासाद-भूमि (निचू २ पृ ३६) ।

डाल—वृक्षशाखा (निचू ३ पृ २४) ।

डालग—१ शाखा का एक भाग—'डालग त्ति शाखैकदेशः' (आटी प ३५४) । २ सूक्ष्म खण्ड (आटी प ४०५) ।

डालय—शाखा (ज्ञा १।३।१८) ।

डाला—वृक्ष की शाखा (पा २३३) ।

डाली—शाखा (निचू ३ पृ ४७२; दे ४।९) ।

डाव—वाम हस्त, बाया हाथ (निर १।३८;दे ४।६) । डावो (राज, गुज) ।

डिअली—स्थूणा, खम्भा (दे ४।९) ।

डिंडि—सिले हुए वस्त्र-खंड (दे ४।७) ।

डिंडिवंध—गर्भ-संभव (पंक २४४) ।

डिंडिम—१ कांस्य पात्र (आचूला १।१४५) । २ गर्भ-संभव (निचू २ पृ २६०) ।

डिंडिल्लिअ—१ तैल-किट्ट से व्याप्त वस्त्र, खलि-खचित वस्त्र (दे ४।१०) । २ स्खलित हस्त (वृ) ।

डिंडिल्लिअय—स्खलित हस्त (दे ४।१० वृ) ।

डिंडुर—मेढक (दे ४।९ वृ) ।

डिफ—जल—'डिड्डुरो व्व डिफेसु' (दे ४।९ वृ) ।

डिफिअ—पानी में गिरा हुआ (दे ४।९) ।

डिक्क—बालक (आवचू १ पृ ४६९) ।

डिक्कर—पुत्र (आवहाटी १ पृ ६२) । डीकरो (गुज) ।

डिक्करिका—छोटी कन्या (आटी प ४१३) । डीकरी (गुज) ।

डिक्करुका—लड़की (आवचू २ पृ २९०) ।

डिक्करूव—बालक–'एए पव्वइया डिक्करूवाणि घेत्तु मारेति' (उसुटी प २०५) ।

डिड्डुर—मेंढक (दे ४।९) ।

डिड्डुर—मेंढक (दे ४।९ वृ) ।

डिप्फर—आसन-विशेष–'डिप्फरो पीढफलकं सत्थियं तलियं ति वा' । (अंवि पृ ६५) ।

डिलय—शाखा–'डिलयम्मि ओलइया' (जीभा ५३८) ।

डीण—अवतीर्ण (आचू पृ ८५, दे ४।१०) ।

डीणोवय—ऊपर (दे ४।१०) ।

डीर—नया अंकुर, कन्दल (दे ४।१०) ।

डुंग—१ शिलाओ का उपचय । २ चोरो का समुदाय–'डुगानि शिलावृन्दानि चोरवृन्दानि वा' (जंबूटी प १६८) ।

डुंगर—१ छोटी पहाडी । २ चोरो की बस्ती (जंबूटी प १६८) । ३ पर्वत (दे ४।११) ।

डुंघ—नारियल का बना पात्र जो पानी निकालने के काम आता है (दे ४।११) ।

डुंडुअ—१ पुराना घण्टा (दे ४।११) । २ बडा घंटा ।

डुंब—१ महावत (पिनि ३८७) । २ चाण्डाल (सूचू २ पृ ३५७, दे ४।११) ।

डुंबिय—चाडाल (निचू २ पृ २६६) ।

डुपक—नाव (अवि पृ ७९) ।

डेप—१ गहरा–'डेपकूपे प्रतिबिम्ब मरुकूपसदृशमतीवोण्ड कूप दृष्वेत्यर्थः' । २ प्रतिक्षेपण, गिराना (व्यभा ४।३ टी प ९) ।

डेपन—लघन, अतिक्रमण (व्यभा ४।३ टी प ६) ।

डेरग—छोटा, लघु (आवहाटी १ पृ २७०) ।

डेवण—कूदना-फादना–'डेवण गत्तवरंडाई फडण' (जीविप पृ ३४) ।

डेवेमाण—प्लवमान (भ १३।१५५) ।

डोअ—दाल-शाक आदि परोसने की काष्ठ-निर्मित बड़ी कडछी (नदी ३८।९, दे ४।११) । डोयो (गुज) ।

डोअण—लोचन (दे ४।६)।

डोंगर—१ छोटी पहाडी (जवू २।१३१)। २ ढेर, टीला—'छारेण डोंगरा कता' (आवचू १ पृ २२३)। ३ पर्वत (ओटी प २०)।

डोंगिली—१ ताम्बूल का भाजन-विशेष (दे ४।१२)। २ पान वेचने वाली स्त्री (वृ)।

डोंगी—१ स्यासक—कुकुम आदि से लिप्त हथेली का छापा। २ पान रखने का पात्र-विशेष, पानदानी (दे ४।१३)।

डोंडिणी—ब्राह्मणी (आवहाटी १ पृ ३७)।

डोंव—१ चाण्डाल, डोम (प्र १।२१)। २ महावत (वृभा ४१२४)। देश-विशेष (प्रज्ञा १।८६)। ४ पटह वजाने वाला—'किं कोइ डोंव-डिभो पडहयसद्दस्स उत्तसइ' (कु पृ ३८)।

डोंविल—डोम, चाण्डाल (जीभा ४२५)।

डोंबिलग—१ एक अनार्य-जाति। २ म्लेच्छ देश-विशेप (प्रज्ञा १।८६)।

डोंबिल्लिय—अनार्य जाति का नृत्य, वादन आदि (कु पृ १५०)।

डोंबी—कर्णपिशाचिनी, चांडाली (पंवटी प २३२)।

डोड—ब्राह्मण (उसुटी प ५८)।

डोडकित—वनस्पति की वह अवस्था जिसमे अनाज के 'डोडे' उत्पन्न हो गये हो (ज्ञाटी प १२५)।

डोडिणी—ब्राह्मणी (अनुद्वा ६८)।

डोड्डुग—आक का डोडा—'अक्कडोड्डुगाइ तूलभरिया वा तूली' (निचू ३ पृ ३२१)।

डोड्डुनी—ब्राह्मणी (स्याटी प १४४)।

डोतीय—वडा चम्मच (जीभा १२११)।

डोभ—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

डोल—१ चतुरिन्द्रिय जीव-विशेप, टिड्डी (उ ३६।१४७)। २ फल-विशेप, मधूक (प्रसा २१६)। ३ अक्षिगोलक—'वेवि अक्खिडोलए पाडेति' (आचू पृ २२६)। ४ आख (दे ४।६)।

डोला—१ शिविका (दे ४।११)। २ हिंडोला, झूला (पा ७४१)। ३ टिड्डी—'डोला: तिड्डुका उच्यन्ते' (वृटी पृ ६७५)।

डोलिअ—काला हिरण (दे ४।१२)।

डोलिका—वैठने की डोली (जंवूटी प १२३)।

डोव—१ म्लेच्छ जाति (निचू १ पृ १०३)। २ कड़छी (आवटि प ६१)।

डोवलिय—शाक आदि परोसने का काष्ठ-पात्र (आवहाटी २ पृ २४४)।

डोविलिय—शाक आदि परोसने का काष्ठ-पात्र (आवचू २ पृ ३१०)।

डोहल—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

डोहिय—फल की अस्थिविहीन अवस्था (आचू पृ ३४१)।

ढ

ढंक—१ जगली कौआ, मांसभक्षी पक्षी—'सियाल-णतिक्क-ढकादी' (जीभा २४६७)। २ जलचर पक्षि-विशेष—'........जलचरपक्षि-जातिरेव........एते हि न तृणाहारा. केवलोदकाहारा वा' (सूचू १ पृ २०१)। ३ मासभक्षी क्षुद्र जीव (सूटी १ प २४६)। ४ कौआ (दे ४।१३)।

ढंकण—ढक्कन, पिधानक (अनुद्वा)।

ढंकणी—पिधानिका, ढकनी (दे ४।१४)।

ढंकराली—बडे पक्षी-विशेष—महासकुणा दिग्घग्गीवा··· पारिप्पव-ढकरालीओ' (अवि पृ २३६)।

ढंकुण—१ वाद्य-विशेष (आचूला ११।२)। २ खटमल (जबूटी प १२४, दे ४।१४)।

ढंखरिअ—विशेष प्रकार की वीणा रखने वाला (दे ४।१४ वृ)।

ढंखरी—वीणा का एक प्रकार (दे ४।१४)।।

ढंढ—१ पङ्क। २ निरर्थक (दे ४।१६)। ३ कपटी, दाम्भिक।

ढंढणी—१ तृण-विशेष (बृटी पृ २०६)। २ कपिकच्छु का वृक्ष (दे ४।१३)।

ढंढर—१ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४।१६)।

ढंढरिअ—कर्दम (दे ४।१५)।

ढंढसिअ—१ ग्रामयक्ष (दे ४।१५)। २ ग्रामवृक्ष (वृ)।

ढंढा—भेरी—'णेहो त्ति णाम डड्ढ (ढढ ?) भणिय मज्झण्हढंढाए' (कु पृ १६६)।

ढंसय—अपयश (दे ४।१४)।

ढक्क—म्लेच्छ जाति-विशेष (कु पृ १५३)।

ढक्कण—ढक्कन–'संवरं ढक्कणं पिहाण ति एगट्ठा' (जीचू पृ ५)।

ढक्कय—तिलक (दे ४।१४)।

ढक्करि—अद्‌भुत (प्रा ४।४२२)।

ढक्कवत्थुल—एक प्रकार की भाजी (प्रसा २३९)।

ढक्किय—१ आच्छादित (पिनि १६८)। २ वृषभ की आवाज (उमुटी प १३५)।

ढड्ढ—भेरी (दे ४।१३)।

ढड्ढर—१ तेज आवाज (बृभा २५९१)। २ गुरुवन्दन का एक दोष—ऊंचे स्वर से वन्दन करना (प्रसा १७३)।

ढमर—१ पिठर, स्थाली। २ उष्णजल (दे ४।१७)।

ढयर—१ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४।१६)।

ढावरा—बालक (अंवि पृ ६६)। डावरा (राजस्थानी)।

ढिंचल्लिका—पुतली (पिटी प ६)।

ढिंक—बड़ा काक (प्रटी प १०)।

ढिंकिय—वृषभ की गर्जना–'वसभं ढिंकिएणं' (अनुद्वा ५२२)।

ढिंकुण—१ खटमल (जंबू २।४०)। २ गौ आदि को लगने वाला क्षुद्र जंतु-विशेष 'चींचड' (उ ३६।१४६)।

ढिंढ—जल में गिरा हुआ–'दिट्ठो कह वि मह पई ढिंढो' (दे ४।१५ वृ)।

ढिंढय—जल में गिरा हुआ (दे ४।१५)।

ढिक्कय—नित्य (दे ४।१५)।

ढिक्किय—वृषभ का शब्द–'वसभढिक्कियाइ' (अनुद्वाचू पृ १३)।

ढुंढुल्लिअ—खोजा हुआ (पा ५२९)।

ढुक्कड—उपस्थित, मिलित–'इमं समोसरणं ढुक्कडं' (सूचू २ पृ ४१४)।

ढेंका—१ ढेंकुवा पक्षी (निचू १ पृ १०३)। २ हर्ष। ३ कूपतुला (दे ४।१७)।

ढेंकी—बलाका (दे ४।१५)।

ढेंकुण—खटमल (दे ४।१४)।

ढेंढिअ—धूपित (दे ४।१६)।

ढेकुय—कूप-तुला–'दो जणा ढेकुयादवरकेण····बद्धा' (आवमटी प २७९)।

ढेक्किय—सांड की गर्जना—'गोट्ठंगणस्स मज्झे ढेक्कियसद्देण जस्स भज्जंति' (आवहाटी २ पृ १५३)।

ढेणिआल—टिड्डी (अंतटी पृ ४)।

ढेणिकाल—कीट-विशेष (अनुटी पृ ४)।

ढेणियालग—पक्षि-विशेष (प्र १।६)।

ढेणियालिया—पक्षि-विशेष (अनु ३।३३)।

ढेल्ल—निर्धन (दे ४।१६)।

ढेल्लिका—नितम्ब (अवि पृ ११४)।

ढेल्लिय—ढेला, मृत्खंड (अवि पृ २१५)।

ढेल्लिया—मिट्टी का ढेला (अवि पृ २१५)।

ढोइत—प्रविष्ट (निचू २ पृ २८५)।

ढोंघर—भ्रमणशील (दे ४।१६ वृ)।

ढोंघरय—भ्रमणशील (दे ४।१६)।

ढोंढसिव—भगवान् महावीर के समय से प्रचलित ग्राम-देवता—'ततो तप्पभिई ढोंढसिवो पवत्तो' (आवमटी प २६१)।

ढोक्कणिय—आच्छादन—'कुतित्थाणि य जाणासि, अच्छिढोक्कणियाणि य' (आवहाटी २ पृ ४८)।

ढोय—गमन, प्रवेश—'चेल्लणाइ कयाइ ढोयं न देइ' (आवहाटी २ पृ १२६)।

ढोल्ल—१ प्रिय (प्रा ४।३३०)। २ पटह, ढोल। ३ देशविशेष।

ण

णइकुक्कुडिका—जलचर पक्षि-विशेष (अवि पृ २३८)।

णइमासय—पानी मे होने वाला फल-विशेष (दे ४।२३)।

णउत—संख्या-विशेष—'चतुरशीतिर्नयुताङ्गशतसहस्राणि एकं नयुतम्' (स्थाटी प ३४५)।

णउलग—नौली, रुपयो की थैली (उसुटी प ११८)।

णं—पादपूरक अव्यय—'णगारो देसिवयणेण पायपूरणे, जहा—समणे ण रुक्खा ण गच्छा णं ति' (निचू १ पृ २६)।

णंकार—पादपूर्ति के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द—'णंकार पूरणे देसी-भापातो वा' (सूचू १ पृ १४२)।

णंगणिगा—नग्नभाव—'नग्नभावो हि णगणिगा स्यात्' (सूचू १ पृ १५६)।

णंगर—लंगर, जहाज को जल-स्थान मे थामने के लिए पानी मे डाला जाने वाला लोहे या पत्थर का साधन (ज्ञाटी प १६५)।

णंगल—लागूल, पूछ—'गद्दभनगलेण गाहाविया' (आवहाटी २ पृ १३१)।

णंत—वस्त्र—'णतमिति देशीवचन वस्त्रवाचकम्' (आवमटी प ८८)।

णंतक—कपड़ा (आवचू २ पृ २११)।

णंतग—वस्त्र—'उग्गह णतग पट्टो अड्ढोरुग' (पक १४८१)।

णंतिक्क—१ बुनकर, जुलाहा—'णतिक्क-रयग-देवड-डोंबिल-पाडहिय रायपहे' (जीभा ४२५)। २ पशु-विशेष—'अण्णे वि अत्थि सघा, सियाल-णतिक्क-ढंकादी' (जीभा २४६७)। ३ वस्त्र छापने वाला, छीपा (व्यभा १० टी प ६६)।

णंतुका—पक्षिणी-विशेष (अवि पृ ६६)।

णंद—१ ईख पेरने का काण्ड। २ कुडा, पात्र-विशेष (दे ४।४५)। ३ लोहे, का वृत्त आसन-विशेष (ज्ञाटी प ४७)।

णंदण—१ भृत्य, नौकर (दे ४।१६)। २ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष (कु पृ १४६)।

णंदा—गाय (दे ४।१८)।

णंदिअ—सिंहनाद, सिंह का दहाड़ना (दे ४।१६)।

णंदिक्ख—सिंह (दे ४।१६)।

णंदिणी—गाय (दे ४।१८)।

णंदिविणद्धण—सिर का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

णंदी—गाय (दे ४।१८)।

णंदीविणद्धक—सिर का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)।

णक्क—१ नाक (विपा १।१।६२; दे ४।४६)। २ मूक (दे ४।४६)।

णक्खच्चण—नखचूटी, नहरनी (पक २०२४)।

णक्खच्चणि—नहरनी (वृभा २८८३)।

णक्खत्तणेमि—विष्णु (दे ४।२२)।

णगर—घर—'णगर घरं आश्रयेत्यर्थ.' (निचू १ पृ ६६)।

णगरग—घर (निभा २८३)।

णच्चिर—रमणशील, उन्मत्त–'ण सुणेसि णच्चिराणं जइ गीय' (दे ४।१८)।

णच्छक—रोग-विशेष (अवि पृ २०३)।

णच्छोटि—नाखून काटने का शस्त्र, नहरनी (व्यभा १० टी प ३०)।

णज्जर—मलिन (दे ४।१९)।

णज्झर—निर्मल (दे ४।१९)।

णट्टुल्लग—नाटक (ज्ञाटी प १०२)।

णट्टोसक—नाटकाचार्य (अवि पृ ६८)।

णड—तृण-विशेष (जीवटी प १२३)।

णडइल्ल—नाटकीय (कु पृ ४२)।

णडवेलंब—कोलाहल, छीनाझपटी–'तारिस णडवेलव घरे दट्ठु' (निचू ३ पृ ४२३)।

णडिअ—१ वञ्चित, प्रतारित (ज्ञा १।९।५४, दे ४।१८)। २ व्याकुलता, खिन्नता (पा ५७५)।

णडुली—कछुआ (दे ४।२०)।

णडुरी—मेंढक (दे ४।२०)।

णडुल—१ रतिक्रीडा। २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे ४।४७)।

णड्डुली—कछुआ (दे ४।२० वृ)।

णण्ण—१ कूप। २ दुर्जन। ३ बडा भाई (दे ४।४६)।

णत्तमाल—वृक्ष की एक जाति (अवि पृ ६३)।

णत्थक—नासारज्जु (अवि पृ २०२)।

णत्थण—१ नाथना, नाक मे छिद्र करना (दअचू पृ १७८)। २ पशु के नाक में बाधी जाने वाली रस्सी (अंवि पृ २१४)।

णत्था—नासारज्जु (भ ९।१४१, दे ४।१७)। नाथ (राज)।

णदीपुत्तक—जलचर प्राणी-विशेष–'अस्समच्छा णरमच्छा णदीपुत्तका सव्वचरा चेति' (अवि पृ २२८)।

णदीसुत्तक—जलचर प्राणी-विशेष (अवि पृ २२५)।

णदुल्लग—नाट्य–'नदुल्लग च सिक्खावेति' (ज्ञा १।३।२७)।

णद्दिअ—दुःखित (दे ४।२०)।

णद्ध—आरूढ (दे ४।१८)।

णद्धंववय—१ अघृणा। २ निन्दा (दे ४।४७)।

णमसिय—मनौती (दे ४।२०)।

णरिंद—पारे को बांधने वाला—'जो उण बंधइ णिउणो रसं पि सो भण्णइ णरिंदो' (कु पृ १९७)।

णल—मत्स्य की एक जाति—'रोहित-पिचक-णल-मीण-चम्मिराजो' (अंवि पृ २२८)।

णलक—खस का तृण (आवचू १ पृ ३७२)।

णलथंभ—वृक्ष-विशेष—'सुचिरपि अच्छमाणो नलथंभो उच्छुवाडमज्झंमि।
कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाण ते॥'
(आवनि १११७)।

णलय—खस का तृण (दे ४।१९)।

णलिअ—गृह (दे ४।२०)।

णल्लग—पात्र-विशेष (जबूटी प १००)।

णल्लय—१ कर्दमित, कीचडवाला। २ वाड का विवर। ३ प्रयोजन। ४ निमित्त (दे ४।४६)।

णवणीइया—गुल्म वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८।३)।

णवतय—विना पिंजी हुई ऊन से वना आस्तरण-विशेष (ज्ञा १।१।१८)।

णवय—विना पिंजी हुई ऊन से वना आस्तरण-विशेष—'अत्थुरण पाउरण वा अकत्तिय उन्नाए नवय कज्जति' (निचू ३ पृ ३२१)।

णवर—१ केवल, सिर्फ (आचूला १।३४)। २ अनन्तर।

णवरं—१ केवल, इसके अतिरिक्त—'एव जहा महब्बले, नवर—गोयमो नामेण' (अत १।१७)। २ अनन्तर (आवचू १ पृ २४९)।

णवरि—१ केवल (प्र ६।१)। २ अनन्तर (से ११।६८)।

णवरिअ—सहसा, शीघ्र (दे ४।२२)।

णवलय—व्रत-विशेष—'दोलाविलाससमए पुच्छतीहिं सहीहिं पइणामं।
लट्ठीहिं हणिज्जती वहुया णवलयवयं भरइ॥' (दे ४।२१ वृ)।
देखे—'णवलया'।

णवलया—नियम-विशेष, जिसके अनुसार सभी लोग पलाश की लताए लेकर घूमते हैं तथा विभिन्न स्त्रियो को अपने-अपने पति का नाम पूछते हैं। जो स्त्री अपने पति का नाम नही वताती, उसे पलाश की लता से आहत करते है—'जत्थ पलासलयाए जणेहि पइणाम पुच्छिआ जुवई। अकहन्ती णिहणिज्जइ णिअमविसेसो णवलया सा।' (दे ४।२१)।

णवसिअ—उपयाचितक, मनौती (दे ४।२२ वृ)।

णवूहक—चित्र-विचित्र रंगों वाला पक्षी (अवि पृ २२५)।
णवोद्धरण—जूठा, उच्छिष्ट (दे ४।२३)।
णव्व—आयुक्त, गाव का मुखिया (दे ४।१७)।
णव्वाउत्त—१ ईश्वर, धनाढ्य (दे ४।२२)। २ नियोगीपुत्र, सूबेदार का लडका (वृ)।
णव्वाउत्तय—धनाढ्य (दे ४।२२ वृ)।
णहट्टिका—आसन-विशेष—'भद्दासणं पीढग वा कट्ठखोडो नहट्टिका' (अवि पृ १५)।
णहमुह—उल्लू (दे ४।२०)।
णहरणि—नहरणी, नाखून काटने का औजार (वृभा ४०९६)।
णहरणिया—नाखून काटने का साधन-विशेष (आवटि प ८०)।
णहरी—छुरिका (दे ४।२०)।
णहवल्ली—विद्युत् (दे ४।२२)।
णहिया—कुहन-वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।
णाअ—अभिमानी (दे ४।२३)।
णाइ—निषेधार्थक अव्यय, नही (भ ३।५०)।
णाइं—निषेधार्थक अव्यय, नही (उपा २।४०)।
णाउड्ड—१ सद्‌भाव। २ अभिप्राय (दे ४।४७)। ३ मनोरथ (वृ)।
णाउल्ल—गोमान्, जिसके पास अनेक गाये हो (दे ४।२३)।
णाणग—रुपया, सिक्का—'ताम्रमय वा जं णाणगं ववहरति त दिज्जति' (निचू ३ पृ १११)।
णानिका—नानी, माता की माता (अंवि पृ ६८)।
णामत—पर्वत—'णामतो गिरिको व त्ति तहा पव्वतको त्ति वा' (अवि पृ ७८)।
णामिण—मत्स्य-जाति-विशेष (अंवि पृ ६३)।
णामुक्कसिअ—कार्य, काम (प्रा २।१७४)।
णामोक्कसिअ—कार्य, काम (दे ४।२५)।
णारुट्ट—कूसार, गर्त्ताकार स्थान (पा ३१६)।
णारोट्ट—१ बिल, विवर (दे ४।२३)। २ कूसार, गर्त्ताकार स्थान (वृ)।
णालंपिअ—आक्रन्दित (दे ४।२४)।
णालंबि—कुतल, केश (दे ४।२४)।

णालक—भोजन करने का पात्र (अवि पृ ६५)।
णालिअ—मूढ, मूर्ख (प्रा ४।४२२)।
णालिएर—नारियल (आचूला १।१०४)।
णालिएरी—नारियल (आचूला १।११५)।
णावण—वितरण, दान—'नावण त्ति तस्य दानं' (प्र ३।१२ टी प ५७)।
णावा—प्रसृति, अजलि—'नावा पसई' (प्रसाटी प २२६)।
णावापूर—चुलुक, चुल्लू—'दोहिं तिहिं वा णावापूरेहिं अच्छि धोवति' (निचू २ पृ २२०)।
णावापूरय—चुल्लू—'नावापूरओ नाम पसती' (वृटी पृ १३३)।
णाहिदाम—चंदोवे के बीच मे लटकती हुई माला (दे ४।२४)।
णाहिविच्छेअ—जघन (दे ४।२४)।
णाहीए-विच्छेअ—जघन, कटि के नीचे का भाग (दे ४।२४ वृ)।
णिअंधण—वस्त्र (दे ४।३८)।
णिअंसण—वस्त्र (दे ४।३८)।
णिअक्कल—वर्तुल, गोलाकार (दे ४।३९)।
णिअडि—दम्भ (सू २।२।५८; दे ४.२६)।
णिअत्थ—परिहित, पहना हुआ (दे ४।३३)। देखें—णियत्थ।
णिअय—१ शाश्वत (भ २।१२५, दे ४।४८)। २ मैथुन। ३ शय्या ४ कलश (दे ४।४८)।
णिअरिअ—राशि रूप से स्थित (दे ४।३८)।
णिअल—नूपुर (दे ४।२८)।
णिआणिआ—खराब तृणों का उन्मूलन (दे ४।३५)।
णिआर—शत्रु का घर (दे ४।२९)।
णिइग—प्रतिदिन—'नैतिक प्रतिदिनमिति यावत्' (प्रटी प १४१)।
णिउक्क—मौनी, तूष्णीक (दे ४।२७)।
णिउक्कण—१ कौवा। २ मूक (दे ४।५१)।
णिउर—१ वृक्ष-विशेष (ज्ञा १।९।२०)। २ कटा हुआ। ३ जीर्ण।
णिओद—१ अनंत जीवों का एक शरीर—'कतिविहा णं भंते ! निओदा पण्णत्ता ?' (भ २५।२७३)। २ कुटुम्ब, समूह—'बावत्तरिं निओदा बीय बीयमेत्ता बिलवासिणो भविस्सति (भ ७।११९)।
णिदिणी—खराब तृणों का उत्पाटन (दे ४।३५)।

णिबोलिया—नीबोली, नीम का फल (ज्ञाटी प २०६)।

णिक्क—१ स्वच्छ (ज्ञा १।१।१२५)। २. परिमाण—'कायगमासज्ज तहा, कुत्तियमुल्लस्स णिक्कं ति' (बृभा ४२१६)।

णिक्कइला—जीता हुआ (दे १।४ वृ)।

णिक्कइल्ला—जीता हुआ (दे १।४ वृ)।

णिक्कज्ज—अनवस्थित, चंचल (दे ४।३३)।

णिक्कड—१ कठिन (प्रटी प ६७; दे ४।२६)। २ निश्चय।

णिक्कल—सघन, पोलेपन से रहित—'निम्मल नित्तलं निक्कलं....मणिरयणं' (भ १५।६१)।

णिक्का—१ जलमार्ग—'णिक्का सारणी वा पाणियाहारिपंथो' (आचू पृ ३६६)। २ नाली—'कद्दम बहुलं पाणीय सेओ भण्णति, तस्स आययणं णिक्का' (निचू २ पृ २२६)। ३ वाम नासिका।

णिक्काणित—नाक की आवाज (अंवि पृ १८१)।

णिक्कार—अधम जाति-विशेष (पंक ५०१)।

णिक्काल—वाहर निकालने वाला—'रिउजीवियनिक्काल हत्थि' (ति ३०१)।

णिक्कूइला—जीता हुआ (दे १।४ वृ)।

णिक्केतिज्जंती—प्रसव करती हुई—'त ओव्वरए पवेसेऊण णिक्केतिज्जतीए अप्पसागारियनिमित्तं सयं चेट्ठति' (दअचू पृ ५०,५१)।

णिक्कोरण—पात्र आदि के मुख का अपनयन—'मुहस्स अवणयणं णिक्कोरणं' (निचू ३ पृ ४७२)।

णिक्ख—१ चोर। २ कांचन, स्वर्ण (दे ४।४७)।

णिक्खय—निहत, मारा हुआ (दे ४।३२)।

णिक्खसरिअ—मुषित, अपहृतसार, जो लूट लिया गया हो वह (दे ४।४१)।

णिक्खड—१ अकम्प (दे ४।२८)। २ विल—'पइसति णिक्खुडेसु संकड-कुडिलेसु दुक्खेण' (कु पृ ३६)। ३ गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)। ४ भूमि-खड (आवचू १ पृ १६६)।

णिक्खुरिअ—अस्थिर (दे ४।४०)।

णिगढ—गरमी, घाम (दे ४।२७)।

णिगोद—१ अनन्त जीवो का एक शरीर (भ २५।२७४)। २ समूह, पिण्ड, कुटुव—'निगोदा कुटुवानि' (भटी प ३०६)।

णिग्गा—हल्दी, हरिद्रा (दे ४।२५)।

णिग्गिण्ण—१ बाहर निकला हुआ (दे ४।३६)। २ वान्त, वमन किया हुआ (से ५।२६)।

णिग्घट्ट—कुशल (दे ४।३४)।

णिग्घत्तिय—क्षिप्त, फेंका हुआ (पा ५४५)।

णिग्घोर—निर्दय (दे ४।३७)।

णिग्घोलिय—खाली किया हुआ—'णिग्घोलियं च पल्लं' निघोलितं—रिक्तीकृतम्' (बृभा ३३६६ टी पृ ९५०)।

णिच्चुड्डु—१ निर्दय (पा १२५)। २ बाहर निकला हुआ।

णिच्छ—योग्य (?) (आचू पृ ३७०)।

णिच्छक्क—१ निर्लज्ज (बृभा २२५६)। २ अवसर को नही जानने वाला, असमयज्ञ।

णिच्छुंड—निर्दय (दे ४।३७)।

णिच्छूढ—निष्कासित (उशाटी प १६६)।

णिच्छोलित—छीला हुआ, छाल उतारा हुआ (अंवि पृ १७१)।

णिज्ज—सुप्त, सोया हुआ (दे ४।२५)।

णिज्जाअ—उपकार (दे ४।३४)।

णिज्जूह—१ द्वार के ऊपर बाहर निकला हुआ काष्ठ-विशेष (प्र १।१८)। २ गवाक्ष (व्यभा ३ टी प ६३)। ३ नीव्र, गृहाच्छादन (दे ४।२८)। ४ द्वार।

णिज्जूहअ—द्वार का किनारा (कु पृ ६७)।

णिज्जोअ—१ राशि, ढेर (दे ४।३३)। २ पुष्पों का ढेर (वृ)।

णिज्जोमि—रज्जू, रस्सी (दे ४।३१)।

णिज्जोय—सामग्री, परिकर—'एगाभरणवसणगहियनिज्जोया' (भ ९।२०२)।

णिज्झर—जीर्ण (दे ४।२६)।

णिज्झाअ—निर्दय (दे ४।३७)।

णिज्झूर—जीर्ण (दे ४।२६ वृ)।

णिट्टंक—१ पर्वत से छिन्न भाग। २ विषम (दे ४।५०)।

णिट्टुइय—क्षरित, टपका हुआ (पा १३६)।

णिट्ठुहण—थूक—'निट्ठुहणेण घसिऊण कणयवन्ना कया अंगुली दंसिया' (उसुटी प २४२)।

णिट्ठुहिअ—निष्ठीवन, थूक (दे ४।४१)।

णिट्ठूढ—निष्ठ्यूत (दअचू पृ २२)।

णिट्ठह—स्तब्ध (दे ४।३३)।

णिड—राक्षस (दे ४।२५)।

णिड्डील—निलीन (?) (अवि पृ १६९)।

णिण्णार—नगर से निष्कासित—'सो पच्छा रण्णा पडिहओ, णिण्णारो य कओ, अण्णहिं नगरे एवं चेव करेइ'। (अनुद्वाहाटी पृ १८)।

णिण्णाला—चञ्चु (दे ४।३६)।

णितण्णिक—पुष्प-जाति-विशेष (अवि पृ ७०)।

णितरिंगी—आभूषण-विशेष (अवि पृ ७१)।

णित्त—स्त्री-योनि (बृभा २०७५)।

णित्तिरडि—निरन्तर (दे ४।४०)।

णित्तिरडिअ—त्रुटित, टूटा हुआ (दे ४।४१)।

णित्तुप्प—बिना चुपड़ा या बिना बघारा हुआ (बृभा १७०६)।

णित्थक्क—१ निर्लज्ज—'णित्थक्को णिल्लज्जो भवति' (निचू ४ पृ ४४)। २ अचानक (ज्ञाटी प १७५)।

णित्थरभल्ल—अस्त्र-विशेष, साधन-विशेष—'णित्थरभल्लेण णहादिणा वा खयं करेज्ज' (निचू ४ पृ १७८)।

णिदा—१ जानकर, प्राप्तकर—'खण णिदाए पविसिस्सामि' (सू २।४।४)। २ ज्ञानयुक्त वेदना (समप्र १७२।१)।

णिदाय—ज्ञानयुक्त (भटी पृ १४१७)।

णिदोच्च—१ भय का अभाव। २ संघर्ष का उपशमन। ३ स्वास्थ्य (व्यभा ६ टी प ५१)।

णिद्दार—कणिका, टुकड़ा (आवहाटी २ पृ २४३)।

णिद्धअ—अविभिन्नगृह, एक ही घर मे रहने वाला (दे ४।३८)।

णिद्धंधस—१ अकृत्यसेवी—'णिद्धंधसो देशीवचनमेतत् अकृत्यं प्रतिसेवमान' (व्यभा १ टी प १२)। २ निर्दय (दे ४।३७)। ३ निर्लज्ज।

णिद्धंस—निर्लज्ज, दुष्ट (आचू पृ ६५)।

णिद्धम—एक ही घर मे रहने वाला (दे ४।३८)।

णिद्धमण—नाली (स्था ५।२१; दे ४।३९)।

णिद्धमाअ—एक ही घर मे रहने वाला (दे ४।३८)।

णिद्धम्म—एक तरफ जाने वाला (दे ४।३५)।

णिप्पट्ठ—अधिक (दे ४।३१)।

णिप्पिच्छ—१ ऋजु। २ दृढ (दे ४।४६)।

णिप्फरिस—निर्दय (दे ४।३७)।

णिप्फेस—शब्द-निर्गम, आवाज निकलना (दे ४।२९)।

णिबुक्क—निर्मूल (प्रटी प ४६)।

णिब्भग्ग—उद्यान (दे ४।३४)।

णिब्भुग्ग—खण्डित, भग्न (दे ४।३२)।

णिब्भेरिय—प्रसारित, विस्फारित—'निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते (उ १२।२९)।

णिभेलण—घर, गृह (दश्रु ८।२९)।

णिमिय—१ निवेशित (से ६।७६)। २ आघ्रात, सूंघा हुआ।

णिमेण—स्थान (दे ४।३७)।

णिमेल—दांत का मांस (दे ४।३०)।

णिमेला—दांत का मांस (दे ४।३० वृ)।

णिम्मअ—गत, गया हुआ (दे ४।३४)।

णिम्मंसा—चामुण्डा देवी (दे ४।३५)।

णिम्मंसु—तरुण (दे ४।३२)।

णियंसण—१ परिधान, वस्त्र (राज ६९; दे ४।३८)। २ उपभोग्य (वृभा ६४४)।

णियंसणिय—१ पहनने का वस्त्र (निचू ३ पृ ५७८)। २ उपभोग्य (वृभा ६४५)।

णियंसणी—वस्त्र—'अंतो णियंसणी पुण लीणा कडि जाव अद्धजंघातो' (निभा १४०३)।

णियत्थ—१ परिहित, पहना हुआ—'खोमयवत्थणियत्थो' (आचूला १५।२८।६; दे ४।३३)। २ उत्तरीय वस्त्र—'दुहओ सवेल्लियग्गणियत्थाण' (राज ६९)। ३ परिधापित, जिसे वस्त्र पहनाया गया हो वह—'सपत्थिया नियत्था तो गणियाए पुणो मुयइ' (विभा २६०७)।

णियल—नूपुर (आवचू १ पृ २५५)।

णियल्ल—महाग्रह-विशेष (स्था २।३२५)।

णियल्लय—निकट का (उसुटी प १३३)।

णिरंगी—घूंघट (दे ४।३१)।

णिरक्क—१ चोर। २ स्थित। ३ पीठ (दे ४।४९)।

णिरग्घ—१ पीठ। २ उद्वेष्टित (दे ४।४९)।

णिरद्दन्न—आश्वस्त–'अच्छह निरद्दन्नाओ' (आवचू १ पृ ८८)।

णिरप्प—१ पीठ। २ उद्वेष्टित (दे ४।४९)।

णिरागति—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

णिराद—विनष्ट (दे ४।३०)।

णिराय—१ अत्यत, प्रचुर (आवचू १ पृ ३१२)। २ सरल। ३ प्रकट। ४ शत्रु (दे ४।५०)। ५ लम्बा किया हुआ (से २।४०)। ६ निरतर–'पिया य से रण्णो निरायं अच्छिओ' (आवहाटी २ पृ १४७)।

णिराह—निर्दय (दे ४।३७)।

णिरिअ—अविशेषित, साधारण (दे ४।२८)।

णिरिंक—नत, झुका हुआ (दे ४।३०)।

णिरिक्क—१ चोर। २ स्थित। ३ पीठ (दे ४।४९)।

णिरित्ता—बुझाकर–'सए गेहे पलित्तम्मि किं धावसि परातक। सय गेहं णिरित्ताण ततो गच्छे परातकं।' (इ ३५।१४)।

णिरुत्त—१ निश्चित (दे ४।३०)। २ निश्चिन्त।

णिरुलि—कुम्भीर, मगर की आकृतिवाला ग्राह-विशेष (दे ४।२७)।

णिरुवक्कय—नही किया हुआ (दे ४।४१)।

णिरे—पृष्ठत, पीछे–'निरे इति पृष्ठतः' (सूचू १ पृ १९८)।

णिलंक—पतद्ग्रह, पात्र (दे ४।३१)।

णिलंजन—करण, करना–'निलजनं नाम करणं' (सूचू १ पृ १२०)।

णिलुक्क—१ प्रच्छन्न, छिपा हुआ (भ १५।१०२)। २ विरत, अनासक्त–'खिप्पामेव निलुक्को जाहे पडिवज्जइ चरित्तं'। 'निलुक्को त्ति देशीवचनमेतत् विरत इत्यर्थः' (आवमटी प २६६)। ३ लीन, आसक्त।

णिलुक्कण—छुपना (निचू १ पृ १०४)।

णिल्लंक—पतद्ग्रह, पात्र (दे ४।३१)।

णिल्लसिअ—निर्गत, निःसृत (दे ४।३६)।

णिल्लूहित—माजा हुआ (अंवि पृ १७६)।

णिवच्छण—अवतारण, उतारना (दे ४।४०)।

णिवह्—समृद्धि (दे ४।२६)।
णिवाअ—स्वेद, पसीना (दे ४।३४)।
णिवारेज्ज—विवाह (अनुद्वाहाटी पृ ७०)।
णिविद्ध—१ सोकर उठा हुआ। २ निराश। ३ उद्भट। ४ नृशंस, निर्दय (दे ४।४८)।
णिवुक्क—निर्मूल-'निवुक्कच्छिन्नधयभग्गरहवर' (प्र ३।५)।
णिवुर—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।
णिव्व—१ ककुद, थूभ। २ वहाना (दे ४।४८)।
णिव्वडिय—१ पृथक्भूत (से ६।८८)। २ स्पष्टीभूत।
णिव्वढ—नग्न (दे ४।२८)।
णिव्वमिअ—परिभुक्त (दे ४।३६)।
णिव्वर—१ निष्प्रकंप, अचल (अंवि पृ ७६)। २ भग्न (अंवि पृ १५५)।
णिव्वलण—१ प्रमोद-'निर्वलनार्थं प्रमोदार्थम्'। २ स्फेटन, दूर करना-'निर्वलनं स्फेटनम् (व्यभा ४।२ टी प ८१)।
णिव्वलिअ—१ पानी से धोया हुआ। २ प्रविगणित। ३ विघटित (दे ४।५१)।
णिव्वलित—१ पानी से धोया हुआ। २ वियुक्त (विभा १३२०)।
णिव्वलीय—विघटित, वियुक्त (वृभा १०६)।
णिव्वहण—विवाह (दे ४।३६)।
णिव्वाण—दुःख-कथन (दे ४।३३)।
णिव्विट्ठ—उचित (दे ४।३४)।
णिव्वित्त—सो कर उठा हुआ (दे ४।३२)।
णिव्वूढ—१ घर का पिछला भाग (दे ४।२६)। २ स्तब्ध (दे ४।३३)।
णिव्वेढ—नग्न (दे ४।२८)।
णिव्वेरिस—१ निर्दय (दे ४।३७)। २ अत्यर्थ, प्रचुर (वृ)।
णिव्वोल्लिय—क्रोधयुक्त-'णिव्वोल्लिएण वयणेणं' (कु पृ १८७)।
णिस—१ प्रचुर, अत्यन्त-'णिस भोच्चा पादोसियं ण करेति' (निचू ३ पृ ८३)। २ अन्धकार (सूटी १ प १२८)।
णिसका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।
णिसट्ट—प्रचुर (वृटी पृ १०८)।
णिसट्ठ—१ वहुत (ओनि ८७)। २ निर्लज्ज (वृभा ३४६३)।

णिसड्ढ—निश्चित, निःशंक–'तुमं जति सगणं ण सारेसि तो अम्हे णिसड्ढं चेव अण्णं आयरियं पडिवज्जामो' (निचू ३ पृ ३१)।

णिसत्त—संतुष्ट (दे ४।३०)।

णिसामिअ—श्रुत, सुना हुआ (दे ४।२७)।

णिसाय—सुप्त, प्रसुप्त, भली भांति सोया हुआ (दे ४।३५)।

णिसुअ—श्रुत, सुना हुआ (दे ४।२७)।

णिसुट्ट—निपातित (प्रा ४।२५८)।

णिसुट्टिय—निपातित, गिराया हुआ (से १०।३६)।

णिसुढिअ—नत, भार से नमा हुआ (पा ५६६)।

णिसुद्ध—गिराया हुआ (दे ४।३६)।

णिस्संक—निर्भर (दे ४।३२)।

णिस्सरण—फिसलन–'निस्सरण नाम फेल्हसण' (व्यभा ४।४ टी प ६)।

णिस्सरिअ—खिसका हुआ (दे ४।४०)।

णिस्साण—१ अपवाद (बृभा ७७१)। २ वाद्य-विशेष।

णिहण—कूल, किनारा (दे ४।२३)।

णिहत्तण—निधत्त, कर्म की एक अवस्था (भ १।२४।१)।

णिहर—किनारा, कूल (दे ४।२७)।

णिहस—वल्मीक (दे ४।२५)।

णिहाअ—१ स्वेद, पसीना। २ समूह (दे ४।४९)।

णिहिल्लय—गाडा हुआ (उसुटी प ५२)।

णिहुअ—१ अप्रवृत्त, निश्चेष्ट (व्यभा ४।३ टी प ६५; दे ४।५०)। २ तूष्णीक, मौन। ३ रति-क्रीडा (दे ४।५०)।

णिहुआ—कामिता स्त्री, मैथुन के लिए प्रार्थित स्त्री (दे ४।२६)।

णिहुण—व्यापार (दे ४।२६)।

णिहुत—१ निष्क्रिय–'णिहुता य जुद्धकाले, ण वुग्गहो णेव सज्झाओ' (निभा २३८३)। २ उन्मत्त, पागल–'णिहुतो त्ति णग्गायते पलवति णच्चइ वा' (निचू ४ पृ २२१)। ३ निमग्न।

णिहुत्थिभगा—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३५)।

णिहुय—१ निष्क्रिय–'णिक्कारणे वा सकप्पकंबलीए पाउया णिहुया सव्वब्भंतरे चिट्ठंति' (निचू ४ पृ २३१)। २ थूहर का फूल (प्रज्ञाटी प ३७)।

णिहूय—१ अकिंचित्कर—'निहूय ति देशीवचनं अकिञ्चित्करार्थे' (आवहाटी १ पृ २१७)। २ अपलाप—'निहूय त्ति आर्षत्वात् निह्नुतम्' (आवमटी प ४२७)। ३ मैथुन (दे ४।२६)।

णिहेलण—१ गृह, घर। २ जघन, स्त्री की कटि के नीचे का भाग (दे ४।५१)।

णिहेल्लय—निहित, गडा हुआ—'भूमीए दव्व निहेल्लय' (उशाटी प १३०)।

णीआरण—वलि रखने का छोटा कलश (दे ४।४३)।

णीणिय—१ चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)। २ गत, गया हुआ (पा ५०६)।

णीपुर—द्वीन्द्रिय प्राणी-विशेष (अवि पृ २६६)।

णीरंगी—घूंघट (दे ४।३१)।

णीराणिक्का—वनस्पति-विशेष (अवि पृ २४३)।

णीलकंठी—वाण-वृक्ष (दे ४।४२)।

णीसंपाय—वह समय जब पूरा जनपद परिश्रान्त हो गया हो, हलचल बंद हो गई हो (दे ४।४२)।

णीसट्ठ—अत्यर्थ, अत्यन्त (बृभा ६११५)।

णीसणिआ—निःश्रेणी, सीढी (दे ४।४३)।

णीसणी—सीढी, निःश्रेणी (दे ४।४३ वृ)।

णीसरण—फिसलन (व्यभा ४।४ टी प ६)।

णीसा—पीसने का पत्थर—'णीसा वा पीसणी' (द ५।१।४५)।

णीसार—मण्डप (दे ४।४१)।

णीसीमिअ—निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ (दे ४।४२)।

णीहरिअ—शब्द (दे ४।४२)।

णीहुज्ज— अप्रवृत्त, निश्चेष्ट (व्यभा ४।३ टी प ६५)।

णीहू—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

णीहूत—अकिञ्चित्कर (विभा ३१००)।

णीहूय—अकिंचित्कर—'नीहूयाणं इति देशयुक्त्या प्रवचनक्रियास्वकिञ्चित्कराणा' (आवदी प १४६)।

णुत्तमालक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ १४१)।

णुवण्ण—सुप्त (दे ४।२५)।

णूम—१ प्रच्छन्न स्थान, गुफा आदि (भ १।३६४)। २ प्रच्छादन, असत्य का एक पर्याय (प्र २।२)। ३ माया। ४ कर्म–'नूमं ति कर्म माया वा' (आटी प २६५)। ५ दूसरे को ठगने के लिए प्रच्छन्न स्थान मे छुपना (भटी प १०५२)। ६ अन्धकार।

णूमगिह—भूमिगृह, भौहरा (आचूला ३।४७)।

णूमण—गोपन, छिपाना–'गूहण गोवण णूमण पलियंचणमेव एगट्ठं' (जीभा १७७४)।

णूमि—गोपित (से १।३२)।

णूमिय—१ छिपाया हुआ–'सो वत्थं णूमियं' (निचू १ पृ १११)। २ आच्छादित (उशाटी प ११५)।

णूला—शाखा (दे ४।४३)।

णेउड्ड—सद्भाव (दे ४।४४)।

णेउर—१ द्वीन्द्रिय जतु-विशेष (प्रज्ञा १।४९)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

णेक्कार—चांडाल विशेष–'जुगुच्छितो कोलिगजातिभेदो णेक्कारो' (निचू ३ पृ २७०)।

णेडाली—सिर का भूषण-विशेष (दे ४।३३)।

णेड्ड—घर (आवहाटी १ पृ २६४)।

णेड्डुय—नीड, घोसला (आवमटी प ३४५)।

णेड्डुरिआ—भाद्रव शुक्ला दसमी का उत्सव-विशेष (दे ४।४५)।

णेत्तपट्ट—रगीन रेशम का वस्त्र जो चीन से भारत मे आता था–'अहं चीण-महाचीणेसु गओ··· तत्थ गंगावडिओ णेत्तपट्टाइयं घेत्तूण लद्धलाभो णियत्तोत्ति' (कु पृ ६६)।

णेम—कार्य–'जह कारण तु तंतू पडस्स तेसिं च होति पम्हाइं।
नाणाइतिगस्सेवं आहारो मोक्खनेमस्स ॥'
'नेमशब्दो देश्य. कार्यवाची' (पिनि ७० टी प १६)।

णेम्म—१ सदृश, तुल्य (प्र ६।१)। २ चिह्न, उपलक्षण (बृभा १७५५)।

णेरित—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

णेलक—सिक्का, रुपया–'काञ्चीनगर्याः सम्बन्धी नेलको रूपक इत्यर्थः' (प्रसाटी प २३३)।

णेलकता—रगीन मिट्टी, पुताई करने की मिट्टी–'सुधा-सेडिका पलेपको णेलकता' (अंवि पृ २३३)।

लच्छ—नपुसक (दे ४।४४) ।

लय—रुपया (निभा ६५६) ।

लिच्छी—कूपतुला (दे ४।४४) ।

ल्लक—सुरा-विशेष (जीवटी प २६५) ।

विच्छ—अवतारण (नंदीचू पृ २७) ।

विच्छण—अवतारण, नीचे उतारना (दे ४।४०) ।

सितिथ—वणिक्-प्रधान (दे ४।४४) ।

सित्थिय—वणिक्-प्रधान, व्यापारी (निचू ३ पृ १०६) ।

सित्थिया—निक्षेपण से होने वाला कर्मबंध (स्था २।२६) ।

सिर—रवि (दे ४।४४) ।

ोमि—रस्सी, डोर (दे ४।३१) ।

ोलइसा—चञ्चु (दे ४।३६) ।

ोलच्छा—चञ्चु (दे ४।३६) ।

ोल्लण—संस्पर्श (निचू २ पृ २५६) ।

ोव्व—आयुक्त, गांव-प्रधान (दे ४।१७) ।

हं—पादपूर्ति मे प्रयुक्त होने वाला अव्यय—'ण्हमिति निपातः पूरणार्थो वर्तते' (आवमटी प २४४) ।

होरय—कृतज्ञता (प्रसा १६२) ।

त

तउसमिजग—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१३८) ।

तउसमिजिया—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५०) ।

तंजतण—वृक्ष-विशेप (आचू पृ ३७०) ।

तंट—पीठ (दे ५।१) ।

तंड—१ लगाम मे लगी हुई लार । २ मस्तक-विहीन । ३ तेज स्वर (दे ५।१६) ।

तंडी—दुष्ट घोड़ा—'तंडीति वा गलीति वा मरालीति वा एगट्ठा' (उचू पृ ३०) ।

तंत—आसन-विशेष (अवि पृ १५)।

तंतडी—करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष (दे ५।४)।

तंतव—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

तंतुक्खोडी—तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५।७)।

तंतुय—जलजतु-विशेष, मगरमच्छ (?)—'सेतणओ गधहत्थी णदीए तंतुएणो गहितो' (आवहाटी १ पृ २३७)।

तंदूसय—क्रीडा-विशेष। देखें-तेंदूसय (आवचू १ पृ २४६)।

तंबकरोडय—ताम्रवर्ण का द्रव्य-विशेष (प्रज्ञा १७।१२५)।

तंबकिमि—कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे ५।६)।

तंबकुसुम—कटसरैया का वृक्ष, ताम्ररक्त पुष्पों वाला वृक्ष (दे ५।६)।

तंबछिवाडिया—ताम्रवर्ण का द्रव्य-विशेष (प्रज्ञा १७।१२५)।

तंबटक्कारी—शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष (दे ५।४)।

तंबरत्ती—गेहूं का ताम्ररक्त वर्ण (दे ५।५)।

तंबा—गाय (दे ५।१)।

तंबिरा—गेहूं का ताम्ररक्त वर्ण (दे ५।५)।

तंबेही—शेफालिका, पुष्पप्रधान वृक्ष-विशेष (दे ५।४)।

तंबोल—मुखवास की वस्तुएं, जैसे—इलायची, लवंग, सुपारी, कपूर आदि (उपा १।२६)।

तक्कणा—इच्छा, अभिलाषा (बृभा २०७४, दे ५।४)।

तक्कलि—१ वलयाकार वृक्ष-विशेष (भ ८।२१७)। २ कदली वृक्ष, केले का गाछ (आचूला १।११५)।

तक्कुलि—१ पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)। २ खाद्य-विशेष (अवि पृ १७६)।

तग्ग—सूत का कंकण (दे ५।१)—'तग्ग च सूत्रकङ्कणम्' (वृ)।

तच्चणित—बौद्ध भिक्षु (पंक ३३१)।

तच्चणिय—बौद्ध भिक्षु (जीभा १३६७)।

तच्चन्निय—बौद्ध भिक्षु (आवचू १ पृ ८५)।

तच्छिड—भयकर (दे ५।३)।

तट्टक—थाल—'तट्टकं सरक थाल' (अवि पृ ६५)। तट्टे (कन्नड़)।

तट्टिका—१ वाड़ (भटी पृ ६६१)। २ दिगंबर जैन साधु का उपकरण-विशेष।

तट्टी—वृति, वाड़ (दे ५।१)।

तडउडा—वृक्ष-विशेष, आउली का वृक्ष (जवूटी प ३४)।

तडप्फड—व्याकुलता, छटपटाहट (निचू २ पृ ७५)।

तडफडिअ—चारों ओर से प्रकम्पित, तडफड़ाया हुआ, आकुल-व्याकुल (दे ५।६)—'तुह विरहे तीइ इत्थ तडफडिअं' (वृ)।

तडमड—क्षोभ-प्राप्त, क्षुब्ध (दे ५।७)।

तडवडा—वृक्ष-विशेप, आउली का पेड़ (राज २८; दे ५।५)।

तडिअ—वद्ध—'गणेऊण गंठी तडिओ, तओ न तीरड सिव्वेउं' (आवहाटी १ पृ २८१)।

तडिग—जूता (ओटी प ३४)।

तडिण—विरल, तुच्छ (से १३।५०)।

तडिम—१ भीत। २ कुट्टिम, पाषाण से वधा हुआ भूमितल (से २।२)। ३ द्वार के ऊपर का भाग (से १२।६०)।

तडिय—वागवान्, मालाकार—'तत्थ कुभो पुप्फाण उट्ठेइ, तत्थ भगवतो पितिमित्तो तडिओ' (आवहाटी १ पृ १६७)।

तड्डुविअ—विस्तृत (पा ५२१)।

तड्डुविय—विस्तीर्ण—'आमुच मुपट्टिकेसम्मि तड्डुविय-सिहंडि-कलाव-सच्छहं केसभारं' (कु पृ २५)।

तण—कमल (दे ५।१)।

तणतण—गर्जन (आवमटी प १६६)।

तणय—संवंधी (प्रा ४।३६१)।

तणयमुद्दिआ—अंगूठी (दे ५।६)।

तणरासि—फैलाया हुआ (दे ५।६)।

तणरासिअ—प्रसृत, फैलाया हुआ (दे ५।६ वृ)।

तणवरंडी—छोटी नौका (दे ५।७)।

तणसोल्लि—पुष्प-प्रधान वृक्ष, मल्लिका (दे ५।६)।

तणसोल्लिया—मल्लिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेप (ज्ञा १।१६।२५६)।

तणेसी—तृण-राशि (दे ५।३)।

तण्ण—आर्द्र (से १।३१)।

तण्णाय—गीला, आर्द्र (दे ५।२)।

तत्तडिय—रंगा हुआ वस्त्र—'तत्तडियाणं च तह य परिभोगो' (ग ८६)।

तत्ति—१ चिन्ता–'कुतत्तीहिं विहम्मइ' (दचूला १।७)। २ प्रवृत्ति–'भिक्खा-सज्झायमुक्कतत्तीया, तप्तिः—व्यापारः' (बृभा २४५९)। ३ आदेश। ४ तत्परता (दे ५।२०)। ५ दोष–'परतत्तितग्गओ जणो' (कु पृ १२७)।

तत्तिल्ल—१ तत्पर–'तत्तिल्लशब्द तत्परवाची देश्य तत्तिल्लो तल्लिच्छो य तत्परे' (राजटी पृ १०५; दे ५।३)। २ दक्ष–'तत्तिल्लो विहिरायां जाणति दूरेवि जो जहिं वसइ। ज जस्स होइ सरिसं, तं तस्स विइज्जयं देइ॥' (आवहाटी १ पृ १४१)

तत्तुडिल्ल—संभोग, मैथुन (दे ५।६)।

तद्दिअचय—नृत्य (दे ५।८)।

तद्दिअस—प्रतिदिन (दे ५।८)।

तद्दिअसिअ—प्रतिदिन (दे ५।८ वृ)।

तद्दिअह—प्रतिदिन (दे ५।८ वृ)।

तद्दिवस—प्रतिदिन (बृभा १६०५)।

तपुस—क्षुद्रकीट, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अवि पृ २६७)।

तपुसेल्लालुक—एक प्रकार का फल (अवि पृ ६४)।

तप्पक—डोंगी (अंवि पृ १६६)।

तप्पण—१ सक्तु, सत्तु (प्र १०।६)। २ भाजन या उपकरण-विशेष (अवि पृ १६१)। ३ तुष (अंवि पृ १०६)।

तप्पणाडुगालिया—सक्तुप्रधान भोजन (दअचू पृ २८)।

तप्पणादुयालिता—१ सक्तुमिश्रित भोजन। २ भोजन-विशेष–'तप्पणादुयालिता भोजन-विशेष, सक्तुप्रधानं वा भोजनम्' (दअचू पृ २८)।

तप्पोसणिया—आच्छादन-विशेष (आचू पृ ३४७)।

तम—शोक (दे ५।१)।

तमण—चूल्हा (दे ५।२)।

तमणि—१ भुजा, बाहु। २ भूर्ज, भोजपत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ५।२०)।

तर—मलाई–'सतर दधि अन्वेषमाणस्तरंहित चागृह्णन्' (ओटी प ४८)।

तरपअट्ट—शिल्पी-विशेष (अंवि पृ १६०)।

तरमल्लिहायण—युवा–'तरो-वेगो बल तथा मल्ल–धारणे ततश्च तरोमल्ली तरोधारको वेगधारको हायन–संवत्सरो वर्तते येषा ते तरोमल्लिहायनाः—यौवनवन्त इत्यर्थ' (भटी पृ ८८१)।

तरवच्च—शस्त्र-विशेष (अंवि पृ ११५)।

तरवट्ट—वृक्ष-विशेष, चकवाड, पगार (दे ५।५)।

तरस—मांस (दे ५।४)।

तरिअव्व—उडुप, नौका (दे ५।७)।

तरुणरहस—राग-रागिनिया—'जुण्णमएहिं विहूणं जं जूहं होइ सुट्ठुवि महल्लं।
तं तरुणरहसपोइयमयगुम्मइय सुहं हंतु ॥' (ओनि १४०)।

तल--१ गांव का मुखिया, ग्रामेश। २ शय्या (दे ५।१६)।

तलऊडा—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३।७२)।

तलंगणी—खाद्यपदार्थ-विशेष (ओटी पृ ३६८)।

तलकोड—गुल्म-विशेष (अवि पृ ६३)।

तलपत्तक—कान का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ११६)।

तलप्फल—शालि, व्रीहि (दे ५।७)।

तलभ—हाथ का आभूषण-विशेष (अवि पृ ६५)।

तलयागत्ति—कूप, कुआं—'तलयागत्ति वच्चइ णिसि....' (दे ५।८)।

तलवत्त—१ कान का आभूषण-विशेष। २ वराग, उत्तमांग, शिर
(दे ५।२१)।

तलवर—१ नगर-रक्षक, कोतवाल—'राइणा तुट्ठेण चामीकरपट्टो रयणखइतो
सिरसि वद्धो यस्स सो तलवरो भण्णति' (अनुद्वाचू पृ ११)।
२ राजा के सदृश सम्मान-प्राप्त व्यक्ति—'रायप्रतिमो चामरविरहितो
तलवरो भण्णति' (निचू २ पृ ४५०)।

तलवरी—कोतवाल की पत्नी (अंवि पृ ६८)।

तलसारिअ—१ छना हुआ, शुद्ध (दे ५।१६)। २ भोला, मूर्ख—'अन्ये तु
तलसारिओ नालिक इति पठन्तस्तलसारिअं मुग्धमाचक्षते' (वृ)।

तला—कृमि-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तलार—नगर-आरक्षक (दे ५।३)।

तलाहण—खाद्य-विशेष (निचू ४ पृ २५६]।

तलाहतिया—खाद्य-विशेष—'तलाहतियातो आवणातो आणिति'
(दश्रुचू प ६६)।

तलिका—१ पात्र-विशेष (दअचू पृ १५३)। तलिगे—थाली (कन्नड)।
२ प्राणी-विशेष (अवि पृ २२७)।

तलिगा—एक तले वाला जूता (प्रसा ६७६)।

तलिम—१ शय्यागृह, वासभवन—'परिणीया, तलिमे भत्तारस्स सब्भावो कहितो' (दअचू पृ २३; दे ५।२०)। २ शय्या (ज्ञा १।१६।५५; दे ५।२०)। ३ फरस-बन्द जमीन। ४ भूनने का भाजन। ५ घर के ऊपर की भूमी (दे ५।२०)।

तलिमा—वाद्य-विशेष (भटी पृ ८८३)।

तलिय—आसन-विशेष (अंवि पृ ६५)।

तलिया—१ पात्र-विशेष—'अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ' (भ ११।१५९)। २ जूता (बृभा २८८३)।

तल्ल—१ छोटा तालाब। २ 'बरु' नाम का तृण। ३ शय्या (दे ५।१९)।

तल्लकट्ठ—(तलवत्त ?)—मस्तक, सिर (जीविप पृ ५४)।

तल्लग—सुरा-विशेष (जंबूटी प ९९)।

तल्लड—शय्या, बिछौना (दे ५।२)।

तल्लिच्छ—तत्पर, तल्लीन (ज्ञा १।२।११; दे ५।३)।

तवअ—व्यापृत, प्रवृत्त (दे ५।२)।

तवणी—१ पकाने का पात्र, तवा (ओटी प ९९)। २ भक्षणयोग्य कण (दे ५।१)। ३ धान्य को क्षेत्र से काटकर भक्षणयोग्य बनाने की क्रिया।

तवप्प—सन्यासी का एक उपकरण (आवचू १ पृ ४७१)।

तव्वणिय—बौद्ध, बुद्धदर्शन का अनुयायी—'तव्वणियाण विय विसयसुहकुसत्थ-भावणाधणियं (विसे १०४१)।

तसिअ—शुष्क (दे ५।२)।

तहरी—पंकवाली सुरा (दे ५।२)।

तहल्लिआ—गोवाट, गायो का वाडा (दे ५।८)।

ताइय—पारस या अरब देश के व्यापारी (कु पृ १५३)।

ताज्जिक—पारस या अरब देश के व्यापारी (कु पृ १५३)।

ताडक—भूमीगत बिल मे रहने वाला प्राणी-विशेष (अवि पृ २२७)।

ताडिअय—रोदन (दे ५।१०)।

तामर—सुन्दर, रम्य (दे ५।१०)।

तामरस—जल मे पैदा होने वाला फूल (प्रज्ञा १।४६, दे ५।१०)।

तारत्तर—मुहूर्त्त (दे ५।१०)।

तालप्फली—दासी, चेटिका (दे ५।११)।

तालफली—दासी (दे ५।११ वृ)।

तालहल—शालि, व्रीहि (दे ५।७)।

ताला—लाजा, खोई, धान का लावा (दे ५।१०)।

तालुक—तालाव का जल (अंवि पृ २६६)।

तालूर—१ फेन। २ कपित्थ-वृक्ष (दे ५।२१)। ३ पानी का आवर्त्त (वृ)। ४ पुष्प का सत्त्व।

ताहे—तदा, तब (उशाटी प १४८)।

तिउड—कलाप, मोर-पिच्छ (पा ६४६)।

तिउडग—१ धान्य-विशेष, मोठ (दनि १५६)। २ लौग, लवग।

तिउल—मन, वचन और काया को पीडा पहुचाने वाला—'उदयपत्ते उज्जल-वल-विउल-तिउल-कक्खड-पगाढ-दुक्खे' (प्र १०।६)।

तिउलिका—वाद्य-विशेष (नंदीटि पृ ६६)।

तिंगिआ—कमलरज (दे ५।१२)।

तिगिच्छिक—गले का आभूषण-विशेष (अवि पृ ६५)।

तिंगिछि—१ पराग—'प्राकृते पुष्परज शब्दस्य 'तिंगिछि' इति निपातः देशी शब्दो वा' (जवूटी प ३०७; दे ५।१२)। २ पीला पुष्प (अंवि पृ ७०)।

तितिणि—बड़बड़ाने वाला (पंक १६७५)।

तितिणिय—१ चिड़चिड़े स्वभाव वाला—'तितिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू' (स्था ६।१०२)। २ चंचल चित्त वाला (वृटी पृ २३६)।

तितिणिया—बडबडाहट (वृभा ६३४०)।

तिंदुग—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (उ ३६।१३८)।

तिंदूसय—कन्दुक, गेंद—'कणगतिंदूसएण कीलमाणी' (अंत ३।५८)।

तिंबुरुकी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तिक्खालिअ—तीक्ष्ण किया हुआ (दे ५।१३)।

तिड्डु—अन्ननाशक कीट-विशेष, टिड्डी (अनुटी पृ ४)।

तिड्डुय—टिड्डी (वृटी पृ ६७५)।

तिणिस—मधुमक्खियों का छत्ता, मधु-पटल (दे ५।११)।

तित्ति—१ आदेश। २ चिन्ता। ३ वार्ता (आचू पृ ३३१)। ४ सार, तात्पर्य (दे ५।११)। ५ गवेषणा, खोज। ६ पालन (प्रटी प ६१०)।

तित्तिरिअ—स्नान से आर्द्र (दे ५।१२)।

तित्तिल—१ परिसर्प-जाति-विशेष (अवि पृ ६३)। २ उतना।

तित्तुअ—गुरु, भारी (दे ५।१२)।

तिधिणी—देवी-विशेष (अंवि पृ ६९)।

तिन्न—आर्द्र (ज्ञाटी प १२१)।

तिपिसाचक—गले का आभरण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

तिपुड—धान्य-विशेष (निभा १०३०)।

तिमिंगिल—१ मत्स्य की एक जाति (प्रज्ञा १।५६)। २ मीन, मछली (दे ५।१३)।

तिमिगर—जलचर-विशेप (निभा ३९६१)।

तिमिच्छअ—पथिक (दे ५।१३)।

तिमिच्छाह—पथिक (दे ५।१३)।

तिमिण—गीला काठ (दे ५।११)।

तिमिरक—गुल्म-विशेष (अंवि पृ ६३)।

तिमिरिच्छ—करंज का पेड (दे ५।१३)।

तिरिड—तिमिर वृक्ष (दे ५।११)।

तिरिडिअ—१ तिमिर-युक्त। २ विचित, संगृहीत (दे ५।२१)।

तिरिड्डि—उष्ण वात, गरम पवन (दे ५।१२)।

तिरियाणी—एक तट से दूसरे तट पर ऋजुगामिनी नावा (निचू १ पृ ६९)।

तिरोवइ—वाड से व्यवहित (दे ५।१३)।

तिलंडा—तिलों के डंठल (अनु ३।५२)।

तिलितिलिय—जलजन्तु-विशेष (दश्रु ८।३१)।

तिल्लहडिका—गिलहरी (नंदीटि पृ १३३)।

तिविडा—सूचिका, सूई (दे ५।१२ वृ)।

तिविडी—छोटा पुडवा (दे ५।१२)।

तिव्व—१ दीवार का छिद्र–'तिव्वेण व मालेण व वाउपवेसेण अहव सढयाए' (ओभा ५८)। २ दुसह (सू १।१।४५; दे ५।११)। ३ अत्यत, प्रचुर (सू १।१।४५, दे ५।११ वृ)।

तिसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

तिसरिय—एक प्रकार का वाद्य–'अण्णा उण तिसरियं छिवइ' (कु पृ २६)।

तिसिग—आसन-विशेष (आचू पृ ३५२)।

तीतिणि—फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।

तीसालिका—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तुंगी—रात्री (दे ५।१४)।

तुंडिय—थिग्गल, पैवंद—'तुडियं थिग्गलं देसीभासाए सामयिगी वा एस पडिभासा' (निचू २ पृ ४१)।

तुंडीर—मधुर बिम्बी-फल (दे ५।१४)।

तुंडूअ—जीर्णघट (दे ५।१५)।

तुंडेरग—खाद्य-विशेष, वडा (आवचू २ पृ १६८)।

तुंतुक्खुडिअ—त्वरायुक्त, उतावला (दे ५।१६)।

तुंबिल्ली—१ मधुमक्खियों का छाता। २ उदूखल, ऊखल (दे ५।२३)।

तुंबुरु—टिंबरू का वृक्ष (औपटी पृ ९८; दे ४।३)।

तुच्छ—अवशुष्क, अत्यंत सूखा हुआ (दे ५।१४)।

तुच्छइय—अनुरक्त, उत्कंठित (दे ५।१५)।

तुच्छय—अनुरक्त, उत्कठित (दे ५।१५)।

तुडिग—हाथ का आभरण (ज्ञा १।१।१२८)।

तुडित—वाद्य-विशेष (दश्रुचू प ६१)।

तुडिय—१ संख्या-विशेष, चौरासी लाख त्रुटितांग (भ ५।१८)।
२ अन्तःपुर (भ १०।६७)। ३ वाद्य-विशेष (भ १०।६९)।
४ थिग्गल, पैवंद—'पायस्स एक्कं तुडियं तड्डेइ' (नि १।४१)।
५ हाथ का आभरण—'तुडियं बाहुरक्खिया' (निचू २ पृ ३९८)।

तुडियंग—१ संख्या-विशेष, ८४ लाख पूर्व—'पूर्वाणि चतुरशीतिलक्षगुणितानि त्रुटिताङ्गानि भवन्ति' (स्था २।३८९ टी प ८२)। २ कल्पवृक्ष का एक प्रकार (प्रसाटी प ३१४)।

तुण—तूण नाम का वाद्य (नि १७।१३७)।

तुणय—१ तूण नाम का वाद्य (आचूला ११।२)। २ मुख नाम का वाद्य (दे ५।१६)।

तुण्हि—सूकर, सूअर (दे ५।१४)।

तुण्हिक्क—१ निश्चल (नदीटि पृ १३४)। २ मृदु-निश्चल (दे ५।१५)।
३ मृदु—'तुण्हिक्को मृदुनिश्चलयोः'।

तुन्न—त्रुटित, फटा हुआ (नदीटि पृ १३९)।

तुन्नक—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९) ।

तुप्प—१ घृत, घी (प्रसा २३३, दे ५।२२) । तुप्पा (कन्नड) । २ कलेवर की चर्बी–'तुप्पो पुण मययकलेवरवसा भण्णति' (निचू १ पृ ७४) । ३ कलेवर की चरवी या घी आदि से चुपडा हुआ (बृभा २९२२; दे ५।२२) । ४ सरसो का धान्य (प्रसाटी प २३३, दे ५।२२) । ५ विवाह । ६ कौतुक, उत्सुकता । ७ घी आदि भरने का चर्मपात्र (दे ५।२२) । ८ वेष्टित (अनुद्वा २६) ।

तुप्पग्ग—चिकना, घृष्ट–'तुप्पगतिक्खसिंग' (दश्रु ८।२२) ।

तुप्पित—म्रक्षित, चुपडा हुआ (अनुद्वाचू पृ १३) ।

तुप्पिय—स्निग्ध, चुपडा हुआ–'नेहतुप्पियगत्तं' (विपा १।२।१४) ।

तुमंतुम—तू-तू मैं-मै, वाचिक-कलह (भ २५।५६८) ।

तुरंत—शीघ्र (आवचू १ पृ ३०१) ।

तुरक्क— १ देश-विशेप, तुर्किस्तान । २ अनार्य जाति-विशेष, तुरक ।

तुरयमुह—त्वरावाला, जल्दवाज (से ४।३०) ।

तुरी—१ पुष्ट, मोटा । २ चित्रकार का उपकरण, तूलिका (दे ५।२२) ।

तुरुक्की—तुर्किस्तान की लिपि-विशेप (विभा ४६४ टी) ।

तुलग्ग—काकतालीय न्याय, अकस्मात् (दे ५।१५) ।

तुलसी—१ भूतो का चैत्य वृक्ष–'कलवो उ पिसायाण, वडो जक्खाण चेइय । तुलसी भूयाण भवे, रक्खाणं च कडओ ।" (स्था ८।११७) । २ सुरसलता, तुलसी (भ २१।२१, दे ५।१४) ।

तुवर—रस-विशेष, कपैला रस (दे ५।१७ वृ) ।

तुसेअजंभ—लकडी (दे ५।१६) ।

तूअ—ईख का काम करने वाला (दे ५।१६) ।

तूका—मकडी (अवि पृ ७०) ।

तूण—रोग-विशेप (अवि पृ २०३) ।

तूणइल्ल—तूण वाद्य को वजाने वाला (जीव ३।६१६) ।

तूपरड—१ क्लीव । २ कूवडा (दअचू पृ १६८) ।

तूमणय (णूमणय ?)—छिपाना, स्थगन–'देशीपदमेतद् स्थगनमित्यर्थः' (व्यभा ३ टी प ४१) ।

तूलिणिआ—शाल्मली-वृक्ष (दे ५।१७) ।

तूलिणी—शाल्मली-वृक्ष (दे ५।१७ वृ) ।

तूविर—कपैला रस (सूचू १ पृ १६)।

तूह—पशुओ के जलपान करने का स्थान, घाट (वृभा ४८६०)।

तूहण—पुरुष (दे ५।१७)।

तेआली—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४३।१)।

तेंडुअ—तुंबुरु-वृक्ष (दे ५।१७)।

तेंदूसय—१ क्रीडा-विशेष। इस खेल मे विजेता बालक पराजित बालकों की पीठ पर बैठ कर निर्दिष्ट स्थान तक चक्रमण करता है—'सामी तदूसएण अभिरमति····तत्थ सामिणा स जितो, तस्स य उवरिं विलग्गो सामी (आवहाटी १ पृ १२१)। २ कन्दुक, गेंद (ज्ञाटी प २४४)।

तेंबरुय—तेंदु का फल (भ १५।१२५)।

तेंबुरु—क्षुद्र कीट, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीवटी प ३२)।

तेजण—चाबुक (दजिचू पृ ३१५)।

तेड्डु—१ शलभ। २ पिशाच (दे ५।२३)।

तेदुरणमज्जिया—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

तेयलि—वलयाकार वृक्ष (प्रज्ञा १।४३)।

तेयाली—वलयाकार वृक्ष (प्रज्ञा १।४३ पा)।

तेयालीस—तेतालीस (सम ४३।१)।

तेरणि—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तेरिम—तेली (निचू २ पृ २४३)।

तेलाल—धान्य-विशेष (अवि पृ २५७)।

तेल्लकेला—मिट्टी से बना बिना पेदे वाला तेल-पात्र—'तेल्लकेला इव सुसगोविया' (ज्ञा १।१।१७)—'सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेष' (ज्ञाटी प १५)।

तेल्लग—शराव-विशेष (जीव ३।५८६)।

तेवण्ण—तिरेपन (सम ५३।१)।

तेवरुक—त्रीन्द्रिय जतु-विशेष (अवि पृ २६७)।

तेह—परत (दजिचू पृ १५५)।

तोअय—चातक पक्षी (दे ५।१८)।

तोंतडी—करम्ब, दही-चावल का बना खाद्य पदार्थ (दे ५।४)।

तोक्कअ—बिना ही कारण कार्य मे तत्पर होने वाला (दे ५।१८)।

तोट्ट—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

तोडण—१ असहिष्णु (दे ५।१८)। २ फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।

तोडहिया—वाद्य-विशेष (कु पृ ८२)।

तोडुका—चतुष्पद परिसर्प की एक जाति (अंवि पृ २२६)।

तोड्डु—क्षुद्र कीट, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (अंवि पृ २३७)।

तोड्डुक—१ वृक्ष पर रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२६)। २ टिड्डी। ३ भ्रमर (अंवि पृ २२७)।

तोणी—शरीर—'आहारे ताव च्छिंदाहि गेहिं तोणिं चइस्ससि' (व्यभा १० टी प ६९)।

तोत्तडि—करंब, दही-चावल से बना हुआ खाद्य (पा ४४०)।

तोप्पड्डुय—अनिष्पन्न (निचू २ पृ ४८)।

तोप्पारुभणा—उत्सव-विशेष (?) (अंवि पृ ९८)।

तोमरिअ—शस्त्र-प्रमार्जक, शस्त्रास्त्रों पर धार चढाने वाला (दे ५।१८)।

तोमरिगुंडि—लता-विशेष (पा ३४५)।

तोमरी—वल्ली, लता (दे ५।१७)।

तोरण—फल की एक जाति (अंवि पृ ६४)।

तोरविय—उत्तेजित (पा ५३५)।

तोलण—पुरुष (दे ५।१७)।

तोला—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९)।

तोवट्ट—१ 'त्रपुपट्टिक' नाम का आभूषण। २ कमल-कर्णिका (दे ५।२३)।

तोस—धन, ऐश्वर्य (दे ५।१७)।

थ

थइया—१ नौली, कमर मे बाधने की रुपयों की थैली—'सवलयइयासणाहो' (उसुटी प ६२)। २ थैला (अंवि पृ २२१)।

थउड्डु—भल्लातक वृक्ष, भिलावा (दे ५।२६)।

थंडिक्क—कांस्य-पात्र (आचू पृ ३४५)।

थंडिल्ल—१ कोध (सू १।९।११)। २ वह स्थान जहां शव को जलाया गया हो और जहां राख आदि न हो—'छारचिता-विरहितं तु थंडिल्लं' (निभा १५३५)। ३ मंडल, वृत्त प्रदेश (दे ५।२५)। ४ शुद्ध भूमि (वृचू प २०७)।

थंव—१ विपम (दे ५।२४)। २ पतवार (पा ८८२)।

थंभ—विंदु (पा २१४)।

थंभायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

थकित—थका हुआ, श्रांत (अंवि पृ २४५)।

थक्क—१ श्रान्त, थका हुआ—'पच्चूसे पुणो पत्थिया, मज्झण्हे तहेव थक्का' (उसुटी प ६३)। २ अवसर (आवचू १ पृ ५३१; दे ५।२४)। ३ ध्वनि-विशेष (जीवटी प २४८)।

थगथगित—थर-थर कांपता हुआ (उसुटी प ६५)।

थग्गया—चोंच (दे ५।२६)।

थग्घ—थाह, अगाध, ऊंडा (दअचू पृ १७४, दे ५।२४)।

थग्घा—अगाध, ऊंडा (पा ८४४)।

थट्टि—पशु (दे ५।२४)।

थडिक्कग—कांस्य-पात्र (आचू पृ ३४५)।

थत्तिअ—विश्राम (दे ५।२६)।

थमिअ—विस्मृत (दे ५।२५)।

थर—दही के ऊपर की मलाई, थिरकी (दे ५।२४)।

थरथरित—कांपता हुआ—'सत्तू इव उवट्ठिओ थरथरितो' (निभा ५६१)।

थरहरिअ—प्रकंपित—'थरहरिउमारद्धा गिरिणो' (उसुटी प २७८; दे ५।२७)।

थरु—तलवार की मूठ (दे ५।२४)।

थलअ—मण्डप (दे ५।२५)।

थली—१ देवद्रोणी, गांव का ऐसा स्थान जहां देवी-देवता का मंदिर बना हो और जहां भेंट-पूजा चढ़ाई जाती हो (निचू ३ पृ ५२१)। २ वैसा स्थान जहां विभिन्न प्रकार के भिक्षुक भोजन लेने आते हों (व्यभा ७ टी प ४२)। ३ सत्रशाला (वृभा १७७५)।

थव—पशु (दे ५।२४)।

थवइल्ल—जांघ फैलाकर बैठा हुआ (दे ५।२६)।

थविआ—प्रसेविका–१ वीणा के अंतिम भाग मे लगाया जाने वाला छोटा काष्ठ। २ थैला (दे ५।२५)।

थवी—प्रसेविका–१ वीणा के अंतिम भाग मे लगाया जाने वाला छोटा काष्ठ (दे ५।२५ वृ)। २ थैला।

थस—विस्तीर्ण (दे ५।२५)।

थसल—विस्तीर्ण (दे ५।२५)।

थह—आश्रय, स्थान (दे ५।२५)।

थाइणी—प्रतिवर्ष प्रसव करने वाली घोडी (वृभा ३६५६)।

थाणइल्लग—पहरेदार, प्रातिहारिक–'थाणइल्लगा वि न वारिंति पव्वइओ त्ति' (आवहाटी २ पृ १३४)।

थाणय—१ पुलिस चौकी, थाना। २ पहरेदार, चौकीदार (कु पृ १३५)।

थाणिज्ज—गौरवान्वित, सम्मानित (दे ४।५ वृ)।

थाम—१ स्थान (उसुटी प ६२)। २ विस्तीर्ण (दे ५।२५)।

थार—मेघ (दे ५।२७)–'थारत्थणिअ सोउं' (वृ)।

थारुगिणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

थालग—१ पिंड, समूह (आचूला १।१३३)। २ (फली का) पाक (आटी प ३५४)।

थाली—१ पिंड, समूह–'थाली सव्वातो चेव, पिंडो समूहो य' (आचू पृ ३४४)। २ (फली का) पाक (आटी प ३५४)।

थासग—१ दर्पण के आकार का पात्र (विपा १।२।१४)। २ कुदाल (आवटि प ५६)।

थाह—१ स्थान। २ ऊंडा गम्भीर जल वाला। ३ विस्तीर्ण। ४ दीर्घ (दे ५।३०)।

थिक्क—स्पृष्ट–'वड्डइ हायइ छाया तत्थिक्क पूइयपि व न कप्पे' (पिनि १७४)।

थिक्किल्ल—सुन्दर (आवचू १ पृ २५७)।

थिग्गल—१ घर का वह द्वार जो किसी कारण-वश फिर से चिना हुआ हो (द ५।१।१५)। २ मैल–'थिग्गलं जल्लो भणति' (निचू २ पृ २२१)। ३ छिद्र–'थिग्गल त्ति गिम्हे वातागमणट्ठा गवक्खादि छिड्डे करेति' (निचू २ पृ ३३८)। ४ खडित वस्तु को ठीक करने के लिए लगाई जाने वाली जोड़–'अन्नेण चंदणेण य भेरीए थिग्गल दिन्न' (नदीटि पृ १०६)।

थिग्गलय—पैवंद—'पडियाणिया थिग्गलय छंदंतो च एगट्ठा' (निचू ३ पृ ५६)।

थिग्गलिआ—पैवंद (आवहाटी १ पृ ६५)।

थिच्चण—उपमर्दन, उत्पीड़न—'हरियच्छेअण छप्पईअ थिच्चणं' (बृभा १५३७)।

थिण्ण—१ निःस्नेह दयालु। २ अभिमानी (दे ५।३०)।

थिन्न—गर्वित (पा १२९)।

थिभग—कंद-विशेष (भ २३।२)।

थिमिअ—स्थिर, निश्चल—'जहा मंधादए णाम थिमिय पियति दगं' (सू १।३।७१; दे ५।२७)। २ मंथर, मंद (पा १५)।

थिरणाम—चलचित्त, चंचल, अधीर (दे ५।२७)।

थिरसीस—१ निर्भीक। २ निर्भर। ३ जिसने सिर पर कवच बांधा हो वह (दे ५।३१)।

थिल्लि—दो खच्चरों की बग्घी (दश्रु ६।३)।

थिल्ली—१ वाहन विशेष (अनुद्वाचू पृ ५३)। २ दो घोड़ों या खच्चरों से वाह्य यान। ३ लाट देश मे प्रसिद्ध यान-विशेष—'अड्डपल्लाण' (औपटी पृ ११२)।

थिविथिवित—थिव-थिव आवाज करता हुआ (विपा १।७।७)।

थीणद्धि—घोर निद्रालु जिसकी चेतना जडीभूत हो जाती है—'इद्धं चित्तं तं थीण जस्स अच्चंतदरिसणावरण-कम्मोदया सो थीणद्धी भण्णति' (निचू १ पृ ५५)।

थीहु—कन्द-विशेष—'लोहिणीहू य थीहू य' (उ ३६।९८)।

थीहू—कंद-विशेष (भ ७।६६)।

थुक्किअ—१ जुगुप्सित, तिरस्कृत—'धिक्कारथुक्कियाणं तित्थुच्छेदो दुलभवित्ती' (बृभा ५९३७)। २ उन्नत (दे ५।२८)।

थुड—स्कंध, तना (स्थाटी प १७६)।

थुडंकियय—रोष-युक्त वचन (पा ६५१)।

थुडुंकिअ—१ मौन। २ अल्पकुपित मुह का सकोच (दे ५।३१)।

थुड्डुलिय—स्वल्प (आवचू २ पृ २८८)।

थुड्डुहीर—चामर (दे ५।२८)।

थुण्ण—दृप्त, अभिमानी (दे ५।२७)।

थुरग—तृण-विशेष (भ २१।१६)।

थुरय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२।२)।

थुरुणुल्लणय—शय्या (दे ५।२८)।

थुलम—पटकुटी, तंबू (दे ५।२८)।

थुल्ल—परिवर्तित (दे ५।२७)।

थूण—घोड़ा (दे ५।२६)।

थूणा—शरीर का एक अवयव (अंवि पृ ६६)।

थूणिका—धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।

थूर—१ बिना किनारी वाला। २ अगर्हित (निचू २ पृ ६७)। ३ थोड़ा (निभा १६१४)।

थूरक—शरीर का अवयव-विशेष (अंवि पृ ६६)।

थूरी—तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५।२८)।

थूलघोण—सूकर, वराह (दे ५।२६)।

थह—१ प्रासाद का शिखर। २ चातक पक्षी। ३ वल्मीक (दे ५।३२)।

थेक्कार—ध्वनि-विशेष (आवमटी प १८८)।

थेग—कंद-विशेष (प्रसा २३८)।

थेच्चण—उपमर्दन (बृटी पृ ४५३)।

थेणिल्लिअ—१ छीना हुआ। २ डरा हुआ (दे ५।३२)।

थेर—विधाता, ब्रह्मा (दे ५।२६)।

थेरासण—कमल (दे ५।२६)।

थेव—विन्दु (दे ५।२६)।

थेवरिअ—जन्म के समय बजने वाला वाद्य (दे ५।२६)।

थेव्विद्ध—स्तब्ध (अंवि पृ १४८)

थोअ—१ धोबी। २ मूला, कंद-विशेष (दे ५।३२)।

थोर—१ स्थूल (ज्ञा १।१।१५६)। २ क्रमश. लम्बा और गोल—'गोवच्छगं थोरगत्तं सेय पिच्छइ' (उसुटी प १३५, दे ५।३०)। ३ गांव में घूम-घूम कर किया जाने वाला व्यापार-'लग्गा थोरेसु कह वि दुक्खत्ता' (कु पृ १९१)। ४ गोणी—'मणथोरं भरिऊणं आगमभंडस्स गुरुसयासाओ' (कु पृ १९३)।

थोरुइणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञाटी प ४६)।

थोल—वस्त्र का एक देश (दे ५।३०)।

थोह—वल (दे ५।३०)।

थोहर—थूहर का पेड़ (विपाटी प ८०)।

थोहरी—थूहर का वृक्ष (प्रमा २३७)।

द

दइअ—रक्षित (दे ५।३५)।

दंडसंपुच्छणी—बुहारने का साधन-विशेष (राज १२)।

दंडि—साधा हुआ जीर्ण वस्त्र (निभा ७८२)।

दंडिणी—राज-पत्नी (पिनि ५००)।

दंडिया—पत्र पर लगाई जाने वाली राजमुद्रा (वृभा १९५)।

दंडी—१ साधा हुआ जीर्ण वस्त्र—'दंडीखंडनिवसणा', कृतसधानं जीर्णवस्त्रम्' (ज्ञा १।१६।२९ टी प २०७)। २ स्वर्ण-सूत्र (दे ५।३३)। ३ सांधा हुआ वस्त्रयुगल (वृ)।

दंत—पर्वत का एक भाग (दे ५।३३)।

दंतवण—दन्तकाष्ठ, दतौन—'दन्तमलापकर्षणकाष्ठम्' (उपाटी पृ १६)।

दंताल—दाती, घास काटने का उपकरण-विशेष (निचू १ पृ ३१)। दताली (राजस्थानी)।

दंतिअ—शशक, खरगोश (दे ५।३४)।

दंतिअय—खरगोश (दे ५।३४ वृ)।

दंतिक्क—१ तन्दुल, चावल। २ चावलों का आटा (वृभा ३०९४)। ३ दातो से चबाकर खाये जाने वाले पदार्थ (निचू ४ पृ १११)।

दंतिक्कय—मास से मिश्रित खाद्य-पदार्थ (पंव ९९)।

दंभन—सूची की भांति तीक्ष्ण शस्त्र-विशेष (विपा १।६।२६ पा)।

दंसणीय—उपहार, भेट—'गहिय दसणीयं। दिट्ठो राया' (कु पृ ६७)।

दक्खज्ज—गीध पक्षी (दे ५।३४)।

दगंगुलिगा—छाल—'दगगुलिगा पुण वक्को भण्णति' (निचू १ पृ ७१)।

दगमालग—स्फटिकमय प्रासाद (जबूटी प ४४)।

दगर—रोग-विशेष (जीवटी प १५३)।

दगवीणिया—जलप्रवाह, पानी की नाली (नि १।१२)।

दच्छ—तीक्ष्ण, तीखा (दे ५।३३)।

दडवड—१ धाटी, कपट से आक्रमण करना, छापा मारना (दे ५।३५)। २ शीघ्र।

दढक—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

दढगालि—१ धोया हुआ वस्त्र—'दढगालिर्धौतपोति' (जीविप पृ ५१)। २ ब्राह्मणों का धोया हुआ किनारी वाला वस्त्र-विशेष (प्रसा ६७९)।

दढमूढ—१ मूर्ख। २ एकग्राही, एक ही बात को पकडकर चलने वाला (दे १।४ वृ)।

दत्थर—कर-शाटक, रूमाल (दे ५।३४)।

दद्दर—१ दद्दर नामक पर्वत—'दद्दरमलयगिरिसिहर' (ज्ञा १।१६।२५८)। २ सघन, प्रचुर—'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचगुलितला' (समप्र १४४)। ३ चपेटा का आघात—'दर्दरेण—चपेटाभिघातेन। ४ सोपानवीथी—'दर्दरेषु—सोपानवीथीषु' (टी प १२८)। ५ प्रहार—'पाददद्दर करेति' (आवचू १ पृ १४८)। ६ वचन का आटोप (प्रटी प ४६)। ७ वाद्य-विशेष (जबू २)। ८ पात्र के मुंह पर बाधा जाने वाला कपडा, ढक्कन (आवचू २ पृ १०१)। ९ वस्त्र से अवनद्ध मुह वाला पात्र (भटी पृ ८७७)।

दद्दरग—१ प्रहार—'पायदद्दरग करेइ' (भ ३।११२)। २ गोह के चर्म से मढा हुआ वाद्य—'यस्य चतुर्भिश्चरणैरवस्थान भुवि स गोधाचर्मावनद्धो वाद्यविशेष' (जबूटी प १०१)।

दद्दरय—१ आच्छादन—भायणे छुहित्ता पोत्तेण दद्दरओ कीरइ' (आवहाटी २ पृ ९०)। २ आघात, प्रहार—'अप्पेगतिया पाददद्दरयं करेति' (राज २८१)।

दद्दरिका—वाद्य-विशेष (अनुद्वाचू पृ ४५)।

दद्दरिगा—वाद्य-विशेष—'ताडिज्जंताणं दद्दरगाणं दद्दरिगाणं' (राज ७७)।

दद्दरिया—१ वाद्य-विशेष—'गोधा चम्मावणद्धा गोहिता सा य दद्दरिया' (अनुद्वाहाटी पृ ६६)। २ प्रहार, आघात (ज्ञा १।१६।२६१)।

दधिफोल्लइ—वनस्पति-विशेष (भ २२।६)।

दप्पसायण—एक प्रकार का बंधन—'दिण्ण से दप्पसायणं णाम बंधं' (कु पृ १३६)।

दब्भमील—म्लेच्छ-विशेष—'ते य मिलक्खू दब्भमीलादि' (निचू ३ पृ ३५०)।

दमग—दरिद्र–'तए णं से सागरदत्ते एगं मह दमग-पुरिसं पासइ' (ज्ञा १।१६।७२)। २ मंदबुद्धि–'दमग मदबुद्धि त्ति' (जीभा ८६५)।
दमय—१ कर्मकर (बृभा १८२२)। २ दरिद्र, निर्धन (द ७।१४; दे ५।३४)।
दय—१ जल (दे ५।३३)। २ शोक–'दयं शोक इत्यन्ये' (वृ)।
दयच्छर—ग्रामस्वामी, गांव का प्रधान (दे ५।३६)।
दयरी—सुरा, मद्य (दे ५।३४)।
दयाइअ—रक्षित (दे ५।३५)।
दयावण—निर्धन (दे ५।३५)।
दयावणय—निर्धन (दे ५।३५ वृ)।
दर—१ ईषत्, अल्प (बृभा ६६)। २ आधा (ओभा २५४; दे ५।३३)।
दरंदर—उल्लास (दे ५।३७)।
दरमत्ता—बलात्कार (दे ५।३७)।
दरवल्ल—गांव का मुखिया (दे ५।३६)।
दरवल्लणिहेलण—शून्यगृह (दे ५।३७)।
दरवल्लह—१ प्रिय व्यक्ति (दे ५।३७)। २ कातर, भीत।
दरविंदर—१ दीर्घ। २ विरल (दे ५।५२)।
दराल—पुष्प-विशेष (भ २१।२१)।
दरि—गर्त्त, विवर–'दरि ति श्रृगालादिकृतभूविवरविशेषम्' (भटी पृ १२५५)।
दरिय—निम्न भूप्रदेश (भटी पृ ८००)।
दरिसाव—दर्शन, साक्षात्कार (निचू १ पृ ६)।
दरी—बिलों वाला प्रदेश–'मूषिकादिकृता लघ्वी खड्डा दरी' (जीवटी प २८२)।
दरुम्मिलल—सघन, निबिड (दे ५।३७)।
दलिअ—१ अंगुली। २ टेढी नजर वाला। ३ काष्ठ, लकड़ी (दे ५।५२)।
दलुक—गीध पक्षी (अवि पृ २३६)।
दल्लभो—दंडनायक की पत्नी (अंवि पृ ६८)।
दव—गद्गद्, अस्पष्ट ध्वनि (दे ५।३३)।
दवर—१ तन्तु, धागा (दे ५।३५)। २ रज्जु।
दवरक—रस्सी (आवहाटी २ पृ ८७)।

दवरय—रस्सी (सू २।२।१२)।

दवरिका—पलाश आदि की छाल के ततुओ को बटकर बनाई जाने वाली डोरी (नदीटि पृ १२७)।

दवहुत्त—ग्रीष्मकाल का प्रारम्भ (दे ५।३६)।

दविउलंक—भाजन-विशेष (अवि पृ १६३)।

दव्वहलिया—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

दव्वी—हरित वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।

दसतीण—धान्य-विशेष (प्रज्ञाटी प ३४)।

दसियाल—पतला धागा—'उण्णामय दसियाल एय पुण पिछ्यं कत्तो' (कु पृ १४१)।

दसीरिका—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

दसु—शोक (दे ५।३४)।

दसेर—स्वर्ण-सूत्र (दे ५।३३)।

दहफुल्लह—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

दहवोल्ली—स्थाली, पकाने का पात्र (दे ५।३६)।

दहर—छोटा (अंवि पृ ११६)।

दहिउप्फ—मक्खन—'दहिउप्फकोमलंगी' (दे ५।३५)।

दहिट्ठ—कपित्थ का वृक्ष (दे ५।३५)।

दहित्थर—दधिसर, दही की मलाई (दे ५।३६ वृ)।

दहित्थार—दधिसर, दही की मलाई—'सदहित्थारयदहिणा णवदहवोल्लीइ विरइयकरंबं' (दे ५।३६)।

दहिमुह—वन्दर—'दहिमुहशब्दोऽपि देश्य. कपिवाची कैश्चिदुक्तः' (दे ५।४४ वृ)।

दहिवासइ—वनस्पति-विशेष (जीवटी प ३५१)।

दाअ—प्रतिभू, ऋण लेने वाले और ऋण देने वाले के बीच जमानत देने वाला (दे ५।३८)।

दाइत—दर्शित (आवचू २ पृ ३५)।

दाइय—दर्शित (आचूला १।१३१)।

दाढिया—दाढी—'दाढियाए लोमाइं लुचमाणे' (भ १५।१२०)।

दाढीय—दाढी (आवचू २ पृ ३०४)।

दाण—शुल्क, चुगी—'करेह सेट्ठिस्स अद्धदाण' (उसुटी प ६५)।

दाणामा—प्रव्रज्या का एक प्रकार। इसमे भिक्षु चार पुट वाला लकड़ी का पात्र लेकर भिक्षा के लिए जाता है। पहले पुट की भिक्षा पथिकों के लिए, दूसरे की कौए-कुत्तो के लिए, तीसरे की मच्छ-कच्छों के लिए और चौथे पुट की भिक्षा स्वयं के लिए होती है (भ ३।१०२)।

दादलिआ—अगुली (दे ५।३८)।

दामक—रुपया, मूल्य (व्यभा ४।३ टी प १०)।

दामणि—स्त्री-पुरुष के शरीरगत वत्तीस शुभ लक्षणो मे से एक–'दामणि त्ति रूढिगम्यम्' (प्रटी प ८४)।

दामणी—१ प्रसव। २ आख, नयन (दे ५।५२)।

दायणा—दिखाना (वृभा ६२६४)।

दार—कटिसूत्र, काची (दे ५।३८)।

दारद्धंता—पेटी (दे ५।३८)।

दारिआ—वेश्या (दे ५।३८)।

दाल—दाल (प्रटी प १४१)।

दालि—१ रेखा (ओनि ३२४)। २ दाल, दला हुआ चना आदि अन्न।

दालिअ—नेत्र, नयन (दे ५।३८)।

दालिमपूसिक—पात्र-विशेष (अंवि पृ ६५)।

दावर—द्वितीय, दूसरा–'द्वापरः इति समयपरिभाषया द्वितीयः' (वृटी पृ ३३९)।

दासय—फल-विशेष (अवि पृ २३८)।

दासि—नीले फूल वाली गुच्छ वनस्पति (प्रज्ञा १।३६।५)।

दाहा—प्रहरण-विशेष (ज्ञा १।१८।३५)। दाव (बगला)।

दिअ—दिवस (दे ५।३९)।

दिअंड—प्रावरण-विशेष (अवि पृ १६१)।

दिअज्झ—स्वर्णकार, सुनार (दे ५ ३९)।

दिअधुत्त—कौआ (दे ५।४१ वृ)।

दिअधुत्तअ—काक, कौआ (दे ५।४१)।

दिअलिअ—मूर्ख (दे ५।३९)।

दिअली—स्थूणा, खभा (पा ३६०)।

दिअसिअ—१ नित्य-भोजन (दे ५।४०)। २ प्रतिदिन (वृ)।

दिअहुत्त—पूर्वाह्ण का भोजन (दे ५।४०)।

दिआहम—भासपक्षी (दे ५।३९)।

दिक्करअ—बच्चा (आवमटी प १३६)।

दिक्करिका—दुहिता, पुत्री (आवहाटी १ पृ २६७)। दीकरी (गुजराती)।

दिक्करुय—पतली डोरी (व्यभा २ टी प ४४)।

दिगिंछा—क्षुधा, बुभुक्षा—'दिगिंछत्ति देशीवचनेन बुभुक्षोच्यते' (उशाटी प ८०)।

दिट्ठिल्लिय—देखा हुआ (उसुटी प ६५)।

दिण्णेल्लिय—दिया (आवहाटी १ पृ २८९)।

दिप्पंत—अनर्थ (दे ५।३९)।

दिय—दिवस (बृभा २७६७; दे ५।३९)।

दियल—शाखा—'दियलम्मि ओलइया' (व्यभा १० टी प ८०)।

दिरुल—तिर्यञ्च जाति-विशेष (अवि पृ २३८)।

दिलिवेढय—ग्राह-विशेष, जलजन्तु की एक जाति (प्र १।५)।

दिल्लिदिलिअ—शिशु, बालक (दे ५।४०)।

दिल्लिदिलिआ—बालिका (पा ९६)।

दिव्वासा—चामुण्डा देवी (दे ५।३९)।

दीणार—सोने का सिक्का (आवचू १ पृ ४४६)।

दीणारमालिआ—गले का आभूषण-विशेष—'दीनाराद्याकृतिमणिकमाला' (जंबूटी प १०५)।

दीणारमासक—स्वर्ण-सिक्का (अवि पृ ६६)।

दीणारी—सोने का सिक्का (अवि पृ ७२)।

दीपकाण—काणा, एक आख वाला—'काणा दीपकाणा फरला इत्यर्थः' (प्रटी प २५)।

दीवअ—कृकलास, गिरगिट (दे ५।४१)।

दीवालिका—दीपावली के अवसर पर बनाया जाने वाला खाद्य-विशेष (अवि पृ १८२)।

दीविआ—१ उपदेहिका, उदई (जीभा ५३८; दे ५।५३)। २ शाकुनिक—पक्षीघातक व्यक्ति द्वारा अन्य पक्षियो को आकृष्ट करने के लिए पिंजरे मे रखा गया तीतर पक्षी (ज्ञाटी प २४०)। ३ व्याध की हरिणी जो दूसरे हरिणो को आकृष्ट करने के लिए रखी जाती है (दे ५।५३)।

दीविका—दर्वी–'दव्वी तध कवल्ली य दीविक त्ति कटच्छकी' (अंवि पृ ७२)।

दीविच्चग—एक प्रकार का सिक्का। देखें–'दीविच्चिक' (निभा ६५८)।

दीविच्चिक—द्वीप-विशेष में होने वाला सिक्का जो एक रुपये के समान होता था–'साहरको णाम रुपकः, सो य दीविच्चिको। तं च दीव सुरट्ठाए दक्खिणेण जोयणमेत्तं समुद्दमवगाहित्ता भवति' (निचू २ पृ ६५)।

दीहजीह—शख (दे ५।४१)।

दुअक्खर—नपुसक (दे ५।४७)।

दुअग्ग—दपती (उनि ३६७)।

दुएक्का—शौचक्रिया, देहचिन्ता (आवटि प २५)।

दुंदुमिअ—गल-गर्जित, गले से चिल्लाना (दे ५।४५)।

दुंदुमिणी—रूपवती स्त्री (दे ५।४५)।

दुंबवती—नदी, सरिता (दे ५।४८)।

दुक्कर—माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर मे किया जाता स्नान (दे ५।४२)।

दुक्कुक्कणिआ—पात्र, पीकदान (दे ५।४८)।

दुक्कुह—१ असहन, असहिष्णु (दे ५।४४)। २ रुचि-रहित (वृ)।

दुक्ख—जघन (दे ५।४२)।

दुक्खरय—दास (वृभा ६२८५)।

दुगंछणा—सयम–'पहू एजस्स दुगछणाए' (आ १।१४५)।

दुगुंछा—जुगुप्सा (सम २१।२)।

दुगुल्ल—१ वृक्ष-विशेष। २ दुकूल वृक्ष की छाल से बना वस्त्र–'दुकूलो वृक्ष-विशेषस्तस्य वल्क गृहीत्वा उदूखले जलेन सह कुट्टयित्वा बुसीकृत्य सूत्रीकृत्य च वूयन्ते यानि तानि दुकूलानि' (प्रटी प ७०,७१)। ३ गौड देश मे विशिष्ट रूई से निष्पन्न वस्त्र (आटी प ३६३)।

दुगूल—१ वृक्ष-विशेष। २ दुकूल वृक्ष की छाल से बना वस्त्र। ३ दुकूल वृक्ष की छाल के सूक्ष्म रोओ से निर्मित वस्त्र। (ज्ञा १।१।३३ टी प३०)। देखे–'दुगुल्ल'।

दुग्ग—१ कष्टप्रद–'वेयणं उदीरेंति—उज्जल विउलं····दुग्गं' (भ ५।१३८)। २ दुःख–'दुग्गजलोघदूरणिवोलिज्जमाण' (प्र ३।३३)। ३ कमर (दे ५।५३)। ४ युद्ध।

दुग्गव—दुष्ट बैल (द ६।२।१६)।

दुग्घुट्ट—हाथी (दे ५।४४)।

दुघाण—दुर्भिक्ष—'दुघाण ति वा दुभिक्ख ति वा एगट्ठ' (वृचू प १४८)।

दुच्चंडिअ—१ दुर्ललित। २ दुःशिक्षित, दुर्विदग्ध (दे ५।५५)।

दुच्चंबाल—१ झगड़ालू। २ दुश्चरित। ३ परुषभाषी (दे ५।५४)।

दुज्जाय—कष्ट, दुःख, उपद्रव (दे ५।४४)।

दुट्ठ—द्वेषयुक्त (ओनि ७५८)।

दुट्ठस्स—गर्दभ (वृटी पृ ४५०)।

दुणा—दुर्गन्धयुक्त—'जाणि एयाणि खारकडुयाणि दुणापाणियाणि उवभुजेह' (आवहाटी २ पृ ४४)।

दुणियत्थ—जाघ तक पहना हुआ वस्त्र (बृभा ४११२)।

दुण्णिअत्थ—१ जघन पर पहना हुआ वस्त्र। २ जघन (दे ५।५३)।

दुण्णिक्क—दुश्चरित (दे ५।४५)।

दुण्णिखित्त—१ दुश्चरित (दे ५।४५)। २ दुर्दर्श, जो कष्ट से देखा जा सके (वृ)।

दुत्ति—शीघ्र (दे ५।४१)।

दुत्थ—जघन (दे ५।४२)।

दुत्थुरुहंड—कलहकारी पुरुप (दे ५।४७ वृ)।

दुत्थुरुहंडा—कलह करने वाली स्त्री (दे ५।४७)।

दुत्थोह—अभागा (दे ५।४३)।

दुद्दम—देवर, पति का छोटा भाई (दे ५।४४)।

दुद्दोली—वृक्ष-पक्ति (दे ५।४३)।

दुद्धअ—समूह (दे ५।४२)।

दुद्धगंधिअमुह—वालक, शिशु (दे ५।४०)।

दुद्धगंधिअमुही—छोटी लड़की (पा ९६)।

दुद्धट्टी—१ खट्टी छाछ आदि से मिश्रित दूध, किलाटिका—'अविलजुयंमि दुद्धे दुद्धट्टी' (प्रसाटी प ५४)। २ प्रसूति के वाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध।

दुद्धट्ठी—१ खट्टी छाछ आदि से मिश्रित दूध, किलाटिका, वलाई (प्रसाटी प ५४)। २ प्रसूति के वाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध।

दुद्धवलेही—चावल का आटा डालकर पकाया गया दूध—'तडुलचुण्णयसिद्धमि अवलेही' (प्रसाटी प ५४)।

दुद्धसाडी—द्राक्षा डालकर पकाया गया दूध—'दक्खमीसरद्धंमि पयसाढी' (प्रसाटी प ५४)।

दुद्धिअ—लौकी, कद्दू (आवनि १३१८)। दूधी (गुज)।

दुद्धिग—लौकी, कद्दू (सूचू १ पृ १२५)।

दुद्धिणिआ—१ तुम्बी। २ तेल रखने का पात्र (दे ५।५४)।

दुद्धिणी—१ तेल-भाजन। २ तुम्बी (दे ५।५४ वृ)।

दुद्धोलणी—वह गाय जिसका दुबारा दोहन किया जा सके—'दुद्धोलणी दुहिअदुज्झाए' (दे ५।४६)।

दुद्धोली—वृक्षों की कतार (दे ५।४३ पा)।

दुप्परिअल्ल—१ अशक्य। २ दुगुना। ३ अनभ्यस्त (दे ५।५५)।

दुव्वोडित—दुर्मुण्ड, अपमानजनक संबोधन (बृभा ३३५०)।

दुव्वोल्ल—उपालम्भ (दे ५।४२)।

दुब्भपुप्फ—साप का एक प्रकार (जीवटी प ३९)।

दुमंतअ—केश-बंध, जूडा (दे ५।४७)।

दुमण—१ परिताप—'·····वणण-दुमण-वाहणादियाइं साहेति' (प्र २।१२)। २ धवलन—'·········छायण-दुमण-लिंपण·········' (प्र ८।९)।

दुमणी—सुधा, चूना (दे ५।४४)।

दुम्मइणी—कलह करने वाली स्त्री (दे ५।४७)।

दुम्मुह—वन्दर (दे ५।४४)।

दुयग्ग—१ दोनों—'एहि दुयग्गा वि य वयामो' (निचू ३ पृ १४३)। २ दम्पती—'दुयग्गावि त्ति देशीपदं प्रक्रमाच्च द्वावपि दम्पती' (उशाटी प ३९४)।

दुरंदर—दुःख से उत्तीर्ण (दे ५।४६)।

दुरालोअ—अन्धकार (दे ५।४६)।

दुरियखारी—वेश्या—'दुरियखारिं सो उरि धरइ' (उसुटी प ३०)।

दुरुक्क—थोड़ा पीसा हुआ, अच्छी तरह से नहीं पीसा हुआ (आचूला १।१११)।

दुरुय—दुर्गन्ध-युक्त (ज्ञा १।१।१०९)।

दुरूढ—आरूढ (स्था ९।६२)।

दुरूय—मलमूत्रयुक्त कीचड़—'दुरूय णाम उच्चार-पासवण-कद्दमो' (सूचू १ पृ १३१)।

दुरूव—विष्ठा, रक्त, मांस आदि का कर्दम—'ते तत्थ चिट्ठंति दुरूवभक्खी' (सू १।५।२०)।

दुलि—कछुआ (उशाटी प ४००; दे ५।४२)।

दुल्ल—वस्त्र (दे ५।४१)।

दुल्लग्ग—अघटमान, अयुक्त (दे ५।४३)।

दुल्लसिआ—दासी (दे ५।४६)।

दुवक्खरय—दास (पक ४४७)।

दुवग्ग—दोनों—'देशीवचनत्वात् द्वावपि' (बृटी पृ ४६१)।

दुव्वाली—वृक्ष-पंक्ति (पा ४००)।

दुव्वोज्झ—दुर्घात्य, कष्ट से मारने योग्य (से ३।५)।

दुसुंठ—उद्दण्ड—'दुसुण्ठा उल्लण्ठा खिङ्गाः' (जीविप पृ ५२)।

दुहअ—चूर-चूर किया हुआ (दे ५।४५)।

दुहदुहग—दुह-दुह आवाज करना (जीव ३।४४७)।

दुहुदुहुग—दुहु-दुहु की आवाज (राज २८१)।

दूण—हाथी (दे ५।४४)।

दूणावेढ—१ अशक्य। २ तालाब (दे ५।५६)।

दूमक—पीडाकारक—'अमणोरमाइं हिययमण-दूमकाइं' (प्र २।१७)।

दूमण—उत्पीडन—'····पहार-दूमण-छविच्छेयण' (प्र १।३०)।

दूमित—झुलसा हुआ—'दवदूमितंजणदुमो' (विभा १३०४)।

दूमिय—१ ईषत् भक्षित (आचूला १।११६)। २ धवलित (ज्ञा १।१।१८)। ३ पीडित।

दूरुल्ल—दूरवर्ती (उसुटी प ७६)।

दूलि—मत्स्य-विशेष (विपाटी प ७६)।

दूसल—मन्दभाग्य, अभागा (दे ५।४३)।

दूसि—छाछ, तक्र—'दूसिमिति देशीवचनत्वाद् दूष्यमेतत् मथित तक्रम्' (प्रज्ञाटी प ३५६)।

दूहट्ठ—लज्जा से उद्विग्न (दे ५।४८)।

दूहल—मन्द-भाग्य (दे ५।४३)।

दे—१ अपशब्द-सूचक अव्यय—'दे ! मंदभग्ग ! घुक्किय तूससि तं णाममेत्तेण' (जीभा ८३८)। २ पादपूरक अव्यय।

देअड—दृतिकार, मशक वहन करने वाला (अनुद्वा ३६०)।

देयड—चर्मकार (प्रज्ञा १।६७)।

देवउप्फ—पका हुआ पुष्प, पूर्ण विकसित फूल (दे ५।४६)।

देवड—१ चर्मकार (जीभा ४२५)। २ पुजारी (अंवि पृ १६०)।

देवडिगर—वह सार्वजनिक स्थान जहां देवताओं की स्थापना की जाती है; एक प्रकार का मंदिर (व्यभा ७ टी प ४१)।

देस—एक, दो या तीन प्रसृति का नाप—'एक्का पसति दो वा तिण्णि वा पसतीतो देसो भण्णति' (निचू ३ पृ ४६५)।

देसराग—जिस देश में जो रंगने की विधि हो उससे रंगा जाने वाला वस्त्र—'जत्थ विसए जा रगविधी ताए, देसे रत्ता देसरागा' (निचू २ पृ ३६६)।

देसियमेली—व्यापारी-मंडल—'स तत्थ देसियमेलीए गओ' (कु पृ ६५)।

देसो—अंगूठा—'देशीत्यङ्गुष्ठोऽभिधीयते,' 'देसी पोरपमाणा' (व्यभा ८ टी प ४)।

देहंवलिया—भिक्षावृत्ति—'गेहगेहेण देहवलियाए विर्त्ति कप्पेमाणी विहरइ' (ज्ञा १।१६।२६)।

देहणी—पक, कर्दम (दे ५।४८)।

देहमाण—देखता हुआ (भ ६।१४७)।

देहवच्च—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

देहिय—देखकर (सू १।२।३)।

दोआल—वृपभ (दे ५।४६)।

दोग्ग—युगल (दे ५।४६)।

दोघट्ट—हाथी (पा ६)।

दोच्च—चोर आदि का भय—'दोच्च ति चौरादिभयम्' (वृभा ३८६५ टी)।

दोच्चंग—१ पकाया हुआ शाक (वृभा ८०१)। २ तीमन (ओभा २६७)।

दोट्टग—छिलका उतारा हुआ फल का गुदा-भाग—'दोट्टगं छल्लीमोयगं' (आचू पृ ३६७)।

दोड्डिय—तुम्बा (व्यभा १० टी प ६३)।

दोणअ—१ गाव का मुखिया, गाव का अधिकारी, आयुक्त (दे ५।५१)। २ हल चलाने वाला (वृ)।

दोणक्का—सरघा, मधुमक्खी (दे ५।५१)।

दोण्णक—दोना, पत्तो का पुडवा (व्यभा ४।२ टी प ८४)।

दोद्धिअ—चर्मकूप, मशक (जीभा ४०३; दे ५।४६) ।

दोद्धिग—तुम्बा (बृभा ६५८) ।

दोद्धियक—तुबे से बना पात्र—'दोद्धियक तुबघटितं' (निचू २ पृ ४६) ।

दोयडी—दुसरसूत्री पटी (जीविप पृ ५१) ।

दोर—१ धागा (आवनि १०३१) । २ छोटी रस्सी (ओभा ६४) । ३ कटि-सूत्र (दे ५।३८) ।

दोरक—रज्जु—'रज्जुओ दोरको त्ति वुत्तं भवति' (निचू २ पृ ४०) ।

दोरग—डोरा (निचू ४ पृ १३३) ।

दोरिया—वस्त्र-विशेष, डोरिया (प्रसाटी प १६१) ।

दोला—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१) ।

दोवेली—सायकालीन भोजन (दे ५।५०) ।

दोस—१ द्वेष (उ ३२।७) । २ आधा । ३ कोप (दे ५।५६) ।

दोसणिज्जंत—चन्द्रमा (दे ५।५१) ।

दोसरिय—चांदनी—'दोसरियाण मज्झे देवउले जोइया सिला तेण' (उसुटी प ६१) ।

दोसाकरण—कोप (दे ५।५१) ।

दोसाणिअ—निर्मल किया हुआ (दे ५।५१) ।

दोसिणा—ज्योत्स्ना (स्था २।३६१) ।

दोसिणाभा—चन्द्र की अग्रमहिषी (स्था ४।१७५) ।

दोसिणी—ज्योत्स्ना (दे ५।५०) ।

दोसिल्ल—द्वेषयुक्त (विभा १११०) ।

दोसीण—वासी अन्न (प्र १०।१७) ।

दोहणहारी—१ दोग्ध्री, दोहने वाली स्त्री (दे १।१०८) । २ पनीहारी, जल लाने वाली । ३ पारिहारिणी—१ माला गूथने वाली । २ पारी (दुहने का पात्र) लाने वाली (दे ५।५६) ।

दोहणी—पक, कर्दम (दे ५।४८) ।

दोहासल—कमर (दे ५।५०) ।

दोहूअ—शव (दे ५।४६) ।

द्रवक्क—भय (प्रा ४।४२२) ।

द्रेहि—दृष्टि (प्रा ४।४२२) ।

घ

घअ—पुरुष (दे ५।५७)।

घंग—भ्रमर (दे ५।५७)।

घंत—अत्यधिक–'घंत पि दुद्धकग्गी न लभइ दुद्धं अघेणूतो' (बृभा १६८४)–देशीवचनत्वाद् अतिशयेन' (टी पृ ५६६)।

घंधा—लज्जा (दे ५।५७)।

घंसाडिअ—नष्ट, व्यपगत (दे ५।५६)।

घकंटि—वृक्ष की एक जाति (अवि पृ ७०)।

घडहड—वेग से–'घडहड जीविउ जाइ चित्तु पल्लोयह दिज्जइ' (उनुटी प ११३)।

घणिअ—१ अत्यधिक, अतिशय (भ ६।२०८; दे ५।५८)। २ स्वामी, पति।

घणिआ—१ भार्या, पत्नी (दे ५।५८)। २ स्तुति-पात्र स्त्री, धन्या।

घणित—अत्यन्त (आवचू २ पृ २८४)।

घणिता—तरुण स्त्री, प्रिया, गृहस्वामिनी (अवि पृ६८)।

घणिया—गाढ–'अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ घणियबंधण-बद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ' (उ २६।२३)।

घणी—१ पत्नी। २ पर्याप्ति, पर्याप्त। ३ जो बंधा हुआ होने पर भी असम्बद्ध हो (दे ५।६२)।

घणुहुल्लक—छोटे धनुष का खिलोना (सूचू १ पृ ११८)।

घण्णक—पशु-विशेष (अवि पृ ६२)।

घण्णपइरण—धान्य का मर्दन–'जोवण ति धान्यप्रकर ········लाटविषये जोवणं धण्णपइरणं भण्णइ' (ओटी प ७५)।

घण्णाउस—१ धन्य आयुष्मन् ! इस प्रकार कहा जाने वाला आशीर्वाद (दे ५।५८)। २ आशीर्वाद (वृ)।

घण्णारिया—भ्रमरी (निचू २ पृ १६७)।

घत्त—१ निहित, स्थापित (आवहाटी १ पृ ३१८)। २ वनस्पति-विशेष।

घनक—घर के बाहर का कमरा (ओटी प ५७)।

घमघमित—जाज्वल्यमान–'रोसेण घमघमितो' (प्रसा १६५)।

घम्मअ—१ चार अंगुल का हस्त-व्रण। २ चण्डी देवी की नरबलि (दे ५।६३)।

धम्मकरक—पानी छानने का कपड़ा (निचू १ पृ ७४)।

धम्मणग—फल-विशेष (अवि पृ २३८)।

धम्मणण—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

धयण—गृह (दे ५।५७)।

धर—तूल, रूई (दे ५।५७)।

धरग्ग—कपास (दे ५।५८)।

धरच्छ—आभूषण-विशेष—'मगधकं धराक्षं च रूढिगम्यम्' (औपटी पृ १०३)।

धव—वेग, तीव्रता—'धवसगसद्देण जलमुट्ठाहियं' (आवचू १ पृ ५५३)।

धवल—स्वजाति मे उत्तम, जैसे—अश्वधवल—उत्तम घोड़ा (दे ५।५७)।

धवलसउण—हस (दे ५।५६)।

धवासि—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

धव्व—वेग (दे ५।५७)।

धस—गिरने की आवाज—'कोट्टिमतलसि धस त्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया' (भ ६।१६८)।

धसल—विस्तीर्ण (दे ५।५८)।

धाडण—आक्रात—'वारेह सरडुवेक्खण, धाडण गयणास चूरणता' (निभा २७८६)।

धाडि—१ हमला, आक्रमण, डाका—'चोरधाडिभएण बहू गामा एगट्ठिता' (निचू ३ पृ १६३)। २ निरस्त, निराकृत (दे ५।५६)।

धाडित—तिरस्कृत, निष्कासित—'ततिओ रुट्ठो घेत्तु पिट्टिता धाडिता य' (आवचू १ पृ ८१)।

धाडिय—१ तिरस्कृत, निष्कासित—'तेण दढं पिट्टिया धाडिया य' (अनुद्वाहाटी पृ २६)। २ बगीचा (दे ५।५६)।

धाडी—आक्रमण—'गामे निवडिया चोरधाडी' (उसुटी प १६३)।

धाणग—धनिया, धाना (निचू २ पृ १०६)।

धाणूरिअ—विशेष प्रकार का फल (दे ५।६०)।

धात—१ पीछा करने वाला—'इतरेवि धाता नियत्ता' (आवचू १ पृ ४६७)। २ सुभिक्ष। ३ विभव—'धात सुभिक्खं अथवा धातं विभवो (उचू पृ ६४)।

धाय—सुभिक्ष—'धायं ति वा सुभिक्ख ति वा एगट्ठं' (निचू ३ पृ ७०)।

धार—लघु, छोटा (दे ५।५६)।

धारधारी—तापसो का काष्ठमय उपकरण जो काख मे धारण किया जाता है (नंदीटि पृ १०१)।

धारा—रणभूमि का अग्रभाग, मोर्चा (दे ५।५९)।

धारावास—१ बादल। २ मेढक (दे ५।६३)।

धारिट्ठ—साहस–'पगब्भं ति धारिट्ठं' (नंदीचू पृ ११)।

धाह—गहराई का अंत, थाह–'जाहे कोति महासमुद्दं तरिऊण जाहे अणेण धाहो, (थाह) लद्धो भवति ताहे मुहुत्तं अच्छिऊण सेस तरति' (आवचू १ पृ १०६)।

धाहा—शोरगुल–'सो धाहाओ करेइ' (उसुटी प २७)।

धाहाधाह—चिल्लाहट, क्रदन–'एसो अवकदंतो वंधुयणो पिट्ठओ य रुयमाणो। तणकट्ठ अग्गिहत्थो, धाहाधाहं करेमाणे ॥ (कु पृ १८६)।

धाहाविय—पुकार, चिल्लाहट–'तओ धाहावियं णेण' (कु पृ ६७)।

धिइल्लिया—पुतली, शालभंजिका (आवहाटी १ पृ २२९)।

धिकुण—क्षुद्र जन्तु, चीचड (अंवि पृ २३७)।

धिज्जा—बालिका (अंवि पृ ६८)।

धितिगा—पुतली (आवहाटी २ पृ १४३)।

धियइल्ल—मगदंतिया, मल्लिका (दजिचू पृ १९६)।

धिवल—दीन, मलिन–'निस्सोयमइलं दीण अट्ठमं धिवलागतं'(अवि पृ ४१)।

धीउल्लिका—पुतली (अनुद्वामटी प १२)।

धीउल्लिगा—पुतली (अनुद्वाहाटी पृ ७)।

धीउल्लिया—पुतली–'अट्ठचक्काणमुवरिं ठविया धीउल्लिया सा अच्छिम्मि विंधेयव्वा' (उसुटी प ६६)।

धीतर—पुत्र–'महपितुकधीतर वा पित्तियधीतरं वा····जोणिभगिणि वा' (अंवि पृ २१९)।

धीतरी—पुत्री–'पितुस्सियाधीतरिं बूया, मातुस्सियाधीतरिं वा' (अवि पृ २१९)।

धीतिगा—कठपुतली (आवचू १ पृ ४४९)।

धीतीगा—पुतली–'सा धीतीगा अच्छिमि विद्धा' (आवहाटी २ पृ १४३)।

धीम्मरग—धीवर (आवहाटी २ पृ २२६)।

धीया—कठपुतली (आवचू १ पृ ४५०)।

धीयार—ब्राह्मण (आवमटी प २७६)।

धुअगाअ—भ्रमर (दे ५।५७)।

धुंधुमारा—इन्द्राणी (दे ५।६०)।

धुक्कुद्धुअ—उल्लसित (दे ५।६०)।

धुक्कुद्धुगिअ—उल्लसित (दे ५।६०)।

धुत्त—१ विस्तीर्ण (व्यभा ८ टी प २६; दे ५।५८)। २ आक्रान्त।

धुरुड—कृमिविशेष (अवि पृ २२६)।

धूण—हाथी (दे ५।६०)।

धूतुल्लिका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

धूमंग—भ्रमर (दे ५।५७)।

धूमणत्त—भांड-विशेष (अंवि पृ २३०)।

धूमद्दार—गवाक्ष, वातायन (दे ५।६१)।

धूमद्धय—१ तालाब। २ महिष, भैंसा (दे ५।६३)।

धूमद्धयमहिसी—कृत्तिका नक्षत्र (दे ५।६२)।

धूममहिसी—कुहरा, कुहासा (दे ५।६१)।

धूमरी—१ नीहार, कुहासा (दे ५।६१)। २ हिम।

धूमसिहा—नीहार, कुहासा (दे ५।६१)।

धूमा—नीहार, कुहासा (स्थाटी प ४५१)।

धूमिआ—नीहार, कुहासा (स्था १०।२०; दे ५।६१)।

धूयरा—लड़की—'पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं' (उ २१।३)।

धूरिअ—दीर्घ, लम्बा (दे ५।६२)।

धूरिअवट्ट—अश्व (दे ५।६१ वृ)।

धूलडिया—धूल, रजकण (प्रा ४।४३२)।

धूलीवट्ट—अश्व (दे ५।६१)।

धोक—छात्र (उचू पृ २०)।

धोयगि—मद्य के नीचे एकत्रित होने वाला कर्दम—'मज्जस्स हेट्ठा धोयगिमादि-किट्टिसंखेलो' (निचू ४ पृ २२३)।

धोरण—गति-चातुर्य (जंबू ३।१७८)।

धोरिगिणी—नर्तकी (आवहाटी २ पृ १४१)।

प

पइ—मूत्र–'पइ त्ति पासवणं' (प्रश्न ६६)।

पइअ—१ भर्त्सित, तिरस्कृत। २ रथ का चक्र (दे ६।६४)।

पइट्ठ—१ रस को जानने वाला, ज्ञातरस। २ विरल। ३ मार्ग (दे ६।६६)। ४ प्रेषित, भेजा हुआ।

पइट्ठाण—नगर (दे ६।२६)।

पइण्ण—विपुल (दे ६।७)।

पइरिक्क—१ एकान्त–'पइरिक्कुवस्सयं लद्धु····रायउज्जियासए' (उ २।२३; दे ६।७१)। २ यथेच्छ (आवहाटी १ पृ ४३)। ३ तुच्छ (से १।५८)। ४ विशाल। ५ शून्य (दे ६।७१)। ६ प्रचुर (जीव ३।५९४)।

पइरिक्कय—प्रचुर (ओनि २४६)।

पइलाइय—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६)।

पइल्ल—१ ग्रह-विशेष (स्था २।३२५)। २ रोग-विशेष, श्लीपद रोग (प्र १०।१५)।

पइहंत—जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र (दे ६।१६)।

पउअ—दिन (दे ६।५)।

पउट्ट—परिवर्त–मरकर फिर उसी शरीर मे उत्पन्न होना। देखें–पउट्टपरिहार (भ १५।७५)।

पउट्टपरिहार—मर कर पुनः उसी शरीर मे बार-बार उत्पन्न होना– 'पउट्टपरिहारो नाम परावर्त्य परावर्त्य तस्मिन्नेव सरीरके उववज्जंति' (आवचू १ पृ २६६)।

पउढ—१ घर (दे ६।४)। २ घर का पिछला भाग–'पउढो गृहस्य पश्चिमदेश इति केचित्' (वृ)।

पउण—१ घाव का भरना, व्रण-प्ररोह। २ एक प्रकार का नियम (दे ६।६५)।

पउण्ण—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पउत्थ—१ प्रोषित, प्रवास मे गया हुआ (आवचू १ पृ ५३०; दे ६।६६)। २ गृह (व्यभा ७ टी प ८८; दे ६।६६)।

पउत्थपतिया—जिसका पति प्रवास मे गया हो वह स्त्री (आवचू १ पृ ५३०)।

पउत्थवइआ—जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री (आवहाटी १ पृ २६६)।

पउप्पय—शिष्यसंतति–'पउप्पएत्ति शिष्यसन्तानः' (भटी पृ १२७१)।

पउमलअ—वसन्त (दे ६।३३)।

पउल—वनस्पति-विशेष (भ २३।८)।

पउलण—पचन, पाक (प्र १।२५)।

पउसिया—'पउस' देश मे उत्पन्न स्त्री (औप ७०)।

पउसी—'पउस' देश मे उत्पन्न स्त्री (नि ६।२६)।

पऊढ—घर (दे ६।४)।

पएणी—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पएर—१ वाड का छिद्र। २ मार्ग। ३ दु शील, दुश्चरित्र। ४ कंठदीनार नाम का आभूषण। ५ गले का छिद्र। ६ दीन-नाद, आर्त्तस्वर (दे ६।६७)।

पएस—१ प्रातिवेश्मिक, पडोसी (दे ६।३)। २ एक प्रकार का वाद्य (नि १७।१३६)।

पएसिणी—पडोसिन (दे ६।३ वृ)।

पओत्थ—प्रोषित, प्रवास मे गया हुआ (दश्रुचू पृ ४८)।

पओप्पय—१ शिष्य-परम्परा, प्रशिष्य–'विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नाम अणगारे' (भ ११।१६५)। २ प्रशिष्य की शिष्य-परंपरा (भटी पृ १००८)।

पंखुडिआ—पत्र–'पंखुडिअव्व विकिण्णो' (दे ६।८ वृ)।

पंखुडी—पत्र, पत्ता (दे ६।८)।

पंगुलिगा—आसन-विशेष (दअचू पृ १७२)।

पंचंगुलि—एरण्ड का गाछ (दे ६।१७)।

पंचंगुलिया—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।१)।

पंचपुल—मछली पकडने का जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।

पंचमधारा—अश्व की गति-विशेष (उसुटी प २३७)।

पंचमेजण—उत्सव-विशेष (अंवि पृ ९८)।

पंचवडय—शौचालय–'वच्चं नाम पंचवडओ' (आचू पृ ३३८)।

पंचवन—शौचभूमी–'अण्णया राया विरेयणं पीतो पंचवनगमतीति' (दअचू पृ ५२)।

पंचावण्ण—पचपन की सख्या (दे ६।२७)।

पंजर—१ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर और गणावच्छेदक–इन पांचों का समुदाय। २ आचार्य आदि की परस्पर सारणा। ३ प्रायश्चित्त आदि के द्वारा अकुशल प्रवृत्ति से निवारण करना (व्यभा २ टी प २८)। ४ जलवायु-विशेषज्ञ–'पंजरपुरिसेण उत्तर-दिसाए दिट्ठं एक्क सुप्पमाण कज्जलकसिणं मेहपडलं' (कु पृ १०६)।

पंडरंग—१ शिवभक्त सन्यासी (वृटी पृ १३८६)। २ रुद्र, शिव (दे ६।२३)।

पंडरकुड्डुग—ग्वालों की जाति-विशेष–'अम्हे पंडरकुड्डुगा रायगिहे गोवाला पसिद्धा' (नदीटि पृ १३४)।

पंडविअ—जलार्द्र, पानी से भीगा हुआ (दे ६।२०)।

पंडु—सफेद-मिट्टी, घूसर-मिट्टी–'पाण्डुमृत्तिका नाम देशविशेषे या धूलिरूपा सती पाण्डू इति प्रसिद्धा' (जीवटी प २३)।

पंडुइय—तिरस्कृत, प्रताड़ित (निभा १६८५)–'तम्मि घरासे पडुइया भंनिया' (चू)।

पंडुल्लुइय—पाण्डुर वर्ण वाला (आवचू १ पृ २०६)।

पंतावणा—लकडी, मुष्टि आदि से मारना–'यष्टिमुष्ट्यादिभिस्ताडना' (वृभा ८६६ टी पृ २८५)।

पंति—वेणी, केश-रचना (दे ६।२)।

पंथुच्छुहणी—ससुराल से पहली वार आनीत वधू (दे ६।३५)।

पंथोलग—क्षुद्र जतु-विशेष (अवि पृ २३८)।

पंपुअ—दीर्घ (दे ६।१२)।

पंपोट—बहुबीज वाली वनस्पति (प्रसाटी प ५८)।

पंफुल्लिअ—गवेषित, खोजा हुआ (दे ६।१७)।

पंसुल—१ कोयल, कोकिल। २ जार, उपपति (दे ६।६६)। ३ रुद्ध, रोका हुआ।

पंसुलिगा—पार्श्व की हड्डी (प्र ३।१२)।

पंसुलिया—पार्श्व की हड्डी (प्रसाटी प ४०२)।

पंसुली—पार्श्व की हड्डी, पसली (तंदु १४२)। पांसली (राज)।

पक्क—१ दृप्त, उन्मत्त। २ समर्थ (दे ६।६४)।

पक्कग्गाह—१ मगरमच्छ (दे ६।२३)। २ पानी मे रहने वाला सिंहाकार जलजन्तु–'पक्कग्गाहो जलसिंहे देशी' (से ५।५७)।

पक्कण—१ म्लेच्छ जाति, चाण्डाल (जबू ३।११)। २ असहिष्णु। ३ समर्थ (दे ६।६९)। ४ एक नीच जाति का घर, शबर-गृह। ५ अधम (कु पृ ८१)। ६ एक अनार्य देश।

पक्कणकुल—गर्हित कुल—'पक्कणकुले वसतो सउणीपारोऽवि गरहिओ होइ' (आवहाटी २ पृ २०)।

पक्कणय—एक अनार्य देश (प्रसा १५८३)।

पक्कणि—१ अत्यन्त शोभित। २ भग्न, टूटा हुआ। ३ प्रियभाषी, (दे ६।६५)।

पक्कणिक—अनार्य देश मे रहने वाली जाति-विशेष (प्रटी प १५)।

पक्कणिय—म्लेच्छजाति-विशेष (प्रटी प १४)।

पक्कणी—अनार्य देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

पक्कल—१ प्रौढ। २ समर्थ (कु पृ १९८)। ३ दर्पयुक्त, गर्वित।

पक्कस—सुरा आदि का पुराना मैल (निचू ४ पृ २२३)।

पक्कसावअ—१ शरभ, अष्टापद। २ व्याघ्र (दे ६।७५)।

पक्काणिय—म्लेच्छ जाति-विशेष (प्र १।२१)।

पक्खडिअ—प्रस्फुरित (दे ६।२०)।

पक्खपेड—त्रिकोण वस्तु-विशेष (अवि पृ ११७)।

पक्खर—१ पाखर, घोडे का कवच (आवचू १ पृ ५६७)। २ जहाज की रक्षा का एक उपकरण।

पक्खरा—घोड़े का कवच, अश्व-संनाह (विपा १।२।१४; दे ६।१०)।

पक्खरिअ—कवचित, कवच से सज्जित (अश्व)—'पक्खरिअपत्थिअहओ' (दे ६।१० वृ)।

पक्खापविख—नपुसक का एक प्रकार—'वामदक्खिणेसु पक्खापविखणो विण्णेया' (अंवि पृ २२४)।

पक्खोडिअ—झाडा हुआ, निर्झाटित (व्यभा १० टी प ५२; दे ६।२७)।

पखरगत—वाद्य-विशेष—'वीणा मसूरका पखरगतं दद्दरका आलिंगा मुरव' (अंवि पृ २३०)।

पगढग—पथ-दर्शक, नायक (सूचू १ पृ २१३)।

पग्गेज्ज—निकर, समूह (दे ६।१५)।

पचलाक—वृक्ष पर रहने वाला प्राणी-विशेष (अवि पृ २२६)।

पच्चंगिर—चोरी का दोप (वृभा २०३८)।

पच्चग—मुह से बजाया जाने वाला बाजा (आवचू १ पृ ३०९)।

पच्चड्डिय—क्षरित (प्रा २।१७४)।

पच्चड्डिया—मल्लों का एक प्रकार का करण (विभा ३३५७)।

पच्चत्तर—खुशामद (दे ६।२१)।

पच्चवलोक्क—आसक्त चित्तवाला पुरुष (दे ६।३४)।

पच्चर—फलक–'असति एगगियस्स दो पच्चरा संघातिगा गहेयव्वा' (निचू २ पृ १६२)।

पच्चल—१ समर्थ (उशाटी प १०४; दे ६।६९)। २ असहनशील (दे ६।६९)।

पच्चवर—१ श्रेष्ठ (अंवि पृ १७)। २ क्षुद्र (अंवि पृ २२६)। ३ मुसल (दे ६।१५)।

पच्चा—तृण-विशेष, वल्वज (स्था ५।१९१)।

पच्चापिच्चिय—वल्वज नाम की मोटी घास को कूटकर बनाया हुआ रजोहरण (स्था ५।१९१)।

पच्चारण—उपालंभ (पा ९६०)।

पच्चुअ—प्रस्नुत, प्रक्षरित–'पच्चुअं प्रस्नुतं इत्यन्ये' (दे ६।२५ वृ)।

पच्चुच्छुहणी—नया मद्य, ताजी मदिरा (दे ६।३५)।

पच्चुत्थ—प्रत्युप्त, पुनः बोया हुआ (दे ६।१३)।

पच्चुद्धरिय—सम्मुखागत, सामने आया हुआ (दे ६।२४ वृ)।

पच्चुद्धार—सम्मुख आगमन (दे ६।२४)।

पच्चुरस—निकट (व्यभा ५ टी प १६)।

पच्चुल्ल—प्रत्युत्–'किं कारणं न तुमं रुट्ठो, पच्चुल्लं ममं पूएसि' (व्यभा १ टी प ५२)।

पच्चुहिअ—प्रस्नुत, प्रक्षरित (दे ६।२५)।

पच्चूढ—थाल, भोजन-पात्र (दे ६।१२)।

पच्चूह—सूर्य, रवि (दे ६।५)।

पच्चेड—मुसल (दे ६।१५)।

पच्चोणी—सम्मुख आगमन (पिभा ३३)।

पच्चोयड—१ मणि आदि के किनारे का उठा हुआ प्रदेश (जीव ३।३२७)। २ अवच्छादित–'वेरुलिय-मणिफालियपडलपच्चोयडाओ' (राज १७४)।

पच्चोवणिअ—सम्मुख आया हुआ (दे ६।२४ वृ)।

पच्चोवणी—सम्मुख आगमन (दे ६।२४)।

पच्छयण—पाथेय–'गहियपच्छयणा निग्गया' (कु पृ ५७)।

पच्छि—पिटिका, पिटारी (भटी प ३१३; दे ६।१)।

पच्छिया—पात्र-विशेष (जीभा १५५१)।

पच्छियापिडय—'पच्छी' रूप पिटारी (राज ७७२)।

पच्छिलिय—पश्चात् (पवटी प ५६)।

पच्छेणय—पाथेय, रास्ते मे निर्वाह करने की भोजन-सामग्री (दे ६।२४)।

पच्छोकड—जिसका पिछला भाग ऊंचा हो (दे ६।१५ वृ)।

पच्छोलित—छीला हुआ (अंवि पृ १६८)।

पज्जण—१ पिलाना (वृभा १७६७)। २ पीना, पान करना (दे ६।११)।

पज्जणय— पिलाना, जल मे डुबोना–'पज्जणय····पायनं–जलनिवोलन' (भ १४।८५ टी पृ ११६५)।

पज्जणी—लाल मिट्टी (अंवि पृ २३३)।

पज्जय—१ प्रपितामह, परदादा। २ परनाना (भ ६।१७५)।

पज्जा—सीढी, निःश्रेणी (दे ६।१)।

पज्जिया— १ परदादी। २ परनानी (द ७।१५)।

पज्जुणसर—इक्षु के सदृश तृण-विशेष (दे ६।३२)।

पज्झरिय—क्षरित, प्रवाहित–'दतीपज्झरियमयजलपवाहो' (उसुटी प ८५)।

पज्झुत्त—जडित, खचित (पा १४०)।

पट्ट—१ कीट-विशेष (पतंग) की लार से निष्पन्न वस्त्र–'····पदंगकीडा आगच्छंति, तं त मसचीडाइय आमिसं चरता इतो ततो कीलंतरेसु संचरंता लाल मुयति एस पट्टो' (अनुद्वाचू पृ १५)। २ ललाट का आभूषण-विशेष (विपाटी प ७०)।

पट्टइल—पटेल, गाव का मुखिया (जंवूटी प १९३)।

पट्टइल्ल—१ वस्त्रधारी (उसुटी प २५)। २ पटेल, गाव का मुखिया।

पट्टगभत्त—पूज्य व्यक्तियों के लिए वनाया गया भोजन–'पूया उक्खित्तं ति य, पट्टगभत्तं च एगट्ठा' (वृभा ३६५५)।

पट्टाढा--घोड़े के बाधा जाने वाला चमड़े का पट्टा–'छोडिया पट्टाढा, ऊसारियं पल्लाणं' (उसुटी प २३७)।

पट्टाधा—घोडे के वांधा जाने वाला चमड़े का पट्टा (उसुटी प २३७)।

पट्टिस—शस्त्र-विशेष (प्र १।२८)।

पट्टुआ—पाद-प्रहार (दे ६।८ पा)।

पट्टुहिअ—कलुषित पानी, हिलाया-डुलाया हुआ पानी (पा १५८)।

पट्टिसंग—ककुद, बैल के कंधे का कूबड़ (दे ६।२३)।

पडंचा—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी (दे ६।१४)।

पडंसुआ—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी (दे ६।१४)।

पडक—उद्भिज्ज जन्तु की एक जाति (अंवि पृ २२९)।

पडच्चर—साले की भांति हंसी-मजाक करने वाला विदूपक आदि (दे ६।२५)

पडप्पयार—बहाना, मिष—'इमेण दिव्व-चित्तयम्म-पडप्पयारेण कारणतरं किं पि चिंतयंतो दिव्वो देवलोयाओ समागओ त्ति' (कु पृ १९०)।

पडमट्ठ—खाद्य-विशेष (अवि पृ ७१)।

पडल—नीव्र, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं (दे ६।५)।

पडलग—टोकरी—'पुप्फपडलग वा पुप्फछज्जियं वा' (राज १२)।

पडवा—पट-कुटी, तम्बू (दे ६।६)।

पडहत्थिग—भाजन-विशेष (आवचू २ पृ ७०)।

पडाग—मत्स्य का एक प्रकार (प्रज्ञा १।५६)।

पडाल—फलक, मुष्टि (दश्रुचू प ७४)।

पडालिका—गृह-उपकरण, चटाई आदि (अंवि पृ ७२)।

पडाली—१ कच्ची छत, चटाई आदि से छाया हुआ स्थान (निचू २ पृ ४२०)। २ छोटी कुटिया (आवटि प ३६)। ३ पंक्ति, श्रेणी (बृभा ११०७, दे ६।९)।

पडिअ—विघटित, वियुक्त (६।१२)।

पडिअंतअ—कर्मकर, नौकर (दे ६।३२)।

पडिअग्गिअ—१ परिभुक्त। २ वर्धापित। ३ पालित (दे ६।७४)। ४ अनुव्रजित, अनुसृत (वृ)।

पडिअज्झअ—उपाध्याय (दे ६।३१)।

पडिअट्टलिय—घृष्ट, घिसा हुआ (से ६।३१)।

पडिअर—चूल्हे का मूल भाग (दे ६।१७)।

पडिअलि—त्वरित, वेगयुक्त (दे ६।२८)।

पडिएल्लिअ—कृतार्थ (दे ६।३२)।

पडिएल्लिआ—कृतार्थता—'पडिरंजिअपडिमाए किं रे पडिएल्लिआइ होइ फल' (दे ६।३२ वृ)।

पडिकक्कय—प्रतिकृति (अवि पृ २५६)।

पडिक्कय—प्रतिक्रिया (आवचू १ पृ ४०६, दे ६।१६)।

पडिक्खर—१ क्रूर, निर्दय (दे ६।२५)। २ प्रतिकूल।

पडिखंध—१ जल वहन करने का दृति आदि साधन (दे ६।२८)। २ जलवाह, पानी लाने वाला (वृ)।

पडिखंधी—१ जल वहन करने का दृति आदि साधन (दे ६।२८)। २ जलवाह, पानी लाने वाला (वृ)।

पडिखद्ध—मृत—'किमेइणा सुणहपाएण पडिखद्धेणं' (उसुटी प ६४)।

पडिच्छ—मध्य—'मणिरयणं छत्तरयणस्स पडिच्छभाए ठवेति' (आवहाटी १ पृ १००)।

पडिच्छअ—१ अवान्तर गण का अधिपति (व्यभा ६ टी प ५४)। २ समय (दे ६।१६)।

पडिच्छंद—१ मुख (दे ६।२४)। २ समान, तुल्य (से १४।२४)।

पडिच्छिआ—१ प्रतीहारी (दे ६।२१)। २ चिरकाल से ब्याई हुई भैंस—'पडिच्छिआ चिरप्रसूता महिषीत्यन्ये' (वृ)।

पडिच्छिर—सदृश, समान (प्रा २।१७४)।

पडिणायित—विनष्ट (अवि पृ १६९)।

पडिणिअंसण—रात्री मे पहनने का वस्त्र (दे ६।३६)।

पडितलिय—पदत्राण, जूता-विशेष (पक ८४७)।

पडिताणिय—पैवंद, फटे वस्त्र मे लगने वाली जोड (निचू २ पृ ५६)।

पडित्थिर—समान, सदृश (दे ६।२०)।

पडिपिडिअ—प्रवृद्ध, बढा हुआ (दे ६।३४)।

पडिभेय—उपालभ (पा ९६०)।

पडिया—वाचना—'पेसेह मेहावी सत्त पडियाओ देमि' (आवहाटी २ पृ १३८)।

पडियाणय—पर्याण के नीचे रखा जाने वाला एक उपकरण (ज्ञाटी प २३९)।

पडियाणिय—पैवंद—'वत्थस्स एगं पडियाणियं देइ' (नि १।४७)।

पडियाणिया—पैवद—'पडियाणिया थिग्गलयं छदतो य एगट्ठं' (निचू २ पृ ५६)।

पडिरंजिअ—भग्न, टूटा हुआ (दे ६।३२)।

पडिलग्गल—वल्मीक, कीट-विशेष द्वारा निर्मित मृत्तिका-स्तूप (दे ६।३३)।

पडिल्ली—१ वृति, वाड । २ यवनिका, परदा (दे ६।६५) ।

पडिवेस—विक्षेप, फेंकना (दे ६।२१) ।

पडिसंत—१ प्रतिकूल (दे ६।१८) । २ अस्तमित, अस्तप्राप्त—'पडिसंतं अस्तमितमिति तु सातवाहनः' (वृ) ।

पडिसराखारमणि—कंठ का वह आभूषण जिसकी प्रत्येक लड में मणि पिरोया हुआ हो (अवि पृ १६३) ।

पडिसाअ—घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (दे ६।१७) ।

पडिसाइल्ल—घर्घर कण्ठ वाला (दे ६।१७ वृ) ।

पडिसार—१ स्मृति—'सव्वसारस्स दिट्ठिवायस्स नत्थि पडिसारो' (ति ७२३) । २ पटुता (दे ६।१६) । ३ पटु, निपुण (वृ) ।

पडिसारिअ—स्मृत, याद किया हुआ (दे ६।३३) ।

पडिसारी—यवनिका, परदा (दे ६।२२) ।

पडिसिद्ध—१ भीत । २ भग्न (दे ६।७१) ।

पडिसुत्ति—प्रतिकूल (दे ६।१८) ।

पडिसूर—प्रतिकूल (दे ६।१८) ।

पडिहच्छ—पूर्ण, भरा हुआ (दे ६।२८ पा) ।

पडिहत्थ—१ अत्यधिक—'देशीशब्दोऽय पडिहत्यमुद्धुमायं अइरेइयं च जाण आउण्ण इति वचनात्' (जंबूटी प ४२) । २ परिपूर्ण—'पडिहत्थाओ त्ति परिपूर्णाः देशीशब्दोऽयम्' (जबूटी प ५७, दे ६।२८) । ३ प्रतिक्रिया (दे ६।१९) । ४ वचन (वृ) । ५ अपूर्व । ६ प्रत्युपकार (से १२।६६) ।

पडिहत्थी—वृद्धि (दे ६।१९) ।

पडीर—चोरों का समूह (दे ६।८) ।

पडुआलिय—१ निपुण बनाया हुआ । २ ताडित । ३ धारित (दे ६।७३) ।

पडुजुवइ—तरुणी (दे ६।३१) ।

पडुल्ल—१ छोटा पिठर, छोटी थाली । २ चिरप्रसूत (दे ६।६८) ।

पडुवइअ—तीक्ष्ण, तेज (दे ६।१४) ।

पडुवत्ती—यवनिका, परदा (दे ६।२२) ।

पडोअ—बालक (दे ६।९) ।

पडोगार—उपकरण (दश्रुचू प ५२) ।

पडोयार—उपकरण, सामग्री (पिनि २८) ।

पडोहर—घर का पिछला भाग (दे ६।२२)।

पड्ड–१ पाडा, भैंसा (दजिचू पृ १७६)। २ धवल, सफेद (उचू पृ १७८; दे ६।१)।

पड्डंस—गिरि-गुहा, पहाड़ की गुफा (दे ६।२)।

पड्डच्छी—भैंस–'पड्डुच्छिखीर' (ओनि ८७)।

पड्डुत्थी—१ बहुदुग्धा, बहुत दूध देने वाली। २ दूध दुहने वाली स्त्री (दे ६।७०)।

पड्डुय—भैंसा, पाडा (उसुटी प १३५)।

पड्डुला—चरणघात, पाद-प्रहार (दे ६।८)।

पड्डुस—सुसयमित (दे ६।६)।

पड्डिका—१ छोटी भैंस, पाडी। २ छोटी गौ, वछिया (विपाटी प ४८)।

पड्डिच्छिर—सदृश, समान (प्रा २।१७४)।

पड्डिया—१ पाडी, छोटी भैंस। २ वछिया (विपा १।२।२०)। ३ प्रथम प्रसूता गाय। ४ नवप्रसूता महिषी (व्यभा ४।३ टी प १०)।

पड्डी—प्रथम प्रसूता, पहली वार व्यानेवाली (दे ६।१)।

पड्डुआ—चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६।८)।

पढमालिया—नाश्ता, प्रातराश (आवचू १ पृ ८२)।

पढमिल्लुय—प्रथम (राज ७६८)।

पढमेल्ल—प्रथम–'देशीवचनमेतत्, यथा—पढमेल्ला एत्थ घरे' (आवमटी प ११६)।

पढमेल्लुग—पहला–'प्रथम एव प्रथमेल्लुका देशीवचनमेतत्' (आवमटी प ११६)।

पण—पाच (वृभा २४०८)।

पणअत्तिअ—प्रकटित (दे ६।३० वृ)।

पणग—१ सूक्ष्म पंक–'पंक-पणग-पासजालभूय' (प्र ४।१)। २ काई (द ८।१५)। ३ पञ्चक (जीभा १७६७)। ४ वनस्पति-विशेष (आ ६।१।१२)।

पणपण्ण—पचपन (सम ५५।१)।

पणपन्न—पचपन (जीव २।२०)।

पणय—१ पंचक (भ ६।१५०।१)। २ सूक्ष्म पक (प्र ४।१ पा)। ३ तृण-विशेष, शैवाल (पिनि २५)। ४ काई (ओनि ३५०)। ५ कर्म

—'पावे वज्जे वेरे पके पणए य' (उशाटी प ६७)। ६ कर्दम (दे ६।७)।

पणयत्तिअ—प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (दे ६।३०)।

पणयाल—पैंतालीस (सम ४५।७)।

पणल—प्रावरण-विशेष (निचू २ पृ ३६८)।

पणवण्ण—पचपन की संख्या (भ २।१२१; दे ६।२७)।

पणसक—१ थाली के आकार का पात्र (अंवि पृ ६५)। २ नकुलिका का एक प्रकार (अंवि पृ २२१)।

पणहय—पीना (निर ४ टी पृ ३४)।

पणामणिआ—स्त्री-विषयक प्रणय (दे ६।३०)।

पणाली—देह-प्रमाण यष्टि (प्रटी प ५८)।

पणिअ—प्रकट, स्पष्ट (दे ६।७)।

पणिआ—करोटिका, सिर की हड्डी (दे ६।३)।

पणुल्लिअ—प्रेरित (पा १४७)।

पणोल्लि—प्राजनक, चाबुक (प्र ३।१५)।

पण्ण—पचास (स्था ७।१२८।१)।

पण्णगार—शर्त (निचू ३ पृ १४०)।

पण्णत्त—१ बीज-वपन के योग्य भूमि (औप १)। २ परिकर्मित (सूर्यटी प २६३)। ३ स्वस्थ—'सो य (अस्सो) पण्णत्तो' (निचू ४ पृ ३०८)।

पण्णा—पचास (सम ४६।१)।

पण्णास—पचास (सम ५०।२)।

पण्णासय—पचास वर्ष की उम्र वाला (तं ५७)।

पण्णी—एक प्रकार की नावा (निचू १ पृ ७२)।

पण्णेलिका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ११६)।

पण्हुअ—स्तन-धारा (दे ६।३)।

पतिरिक्क—१ एकांत—'देशीभाषया एकान्ते' (उशाटी प ६६५)। २ प्रचुर (बृभा ५२६७)। ३ यथेच्छ, अकेला (आवहाटी १ पृ ४३)।

पतुज्ज—प्राणी-विशेष के रोओं से बना वस्त्र—'पाणजोणिगतं वत्थं तिविध-माधारये कोसेज्जं पतुज्जं आविकं चेति' (अंवि पृ १६३)।

पतोप्पय—प्रशिष्य (भ ११।१६२ पा)।

पत्तउर—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३६।३)।

पत्तंबेल्लि—खाद्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पत्तट्ठ—१ कुशल, वहु-शिक्षित (भ १४।३; दे ६।६८)। २ सुन्दर (दे ६।६८)।

पत्तण—१ वाण का अग्रभाग। २ पुख, बाण का मूल भाग (दे ६।६४)।

पत्तणा—१ पुख मे की जाने वाली रचना-विशेष (से ७।५२)। २ इषु-फलक। ३ वाण का मूल भाग, पुख (से १५।७३)।

पत्तपसाइआ—पत्तियों की एक तरह की पगडी जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६।२)।

पत्तपिसालस—पत्तियों की एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग पहनते है (दे ६।२)।

पत्तरक—आभूपण-विशेष (प्रटी प १४६)।

पत्तल—१ तीक्ष्ण, तेज (औप ४७; दे ६।१४)। २ कृश (वृ)।

पत्तला—राजपत्र, अधिकार-पत्र—'समप्पिज्जति सेवयाण महापडिहारेहिं गाम-णयर-खेडकव्वड-पट्टणाण पत्तलाओ त्ति' (कु पृ १८)।

पत्तवासित—वधा हुआ (निचू ४ पृ २२१)।

पत्तादार—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

पत्तिसमिद्ध—तीक्ष्ण (दे ६।१४)।

पत्ती—पत्तों की वनी हुई एक तरह की पगडी जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६।२)।

पत्तुण्ण—वल्कल से वना हुआ वस्त्र (आचूला ५।१४)।

पत्तुल्लक—भाजन-विशेष—'सा तीए रुट्ठाए पत्तुल्लकाणि धोवेतीए मसिलित्तेण हत्थेण' (दअचू पृ ४७)।

पत्थर—पाद-प्रहार—'एस परक्कपडीरो पत्थरकुसलेण पड्डुअं दिन्तो' (दे ६।८ वृ)।

पत्थरभल्लिअ—कोलाहल करना (दे ६।३६)।

पत्थरा—चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६।८)।

पत्थरिअ—पल्लव, कोपल (दे ६।२०)।

पत्थार—विनाश—'पत्थारो णाम कुल-गण-संघविणासो भण्णति' (निचू १ पृ ११६)।

पत्थारी—१ समूह। २ प्रस्तर, शैय्या (दे ६।६६)। पथारी (गुज), पथरणा (राज)।

पत्थिआ—१ काष्ठ की बडी पट्टिका (ओनि ४७८)। २ वांस का बना बड़ा भाजन (टी पृ ३७४)।

पत्थिय—१ पुष्प-करंडक–'पुप्फचयं करेइ, पत्थियं भरेइ' (अंत ६।२१)। २ शीघ्र (दे ६।१०)।

पत्थियपिडग—वांस का बना हुआ भाजन-विशेष (विपा १।३।२०)।

पत्थीण—१ मोटा कपड़ा (दे ६।११)। २ स्थूल (वृ)।

पथरा—शस्त्र-विशेष (कु पृ २७४)।

पदकणु—आभरण-विशेष–'पदकणु इत्यय शब्दो देशभाषाया प्रतीयते' (राजटी पृ ४८)।

पदुम—जल में रहने वाला प्राणी-विशेष (अवि पृ २२७)।

पदोलि—यान-विशेष–'संदण-रध-वलभी-पदोलि-पवहण....' (अवि पृ २००)।

पद्द—१ ग्राम-स्थान (दे ६।१)। २ छोटा गाव (पा ३९९)।

पद्दिया—अभिनव प्रसूता महिषी (व्यभा ४।३ टी प १०)।

पद्धर—१ ऋजु, सरल (दे ६।१०)। २ शीघ्र।

पद्धार—जिसकी पूछ कटी हुई हो वह (दे ६।१३)।

पधकली—वनस्पति-विशेष (अवि पृ २३२)।

पनक—सूक्ष्म पक (प्रटी प ६५)।

पन्नग—दुर्गन्धित–'कटुय तेल्ल तु पन्नगतिलाणं' (व्यभा ३ टी प १०९)।

पन्नाडिअय—मसला हुआ (पा ५०२)।

पप्पड—पर्पट, पापड (प्रसा ४३४)।

पप्पडग—गीली मिट्टी के सूख जाने पर उसके ऊपर की तह (निचू १ पृ ६१)।

पप्पडिग—खाद्य वस्तु विशेष (जीभा १५३७)।

पप्पडी—गीली मिट्टी के सूख जाने पर उसके ऊपर की तह (निचू १ पृ ६१)।

पप्पीअ—चातक-पक्षी (दे ६।१२)।

पप्फाड—अग्नि का एक प्रकार (दे ६।९)।

पप्फिडिअ—प्रतिफलित (दे ६।२२)।

पप्फुअ—१ दीर्घ, लवा। २ उड्डीयमान, उड़ता हुआ (दे ६।६४)।

पप्फोडिअ—१ झाड़ा हुआ, निर्झाटित (दे ६।२७)। २ तोड़ा हुआ।

पब्भार—१ ईषत् कुब्ज (प्रज्ञाटी प ७३)। २ संघात, समूह (दे ६।६६)। ३ गिरि-गुहा, पर्वत-कन्दरा–'पब्भारकंदरगया साहिंती अप्पणो अट्ठं' (महा ८१, दे ६।६६)। ४ आधा (से ५।१८)। ५ अग्र (से ४।९)। ६ उपरि भाग (से ४।२०)।

पब्भारगय—अवनत, झुका हुआ—'ईसिं पब्भारगएणं काएणं' (अंत ३।८८)।

पब्भोअ—भोग, विलास (दे ६।१०)।

पभवाल—तरु-विशेष (जंबूटी प ९८)।

पम्हट्ठ—१ प्रस्मृत, विस्मृत—'अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हट्ठ-दिसाभाए' (ज्ञा १।१८।४७)। २ प्रभ्रष्ट, विलुप्त (से ४।४२)। ३ परिष्ठापित, प्रक्षिप्त—'पम्हट्ठं ति परिठवियं ति एगट्ठ' (व्यभा ८ टी प २९)।

पम्हर—अपमृत्यु, अकाल-मरण (दे ६।३)।

पम्हल—कमल-केसर, किञ्जल्क (दे ६।१३)।

पम्हार—अपमृत्यु (दे ६।३)।

पम्हुट्ठ—१ विस्मृत—'कित्थ तयं पम्हुट्ठं, जंथ तया भो ! जयंतपवरम्मि। वुत्था समयणिवद्धा देवा त सभरह जाइ ॥' (ज्ञा १।८।१८०)। २ गिरा हुआ—'पम्हुट्ठ णाम पडियं वीसरियं वा' (निचू २ पृ ४६१)।

पम्हुसाविय—विस्मारित (उसुटी प १९)।

पयंचुल—मछली पकडने का जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

पयट्टिअ—प्रवर्तित (दे ६।२६)।

पयडी—नारियल की छाल—'पयडी—णालिएरिचोदय' (निचू २ पृ ३८)।

पयड्डणी—१ प्रतिहारी, द्वाररक्षिका। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ चिरप्रसूता महिषी (दे ६।७२)।

पयय—प्रतिदिन, निरंतर (दे ६।६)।

पयरग—पैरों का आभूषण-विशेष (जीवटी प १४७)।

पयरण—प्रथम दी जाने वाली भिक्षा (वृभा ३५४८)।

पयरीक्क—१ सुन्दर। २ अव्यावाध, एकान्त (उचू पृ ६९)।

पयरेक्क—१ सुन्दर। २ अव्यावाध, एकान्त (उचू पृ ६९)।

पयल—नीड, घोंसला (दे ६।७)।

पयला—१ खड़े या बैठे हुए जो निद्रा आए वह (स्था ९।१४)। २ निद्रा (दे ६।६)। ३ भुजपरिसर्प का एक प्रकार (अंवि पृ २२६)।

पयलाअ—१ हर, महादेव। २ साप (दे ६।७२)। ३ भुजपरिसर्प की एक जाति (जीवटी प ४०)।

पयलाइय—हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति (सू २।३।८०)।

पयलाक—परिसर्प की एक जाति (अंवि पृ २२६)।

पयलापयला—चलते-फिरते जो नींद आए (स्था ९।१४)।

पयलायमत्त—मयूर (दे ६।३६)।

पयल्ल—प्रसृत, फैला हुआ (पा ५३३)।

पयवई—सेना (दे ६।१६)।

पयसाडी—द्राक्षा डालकर पकाया गया दूध (प्रसाटी प ५४)।

पया—चूल्हा (व्य ९।९)।

पयाम—अनुक्रम (दे ६।९)।

पयुका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पयुमक—उद्भिज्ज जंतु-विशेष (अंवि पृ २२९)।

पयोट्टपरिहार—मरकर पुन. उसी शरीर में बार-बार उत्पन्न होना (आवचू १ पृ २९९)।

परक्क—लघु स्रोत (दे ६।८)।

परग—१ बांस की बनी हुई टोकरी, छाब आदि (आचूला १।१४२)। २ तृण-विशेष (सू २।२।४)। ३ धान्य-विशेष (सू २।२।९)।

परज्झ—१ परतन्त्र—'जे सखया तुच्छ-परप्पवाई, ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा' (उ ४।१३)। २ अपराध (ज्ञा १।२।४५)। ३ पात्र-विशेष—'अलंदिगा वा कुडग वा परज्झ मणिमयमादी विल्ववल्वभायणाणि'; (आचू पृ ३४५)।

परज्झा—परतन्त्रता, पराधीनता (स्था १०।१०८)।

परडा—विशेष प्रकार का सर्प (दे ६।५)।

परत्तिका—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

परद्ध—१ पीड़ित—'अणुवद्धखुहापरद्धा' (प्र ३।१७)। २ पतित, गिरा हुआ। ३ भीरु (दे ६।७०)। ४ व्याप्त।

परब्भंत—निषिद्ध, निवारित (निचू २ पृ १७७)।

परब्भस—घिरा हुआ—'चोरो य णगरारक्खेण परब्भसमाणो तत्थेव अतिगतो' (निचू १ पृ १६)।

परभाअ—रति-क्रीडा, मैथुन (दे ६।२७)।

परमासक—पैरों का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

परसुहत्त—वृक्ष (दे ६।२९)।

परस्सर—१ दीर्घ नाखून वाला पशु-विशेष। २ गेंडा (प्रज्ञा १।६६)।

परहुत्त—पराजित (कु पृ १७३)।

परा—तृण-विशेष (प्र ८।१०)।

परासर—शरभ, महाकाय पशु-विशेष जो हाथी को भी अपनी पीठ पर उठा लेता है (प्रटी प ६)।

पराहुत्त—पराङ्मुख–'ववखित्तपराहुत्ते अ पमत्ते मा कया हु वदिज्जा' (आवनि ११६८)।

परिअट्ट—धोबी, रजक (दे ६।१५)।

परिअट्टलिअ—परिच्छिन्न (दे ६।३६)।

परिअडी—१ वृति, वाड। २ मूर्ख (दे ६।७३)।

परिअत्त—प्रसृत, फैला हुआ–'सव्वासण-रिउसंभवहो करपरिअत्ता तावं' (प्रा ४।३९५)।

परिअर—लीन, आसक्त (दे ६।२४ वृ)।

परिअली—थाली, भोजन-पात्र (दे ६।१२)।

परिउत्थ—प्रवास पर गया हुआ (दे ६।१३)।

परिकट्टलिय—एक स्थान पर एकत्रित किया हुआ (पिनि २३९)।

परिकल्ल—धान का ऐसा ढेर जो राख या गोबर-जल से संस्कारित नहीं है (बृभा ३३१२)।

परिक्खार—१ उत्तम। २ प्रचुर–'कोऽत्थ परिक्खार देज्ज वस्त्राणि ?' (सूचू १ पृ २०१)।

परिखंध—काहार, जल आदि लाने वाला नौकर (दे २।२७)।

परिगोह—१ आसक्ति। २ कीचड़–'परिगोहो णाम परिष्वङ्ग', दव्वे परिगोहो पंको' (सूचू १ पृ ६३)।

परिघासिय—गुण्डित, लिप्त–'रयसा वा परिघासियपुव्वे' (आचूला १।३५)।

परिघोलण—विचार–'उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥' (नदी ३८।८) –'परिघोलन–विचार' (टी पृ ४८)।

परिच्चछड—विधि, वृत्तान्त (निचू १ पृ ६)।

परिच्छूढ—१ उत्क्षिप्त (दे ६।२५)। २ परित्यक्त (से १३।१७)।

परिच्छेक—लघु (ज्ञाटी प २२८)।

परिज्जुसित—बुभुक्षित (निचू २ पृ १२७)।

परिज्झुसित—बुभुक्षित (निचू २ पृ १२७)।

परिण—पण्य, बेचने योग्य वस्तु (अंवि पृ २५३)।

परित्थड—विधि, वृत्तान्त—'दिट्ठो य रण्णो अंवगहणपरित्यडो'(निचू १ पृ ६)।

परिपदणय—अभिनय—'सा अप्पणो परिपदणयं करेति' (आवचू १ पृ ५२५)।

परिपरि—वाद्य-विशेष (नि १७।१३६)।

परिपरिया—वाद्य-विशेष (राज ७१ पा)।

परिपिरिया—वाद्य-विशेष (भ ५।६४ पा)।

परिपूणक—१ सुघरी नामक पक्षी का घोसला। २ घी छानने का साधन—सुघरी पक्षी के घोसले से घी छाना जाता है। घी का कचरा भीतर रह जाता है और घी छनकर वाहर आ जाता है—'परिपूणको नाम सुघरीचिटिकाविरचितो नीडविशेषः, तेन च घृत गाल्यते ततस्तत्र कचवरमवतिष्ठते घृतं तु गलित्वा अधः पतति' (नंदीटि पृ १०५)।

परिपूणग—छानने का एक साधन जिससे घेवर का 'घोल' छाना जाता है। सार-सार नीचे झर जाता है और कलमष अन्दर रह जाता है—'परिपूणको नाम येन घृतपूर्णयोग्य पानं गाल्यते, तत्र सारो गलति कलमषं तिष्ठति' (वृटी पृ १०४)।

परिब्भंत—१ निषिद्ध। २ भीरु (दे ६।७२)।

परिब्भुसित—बुभुक्षित—'अहवा वि परिब्भुसितस्स मणुण्णं होति पतं पि' (निचू २ पृ १२७)।

परिमास—नौका का काष्ठ-विशेष (ज्ञाटी प १६६)।

परियच्छ—दलाल (स्थाटी प ३६)।

परियल्ल—परत (निभा ५८०१)।

परियाण—परिपूर्ण—'देति फलं विज्जाओ, पुरिसाणं भागधेज्जपरियाणं। न हु भागधेज्जपरिवज्जियस्स विज्जा फल देति ॥' (चं १८)।

परिरय—१ पर्याय, समानार्थक शब्द—'एगपरिरयं ति वा एगपडिरयं ति वा एगपज्जायं ति वा एगणामभेदं ति वा एगट्ठा' (आवचू १ पृ २६)।

परिलिअ—लीन, आसक्त (दे ६·२४)।

परिली—१ मुंह की हवा से बजाया जाने वाला एक प्रकार का वाजा—'फूमिज्जताणं वंसाणं वेलूण वालाणं परिलीणं वद्धगाण' (राज ७७)। २ गुच्छ वनस्पति की एक जाति (प्रज्ञा १।३७।५)।

परिल्ल—अपर (से ६।१७)।

परिल्लवास—अज्ञात गति वाला (दे ६।३३)।

परिवच्छ—अवधारण, निश्चय—'परिवच्छि त्ति देशीशब्दोऽय निर्णयार्थे वर्तते' (वृटी पृ ६१५)।

परिवारिअ—घटित (दे ६।३०)।

परिवास—खेत मे सोने वाला पुरुष (दे ६।२६)।

परिवाह—दुर्विनय, अविनय (दे ६।२३)।

परिसित्तिय—पानक-विशेष (निभा १६६३)।

परिसिल्ल—परिषद् वाला—'परिसिल्लस्स तु परिसा' (निचू ४ पृ ७७)।

परिह—रोष, क्रोध (दे ६।७)।

परिहच्छ—१ पटु, निपुण। २ क्रोध (दे ६।७१)।

परिहट्टि—आकृष्टि, आकर्षण (दे ६।२१)।

परिहण—परिधान, वेश (दे ६।२१)।

परिहत्थ—१ जलजन्तु-विशेष (प्र ३।२३)। २ दृप्त (ज्ञा १।१३।१७)। ३ परिपूर्ण—'परिहत्थशब्दो देश्य' परिपूर्णतार्थे' (राजटी पृ १२४)।

परिहत्थग—जलजंतु-विशेप—'जलचर-पहगर-परिहत्थग-मच्छ....' (दश्रु ८।३०)।

परिहत्थत्तण—दक्षता, निपुणता—'अहो, पेच्छ पेच्छ वणिय-धूयाए परिहत्थत्तणं' (कु पृ २३२)।

परिहरण—परिधान (स्था ५।१३१)।

परिहलाविअ—जल-निर्गम, मोरी, नाला (दे ६।२९)।

परिहाअ—क्षीण, दुर्वल (दे ६।२५)।

परिहार—परिभोग (भटी पृ १२२७)।

परिहारइत्तिआ—ऋतुमती स्त्री, रजस्वला नारी (दे ६।३७)।

परिहारिणी—चिरकाल से व्याई हुई भैंस (दे ६।३१)।

परिहाल—जल-निर्गम, मोरी, नाला (दे ६।२९)।

परिहेरक—१ जंघा का आभरण-विशेष—'जंघासु गंडूपयक णीपुराणि परिहेरकाणि' (अंवि पृ १६३)। २ पांव का आभरण-विशेष (औपटी पृ १०३)।

परीयल्ल—वेष्टन (ओनि ७०९)।

परीसह—नापित (व्यभा ४।३ टी प २१)।

परेअ—पिशाच (दे ६।१२)।

पविरल्लिय—विस्तृत (प्र ५।१)।

पविराय—प्रस्फुटित (जीव ३।११८)।

पविरेल्लिय—विस्तारवाला (प्रटी प ६३)।

पवीसग—वाद्य-विशेष–'तंतीवीणा-पवीसगादि ततंति भणंति' (दश्रुचू प ६१)।

पवुत्थ—१ प्रवासी (वृटी पृ ५३)। २ घर।

पव्वइसेल्ल—वालमय कंडक (कंदुक ?), शृंगार के लिए वालों में लगाया जाने वाला एक उपकरण (दे ६।३१)–'पड्डुजुवईण णिमित्तं पव्वइसेल्लाइ गुम्फेइ' (वृ)।

पव्वज्ज—१ नाखून, नख। २ वाण। ३ मृग-शावक (दे ६।६६)।

पव्वडिया—भिडने की क्रिया-विशेष (निचू ३ पृ ३४८)।

पव्वाय—म्लान, अर्द्धशुष्क–'ववहारस्स य सेसो मीसो पव्वायरोट्टाई' (पिनि ४४)।

पव्वालिय—प्लावित, जल-व्याप्त (पा १३६)।

पव्विद्ध—प्रेरित (दे ६।११)।

पव्वीसग—वाद्य-विशेष (प्र ४।४)।

पव्वोणि—सम्मुख–'तण्हाइयस्स पाणं जोग्गाहारं च नेइ पव्वोणि' (व्यभा ६ टी प ५३)।

पसंडि—स्वर्ण, कनक (दे ६।१०)।

पसढ—जो विक्रेय वस्तु बहुत दिनों तक न बिकी हो (द ५।१।७२)।

पसत—१ मृग-विशेष। २ अटवी का प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३६)। ३ गवय (अवि पृ २३८)।

पसति—गवयी, नीलगाय (अंवि पृ ६६)।

पसय—१ मृग-विशेष (भ ८।१०३; दे ६।४)। २ जंगली पशु-विशेष–'आटविको द्विखुर चतुष्पदविशेषः' (अनुद्वामटी प ३५)। ३ मृग-शिशु (विपा १।४।१६)।

पसर—१ प्रातःकाल–'अहो समतिरेगं रंधिज्जासु जेण एयाणं पसरवेलाए आगयाणं होइत्ति' (ओटी प १४८)। २ वस्त्र-विशेष (अवि पृ ७१)।

पसरेह—किञ्जल्क, कमल-केसर (दे ६।१३)।

पसलचित्त—क्षुद्र जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

पसल्लिय—पार्श्ववर्ती (अवि पृ १८४)।

पसवडक्क—विलोकन, देखना (दे ६।३०)।

पसाइया—पत्तों की बनी हुई एक प्रकार की पगडी जिसे भील सिर पर पहनते है (दे ६।२)।

पसाणग—उपकरण-विशेष (अंवि पृ १६३)।

पसिंडि—सोना, स्वर्ण (पा ८०)।

पसिय—सुपारी (भ २२।२ पा; दे ६।६)।

पसिव्विका—थैली का एक प्रकार (अवि पृ १७८)।

पसुत्ति—एक प्रकार का कुष्ठरोग (निचू ३ पृ ३६२)।

पसुहत्त—वृक्ष (दे ६।२६)।

पसूअ—कुसुम, पुष्प (दे ६।६)।

पसूइ—धान्य-विशेष–'सालि पसूई व गद्भिया य छिन्ना' (आवहाटी १ पृ २६०)।

पसेवअ—ब्रह्मा (दे ६।२२)।

पसेव्वक—थैला (अवि पृ २२१)।

पस्सिणण—पसीने से गीला–'तिलगो से खमगलनाडं पस्सिणण संकंतो' (दअचू पृ २५)।

पहएल्ल—अपूप, पूआ (दे ६।१८)।

पहकर—समूह–'पहकरो त्ति देशीशब्दोऽय समूहवाची' (जंबूटी प १४५)।

पहगर—जलजतु-विशेष–'जलचर-पहगर-परिहत्थग-मच्छपरिभुज्जमाणजल-सचय' (दश्रु ८।३०)।

पहट्ठ—१ दृप्त, उन्मत्त (तंदु पृ ४५, दे ६।६)। २ अचिरतर दृष्ट।

पहण—कुल (दे ६।५)।

पहणि—सामने आए हुए का निरोध, रुकावट (दे ६।५)।

पहद—सदा दृष्ट, सदा देखा हुआ (दे ६।१०)।

पहम्म—१ देवताओ द्वारा खोदा हुआ (दे ६।११)। २ खात जल-कुण्ड। ३ विवर, छिद्र–'मणिपहम्म'–'मणिमय विवरं यद्वा मणीना प्रथमः खात इति देशी' (से ६।४३)।

पहयर—समूह, निकर (दे ६।१५)।

पहिअ—मथित, विलोडित (दे ६।६)।

पहेण—१ विवाह के समय वधू के पीहर (पितृगृह) मे किया जाने वाला भोज। २ अन्य घरो मे ले जाई जाने वाली भोजन-सामग्री। ३ जो

भोज्य पदार्थ वर के घर से वधू के घर मे ले जाया जाता है वह।' ४ अन्य घरों से वर-वधू के घर मे ले जाई जाने वाली भोजन-सामग्री (निचू ३ पृ २२३)। ५ खाद्य वस्तु का उपहार—'पहेणंति वा उक्खित्तभत्तंति वा एगट्ठा' (आचू पृ ७७)। ६ उपानत्, जूता (व्यभा १० टी प ७३)। ७ उपहार। ८ उत्सव (अंवि पृ २६८)।

पहेणग—वस्तु की भेंट, विवाह अथवा उत्सव के उपलक्ष मे किसी दूसरे घर से भेंट स्वरूप प्राप्त भोजन-विशेष (पिनि ३३५)।

पहेणय—१ खाद्य वस्तु का उपहार (ओनि १०३; दे ६।७३)। २ उत्सव (दे ६।७३)।

पहेरक—आभूषण-विशेष (प्र १०।१४)।

पहोइअ—१ पर्याप्त (दे ६।२६)। २ प्रभुत्व (वृ)।

पहोलिर—इधर-उधर फेंकने वाला (से ११।१२)।

पाअ—रथ का पहिआ, रथचक्र (दे ६।३७)।

पाइअ—मुह फाड़ना, मुह बाना (दे ६।३६)।

पाइणग—चाबुक—'तुत्तयघातैश्च विषमवाहोऽथ पीड्यते, तुत्तगो—पाइणगो' (आवहाटी २ पृ २०५)।

पाइल्लग—१ चटाई बनाने का लोहमय औजार (उशाटी प १९५)। २ छेदन करने का साधन, चाकू आदि (निचू २ पृ ५)।

पाउ—१ भोजन। २ ईक्षु (दे ६।७५)।

पाउअ—१ हिम (दे ६।३८)। २ भोजन। ३ ईक्षु (दे ६।७५ वृ)।

पाउक्क—मार्गीकृत, प्रकटित (दे ६।४१)।

पाउक्खालय—१ पाखाना, मलोत्सर्ग-स्थान—'पाउक्खालयगेहे दुग्गंधेऽणेगसो वसिओ' (भत्त ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया।

पाउग्ग—सभ्य, सभासद (दे ६।४१)।

पाउग्गिअ—१ जुआ खेलाने वाला (दे६।४२)। २ सहन करने वाला—पाउग्गिओऽपि सोढः' (वृ)।

पाउरणी—कवच, बख्तर (दे ६।४३)।

पाउल्ल—१ काष्ठ-पादुका (सूचू १ पृ ११८)। २ मूज से निर्मित पादुका (सूटी १ प ११८)।

पाउल्लग—१ काष्ठपादुका—'पाउल्लगाइं ति कट्ठपाउगाओ' (सूचू १ पृ ११८)। २ मूज की बनी पादुका (सूटी १ प ११८)।

पाए—प्रभृति, वहां से प्रारम्भ कर—'जत्तो पाए खेत्त, गया उ पडिलेहगा ततो पाए' (बृभा १५३८)।

पांडविअ—पानी से आर्द्र (दे ६।२०)।

पागडा—पैर का आभूषण—'चरणमालिका—संस्थानविशेषकृतं पादाभरणं लोके पागडा इति प्रसिद्धं' (जंबूटी प १०६)।

पाघट्टिका—पैर का आभूषण-विशेष, पायजेब (अंवि पृ ७१)।

पाट्टालिका—पाढल का फूल (अंवि पृ ७०)।

पाडच्चर—आसक्त चित्तवाला (दे ६।३४)।

पाडल—१ हंस। २ वृषभ। ३ कमल (दे ६।७६)।

पाडलसउण—हस (दे ६।४६)।

पाडलसउणय—हस (दे ६।४६ वृ)।

पाडवण—पाद-पतन, प्रणिपात (दे ६।१८)।

पाडिअग्ग—विश्राम (दे ६।४४)—'रे हलिय ! पाडिअग्गं कुण इण्हिं' (वृ)।

पाडिअज्झ—पिता के घर से वधू को पति के घर ले जाने वाला (दे ६।४३)।

पाडिया—उत्तरीय वस्त्र (भ १५।५१)।

पाडिसार—पटुता, निपुणता (दे ६।१६)।

पाडिसिद्धि—१ स्पर्धा। २ सदृश। ३ समुदाचार (दे ६।७७)।

पाडिसिरा—खलीनयुक्त (दे ६।४२)।

पाडिहच्छी—मस्तक की माला (दे ६।४२ वृ)।

पाडिहत्थी—मस्तक पर स्थित माला (दे ६।४२ वृ)।

पाडुंकी—व्रणी-शिविका, घायल के लिए बैठने की शिविका (दे ६।३९)।

पाडुंगोरि—१ विगुण, गुणहीन। २ मद्य मे आसक्त। ३ मजबूत वेष्टन वाली वाड (दे ६।७८)—'यदाह—पाडुगोरी च वृतिर्दीर्घ यस्या विवेष्टनं परितः' (वृ)।

पाडुक्क—१ समालभन, शरीर पर चन्दन आदि का उपलेप। २ पटु, निपुण (दे ६।७६)।

पाडुच्चिय—सजा हुआ अश्व (दे ६।३९ वृ)।

पाडुच्ची—अश्व-मंडन, अश्व को सजाना (दे ६।३९)।

पाडुहुअ—१ साक्षी (आवहाटी १ पृ ४२)। २ प्रतिभू, जमानत करने वाला (दे ६।४२)।

पाढा—वनस्पति-विशेष (भ २३।६)।

पाण—१ भाजन-विशेष—'पाणशब्देन भाजनविशेष उच्यते' (अनु ३।३८ टी)। २ चाण्डाल—'पाणा नाम ये ग्रामस्य नगरस्य च बहिराकाशे वसन्ति तेषां गृहाणामभावात्' (व्यभा ४।३ टी प २१; दे ६।३८)। ३ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

पाणंधि—आने-जाने का मार्ग—'पाणंधीति देशीपदमेतत् वर्तिनीवाचकं' (व्यभा ४।२ टी प ८)।

पाणद्धि—रथ्या, गली (दे ६।३९)।

पाणाअअ—श्वपच, चांडाल (दे ६।३८)।

पाणामा—१ सबको प्रणाम करने की पद्धति से अनुप्राणित प्रव्रज्या का एक प्रकार। (भ ३।३४)। २ वैनयिकवादियों का एक भेद (सूचू १ पृ २०७)।

पाणाली—दोनों हाथों का प्रहार (दे ६।४०)।

पाणी—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।४)।

पाण्णयिक—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७)।

पातंक—मुद्रा-विशेष, सिक्का (नंदीटि पृ १४२)।

पातिक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

पातिज्ज—उत्सव विशेष (?) (अंवि पृ ९८)।

पादकुहडि—पैरों को हिलाना, आगे-पीछे करना, पैरों से कुचेष्टा करना—'हत्थणट्ट-पादकुहडि-सरीरमोडणाति परिहरंतो' (दअचू पृ १९६)।

पादखडुयग—पैर का आभूषण-विशेष, विछुआ (अंवि पृ ६५)।

पापढक—पैरों का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

पापहिक—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

पामद्दा—पैरों से धान्य को मसलना (दे ६।४०)।

पामाड—पमाड का पेड़ (पा ३७०)।

पामिच्च—उधार लिया हुआ—'कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं' (आ ८।२१)।

पामिच्चय—उधार लिया हुआ (आचूला १०।११)।

पामेच्छा—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ९२)।

पाय—१ रथ-चक्र, रथ का पहिया (दे ६।३७)। २ फणी, सांप।

पायंक—विशेष प्रकार का सिक्का—'पायंकाणं नाणगविसेसरूवाणं' (आवमटी प ५३०)।

पायड—आंगन (दे ६।४०)।

पायप्पहण—कुक्कुट, मुर्गा (दे ६।४५)।

पायय—घोषणा—'पायओ लंविओ—जो हत्थिं महइमहालयं तोलेइ तस्स य सयसहस्सं देमि' (आवहाटी १ पृ २८०)।

पायल—चक्षु, आख (दे ६।३८)।

पारंक—मदिरा को मापने का पात्र-विशेष (दे ६।४१)।

पारंपर—राक्षस (दे ६।४४)।

पारदोच्च—चोरो का भय (बृभा ३६०५)—'पारदोच्चं चौरभयम्' (टी पृ १०७२)।

पारद्ध—१ पूर्वकृत कर्मों का परिणाम, प्रारब्ध। २ आखेटक, शिकारी (दे ६।७७)। ३ पीड़ित (ज्ञा १।१८।६२, दे ६।७७)। ४ विनाशित—'दिणकर-करपरंपरोयारपारद्धमि अंधयारे' (ज्ञा १।१।२४)।

पारद्धि—शिकार—'मंसक्खाया पारद्धिणिग्गया' (निभा २५५३)।

पारमाणि—अत्यन्त कोप, परम क्रोध समुद्घात—'अप्पे वि पारमाणिं, अवराधे वयति खामियं तं च' (बृभा ५२०७)।

पारय—मदिरा-पात्र (दे ६।३८)।

पाराई—लोहकुसी-विशेष (प्र ३।१३)।

पारावण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

पारावत—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

पारावर—गवाक्ष, झरोखा (दे ६।४३)।

पारिग—प्रावरण-विशेष (निचू २ पृ ४००)।

पारियल्ल—पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि—'संजम-तवतुंबारयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स' (नंदी ५)।

पारियासिय—रात्रि का बासी भोजन—'पारियासियं णाम रातो पज्जुसिय' (निचू ३ पृ २८७)।

पारिहच्छी—माला (दे ६।४२)।

पारिहट्ट—चिरप्रसूता भैंस का दूध (ओटी प ४१)।

पारिहट्टी—१ द्वारपाल। २ आकर्षण। ३ चिरप्रसूता महिषी (दे ६।७२)।

पारिहिट्टि—चिरप्रसूता भैंस (ओटी प ४८)।

पारिहत्थी—१ माला (दे ६।४२)। २ शिरोमाल्य (वृ)। ३ पुष्प-विशेष (अवि पृ ७०)।

पारिहेरग—आभूषण-विशेष (जीव ३।५९३)।

पारी—१ पात्र-विशेष (जीव ३।५८७)। २ दूध दूहने का पात्र (दे ६।३७)।

पारुअग्ग—विश्राम (दे ६।४४)।

पारुअल्ल—पृथुक, चिउडा (दे ६।४४)–'तित्ति ण मण्णासे पारुअल्लअसणम्मि' (बृ)।

पारुहल्ल—मालीकृत, श्रेणीरूप में स्थापित (दे ६।४५)।

पाल—१ कलवार, शराब वेचने वाला। २ जीर्ण, फटा-टूटा (दे ६।७५)।

पालंक—पालक का शाक (बृभा २०९४)।

पालक्क—पालक का शाक–'पालक्कं महरट्ठविसए गोल्लविसए य सागो जायइ इति विशेष-चूर्णी' (बृटी पृ ६०३)।

पालप्प—१ विप्लुत, उपद्रुत। २ प्रतिसार—अपसरण, मरहमपट्टी, विनाश (दे६।७६)।

पालिआ—१ खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ। २ तलवार की धार (पा २७५)।

पालिका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

पाली—१ दिशा, दिक् (दे ६।३७)। २ पल्योपम, समय का परिमाण-विशेष (उ १८।२८)। ३ धान्य मापने का नाप।

पालीक—भोज्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १०९)।

पालीबंध—तालाब (दे ६।४५)।

पालीहम्म—वाड, वृति (दे ६।४५)।

पालु—अशान (नि ३.४०)।

पालुकिमिय—अशान मे उत्पन्न होने वाले कृमि (नि ३।४०)।

पाव—सर्प (दे ६।३८)।

पावक्खालय—मलोत्सर्ग का स्थान, पाखाना–'वयंस! पावक्खालयं पविसामो' (कु पृ ६७)।

पाववल्ली—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।२)।

पाविएक्क—आच्छादित (से ११।४८)।

पावीर—स्थान-विशेष (अंवि पृ १३६)।

पास—१ एक प्रकार का भाला—'तयाणतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा....पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' (दश्रु १०।१४)। २ आंख। ३ शोभाहीन (दे ६।७५)। ४ दांत (बृ)। ५ अन्य वस्तु का मिश्रण।

पासणिअ—साक्षी (सू १।२।५०; दे ६।४१)।

पासल्ल—१ द्वार। २ तिर्यक्, वक्र (दे ६।७६)। ३ पार्श्व, समीप (से ६।३८)।

पासल्लइय—टेढा किया हुआ (से ६।७७)।

पासाणिअ—साक्षी (दे ६।४१)।

पासाला—भल्ली, छोटा भाला (दे ६।१४)।

पासावअ—गवाक्ष, झरोखा (दे ६।४३)।

पासिय—सुपारी (भ २२।२)।

पासी—जूडा, चोटी (दे ६।३७)।

पासुलिया—पार्श्व की हड्डी (अनु ३।५२)।

पासुलीय—पार्श्व की हड्डियों वाला (तदु १४७)।

पासोअल्ल—टेढा, तिर्यक् (से ६।४७)।

पाहडितिया—गर्भवती स्त्री—'पुणो पाहडितियासंजतीवेसेण पुरतो ठितो' (दअचू पृ ५०)।

पाहुड—कलह—'पाहुडं कलहमित्यर्थः' (निचू ३ पृ ३८)।

पाहुडिया—१ सार्वजनिक स्थान जहा बलि आदि के पदार्थ बिखेरे जाते हैं (बृभा ५५४)। २ पापकारी प्रवृत्ति (बृभा १५३१)। ३ मकान की मरम्मत (बृभा १६७४)। ४ भिक्षा। ४ अर्चनिका—'प्राभृतिका भिक्षाऽपि भण्यते अर्चनिकाऽपि' (बृभा ५५८ टी)।

पाहुण—बेचने योग्य, विक्रेय (दे ६।४०)।

पाहुणय—सघ-स्थविर, कुल-स्थविर, गण-स्थविर—तीनों की संयुक्त सज्ञा (बृभा ३७२६)।

पाहुणिय—ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (निचू ३ पृ २२४ पा)।

पाहुणी—स्त्री-अतिथि (कु पृ ६६)।

पाहुय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

पाहेज्ज—पाथेय (दे ६।२४)।

पाहेण—उत्सव पर किया जाने वाला भोज-विशेष (जीभा १२३४)।

पाहेणग—जीमनवार मे बनाई जाने वाली मिठाई, मोदक आदि (पिनि २८८)।

पिअण—दुग्ध, दूध (दे ६।४८)।

पिअमा—प्रियगु-वृक्ष (दे ६।४६)।

पिअमाहवी—कोयल, कोकिला (दे ६।५१)।

पिउड—१ मास का बचा हुआ भाग हड्डी आदि—'पोग्गले पिउडं' (वृभा १७११)। २ कचरे का ढेर—'पिउडं पुण उज्झं भण्णति' (निचू १ पृ १००)।

पिउली—१ कपास। २ रूई की पूनी (दे ६।७८)।

पिंगंग—बन्दर, मर्कट (दे ६।४८)।

पिंचु—पक्व करीर, पका करील (दे ६।४६)।

पिंच्छोला—गृह-उपकरण-विशेष (अंवि पृ ७२)।

पिंछोली—मुह से हवा भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६।४७)।

पिंजरण—सजावट, शृंगार—'पाउच्ची तुरयदेह पिंजरणं' (पा ६३१)।

पिंजरुड—दो मुह वाला पक्षी, भारुंड पक्षी (दे ६।५०)।

पिंजिअ—विधुत, कंपित (दे ६।४६)।

पिंजिअय—विधुत, कंपित (दे ६।४६ वृ)।

पिंडरय—दाडिम (दे ६।४८ वृ)।

पिंडलइय—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४ वृ)।

पिंडलग—पटलक, पुष्प का भाजन (स्था ७।२२)।

पिंडिका—वर्तुलाकार नौका (अंवि पृ १६६)।

पिंडी—मञ्जरी (दे ६।४७)।

पिंडीर—दाडिम (दे ६।४८)।

पिंसुली—मुंह मे पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६।४७)।

पिक्खुर—म्लेच्छ जाति-विशेष (आवचू १ पृ १६१)।

पिगाण—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पिचक—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ २२८)।

पिचुगाल—भीगे हुए गेहूं आदि का खाद्य (आवहाटी २ पृ २४३)।

पिच्च—पानी—'कोंकणादिषु पय पिच्चं नीरमुदकमित्यादि' (प्रसाटी प २६२)।

पिच्चिय—कूटी हुई छाल—'पिच्चिउ त्ति वा, विच्चिउ त्ति वा कुट्टितो त्ति वा एगट्ठं' (निचू २ पृ ६८)।

पिच्छि—पिटारी (राज ७७२ पा)।

पिच्छिली—लज्जा (दे ६।४७)।

पिच्छी—जूड़ा, चोटी (दे ६।३७)।

पिच्छोला—बास की कोमल छाल से बनी हुई बांसुरी जिसे दांतों में बाएं हाथ से पकड़कर दाए हाथ से वीणा की भांति बजाया जाता है (सूचू १ पृ ११६)।

पिट्ट—पेट, उदर (बृभा ५६८५)।

पिट्टापिट्टी—मारपीट, झगड़ा (निचू ३ पृ ४१)।

पिट्ठ—मिट्टी का पात्र—'पिट्ठं पुढविकायभायणं' (निचू ३ पृ ४८४)।

पिट्ठंत—गुदा (नि ६।१४; दे ६।४६)।

पिट्ठखउरा—कलुषित सुरा, पंकसुरा (दे ६।५०)।

पिट्ठखउरिआ—मदिरा, दारु (पा ६३६)।

पिडच्छा—सखी, सहेली (दे ६।४६)।

पिडालुकि—लता-विशेष (अंवि पृ ७०)।

पिणाअ—बलात्कार (दे ६।४६)।

पिणाई—आज्ञा, आदेश (दे ६।४८)।

पिण्णिया—ध्यामक नाम का गंध-द्रव्य (उशाटी प १४२)।

पिण्ही—क्षामा, कृश स्त्री (दे ६।४६)।

पितुच्छा—सखी (आवचू १ पृ १७६)।

पिपिल्ली—यान-विशेष (जीवटी प १५२)।

पिप्पअ—१ मशक, मच्छर। २ उन्मत्त (दे ६।७८)। ३ पिशाच (पा ३६)।

पिप्पडा—ऊन मे होने वाली कीड़ी (दे ६।४८)।

पिप्पडिअ—जो बडबडाया हो, निरर्थक उल्लपित (दे ६।५०)।

पिप्पर—१ वृषभ, बैल। २ हंस (दे ६।७६)।

पिप्पल—छोटा चाकू (विपा १।६।२२)।

पिप्पलमालिका—गले का एक आभूषण (अंवि पृ ७१)।

पिब्ब—पानी, जल (दे ६।४६)।

पियंगाल—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

पिरली—तृणमय वाद्य-विशेष (जीव ३।५८८)।

पिरिडी—शकुनिका, चील (दे ६।४७)।

पिरिपिरिया—वाद्य-विशेष—'कोलिकपुटकावनद्धमुखो वाद्य-विशेष' (भटी प २१६)।

पिरिली—पक्षिणी-विशेष (अंवि पृ ६९)।

पिलग—पक्षी-विशेष (जंबू २।१३६)।

पिलज—जलचर पक्षि-विशेष—'जधा ढका य कका य पिलजा मग्गुका सिही' (सू १।११।२७)।

पिलण—फिसलने वाला स्थान, चिकना स्थान (दे ६।४९)।

पिलय—पक्षी-विशेष (अंवि पृ ६२)।

पिला—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

पिल्ल—शिशु, बच्चा (दे ६।४६ पा)।

पिल्लक—१ बालक—'बालको दारको व त्ति सिगको पिल्लको त्ति वा' (अंवि पृ ६७)। २ हीन अंगवाला (अंवि पृ १५३)।

पिल्लग—शिशु, बच्चा (पक ५३०)।

पिल्लणा—उभरा हुआ—'अइसिरिभरपिल्लणा-विसप्पंत-कंत-सोहंत-चारुकुहं' (दशू ८।२२)।

पिल्लिका—बालिका (अंवि पृ ६८)।

पिल्लितेल्लय—अत्यन्त भयभीत—'ताए सो पिल्लितेल्लओ' (आवचू १ पृ ३१९)।

पिल्लिय—१ ग्रस्त, पीड़ित (निचू १ पृ ८१)। २ बालक, शिशु (उशाटी प १२१)। ३ भीत (आवहाटी १ पृ १५०)।

पिल्लिरी—१ गंडुत् नाम का तृण। २ चीरी, झींगुर। ३ घर्म, पसीना (दे ६।७९)।

पिल्हु—पक्षियों के बच्चे, लघुपक्षी (दे ६।४६)।

पिल्हुय—पक्षी का शिशु—'पाडलसउणयपिल्हुय ! तुमयं मरुमण्डलम्मि मा वच्च' (दे ६।४६ वृ)।

पिविपिण—मत्स्य-जाति-विशेष (अंवि पृ ६३)।

पिवियाइय—पिलाया—'भगवतो इक्खुरसं पिवियाइया' (आवमटी प १९२)।

पिसल्ल—पिशाच (प्रटी प २५)।

पिसल्लय—पिशाच (प्रटी प १६२)।

पिसायक—धूम्रपान का साधन-विशेष (अंवि पृ २५४)।

पिसुग—क्षुद्र कीट-विशेष, चींचड़ (जीव ३।६२४)।

पिसुणिय—कथित (पा १४५)।

पिहंड—१ वाद्य-विशेष। २ विवर्ण (दे ६।७९)।

पिहय—नौका खेने का काष्ठ-विशेष (आचूला ३।१९)।

पिहुण—मोरपंख (द ४।२१)।

पिहुणमिंजिया—पिहुणभज्जा, मध्यवर्ती अवयव—'पिहुणमिंजियाइ वा भिसेइ वा मुणालियाइ वा' (राज २९)।

पिहुणहत्थ—मोरपिच्छी (नि १७।१३२)।

पिहुल—मुह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६।४७)।

पिहोअर—कृश (दे ६।५०)।

पीइ—तुरंगम, अश्व (दे ६।५१)।

पीडरइ—चोरपत्नी (दे ६।५१)।

पीडोलक—लता-विशेष (अंवि पृ ३०)।

पीढ—१ राज्य-कर्मचारी (आवचू १ पृ ४८०)। २ ईख पेरने का यंत्र (दे ६।५१)। ३ समूह, यूथ। ४ पीठ, शरीर के पीछे का भाग।

पीढमद्द—१ मुह पर मीठा बोलने वाला—'पीठमर्दा नाम मुखप्रिय-जल्पा.' (व्यभा ६ टी प ८)। २ सभामडप मे राजा के समीप बैठने वाले अधीनस्थ राजा या मित्रराजा—'पीठमर्दा—आस्थाने आसीना-सीनसेवका:, वयस्या इत्यर्थ' (ज्ञाटी प २६)। ३ समवयस्क तथा प्रीतिबहुल महाराजपुत्र जो सदा राजा के निकट बैठते हैं (आवचू १ पृ २४५)। ४ महान् राजा—'दासीदासपरिवुडो परिकिण्णो पीढमद्देहिं' (आवभा ६९; टी पृ १२१)।

पीढमुद्द—मुह पर प्रिय बोलने वाला—'पीढमुद्दा मुहपियजंपगा' (व्यभा ६ टी प ८)।

पीण—चतुष्कोण (दे ६।५१)।

पीणक—प्याले के आकार का पात्र (अंवि पृ ६५)।

पीणाइय—गर्व से किया हुआ—'पीणाइय-विरस-रडिय-सद्देणं फोडयतेव अबरतलं' (ज्ञा १।१।१५९)।

पीनाया—गर्व, हठ (ज्ञाटी प ७३)।

पीरव्वायणी—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ १८७)।

पीरिपीरिया—वाद्य-विशेष (आचूला ११।४)।

पीलु—दूध—'दुद्ध पओ पीलु खीर च' (पिनि १३१)।

पीलुट्ठ—जला हुआ, दग्ध (दे ६।५१)।

पीहग—दूध आदि (आवचू १ पृ ३९१)।

पीहय—नवजात शिशु को पिलाई जाने वाली वस्तु (बृटी पृ ५६)।

पुअंड—तरुण—'पुअडमंडलइं ति' (कु पृ १६९; दे ६।५३)।

पुआइ—१ तरुण। २ उन्मत्त। ३ पिशाच (दे ६।८०)।

पुआइणी—१ भूताविष्ट महिला, पिशाचगृहीता (दे ६।५४)। २ उन्मत्त स्त्री। ३ दुःशीला, कुलटा (वृ)।

पुंजाय—ढेर किया हुआ,—'पुजाय पिंडलइयं' (पा ६२२)।

पुंडइअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पुंडे—जाओ (दे ६।५२)।

पुंढ—गर्त्त, गढा (दे ६।५२)।

पुंपुअ—संगम (दे ६।५२)।

पुंफली—वल्ली-विशेष (भटी पृ १४८३)।

पुंसुलिया—पार्श्व की हड्डी—'तह छ पुसुलिए होइ कडाहे' (प्रसाटी प ४०३)।

पुक्कली—देश-विशेष की दासी (भ ९।१४४ पा)।

पुक्का—जोर से आवाज करना, पुकारना (पा ६२१)।

पुक्कार—आवाज (जीभा १७२२)।

पुक्खरविग—वनस्पति-विशेष (आचू पृ ३४१)।

पुक्खलग—जल मे होने वाली वनस्पति-विशेष (आचू पृ ३४१)।

पुक्खलच्छिभग—जलीय-वनस्पति-विशेष (सू २।३।४३)।

पुगारिया—वस्त्र को काटने वाले जतु-विशेष—'मा से पुगारियाइं खज्जेज्ज' (सूचू १ पृ ११६)।

पुच्चड—अत्यन्त सघन (प्र १।२३)।

पुच्छलक—कंठ का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

पुच्छिय—धान्य-भाजन-विशेष (आवहाटी १ पृ २९०)।

पुट्ट—उदर, पेट (प्रसा ८८०)।

पुट्टलिका—पोटली, छोटी गठरी (आवचू २ पृ० १८४)।

पुट्ठ—पोंछा हुआ (बृभा १७३४)।

पुडइअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पुडइणी—नलिनी, कमलिनी (दे ६।५५)।

पुडग—तन्तु—'लूतापुडगंपि—लूतातन्तुमपि' (आवहाटी १ पृ १९२)।

पुडपुडि—मुंह से सीटी बजाना (प्रसा ४३६)।

पुडाली—फटी हुई जमीन (आचू पृ ३३७)।

पुंडिग—१ मुख । २ बिन्दु (दे ६।८०) ।

पुडिया—गुच्छा—'पुप्फपुडियाइ जं पइ, गोरसघडओ करेइ कज्जाइं ।
मणिबंधम्मि पयलिते, साणुग्गह होंति सव्वगहा ।।' (बृटी पृ १०) ।

पुणइ—श्वपच, चांडाल (दे ६।३८) ।

पुण्णवत्त—खुशी से हृत वस्त्र (दे ६।५३) ।

पुण्णाली—असती, कुलटा (दे ६।५३) ।

पुताई—पागल स्त्री (बृभा६०५३) ।

पुताकी—उन्मत्त स्त्री—'पुताकी देशीवचनत्वाद् उद्भ्रामिका'
(बृटी पृ १५९७) ।

पुत्त—१ कटि-वस्त्र, धोती (बृटी पृ ५३) । २ वस्त्र (बृटी पृ ११२३) ।

पुत्तंजीवय—जियापोता का वृक्ष जिसके बीजो की या फूलो की माला बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए गले मे पहनाते है
(प्रज्ञाटी प ३१) ।

पुत्तल—पुतला—'दब्भमया पुत्तला उ कायव्वा' (आवहाटी २ पृ ९६) ।

पुत्तलग—पुतला (निचू १ पृ ६३) ।

पुत्तलिया—पुतलिका—'विंधेहि पुत्तलियं' (उशाटी प १४९) ।

पुत्तल्ल—पुतला (निचू १ पृ ६८) ।

पुत्तल्लग—पुतला—'मंतेऊण व विंधइ पुत्तल्लगमादि पडिणीए'
(निभा १६७) ।

पुत्तिगा—पुतली (सूचू १ पृ ११८; दे ६।९२) ।

पुत्तिया—चतुरिन्द्रिय जतु-विशेष (जीवटी प ३२) ।

पुत्ती—वस्त्र (उशाटी प ८) ।

पुत्तुय—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९) ।

पुत्थ—मृदु (दे ६।५२) ।

पुप्पुअ—पीन, पुष्ट (दे ६।५२) ।

पुप्फय—पीछे (आवहाटी २ पृ १०२) ।

पुप्फल—गंध द्रव्य-विशेष (भत्त ४२) ।

पुप्फसि—फेफड़ा (आवचू १ पृ० ३०) ।

पुप्फा—फूफी, पिता की बहिन (दे ६।५२) ।

पुप्फिआ—बुआ, फूफी (पा ८७१) ।

पुप्फितिका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१) ।

पुयलइ—कंद-विशेष (भ २३।१)।

पुयली—पुत-प्रदेश (भ १५।१२०)।

पुरओट्टी—रुई का वस्त्र-विशेष—'रुतपूरितः पटः पुरओट्टी यदुच्यते' (जीविप पृ ५१)।

पुराण—सिक्का, कार्षापण (अंवि पृ ६६)।

पुरिम—प्रस्फोटन-प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (ओनि २६५)।

पुरिल्ल—१ प्रवर, श्रेष्ठ (दे ६।५३)। २ पूर्ववर्ती (विभा १३२९)। ३ अग्रगामी (से १३।२)।

पुरिल्लदेव—असुर, दानव (दे ६।५५)।

पुरिल्लपहाणा—साप की दाढ (दे ६।५६)।

पुरुपुरिआ—उत्कठा (दे ६।५५)।

पुरुस—कुम्भकार-'पुरुषः कुम्भकार' (व्यभा १० टी प ६६)।

पुरुहूअ—घूक, उल्लू (दे ६।५५)।

पुरोहड—१ घर का पिछला भाग (वृभा २०५९)। २ अग्रद्वार (ओनि ६२२)। ३ विषम। ४ चारदीवारी से घिरा हुआ मकान (दे ६।१५)। ५ पच्छोकड-पिछले भाग मे उभरा हुआ (?) (वृ) ६ गृह का कूडा-करकट डालने का स्थान (आचू पृ ३७०)। ७ वाडा, वाटक (वृटी २)।

पुल—फोडा-फुसी (स्था १०।१५९)।

पुलइय—दृष्ट, देखा हुआ (पा १३५)।

पुलंपुल—१ प्रभूत- वरफेणपउरधवलपूलंपुल-समुट्ठियट्टहासं' (प्र ३।७३)। २ अनवरत-'पुलपुलप्पभूयरोगवेयण' (प्र ३।२३)।

पुलग—१ टुकडा, अंश। २ सार, वर्णातिशय (ज्ञाटी प १०)।

पुलय—गति-विशेष (भटी प ८८१)।

पुला—अपान (प्रज्ञा १।४९)।

पुलाकिमिय—द्वीन्द्रिय जंतु, अपान प्रदेश मे उत्पन्न होने वाले कृमि —'पुलाकिमिया नाम पायुप्रदेशोत्पन्ना कृमयः' (जीवटी प ३१)।

पुलासिअ—अग्नि का कण, स्फुलिंग (दे ६।५५)।

पुलोअण—विलोकन, देखना (दे ६।३०)।

पुल्ल—पोल, शुषिर (आचू पृ ३६२)।

पुल्लि—१ व्याघ्र। २ सिंह (दे ६।७९)। हुली (कन्नड)।

पुव्वड—दुर्बल (निरटी पृ ३४) ।

पुव्वाड—पीन, पुष्ट (दे ६।५२) ।

पुव्विय—हलवाई, कदोई–'एग पुव्वियावणे मोयग गहाय इदखीले ठवेहि' (आवहाटी १ पृ २७८) ।

पुव्विल्लय—पूर्वज (उशाटी प १३०) ।

पूअ—दही (दे ६।५६) ।

पूआ—भूताविष्ट महिला (दे ६।५४) ।

पूइआलुग—जलीय वनस्पति-विशेष (आटी प ३४८) ।

पूइकरंज—एक अस्थिवाला वृक्ष (प्रज्ञा १।३५) ।

पूइय—१ वनस्पति-विशेष (भ २२।२) । २ हलवाई–'एव सलाहिज्जंतो बलो गओ पूइयावण' (उसुटी प ४०) ।

पूंडरिअ—कार्य (दे ६।५७) ।

पूडलग—पूआ, खाद्य-विशेष (निचू १ पृ १५) ।

पूण—हाथी, गज (दे ६।५६) ।

पूणअ—छीके का ढक्कन–'सिक्कयतय णाम तस्सेव पिहण, मा तत्थ संपातिमा पडिस्सति, सो तु 'पूणउ' त्ति देसीभासाते वुच्चति' (निचू २ पृ ३९) ।

पूणिआ—पूणी, रूई का पहल (दे ६।७८) ।

पूणी—पूनी, रूई की पहल (दजिचू पृ १४९; दे ६।५६) ।

पूतणा—मादा पक्षि-विशेष (अंवि पृ ६९) ।

पूतरग—त्रस प्राणी-विशेष (निचू ४ पृ ५४) ।

पूतिआलुग—जलीय वनस्पति-विशेष (आचूला १।११३) ।

पूतिकरंज—पुष्प और फल वाला वृक्ष-विशेष (अवि पृ २३२) ।

पूतिल—फल-विशेष (अवि पृ २३२) ।

पूयणा—भेड–'पूयणा णाम ओरणीया' (सूचू १ पृ ९८) ।

पूयलिया—पूपिका, खाद्य-विशेष (आचूला १।११९) ।

पूयली—रोटी (उचू पृ १७५) ।

पूरण—१ खाद्य-पदार्थ, पूरणपोली (उपाटी पृ २२) । २ छाज, शूर्प (दे ६।५६) ।

पूरिमंस—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०) ।

पूरी—१ हाथी की पीठ पर बिछाया जाने वाला आस्तरण—'पूरी पल्हवी हस्त्यास्तरणम्' (जीविप पृ ५१)। २ तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ६।५६)।

पूरोट्टी—अवकर, कूड़ा-करकट (दे ६।५७)।

पूलिय—घास का पूला—'जइ अग्गिम्मि वि पवले खडपूलिय खिप्पमेव झामेइ' (म २९२)।

पूलिया—खाद्य पदार्थ-विशेष (निचू १ पृ २९)।

पूस—१ फली-विशेष (भ २२।६)। २ सातवाहन राजा। ३ शुक, तोता (दे ६।८०)।

पूसअ—तोता (पा २९१)।

पूसमाणय—मंगल-पाठक (भ ६।२०८)।

पेंड—१ टुकड़ा, खंड। २ वलय (दे ६।८१)।

पेंडअ—१ तरुण (दे ६।५३)। २ नपुंसक—'पेंडओ पण्ढ इत्यन्ये' (वृ)।

पेंडधव—खड्ग, तलवार (दे ६।५९)।

पेंडपाली—स्थान-विशेष (अंवि पृ २३३)।

पेंडवाल—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पेंडल—रस (दे ६।५८)।

पेंडलिअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पेंडार—१ गो-पाल, गायों को पालने वाला (दे ६।५८)। २ महिषी-पाल, महिषियों को पालने वाला—'पेंडारो गोपः। पेंडारो महिषीपाल इति देवराजः' (वृ)।

पेंडिका—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

पेंडी—मंजरी (अंवि पृ २३९)।

पेंडोली—क्रीडा (दे ६।५९)।

पेंढा—कलुष-मदिरा, पकसुरा (दे ६।५०)।

पेचुका—कण्ठ का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६३)।

पेच्छअ—दृष्टमात्र का अभिलाषी, जो देखे उसी को चाहने वाला (दे ६।५८)।

पेच्छग—प्रत्युत्—'किं कज्ज तुमं न रुट्ठो, पेच्छगं मम पूएसि, पाएसु य पडसि' (निचू ४ पृ ३१२)।

पेज्जल—प्रमाण (दे ६।५७)।

पेज्जाल—विपुल, विशाल–'सोहइ मइंदरुदं णियंबबिंबं इमस्स पेज्जालं' (कु पृ १८२; दे ६।७)।

पेट्टग—सेवक आदि को राजकुल से दिया जाने वाला भोजन–'रायकुलातो पेट्टगादि भत्त णिग्गच्छति' (निचू २ पृ ४५५)।

पेडइअ—धान्य आदि बेचने वाला वणिक् (दे ६।५९)।

पेडय—समूह–'तम्मि य गामे एक्कं णडपेडय' (कु पृ ४६)।

पेड्डु—महिष, भैंसा (दे ६।८० वृ)।

पेड्डा—१ भीत। २ द्वार। ३ महिषी, भैंस (दे ६।८०)।

पेढाल—१ विपुल (दे ६।७)। २ वर्तुल–'पेढालं वर्तुलमिति द्रोणः' (वृ)।

पेढी—बैठने का आसन या स्थान-विशेष (बृटी पृ ५२६)।

पेया—बृहत् वाद्य-विशेष–'पेया नाम महती काहला' (राज ७१ टी पृ १२६)।

पेयाल—१ प्रधान, मुख्य–'सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा.........' (उपा १।३१)। २ विचार–'सुहं मोच्छिइ व सुदिट्ठपेयालो' (विभा १३६१)। ३ प्रमाण (विभा १६९ टी, दे ६।५७)। ४ सार (स्थाटी प २०३)। ५ भरण-पोषण की चिन्ता–'एयस्स पेयालं गहिएल्लय' (सूचू १ पृ ११९)। ६ प्रसिद्ध (अंवि पृ ६४)। ७ परिमाण (व्यभा ४।३ टी प ३२)।

पेयालणा—परिमाण की विवक्षा–'पज्जवपेयालणापिंडो' (पिनि ६५)।

पेयालन—परिज्ञान, अभिगमन, ज्ञात–पेयालन परिज्ञानं अभिगमनमित्यर्थः.' (आवचू १ पृ ५५२)।

पेयालिय—१ विचारित–'पेयालियगुणदोसो जोग्गो जोग्गस्स भासेज्जा' (विभा १४८२)। २ परिपूर्ण (अवि पृ २४१)।

पेरण—१ ऊर्ध्व-स्थान, ऊंचा स्थान (दे ६।५९)। २ खेल तमाशा।

पेरिज्ज—सहायता, मदद (दे ६।५८)।

पेरुंड—पर्वकाण्ड, नाल–'तए णं ते सालीसल्लइयपत्तइया हरियपेरुंडा जाया' (ज्ञा १।७।१४)।

पेरुल्लि—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पेलग—शिर का आभूपण-विशेष (अवि पृ २४२)।

पेलु—पूणी, रूई की पहल–रूयपडलं पिंजिय तमेव वलितं पेलू भण्णति' (निचू २ पृ ३२६)।

पेलुकरण—पूनी कातने का उपकरण-विशेष जिसे महाराष्ट्र मे पेलु कहते हैं—'पेलुकरणादि लाटविषये रूतप्राणिका, महाराष्ट्रविषये सैव पेलुरित्युच्यते (सूचू १ पृ ५ टि)।

पेल्लग—वालक, वच्चा (उचू पृ ८८)।

पेल्लण—१ क्षेपण। २ पीडन (उसुटी प ३४)। ३ आक्रमण—'पेल्लणं अक्कमण' (निचू ४ पृ १४०)।

पेल्लय—वच्चा, शिशु (विपा १।२।६८)।

पेल्लिका—गृह-उपकरण-विशेष (अवि पृ ७२)।

पेल्लित—१ लूट लिया—'जणे गते गोट्ठील्लएहिं घरं पेल्लितं' (आवहाटी २ पृ २२१)। २ आक्रान्त—'अवि अन्नखुज्ज पादेण पेल्लितो अतरंगुलगओ वा' (निभा ६२८)।

पेल्लिय—१ शिशु (जीभा ५३६)। २ पीड़ित (जीभा १३७; दे ६।५७)। ३ क्षिप्त, पातित (व्यभा ४।२ टी प २०)।

पेस—१ कार्य, प्रयोजन (दश्रु ६ गा २८)। २ सिन्धु देश के सूक्ष्म चर्म वाले पशुओ की चमड़ी से निष्पन्न वस्त्र (आचूला ५।१५)—'पेसाणि त्ति सिन्धुविषय एव सूक्ष्मचर्माण. पशव. तच्चर्मनिष्पन्नानि' (टी प ३९३)।

पेसण—कार्य (ज्ञा १।७।२६, दे ६।५७)।

पेसणआरी—दूती, दूतकर्म करने वाली (दे ६।५६)।

पेसणकारिया—वाहरी कार्यो को निपटाने के लिए नियुक्त स्त्री—'वाह्यानि प्रेषणानि कर्माणि करोति या सा' (ज्ञाटी प १२६)।

पेसलेस—सिन्धु देश के पेश नामक पशु-चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र (आचूला ५।१५)।

पेसी—फल का चतुर्थांश (आचू पृ ३६७)।

पेहुण—१ मोर-पंख—'पेहुणं मोरपिच्छगं वा'। २ अन्य किसी भी पक्षी का मोर जैसा पंख—'अण्णं किंचि वा तारिसं पिच्छं' (दजिचू पृ १५६)। ३ मयूर-पिच्छ से निष्पन्न—'पेहुणं मोरगं' (दअचू पृ ८६)। ४ पिच्छ, पख—'पिच्छम्मि पेहुणं' (दे ६।५८)। ५ एक प्रकार की वनस्पति (वृभा ४६३८)।

पेहुणमिंजा—मध्यवर्ती अवयव—'पेहुणमिंजाति वा भिसेति वा मिणालियाति वा' (जीव ३।२८२)।

पोअ—१ धव का वृक्ष। २ छोटा सांप (दे ६।८१)।

पोअइआ—निद्राकरी लता (दे ६।६३)।

पोअंड—१ तरुण–'जुवाणो जोव्वणत्थो वा पोअंडो पुरिसो त्ति वा' (अंवि पृ ६२)। २ भयमुक्त, अभय (दे ६।६१)। ३ नपुसक (वृ)।

पोअंत—शपथ (दे ६।६२)।

पोअड—उदग्र, कर्मठ (अंवि पृ ९८)।

पोअलअ—१ आश्विन मास का एक विशेष उत्सव जिसमे पति अपनी पत्नी के हाथ से लेकर अपूप खाता है। २ अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६।८१)। ३ वालवसन्त—यदाह–'भर्त्ता भुङ्क्तेऽपूप यत्र गृहिण्याः करात् समादाय। आश्वयुजे पोअलओ स उत्सवोऽपूपभेदश्च ॥ पोअलओ वालवसन्त इत्यन्ये' (वृ)।

पोआअ—गांव का मुखिया, ग्राम-प्रधान (दे ६।६०)।

पोआल—१ शिशु (ओनि ४४७)। २ वृषभ, बैल (दे ६।६२)।

पोइअ—१ निमग्न (ओनि १३७)। २ स्पदित–'देशीवचनत्वादितस्ततः स्पन्दित।' ३ त्रासित (वृभा १४५९ टी पृ ४३४)। ४ हलवाई (दे ६।६३) ५ जुगनू (वृ)।

पोइआ—निद्राकरी लता (दे ६।६३)।

पोइत—त्रासित–'पोइता त्रासिताः इति चूर्णौ विशेषचूर्णौ च' (वृटी पृ ४३४)।

पोइयल्लय—पिरोया हुआ (ओटी प १८०)।

पोई—निद्राकरी लता (प्रज्ञाटी प ३४)

पोउआ—करीषाग्नि, कंडे की आग (दे६। ६१)।

पोंगिल्ल—१ परिपूर्ण, खचित–'दीसति जीय एए पासाया रयणपोंगिल्ला' (कु पृ १९०)। २ परिपक्व।

पोंट—घूट–'खिप्पं पाणिय पाउ लग्गो·· ····कहवि पोटे (घोट्टे) करित्ता पलातो' (व्यभा ४।१ टी प १८)।

पोंड—१ फल–'सामलीपोंडघणनिच्चिय·······' (प्र ४।७ टी प ८२)। २ फूल–'एगं सालियपोंडं वद्धो आमेलगो होइ' (उनि ३)। ३ अविकसित कमल (विभा १४२५)। ४ कपास (अनुद्वाहाटी पृ २१)। ५ यूथ का अधिपति (दे ६।६०)।

पोंडइ—फल-विशेष (भ २२।४)।

पोंडग—अविकसित कमल (आवचू १ पृ २२३)।

पोंडय—कपास–'पोंडय कप्पासो' (निचू २ पृ ३८)।

पोंडरीय—लोमपक्षी (जीवटी प ४१)।

पोक्क—पुकारने वाला, बुलाने वाला (निचू २ पृ १८)।

पोक्कड—पुकार (जीभा १३३२)।

पोक्कण—'पोक्कण' देश मे रहने वाली म्लेच्छ जाति (प्रटी प १५)।

पोक्कसालिय—जुलाहा (आचूला १।२३)।

पोक्खलत्थिभय—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

पोच्च—सुकुमार (दे ६।६०)।

पोच्चड—१ जुगुप्सित (ज्ञा १ ८।७२)। २ असार—'मयूरीअंडए····पोच्चडे जाए' (ज्ञा १।३।२२)। ३ मलिन—'पोच्चडं—मइलं' (निचू ३ पृ २७०)। ४ अत्यंत सघन—'पोच्चडं ति अतिनिविडम्' (प्रटी प १६)।

पोच्चडग—निस्सार, मलिन—'असारः मलिन वा देशीभाषायाम्' (निचू ३ पृ २८)।

पोट्ट—पेट—'पोट्टत्ति देश्यत्वाद् उदरम्' (जबूटी प १२५; दे ६।६०)

पोट्टल—१ पोटली—'अतिपरिणामो पोट्टल वंघूणं आगतो तत्थ' (जीभा ५७७)। २ राशि, समूह—'पुप्फरासी णिगरो वा पुप्फाणं पोट्टलो त्ति वा' (अंवि पृ ६४)।

पोट्टलि—पोटली (व्यभा ६ टी प २)।

पोट्टलिका—पोटली (अवि पृ २१६)।

पोट्टलिय—पोटली उठाने वाला, भारवाहक—'भारवहा पोट्टलिया वाहगा' (निचू ४ पृ ११०)।

पोट्टलिया—गठरी (आवहाटी २ पृ १३६)।

पोट्टसरणी—अतिसार रोग—'खाइत्ता रत्ति पडिमं ठिओ,····पोट्टसरणी जाया' (आवहाटी २ पृ १३९)।

पोट्टह—गठरी-वाहक (अवि पृ ६२)।

पोडइला—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

पोणअ—छीके का आच्छादन (निभा ६४५)।

पोणिअय—पूर्ण (दे ६।२८)।

पोणिआ—सूते से भरा हुआ तकुवा (दे ६।६१)।

पोतलय—बछडा, बच्चा—'तिवरिसा गोणपोतलया हट्ठसरीरा उवट्ठिया' (आवहाटी १ पृ १३२)।

पोति—निवसन, अधोवस्त्र (अनुद्वाचू पृ ४८)।

पोतित—१ स्पन्दित—'पोतितं ति देशीवचनत्वादितस्ततः स्पन्दितम्' २ त्रासित (वृटी पृ ४३४)।

पोतिय—हलवाई (निचू ३ पृ १०६)।

पोत्तअ—वृषण, अण्डकोश (दे ६।६२)।

पोत्तग—सूती वस्त्र (आचूला ५।१)।

पोत्तणय—वस्त्र-विशेष (जीभा १७६९)।

पोत्तय—रूई से निष्पन्न वस्त्र—'साणय पोत्तयं खोमिय' (आचूला ५।१७)।

पोत्तिय—१ रूई से पिष्पन्न वस्त्र (स्था ५।१९०)। २ तापसो का एक प्रकार (औप ९४)।

पोत्तिया—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (भ १५।१८६)।

पोत्ती—१ वस्त्र (भ ९।१८८)। २ काच (दे ६।६३)।

पोत्तुल्लया—वस्त्रमय पुतली (ज्ञा १।१८।८)।

पोदइल—तृण-विशेष (भ २१।१९)।

पोप्पण—हाथ का स्पर्श (आवचू १ पृ ९०)।

पोप्पय—हाथ का स्पर्श–'तेण उदरपोप्पय करेतेणं कहवि सा जोणिद्दारे हत्थेण आहता' (आवहाटी १ पृ ४४)।

पोप्फस—फेफडा, शरीर का अवयव-विशेष (प्र १।११)।

पोम—कुसुम्भ-रक्तवस्त्र–'पोमं ति कुसुभय' (निचू १ पृ १००)।

पोमर—कुसुम्भ से रंगा हुआ वस्त्र (दे ६।६३)।

पोयलि—पूआ (दअचू पृ ११४)।

पोया—वाद्य-विशेष (भ ५।६४)।

पोयाल—१ बच्चा, शिशु (ओनि ४४७)। २ वृषभ, बलिवर्द (व्यभा ४।१ टी प २०)।

पोर—पर्व (व्यभा ८ टी प ४)।

पोरग—हरित वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४।१)।

पोरच्छ—दुर्जन (दे ६।६२)।

पोरय—खेत, क्षेत्र (दे ६।२६)।

पोरायाम—अंगूठे के पर्व पर तर्जनी अंगुली के रखने पर जितनी पोलाल रहती है वह (ओनि ७०७)।

पोरु—गांठ (सूचू २ पृ ३७९)।

पोरुस—शरीर का अवयव-विशेष (अवि पृ १३४)।

पोलंडण—प्रोल्लघन (ज्ञा १।१।१८६) ।

पोलंडिअ—प्रोल्लंघित (ज्ञा १।१।१५५) ।

पोलच्चा—हल से कृष्ट भूमि, खेटित भूमी (दे ६।६३) ।

पोलिअ—सौनिक, कसाई (दे ६।६२) ।

पोलिंदि—पुलिन्द देश की लिपि (प्रज्ञा १।९८) ।

पोलिया—पूरी, पोलिका—'संपुण्णचदमण्डलसरिसं पोलियं लहेसि' (उशाटी प १४७) ।

पोल्ल—पोला, शुषिर—'पोल्लरुक्खेसु अंतो-अंतो झियायमाणेसु' (ज्ञा १।१।१५९) ।

पोल्लक—कटनिवर्तक लोहमय उपकरण-विशेष (आवहाटी १ पृ ३०४) ।

पोल्लड—शुषिर, पोला—'वका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य' (ओनि ७३५) ।

पोल्लडय—पोल (निचू २ पृ ३६६) ।

पोवलक—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२) ।

पोवलिया—पूपलिका—'पोवलियं-पोलिका' (आवहाटी १ पृ २२९) ।

पोसंत—योनि (नि ६।१४) ।

पोसय—उपस्थ (स्था ६।२४) ।

पोसिय—१ पूगफल, सुपारी (भ २२।२ पा) । २ दरिद्र, निर्धन (दे ६।६१) ।

पोह—भैंस, बैल आदि का गोबर (पिनि २४५)—'महिषी समागत्य छगणपोहं मुक्तवती' (टी प ८३) । 'पोठा' (राजस्थानी) ।

पोहट्टी—स्त्री, युवती—'अंगणा महिला नारी पोहट्टी जुवति त्ति वा' (अवि पृ ६८) ।

पोडण—लघु मत्स्य (दे ६।६२) ।

प्रेयंड—धूर्त्त (दे १।४ वृ) ।

फ

फंडण—प्रवेश—'अगणिफंडणट्ठाणेसु' (आचूला १०।१६)।

फंफसअ—एक प्रकार की लता (दे ६।८३)।

फंसण—१ युक्त। २ मलिन (दे ६।८७)।

फंसुल—मुक्त, त्यक्त (दे ६।८२)।

फंसुली—नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ६।८२)।

फग्गु—बसन्त का उत्सव, फगुआ (दे ६।८२)।

फग्गुपुग्ग—बिखरे हुए केश वाला (उपा २।२१ पा)।

फट्ट—फटा हुआ—'मइला फट्टा कुसंघाडी' (निचू २ पृ २६६)।

फड—१ साप का पूरा शरीर। २ साप का फण (दे ६।८६)।

फडही—कपास (दे ६।८२ पा)।

फड्ड—१ गणावच्छेदक के अधीन एक छोटा गण—'गच्छागच्छि गुम्मागुम्मि फड्डाफड्डि' (औप ४५ टी)। २ अवधिज्ञान का निर्गमस्थान—'फड्डा य असंखेज्जा' (विभा ७३८)। ३ पृथक्-पृथक्—'फड्डगफड्ड पवेसो' (बृभा १५६४)।

फड्डक—१ अवधिज्ञान का निर्गम स्थान। २ द्वार आदि का छोटा छिद्र—'इह फड्ड-कानि अवधिज्ञाननिर्गमद्वाराणि अथवा गवाक्षजालादिव्यवहितप्रदीप-प्रभाफड्डकानीव फड्डकानि' (आवहाटी १ पृ २६)। ३ गणावच्छेदक के अधीन एक छोटा गण (औपटी पृ ८६)। ४ विभाग, अंश (ओटी पृ २०६)।

फड्डग—१ अंश, भाग (पिनि २५३)। २ गण का अवान्तर विभाग (निभा ६३१३)। ३ वर्गणा-समुदाय।

फड्डगपतिय—गण के अवान्तर विभाग का नायक (निभा ६३१३)।

फड्डगवतिय—गण के अवान्तर विभाग का नायक—'फड्डगवतिया वि आगतु पक्खियादिसु मूलायरियस्स आलोएति' (निचू ४ पृ २८४)।

फड्डय—१ साधुओं का छोटा समुदाय (निभा २८४२)। २ विभाग, अंश (ओभा १११)।

फड्डावती—गण के अवान्तर विभाग का नायक (जीभा ७८१)।

फणक—कंघी (उसुटी प २८३)।

फणग—कंघी—'अह सा भमरसन्निभे कुच्चफणगपसाहिए। सयमेव लुचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया।।' (उ २२।३०)।

फणज्जुय—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३४)।

फणिका—१ गृहउपकरण-विशेप (अंवि पृ ७२)। २ कंघी (अंवि पृ २३०)।

फणिगा—केश संवारने का उपकरण (कंघा)—'फणिगाए वाला जमिज्जंति ओलिहिज्जति जूगाओ वा उद्धरिज्जंति' (सूचू १ पृ ११७)।

फणिज्जय—वनस्पति-विशेप, मरुआ का वृक्ष (प्रज्ञा १।४४)।

फणित—१ पका हुआ। २ राधा हुआ—'फणितं णाम पक्क रद्धं वा' (सूचू १ पृ ११७)।

फणिह—कघा (सू १।४।४२)।

फणेज्जा—वनस्पति-विशेप (भ २१।२१)।

फर—१ अस्त्र-विशेप—'दोण्णि वि फरम्मि णिउणा' (कु पृ २५२)।' २ ढाल, फलक (दे १।७६)।

फरअ—फलक, ढाल—'किं रे फरेसि फरय' (दे ६।८२)।

फरखेड्डु—शस्त्र-विशेष की विद्या—'धणुवेओ फरखेड्ड असिधेणु........' (कु पृ १५०)।

फरल—काना (प्रटी प २५)।

फरावेड्डु—शस्त्र-विशेप की विद्या 'अण्णे फरावेड्डु उवज्झाया' (कु पृ १६)।

फरुगद्दभ—१ कीटिका-नगर। २ गर्दभाकार कीट-विशेष (निचू ३ पृ ३७६)।

फरुस—१ कुम्भकार, कुम्हार (बृभा ४२५३)। २ वृक्ष-विशेप (अंवि पृ २३१)।

फरुसग—कुम्हार, कुभार—'पोग्गल मोयग फरुसग, दंते वडसालभंजणे सुत्ते' (बृभा ५०१७)।

फल—चपेटा का प्रहार—'फल चवेडाप्रहार:' (सूचू १ पृ ८२)।

फलय—शाक आदि उगाने की बाडी (व्यभा ५ टी प ७)।

फलह—शाक आदि उगाने की बाडी (व्यभा ५ टी प ७)।

फलही—१ कपास—'फलहीओ उप्पाडेइ' (उसुटी प ७९; दे ६।८२)। २ कपास की लता।

फलि—१ लिंग, चिह्न। २ वृषभ, बैल (दे ६।८६)।

फलिआरी—दूर्वा, दूब (दे ६।८३)।

फलिका—फली (अंवि पृ ७१)।

फलिय—नाना प्रकार के व्यंजन और भक्ष्यपदार्थों द्वारा बनाया हुआ खाद्य-विशेष—'फलियं पहेणगाई वंजणभक्खेहिं वा विरइयं तु' (व्यभा ६ टी प १६)।

फलिह—१ आकाश—'अगमे इ वा फलिहे इ वा अणंते इ वा' (भ २०।१६)। २ कपास का टेटा (अनुद्वामटी प ३१)। ३ पार्ष्णि, एडी (उशाटी प १६३)।

फलिही—कपास का टेटा (अनुद्वामटी प ३१)।

फसल—१ सारभूत। २ स्थासक, हस्तबिंब (दे ६।८७)। ३ चितकबरा (पा १६७)।

फसलाणिअ—विभूषित (दे ६।८३)।

फसलिअ—विभूषित, जिसने विभूषा की हो वह (दे ६.८३)।

फसुल—मुक्त (दे ६।८२)।

फालहिय—शाक आदि की वाडी का स्वामी (व्यभा ५ टी प ७)।

फालि—१ फली, छीमी (आचू पृ २००)। २ शाखा—'सिंवलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढो' (सं ८४)। ३ फांक, टुकड़ा।

फालिय—देशविशेष मे होने वाला वस्त्र (आचूला ५।१४)।

फिक्कि—हर्ष (दे ६।८३)।

फिज—टखना—'कुल्लेसु सुउप्पत्ती ऊरूहिं वधुणो अणिट्ठ तु। पासेसु वल्लहत्त वाहणलाभो फिजे भणिओ।।' (उसुटी प १३०)।

फिडित—१ इधर-उधर बिखरे हुए—'भत्तट्ठा अण्णण्णत्तो फिडिताण' (नदीचू पृ ६)। २ अतिक्रात—'पडिलेहणिया काले फिडिए कल्लाणग तु पच्छित्तं' (ओभा १७४)।

फिडिय—अपगत, च्युत (ओनि ११२)।

फिड्ड—वामन (दे ६।८४)।

फिप्प—कृत्रिम (दे ६।८३)।

फिप्फिस—फेफड़ा (प्र १।११)।

फिरडि—फुर्-फुर् कर उड़ जाना (बृटी पृ ६१०)।

फिरिडि—फुर्-फुर् कर उड जाना—'फिरिडित्ति णिग्गया सुघरा' (आवचू १ पृ ३४५)।

फिलिय—भ्रष्ट (से ८।६८)।

फिल्लसिय—फिसला हुआ—'सा तत्थ वच्चंती फिल्लसिया' (बृटी पृ ६२६)।

फिल्लुसण—फिसलन (बृचू प १४१)।

फिहय—नाव चलाने का साधन-विशेष (नि १८।१४)।

फुंटा—केश-बंध का एक प्रकार, केश-रचना (दे ६।८४)।

फुंफमा—करीषाग्नि (सूचू १ पृ ११०)।

फुंफुअ—करीषाग्नि–'दट्ठुं विओअफुफुअतत्ता तरुणी सुहाइ व णिवुड्डा' (दे ६।८४ वृ)।

फुंफुआ—करीषाग्नि (भटी पृ १२७९; दे ६।८४)।

फुंफुक—करीषाग्नि, कण्डे की आग–'फुम्फुकशब्दो देशीत्वात् कारीषः' (जीवटी प ६५)।

फुंफुग—करीषाग्नि (बृभा २२८५)।

फुंफुगा—करीषाग्नि (दनि १११)।

फुंफुम—करीषाग्नि (बृभा २०९८)।

फुंफुमा—१ कचवर-वह्नि (उसुटी प ३)। २ करीषाग्नि।

फुंफुया—१ करीषाग्नि। २ कचवर-वह्नि (तडु १५५)।

फुक्क—उभरा हुआ मोटा नाक (उशाटी प ३५८)।

फुक्का—१ मिथ्या (दे ६।८४)। २ फूंक।

फुक्किय—१ व्यर्थ–'हे मदभग्ग ! फुक्किय तूससि तं नाममेत्तेणं' (आवहाटी २ पृ ८५)। २ फूमित, फुफकारा हुआ–'फुक्किय ··· फूमितस्त्वमिति देशीभाषया आक्रोश' (आवटि प ९४)।

फुक्की—धोबिन (दे ६।८४)।

फुग्ग—शरीर का अवयव-विशेष, पुत (सूनि ७९)

फुग्गफुग्ग—विकीर्ण रोम वाला–'तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ' (उपा २।२१)।

फुट्ट—१ टूटा हुआ, फूटा हुआ–'फुट्टपत्थरं' (बृभा ५८५७)। २ कठोर—णिण्णेहक अणेहं वा फुट्टं ति फरुसं ति वा' (अवि पृ १०६)।

फुण्ण—स्पृष्ट (प्रसाटी प ३०४)।

फुप्फुयायंत—फुफकार करता हुआ–'अवहोलत-फुप्फुयायंत-सप्प-बिच्छुय' (ज्ञा १।८।७२)।

फुप्फुस—फेफड़ा (सूनि ७३)।

फुमंत—फूक देता हुआ (द ४।२१)।

फुमण—फूक (निभा १४९५)।

फुरिअ—निन्दित (दे ६।८४)।

फुल्ल—१ निर्मल–'णिम्मला–फुल्ला' (निचू ३ पृ ४२८)। २ आंख का रोग (निचू १ पृ ९)। ३ फूल, पुष्प (ओटी प ९७)। ४ पूर्णरूप से नष्ट (दअचू पृ १४३)।

फुल्लंधुअ—भ्रमर (दे ६।८५)।

फुल्लग—पुष्प की आकृतिवाला आभूषण-विशेष (जीव ३।५९३)।

फुल्लय—आखों का रोग-विशेष—'एक्कं अच्छिए फुल्लयं भवउ' (निचू १ पृ ९)। फूला (राज)।

फुल्लवड—पुष्प-विशेष, मदिरावामक पुष्प (से निष्पन्न वस्त्र ?) (निचू ३ पृ ३२१)।

फुल्लि—काई (आवहाटी २ पृ ५६)।

फुल्ली—काई (ओटी प १३१)।

फुसार—फुहार, महिन बूदो की झडी—'सुहुमफुसारेहिं पडमाणेहिं फुसियं वरिसं' (निचू ४ पृ २३०)।

फुसिया—वल्ली-विशेष (प्रटी प ३३)

फूअ—लोहकार (दे ६।८५)।

फूमित—फुक्कित, फूक दिया हुआ (अवि पृ १६८)।

फूमिय—फूंक मारा हुआ, फुक्कित—'भक्खणनिमित्त फूमिया तिला नडेण' (उसुटी प २५१)

फूसल्लि—अल्प-बिन्दु वाली वृष्टि, तुपाकार वृष्टि—'फूसल्लि यत्थ वासति ण य होंतित्थ सारधण्णाणि' (अंवि पृ २५७)।

फेक्कार—सियार की आवाज (उसुटी प १३८)।

फेट्टा—वन्दन का एक प्रकार—'फेट्टावंदणय देइ' (अनुद्वाहाटी पृ ३)।

फेणक—भोज्य-विशेष, फीनी (अंवि पृ १८२)।

फेणबंध—वरुण, जलदेवता (दे ६।८५)।

फेणवड—वरुण (दे ६।८५)।

फेफस—फुप्फुस (आवहाटी २ पृ १०७)

फेरंड—पर्वकाण्ड, नाल—'तए ते साली हरियफेरडा जाया' (ज्ञा १।७।१४)।

फेलाया—मातुलानी, मामी (दे ६।८५)।

फेल्ल—निर्धन, दरिद्र—'फेल्लमाहणेणं रत्थाए वइरहीरतो लद्धो' (पक १९७८; दे ६।८५)।

फेल्लुसण—१ पिच्छिलभूमि, वैसी भूमी जहा पांव फिसलते हैं। २ फिसलन, स्खलन (दे ६।८६)।

फेल्हसण—फिसलन (व्यभा ४।४ टी प ९)।

फेस—१ त्रास। २ सद्भाव (दे ६।८७)।

फेसय—फुप्फुस (कु पृ २२५)।

फोअ—भयोत्पादक ध्वनि, डराने की आवाज (दे ६।८६ वृ) ।

फोइअय—१ मुक्त । २ विस्तारित (दे ६।८७) ।

फोंफा—भयोत्पादक ध्वनि, डराने की आवाज (दे ६।८६)–'तरुणि दट्ठूण करइ तह फोंफ' (वृ) ।

फोक्क—उभरा हुआ मोटा नाक–'फोक्क' देशीपदं, अग्रे स्थूलोन्नता च नासाऽस्येति फोक्कनासः' (उसुटी प १७६) ।

फोड—भक्षक–'वहुफोडे त्ति वहुभक्षका.' (ओभा १९१ टी) ।

फोडिअय—१ राई से वघारा हुआ शाक आदि । २ रात्रि के समय जगल में सिंह आदि हिंसक प्राणियों से वचने का एक उपाय (दे ६।८८)।

फोडित—राई आदि से वघारा हुआ–'उवरि धूमणेण धोवितं फोडितं 'भण्णति' (निचू २ पृ ६५) ।

फोप्फल—गंध द्रव्य-विशेष, एक प्रकार की औषधि जो मृदु रेचन के लिए काम आती है–'महुरविरेअणमेसो कायव्वो फोप्फलाइदव्वेहिं' (भत्त ४२)।

फोफल—एक प्रकार की औषधि (प्रसाटी प ७५) ।

फोफस—शरीर का अवयव-विशेष (तंदु ११६) ।

फोस—१ अपानदेश, गुदा–'सउणिप्फोस-पिट्ठंतरोरुपरिणया' (तंदु ६७) । २ उद्गम (दे ६।८६) ।

ब

बइट्ठ—वैठा हुआ (आवचू २ पृ ३५) ।

बइल्ल—वैल (दश्रुनि ९१, दे ६।९१) ।

बउसी—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२) ।

बउहारी—वुहारी, झाडू (दे ६।९७ वृ) ।

बंदण—कैदी, वंदी–'जावज्जीववदणो कीरिस्सामि' (नंदीटि पृ १३९) ।

बंध—भृत्य, नौकर (दे ६।८८) ।

बंधोल्ल—मेल, संगति (दे ६।८९) ।

बंभचच—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०) ।

बंभणिआ—कीट-विशेष (दअचू पृ १८९; दे ६।९०)।

बंभणी—कीट-विशेष (दे ६।९०)।

बंभहर—कमल (दे ६।९१)।

बक—बक की आकृति का कर्णाभरण–'कुंडलं वा वको व त्ति मत्थगो तलपत्तग' (अवि पृ ६४)।

बक्कर—परिहास (दे ६।८९)।

बक्करय—बकरा (दअचू पृ १०५)।

बज्झरस—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

बतिल्ल—बैल–'तस्स य एगो बतिल्लो सो मूलधुरे जुप्पति' (आवचू १ पृ २७२)।

बद्धअ—'त्रपुपट्ट' नामक कान का आभूषण (दे ६।८९)।

बद्धणिया—काष्ठ का गड्डुलक–'दगवारवद्धणिया उल्लकायमणिवल्ललाऊ य' (निभा ४११३)।

बद्धिल्लय—बद्ध, गृहीत (अनुद्वाहाटी पृ ८८)।

बद्धीसग—वीणा-विशेष (नि १७।१३७)।

बद्धेल्लय—बधा हुआ–'ताहे धोवतीए वाला बद्धेल्लया छुट्टा' (आवहाटी १ पृ १४९)।

बप्प—१ पिता (द ७।१८; दे ६।८८)। २ योद्धा (दे ६।८८)–'बप्पो सुभटः। पितेत्यन्ये' (वृ)।

बप्पीकी—पैतृकी–'जा बप्पीकी भुहडी चम्पिज्जइ अवरेण' (प्रा ४।३९५ टी)।

बप्पीह—चातक (दे ६।९०)।

बप्फाउल—अत्यधिक उष्ण, गरम (दे ६।९२)।

बब्बक—एक प्रकार का तृण (बृटी पृ ५९१)।

बब्बग—एक प्रकार का तृण (बृभा २०४३)।

बब्बरी—१ देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)। २ केशरचना (दे ६।९०)।

बब्बीसय—वाद्ययंत्र-विशेष (कु पृ २६)।

बब्बूल—बबूल (स्थाटी प २३६)।

बब्भ—चर्ममयी रज्जू, पदयात्रा में उपकरणों को शरीर के साथ बांधने वाला चर्ममय पट्टा (जीविप पृ ५१; दे ६।८८)।

बमाल—कोलाहल (दे ६।९०)।

बयल्ल—बैल, बलीवर्द (उशाटी प १९२)।

बरग—बरट्टी, धान्य-विशेष (जंबूटी प १२४)।

बरट्ट—धान्य-विशेष (प्रसा ६६६)।

बरठ—धान्य-विशेष (प्रसाटी प २६७)।

बरड—खरदरा—'थुल्ल वा बरडं वा थेरस्स पोत्तं होहिइ' (आवहाटी १ पृ ६०)।

बरुअ—इक्षु-सदृश तृण (दे ६।९१)।

बरुड—चटाई बनाने वाला शिल्पी (प्रसाटी प २३०)।

बलजंत—व्यवसाय के लिए जाते हुए—'वालंजुयवणियाणं बलजताण वत्था पडंति' (निचू ३ पृ १६४)।

बलद्द—बैल (वृटी पृ ५३)। बलद (राज)।

बलमड्डा—बलात्कार (दे ६।९२)।

बलवट्टि—१ सखी (दे ६।९१)। २ श्रम को सहन करने वाली स्त्री (वृ)।

बलहरण—छाद का आधारभूत ऊंचा तथा लंबा काष्ठ (भ ८।२५७)।

बलामोडि—बलात्कार (वृचू प २०४; दे ६।९२)।

बलामोडिय—बलात्, जबरदस्ती से—'तेण दंडिएण बलामोडिए पडिग्गहो गहिओ' (उसुटी प ५५)।

बलामोलि—बलात्कार (से १०।६४)।

बलिअ—१ पीन, पुष्ट (भ ९।२३०; दे ६।८८)। २ गाढ, दृढ (ज्ञाटी प ६४)। ३ अत्यर्थ—'बलियतरं भीया तत्था तसिया' (ज्ञा १।९।२७)।

बलिमोडय—चक्राकार पर्व-परिवेष्टन (प्रज्ञाटी प ३७)।

बले—१ निश्चय। २ निर्धारण—इन अर्थों का सूचक अव्यय (प्रा २।१८५)।

बलेद्द—बैल (दअचू पृ २१७)।

बव्वाड—दाहिना हाथ (दे ६।८९)।

बव्वीस—वाद्य-विशेष (राज ७७)।

बहल—पंक (दे ६।८९)।

बहली—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

बहिणी—बहिन (निचू ३ पृ ४३०)।

बहिद्ध—१ बाह्य वस्तु का ग्रहण (सू १।९।१०)। २ मैथुन। ३ परिग्रह—'बहिद्धं मिथुनपरिग्रहौ गृह्येते' (सूचू १ पृ १७७)।

बहिद्धा—१ बाहर का। २ मैथुन। ३ परिग्रह, विशेष परिग्रह–स्त्री आदि (स्थाटी प १६०)।

बहिफोड—बहुभक्षक (आवहाटी १ पृ १३८)।

बहिलग—१ बैल (निभा १४८६)। २ वह सार्थ जिसमे बैल, ऊंट आदि हों (बृभा ३०६६)।

बहुआरिआ—बुहारी, झाडू (दे ८।१७ वृ)।

बहुआरी—संमार्जनी, झाडू (दे ८।१७ वृ)।

बहुकरिका—बुहारी, झाडू (बृटी पृ ४६५)।

बहुण—१ चोर। २ धूर्त्त (दे ६।६७)।

बहुमुह—दुर्जन (दे ६।६२)।

बहुराणा—तलवार की धार (दे ६।६१)।

बहुरावा—शृगाली (दे ६।६१)।

बाउल्लिआ—पुतली (दे ६।६२ वृ०)।

बाउल्ली—पचालिका, पुतली (दे ६।६२)।

बाण—१ सुभग। २ पनस का वृक्ष (दे ६।६७)।

बायालीस—बयालीस (ग ५७)।

बाल—कम्बल–'बालत्ति कम्बल' (जीविप पृ ५०)।

बालअ—वणिक् पुत्र (दे ६।६२)।

बालंजुय—वस्त्र के व्यापारी–'बालजुयवणियाणं बलजताणं वत्था पडंति' (निचू ३ पृ १६४)।

बालग्गपोइया—१ चन्द्रशाला। २ जलाशय में निर्मित लघु प्रासाद (उचू पृ १८३)।

बालपज्जेय—साधु का उपकरण-विशेष (व्यभा ४।४ टी प ५७)।

बालवीरा—प्रावारक-विशेप, प्राणिज-वस्त्र–'अजिणप्पवेणी चंम्मसाडीओ वालवीरा चेति' (अवि पृ २२१)।

बालसाडी—व्यजन–'चामर अजीणकवलो वालसाडि बालमुडिका बालव्वयणी' (अंवि पृ २३०)।

बालेय—आर्द्र (अवि पृ २६१)।

बास—बाज पक्षी (अवि पृ ६२)।

बाहाड—प्रचुर (बृभा ४६६७)।

बाहाडित—भर्त्सित, तिरस्कृत (बृभा ४१३२)।

बाहाया—वृक्षविशेप (अतटी पृ ५)।

बिआया—संलग्न भ्रमण करने वाला कीट-युग्म (दे ६।९३)।

बिंबवय—भिलावा, फलविशेष (पा ३८०)।

बिंबोवणय—१ क्षोभ। २ विकार। ३ उच्छीर्षक, तकिया (दे ६।९८)।

बिग्गाइया—संलग्न भ्रमण करने वाला कीट-युग्म—'यौ कीटौ संलग्नौ भ्रमतो बिग्गाइया ख्याती' (दे ६।९३ वृ)।

बिग्गाई—संलग्न भ्रमण करने वाला कीट-युग्म (दे ६।९३)।

बिट्टी—पुत्री, बेटी (प्रा ४।३३०)।

बिट्ठ—बैठा हुआ (ओनि ४७१)।

बिब्बोय—उपधान, तकिया—'सयणीयं तूलियं सबिब्बोयं' (ग ११४)।

बिब्बोयण—उपधानक, तकिया (भ ११।१३३)।

बिरचिरालिया—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

बिल—कूप (राजटी पृ १९१)।

बिलकोलीकारक—वे चोर जो दूसरों को व्यामूढ करने के लिए विस्वर वचन बोलते हैं (प्र ३।३)।

बीअअ—असन-वृक्ष, विजयसार वृक्ष (दे ६।९३)।

बीअजमण—खलिहान (दे ६।९३)।

बीअण—असन वृक्ष, विजयसार वृक्ष (दे ६।९३ वृ)।

बीडग—पान का बीडा (निचू २ पृ १९०)।

बीयय—गुल्म वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८)।

बीलअ—कान का एक आभरण, कुंडल—'विणा पिअं बीलएहि किं इत्थ' (दे ६।९३)।

बीहणक—भीषण (प्र ३।९)।

बीहणकर—भयंकर (प्र १।३६)।

बीहणग—भयानक (प्र १।२४)।

बीहणय—भीषण (प्र १।२)।

बुंदि—१ शरीर (सूर्य २०)। २ चुम्बन। ३ सूअर (दे ६।९८)।

बुंदिणी—कुमारी-समूह (दे ६।९४)।

बुंदी—शरीर (आवनि १४४६)।

बुंदीर—१ भैंसा। २ महान् (दे ६।९८)।

बुंबुअ—समूह (दे ६।९४)

बुंभल—चोटी, शेखरक (ज्ञा १।८।७२ पा)।

बुक्क—१ विस्मृत (व्यभा २ टी प २२)। २ छिलका। ३ वाद्य-विशेष।

बुक्कण—काक, कौआ (दे ६।९४)।

बुक्कण्णय—पासा—'बुक्कण्णएण रमंति' (निचू १ पृ १७)।

बुक्कस—अन्न-विशेष, मूग-उडद आदि की नखिका से निष्पन्न भोजन—'मुद्गमाषादिनखिकानिष्पन्नमन्नम्' (उसुटी प १२९)।

बुक्का—१ मुष्टि (दे ६।९४)। २ व्रीहिमुष्टि (वृ)। ३ वाद्य-विशेष।

बुक्कारिय—पुकारा हुआ (कु पृ ७४)।

बुक्कास—जुलाहा, तन्तुवाय (आटी प ३२७)।

बुक्कासार—भीरु, डरपोक (दे ६।९५)।

बुक्किल्ल—गृह-शूर, झूठा शूर (दे ७।८० वृ)।

बुण्ण—१ भीत, डरा हुआ। २ उद्विग्न (दे ७।९४ वृ)।

बुत्ती—ऋतुमती स्त्री, रजस्वला नारी (दे ६।९४)।

बुदिर—भैंस (दे ६।९८ पा)।

बुदीर—भैंस (दे ६।९८ पा)।

बुब्बुय—बकरे की 'बे-ब्रे' आवाज (उसुटी प ५४)।

बुलंबुला—बुद्बुद, बुलबुला (दे ६।९५)।

बूर—वनस्पति-विशेष (भ ११।१३३)।

बेक्किका—शौचक्रिया, शरीरचिन्ता (आवटि प २६)।

बेट्टिया—बेटी, राजकन्या (बृभा ४९१५)।

बेट्ठ—बैठा हुआ—'कहिं उ बेट्ठो कहेति' (आवचू १पृ ३३३)।

बेट्ठिय—स्थापित (अंवि पृ २४५)।

बेड—नौका (दे ६।९५)।

बेडा—नौका (आवदी प ३६)।

बेडिअ—नाविक—'रे बेडिअसुअ! बोक्कडबोड्डुर किं तुज्झ उग्गया बेड्डा' (दे ६।९५ वृ)।

बेडिका—जहाज, नौका (प्रश्नटी प १२५)।

बेड्डा—श्मश्रु, दाढी-मूछ (दे ६।९५)।

बेबे—बे-ब्रे-ऐसी आवाज, बकरे की आवाज (उशाटी प १३८)।

बेभेल—सन्निवेश-विशेष—'बेभेले नाम सण्णिवेसे होत्था' (भ ३।१००)।

बेभेलक—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

बेलि—खूटा (बृभा ५८२, दे ६।९५)।

वेसविखज्ज—शत्रुता (दे ७।७६ वृ) ।

वेसण—वचनीय, लोकापवाद (दे ७।७५ वृ) ।

वेहिम—दो टुकड़े करने योग्य (दहाटी प २१६) ।

वोंगिल्ल—१ विभूषित । २ आटोप, आडम्बर (दे ६।६६) ।

वोंटण—चूचुक, स्तन-वृन्त (दे ६।६६ वृ) ।

वोंड—१ पद्म (आवनि १३२) । २ कपास (सूचू १ पृ ४) । ३ चूचुक, स्तनवृन्त (दे ६।६६) ।

वोंडज—सूती वस्त्र (सूचू १ पृ ५४) ।

वोंडीवमण—कपास (निचू २ पृ ३६६) ।

वोंद—मुख (दे ६।६६ वृ) ।

वोंदि—१ शरीर (भ ८।८८; दे ६।६६) । २ आकार, रूप—'सुहुमवोंदिकलेवरे' (भ १५।१०१; दे ६।६६) । ३ मुंह (दे ६।६६) । ४ अव्यक्त अवयवों वाला शरीर (भटी पृ १२६०) ।

वोंदिया—शाखा (आचूला १।५४) ।

वोक्कड—बकरा (निचू ३ पृ ४१०; दे ६।६६) । 'बोकडु' (गुज) ।

वोक्कडी—बकरी (दे ६।६६ वृ) ।

वोक्कस—वर्णसंकर जाति—१ निषाद के द्वारा अम्बष्ठ जाति की स्त्री से उत्पन्न संतान । २ निषाद के द्वारा शूद्र स्त्री से उत्पन्न संतान—'निसाएणं अंबट्ठीए जाओ वोक्कसोत्ति वुच्चइ, निसाएण सुद्दीए जातो सोवि वोक्कसो' (आचू पृ ६) ।

वोक्कसालिय—तन्तुवाय, जुलाहा (आचूला १।२३ चू) ।

वोक्कार—ध्वनि-विशेष (आवमटी प १८८) ।

वोक्किल—गृह-शूर, झूठा शूर (दे ७।८० वृ) ।

वोगिल्ल—चितकबरा (पा १६७) ।

वोट्टी—अपवित्र, उच्छिष्ट (बृभा ३५६५) ।

वोड—१ मुण्ड, मुण्डितमस्तक—'एमेव अडड वोडो लुक्कविलुक्को जह कवोडो' (पिनि २१७) । २ बिना किनारों वाला घट—'वोडो जस्स उट्ठा णत्थि' (आवचू १ पृ १२२) । ३ धार्मिक (दे ६।६६) । ४ तरुण (वृ) ।

वोडघेर—'छुइमुई' का पौधा (पा ६००) ।

वोडमच्छक—मत्स्य की एक जाति (अवि पृ ६३) ।

बोडावित—मुण्डित–'ण्हावियं वाहिरावित्ता सा चंदणा बोडाविता····
(आवमटी प २६५)।

बोडाविय—मुण्डित (आवहाटी १ पृ १४६)।

बोडिगिणी—ब्राह्मणी (आवहाटी २ पृ १००)।

बोडिगी—ब्राह्मणी (आवहाटी २ पृ १००)।

बोडिय—१ जैन संप्रदाय-विशेष–'बोडियसिवभूइओ, बोडियलिंगस्स होई उप्पत्ती। कोडिन्नकोट्टवीरा, परपरा फासमुप्पन्ना॥' (निभा ५६२०)। २ मुंडितमस्तक (ओभा ८३)।

बोडियसाला—मठ (व्य ६।२७)।

बोड्डुर—श्मश्रु, दाढी-मूछ (दे ६।९५)।

बोड्डिआ—कपर्दिका, कौडी–'गुणहिं न संपइ कित्ति, पर फललिहिआ भुञ्जन्ति। केसरि न लहइ बोड्डिअ, वि गय लक्खेहिं घेप्पन्ति॥' (प्रा ४।३३५)।

बोदर—विशाल (दे ६।९६)।

बोद्द—१ मूर्ख (पक ४८३)। २ मुण्डित-मस्तक (आवचू १ पृ २८६)। ३ तरुण (आवचू २ पृ ३०, दे ७।८)।

बोद्दह—१ मूर्ख–'जइ तुमं बोद्दहो ता किं अम्हेवि बोद्दहा' (आवमटी प १३९)। २ तरुण (बृटी पृ ४६६)।

बोद्रह—तरुण (दे ७।८० वृ)।

बोब्बड—मूक, भाषा-जड़ (व्यभा १० टी प १०६)।

बोरक—बोरी, गोणी (बृटी पृ १०२२)।

बोल—१ कलह–'डमरा इ वा कलहा इ वा बोला इ वा' (भ ३।२५८, दे ६।९०)। २ कोलाहल (औप ४६)। ३ समूह (बृभा २२७३)। ४ मुख पर हाथ रखकर उच्च स्वर से किसी को पुकारना–'बोलो नाम मुखे हस्तं दत्त्वा महता शब्देन पूत्करणम्' (सूर्यटी पृ २८१)।

बोलग—१ खिंचाव। २ निमज्जन–'अप्पेगइए अगडंसि ओचूलं बोलगं पज्जेइ' (विपा १।६।२३)।

बोलेअव्व—लंघनीय (से २।१)।

बोल्ल—बातचीत–'बोल्लालाव-सकहाए अच्छिस्सामि' (निचू ४ पृ ४९)।

बोल्लित—कथित (आवहाटी २ पृ २२१)।

बोव्व—क्षेत्र, खेत–'बोडाण पुण्णबोव्वे' (दे ६।९६ वृ)।

बोहहर—स्तुति-पाठक, मागध (दे ६।६७)।
बोहारी—बुहारी, झाड़ू (दे ६।६७)।
बोहिग—म्लेच्छ विशेष (बृभा १६६८)।
बोहित्थ—नौका (प्रटी प ३६; दे ६।६६)।
बोहिय—म्लेच्छ-विशेष (बृभा १६७०)।

भ

भंगिय—तृण-विशेष—'भंगिय त्ति तृणभेदविशेषः' (भटी पृ १४७६)।
भंजुलिका—वनस्पति-विशेष (अवि पृ ७०)।
भंड—१ मण्डन, आभूषण (भ ६।१५०; दे ६।१०६)। २ क्षुर, उस्तरा। ३ मुण्डन (बृभा ५१७७)। ४ मिट्टी। ५ रूई—'राइणा भंडहत्थी काराविओ' (दहाटी प ६६)। ६ बैंगन (दे ६।१००)। ७ स्तुति पाठक। ८ मित्र। ६ दोहित्र, पुत्री का पुत्र। १० छिन्नमूर्धा, सिरकटा (दे ६।१०६)।
भंडकिकय—भांड की कुचेष्टा—'भाण्डानां विटाना कक्षावादनादिका क्रिया' (प्रसाटी प १०५)।
भंडखाइय—एक प्रकार का रसायन जो लोहे को भी गला देता है (आवचू २ पृ २४)।
भंडग—आभूषण, मंडन (ओप ५६)।
भंडण—१ वाक्कलह, गाली-गलौज (भ १२।१०३; दे ६।१०१)। २ क्रोध (सम ५२।१)।
भंडमुल्ल—मूल पूंजी—'खीणम्मि भंडमुल्ले किं करिही अन्नजम्मम्मि' (सा ११३)।
भंडमोल्ल—मूल पूंजी—'तत्थ वि य णत्थि किंचि वि जेण भवे भंडमोल्लं ति' (कु पृ १६१)।
भंडिय—१ गुप्तचर। २ चोर—'णूणं एते चारिया भंडिया, चोरा वा वेस-परिच्छण्णा' (निचू १ पृ ५३)।
भंडियालिछ—विशेष प्रकार का चूल्हा (जीव ३।११८)।
भंडिवडेंसय—मथुरा नगरी का एक उद्यान जिसमें विशिष्ट वृक्षो की बहुलता थी (ज्ञा २।८।५)।

भंडी—१ शिरीष वृक्ष (ज्ञा २।८।५; दे ६।१०६)। २ गुच्छवनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७)। ३ कुलटा (आचू पृ ३३५, दे ६।१०६)। ४ गाड़ी—'आभीरो भंडीए उवरिं ठितो घयगकुड पणामेति' (आवचू १ पृ १२४; दे ६।१०६)। ५ अटवी (आवचू २ पृ २७६; दे ६।१०६)।

भंडु—१ मुडन—'भंडुत्ति मुण्डनम्' (आवहाटी २ पृ ६१, दे ६।१००)। २ क्षुर, उस्तरा—'भडुत्ति खुरो, तेण सो मुडिज्जति' (निचू ३ पृ २५१)।

भंतिय— तृण-विशेष (भ २१।१६)।

भंभब्भूय—दु.ख मे निकलने वाली भाँ भाँ की आवाज (भ ७।११७)।

भंभल—१ अप्रिय। २ मूर्ख (दे ६।११०)।

भंभा—वाद्य-विशेप (भ ५।६४, दे ६।१००)।

भंभाभूय—दु ख मे निकलने काली भा-भा की ध्वनि (भ ७।११७ पा)।

भंभी—१ रसायन शास्त्र (व्यभा ३ टी प १३२)। २ असती, कुलटा (दे ६।६६)। ३ नीति-विशेप।

भंसला—कलह—'विसयप्पसिद्धासु भसलासु' (आवहाटी २ पृ १६६)।

भंसुल्ला—म्लेच्छ जाति का उत्सव-विशेष जहा अनेक संन्यासी एकत्रित होते हों (निचू ३ पृ ३५०)।

भंसुल—क्रीडा के समय उछलने वाले रजकण—'भसुला क्रीडोत्क्षिप्तरेण्वादि-निकरा इति' (आवटि प १०६)।

भगव—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

भग्ग—लिप्त (दे ६।६६)।

भच्चय—भानजा (वृभा ५११५)।

भज्जि—विशेष भोजन-सामग्री (वृभा ३६१८)।

भट्ट—१ आदरसूचक संबोधन (द ७।१६)। २ गारुडिक, मंत्र-तंत्र से विष उतारने वाला (उसुटी प १७४)।

भट्टि—आदरसूचक सबोधन (दअचू पृ १६६)।

भट्टिअ—विष्णु (दे ६।१००)।

भट्टे—१ पुत्र-रहित स्त्री के लिए प्रयुक्त संबोधन—'भट्टेति अब्भरहितवयणं पायो लाडेसु' (दअचू पृ १६८)। २ ननद—'भट्टेति लाडाणं पति-भगिणी भण्णइ' (दजिचू पृ २५०)।

भट्ठि—धूलरहित मार्ग (भ ७।११७)।

भत्तिजग—भतीजा (निचू ४ पृ ६७)।

भत्तिज्जय—भतीजा (भ १२।३०)।

भत्तिय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

भत्तोस—भूने हुए चने, गेहूं आदि—'भक्तं च तद् भोजनमोपं च दाह्यं भक्तोषं रूढितः परिभ्रष्टचनकगोधूमादिः' (प्रसाटी प ५१)।

भद्द—आमलक, आंवला (प्रज्ञा १६।५५; दे ६।१००)।

भद्दसिरी—श्रीखंड, चन्दन (दे ६।१०२)।

भद्दाकरि—प्रलंब, अति लंबा (दे ६।१०२)।

भममुह—आवर्त्त (दे ६।१०१)।

भमस—इक्षु-सदृश तृण (दे ६।१०१ वृ)।

भमाड—भ्रमण, घूम कर जाना—'सो परिरएणं-भमाडेण वच्चइ' (ओटी प २०)।

भमाडण—घुमाना (जीविप पृ ३४)।

भमाडय—घुमाने वाला (ओटी प ५९)।

भमास—इक्षु-सदृश तृण (प्रज्ञा १।४१।१; दे ६।१०१)।

भयवग्गाम—मोढेरक, गुजरात का एक गांव (दे ६।१०२)।

भरयाल—भारवाही पशु—'आरोविय-गोणिभरयाल' (कु पृ १९१)।

भरिउल्लट्ट—१ विकसित (पा ५५९)। २ भरकर खाली किया हुआ।

भरिय—१ हाथ से फेंका जाने वाला पाश, फंदा—'भरिएहिं ति हस्तपाशितैः' (विपा १।३।२४ टी प ५९)। २ स्मृत—'भरिअं लढिअं सुमरिअं' (पा ५६४)।

भरिली—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

भरोच्छय—ताल का फल (दे ६।१०२)।

भरोलग—एक प्रकार का धान्य (आवचू २ पृ ३१७)।

भलंत—स्खलित होता हुआ (दे ६।१०१)।

भलि—लक्ष्य, आग्रह—'कमलइ मेल्लवि अलि उलइ करि गंडाइं महन्ति। असुलह मेच्छण जाह, भलि ते ण वि दूर गणन्ति'॥ (प्रा ४।३५३)।

भल्लु—भालू, रीछ (दे ६।९९)।

भल्लुंकी—शृगाली, शिवा (अवि पृ ६९; दे ६।१०१)।

भव्व—भागिनेय, भानजा (दे ६।१००)।

भव्वग—भानजा—'भव्वगत्ति भागिनेय.' (जीविप पृ ५५)।

भसल—भ्रमर (दे ६।१०१ वृ)।

भसुंडिया—मादा सूअर (ति ९४९)।

भसुया—शृगाली, सियारिन—'फेक्कारंति भेरवं भसुयाओ' (उसुटी प १३८; दे ६।१०१)।

भसेल्ल—धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्रभाग—'सालि-भसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएण दिप्पमाणा' (उपा २।२१)।

भसेल्लग—धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्रभाग (आवचू १ पृ २४६)।

भसोल—एक नाट्य-विधि—'चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते, तं जहा—अंचिए, रिभिए, आरभडे, भसोले' (स्था ४।६३३)।

भाअ—बडी बहिन का पति (दे ६।१०२)।

भाइर—भीरु, डरपोक (दे ६।१०४ वृ)।

भाइल—१ जातिवान् अश्व। २ हल में जुतने योग्य अश्व—'कोसलरण्णा मह दिण्णाइं महंताइं भाइलतुरंगेहिं समं गयपोययाइं' (कु पृ ६५)।

भाइल्ल—किसान, हालिक (दश्रु ६।३, दे ६।१०४)।

भाइल्लग—किसान (दश्रुचू प ३८)।

भाउअ—१ ज्येष्ठ भगिनी का पति (दे ६।१०२ वृ)। २ आषाढ मास में मनाया जाता पार्वती का उत्सव (दे ६।१०३)।

भाउज्जा—भाभी, भोजाई (आचू पृ १८८; दे ६।१०३)।

भाओज्जातिया—भाभी (आवचू १ पृ ५२६)।

भाणिज्ज—भानजा, बहिन का लडका (आचू पृ ३४८)।

भाणी—जलज वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

भायल—जातिवान् अश्व (दे ६।१०४)।

भारंडुदुह—भारवाही—'खद्धोवहिणा भारंडुदुहु त्ति उड्डाह करेति' (निचू २ पृ १२२)।

भालुंकी—शृगाली—'भालुकीए करुणं खज्जंतो घोरवेयणत्तो वि' (भत्त १६०)।

भावइआ—धार्मिक गृहिणी (दे ६।१०४)।

भाविअ—गृहीत (दे ६।१०३)।

भास—कौआ—'अत्र भासशब्देन काक इत्यर्थः सम्भाव्यते'। (सूचू १ पृ १६४ टि)।

भासल—दीप्त (दे ६।१०३)।

भासिअ—दत्त, दिया हुआ (दे ६।१०४)।

भासुंडणा—विनाश, भ्रंसना—'सपडिदुवारे उवस्सए, निग्गंथीण न कप्पई वासो। दट्ठूण एक्कमेक्कं, चरित्तभासुडणा सज्जो' (बृभा २२४१)।

भासुंडि—नि सरण, निर्गमन (दे ६।१०३)।

भिउडी—मकड़ी की जाति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

भिंग—१ कृष्ण, काला (दे ६।१०४)। २ नीला। ३ स्वीकृत।

भिंगारी—१ चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष, चीरी (उ ३६।१४७; दे ६।१०५)। २ मशक, मच्छर (अवि पृ २३७)। ३ सर्प की एक जाति (अवि पृ २३८)।

भिंजा—अभ्यंग, मालिश (सू १।४।२६ पा)।

भिंड—१ मिट्टी। २ रूई (दहाटी प ६६)।

भिंडिया—ललकार, आह्वान—'मुचति अ भिंडियाओ, एक्केक्क भेडतिवाएमि' (निभा ५६१)।

भिंडियालिंग—विशेष प्रकार का चूल्हा—'अग्नेराश्रयविशेष' (जीवटी प १२३)।

भिंभिया—वाद्य-विशेष (दश्रुचू प ६०)।

भिच्छुंड—१ भिक्षा से निर्वाह करने वाला। २ बौद्ध साधु (ज्ञा १।१५।६ टी प २०२)।

भिच्छुंडग—भिक्षा से निर्वाह करने वाला (आचूला १५।१३)।

भिडिय—जिसने मुठभेड़ की हो वह—'भिडिया महइं वेल, जाव न एगो वि तीरए छलिउं' (उसुटी प ६३)।

भिणासि—पक्षि-विशेष (प्रटी प ८)।

भिणिभिणेत—भनभनाती हुई—'भिणिभिणेत-मच्छिय सडसडेत-चम्मयं' (कु पृ २२५)।

भित्त—१ आधा भाग—'अद्ध भित्तं' (निचू ३ पृ ४८१)। २ चौथा भाग—'भित्त चउभागादी' (निचू ३ पृ ४८२)। ३ द्वार। ४ गृह (दे ६।११०)।

भित्तग—१ खंड, टुकड़ा (आचूला ७।२६)। २ आधा भाग (आटी प ४०५)। ३ चौथा भाग—'भित्तगं चतुर्भागो' (निभा ४७००)।

भित्तय—१ खंड, टुकडा। २ आधा भाग—'अंबभित्तय आम्रार्द्धम्' (आटी प ४०५)। ३ चौथा भाग (निचू ३ पृ ४८२)।

भित्तर—१ द्वार (दे ६।१०५)। २ भीतर, अन्दर।

भित्ति—नदी का तट—'नईण वा तडी भित्ती' (निचू ३ पृ ३७८)।

भिब्भियमच्छ—मत्स्य की जाति-विशेष (जीवटी प ३६)।

भिब्भिसमाण—अत्यंत दीप्यमान (ज्ञा १।१।८६)।

भिमोर—हिम का मध्य भाग (?) (प्रा २।१७४)।

भिंरिड—कुए की मेढ–'जुण्णकूवभिरिंडे तणपूलित गहाय उस्सिंचति' (आवचू १ पृ २१०)।

भिरुइय—ठगा जाना, वंचित–'कयाइ वह पि न भिरुइओ होमि, ता णिहुयं होऊण पेच्छामि' (कु पृ २५१)।

भिलंग—१ धान्य-विशेष, मसूर (दश्रु ६।१८)। २ म्रक्षण (सूचू १ पृ ११६)।

भिलंगाय—म्रक्षणक, चुपडना, अभ्यंगन–'तेल्लं मुहे भिलंगाय-मुहमक्खणयं तेल्ल आणेहि' (सूचू १ पृ ११६)।

भिलिंग—१ म्रक्षण–'तेल्ल मुहे भिलिंगाय' (सू १।४।३९)। २ धान्य-विशेष, मसूर (आवचू २ पृ १२०)।

भिलिंगाय—म्रक्षणक, चुपड़ना–'भिलिंगाय त्ति देसीभासाए मक्खणमेव' (सूचू १ पृ ११६)।

भिलिंजाय—म्रक्षण, अभ्यंग (सू १।४।३९ पा)।

भिलुंग—हिंसक पक्षी–'वणसंडंसि वहवे भिलुगा नाम पावसउणा परिवसंति' (राज ७०३)।

भिलुगा—फटी हुई जमीन–'भिलुगत्ति स्फुटितकृष्णभूराजि.' (आचूला १।५३ टी प ३३७)।

भिलुया—फटी हुई जमीन, जमीन की दरार (आचूला १०।१७)।

भिलुहा—भूमी की दरार–'कण्हभूमिदली भिलुहा' (दअचू पृ १५६)।

भिल्लिरी—मछली पकडने का एक प्रकार का जाल (विपा १।८।१९)।

भिल्लुगा—भूमी की रेखा (आचूला १।५३ पा)।

भिसंत—अनर्थ (दे ६।१०५)।

भिसमाण—दीप्यमान (ज्ञा १।१।८६)।

भिसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

भिसिगा—आसन-विशेष (सू २।२।२५)।

भिसिया—वृसी, ऋषि का आसन (भ २।३१; दे ६।१०५)।

भिसोल—नृत्य-विशेष (स्थाटी प २७२)।

भीराहि—सर्प की जाति-विशेष–'भीराहि गोणसो व त्ति अजो अजगरो त्ति वा' (अंवि पृ ६३)।

भीरुय—वृक्ष-विशेष—'दधिवण्णो सत्तिवण्णो त्ति कोसंवो भीरुओ त्ति वा' (अंवि पृ ६३)।
भुअ—भूर्जपत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ६।१०६)।
भुंड—सूकर (दे ६।१०६)।
भुंडीर—सूकर (दे ६।१०६)।
भुंदण—एक प्रकार का काष्ठ (निचू २ पृ ३६४)।
भुंभर—शेखरक (ज्ञा १।८।७२)।
भुंभल—१ शेखरक, चोटी (ज्ञा १।८।७२ पा)। २ मद्यस्थान (प्राक १ टी प ६२)।
भुंभलक—मद्यपात्र (प्राक १ टी प ६२)।
भुंभलय—चोटी, शेखरक (उपाटी पृ १०३)।
भुंहुडी—भूमि (प्रा ४।३९५ टी)।
भुक्कण—१ कुत्ता, श्वा। २ मद्य आदि का मान (दे ६।११०)।
भुक्ख—१ भूखा, बुभुक्षित (निर १।३५)। २ रूक्ष—'सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा' (अनु ३।५२)।
भुक्खा—भूख (ज्ञा १।१।३४; दे ६।१०६)।
भुक्खालु—जिसे भूख अधिक लगती हो वह (निचू २ पृ ४२८)।
भुक्खित—१ भूखा (दअचू पृ १५५)। २ चूर-चूर किया हुआ—'भिन्ने भुक्खिते भेदिते' (अंवि पृ १४८)।
भुक्खुत्त—भूख से पीडित (व्यभा ६ टी प १६)।
भुज्जित—भुना हुआ (आवचू २ पृ ३१७)।
भुज्जिय—भुना हुआ (आचूला १।६)।
भुज्झग—भुने हुए गेहूं (आचू पृ ३२९)।
भुण्ण—भग्न—'भुण्णकोट्ठा (णावं)' (सूचू १ पृ ३९)।
भुत्तूण—भृत्य, नौकर (दे ६।१०६)।
भुरुंडिया—शृगाली, शिवा (दे ६।१०१)।
भरुकुंडिय—उद्धूलित, धूल से लिप्त (दे ६।१०६ वृ)।
भुरुहुंडिय—उद्धूलित, धूल से लिप्त (दे ६।१०६)।
भुल्लुंकी—शृगाली (पा २९७)।
भुस—भूसा, बुस (भ २१।१९)।
भुसुट्ट—भूसे का ढेर (निचू १ पृ ९८)।

भूअ—यंत्रवाहक पुरुष या यंत्र की देखरेख करने वाला पुरुष (दे ६।१०७)।

भूअण्ण—जोती हुई खल-भूमि मे किया जाने वाला यज्ञ (दे ६।१०७)।

भूणग—बालक—'देशीपदमेतत् बालके' (व्यभा ४।२ टी प ६६)।

भूणिया—लड़की—'सो सेज्जातरभूणियाते सह खेड्डं करेति' (निचू ३ पृ २४३)।

भूमिपिसाअ—ताड का वृक्ष (दे ६।१०७)।

भूयणा—वनस्पति-विशेष (भ २१।२१)।

भेंड—१ रूई। २ मिट्टी—'रण्णा भेंडमतो हत्थि कतो' भेंडमतो—रूतमयः मृण्मयो वा' (दअचू पृ ४७)। ३ वनस्पति-विशेष—'थुल्लसारं भेडं एरंडकट्ठं वा' (आचू पृ १५५)।

भेंडिता—ललकार, आह्वान—'मुचति य भेंडितातो एक्केक्कं भे निवादेमि' (बृभा ४६२७)।

भेज्ज—भीरु (दे ६।१०७)।

भेज्जक—मस्तिष्क (प्रटी प ११)। भेजा (राजस्थानी)।

भेज्जलअ—भीरु (दे ६।१०७)।

भेड—भीरु (दे ६।१०७)।

भेडिगा—जालिकारहित केंचुली—'भेडिगत्ति जालिकारहिता कञ्चुलिकोच्यते' (आवटि प ६२)।

भेडिय—भिडाना, लडाना—'तेणावि कड्ढिऊणालक्खं पिव सूइओ भेडिओ नियकुक्कुडो' (उसुटी प १६१)।

भेणासि—पक्षि-विशेष—'वीरल्ल-सेण-वायस-विहंगभेणासि-चास-वगुलि' (प्र १।६)।

भेणी—बहिन—'इमीए सिरिसोमाए भेणीए समप्पिऊण वच्चामि णडं दट्ठु' (कु पृ ४६)।

भेरुंड—१ चीता, चित्रक (दे ६।१०८)। २ निर्विष सर्प।

भेलअ—बेडा, नौका (दे ६।११० वृ)।

भेली—१ आज्ञा। २ नौका, बेडा। ३ चेटी, दासी (दे ६।११०)।

भेल्लिय—मिलाया—'कोसलेण रण्णा ओक्खद दाऊण भेल्लिय तं सन्निवेसं' (कु पृ ६६)।

भेल्लिया—नौका (सूचू १ पृ ११८)।

भेसुंडिया—सूअर की मादा (ति ६४६)।

भोअ—भाड़ा, किराया (दे ६।१०८)।

भोइ—१ सम्मान-सूचक-सम्बोधन–'भोइ त्ति भवति ! आमंत्रणमेतत्' (उसुटी प २१०)। २ पत्नी–'भोइत्ति भारिया' (निचू ४ पृ ६७)।

भोइक—गृहस्वामी, पति (निचू २ पृ १८२)।

भोइत—गृहस्वामी, पति (निभा १३६४)।

भोइय—१ ग्रामप्रधान, गाव का मुखिया (उ १५।९; दे ६।१०८)। २ गारुडिक, मत्र-तंत्र से विष उतारने वाला (उसुटी प १७४)। ३ पति (उसुटी प २)।

भोइया—१ भार्या, पत्नी (निचू ३ पृ ४८८)। २ वेश्या (व्यभा ७ टी प ४३)।

भोई—भार्या (पिनि ३६८)।

भोज्ज—गुरुस्थानीय व्यक्ति-विशेष–'भोज्जा गुरुत्थाणीया' (आचू पृ ३३१)।

भोतिग—पति (निचू २ पृ ३८३)।

भोतिगा—पत्नी (आचू पृ ३४८)।

भोतिया—पत्नी (निचू ३ पृ ९२)।

भोत्ती—भार्या (व्यभा ४।२ टी प ६७)।

भोत्तूण—भृत्य, नौकर (दे ६।१०६ वृ)।

भोयग—१ ग्राम का मुखिया (आवचू २ पृ १८०)। २ पति (निभा ५०८१)।

भोयगुग्गुलि—कापालिक के पात्र का ढक्कन-विशेष (निचू २ पृ ३८)।

भोयडा—लाट देश मे जिसे 'कच्छा' कहा जाता है, उसीको महाराष्ट्र मे 'भोयडा' कहते हैं। कन्याएं इसे बचपन से लेकर विवाहित होने तथा गर्भवती होने तक पहनती हैं। जब वे गर्भधारण कर लेती हैं, तब सामूहिक भोज किया जाता है। उस भोज में सगे-सबंधी एकत्रित होते हैं और वे तब उस गर्भवती कन्या को अन्य शाटक पहनने के लिए देते हैं। उसके पश्चात् वह कन्या 'भोयडा' पहनना छोड़ देती है–'भोयडा णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाण भोयडा भण्णति। तं च बालप्पभिति इत्थिया ताव बधंति जाव परिणीया, जाव य आवण्णसत्ता जाया ततो भोयणं कज्जति सयणं मेलेऊण पडओ दिज्जति, तप्पभिइ फिट्टइ भोयडा' (निचू १ पृ ५२)।

भोरुड—भारुण्ड-पक्षी (दे ६।१०८)।

भोलिय—वंचित, ठगा हुआ–'विसएहिं भोलियहं' (उसुटी प ४७)।

भोल्लय—पाथेय-विशेष, प्रवन्ध-प्रवृत्त पाथेय, यात्रा-पाथेय (दे ६।१०८)।

म

मआई—शिरोमाला (दे ६।११५) ।

मइअ—भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ६।११४) ।

मइमोहणी—सुरा, मदिरा (दे ६।११३) ।

मइय—बोए हुए खेत को सम करने के लिए उपयोग मे आने वाला कृषि का एक उपकरण—'वाहितच्छेत्तोवरि समीकरणबीयसारणत्थं समं कट्ठं मइय' (द ७।२८ अचू पृ १७२) ।

मइल—१ मलिन (भ ७।११७) । २ कलकल, कोलाहल । ३ निस्तेज (दे ६।१४२) ।

मइलवुत्ती—रजस्वला स्त्री (दे ६।१२५ पा) ।

मइलिय—दूषित—'कम्म-मल-मइलियस्स' (जीचू पृ २) ।

मइल्लय—मृत (बृभा ६३२०) ।

मइल्लिय—मलिन (भ ६।२३) ।

मइहर—ग्राम-प्रधान, गाव का मुखिया (दे ६।१२१) ।

मई—मदिरा (दे ६।११३) ।

मउ—पर्वत (दे ६।११३) ।

मउअ—दीन (दे ६।११४) ।

मउड—धम्मिल्ल, केशकलाप, जूड़ा (पा ६३) ।

मउडि—जूट, जूड़ा (दे ६।११७) ।

मउर—अपामार्ग का पौधा (दे ६।११८) ।

मउरंद—अपामार्ग का पौधा (दे ६।११८) ।

मउलि—हृदय-रस का उच्छलन, वमन के सवेदन से होने वाली उथल-पुथल (दे ६।११५) ।

मएल्लय—मृत (बृटी पृ १६६९) ।

मंख—अण्ड, वृषण (दे ६।११२) ।

मंगरिया—वाद्य-विशेष (राज ४६) ।

मंगल—१ अग्नि—'अग्गिस्स मंगलोति णामं केसुवि देसेसु भवति' (आवचू १ पृ ५) । २ डोरा बुनने का साधन । ३ वन्दनमाला (विभा २७) । ४ सदृश, समान (दे ६।११८) ।

मंगलय—सदृश–'एगेण मज्झे हत्थो छूढो, दड्ढो रोवइ, ताए भणइ-चाणक्कमंगलयं' (आवहाटी १ पृ २९०)।

मंगलसज्झ—वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो (दे ६।१२६)।

मंगुल—१ असुन्दर (स्था ४।५४३।१)। २ अशुभ, अनिष्ट–'सो हु तवो कायव्वो जेण मणो मंगुलं न चिंतेइ' (पंव २१४; दे ६।१४५)। ३ पाप (दे ६।१४५)। ४ चोर (वृ)।

मंगुली—अनिष्ट, असुन्दर (उपा ६।२०)।

मंगुस—नकुल, नेवला (सू २।३।८०; दे ६।११८)। मुगि, मुगिसि–नेवला (कन्नड़)।

मंच—बंधन (दे ६।१११)।

मंचुलक—प्राणी-विशेष (अवि पृ २३८)।

मंचुल्लिया—छोटी खाट, मंचिका (आवचू १ पृ ११२)। मंचिगे–(कन्नड़)।

मंजरिया—मत्स्य की जाति-विशेष (जीवटी प ३६)।

मंजिआ—तुलसी (दे ६।११६ वृ)।

मंजीर—साकल, जजीर (दे ६।११६)।

मंजुआ—तुलसी (दे ६।११६)।

मंट—विकलांग (आवनि ११०९)।

मंठ—१ शठ (दे ६।१११)। २ वन्धन–'मंठो वध इति केचित् पठन्ति' (वृ)।

मंड—१ स्थूल, मोटा–'मंडं ति वहलं व त्ति पुत्थव्वा मेदितं ति' (अंवि पृ ११४)। २ मिष्टान्न-विशेष–'मंडकोंडगादीणि खतिताणि। (निचू १ पृ १५)।

मंडक—माडा, एक प्रकार की रोटी (प्रसा २०७)। मंडगे–मैदा से निर्मित एक खाद्य पदार्थ (कन्नड़)।

मंडल—१ कुत्ता (दे ६।११४)। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग (निचू ३ पृ ३९२)।

मंडिल्ल—अपूप, पूआ (दे ६।११७)।

मंडिल्लका—चक्राकार खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

मंडी—१ पात्र-विशेष–'विरालो पुव्वमंडीए दुद्ध तत्थेव ण पिवति' (आवचू १ पृ १२३)। २ अन्न का अग्रभाग–'मंडीएत्ति सिद्धान्त-शैल्या किलाग्रकूरसंस्कृतभक्तशिखागतौदनलक्षण मण्डीशब्देनोच्यते'

(आवटि प ६१) । ३ पिधानिका, ढक्कन (दे ६।१११) । ४ शिरीष वृक्ष (प्रज्ञा १।३७।५) ।

मंडुक्किय—शाक-विशेष (उपा १२) ।

मंडुक्की—हरित वनस्पति, ब्राह्मी (प्रज्ञा १।४४) ।

मंतक्ख—१ लज्जा । २ दुःख (दे ६।१४१) । ३ अपराध ।

मंति—विवाह का मुहूर्त्त बताने वाला ज्योतिर्विद् (दे ६।१११) ।

मंतिक—कर्माजीवी (अंवि पृ १६०) ।

मंतुआ—लज्जा (दे ६।११६) ।

मंतुलित—दीन, पतित (अवि पृ १२१) ।

मंतेल्लि—सारिका, मैना (दे ६।११९) ।

मंथर—१ बहुत, प्रचुर । २ कुसुम्भ, कुसुम का वृक्ष । ३ कुटिल (दे ६।१४५) ।

मंथरा—कुसुम का वृक्ष (पा ७०७) ।

मंथु—१ बेर का चूर्ण (द ५।१।९८)—'बदरामहितचुण्णं मथू' (अचू पृ १२४) । २ बेर, जौ आदि का चूर्ण—'मथू नाम बोरचुन्न जवचुन्नादि' (जिचू पृ १९०) । ३ फलों का चूर्ण—'मंथु नाम फल-चूर्ण एव' (आचू पृ ३४१) । ४ मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था—'क्षीरादिकं यावन्नवनीतमस्तु' (पिटी प ६१) ।

मंदीर—१ शृंखला । २ मन्थान (दे ६।१४१) ।

मंदुक्क—जलजन्तु-विशेष (अंवि पृ २२८) ।

मंदुक्कडिबिया—जलजंतु-विशेष, मेढकी—'अडके जीवंते चेव सप्पा गस्संति, मणूसावि केइ छुहाइंता जीवंतिया चेव मंदुक्कडिबिया' (सूचू २ पृ ३७६) ।

मंदुय—जलजंतु-विशेष (प्र १।५) ।

मंदुलय—विकलाङ्ग, रोगग्रस्त—'पगुलय-मदुलय-मडहय-वामणय' (कु पृ ५५) ।

मंधातइ—मेष, मेढा—'मंधातइ णाम मेसो' (सूचू १ पृ ९८) ।

मंधादय—मेढा—'जहा मंधादए णाम थिमिय पियति दगं' (सू १।३।७१) ।

मंधाय—आढ्य, समृद्ध (दे ६।११९) ।

मंस—भुजपरिसर्प (जीवटी प ४०) ।

मंसखल—वह स्थान जहां मास सुखाया जाता है (आचूला १।४२) ।

मंसुडग—मास-खंड—'बालाई मसुडग मज्जाराई विराहेज्जा' (पिनि ५८६) ।

मकण्णी—कान का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

मकरिय—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

मकसक—सूखा क्षेत्र (अंवि पृ १६२)।

मक्कड—जाल बुनने वाला कीड़ा (दे ६।११६वृ)।

मक्कडबंध—स्वर्णसूत्र से निर्मित गले का आभरण-विशेष जो जनेऊ की भांति वाएं कंधे के ऊपर तथा दाएं कधे के नीचे पहना जाता है (दे ६।१२७)।

मक्कोड—यत्र से गुफित करने के लिए किया जाने वाला ढेर—'मक्कोडो यन्त्रगुम्फनार्थं राशिश्च' (दे ६।१४२ वृ)।

मक्कोडग—चीटा, मकोड़ा (आचू पृ २६०)।

मक्कोडय—मकोड़ा, चीटा (ओनि ५५८)।

मक्कोडा—ऊर्णापिपीलिका, मकडी (दे ६।१४२)।

मगइय—हाथ से फेका जाने वाला पाश (विपा १।३।४३)।

मगदंतिगा—मालती (दअचू पृ १२८)।

मगदंतिया—१ मालती (द ५।२।१४)। २ मोगरा। २ मल्लिका (वेला) (अचू पृ १२८; हाटी प १८५)। ४ मेहदी का गाछ।

मगरिग—आभूषण-विशेष (जीव ३।५६३)।

मगसक—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष। (अंवि पृ २३७)।

मगसिर—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

मगहगधरच्छ—आभरण-विशेष (औप ५१ टि)।

मगा—पश्चात् (दे १।४ वृ)।

मग्ग—पश्चात्, पीछे (आवचू १ पृ ५६; दे ६।१११)। मग-पीछे (मराठी)।

मग्गय—पश्चात्, पीछे (पा ६६४)।

मग्गइय—हस्तपाशित, हाथ से फेंका जाने वाला फंदा (विपाटी प ६२)।

मग्गओ—पीछे (नंदी १३)।

मग्गण्णिर—अनुगमनशील (दे ६।१२४)।

मग्गतो—पृष्ठत, पीछे से—'अण्णयरे पुरिसे मग्गतो आगम्म' (भ १।३७०)।

मग्गमग्गी—पीछे-पीछे (आवहाटी १ पृ २५६)।

मग्गरिमच्छ—एक प्रकार का मत्स्य (प्रज्ञा १।५६)।

मग्गवच्छक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३८)।

मग्गिल्ल—१ पीछे का, पश्चाद्वर्ती (पंक ४८८)। २ पहले का, पूर्ववर्ती (व्यभा ४।४ टी प ९६)।

मग्गिल्लिय—पीछे (आवचू १ पृ २१७)।

मघोण—इन्द्र (प्रा २।१७४)।

मंच्च—कचरा, मैल (दे ६।१११)।

मच्चिअ—मलयुक्त, मैला (दे ६।१११ वृ)।

मच्छंधुल—मत्स्यबन्ध-उपकरण (विपा १।८।१९)।

मज्जा—१ माता, देवी-विशेष (अनुद्वाचू पृ १३)। २ सीमा, मर्यादा (दे ६।११३)।

मज्जाया—सीमा, व्यवस्था—'मज्जाया सीमा ववत्था' (निचू १ पृ १३७)।

मज्जार—वायु-विशेष—'मार्जारो वायुविशेष.' (भटी पृ १२७०)।

मज्जिअ—१ अवलोकित। २ पीत (दे ६।१४४)।

मज्जोक्क—प्रत्यग्र, नवीन (दे ६।११८)।

मज्झअ—नापित, नाई (दे ६।११५)।

मज्झआर—मध्य (दे ६।१२१)।

मज्झंतिअ—मध्याह्न (दे ६।१२४)।

मज्झंतिक—मध्य (अवि पृ ७७)।

मज्झमिल्ल—मध्यम (जीचू पृ २३)।

मज्झयार—मध्य—'सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेवइयं।
सीहासण महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥ (आचूला १५।२८।८)।
'जो न विवट्टइ रागे नवि दोसे दोण्ह मज्झयारम्मि।
सो होइ उ मज्झत्थो सेसा सव्वे अमज्झत्था ॥' (विभा २६९१)।

मज्झरस—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

मज्झिमगंड—उदर, पेट (दे ६।१२५)।

मट्ट—शृंगविहीन (दे ६।११२)।

मट्टग—घडा (निचू २ पृ २५३)।

मट्टुहिअ—१ विवाहित स्त्री का कोप। २ कलुष। ३ अशुचि (दे ६।१४६)।

मट्ठ—अलस, आलसी (दे ६।१२२)। माठा (राजस्थानी)।

मट्ठोरु—आलसी (कु पृ १५१)।

मड—१ मृत, मरा हुआ (दश्रु ८।५४; दे ६।१४१)। २ कण्ठ (दे ६।१४१)।

मडंब—वह ग्राम-विशेष जिसके चारों ओर एक योजन तक दूसरा गाव न हो (सू २।२।७)।

मडगगिह—म्लेच्छ जाति के व्यक्तियों के घर का वह अभ्यंतर भाग जहां शव गाडा जाता है—'मडगगिह णाम मेच्छाणं घरऽभंतरे मतयं छोढु विज्जति ण डज्झति' (निचू २ पृ २२५)।

मडप्फर—१ उत्साह—'को दूरमग्गेण मडप्फरो ते' (व्यभा ४।४ टी प १६)। २ गर्व, अभिमान—'भग्गमयणमडप्फरो कुमारो' (उसुटी प २६३, दे ६।१२०)।

मडभ—१ ठिगना (वृटी पृ १६१०)। २ कुब्ज—'मडभाः कुब्जा.' (व्यभा ४।३ टी प २१)।

मडय—१ आराम, बगीचा (दे ६।११५)। २ मृतक (निचू २ पृ २२५)।

मडवोज्झा—शिविका (दे ६।१२२)।

मडह—१ लघु एव स्थूल—'लडहमडहजाणुए' (उपा २।२२)। २ ठिगना (वृभा ६०६०)। ३ लघु (दे ६।११७)। ४ स्वल्प।

मडहक—छोटा (अंवि पृ ११५)।

मडहर—गर्व (दे ६।१२०)।

मडहिया—बौनी स्त्री (अंवि पृ ६८)।

मडाइ—प्रासुकभोजी (भ २।१३)।

मडासय—श्मशान—'मसाणासण्णे आणेत्तु मडयं जत्थ मुच्चति तं मडासयं' (निचू २ पृ २२५)।

मडिआ—आहत स्त्री (दे ६।११४)।

मडुवइअ—१ हत, विध्वस्त। २ तीक्ष्ण (दे ६।१४६)।

मड्डुय—वाद्य-विशेष (राज ७७)। मड्डु-ढोल (कन्नड़)।

मड्डा—१ जबरदस्ती—'अम्हे मड्डाए पव्वाविया' (उसुटी प २६; दे ६।१४०)। २ हठ, गर्व (ज्ञाटी प ७३)। ३ आज्ञा (दे ६।१४०)।

मढणा—कटु और कठोर वचन—'मढणाहि निवारणं सउणिदिट्ठंतो' (व्यभा २ टी प २८)।

मढिअ—१ परिवेष्टित (दे २।७५)। २ खचित।

मण—१ लोकवाद्य-विशेष (कु पृ २६)। २ निषेधार्थक अव्यय।

मणगुलिया—पीठिका (जीव ३।४१२)।

मणाम—मन के लिये प्रिय, सुन्दर (स्था २।२३३)।

मणामत्त—मन के लिए प्रियता आपादित करने वाला (भ ६।२२)।

मणावण—मनाना (निभा ३४५)।

मणिणायहर—समुद्र (दे ६।१२८)।

मणिरइआ—स्त्रियों की करधनी, कटिसूत्र (दे ६।१२६)।

मणिसोमाणक—गले का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६३)।

मणोगुलिया—पीठिका (जीव ३।३२६)।

मणोज्जा—गुल्म वनस्पति-विशेष (भ २२।५)।

मण्ह—मसृण, चिकना (औपटी पृ १७)।

मतिय—कृषि का उपकरण-विशेष (प्रटी प १३)।

मतिलित—मैला (निभा ४४६१)।

मतेल्लित—मृत (आवचू १ पृ २७८)।

मत्तग—प्रस्रवण, मूत्र—'मत्तग सुवण च जयणाए' (बृभा २३३१)।

मत्तबाल—मदोन्मत्त, मत्त (दे ६।१२२)।

मत्तल्ली—बलात्कार (दे ६।११३)।

मत्तवाल—मदोन्मत्त (दे ६।१२२ पा)।

मत्तालंब—मत्तवारण, वरंडा (दे ६।१२३)।

मत्थकत—खाद्य-विशेष (अवि पृ १८२)।

मत्थग—कान का आभूषण-विशेष—'कुंडलं वा वक्रो व त्ति मत्थगो तलपत्तगं' (अंवि पृ ६४)।

मत्थयधोय—दासत्व से मुक्त किया हुआ—'धौतमस्तकाः....अपनीतदासत्वा.' (ज्ञा १।१।७५ टी प ४३)।

मत्थयपच्छालण—दासत्व से मुक्ति (व्यभा ६ टी प ३८)।

मदगंतिया—१ मालती, मोगरा। २ मल्लिका—'मदगंतिआ—मेत्तिया, अन्ने भणंति—धियइल्लो मदगंतिया भण्णइ' (दजिचू पृ १६६)।

मद्दग—गुच्छ-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४)।

मद्दल—मृदंग (दश्रु १०।२४)।

मधुरक—मुख का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)।

मधुला—पादगण्ड, (निचू २ पृ ६०)।

मधूला—पाद-गण्ड (वृभा ३८६५)।

मन्नक्ख—महान् दौर्मनस्य (वृभा ४१५६)।

मन्ने—वितर्क अर्थवाला अव्यय—'मन्ने इति वितर्कार्थो निपातः' (अतटी प ८)।

मप्पक—नाप-तोल—'ज वाणियगा परस्स चक्खुं वंचेऊण मप्पकं करेंति' (निचू १ पृ ११५)।

मब्भीसडी—अभय-वचन (प्रा ४।४२२)।

ममच्चय—मेरा (निचू २ पृ १६२)।

मम्मक्का—१ उत्कण्ठा। २ गर्व (दे ६।१४३)।

मम्मण—१ मदन, कामदेव। २ रोष (दे ६।१४१)।

मम्मणिआ—नीलमक्षिका (दे ६।१२३)।

मम्मी—मामी, मामा की पत्नी (दे ६।११२)।

मयंसल—कृमि-विशेष (अंवि पृ ७०)।

मयगल—हाथी (दे ६।१२५ वृ)।

मयड—बगीचा (दे ६।११५)।

मयणसलाया—सारिका, मैना (दे ६।११९)।

मयणसाल—सारिका, मैना (आवचू १ पृ ४७६)।

मयणसाला—सारिका, मैना (प्र १।९)।

मयणिवास—कन्दर्प, कामदेव (दे ६।१२६)।

मयधुत्त—गीदड (दे ६।१२५ वृ)।

मयरंद—कुसुम-रज, पराग (दे ६।१२३)।

मयल—मलिन (उशाटी प २१५)।

मयलबुत्ती—रजस्वला स्त्री (दे ६।१२५)।

मयलवुत्ती—रजस्वला स्त्री (दे ६।१२५ पा)।

मयल्लय—मलिन (वृटी पृ १०६)।

मयहर—१ गाव का मुखिया (उसुटी प १४३)। २ मुखिया, नायक।

मयहरिया—मुख्या साध्वी—'सच्छदा समणीओ मयहरियाए न ठायंति' (ग ११८)।

मयाई—शिरो-माला (दे ६।११५ पा)।

मयार—एक प्रकार का अपशब्द—'जत्थ जयार-मयार समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्ख' (ग ११०)।

मयाली—निद्राकरी लता (दे ६।११६)।

मर—१ मशक, मच्छर। २ उल्लू (दे ६।१४०)।

मरकल—पक्षी-विशेष (अवि पृ २३८)।

मरट्ट—गर्व (दे ६।१२०)।

मराल—१ अविनीत—'खलुका गली मरालो शठो प्रतिलोमो अविनीतः इत्येकार्थः' (उचू पृ २७०)। २ आलसी (दे ६।११२)। ३ हंस —'मरालो हस इति सातवाहनः' (वृ)।

मरालि—आलसी बैल या घोड़ा—'गंडी गली मराली अस्से गोणे य हुंति एगट्ठा' (उनि ६४)।

मराली—१ सारसी, मादा सारस। २ दूती। ३ सखी (दे ६।१४२)।

मरिचग—कुथु आदि सूक्ष्म प्राणी (दश्रुचू प ५१)।

मरुल—भूत, पिशाच आदि—'काममरुलमडिआ सा मउआ' (दे ६।११४)।

मल—स्वेद, पसीना (दे ६।१११)।

मलंपिअ—अहकारी (दे ६।१२१)।

मलक—मणि-विशेष—'गोमेदका अंका मलका सासका सिलप्पवाला' (अवि पृ २३३)।

मलय—१ आस्तरण-विशेष (ज्ञा १।१७।२२)। २ पर्वत का एक भाग। ३ उपवन (दे ६।१४४)।

मलवट्टी—तरुणी (दे ६।१२४)।

मलहर—तुमुल ध्वनि, कोलाहल (दे ६।१२०)।

मलिअ—१ लघु क्षेत्र। २ कुण्ड (दे ६।१४४)।

मल्ल—१ मैल—'जल्लमल्लकलंकसेय-रहियसरीरे' (ज्ञा २।१।१९)। २ बलि—'मल्लति बलीए णाम' (आवचू १ पृ ३३२)। ३ सिकोरा (आवहाटी १ पृ ४२)। ४ भीत का आधारभूत काष्ठ (भटी प ३७७)।

मल्लग—पात्र-विशेष, शराव (नंदी ५१)।

मल्लय—१ शराव, सिकोरा (ज्ञा १।१६।२६; दे ६।१४५)। २ पूआ, अपूप का एक भेद। ३ कुसुम्भ-रक्त। ४ चषक, प्याला (दे ६।१४५)।

मल्ला—दीवार का आधारभूत काष्ठ (भ ८।२५७)।

मल्लाणी—मामी, मातुलानी (दे ६।११२)।

मल्लुंडी—जलचर प्राणि-विशेष (अंवि पृ ६९)।

मल्हण—लीला, मनोरंजन (दे ६।११६) ।

मसार—कसौटी का पत्थर–'मसारो मसृणीकारकः स चात्र कपपट्टः संभाव्यते' (औपटी पृ १६) ।

मसिण—१ रम्य (दे ६।११८) । २ मन्द, धीमा (से १।४५) ।

मसूरक—वाद्य-विशेष जो चर्म से मढा हुआ हो–'वीणा मसूरका पखरगतं दद्दरका' (अंवि पृ २३०) ।

महंग—ऊंट (दे ६।११७) ।

महंत—आकांक्षा करते हुए–'परधणं महंता' (प्र ३।५) ।

महच्चय—मेरा (उशाटी प ५१) ।

महण—पितृ-गृह, पीहर (दे ६।११४) ।

महत्थार—१ भाण्ड, भाजन(दे ६।१२५) । २ भोजन–'महत्थार भोजनमिति सातवाहनः' (वृ) ।

महमहिय—१ प्रसृत (प्रा १।१४६) । २ सुरभित ।

महयर—गह्वरपति, निकुंज या गुफा का मालिक (दे ६।१२३) ।

महर—असमर्थ (दे ६।११३) ।

महल्ल—१ बडा (ज्ञा १।२।११) । २ वृद्ध–'डहरा य महल्ला य जुवाणा य' (अंत ६।५५; दे ६।१४३) । ३ दीर्घ–'महान्तो दीर्घतया' (प्रटी प ६१) । ४ समूह । ५ पृथुल, विस्तीर्ण । ६ मुखर । ७ समुद्र (दे ६।१४३) ।

महल्लय—बड़ा (आचूला ४।२८) ।

महल्लिय—बडा, विस्तीर्ण (आचूला १।२६) ।

महाणड—रुद्र, महादेव (दे ६।१२१) ।

महापाली—गणनातीत (उपमेय) काल, सागरोपम-प्रमाण कालमान (उ १८।२८) ।

महाबिल—आकाश (दे ६।१२१) ।

महायत्त—आढ्य, समृद्ध (दे ६।११६) ।

महाल—जार, उपपति (दे ६।११६) ।

महालक्ख—तरुण (दे ६।१२१) ।

महालवक्ख—श्राद्ध-पक्ष, भाद्रव मास मे होने वाला श्राद्ध-पक्ष (दे ६।१२७) ।

महावल्ली—नलिनी, कमलिनी (दे ६।१२२) ।

महाविडिम—वृक्ष (प्र ६।१) ।

महासउण—उल्लू (दे ६।१२७) ।

महासद्दा—शिवा, शृगाली (दे ६।१२०)।

महि—छाछ (आवचू २ पृ १०१)।

महिआ—मेघ-समूह (पा ४१६)।

महिट्ठ—मट्ठे से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित (विपा १।८।१२)।

महिय—तक्र, छाछ (बृटी पृ ५३)।

महियाडुक—घी का मल (बृटी पृ ५०५)।

महियाडुव—घी का किट्ट, घृत-मैल—'घृतघट्टः महियाडुवं' (पंवटी प ६३)।

महिलाथूभ—कूपतट—'महिलास्तूप च कूपतटमित्यर्थ' (आवमटी प ३६०)।

महिलिया—महिला, स्त्री (जीभा १६२२)।

महिसंद—शिग्रु का वृक्ष (दे ६।१२०)।

महिसक्क—महिषी-समूह (उसुटी प ७, दे ६।१२४ पा)।

महिसिंदु—१ खज्जूरी वृक्ष—'महिसिंदु-रुक्खस्स त्ति खज्जूरीवृक्षस्येत्यर्थ' (आवटि प २३)। २ शिग्रु का वृक्ष, सहिजना का पेड।

महिसिक्क—महिषीसमूह (दे ६।१२४)।

महिसेंद—शिग्रु का वृक्ष (आवचू १ पृ २७६)।

महुअ—१ स्तुति कर याचना करने वाला, मागध। २ वह पक्षी जो 'श्री', 'श्री' ऐसी आवाज करता है, श्रीवद पक्षी (दे ६।१४४)।

महुंडिम—ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (निचू ३ पृ २२४)।

महुमुह—पिशुन, चुगलखोर (दे ६।१२२)।

महुरालिअ—परिचित (दे ६।१२५)।

महुला—चिलोड़ी, फोड़ा-विशेष—'पादे गण्डं महुला भण्णति' (निचू २ पृ ६०)।

महुसित्थ—कर्दम-विशेष, स्त्री के पैरों में लगे अलक्तक तक लगने वाला कर्दम (ओनि ३३ टी)।

महेड्डु—पंक, कीचड (दे ६।११६)।

माअलिआ—मातृष्वसा, मौसी (दे ६।१३१)।

माइ—पक्ष्मल, बालों से युक्त (ज्ञाटी प २४६, दे ६।१२८)। २ मयूरित, पुष्पित।

माइं—मा, मत, नहीं (दे ६।१२८ वृ)।

माइंदा—आमलकी, आवला का गाछ (दे ६।१२६)।

माइघर—योगिनी का मंदिर—'वच्च माइघरे सुसाणे कण्हचउद्दसीए बलिं देहि' (उसुटी प ७५)।

माइय—पक्ष्मल, रूक्ष बालों से युक्त (ज्ञा १।१८।३५)। २ जिसके हाथ में पाश–फंदा हो वह–'माइय त्ति हस्तपासिकाः' (प्रटी प ४७)। ३ मयूरित, पुष्पित (औप ५)।

माइलि—मृदु (दे ६।१२९)।

माइवाह—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेप (जीवटी प ३१)।

माइवाहय—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेप (उ ३६।१२८)।

माईण—जटाधारी देवी–'उब्भडजडाकडप्पा खरफरुसा-दीहकेसणहरिल्ला। चक्कलपीणपओहर माईण व आगया एक्का॥' (कु पृ १२२)।

माईवाह—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेप (प्रज्ञा १।४९)।

माउआ—१ मूछ (ज्ञा १।६।१६)। २ सखी। ३ माता–'माउयाउ उत्तरौष्ठरोमाणि सम्भाव्यन्ते अथवा माउया—सख्यो मातरो वा' (ज्ञाटी प १६६; दे ६।१४७)। ४ दुर्गा (अंवि पृ २२३; दे६।१४७)।

माउक्क—मृदु (दे ६।१२९ वृ)।

माउग—वस्त्र का आदि भाग (वृभा ३९५२)।

माउग्गाम—१ स्त्री–'मरहट्ठविसयभासाए वा इत्थी माउग्गामो भण्णति' (निचू २ पृ ३७१)। २ स्त्रीवर्ग–'समयपरिभापया स्त्रीवर्गः' (वृटी पृ ६०४)।

माउच्छ—मृदु (दे ६।१२९)।

माडंबिय—मडंब का नायक–'सन्निवेशविशेप-नायकः' (भटी पृ ९५०)।

माडिअ—गृह (दे ६।१२८)।

माढ—शिखर (जंवूटी प ४६)।

माणं—१ निपेधसूचक अव्यय (ज्ञाटी प १६)। २ वाक्यालंकार में प्रयुक्त अव्यय–'माणमिति वाक्यालकारे' (व्यभा ४।४ टी प ४८)।

माणंसि—१ मायावी। २ चन्द्रवधू, वीरवहूटी, कीटविशेप (दे ६।१४७)। ३ मनस्वी (वृ)।

माणक—एक प्रकार का घट–'अरंजरो अलिंदो त्ति कुंडगो माणको त्ति वा" (अंवि पृ ६५)।

माणिअ—अनुभूत (दे ६।१३०)।

मात—दुर्बल, कृश–'ओभीणं परिहीणं ति मात ति' (अंवि पृ ११४)।

मातलाहणग—खाद्य-विशेप (निचू २ पृ २५१)।

माथु—खाद्य-विशेष, दही के ऊपर का द्रवपदार्थ (आवटि प २४)।

मादलिआ—माता (दे ६।१३१)।

माभाइ—अभय-दान (दे ६।१२६)।

माभीसिअ—अभय-दान (दे ६।१२६ वृ)।

मामणा—ममता, ममकार—'मामण त्ति ममीकारार्थे देशीवचनम्' (आवहाटी १ पृ ८६)।

मामा—मातुलानी, मामी (दे ६।११२)।

मामि—सखी का आमंत्रण-शब्द (दे ६।१२८ वृ)।

मामिया—मामी, मातुलानी (विपा १।३।१४)।

मामी—मामा की पत्नी, मामी—'मामी शब्दोऽपि देश्य.' (दे ६।११२ वृ)।

मायंद—आम्र (दे ६।१२८)।

मायंदी—श्वेतपटा साध्वी, श्वेत वस्त्र धारण करने वाली संन्यासिनी (दे ६।१२६)—'मायंदी उवदिसइ' (वृ)।

मायार—मदारी, बन्दर पकड़ने वाला (बृटी पृ ८६)।

मार—मणि का लक्षण-विशेष (जंबूटी प ३२)।

मारामारी—मारपीट (पिटी प १५०)।

मारिलग्गा—कुत्सिता (दे ६।१३१)।

माल—१ खाद्य पदार्थ आदि रखने के लिए ऊपर बनाया गया मंच (द ५।१।६६)। २ घर का ऊपरि भाग, दूसरी मंजिल—'मालो य घरोवरिं होति' (भटी प २७४)। ३ समूह (आवहाटी २ पृ ८६)। ४ मञ्च, आसन-विशेष (ज्ञाटी प ७२; दे ६।१४६)। ५ आराम, बगीचा। ६ सुन्दर (दे ६।१४६)। ७ गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)। ८ चिनकर बनाई हुई पाल—'सण्हकट्ठेहि य मालं करेंति, चिक्खिल्लेणं लिपइ कटयछायाए व उच्छाएइ' (आवहाटी २ पृ ८६)। ६ देश-विशेष।

मालग—घर का ऊपरी भाग, मजिल (जीभा १२७०)।

मालय—म्लेच्छ-विशेष जो मनुष्यों का अपहरण करते हैं (व्यभा ४।४ टी प १३)।

माला—ज्योत्स्ना, चांदनी (दे ६।१२८)।

मालाकुंकुम—प्रधान कुकुम, श्रेष्ठ कुकुम (दे ६।१३२)।

मालि—वृक्ष-विशेष (समप्र २३१)।

मालुका—पक्षिणी-विशेष—'उलुकी मालुका व त्ति सेणा' (अंवि पृ ६६)।

मालुग—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (उ ३६।१३७)।

मालुय—तीन इन्द्रिय वाले जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

मालूर—१ कपित्थ, कैथ (दे ६।१३०)। २ विल्व का गाछ (वृ)। ३ विल्व-फल।

मासाल—उच्च आसन-विशेष—'मासालो मचको वत्ति परलंको पडिसेज्जको', (अवि पृ ६५)।

मासिअ—पिशुन, चुगलखोर (दे ६।१२२)।

मासी—छाछ—'एगस्स पिया छासी मासी अण्णस्स वेसरी' (आचू पृ १६६)।

मासुरी—श्मश्रु, दाढी के वाल (दे ६।१३०)—'ता माहिल! तुज्झ मुहे किमुग्गया मासुरी एसा' (वृ)।

माह—कुन्द-पुष्प (दे ६।१२८)।

माहकी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

माहय—चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (उ ३६।१४८)।

माहारयण—१ वस्त्र (दे ६।१३२)। २ वस्त्रविशेष (वृ)।

माहिल—महिषीपाल, भैंसों को चराने वाला (दे ६।१३०)।

माहिवाअ—१ शिशिर-पवन (दे ६।१३१)। २ माघ का पवन।

माहुर—शाक (दे ६।१३०)।

माहुरग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २५१)।

मिचणक्कीला—चक्षु:स्थगनक्रीडा, आंखमिचौनी (दे ३।३०)।

मिंजिक—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

मिंठ—महावत (दजिचू पृ ९१)।

मिढिय—ग्राम-विशेष (आवमटी प २६७)।

मिढिया—मेषी (पा ६६६)।

मिंथ—महावत (दजिचू पृ ९१)।

मिगंड—कस्तूरी—'मिगंड-कप्पूरागरु-कुकुम-चंदण' (निचू २ पृ ४६७)।

मिणाय—वलात्कार (दे ६।११३)।

मित्तल—कदर्प, कामदेव (दे ६।१२६ वृ)।

मित्तलय—कन्दर्प, कामदेव (दे ६।१२६)।

मित्तिवअ—ज्येष्ठ, पति का वडा भाई (दे ६।१३२)।

मिय—हरिण के आकार का पशु-विशेष जो हरिण से छोटा होता है और जिसका पुच्छ लवा होता है—'मिएहिंतो लहुतरा मृगाकृतयो वृहत्पिच्छा' (अनुद्वाचू पृ १५)।

मिरा—मर्यादा (पिनि २३७)।

मिरिआ—कुटी, झोंपडी (दे ६।१३२)।

मिलाण—पर्याण (औप ६४ टी)।

मिलिंदक—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

मिलिमिलिमिलंत—चमकता हुआ (प्र ३।५)।

मिसिमिसंत—अत्यन्त चमकता हुआ (औप ६३)।

मिसिमिसिंत—अत्यन्त चमकता हुआ—'वेरुलियवरिट्ठरिट्ठअंजणनिउणोविय-
मिसिमिसिंतमणिरयणमडियाओ' (दश्रु ८।१०)।

मिसिमिसेमाण—उत्तेजित—'कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा'
(भ ३।४५)।

मिस्सिग—पूज्य—'अह उवज्झाओ से पिट्टेइ अपढते ताहे साहेति
माइमिस्सिगाणं' (आवहाटी २ पृ १४२)।

मिहिआ—मेघसमूह (दे ६।१३२)।

मिहुज्जुहिय—विवाह का मंडप, वर-वधू का परिणयन-स्थल—'वधुवरपरिआण
ति मिहुज्जूहिया' (निचू ३ पृ ३४८)।

मीअ—समकाल, उसी समय (दे ६।१३३)।

मीढ—भास पक्षी—'भासो मीढसउणओ' (वृटी पृ २४८)।

मीरा—दीर्घ चुल्ली, बड़ा चूल्हा (सूनि ७६)। २ सीमा (निचू २ पृ १६६)।

मीराकरण—द्वार को चटाई आदि से ढकना—'मीराकरणं नाम—कटैर्द्वारादे-
राच्छादनम्' (वृटी पृ ५९१)।

मीसालिअ—मिश्र, संयुक्त (दे ६।१३३ वृ)।

मुअंगी—चींटी (दे ६।१३४)।

मुआइणी—डुम्बी, चंडालिन (दे ६।१३५)।

मुइअ—योनिशुद्ध, निर्दोषमातृक—'मुंइओ जो होइ जोणिसुद्धो त्ति'
(औप १४ टी पृ २१)।

मुइअंगा—चींटी (पिनि ३५१)।

मुइंगा—चींटी (ओनि ५५८)।

मुईग—मकोडा—'मुईगत्ति देशीपदमेतत् मत्कोटवाचकम्'
(व्यभा ३ टी प ७७)।

मुंगसी—नेवली (अंवि पृ ६९)।

मुंजापिच्चिय—मूज को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (स्था ५।१९१)।

मुंढ—१ स्थाणु-विशेप जो भैंसों के वाडे में अर्गला के रूप में काम आता है (अनु ३।३८ टी)। २ तीक्ष्ण—'मुंडपरसूहिं' (प्रटी प ६०)।

मुंडग—पात्र-विशेप, प्याला (अंवि पृ ६५)।

मुंडा—मृगी, हरिणी (दे ६।१३३)।

मुंडी—नीरंगी, घूंघट (दे ६।१३३)।

मुंदिका—फल-विशेप (अंवि पृ ७०)।

मुक्क—पर्याप्त, उचित, योग्य (व्यभा ७ टी प १६)।

मुक्कय—किसी कन्या के विवाह मे निमंत्रित अन्य कन्याओं का विवाह (दे ६।१३५)।

मुक्कल—१ मुक्त, स्वतन्त्र (वृटी पृ ६००)। २ उचित। ३ स्वैर,स्वच्छंद (दे ६।१४७)।

मुक्कलिअ—बन्धन-मुक्त, स्वतंत्र (दे १।१५६ वृ)।

मुक्किल्लय—मुक्त, त्यक्त (अनुद्वाहाटी पृ ८८)।

मुक्कुंडी—जूट, जूड़ा (दे ६।११७)।

मुक्कुरुड—राशि, ढेर (दे ६।१३६)।

मुक्केल्लय—मुक्त, त्यक्त (अनुद्वाहाटी पृ ८८)।

मुगुंस—नकुल, न्यौला—'मुगुंसपुच्छं व तस्स भुमकाओ फुग्गफुग्गाओ' (उपा २।२१)।

मुगुंसिया—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)।

मुगुसिआ—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

मुग्गड—मोगल,म्लेच्छ-जाति-विशेप (प्रा ४।४०६)।

मुग्गस—नकुल, न्यौला (दे ६।११८)।

मुग्गिल्ल—पर्वत-विशेप (भत्त १६१)।

मुग्गुसु—नकुल, न्यौला (दे ६।११८)।

मुग्घड—मोगल, म्लेच्छ जाति-विशेप (प्रा ४।४०६)।

मुग्घुरुड—राशि, ढेर (दे ६।१३६)।

मुट्ठि—पुस्तक का एक प्रकार—'चउरंगुल दीहो वा वट्टागिइ मुट्ठिपुत्थगो अहवा चउरंगुलदीहो च्चिय चउरंसो होइ विन्नेओ' (प्रसा ६६६)।

मुट्ठिक्का—हिक्का, हिचकी (दे ६।१३४)।

मुण—मुक्त (आवदी प १०१)।

मुणमुणंती—बड़बड़ाहट करती हुई (व्यभा ५ टी प ५)।

मुणि—अगस्ति-वृक्ष (दे ६।१३३) ।

मुणिय—१ पागल, भूताविष्ट—'मुणिओत्ति काउं मुक्को, मुणिओ पिसाओ' (आवहाटी १ पृ १३७) । २ ज्ञात (उसुटी प २) ।

मुत्तोली—१ धान्य का वह कोठा जो ऊपर-नीचे संकरा तथा मध्य मे विशाल हो—'मोट्टा हेट्ठुवरि संकडा इसि मज्झे विसाला' (अनुद्वाचू पृ ५०) २ मूत्राशय (तदु १३६) । ३ प्राणि-विशेष (अवि पृ २५३) ।

मुदग्ग—जीव पुद्गल-निर्मित ही है—ऐसा मिथ्या ज्ञान (स्था ७।२) । देखें—'मुयग्ग' ।

मुदिंग—चीटी (निभा ४२६०) ।[1]

मुदिय—योनि-शुद्ध—'मुदिओ जो होति जोणिसुद्धो तु' (जीभा १६६७) ।

मुदुग—ग्राह-विशेष, जलजन्तु की एक जाति (प्रज्ञा १।५८) ।

मुद्दी—चुम्बन (दे ६।१३३) ।

मुद्धड—मूर्ख, भोला (कु पृ २१०) ।

मुद्धय—जलचर-विशेष, ग्राह (प्रज्ञा १।५८) ।

मुद्धुय—ग्राह-विशेष (प्रज्ञा १।५८ पा) ।

मुधुलूक—पक्षि-विशेष, उलूक की एक जाति (अंवि पृ ६२) ।

मुब्भ—घर के मध्य का तिर्यक् काष्ठ (दे ६।१३३) । 'मोभ' (गुजराती) ।

मुम्मुई—१ अस्पष्टभाषी । २ मूक हो जाना—'से मुम्मुई होइ अणाणुवाइ' (सू १।१२।५) ।

मुम्मुर—१ तुषाग्नि (सू १।५।१०) । २ भस्मच्छन्न अग्नि (प्र १।२३) । ३ करीषाग्नि (द ४।२०; दे ६।१४७) । ४ करीष, गोइंठा (दे ६।१४७) ।

मुम्मुलक—जन्तु-विशेष (अंवि पृ ७०) ।

मयग्ग—जीव पुद्गल-निर्मित ही है—ऐसा मिथ्या ज्ञान—'मुयग्गे त्ति बाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितशरीरो जीव इत्यवष्टम्भवत्, भवनपत्यादिदेवाना बाह्याभ्यन्तरपुद्गल-पर्यादानतो वैक्रियकरणदर्शनात्' (स्थाटी प ३६४)

मुरई—असती, कुलटा (दे ६।१३५) ।

मुरग—त्रीन्द्रिय जतु-विशेष (जीवटी प ३२) ।

मुरल—धान्य का माप-विशेष (ज्ञाटी प १२६) ।

मुहिआ—वैसे ही करना, व्यर्थ ही करना (दे ६।१३४ वृ)–जिणसासणं पि कहमवि लद्धुं हारेसि मुहियाए'।

मुहमुह—दुर्जन, खल (पा १२३)।

मूअल—मूक (दे ६।१३७)।

मूअल्ल—मूक (दे ६।१३७)।

मूअल्लइअ—मूक (से ५।४१)।

मूइंग—चीटी–'मूइंगमाति खइते' (निभा २१८६)।

मूइंगलिया—पिपीलिका, चीटी (पंव २३८)।

मूइंगा—चीटी (ओनि ५६०)।

मूइंगुलिया—चीटी (सं ८५)।

मूइयंग—चीटी–'जीवा मूइयगमूसादी' (जीभा १२६३)।

मूएल्लि—मूक (कु पृ ८२)।

मूड—अन्न का एक दीर्घ परिमाण–'चउत्थीए भाउयखेत्तेसु आरोविऊण वुड्ढि नीया, जाया वरिसपणगेण मूडसहस्सा' (व्यभा ४।४ टी प ३५)।

मूढक—शरासन, आसनविशेष (ज्ञाटी प ४७)।

मूढत्थ—धान्य-विशेष–'मासा मूढत्थ चणका कुलत्थ त्ति सण त्ति वा' (अंवि पृ ६६)।

मूढिगाह—धान्य आदि भरने के लिए जमीन को खोदकर, ऊपर से संकरा और नीचे से विस्तीर्ण वनाया गया भूगृह जो अग्नि से संस्कारित किया जाता है। इसमें एकत्रित धान चिरकाल तक सुरक्षित रहता है–'मूढिगाहा भूमी एगा खणितु भूमीघरगं उवरिं सकडं हेट्ठा विच्छिन्नं अग्गिणा दहित्ता कज्जति, तहिं तु चिरंपि गोधूमादि वत्थु अच्छति' (आचू पृ ३३६)।

मूतिंगलिया—चीटी, पिपीलिका (जीभा २१)।

मूयंगा—चीटी (आचू पृ ३२८)।

मूयग—मेवाड देश मे होने वाला तृण-विशेष–'मेदपाटप्रसिद्धस्तृणविशेषः' (प्रटी प १२८)।

मूरग—भञ्जक, तोड़ने वाला (प्र ४।५)।

मूरण—तोडने वाला–'जय महामोहमूरण' (कु पृ २४२)।

मूरय—भञ्जक, तोडने वाला–'पंचविहो ववहारो, दुग्गइभवमूरएहिं पण्णत्तो' (जीभा ८)।

मूलवेलि—घर के छप्पर का आधारभूत स्तम्भ–'पट्टीवंसो दो धारणउ चत्तारि मूलवेलीओ' (प्रसा ८७१)।

मूलिल्ल—मूल पूजीवाला–'अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो' (उसुटी प ६१)।

मूसरि—भग्न (दे ६।१३७)।

मूसल—पुष्ट, मांसल (दे ६।१३७)।

मूसा—छोटा द्वार (दे ६।१३७)।

मूसाअ—लघु द्वार (दे ६।१३७)।

मेअज्ज—धान्य (दे ६।१३८)।

मेअर—असहन, असहिष्णु (दे ६।१३८)।

मेंट—विकलाग (आवचू २ पृ २१)।

मेंठ—महावत (निभा २४६१; दे ६।१३८)।

मेंठी—मेषी, भेड (दे ६।१३८)।

मेंढिय—ग्राम-विशेष (आवचू १ पृ ३१६)।

मेंढी—भेड़, मेषी–'मेण्ढीशब्दोऽपि यदि देश्यः तदा पर्यायभङ्ग्या निबद्ध.' (दे ६।१३८ वृ)।

मेज्जुक—पक्षी-विशेष (अंवि पृ १४५)।

मेज्जुल्लअ—मज्जा–'मिज्ज मेज्जुल्लउत्ति वुत्तं भवति' (निचू २ पृ २१)।

मेडंभ—मृगतंतु, मृगजाल (दे ६।१३९)।

मेढ—वणिक्-सहाय, व्यापारी का सहयोगी (दे ६।१३८)।

मेंढक—काठ का छोटा डडा (प्र १।१८)।

मेती—चाण्डालिन–'पुरोहितसुतो तीए दुगुछाए रायगिहे मेतीपोट्टे आगतो' (आवचू १ पृ ४९४)।

मेत्तिया—मगदंतिका, मालती (दअचू पृ १२८)।

मेरा—१ मर्यादा, सीमा (भ ७।२४; दे ६।११३)। २ तृण-विशेष (प्र ८।१०)।

मेलिमिंद—फण वाले सर्प की जाति-विशेष (प्रज्ञा १।७०)।

मेली—सहति, समूह (दे ६।१३८)।

मेसर—लोमपक्षी-विशेष (जीवटी प ४१)।

मेहच्छीर—जल, पानी–'पेडभखलिज्झन्ता मेहच्छीरं पि कह वि अपिअन्ता' (दे ६।१३९)।

मेहर—गाव-प्रमुख–'आगओ निजमेहरपेसितो नडो' (उसुटी प २५०; दे ६।१२१ वृ)।

मेहुण—मामा का पुत्र (बृभा २८२२) ।

मेहुणय—फूफा का लडका (दे ६।१४८) ।

मेहुणि—१ मामे की लड़की । २ बूआ की लड़की—'मेहुणि त्ति माउलपिउस्सय धाता' (निचू ४ पृ १३५) ।

मेहुणिआ—१ मामा की लडकी—'मेहुणिया माउलदुहिया' (निचू २ पृ २४; दे ६।१४८)। २ भार्या(व्यभा ७ टी प ४३) । ३ साली, पत्नी की वहिन (दे ६।१४८) ।

मेहुल—मामा का वेटा—'मेहुलो (णो) माउलपुत्तो' (निचू ३ पृ ५८६) ।

मो—पादपूरक अव्यय (उ ६।१४) ।

मोअ—१ अधिगत, प्राप्त । २ ककडी आदि का वीजकोश (दे ६।१४८) ।

मोंढ—म्लेच्छ-जाति-विशेष (प्रज्ञा १।८६) ।

मोकलि—वनस्पति-विशेष (भ २२।६) ।

मोक्कणिआ—कमल का काला मध्य भाग, कृष्ण-कर्णिका (दे ६।१४०) ।

मोक्कणी—कृष्ण-कर्णिका (दे ६।१४० वृ) ।

मोक्कल—स्वतंत्र (निचू २ पृ २२२) ।

मोक्कलय—खुला छोड़ना (ओटी प ६७) ।

मोगरावड—मत्स्य की एक जाति (जीवटी प ३६) ।

मोगली—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५) ।

मोग्गड—१ नीच जाति-विशेष (पवटी प ३७) । २ व्यन्तर-विशेष ।

मोग्गर—१ गुल्म-विशेष (जीव ३।५८०) । २ मुकुल, कलिका (दे ६।१३६) । ३ मोगरा, मगदतिका का पुष्प (निचू ३ पृ ५१७) ।

मोग्गरग—मोगरा (निभा ४८३८) ।

मोग्गरिअ—संकुचित, मुकुलित—'भयमोग्गरिअमुहा तुह रिउणो गयमोचया वणे जति' (दे ६।१३६ वृ) ।

मोच—१ अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता (दे ६।१३६) । २ मूत्र, प्रस्रवण (सूचू १ पृ ११८) ।

मोचय—एक प्रकार का जूता (दे ६।१३६वृ) ।

मोट्टा—छोटा कोठा (अनुद्वामटी प १४०) ।

मोट्ठा—धान का वह कोठा जो ऊपर-नीचे से सकरा और मध्य मे विशाल हो (अनुद्वाहाटी पृ ७५) ।

मोड—जूट, शिर पर वधे हुए केशो का जूडा, धम्मिल्ल (दे ६।११७) ।

मोडाउड—अहमहमिका—'जेणुम्मत्तपमत्तउ हिंडइ पुरिपहिंहिं।
मोडाउडि करंतउ वेढिउ बहुनरहिं। (उसुटी प १३५)।

मोढरी—वनस्पति-विशेष (भ २३।६)।

मोद्दालक—वृक्ष-विशेष (जीव ३।५८०)।

मोढभ—घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ (दे ८।४)।

मोभ—घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ—'धरणयोरुपरिवर्ति तिर्यगायतकाष्ठ 'मोभ' इति यत्प्रसिद्धम्' (भटी पृ ६६१)।

मोय—१ मूत्र (स्था २।२४७)। २ बीजकोश, गिरी—'मोयं पुण छल्लिपरिहीणं' (निभा ५४११), 'मोय अब्भंतरो गीरो' (निचू ४ पृ ६६)।

मोयइ—देश-विशेष मे प्रसिद्ध एक अस्थिवाला वृक्ष (प्रज्ञा १।३५।१)।

मोयमेहा—प्रस्रवण—'कोसं च मोयमेहाए' (सू १।४।४३)।

मोयारग—मदारी (अनुद्वाहाटी पृ १२)।

मोयारय—बंदर पकड़ने वाला—'मोयारएहिं गहिओ' (अनुद्वाहाटी पृ १२)।

मोर—श्वपच, कुत्तो को पकाकर खाने वाले चाण्डालो की एक जाति (दे ६।१४०)।

मोरउल्ला—मुधा, व्यर्थ (प्रा २।२१४)।

मोरंग—कान का आभूषण-विशेष—'घडेहि मे एत्थ मोरंगाइं' (निचू ३ पृ २६६)।

मोरंड—१ तिल आदि के मोदक बेचने वाला (बृभा ३२८१)। २ तिल आदि के मोदक। ३ खाद्य-विशेष—'मोरंडा नाम रोट्टमया गोलया जारिसया कीरंति इति विशेष चूर्णौ' (टी पृ ६१६)।

मोरंडक—तिल आदि के मोदक बेचने वाला (बृभा ३२८१)।

मोरकुल्ला—अवज्ञा, व्यर्थ—'मोरकुल्ला, मुहा य मुहियत्ति नायव्वा' इति वचनात् अवज्ञयेति भावः। उक्तञ्च मूलटीकायां 'मुधिकया अवज्ञया' (जीवटी प १०६)।

मोरग—१ कुण्डल—'लोभेण मोरगाणं, भच्चग ! छेज्जेज्ज मा हु ते कन्ना' (बृभा ५२२७)। २ तृण-विशेष (आवचू २ पृ १२८)। ३ मयूर की पांख से निष्पन्न (पक ४८३)।

मोरड—क्षाररसवाला एक पौधा (व्यभा २ टी प ४०)।

मोरत्तअ—१ श्वपच, श्वपाक (दे ६।१४०)। २ चण्डाल—'मोरत्तओ चण्डाल इत्यन्ये' (वृ)।

मोरत्तिय—चाडाल-जाति (निचू २ पृ २४३)।

मोरेंडक—तिलमोदक (अवि पृ १८२)।
मोसली—दुष्प्रतिलेखना का एक प्रकार (स्था ६।४५।१)।

र

र—निश्चयार्थक अव्यय—'तेण र विसम नाय वासतणा तस्स पडिसेहे',—'र इति निपातः किलशब्दार्थं' (दनि १४७ हाटी प ७६)।
रइगेल्ल—अभिलषित (दे ७।३)।
रइगेल्ली—रतितृष्णा, मैथुन-लालसा—'रइगेल्ली रतितृष्णेति केचित्' (दे ७।३ वृ)।
रइलक्ख—१ रति-सयोग, मैथुन। २ नितम्ब (दे ७।१३)।
रइल्लय—प्रियगु—'आहाकम्माणि भक्खाणि रइल्लयाणि' (ओटी पृ ३५६)।
रंखोलिर—झूलने वाला (पा ५३२)।
रंग—त्रपु, रांगा, धातु-विशेष (दे ७।१)।
रंघड—दरिद्र—'किं एतेहिं रंघडकुलेहि ? इस्सरकुलेहिं····?' (दअचू पृ १३१)।
रंजण—१ घट (दे ७।३)। २ कुण्ड—'रजणं कुण्डमिति केचित्' (वृ)।
रंढुअ—रज्जु (दे ७।३)।
रंभ—आन्दोलनफलक, झूले का पाटिया (दे ७।१)।
रकि—भाण्ड, उपकरण-विशेष'—कुडगत वा उक्खलिगतं वा रकिगतं वा' (अंवि पृ २१४)।
रक्ख—राख, भस्म (आवहाटी १ पृ २१४)।
रगडा—एक सन्निवेश का नाम (कु पृ ४५)।
रगसिगा—वाद्य-विशेष (जीव ३।५८८)।
रग्गय—कौसुभ वस्त्र (दे ७।३)।
रच्छाभित्ति—भोज्य-पदार्थ-विशेष (अवि पृ ७१)।
रच्छामअ—कुत्ता (दे ७।४)।
रज्जवइ—स्वतंत्र—'रज्जवई राया भविस्सइ—रज्जवइ त्ति स्वतंत्र इत्यर्थः' (भ ११।१३४ टी पृ ६६४)।
रज्जुग—लिखने का काम करने वाला (दश्रुचू प ६५)।
रज्जुगसभा—१ लेखक-गृह (दश्र ८।८३)। २ शुल्क-गृह।

रज्जुगोज्ज—संघर्ष–'रज्जुगोज्ज करेति संघसं करोतीत्यर्थः' (आवचू २ पृ ४३)।

रडिय—कलहयुक्त–'कलहाइअं रडिअं' (पा ७४६)।

रणरणय—१ अधृति–'अदिही अरई य रणरणओ' (पा ४४७)। २ उत्सुकता (दे १।१३६)। ३ निःश्वास।

रण्हक—दीर्घ, लंबा (अवि पृ ११५)।

रत्तक्खर—सीधु, मद्य-विशेष (दे ७।४)।

रत्तच्छ—१ हंस। २ व्याघ्र (दे ७।१३)।

रत्तय—बधूक वृक्ष का फूल (दे ७।३)।

रत्ति—आज्ञा (दे ७।१)।

रत्तीअ—नापित, नाई (दे ७।२)।

रद्धि—प्रधान, मुख्य (दे ७।२)।

रप्फ—१ वल्मीक, बाबी (निचू १ पृ ६६, दे ७।१)। २ रोग-विशेष।

रप्फग—खराब फोडा–'दुट्ठवणो रप्फगादि, किरियाए विणा ण विसुज्झति ण णप्पति' (निचू २ पृ २४)।

रप्फडिआ—गोह, गोधा (दे ७।४)।

रप्फा—बाबी, वल्मीक (पा ४७६)।

रब्बा—१ राब, यवागू–'एहि किल शीतलीभवति रब्बा' (आवहाटी १ पृ ६१)। २ रूक्ष पदार्थ (बृटी पृ ४१४)।

रयणिद्धय—कुमुद (दे ७।४)।

रयवली—बाल्य, शिशुत्व (दे ७।३)।

रल्लक—१ त्रीन्द्रिय जीव-विशेष (आवटि प २५)। २ एक प्रकार के मृग या भेड के रोओं से बना कंबल (कु पृ १८)।

रल्लग—प्रावरण-विशेष (जीव ३।५९५)।

रल्ला—१ दही मे उत्पन्न होनेवाला त्रीन्द्रिय प्राणी (आवचू २ पृ १०१)। २ प्रियंगु, मालकगनी (दे ७।१)।

रल्लिका—एक प्रकार का कबल (कु पृ १८)।

रवअ—मथान-दंड, बिलौने की लकड़ी (दे ७।३)।

रविउ—टुकड़े-टुकडे किया हुआ–'रविउ' त्ति द्रावित. खण्डशो नीतो मयाऽसौ' (नदीटि पृ १०३)।

रसद्द—चूल्हे का मूल भाग (दे ७।२)।

रसय—वसा, मेद आदि (बृभा १७११)।

रसाअ—भ्रमर, भौरा–'रसाऊ तथा रोलबो भ्रमरः । रसाअशब्दोऽयमित्यन्ये । यद् गोपाल –अलिरपि रसाओ स्यात्' (दे ७:२ वृ) ।

रसाउ—भ्रमर, भौरा (दे ७।२) ।

रसाल—खाद्य-विशेष–'खंड तुलादसभागो दस खंडपला हवंति णायव्वा । ते तम्मि पक्खिवित्ता मज्जिय णामं रसालोत्ति ॥' (पक ७३५) ।

रसाला—पेय-विशेष, मार्जिता (दे ७।२) ।

रसालु—राजा के लिए निर्मित खाद्य पदार्थ-विशेष–दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिर्च तथा दस पल चीनी से बना हुआ पाक-विशेष–'दो घतपला महुपल दहिस्स अद्धाढयं मरिय वीसा । खडतुलादसभागो, एस रसालू निवइजोगो ॥' (पंक ७३४) ।

रसिगा—पीव (व्यभा ६ टी प ६१) ।

रसिय—रसी, पीव–'किडिभ जंघासु कालाभ रसियं वहति' (निचू ३ पृ ६२) ।

रसिया—१ पीव (प्र १।२३) । २ छंद-विशेष ।

रसोतीगिह—रसोईघर (अंवि पृ १३६) ।

रहिअ—१ एकाकी, अकेला–'रहिए विहारइत्ता, जहारिहं देति पच्छित्तं' (जीभा ६६१) । २ रहा हुआ, स्थित ।

राअ—चटक, गौरैया पक्षी (दे ७।४) ।

राअला—प्रियंगु, मालकंगनी (दे ७।१) ।

राइल्ल—१ रंगा हुआ (निचू २ पृ २१२) । २ शोभित (कु पृ १२८) ।

राइल्लेऊण—चीरकर–'ओट्टियं सयलग राइल्लेऊण रयणाणि छूढाणि' (आवहाटी १ पृ २८३) ।

राडि—१ चिल्लाहट–'ते हम्मता राडिं करेति' (उसुटी प २६) । २ कलह (उशाटी प १००) । 'राड़' (राजस्थानी) । ३ संग्राम (दे ७।४) ।

राणयभोत्ति—राज्य–'राणयभोत्ती रज्ज भण्णति' (निचू १ पृ १३३) ।

राणिया—रानी (निचू १ पृ १७) ।

रातण—राजादन फल (अवि पृ २३८) ।

राती—संध्या–'सभा राती भणिया' (दश्रुचू प १५) ।

रायंछुअ—वेतस का पेड़ (पा ८९९) ।

रायंबु—१ वेतस, वेत का पेड़ । २ शरभ, अष्टपाद पशु (दे ७।१४) ।

रायगइ—जलौका, जौक (दे ७।५)।

राला—प्रियंगु, मालकांगनी (आवहाटी १ पृ २८३; दे ७।१)।

रावग—राजपुरुष (निचू ३ पृ ४३६)।

राविअ—आस्वादित (दे ७।५)।

रावित—रसी, पीव (आवमटी प २९७)।

राहु—१ दयित, प्रिय। २ निरतर। ३ शोभित। ४ सनाथ। ५ पलित, सफेद केशो से युक्त (दे ७।१३)। ६ रुचिर, सुन्दर (पा १४)।

रिंगणी—वल्ली-विशेप, कण्टकारिका (दे २।४)।

रिंगिअ—भ्रमण (दे ७।६)।

रिंगिणिका—वल्ली-विशेप, कण्टकारिका—'रिंगिणिकाकटको अश्वशरीरेऽनुप्रविष्ट:' (व्यभा २ टी प ४४)।

रिंगिसिगि—घर्षण-वाद्य, घर्षण से स्वर उभारने वाला वाद्य (जंबूटी प १०१)।

रिंछोली—श्रेणि, पक्ति—'कुदुज्जलपवरदसणरिंछोलि' (नदीटि पृ १०९, दे ७।७)।

रिंडी—कन्था की भाति फटा वस्त्र (दे ७।५)।

रिक्किसिक—पक्षी-विशेप (अंवि पृ ६२)।

रिकिसिका—आपस के संघट्टन से बजने वाला वाद्य-विशेप—'घट्टिज्जंतीण रिकिसिकाण' (आवचू १ पृ ३०९)।

रिक्क—अल्प—'जाओ रिक्को मे वित्तवयो' (निचू २ पृ ३२६; दे ७।६)।

रिक्कविरिक्क—अत्यन्त भारहीन—'तुमं पुण समणगस्स रिक्कविरिक्कस्स मग्गं देसि' (आवचू १ पृ ५३९)।

रिक्किअ—शटित, सडा हुआ (दे ७।७)।

रिक्ख—१ वृद्ध (दे ७।६)। २ बुढापा—'रिक्खो वयःपरिणाम इति केचित्' (वृ)।

रिक्खण—१ उपलभ, अधिगम। २ कथन (दे ७।१४)।

रिक्खा—थकान—'अण्णा रिक्खाओ अवणेइ' (कु पृ १०१)।

रिगिसिगि—वाद्य-विशेप (आवचू १ पृ १८७)।

रिगिसिगिआ—वाद्य-विशेप—'घर्ष्यमाणवादित्र-विशेषः' (जंबूटी प १०१)।

रिग्ग—प्रवेश (दे ७।५)।

रिच्छ—वृद्ध (दे ७।६)।

रिच्छभल्ल—भालू (दे ७।७)।

रिट्ठ—१ कौआ (दे ७।६)। २ दैत्य-विशेष (से १।३)।

रिणकंठ—एक जनपद, जहां की भूमि वर्षाकाल मे पानी से भर जाती है और शेष समय मे उसमे दरारें पड जाती है (निचू २ पृ १५०)।

रित्तूडिअ—शाटित, झडवाया हुआ (दे ७।८)।

रिद्ध—पका हुआ (दे ७।६)।

रिद्धि—राशि, समूह (दे ७।६)।

रिप्प—पृष्ठ, पीठ (दे ७।५)।

रिमिण—रोदनशील (दे ७।७)।

रिरिअ—लीन, आसक्त (दे ७।७)।

रीढ—अवगणना, अनादर (दे ७।८)।

रीढा—यदृच्छा, इच्छा के अनुसार (वृभा २१६२)।

रुअरुइआ—उत्कण्ठा (दे ७।८)।

रुंचण—रूई से कपास को अलग करने की क्रिया (पिनि ५८८)।

रुंचणी—घरट्टी, दलने का प्रस्तर-यंत्र (दे ७।८)।

रुंचिय—पिष्ट, पीसा हुआ (वृटी पृ ३६२)।

रुंजग—वृक्ष—'कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाई य' (दनि १)।

रुंटणया—अवज्ञा (पिनि २१०)।

रुंटणा—अवज्ञा—'बहूहिं खिज्जणियाहि य रुटणाहि य उवलभणाहि य' (ज्ञा १।१८।१०)।

रुंटणिया—१ अवज्ञा, अनादर। २ रोदन क्रिया (ज्ञा १।१६।६७)।

रुंढ—आक्षिक, जूआरी (दे ७।८)।

रुंढिअ—सफल (दे ७।८)।

रुंद—१ दीर्घ—'रुंदाइ पलोएमाणे' (भ १५।१२०)। २ विस्तीर्ण (औप ४६)। ३ महान्, विशाल—'संघसमुद्दस्स रुदस्स' (नदी गा ११)। रुंद्र-विशाल (कन्नड)। ४ विपुल। ५ वाचाल (दे ७।१४)।

रुक्क—बैल की भांति शब्द करना—'रुक्कं ति सद्दकरण' (अनुद्वाचू पृ १३)।

रुगण—कृष्ण वस्तु-विशेष—'अजणं कज्जल व त्ति रुगण' (अंवि पृ ६२)।

रुणमाला—कंठ या वक्षस्थल का आभूषण (कु पृ १६४)।

रुप्फय—सर्प आदि के काटने पर किया जाने वाला उपचार-विशेष—

'तहविय अठायमाणो गोणसखड्याइ रुप्फए वावि ।
कीरइ तयंगछेओ सअट्ठिओ सेसरक्खट्ठा' । (आवनि १४२४) ।

रुल्ल—विकलांग—'रुल्ला अजगम च्चिय पगुलया चलण-परिहीणा' (कु पृ ४०) ।

रूय—रूई, तूल (भ ११।१३३; दे ७।९) ।

रूरुइअ—काम का आवेग, उत्कंठा—'मुरुमुरिअ रूरुइअं' (पा ५१८) ।

रूवमिणी—रूपवती स्त्री (दे ७।९) ।

रूवि—गुच्छ-विशेप, अर्क-वृक्ष (प्रज्ञा १।३७।१ दे ७।९) ।

रेअविअ—१ शून्य किया हुआ, क्षणीकृत (दे ७।११) । २ मुक्त, त्यक्त (वृ)।

रेंकिअ—१ आक्षिप्त । २ लीन । ३ लज्जित (दे ७।१४)

रेक्खण—१ उपलंभ, अधिगम । २ कथन (दे ७।१४ वृ) ।

रेग—विविक्त अवसर—'रेगो नत्थि दिवसतो रत्तिपि न जग्गते समुव्वातो' (व्यभा ६ टी प २५) ।

रेणि—पक, कर्दम (दे ७।९) ।

रेल्लग—प्रवाह—'जह वप्प-कूव-सारणि-नइरेल्लगसालिरोप्पाई' (आवहाटी २ पृ ६१) ।

रेल्लण—प्लावन (पिटी प १६४) ।

रेल्लिया—जल-प्रवाह से युक्त (निचू १ पृ ६१) ।

रेवई—मातृका, देवी (दे ७।१०) ।

रेवज्जिअ—उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया हो वह (दे ७।१०) ।

रेवट्ट—धान्य-विशेप (आचू पृ ३३८) ।

रेवय—प्रणाम, नमस्कार (दे ७।९) ।

रेवलिआ—धूल का आवर्त्त (दे ७।१०) ।

रेसणिया—कास्य-भाजन-विशेप (पा ८१५) ।

रेसणी—१ अक्षि-निकोच । २ करोटिका, एक प्रकार का कांस्य भाजन (दे ७।१५) ।

रेसि—लिए, निमित्त, वास्ते—'पचह दिवसह रेसि राय ! म पाविहिं वट्टह' (उसुटी प १२५) ।

रेसिअ—छिन्न, काटा हुआ (दे ७।९) ।

रेहंत—शोभित होता हुआ (ज्ञा १।१।२४) ।

रेहिअ—जिसकी पूछ काट दी गई हो वह, छिन्नपुच्छ (दे ७।१०) ।

रेहिर—शोभित (कु पृ ११७)।

रोअणिआ—डाकिनी (दे ७।१२)।

रोंकण—रंक, निर्धन (दे ७।११)।

रोक्कणि—१ शृंगी, सींग वाला प्राणी। २ नृशंस, क्रूर (दे ७।१६)।

रोक्कणिअ—१ शृंगी, सींग वाला प्राणी। २ नृशंस (दे ७।१६ वृ)।

रोघस—रंक, निर्धन (दे ७।११)।

रोज्झ—रोझ, नील गाय (प्रज्ञा १।६४, दे ७।१२)।

रोट्ट—चावल का आटा (निभा १४८, दे ७।११)।

रोट्टग—रोटी—'लभिहिसि तुमं अज्ज घयगुलसम्पन्नं महंतं रोट्टगं' (उसुटी प ६३)।

रोड—१ अनादर। २ हैरानी (निचू १ पृ १६४)। ३ गृहप्रमाण, घर का मान (दे ७।११)।

रोडी—१ इच्छा। २ व्रणी की शिविका (दे ७।१५)।

रोढ—भूमिगत स्रोत से रुका हुआ पानी (अंवि पृ २६६)।

रोद्ध—१ कूणिताक्ष। २ मल (दे ७।१५)।

रोमराइ—जघन, नितम्ब (दे ७।१२)।

रोमलयासय—उदर, पेट (दे ७।१२)।

रोमूसल—जघन, नितम्ब (दे ७।१२)।

रोर—१ कोलाहल। २ रक, निर्धन (उसुटी प ८६, दे ७।११)।

रोल—१ कोलाहल—'वदणवोल रोल करेता विसंति' (निचू २ पृ १३)। २ कलह (ओटी प १०३; दे ७।१५)।

रोलंब—भ्रमर (दे ७।२)।

रोसाणिय—मृष्ट, परिमार्जित (पा ६६४)।

रोह—१ प्रमाण। २ नमन (दे ७।१६)। ३ मार्गण—'रोहो मार्गण इत्यन्ये' (वृ)।

रोहणिक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष—'कुंथु-पिपीलिका-उपचिक-रोहणिक-तेवरुक' (अंवि पृ २६७)।

रोहिणिक—१ द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)। २ अरुण रंग का पक्षी (अंवि पृ २२५)।

रोहिणीय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष—'ओवइया रोहिणीया कुंथू पिपीलिया' (प्रज्ञा १।५०)।

रोहिय—रोझ, नील गाय (प्र १।६; दे ७।१२)

रोहियंस—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

ल

लइअ—१ परिहित, पहना हुआ—'एकावलि-कंठलइय-वच्छा' (समप्र २४१; दे ७।१८)। २ अंग में पिनद्ध (वृ)।

लइअल्ल—वृषभ (दे ७।१९)।

लइणी—लता (दे ७।१८)।

लउस—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३८)।

लउसिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

लंका—१ शरीर का एक अवयव—'कंडरा पण्हिका लंका' (अंवि पृ ६६)। २ शाखा।

लंखक—गायक, चंडाल-विशेष जो गाना गाते हैं (व्यभा १० टी प ६६)।

लंगंती—धीरे-धीरे चलती हुई, लंगडाती हुई—'करिणी·······लंगंती ओसरइ' (उशाटी प ५३)।

लंगवलग—धान्य-विशेष (निचू २ पृ १०९)।

लंच—कुक्कुट, मुर्गा (दे ७।१७)।

लंचापलि—वृक्ष की एक जाति (अंवि पृ ७०)।

लंचिक्क—हीरा, माणक आदि—'हयगयलंचिक्कार तेणंतो तेणओ उ उक्कोसो' (निभा ३६५४)।

लंछ—चोर-विशेष (विपा १।१।४९)।

लंद—काल, समय—'लंदं तु होइ कालो। समयपरिभाण्या लन्दशब्देन कालो भण्यते' (प्रसा ६११ टी प १७३)।

लंदय—गाय आदि पशुओं का भोजन-पात्र (प्रसा ११६)।

लंपिक्क—१ चोर। २ लुब्ध, आसक्त (कु पृ १७२)।

लंपिक्ख—चोर (दे ७।१९)।

लंब—गोवाट, गायों का वाड़ा (दे ७।२६)।

लंबण—१ एक प्रकार का भोज्य-पदार्थ (पंक ७७८)। २ कवल (पव ३५८)। ३ हाथ (ओटी पृ २१)।

लंबा—१ केश, बाल (दे ७।२६)। २ वल्लरी।

लंबाली—पुष्प-विशेष (दे ७।१६)।

लंबूस—कन्दुक के आकार का एक आभरण (आवचू १ पृ २२४)।

लंबूसग—कन्दुक के आकार का एक आभरण—'ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा' (राज ४०)।

लंभण—मत्स्य की एक जाति (विपाटी प ७६)।

लंभूसास—वाद्य-विशेष (अवि पृ १४७)।

लकड—आभरण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

लक्कुड—लकड़ी, यष्टि (दे ७।१६)।

लक्ख—१ छद्म (निचू १ पृ १२७)। २ शरीर (दे ७।१७)।

लगंड—वक्रकाष्ठ (उसुटी प ३४६)।

लगड्ड—लकड़ी का भारा, लक्कड—'गोणातिपिट्ठीए लगड्डादिएसु आणिज्जति' (निचू २ पृ २०६)।

लग्ग—१ असंबद्ध, ऊंची-नीची—'सडिय-पडिय-भग्गलग्गासो' (आचू पृ ३१८; दे ७।१७ वृ)। २ चिह्न (दे ७।१७)।

लच्चय—गण्डुत् नामक तृण (दे ७।१७)।

लज्जालुइणी—१ लज्जावती (प्रा २।१७४)। २ कलहकारिणी स्त्री।

लट्ट—कुसुभ धान्य (बृभा २०६४)।

लट्टणी—यष्टि (आवहाटी १ पृ २७८)।

लट्टय—१ कुसुम्भ—'लट्टयवसणा कहं होही' (दे ७।१७)। २ नमसरा थानि का तेल।

लट्टा—कुसुभ धान्य (बृटी पृ ६०३)।

लट्ठ—१ सुन्दर, मनोज्ञ (दश्रु ८।२२; दे ७।२६)। २ अन्यासक्त, दूसरे में आसक्त। ३ प्रियभाषी (दे ७।२६)। ४ प्रधान, मुख्य।

लट्ठिय—खाद्य-विशेष—'जट्ठाहि लट्ठिएणं भोच्चा कज्ज साहिति' (सूर्य १०।१७)।

लडभ—मनोज्ञ, सुन्दर (बृटी पृ ६५३)।

लडह—१ सुन्दर, लावण्य-युक्त—'लडहसुकुमाल-मउयरमणिज्जरोमराइं' (दश्रु ८।२४, दे ७।१७)। २ लटकते हुए शिथिल गमन-गमन (जानुबाहं [illegible] ही के पिछले भाग में लटकता हुआ गाड़ी के [illegible] रक्षा करता है—'इह लडह [illegible] पश्चाद् [illegible] लडहगाणं गलकाष्ठं नयुग्नाहं'

(उपाटी पृ १०२) । ४ विदग्ध, विद्वान् (दे ७।१७ वृ) । ५ कोमल । ६ प्रधान ।

लडहक्खमिय—विघटित, वियुक्त (दे ७।२०) ।

लड्डुग—लड्डू, मोदक (आवचू १ पृ ४०६) ।

लड्डुय—लड्डू, मोदक (बृभा ६१४६) ।

लढिय—स्मृत, याद किया हुआ—'भरिअं लढियं सुमरिअं' (पा ५६४) ।

लत्तग—आतोद्य-विशेष—'घणं लत्तगादी' (सूचू २ पृ ३६०) ।

लत्ता—पाद-प्रहार, लात—'लत्ताहि य हंतु गता' (निचू २ पृ ६०) ।

लत्तिका—आतोद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६) ।

लत्तिगा—यष्टि (दश्रुचू प ६१) ।

लत्तिया—१ वाद्य-विशेष (नि १७।१३८) । २ पार्ष्णिप्रहार—'लत्तिय त्ति कसिका, ता हि आतोद्यत्वेन न विवक्षिता इति, अथवा लत्तियासद्दे त्ति पार्ष्णिप्रहारशब्द.' (स्थाटी प ५६) ।

लद्दितय—लदा हुआ, भारयुक्त—'उट्टो वा लद्दितओ' (सूचू १ पृ ११६) ।

लद्धीय—स्वस्थ—'वेज्जेण संमोहण-वमण-विरेयणकिरियाहिं णिवकमाएत्ता लद्धीओ कओ' (निचू ४ पृ ३०६) ।

लप्पसिया—लापसी, एक प्रकार का मिष्टान्न (प्रसा २३४) ।

लय—नव दंपती का आपस मे नाम लेने का उत्सव—'णवदंपईण अण्णुण्णणामगहणोसवम्मि लयं' (दे ७।१६) ।

लयण—१ तनु । २ मृदु । ३ वल्ली, लता (दे ७।२७) ।

लयणी—लता (पा ३३४) ।

लयापुरिस—वह स्थान जहा पद्महस्त वधू का चित्रण किया जाए—'पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो' (दे ७।२०) ।

लल्ल—१ उत्सुक, तत्पर, सस्पृह । २ न्यून (दे ७।२६) ।

लल्लवक—१ भयंकर—'लल्लवक्कं वा सीतं पडंतं ण सहति' (निचू ३ पृ १६७; दे ७।१८) । २ ललकार, आह्वान ।

लल्लाय—अस्पष्ट-वाक्, 'ललर' वाणी से बोलने वाला—'आरियकुले वि जाया अंधा बहिरा य होंति लल्लाया' (कु पृ ४०) ।

लल्लि—खुशामद (प्रटी प १०६) ।

लल्लिरी—मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपाटी प ८५) ।

लवय—गोंद (पा ८८६) ।

लवइत—अंकुरित (आवचू १ पृ ४७७)।

लवइय—पल्लवित (भ ११५०)।

लवली—लता-विशेष (कु पृ १६७)।

लसइ—कदर्प, काम (दे ७।१८)।

लसक—तरु-क्षीर, पेड़ का दूध (दे ७।१८)।

लसिया—पीब, रसी (अंवि पृ १७७)।

लसुअ—तेल (दे ७।१८)।

लहुअवड—न्यग्रोध, बरगद का वृक्ष (दे ७।२०)।

लहुइय—तोला हुआ (पा ५३६)।

लाइम—१ लाजा के योग्य, खोई के योग्य। २ रोपणयोग्य, बोने लायक (आचूला ४।३३)।

लाइय—१ भूमी को गोबर आदि से लीपना (प्रज्ञा २।४१)। २ गृहीत (बृटी पृ १०७; दे ७।२७)। ३ आभूषण। ४ चर्मार्ध, आधी चमडी (दे ७।२७)। घृष्ट (से २।२६)।

लाइल्ल—वृषभ (दे ८।१९)।

लाउल्लोइय—गोमय आदि से भूमि का लेपन और खडी आदि से भीत आदि का पोतना (दश्रु ८।६२)।

लाउल्लोयिक—लिपाई-पुताई (अवि पृ १८३)।

लाउल्लोयिक—लिपाई-पुताई (अंवि पृ २१०)।

लागतरण—भूने हुए चावलो से बनाया गया पेय-विशेष (जीभा ६०५)।

लाजिका—वेश्या (अवि पृ ६८)।

लाढ—१ आत्मनिग्रही मुनि-'लाढे त्ति साधुणो अक्खा' (निचू ४ पृ १२५)। २ निर्दोष आहार से सयम-यात्रा का निर्वाह करने वाला मुनि। ३ प्रशस्य-'लाढयति प्रासुकैषणीयाहारेण साधुगुणैर्वा आत्मानं यापयतीति लाढ, प्रंशसाभिधायि वा देशीपदमेतत्' (उशाटी प १०७)। ४ प्रधान (उशाटी प ४१४)। ५ एक जैन आचार्य।

लाढय—साधु-गुणों से जीवन-यापन करने वाला (उचू पृ ६६)।

लाणी—पुष्प-विशेष (अवि पृ १०४)।

लातुल्लोइय—गोबर से भूमी का लेपम करना तथा खड़ी आदि से भीत को पोतना (आवचू १ पृ २२६)।

लाम—सुन्दर (जंबू ३।१७८)।

लुंठण—१ कोलाहल। २ कलह—'ते विसेसलुंठणाणि विग्गाणि करेंति' (उशाटी प १४६)।

लुंबिया—गुच्छा—'न दुक्करं तोडिय अंबलुंबिया, न दुक्करं नच्चिउ सिक्खियाए। तं दुक्करं तं य महाणुभावं, जं सो मुणी पमणवणंमि वुच्छो ॥ (आवहाटी २ पृ १३८)।

लुंबी—१ स्तवक, फूलों का गुच्छा (भटी प ३७; दे ७।२८)। २ लता (ज्ञाटी प ६; दे ७।२८)।

लुक्क—१ लुञ्चित, मुण्डित (पिनि २१७)। २ छिपा हुआ—'वोहिगादिभएण णस्संतो लुक्को' (निचू ३ पृ ३५५)। ३ रोगी (प्रा २।२)। ४ भग्न। ५ सुप्त।

लुक्कणी—लुकना, छिपना (दे ७।२४ पा)।

लुक्ख—वृक्ष (उशाटी प १३८)।

लुग्ग—१ शुष्क (व्यभा ५ टी प ७)। २ भग्न (दे ७।२३)। ३ रोगी (प्रा ४।२५८)।

लुरणी—वाद्य-विशेष (दे ७।२४)।

लूया—१ वात-रोग (कु पृ ४१)। २ मृगतृष्णा—'कत्यइ लूयाए हओ' (कु पृ २७४; दे ७।२४)।

लेंड—हाथी आदि की लीद—'ताहे तत्थ नलगिरिणा मुत्तियं लेंडं च मुक्कं' (आवचू १ पृ ४००)।

लेंडि—लीद (पक १५४१)।

लेंडिया—लिंडी, लीद (आवहाटी १ पृ २७८)।

लेखा—वस्त्र-विशेष (अवि पृ ७१)।

लेच्छारिय—लिप्त, खरंटित—'लेच्छारियतुंडेण' (निभा ६१०८)।

लेडुअ—ढेला (पा ४०३)।

लेडुक्क—१ लम्पट। २ लोष्ट, रोड़ा (दे ७।२६)।

लेड्डु—पत्थर का टुकड़ा, ढेला (आवहाटी १ पृ १४६)।

लेढिअ—स्मरण, स्मृति (दे ७।२५)।

लेढुक्क—लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ७।२४)।

लेण—मृतक की स्मृति में बनाया जाने वाला देवकुल—'मडयस्स उवरिं जं देवकुलं तं लेणं भण्णति' (निचू २ पृ २२५)।

लेत्थरिय—लिप्त (निचू २ पृ ३०१)।

लेत्थारण—लेप (निभा १८७४)।

लेत्थारिय—खरंटित, लेप से युक्त–'लेत्थारियाणि देशीपदमेतत् खरंटितानि' (बृटी पृ १५०)।

लेलु—मिट्टी का ढेला (द ४।१८)।

लेस—१ स्त्री की योनि (व्यभा ६ टी प ६६)। २ लिखित। ३ आश्वस्त। ४ निद्रा। ५ नि शब्द (दे ७।२८)।

लेहड—लपट (दे ७।२५)।

लेहुड—लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ७।२४)।

लोअडी—कबल (प्रा ४।४२३)।

लोआणी—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३६)।

लोंक—सुप्त, सोया हुआ (दे ७।२३ वृ)।

लोट्ट—१ कच्चा चावल (दअचू पृ ११०)। २ हाथी का छोटा बच्चा (आवहाटी २ पृ १६५)।

लोट्टक—कुमार-अवस्था वाला हाथी (ज्ञाटी प ७२)।

लोट्टय—हाथी का छोटा बच्चा (ज्ञा १।१।१५७)।

लोट्टिय—उपविष्ट (दे ७।२५)।

लोट्टिया—१ हाथी की छोटी बच्ची (ज्ञा १।१।१५७)। २ काष्ठपात्र (निचू ३ पृ ३४३)।

लोट्ठु—पत्थर, लेष्टु (व्यभा ६ टी प ५१)।

लोढ—१ लोढा–'लोढेण वावि लेवेण, सिलेसेण व केणइ' (द ५।१।४५)। २ पद्मिनी कंद (प्रसा २३७)। ३ स्मृत। ४ शयित (दे ७।२६)।

लोढणी—कपास निकालने अथवा ऊन आदि को साफ करने का यंत्र (ओनि ४७४)।

लोढिनी—कपास के बीज निकालने का यन्त्र (पिटी प १०३)।

लोपक—बिल मे रहने वाला पंचेन्द्रिय जतु-विशेष (अवि पृ २२७)।

लोपा—सियारिन–'वाणर-सस-लोयासु' (अवि पृ २३८)।

लोभिल्ल—लालची (ओभा १३३)।

लोमंथिक—नट (आवटि प ६१)।

लोमंथिय—नट–'णट्ट लोमंथिय वा' (आवचू २ पृ ३०३)।

लोमंधिय—नट (आवचू १ पृ ५५६)।

लोमटक—लोमड़ी (आटी प ३३७)।

लोमठिका—लोमडी (जीवटी प ३८)।

वंसकवेल्लुय—लंबे बांस पर रखे जाने वाले तिरछे बांस (जीव २६४)।

वंसकवेल्लुया—छत के नीचे दोनों ओर तिरछे रखे जाते बांस (राज १३०)।

वंसटोक्कर—बांस की डोरी या खपाची (वृटी पृ १६४१)।

वंसप्फाल—१ प्रकट, व्यक्त (दे ७।४८)। २ ऋजु, सरल (वृ)।

वंसी—मस्तक पर अवस्थित माला (दे ७।३०)।

वक्कड—१. दुर्दिन, मेघकृत अन्धकार (दे ७।३५)। २ निरन्तर वृष्टि—'वक्कड निरन्तरवृष्टिरित्येके' (वृ)

वक्कडबंध—कान का आभूषण (दे ७।५१)।

वक्कल्लय—आगे किया हुआ (दे ७।४६)।

वक्कस—१ पुराना धान का चावल। २ पुराना सत्तुपिंड। ३ बहुत दिनों का बासी गोरस। ४ गेहूं का मांड (उ ८।१२ पा)।

वक्काडय—तृण-विशेष (आचू पृ ३५७)।

वक्किक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३२)।

वक्खर—सामान, भाण्ड (बृभा ४४७७)।

वक्खार—१ एकान्त कमरा (व्यभा ६ टी प ६१)। २ गोदाम।

वक्खारय—१ रतिगृह (दे ७।४५)। २ अन्तःपुर (वृ)।

वक्खीर—तृण विशेष (भ २१।१९)।

वक्खोडलिया—छिपकली (दजिचू पृ २७८)।

वक्खोड—विघ्न—'विग्घोत्ति वा वक्खोडत्ति वा एगट्ठा' (आचू पृ १०६)।

वगडा—परिक्षेप, परिधि (व्य ६।१)।

वग्गंसिअ—युद्ध, लड़ाई (दे ७।४६)।

वग्गय—वार्त्ता, बात (दे ७।३८)।

वग्गली—रोग-विशेष, वमन की व्याधि—'जेमणवेलाए जिमितो वा तं संभरित्ता उड्ढं करेति। एवं तस्स वग्गली वाही जातो, विणट्ठो य' (निचू ३ पृ ८१)।

वग्गुडाव—पत्नी के अधीन रहने वाले पति की एक अवस्था—'इत्थियवयणातो दगमाणेति, सो य लोगसकितो अप्पभाए चेव सुहसुत्ते पगे रोडेतो आणेति त्ति वग्गुडावो' (निचू ३ पृ ४२०)।

वग्गुरी—अंगुलियों और पैर के ऊपरी भाग को आच्छादित करने वाला जूता—'उवरिं तु अंगुलीओ जा छाए सा तु वग्गुरी होति' (निभा ६१८)।

वग्गुलिया—व्याधि-विशेष–'तस्स संकाए वग्गुलिया वाही जातो' (निचू १ पृ १५)।

वग्गोज्ज—प्रचुर (दे ७ ३८)।

वग्गोअ—नकुल, न्यौला (दे ७।४०)।

वग्गोरमय—रूक्ष, रूखा (दे ७।५२)।

वग्घरणसाला—तोसलि देश मे प्रसिद्ध विवाह-मडप (वृभा ३४४६)– 'व्याघरणशाला नाम तोसलिविषये ग्राममध्ये शाला क्रियते, तत्राग्निकुण्ड स्वयवरहेतोर्नित्यमेव प्रज्वलति, तत्र च वहवश्चेटका एका च स्वयवरा चेटिका प्रवेश्यन्ने इत्यर्थ । यस्तेषा मध्ये तस्यै प्रतिभाति तमसौ वृणीते, एषा व्याघरण-शाला' (टी पृ ९६३)।

वग्घाअ—१ साहाय्य, मदद। २ विकसित, खिला हुआ (दे ७।८६)।

वग्घाडिया—१ उपहास के लिए की जाने वाली विशेष ध्वनि (ज्ञा १।८।१४६)। २ विभिन्न देशो की भाषाओं को इस प्रकार बोलना जिससे सब हसने लग जाये (वृभा ६३२४)।

वग्घाडी—उपहास के लिए की जाती एक प्रकार की आवाज–'अप्पेगइया वग्घाडीओ करेति' (ज्ञाटी प १५१)।

वग्घारित—प्रलंबित (जीव ३।३९७)।

वग्घारिय—प्रलम्बित–'वग्घारिय-पाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी' (भ ३।१०५)।

वचाई—क्षुद्र जतु-विशेष–'भिगारी अरका व त्ति वचाई इदगोविगी (अंवि पृ ६९)।

वच्च—१ घर के चारो ओर की भूमी,–'गिहस्स समंततो वच्चं भण्णति' (निचू २ पृ २२४)। २ मृतक के दग्ध-स्थान के चारों ओर की भूमि। ३ श्मशान के चारों ओर की भूमि-'मडयपेरंतं वच्चं भण्णति। सव्वं वा सीताण सीताणस्स वा पेरंत वच्चं भण्णति' (निचू २ पृ २२५)। ४ कूड़ा-करकट का स्थान (आचूला १०।२६)।

वच्चक—दर्भ जैसा तृण (वृभा ३६७५)।

वच्चग—१ तृणरूप वाद्य-विशेष (जीव ३।५८८)। २ तृण-विशेष–'वच्चगो दब्भागिती तण' (निचू २ पृ ३८)।

वच्चयचिप्प—वल्वज घास को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (वृभा ३६७४)।

वडप्प—१ लता-गहन। २ निरंतर-वृष्टि (दे ७।८४)।

वडभ—वामन, कुब्ज, जिसका पीछे के या आगे के शरीर का भाग उभरा हुआ हो (निचू ३ पृ २७१)।

वडय—सूती वस्त्र—'कोसेज्जा वडओ भण्णति। टसर इति भाषायाम्' (निचू २ पृ ६८)।

वडह—पक्षि-विशेष (दे ७।३३)।

वडा—वृति, परिक्षेप—'एगवडाए इति एकवृतिपरिक्षेपायाम्' (व्यभा ३ टी प ६६)।

वडार—विभाग (व्यभा ७ टी प ६३)।

वडालि—पंक्ति, श्रेणी (दे ७।३६)।

वडिसर—चूल्हे का मूल (दे ७।४८)।

वडी—वडी, शाक-विशेष (प्रसा ४३४)।

वड्ड—१ उद्दंड (ति ११९३)। २ उच्च, महान्—'वड्डेण सद्देणं जोक्कारोत्ति भणित' (आवहाटी १ पृ ४३)। ३ कलह (उशाटी प १७९)। ४ बड़ा (ज्ञा २।१।१८; दे ७।२९)।

वड्डंवग—बडे परिवार वाला (निभा ३६२२)।

वड्डखेड्ड—जादू का खेल, इन्द्रजाल देखे—'वट्टखिड्ड' (आवटि प ५३)।

वड्डुग—१ पात्र (बृभा ४८०६)। २ बड़ा (भ १९।७८)।

वड्डवास—मेघ (दे ७।४७)।

वड्डहुल्लि—मालाकार, माली (दे ७।४२)।

वड्ढ—१ पौ फटते-फटते, शीघ्र—'ते वड्ढे पभाए उट्ठेत्ता गया' (आवहाटी १ पृ १३७)। २ बड़ा (निचू १ पृ ९)।

वड्ढइ—वर्धकी, बढई (सम १४।७)।

वड्ढइअ—१ चर्मकार, मोची (दे ७।४४)। २ बढई (वृ)।

वड्ढणमिर—पीन, पुष्ट (दे ७।५१)।

वड्ढणसाल—पुच्छहीन, जिसकी पूछ कट गई हो वह (दे ७।४९)।

वड्ढर—गृहस्थ के प्रयोजन के लिए जादू-टोना करना (व्यभा ४।३ टी प ४९)।

वड्ढवण—१ वस्त्र का आहरण। २ बधाई, अभ्युदय-निवेदन (दे ७।८७)।

वड्ढाविअ—समाप्त किया हुआ (दे ७।४५)।

वड्ढिआ—कूपतुला, कूए से पानी ऊपर खीचने का साधन-विशेष (दे ७।३६)।

वण—१ अधिकार। २ श्वपच, चाण्डाल (दे ७।८२)।

वणइ—वन-राजि, वृक्ष-पंक्ति (दे ७।३८)।

वणण—बुनना (द १।१ टी)।

वणति—पुष्प-विशेष (अवि पृ ७०)।

वणद्धि—गायों का समूह (दे ७।३८)।

वणप्पक्कसावअ—शरभ, श्वापद-विशेष (दे ७।५२)।

वणव—दावानल (दे ७।३७)।

वणसवाई—कोयल (दे ७।५२)।

वणाय—शिकारी से आकुल, व्याध से त्रस्त (दे ७।३५)।

वणार—दमनीय बछड़ा (दे ७।३७)।

वणुल्लय—वन—'वीसमइ खणे एला-वणुल्लए' (कु पृ ३३)।

वण्ण—१ चन्दन आदि का चूर्ण—'वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ' (नि १।५)। २ अच्छ, स्वच्छ। ३ रक्त, लाल (दे ७।८३)।

वण्णग—चदन—'चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलव' (भ १६।३४)।

वण्णय—१ श्रीखण्ड, चन्दन (दे ७।३७)। २ सुगंधित चूर्ण (वृ)।

वतिभेदक—क्षुद्र जन्तु-विशेष (अवि पृ २३८)।

वतु—समूह (दे ७।३२)।

वत्तट्ठ—१ सुदर। २ बहुशिक्षित (दे ७।८५ पा)।

वत्तणासी—जलचर प्राणी-विशेष (अवि पृ ६६)।

वत्तद्ध—१ सुन्दर। २ बहु-शिक्षित (दे ७।८५)।

वत्ता—सूत्र-वलनक-यत्र, सूत्र-वेष्टन-यंत्र (प्रटी प ८०)।

वत्तार—गर्वित, अभिमानी (दे ७।४१)।

वत्ति—सीमा (बृभा २०१; दे ७।३१)।

वत्तुस्सय—वृद्ध (अवि पृ १००)।

वत्थउड—तंबू, वस्त्र से निर्मित आश्रय-स्थान (दे ७।४५)।

वत्थरिका—बिछाने का आस्तरण (अंवि पृ ७२)।

वत्थाणी—वल्ली-विशेष (प्रज्ञाटी प ३३)।

वत्थाणीय—खाद्य-विशेष—'हत्थेण वत्थाणीए भोच्चा कज्ज साधेति' (सूर्य १०।१७)।

वत्थी—तापसों की कुटिया (दे ७।३१)।

वत्थुल्ल—वनस्पति-विशेष, बथुआ (निचू ३ पृ १५६)।

वद्दिकलिअ—वलित, लौटा हुआ (दे ७।५०)।

वद्दल—१ बादल—'समोहणित्ता अब्भवद्दलए विउव्वंति' (राज १२)।
२ दुर्दिन, मेघकृत अन्धकार (दे ७।३५)।
३ छठी नरक का दूसरा नरकेन्द्रक, नरकस्थान।

वद्दलग—बादल (आवचू १ पृ १३७)।

वद्दलिया—१ बदली, छोटा बादल (आवचू १ पृ ३८५)। २ घटाटोप, मेघाडंबर (स्था ६।६२)।

वद्धणिया—झाड़ू (दे ८।१७)।

वद्धणी—समार्जनी, झाड़ू (दे ७।४१ वृ)।

वद्धमाण—१ स्कन्धारोपित पुरुप। २ स्वस्तिक-पञ्चक। ३ प्रासाद-विशेष (ज्ञाटी प ६२)।

वद्धय—प्रधान, मुख्य (दे ७।३६)।

वद्धिय—नपुसक-विशेप जिसका अडकोश छेदकर गला दिया गया हो (निचू १ पृ ४०, दे ७।३७)।

वद्धी—अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्त्तव्य (दे ७।३०)।

वद्धीसक—वाद्य-विशेष (प्र १०।१४ टी)।

वद्धीसग—वाद्य-विशेप (अनु ३।४६)।

वधूज्ज—विवाह (अवि पृ १४१)।

वधूपुत्ती—सुहागरात्री मे वधू के रक्त-खरटित वस्त्रों को देखकर स्वजन प्रसन्न होते हैं। वे उस वस्त्र को घर-घर ले जाकर गुरुजनो को सविनय दिखाते है। यह इसलिए कि सभी जान जाए कि लड़की अक्षतयोनि वाली है अर्थात् गर्भ-धारण करने मे समर्थ है—'का एसा वधूपुत्ती ? भण्णति-पढमे वासहरे भत्तुणा जोणिभेए कते तच्छोणियेण पोत्तिं खरंडियं सूरुदए सयणो से परितुट्ठो पहलकं त तं पोत्तिं घरघरेण गुरुजणपुरतो पविंदइ दसेति य, णज्जते रुहिरदंसणातो अक्खयजोणि त्ति' (अनुद्वाचू पृ ४८)। देखें—'आणदवड'।

वपू—यूभ (भ १५।८७ पा)।

वप्प—१ तनु, कृश। २ वलिष्ठ, वलवान्। ३ भूतगृहीत, भूताविष्ट (दे ७।८३)।

वप्पक—वालक—'पिल्लक-वप्पक-सिंगक-खुड्डक' (अंवि पृ १६६)।

वप्पग—खेत, क्षेत्र (निभा १२६५)।

वप्पडी—खाद्य-विशेष (अंवि पृ २४६)।

वप्पिण—१ खेतों वाला प्रदेश। २ तटों वाला प्रदेश (भटी प २३८)। ३ खेत (प्र १।१४, दे ७।८५)। ४ बसा हुआ (दे ७।८५)।

वप्पिणी—छोटी बावडी (प्र १०।१५)।

वप्पीअ—चातक पक्षी (दे ७।३३)।

वप्पीह—१ स्तूप, मिट्टी आदि का ढेर (दे ७।४०)। २ चातक पक्षी (दे ६।९० वृ)।

वप्पु—ढूह, थूभ, बावी—'इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूअ अब्भुग्गयाओ' (भ १५।८८)।

वप्पूअ—थूभ (भ १५।८७)।

वप्फलिग—असत्य (आवमटी प ५३०)।

वप्फाउल—अधिक उष्ण (दे ६।९२)।

वब्भय—कमल का मध्यभाग (दे ७।३८)।

वमणि—कपास (निचू ३ पृ ५७)।

वमनी—कपास (अनुद्वामटी प ३१)।

वमारक—थलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

वमाल—१ कलकल, कोलाहल (दे ६।९० वृ)। २ राशि।

वमालिय—पुंजीभूत, उपलिप्त—'असुइमलरुहिरकद्दम-वमालिओ गब्भवासमज्झम्मि' (कु पृ २५४)।

वमालीभूत—पुंजीभूत—'अह ण सक्केति रक्खिउ वमालीभूत, ताहे कप्प पत्थरेत्ता सव्वोवकरण बधति' (निचू २ पृ १७९)।

वम्मिका—पैरो का आभूषण—'पामुद्दिक त्ति वा वूया वम्मिका पायसूचिका' (अंवि पृ ७१)।

वम्मीसर—कामदेव, कन्दर्प (दे ७।४२)।

वम्ह—वल्मीक (दे ७।३१)।

वम्हल—कमल-केसर, किंजल्क (दे ७।३३)।

वय—गृध्रपक्षी, गीध (दे ७।२९)।

वयड—वाटिका, बगीचा (दे ७।३५)।

वयण—१ घर, गृह। २ शय्या, बिछौना (दे ७।८५)।

वयर—चूर्णित (दे ७।३४)।

वयल—१ विकसित होता हुआ, खिलता हुआ। २ कलकल, कोलाहल (दे ७।८४)।

वयली—निद्राकरी लता (दे ७।३४)।

वर—धान्य-विशेष (भ २१।१६)।

वरअ—शालि-विशेष एक प्रकार का धान्य (दे ७।३६)।

वरइ—जलचर प्राणी-विशेष व पृ ६६)।

वरइअ—धान्य-विशेष (दे ७।४९)।

वरइत्त—दुलहा (दे ७।४४)।

वरउप्फ—मृत (दे ७।४७)।

वरंड—१ प्राकार, किला। २ कपोतपाली, कबूतरों का दरबा (दे ७।८६)। ३ तृणपुंज। ४ समूह।

वरंडग—प्राकार (निभा २३८७)।

वरंडा—बरामदा, वरण्डा (जीविप पृ ३४)।

वरक—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

वरक्क—प्रावरण-विशेष—'कोयवगो वरक्को' (निचू ३ पृ ३२१)।

वरक्खु—व्याघ्र (वृटी पृ २२१)।

वरग—१ शालि-विशेष, एक प्रकार का धान्य (भ ६।१३१)। २ मूल्यवान् पात्र (आचूला १।१४३)।

वरट्ट—धान्य-विशेष (स्था ७।६०)।

वरट्टग—धान्य-विशेष (आवचू २ पृ १२८)।

वरड—अति-स्थूल, बहुत मोटा (बृटी पृ ५३)।

वरडी—१ दंश-भ्रमर के जहर को उतारने की विद्या—'राइणा वाहराविया गारुडिया भोइयमट्टचट्टाइणो इति। अपि य—जो वरडिं पि न याणइ सो वि तत्थ वाहरिओ' (उसुटी प १७४)। २ ततैया, गंधोली। ३ दश-भ्रमर, काटनेवाली मधुमक्खी (दे ७।८४)।

वरढ—स्थूल, परिवृद्ध—'थूल वड्डं वरढं ति परिवूढं ति वा पुणो' (अंवि पृ ११४)।

वरण—सेतुबंध, पुल—'वरणेन सेतुबन्धे न व्रजति' (ओनि ३० टी)।

वरवरिका—ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा, जो मांगो वह मिलेगा—इस प्रकार घोषणापूर्वक दिया जाने वाला दान—'वरवरिका घोष्यते—वरं याचध्वं वरं याचध्वमित्येवं घोषणा समयपरिभाषया वरवरिकोच्यते' (आवहाटी १ पृ ६१)।

वरसरक—खाद्य-विशेष—'सक्कुलि-वेढिम-वरसरक-चुण्णकोसग' (प्र १०।६)।

वरिल्लिया—जिसकी सगाई की गई हो वह—'सा य उग्गसेणनत्तुस्स धणदेवस्स वरिल्लिया' (बृटी पृ ५६)।

वरिसाल—वर्षावास (उसुटी प ६०)।

वरिसोलग—पक्वान्न-विशेष, खाद्य वस्तु (प्रसाटी प ५६)।

वरुअ—इक्षुसदृश तृण (दे ६।६१ वृ)।

वरुंड—एक प्रकार के शिल्पी (अनुद्वा ३६० पा)।

वरुट्ट—मयूर-पंख के शिल्पी (प्रज्ञा १ ६७)।

वरुंड—एक प्रकार के शिल्पी (अनुद्वा ३६०)।

वरेइत्थ—फल, लाभ, प्रयोजन (दे ७।४७)—'वरउप्फमारणे तुज्झ कि वरेइत्थ' (वृ)।

वरेल्ल—रोम पक्षी-विशेष (प्रज्ञा १।७६)।

वलअंगी—बाडवाली (दे ७।४३)।

वलंगणिआ—वाडवाली (दे ७।४३)।

वलग्गंगणी—वृति, बाड़ (दे ७।४३)।

वलद्द—वैल (आवहाटी २ पृ १२३)।

वलभी—यान-विशेष—'सदण-रय-वलभी-पदोलि' (अवि पृ २००)।

वलमय—शीघ्र, जल्दी—'किमागओ वच्च वलमयं तत्थ' (दे ७।४८ वृ)।

वलय—१ धान्यशाला—'कडपल्लाणं सण्णा तणपल्लाणं च देसितो वलया' (बृभा ३२६८)। २ खेत, क्षेत्र (आचूला ३।४८; दे ७।८५)। ३ घर (दे ७।८५)।

वलयणी—वृति, बाड़ (दे ७।४३)।

वलयबाहा—जहाज में स्थापित एक दीर्घ काष्ठ जिस पर ध्वजा आदि बाधी जाती है—'ससारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु' (ज्ञाटी प १४३)।

वलयबाहु—१ लम्बा काष्ठ जिस पर ध्वजा आदि बाधी जाती है, आवेल्लक (ज्ञाटी प १४३)। २ हाथ का आभूषण-विशेष, चूडा (दे ७।५२)।

वलया—१ माया (सू १।१३।२३)। २ वेला, समुद्रतट—
'तिव्वलागमुहुम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयामुहे।
तिसत्तक्खुत्तो जालेण, सइ छिन्नोदए दहे॥

वहुरा—शिवा, शृगाली (दे ७।४०)।

वहुव्वा—छोटी सास (दे ७।४०)।

वहुहाडिणी—एक स्त्री के रहते हुए ब्याही जाती दूसरी स्त्री (दे ७।५०)।

वहूपोत्ति—देखे 'वधूपुत्ती' (अनुद्वा ३१४।६)।

वहोल—छोटा जल-प्रवाह (दे ७।३९)।

वाअड—शुक, तोता (दे ७।५६ पा)।

वाइंगण—बैंगन (प्रज्ञा १।३७; दे ७।२९)।

वाइंगणी—वृन्ताकी, बैंगन का गाछ (भ २२।४)।

वाइंगिणी—बैंगन का गाछ (प्रज्ञाटी प ५२७)।

वाइग—१ मद्य—'वाइगं णाम मज्ज' (निचू १ पृ १६४)। २ बैंगन—'वाइग-पलंडु-लमुणाई' (बृभा ६०४९)।

वाइद्ध—वक्र—'वाइद्ध ति वक्रामिति वृद्धा.' (भटी पृ १२९७)।

वाइल—इस नाम का वणिक्—'तत्थ वाइलो नाम वाणिओ जत्ताए पधावितो' (आवमटी प २९६)।

वाइव—पूर्ववर्ती (अंवि पृ १९)।

वाउ—इक्षु, ईख (दे ७।५३)।

वाउक—आस्तरण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

वाउत्त—१ विट, भडुआ। २ जार, उपपति (दे ७।८८)।

वाउप्पइय—भुजपरिसर्प की एक जाति (प्र १।८)।

वाउप्पइया—भुजपरिसर्पिणी-विशेष—'वातोत्पतिका रूढ्यावसेया' (प्रटी प १०)।

वाउप्पिया—भुजपरिसर्प-विशेष (प्रटी प १०)।

वाउलग्ग—१ पुरुष का पुतला (निभा १५५)। २ सेवा, भक्ति।

वाउलि—वातूल (ज्ञा १।१।१५९)।

वाउल्ल—प्रलाप करने वाला, वाचाल (दे ७।५६)।

वाउल्लग—पुरुष का पुतला—'वाउल्लग णाम पुरिसपुत्तलगो' (निचू १ पृ ६१)।

वाउल्लय—पुतला—'जाओ मणिमयवाउल्लओ विय दारओ त्ति' (कु पृ २१२)।

वाउल्लिआ—पुतली (दे ६।९२ वृ)।

वाउल्ली—पाञ्चालिका, पुतली (दे ६।९२ वृ)।

वाऊलिय—नास्तिक (दनि ७०)।

वागली—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।

वागुरा—एक प्रकार का जूता—'अगुलिं च्छादित्ता पादावुपरि च्छादयति सा वागुरा' (निचू २ पृ ८७)।

वाघारि—लंबित—'वाघारि' लंबियभुजो' (आवहाटी २ पृ १०६)।

वाघारिय—प्रलंबित—'वाघारियलंबिअभुओ' (प्रसा ५८८)।

वाड—टक्कर (निभा ४१२३)।

वाडंतरा—कुटीर, झोंपडी (दे ७।५८)।

वाडकम्म—खेती, कृषि (उसुटी प २५१)।

वाडहिया—गर्भवती—'पुणो वाडहियासंजतिवेसेण पुरओ ठिओ' (निचू १ पृ २०)।

वाडा—भीत या वृति से परिवेष्टित स्थान-विशेष (नन्दीटि पृ १३९)। वाड़ा (राज०)।

वाडि—बाड, वृति (वृभा १०९६)।

वाडिम—गण्डकमृग, गेंडा (दे ७।५७)।

वाडिल्ल—कृमि, कीट (दे ७।५६)।

वाडी—वृति, बाड (दे ७।४३)।

वाडु—विनाश—'देशीवचनमेतत् नशन' (व्यभा ३ टी प १०३)।

वाढि—वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र (दे ७।५३)।

वाढिअ—वैश्य-मित्र (दे ७।५३ वृ)।

वाण—पूरणार्थक अव्यय—'वाणमिति पूरणार्थो निपातः' (आवहाटी १ पृ १७३)।

वाणअ—वलयकार, ककण बनाने वाला शिल्पी (दे ७।५४)।

वाणमंतर—१ व्यन्तरदेव (स्था १।१६२)। २ देवकुल, मन्दिर (वृभा १०९३)।

वाणमंतरी—देवों की एक जाति, व्यन्तरी (आवचू २ पृ ३५)।

वाणवाल—इन्द्र (दे ७।६०)।

वाणीर—जम्बू-वृक्ष, जामुन का वृक्ष (दे ७।५६)।

वातंड—वायुरोग-विशेष (अवि पृ २०३)।

वातंदविस—प्राणी-विशेष (?) (अवि पृ २२६)।

वालग—१ पात्र-विशेष (आचला ११०४)। २ शकुनी-गृह (आचू पृ ३४०)।

वालगपोतिया—जलमंदिर (सूर्यटी प ७०)।

वालग्गपोइया—१ वलभी, अट्टालिका। २ तालाव के मध्य मे स्थित छोटा प्रासाद—'वालग्गपोइयातो य त्ति देशीपदं वलभीवाचकं, अन्ये त्वाकाशतडागमध्यस्थित क्षुल्लकप्रासादमेव वालग्ग-पोइया य त्ति देशीपदाभिधेयमाहुः' (उशाटी प ३१२)।

वालग्गपोतिका—तालाव के मध्य क्रीड़ा करने का लघु प्रासाद—'वालाग्र-पोतिकाशब्दो देशीशब्दत्वादाकाशतडागमध्ये व्यवस्थितं क्रीडास्थानं लघुप्रासादमाह' (सूर्यटी प ७०)।

वालग्गपोत्तिया—१ वलभी—'वालग्गपोत्तियाओत्ति देशीयपदं वलभीवाचकम्' (उसुटी प १४८)। २ जलमंदिर।

वालप्प—पुच्छ, पूछ (दे ७।५७)।

वालवास—मस्तक का आभूषण (दे ७ ५६)।

वालिआफोस—कनक, सोना (दे ७।६०)।

वालिंजुक—१ व्यापार के लिए एक गाव से दूसरे गाव जाने वाले (ओटी पृ १९६)। २ कपड़े का व्यापारी (वृटी पृ ११५८)।

वालिका—कान की वाली, आभूषण-विशेष—'वालिका कण्णवल्लीका कण्णिका कुंडमालिका' (अंवि पृ ७१)।

वालिखरग—जलीय वनस्पति-विशेष (आचू पृ ३४१)।

वालिया—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

वाली—वाद्य-विशेष, मुह के पवन से वजाया जाने वाला तृण-वाद्य (राज ७७, दे ७।५३)।

वालीण—मत्स्य-विशेष—'वालीणा सुसुमारा कच्छपमगरा' (अंवि पृ २२८)।

वालु—दूध—'एगट्ठ णाणवंजण दुद्ध पयो वालु खीर च' (जीभा ११३२)। हालु (कन्नड)। पाल (तमिल)।

वालुंक—पक्वान्न-विशेष—'खीर - दधि-मूव-कट्टरलंभे गुड-सप्पि-वडग-वालुके' (पिनि ६३७)।

वालुंजुक—व्यापार के लिए एक गाव से दूसरे गांव जाने वाले (ओटी पृ १९६)।

वालुंडय—रोमकूप (तदु ११६)।

वालेपतुंद—कर्माजीवी (अंवि पृ १६१)।

वावअ—आयुक्त, गाव का प्रमुख (दे ७।५५)।

वावड—१ कुटुम्बी, गृहस्थ (दे ७।५४)। २ व्याकुल (वृ)।

वावडय—विपरीत मैथुन (दे ७।५८)।

वावडया—विपरीत मैथुन (पा ४३२)।

वावणी—छिद्र, विवर (दे ७।५५)।

वावदारी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

वाविअ—विस्तारित (दे ७।५७)।

वावोणय—विकीर्ण, विखरा हुआ (दे ७।५६)।

वासंदी—कुन्द का पुष्प (दे ७।५५)।

वासपडाग—सर्प की एक जाति (प्रज्ञा १।७१ पा)।

वासवार—१ तुरंग, घोडा (दे ७।५६)। २ कुत्ता।

वासवाल—श्वान, कुत्ता (दे ७।६०)।

वासाणिया—वनस्पति-विशेप (सू २।३।२२)।

वासाणी—रथ्या, गली (दे ७।५५)।

वासिय—पर्युषित, रात का बचा हुआ (खाद्य आदि)—'अच्छइ जाव पभायं वासियभत्त व्व से वसभा' (ओनि १२)।

वासीमुह—द्वीन्द्रिय जतु-विशेप, वासीमुख (उ ३६।१२८)।

वासुरुल—स्थान-विशेष, उपद्रुत स्थान (अंवि पृ २२२)।

वासुल—१ कुन्द का फूल (अंवि पृ ७०)। २ गोत्र-विशेप (अंवि पृ १४६)।

वासुली—कुन्द का पुष्प (दे ७।५५)।

वासेलिक्का—जलक्रीडा (अंवि पृ २५५)।

वाहगण—मंत्री (दे ७।६१)।

वाहगणय—मत्री (दे ७।६१ वृ)।

वाहड—भरा हुआ, परिपूर्ण—'वहुवाहडा अगाहा, वहुसलिलुप्पिलोदगा' (द ७।३६)।

वाहणा—ग्रीवा, गला (दे ७।५४)।

वाहली—लघु जल-प्रवाह (दे ७।३६)—'वाहलीशब्दः लघुजलप्रवाहवाचको देश्य एव वक्ष्यते' (दे ३।२७ वृ)।

वाहा—वालुका, रेत (दे ७।५४)।

वाहाडिया—गर्भवती (वृटी पृ १०३१)।

विजाय—लक्ष्य–'लक्खं विजायं' (पा ८४०)।

विज्जल—१ पंकिल मार्ग (द ५।४)। २ चिकने कीचड़ वाला स्थान–'स्निग्ध कर्दमाविलस्थान यत्र जनोऽतर्कित एव पतति' (जबूटी प १२४)।

विज्जुल—पंकिल मार्ग (आटी प ४०६)।

विज्झडावेउं—डांट-फटकार कर–'रायपुरिसेहि य घेत्तु पिट्टित्ता रण्णो य णीओ पासं, सिट्ठे रण्णा विज्झडावेउ वज्झो आणत्तो' (आचू पृ १८७)।

विज्झडित—व्याप्त–'बहुखंडंतरेसु वा कटगेसु विज्झडित किज्जति वा' (निचू २ पृ ६३)।

विज्झडिय—व्याप्त–'सीयउण्हखरफरुसवाय-विज्झडियमलिणपंसु-रउग्गुडियगमंगं' (भ ७।११६)।

विज्झिडि—मत्स्य की एक जाति (विपाटी प ७६)।

विज्झिडिय—मत्स्य की जाति-विशेष (प्रज्ञा १।५६)।

विटपोल्लक—ललकार, विस्वर (प्रटी प ५८)।

विट्टल—नीच–'अहमो चिलीणकम्मो पावो अह विट्टलो णिहीणो य' (कु पृ २२३)।

विट्टाल—उच्छिष्टता, अपवित्रता (प्रा ४।४२२)। [मराठी-विटाल]

विट्टालणा—अपवित्रता, उच्छिष्टता (वृटी पृ ६६६)।

विट्टालित—भ्रष्ट, उच्छिष्ट (निचू ३ पृ १३७)।

विट्टी—गठरी (ओनि ३२४ पा)।

विट्ठ—१ ऐसा स्थान जिसके चारों ओर पानी हो–'जूवयं णाम विट्ठ पाणियपरिक्खित्त' (निचू ४ पृ ५४)। २ सुप्तोत्थित, सोकर उठा हुआ।

विट्ठर—भाजन-विशेष (जंबूटी प १००)।

विड—विष्ठा–'विडित्ति विट्ठा' (प्रसा ६६)।

विडअ—राहु, ग्रह-विशेष (दे ७।६५)।

विडओलण—धाड़ा, लूट (ओटी प ४४)।

विडंकिआ—वेदिका, वेदी (दे ७।६७)।

विडप्प—राहु, ग्रह-विशेष (दे ७।६५)।

विडसण—स्वाद लेकर खाना–'विडसणं पि णेच्छामो' (निभा ४८४३)।

विडसणा—स्वाद लेते हुए थोड़ा-थोड़ा खाना—'विडसणा णाम आसादेंतो थोवं थोव खायति' (निचू ३ पृ ५१८)।

विंडिचिअ—विकराल, भयंकर (दे ७।६६ वृ)।

विडिच्चिर—विकराल, भयंकर (दे ७।६६)।

विडिम—१ वृक्ष (प्र ९।१)। २ वृक्ष का मध्य भाग। ३ वृक्ष का विस्तार (ज्ञाटी प ५)। ४ बाल मृग। ५ गेंडा (दे ७।८९)। ६ शाखा (दअचू पृ ७)।

विडिमा—प्रशाखा—'तत्थ जे खंधाओ ते साला भण्णति, सालाहिंतो जे णिग्गया ते विडिमा भण्णति' (दजिचू पृ २५५)।

विडिमी—वृक्ष—'दुमा य पायवा रुक्खा विडिमी य अगा तरू' (दनि १४), 'विडिमाणि जेसिं विज्जति ते विडिमी' (दअचू पृ ७)।

विड्डोमिअ—गण्डकमृग, गेंडा (दे ७।५७)।

विड्ड—१ प्रपंच, विस्तार (दे १।४ वृ)। २ दीर्घ, लंबा (दे ७।३३)।

विड्डर—१ आभोग। २ भयंकर (दे ७।९० पा)। ३ आडंबर।

विड्डिर—१ आभोग। २ रौद्र, भयकर (दे ७ ९०)। ३ आटोप, आडंबर (पा ६१४)।

विड्डिरिल्ला—रात्री (दे ७।६७)।

विड्डेर—नक्षत्र-विशेष, पूर्वद्वार वाले नक्षत्रों में पूर्व दिशा से जाने के बदले पश्चिम दिशा से जाने पर प्राप्त होने वाला नक्षत्र—'पूर्वद्वारिकेषु नक्षत्रेषु पूर्वदिशा गन्तव्ये अपरया गच्छतो विड्डेरम्' (विभामहेटी २ पृ ३२७)। 'जं जत्थ गमणकम्म समारभादिसु अणिभिहिय त विड्डेर विगतद्वारमित्यर्थ'. (निचू ४ पृ ३०१)।

विड्डर—गृहस्थ के लिए जादू-टोना मे प्रवृत्त होना (व्यभा ४।३ टी प ४६)।

विढणा—पार्ष्णि, एडी (दे ७।६२)।

विढत्त—अर्जित (प्रा ४।२५८)।

विणडिअ—व्याकुल—'रायउत्तविरहुव्विग्गा य गब्भभरविणडिया चिंतिउ पयत्ता' (कु पृ ७५)।

विणण—बुनना (निचू ३ पृ ५७३)।

विणाड—ढेढरा, टेटर, आंख का एक रोग जिसमे मांस उभर आता है (दअचू पृ १६७)।

विणिव्वर—पश्चात्ताप (दे ७।६८)।

वितत

वियरग—१ नदी आदि जलाशय के सूख जाने पर पानी के लिए किया जाने वाला गढा (ज्ञा १।१।१५९) । २ कूपिका, छोटाकूप—'वियरगोत्ति-कूविया' (निचू ३ पृ ५८४) ।

वियरय—१ लघु स्रोत वाला जलाशय जो सोलह हाथ विस्तृत होता है। नदी या महागर्त्त मे इसका संकुचन तीन हाथ विस्तृत होता है (व्यभा ४।३ टी प ६) । २ गर्त्त (ज्ञा १।१७।२२) ।

वियली—घर के चार कोनो मे रखा जाने वाला छोटा स्तभ—'थूणाओ होति वियली' (निभा ४२६८) ।

वियाउया—पैर फटना, बिवाई—'सीतेण वि पव्वीसु वियाउआसु फुट्टतीसु खल्लगादि पुडगे बधति' (निचू ३ पृ २३) ।

वियार—१ विस्तीर्ण—'सवियारो त्ति वित्थिन्नो' (बृभा २०२२ चू) । २ शौच-स्थान (निचू १ पृ ४४) ।

वियाल—सध्या—'वियाले त्ति सन्ध्यायाम्' (विपाटी प ६९) ।

वियावड—आकुल (ओटी प १३८) ।

वियावत्त—जीर्णशीर्ण, अपरिलक्षित—'वियावत्तं नाम अव्यक्तमित्यर्थ , भिन्न-पडिय अपागडं' (आवहाटी १ पृ १५२) ।

विरमालिय—प्रतीक्षित (पा ५७०) ।

विरय—१ लघु स्रोत वाला जलाशय जो सोलह हाथ विस्तृत होता है । नदी या महागर्त मे इसका संकुचन तीन हाथ विस्तृत होता है (व्यभा ४।३ टी प ६) । २ छोटा जल-प्रवाह (दे ७।३९) ।

विरलि—वस्त्रविशेष, डोरिया (प्रसाटी प १९१) ।

विरली—चतुरिन्द्रिय प्राणी-विशेप (उ ३६।१४७) ।

विरल्लिअ—जलार्द्र, जल से भीगा हुआ (दे ७।७१) ।

विरल्लित—विकीर्ण, विस्तारित (स्था ४।५७७) ।

विरल्लिय—विस्तारित—'जह उल्ला साडीया आसु सुक्कइ विरल्लिया संती' (विभा ३०३२) ।

विरस—वर्ष (दे ७।६२) ।

विरसमुह—काक, कौआ (दे ७।४९) ।

विरह—१ एकान्त (विपा १।६।३१, दे ७।९१) । २ कुसुभ रंग से रंगा हुआ वस्त्र (दे ७।९१) ।

विरहाल—कुसुभ रग से रंगा हुआ वस्त्र (दे ७।६८) ।

विराय—विलीन, पिघल हुआ (पा ८०२) ।

विराली—आस्तरण-विशेष (जीविप पृ ५१)।

विरिंचिअ—१ विमल, निर्मल। २ विरक्त, उदासीन (दे ७।९३)।

विरिंचिर—१ अश्व, घोड़ा। २ विरल (दे ७।९३)।

विरिंचिरा—धारा, प्रवाह–'विरिंचिरा धारेति केचित्' (दे ७।९३ वृ)।

विरिक्क—१ अपना विभाग लेकर जो अलग हो गया हो वह–'दो भाउया वाणिया ते य परोप्पर विरिक्का' (ओटी पृ ३८७)। २ पाटित, विदारित (दे ७।६४)।

विरिक्का—बिंदु, लेश (उसुटी प ३६)।

विरिज्जअ—अनुचर (दे ७।६६)।

विरुअ—१ खराब, कुत्सित (दे ७।६३)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल।

विरुंगण—१ उपद्रुत। २ छिन्न (बृभा ९०४)।

विरुंगिय—१ उपद्रुत। २ छिन्न (निचू ३ पृ २००)।

विरुंचण—विरूप, कुडौल (बृभा २५०२)।

विरूग—१ व्याघ्र। २ भेडिया (नदिटि पृ १३३)।

विरूव—१ भेड़िया–'त चरतस्स ण हायइ बल विरूव च पेच्छंतस्स भएण णं वड्डइ' (आवहाटी १ पृ २७८) २ व्याघ्र–'वग्घो त्ति विरूवो (निचू ३ पृ ४९२)।

विरेग—१ अवसर। २ विश्राम–'दिवसतो विरेगो नत्थि, रत्तिपि पडिपुच्छण-सिक्खगाईहिं सुइयं न लहइ' (उशाटी प १२९)।

विरेल्लिय—विस्तृत (ज्ञा १।१७।३६)।

विरोलिअ—मथित (पा ५५५)।

विलअ—सूर्य का अस्त होना, सूर्य की अस्तमन वेला (दे ७।६३)।

विलइय—१ अधिज्य, धनुष्य की डोरी पर चढाया हुआ। २ दीन, गरीब (दे ७।९२)। ३ नियोजित, आरोपित। ४ शिरोधार्य—'पढुम चिअ रहुवइणा उवरिं, हिअअ तुलिओ भरो व्व विलइओ' (से ३।५)।

विलउलग—लुटेरा–'लुटागा विलउलगा' (निचू ३ पृ २१९)।

विलउलय—लुटेरा (निचू ३ पृ २१९)।

विलउली—१ तलाशी (प्र ३।१३)। २ ठगने के लिए विस्वर वचन (बोलना) (प्र ३।१४)।

विलओलग—लुटेरा (बृटी पृ ८२५)।

विलओलण—धाडी, डाका (ओनि ८५)।

विलओलय—लुटेरा—'देशीपदत्वाद् लुण्टाकाः' (वृटी पृ ८२५)।

विलओली—१ ललकार, विस्वर। २ तलाशी (प्रटी प ५८)

विलंक—मास—'अविलंको न सक्केमि पातु' (दअचू पृ २७)।

विलका—तरुण स्त्री—'जोसिता धणिता व त्ति विलक त्ति विलासिणी' (अंवि पृ ६८)।

विलमा—धनुष की डोरी (दे ७।३४)।

विलय—पक्षी-विशेष (भ १२।१६१)।

विलया—वनिता, स्त्री (तंदु १६३)।

विलालु—पर्वत के बिलों मे रहने वाला प्राणी-विशेष, विडाल (अंवि पृ २२७)।

विलिंजर—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

विलिंजरा—धाना, भुने हुए जौ (दे ७।६९)।

विलिप्पिल—कीचड (निचू ३)।

विलिय—१ लज्जित—'सो उड्डाहिओ समाणो विलिओ अग्गओ गच्छइ' (उसुटी प ५५)। २ लज्जा (दे ७।६५)। ३ विप्रिय (वृ)।

विलियंध—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

विलिव्विली—कोमल और निर्बल शरीर वाली स्त्री (दे ७।७०)।

विलुंगयाम—साधु, निर्ग्रन्थ—'विलुगयामो त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चनः' (आटी प ३२९)।

विलुंपअ—कीट, कीडा (दे ७।६७)।

विलुंपिअ—१ अभिलषित, कांक्षित (दे ७।६६)। २ अशित, कवलित—'असिअं विलुपिअं वंफिअं खइअं' (पा १३४)।

विलुक्क—१ छिपा हुआ (आवमटी प ४६३)। २ विमुण्डित, सर्वथा लुचित (पिनि २१७)।

विलुत्तहिअअ—जो समय पर काम करना न जानता हो वह (दे ७।७३)।

विल्ल—१ अच्छ, स्वच्छ। २ विलसित, विलासयुक्त (दे ७।८८)। ३ सुगधी द्रव्य-विशेष जो धूप खेने मे काम आता है।

विल्लरी—१ पक्षिणी, राजहंसिनी—'विल्लरी रायहंसि त्ति कलहंसि त्ति वा पुणो' (अंवि पृ ६९)। २ केश, बाल (दे ७।३२)।

विल्लहल—१ स्फीत, तीव्र—'सललिय-विल्लहलगई' (आवनि १२५७)। कोमल। ३ विलासी (दे ७।९६ पा)।

विल्ह—धवल, सफेद (दे ७।६१) ।

विवच्चि—पैर मे बिवाई फटना—'पुडगविवच्चि सीते' (निभा ३४३२) ।

विवणिज—फेरी कर माल बेचने वाला व्यापारी (बृटी पृ ९१८) ।

विवहार—कष्ट (आवहाटी १ पृ ३०१) ।

विवाहेंडल—अल्पश्रुत, मंदबुद्धि—'तं पुण ण को ति जाणति पूएति वा, मय-मायवच्छदो विवाहेडलो, अणाढितो सव्वलोयस्स' (निचू ३ पृ २५) ।

विवित्त—मुषित, लूटित—'अद्धाणमि विवित्ता, अद्धाणे विवित्ता मुपिता इत्यर्थ.' (निचू १ पृ ८३) ।

विव्वाअ—१ अवलोकित । २ विश्रान्त (दे ७.८९) ।

विसंवाय—मलिन, मैला (दे ७।७२) ।

विसकुंभ—१ मकडी, लूता—'विसकुभा त्ति लूता भण्णति' (निचू १ पृ ७५) । २ मकडी के काटने से होने वाला विषैला फोडा-विशेष (बृटी पृ १०७२) ।

विसट्ट—१ विघटित, विश्लिष्ट (पा ८१०) । २ विशीर्ण, विदलित (भ ८।८८) । ३ विकसित—'हरिसवस विसट्टकटयकरालो' (भत्त ३०) । ४ उत्थित ।

विसट्टमाण—विदलित करता हुआ (स्था ४।५१४) ।

विसढ—१ नीराग, रागरहित (दे ७।६२) । २ नीरोग, स्वस्थ । ३ विषम (वृ) । ४ विशीर्ण (से ६।६६) । ५ आकुल-व्याकुल (से ११।८९) । ६ सहन किया हुआ ।

विसमय—भल्लातक, भिलावा (दे ७।६६) ।

विसमिअ—१ विमल, निर्मल । २ उत्थित, उठा हुआ (दे ७।९२) ।

विसर—सेना, लश्कर (दे ७।६२) ।

विसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१९) ।

विसरिया—गिरगिट—'विसरिया सरडो भण्णति' (निचू ३ पृ ६०) ।

विसलाइत—विकीर्ण—'विक्खिन्न णिक्खिन्नं विसलाइत' (अंवि पृ ८०) ।

विसारण—फल-फूल आदि के टुकड़ो को सुखाने के लिए धूप मे रखना (पिनि ५९०) ।

विसारय—धृष्ट, ढीठ (दे ७।६६) ।

विसारि—कमलासन, ब्रह्मा (दे ७।६२) ।

विसालअ—जलधि, समुद्र (दे ७।७१) ।

विसालिस—विसदृश, विभिन्न—'विसालिसेहिं ति मागधदेशीयभाषया विसदृशैः' (उशाटी प १८७)।

विसि—गज-पर्याण, हाथी की झूल (दे ७.६१)।

विसिण—रोमश, प्रचुर रोमवाला (दे ७।६४)।

विसिरा—एक प्रकार का मत्स्य-जाल (विपाटी प ८१)।

विसुयावण—सुखाना (निभा ८४५)।

विसुयावेंत—सुखाता हुआ (नि २।८)।

विसूरणा—खेद, खिन्नता—'आयासविसूरणाकलहपकंपियग्गसिहरो' (प्र ५।१)।

विसूरिय—खिन्न (से १०।७६)।

विसोवद—कौडी का बीसवा भाग—'विसोवदेण घेत्तु ठावेहि ससविखर्न णगरद्दारेण मोदगं' (दअचू पृ २६)।

विस्कल्ल—कर्दम—'विस्कल्लो देश्यां संस्कृतेऽपि' (अचि १०।६०)।

विस्सामण—वैयावृत्य (दश्रुचू प १३)।

विह—१ मार्ग (आ ८।४।५८)। २ अटवी (बृभा ७४२ टि)। ३ लंबा मार्ग, अनेक दिनो मे उल्लंघनीय मार्ग (आचूला ३।१२)। ४ कला-विशेष (नि १२।१७)।

विहई—वृन्ताकी, बैगन का गाछ (दे ७।६३)।

विहडप्फड—१ व्याकुल, व्यग्र—'जइ घडिय विहडिज्जइ घडियं घडियं पुणो वि विहडेइ। ता घडण-विहडणाहिं होहिइ विहडप्फडो देव्वो॥' (कु पृ ६६)। २ त्वरित।

विहण्ण—पीजना, धुनना (दे ७।६३)।

विहय—पिंजित, धुना हुआ (दे ७।६४)।

विहरिअ—सुरत, संभोग (दे ७।७०)।

विहलघल—व्याकुल, मूर्च्छित—'नट्ठचेयणो सिंहासणाओ मुच्छाविहलंघलो निवडिओ' (उसुटी प २३५)।

विहलंघलि—उन्मत्त—'पुरिसो विसयासत्तो विहलघलिउव्व मज्जेण' (प्रटी प ६५)।

विहल्लप्फलय—प्रसन्नता से व्याप्त—'सो णत्थि कोइ पुरिसो महिला वा तम्मि नयरमज्झम्मि। जो ण विहल्लप्फलओ कुवलयमाला-विवाहेण॥' (कु पृ १७०)।

विहसिव्विअ—विकसित (दे ७।६१)।

विहाडण—अनर्थ (दे ७।७१)।

विहाण—१ विधि, विधाता। २ प्रभात, प्रातःकाल (दे ७।९०)। ३ पूजा, अर्चा।

विहुंडअ—राहु, ग्रह-विशेष (दे ७।६५)।

विहोढ—अनादर करना, लज्जित करना (निभा ४७८२)।

वीअ—१ विधुर–चचल, अत्यंत व्याकुल। २ तत्काल (दे ७।९३)।

वीअजमण—खलिहान (दे ६।९३ वृ)।

वीचि—संकरी गली, सकीर्ण मार्ग (दे ७।७३)।

वीडक—चावल आदि खाने का साधन (निचू ३ पृ ५२१)।

वीणण—१ बीनना (आवदी प ११४)। २ प्रकट करना। ३ ज्ञापन।

वीणिया—नाला, जल-प्रवाह–'जे भिक्खू दगवीणिय····करेति' (नि १।१२)।

वीय—राशि–'वीय रासी' (अवि पृ २४१)।

वीयरग—कूपिका, छोटा कूप (निभा ५०७४)।

वीलण—पिच्छिल, फिसलन युक्त (दे ७।७३)।

वीलणी—पिच्छिल, फिसलन युक्त (अवि पृ २४३)।

वीलय—कर्णाभूषण, ताडंक (दे ६।९३ वृ)।

वीली—१ तरग, कल्लोल (दे ७।७३)। २ वीथी, पंक्ति, श्रेणी।

वीवाह—वधूपक्ष-सबधी भोज (व्यभा ९ टी प ८)।

वीसंदण—अधजले घी मे डाले हुए तदुल से बना खाद्य-विशेष–'वीसंदणं अद्धनिद्दड्ढघयमज्झछूढतंदुलनिप्फन्न' (बृभा १७१०)।

वीसु—युतक, पृथग् (दे ७।७३)।

वीसुंभण—विष्वग्भाव, पृथग्भाव (स्थाटी प २९५)।

वुंफ—बातचीत–'वुफ करेतो जाति' (आचू पृ ३५८)।

वुक्कड—विकट, भयकर–'विसयमच्छकच्छवुक्कड इदियमहामयरसमाउलं'···· जोव्वणमहासागरं' (कु पृ ७४)।

वुक्कस—१ मूग, उड़द आदि की नखिका से निष्पन्न भोजन। २ अत्यन्त नीरस भोजन (उशाटी प २९५)।

वुक्कार—गर्जन (राज २८१ पा)।

वुक्ख—वृक्ष (अवि पृ २२२)।

वुखण—विशेप प्रकार का बाज पक्षी–'वुखणसेणे व्व हरणे व सण्णिरुद्धे वा' (अवि पृ २५५)।

वुच्छ—१ विनष्ट, अवदग्ध—'देशीपदत्वाद् अवदग्ध विनष्टमिति यावत्' (वृटी पृ ३९२)। २ निवसित—'वुच्छो अमेज्झमज्झे अमुइप्पभवे असुइयम्मि' (तंदु ४१)।

वुज्झण—वहाकर ले जाना—'वुज्झणं अपोहनं पानीयेन हरणं स्यात्' (वृटी पृ १६३५)।

वुणाविय—बुनाया—'तीए दुक्खदुक्खेण छुहाए मरंतीए कत्तिऊण एक्का पोत्ती वुणाविया' (आवहाटी १ पृ २०५)।

वुण्ण—१ त्रस्त, भीत—'भयवुण्णलोयणा गच्छामो' (उसुटी प ३९; दे ७।९४)। २ उद्विग्न (दे ७।९४)।

वुन्न—भीत, त्रस्त (प्रा ४।४२१)।

वुप्पसुत्त—मस्तक की माला (अवि पृ १६३)।

वुप्फ—शेखर, शिरोभूषण (दे ७।७४)।

वुब्भण—१ डूबना (वृभा ५६३२)। २ वहा कर ले जाना (वृभा ६१८९)।

वुय—१ बुना हुआ। २ बुनवाया हुआ (प्रसा ८४९)।

वुल्लुवंत—बोलता हुआ—'अह विसरिमं वुल्लुवंतो य आलोएति' (निभा ६३९५)।

वूरुट्ठी—रूई से भरा हुआ वस्त्र-विशेष—'रूतपूरितः पटः वूरुट्ठीति यदुच्यते' (प्रसाटी प १९१)।

वेअडिअ—१ फिर से बोया हुआ (दे ७।७७)। २ खचित, जडित (पा १४०)। ३ मोती बींधने वाला शिल्पी, जोहरी।

वेअड्ड—भल्लातक, भिलावा (दे ७।६६)।

वेअल्ल—१ मृदु, कोमल (दे ७।७५)। २ असामर्थ्य (वृ)।

वेआरिअ—१ प्रतारित, ठगा हुआ। २ केश, बाल (दे ७।९५)।

वेआल—१ अन्धा। २ अन्धकार (दे ७।९५)।

वेइआ—१ पनीहारी, पानी लाने वाली स्त्री (दे ७।७६)। २ अंगूठी (वृ)।

वेइद्ध—१ ऊर्ध्वीकृत, ऊंचा किया हुआ। २ विसंस्थुल, विषम, चंचल। ३ आविद्ध, बींधा हुआ। ४ शिथिल (दे ७।९५)।

वेउट्टिया—बार-बार, पुन: पुन: (व्य ४।२१)।

वेंगी—वाड़वाली (दे ७।४३)।

वेंट—साधु का एक प्रकार—'संविग्ग णितियवासी, कुसील ओसण्ण तह य पासत्था ससत्ता वेंटा वा, अहछंदा चेव अट्ठमगा ॥' (निभा ३०९४)।

वेटक—अंगूठी–'अंगुलेयक मुद्देयकं वेटक' (अंवि पृ १६३)।

वेटल—वशीकरण-विद्या, निमित्त-शास्त्र (ओनि ४२४)।

वेंटिया—गठरी (निभा २८७)।

वेढसुरा—कलुषित मदिरा (दे ७।७८)।

वेंढि—पशु (दे ७।७४)।

वेंढिअ—वेष्टित, लपेटा हुआ (दे ७।७६)।

वेगपक्क—मांस पकाने की विधि-विशेष–'जम्मपक्काणि वेगपक्काणि य त्ति रूढिगम्यम्' (विपाटी प ८०)।

वेगल—दूरवर्त्ती–'एव तुब्भ पि पुरेकम्मकओ कम्मबधदोसो ब्रह्महत्यावद् वेगलो भवति' (बृटी पृ ५४४)।

वेग्गल—दूरवर्त्ती (प्रा ४।३७०)।

वेच्च—जटित (जीवटी प २१०)।

वेज्झल—विह्वल (भटी प ३०७)।

वेट्ठावण—बैठाना–'असंजतस्स वेट्ठावणादि पडिसिद्धं' (दअचू पृ १७७)।

वेट्ठि—बेगार–'ण बला कारिज्जति। वेट्ठिं वा मण्णति' (आचू पृ २८६)।

वेड—नौका, नाव (दे ६।६५ वृ)।

वेडइअ—वणिक्, व्यापारी (दे ७।७८)।

वेडंतिय—धातु-विशेष–'रयय-जातरूव-काय-वेडतिय-वट्टलोह' (औप १०५)।

वेडयकारि—रेशमी वस्त्र बनाने वाला (निचू ३ पृ २७१)।

वेडिअ—मणिकार, जौहरी (दे ७।७७)।

वेडिकिल्ल—संकीर्ण, जनसंकुल (दे ७।७८)–'किं लोअवेडिकिल्ले वेढसुरं देसि पाणिअ खिविअ' (वृ)।

वेडुंवक—नृपादि-कुल मे उत्पन्न (आवदी २ प ७०)।

वेडुल्ल—गर्वित, अभिमानी (दे ७।४१)।

वेड्डु—लज्जित, अपमानित–'ततेण से राया लज्जिते विलिए वेड्डे तुसिणीए सचिट्ठति' (आवचू १ पृ ४८४)।

वेढल—एक प्रकार का ग्राह (प्रज्ञा १।५८)।

वेण—नदी का विषम घाट (दे ७।७४)।

वेणिअ—वचनीयता, लोकापवाद (दे ७।७५)।

वेणुणास—भ्रमर, भौंरा (दे ७।७८)।

वेतव्वग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २४१)।

वेतालिया—किनारा, तट, देखो—'वेताली' (आवहाटी १ पृ २३७)।

वेताली—१ स्थान-विशेष, नदी आदि का तट—'मए य सव्ववेतालीओ तुज्झचएण गवेसाविताओ' (आवचू १ पृ ४६८)। २ वेताला नदी का तट—'वैतालीशब्दोऽत्र देशीवचनत्वात् वेतालातटवाची' (प्रज्ञाटी प ३३०)। ३ रथ्या, गली।

वेत्त—स्वच्छ वस्त्र (दे ७।७५)।

वेदूणा—लज्जा (दे ७।६५)।

वेध—वस्त्र-वेध, एक प्रकार का द्यूत (सू १।६।१७)।

वेप्प—भूत आदि से आविष्ट चेतना, भूतगृहीत (दे ७।७४)।

वेप्पुअ—१ शिशुत्व, बचपन (दे ७।७६)। २ भूत-गृहीत, भूताविष्ट (वृ)।

वेयडित—सुरापायी—'अजसो य सपक्ख परपक्खे एस वेयडितो त्ति' (दअचू पृ १३४)।

वेयारणिय—प्रतारण से उत्पन्न (स्थाटी प ४०)।

वेयारिऊण—ठगकर, बहकाकर—'केण वि पासंडिएण वेयारिऊण पव्वाविओ' (कु पृ १२५)।

वेयावत्त—जीर्ण-शीर्ण चैत्य (आवटि प २८)।

वेरिज्ज—१ असहाय, एकाकी (दे ७।७६)। २ सहायता (वृ)।

वेल—दन्त-मास, दान्त के मूल का मास (दे ७।७४)।

वेलंब—विडबना (दे ७।७५)।

वेलंबक—१ विदूषक (प्र ६।४ टी प १३७)। २ विडंबना करने वाला (जीव ३।६१६ टी प २८१)।

वेलंबग—विदूषक (ज्ञा १।१।७६)।

वेलंबिय—विडम्बित (आवहाटी १ पृ २८७)।

वेलणअ—१ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, लज्जारस (अनुद्वा ३०९)। २ लज्जा, शर्म (दे ७।६५ वृ)।

वेलयण—क्रीडन—'सभलि विणोयकेयण वेलयणं चिहुरगंडेसु' (व्यभा ५ टी प १७)।

वेलवण—ठगाई, वंचना—'णाणावेलवणेहि य वीवाहेयव्वाओ' (कु पृ ७८)।

वेलविअ—वञ्चित, ठगा हुआ (पा ५३७)।

वेलविका—आस्तरण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

वेला—दन्त-मास (दे ७।७४ वृ)।

वेलाइअ—१ मृदु, कोमल। २ दीन, गरीब (दे ७।९६)।

वेलागय—लोमपक्षी (जीवटी प ४१)।

वेलातिक—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

वेली—१ घर के चार कोनों मे रखा जाने वाला छोटा स्तंभ (निचू ३ पृ ३७८)। २ निद्राकरी लता (दे ७।३४)।

वेलु—१ भाला (आवहाटी १ पृ २३४)। २ चोर। ३ मुसल (दे ७।९४)।

वेलुंक—विरूप, कुत्सित (दे ७।६३)।

वेलुय—वेल का गाछ (आचूला १।११८)।

वेलुलिअ—वैडूर्य-मणि, रत्न की एक जाति-विशेष (दे ७।७७)।

वेलूणा—लज्जा (दे ७।६५)।

वेल्ल—१ पल्लव। २ विलास। ३ केश। ४ वल्ली (दे ७ ९४)। ५ मूर्ख। ६ कामपीडा। ७ ऊपर से ढकी हुई गाडी।

वेल्लरी—१ वेश्या, वारागना (दे ७।७६)। २ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

वेल्लविय—विलिप्त, पोता हुआ (से १।२६)।

वेल्लहल—१ स्फीत (आवहाटी २ पृ ५१)। २ कोमल। ३ विलासी (दे ७।९६)। ४ सुन्दर (कु पृ १४१)।

वेल्ला—१ वल्ली, लता। २ केश (दे ७।९४)।

वेल्लाइअ—संकुचित–'लज्जावेल्लाइअ इमं वालं' (दे ७।७९ वृ)।

वेल्लियकम्म—चित्रकर्म–'धीउल्लिगादिवेल्लियकम्मादि निव्वत्तियं च जाणाहि' (अनुद्वाहाटी पृ ७)।

वेवा—एक प्रकार का वाद्य–'खरमुहिसद्दाणि वा परिपरिसद्दाणि वा वेवासद्दाणि वा' (नि १७।१३९)।

वेवाइअ—उल्लसित (दे ७।७९)।

वेव्व—१ भय। २ वारण। ३ विषाद। ४ आमत्रण—इन अर्थो का सूचक अव्यय (प्रा २।१९३,१९४)।

वेसंभरा—गृहगोधा, छिपकली (दे ७।७७)।

वेसक्खिज्ज—द्वेष, शत्रुता (दे ७।७९)।

वेसण—लोकापवाद (दे ७।७५)।

वेसरी—खाद्य पदार्थ-विशेष–'एगस्स पिया च्छासी मासी अण्णस्स वेसरी' (आचू पृ १६६)।

वेसविलया—दासी–'संपत्ता मम भत्त घेत्तूण एक्का वेसविलया' (कु पृ ५९)।

वेहविअ—१ अनादर। २ क्रोधी (दे ७ ९६)। ३ वञ्चित, प्रतारित (वृ)।

वेहारुग—विहरणशील मुनि जिसका शरीर, वस्त्र आदि मैला हो और जो एक पात्र रखता हो (निचू ३ पृ ४४०)।

वोंड—चूचुक, स्तनवृन्त (ज्ञा १।१७।१४)।

वोक्किल्ल—गृह-शूर, वीरत्व का बहाना करने वाला मिथ्यावीर (दे ७।८०)।

वोक्किल्लिअ—रोमन्थ, चबाई हुई चीज को पुनः चबाना—
'उप्पाइउमसमत्था जे चव्विअचव्वणं कुणन्ति कई।
वोभीसणा फुडं ते वोक्किल्लिअकारिणो पसुणो ॥'
(दे ७ ८२ वृ)।

वोक्किकतक्क—खाद्य पदार्थ-विशेष—'पोवलिकं वा वोक्किकतक्कं वा पोवलके वा पप्पडे वा' (अंवि पृ १८२)।

वोच्चत्थ—विपरीत मैथुन (दे ७ ५८)।

वोज्झ—बोझ, भार (आवचू १ पृ २५५, दे ७.८०)।

वोज्झमल्ल—भार, बोझ (दे ७।८०)।

वोज्झर—१ अतीत। २ भीत, त्रस्त (दे ७।९६)।

वोट्टित—अपवित्र किया हुआ (व्यभा ७ टी प ८५)।

वोडाण—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।

वोडिय—मुंडित-मस्तक (उशाटी प १८१)।

वोड्ड—मूर्ख (व्यभा ६ टी प ५)।

वोण्ण—कर्म—'कम्म ति वा खुह ति वा वोण्णं ति वा कलुस ति वावज्ज ति वा वेर ति वा पको त्ति वा मलो त्ति वा एते एगट्ठिता' (निचू ४ पृ २७४)।

वोण्णमंत—लकड़हारा (सू २।२।३१)।

वोद्द—तरुण (निचू ३ पृ २६७)।

वोद्दह—तरुण—'वोद्दहजणस्स उस्सुयकर' (ज्ञा १।१६।१६३)।

वोद्रह—तरुण, युवा (दे ७।८०)।

वोद्रही—तरुणी (प्रा २।८०)।

वोभीसण—वराक, दीन, गरीब (दे ७।८२)।

वोमज्झ अनुचित वेष (दे ७।८०)।

वोमज्झिअ—अनुचित वेष का ग्रहण (दे ७।८० वृ)।

वोमीका—परिसर्प की एक जाति (अवि पृ ६९)।

वोयाण—वनस्पति-विशेष (भ २१।२०)।

वोरच्छ—तरुण, युवा (दे ७।८०)।

वोरल्ली—१ श्रावण शुक्ला चतुर्दशी को होने वाला उत्सव-विशेष (दे ७।८१)। २ श्रावण शुक्ला चतुर्दशी (वृ)।

वोरुट्टी—रूई से भरा हुआ वस्त्र-विशेष (प्रसा ६८०)।

वोल—१ कोलाहल (दे ६।९० वृ)। २ एक प्रकार का पौधा।

वोलिय—१ गत, गया हुआ (उसुटी प १४२)। २ अतिक्रांत, उल्लंघित (से ४।४८)। ३ अपगत (से १।३)।

वोलीण—१ अतीत, व्यतीत—'वोलीणा चक्कवट्टिणो बारसवि, विणस्सिहिसि तुमं' (दहाटी प ५१)। २ अतिक्रात (प्रा ४।२५८)। ३ व्यतिक्रात (पा १४१)।

वोल्लाह—उत्तम जाति का अश्व (कु पृ २३)।

वोवाल—वृषभ, बैल (दे ७।७९)।

वोव्वड—मूक, भाषा-जड (व्यभा १० टी प १०६)।

वोसट्ट—१ भरकर खाली किया हुआ (दे ७।८१) २ विकसित (प्रा ४।२५८)।

वोसट्ठ—ऊपर तक भरा हुआ (वृभा ४०४८)।

वोसेअ—उन्मुख-गत, उफना हुआ (दे ७।८१)।

वोहत्तिय—गृहीत—'एक्केण परिग्गहिता सव्वे वोहत्तिया होन्ति' (जीभा २०८२)।

वोहार—जल-वहन, पानी ले जाना (दे ७.८१)।

स

स—अथ (व्य ३।४)।

सअअ—१ शिला। २ घूर्णित (दे ८।४६)।

सअढ—लम्बा केश (दे ८।११ पा)।

सइज्झ—पड़ोसी (दे ८।१०)।

सइज्झक—प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी—'सइज्झका नाम सहवासिन प्रातिवेश्मिका इत्यर्थः' (वृटी पृ ९४०)।

सइज्झिय—१ पड़ोसी (निचू १ पृ ८)। २ पडोसीपन, प्रातिवेश्य (दे ८।१० वृ)।

सइज्झिया—पड़ोसिन (पिनि ३४२ टी) ।

सइदंसण—मनोदृष्ट, विचारों में प्रतिभासित (दे ८।१९) ।

सइदिट्ठ—मनोदृष्ट (दे ८।१९) ।

सइरवसह—धर्म के अभिप्राय से त्यक्त बैल, स्वैरवृषभ, स्वच्छन्द बैल (दे ८।२१) ।

सइलंभ—मनोदृष्ट, चित्त में प्रतिभासित (दे ८।१९) ।

सइलासय—मयूर, मोर (दे ८।२०) ।

सइसिलिंब—स्कन्द, कार्तिकेय (दे ८।२०) ।

सइसुह—मनोदृष्ट (दे ८।१९) ।

सईणा—रहर, तुवरी (दश्रु ६।३) ।

सउडि—रजाई–'पवेसिओ सउडिमज्झे हत्थो' (बृटी पृ ५८) ।

सउण—रूढ, प्रसिद्ध (दे ८।३) ।

सउलिअ—प्रेरित (दे ८।१२) ।

सउलिया—१ शकुनिका, चील (अनुद्वा १४१) । २ एक महौषधि ।

सउली—१ चील, शकुनिका (दे ८।८) । २ एक महौषधि ।

सएज्जिया—पडोसिन (ओनि १६७) ।

सएज्झअ—पड़ोसी (बृभा ३३४९) ।

सएज्झि—पडोसिन (बृभा १५३६) ।

सएज्झिग—पड़ोसी, साधर्मिक (निचू ४ पृ ९०) ।

सएज्झिया—पड़ोसिन, सखी (आवहाटी १ पृ २३५) ।

संकडिल्ल—निश्छिद्र (दे ८।१५) ।

संकर—रथ्या, मार्ग (व्यभा ८ टी प ३३; दे ८।६) ।

संकाइयग—तापसों का पात्र-विशेष (भ ११।६४) ।

संख—१ शरीर का अवयव-विशेष–'दंता संखा य गडा य करमज्झो तहेव य' (अंवि पृ ७७) । २ स्तुतिपाठक (दे ८।२) ।

संखड—कलह, झगडा (पिनि ३२४) ।

संखडि—सरस भोजन, जीमनवार (आ ६।१।१९) ।

संखद्रह—गोदावरी नदी का ह्रद (दे ८।१४) ।

संखनइल्ल—किसान की इच्छानुसार उठकर खड़ा होने वाला बैल (दे ८।१९) ।

संखलय—शम्बूक, शुक्ति के आकार का जल-जंतु-विशेष (दे ८।१६) ।

संखलि—कर्णभूषण-विशेष, शंखपत्र का बना हुआ ताडङ्क (दे ८।७)।

संखाल—शंबर नाम का मृग (दे ८।६)।

संखिल्ल—सख्येय-'णरवसभा के वणंतसखिल्ल' (कु पृ २०१)।

संखेण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

संगइ—मित्रता (ज्ञाटी प ३८)।

संगइय—मित्र-'दच्छिसि ण गोयमा ! पुव्वसंगइय' (भ २।३२)।

संगय—मसृण, चिकना (दे ८।७)।

संगरिगा—फली-विशेष (प्रसा २२६)। सागरी (राजस्थानी)।

संगलिक—फल-विशेष (अवि पृ ७१)।

संगलिग—फली (अवि पृ २४४)।

संगलिया—फली-'एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्सति' (भ १५।७२)।

संगह—घर के ऊपर का तिरछा काष्ठ (दे ८।४)।

संगा—वल्गा, घोड़े की लगाम (दे ८।२)।

संगार—सकेत-'एगतमंते संगारं कुव्वंति' (भ १५।१३४)।

संगिणेल्ली—समूह (ज्ञाटी प ६४)।

संगिल्ल—१ गायों का समूह-'सगिल्लो नाम गोसमुदायः' (व्यभा ४।२ टी प ७)। २ समूह (व्यभा ४।४ टी प २६)।

संगुलिया—समूह (आचू पृ ३२६)।

संगेल्ल—समूह (दे ८।४)।

संगेल्लि—समूह-'पिट्ठओ रहसंगेल्लि' (दश्रु १०।१६)।

संगेल्ली—१ परस्पर अवलम्बन-'ते····हत्थसंगेल्लीए····' (ज्ञा १।३।१६)। २ समूह-'संगेल्ली समुदाय. देश्योऽयं शब्द.' (जबूटी प २६५)।

संगोढण—व्रण-युक्त (दे ८।७१)।

संगोली—समूह (दे ८।४)।

संघट्ट—१ अर्ध जंघा-प्रमाण जल-'जघद्धा सघट्टो' (ओभा ३४)। २ वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।३)।

संघड—निरन्तर (आ ४।५२)।

संघडिय—मित्र-'संघडिय त्ति देशीपदमव्युत्पन्नमेव मित्राभिधायि' (उशाटी प ३६४)।

संघयण—१ शरीर (आटी प ३६२, दे ८।१४)। २ धृति-'थिरसंघयणे

—दृढकायो दृढधृतिश्च' (आटी प ३९२)। ३ अस्थि-रचना (स्था ६।३०)। ४ अस्थि-रचना का कारणभूत कर्म (समटी प ६७)।

संघयणि—अस्थि, शिरा एवं स्नायु से युक्त शरीर वाला (समप्र १८७)।

संघरिस—स्पर्धा—'सघरिसो जमलिओ तू, को सिग्घगति त्ति वच्चति तु' (जीभा १७२०)।

संघाड—१ युग्म (निचू ३ पृ ३५७)। २ प्रकार—'संघाड त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठं' (वृटी पृ ८११)। ३ जलयान (अंवि पृ १६६)। ४ ज्ञाताधर्मकथा आगम का दूसरा अध्ययन (सम १९।१)।

संघाडय—सहयोग (नि ४।२७)।

संघाडि—जैन-साध्वी का उत्तरीय वस्त्र (ज्ञा १।१६।१०७)।

संघाडो—१ प्रावरण-विशेष—'प्रायेण संघातिज्जंति त्ति संघाडी, गुणसंघाय-कारणी वा संघाडी, देसीभासातो वा पाउरणे संघाडी' (निचू ३ पृ ३२६)। २ युगल, युग्म (दे ८।७)।

संघासय—स्पर्धा (दे ८।१३)।

संघोडी—व्यतिकर, मिश्रण (दे ८।८)।

संचक्कार—अवकाश—'संचक्कारं व से दिण्णं' (कु पृ १६४)।

संचर—१ स्नान कराने वाला। २ शरीर का शोधन—परिकर्म करने वाला—'संचरो ण्हाणिया सोधओ' (निचू २ पृ २७६)।

संचारी—दूती (पा ८०४)।

संछूढ—परित्यक्त (ज्ञा १।१७।१३)।

संछोभ—संक्रामण, परावर्तन (वृभा १९७९)।

संछोभण—परिवर्तन, परावर्त्त (वृभा २३३०)।

संजत्थ—१ क्रुद्ध, कुपित (दे ८।१०)। २ क्रोध—'संजत्थो कोप इत्यन्ये' (वृ)।

संजमिअ—संगोपित, छिपाया हुआ (दे ८।१५)।

संजविअ—संगोपित (पा ६४४)।

संजोहार—ललकार—'तहा गुरवो वसभा वा संजोहारं करेंति' (निचू ४ पृ ४४)।

संजुकारक—कर्मोपजीवी (अंवि पृ १६०)।

संजुद्ध—स्पन्दनयुक्त, प्रकम्पित (दे ८।९)।

संडपट्ट—धूर्त्त (विपाटी प ७२)।

संडिब्भ—बालकों का क्रीडास्थल–'डिंभाणि—चेडरूवाणि णाणाविहेहिं खेलणएहिं खेलताण तेसिं समागमो संडिंभं' (दअचू पृ १०२)।

संडो—घोड़े की लगाम (दे ८।२)।

संडेव—पानी को लांघने के लिए रखा जानेवाला पाषाण आदि–'पडिवक्खेण उ गमणं तज्जाइयरे व संडेव' (ओनि ३१)।

संडेवग—पैर रखने के लिए पानी में रखा जाने वाला पत्थर (निचू १ पृ ७२)।

संडोलिअ—अनुगत (दे ८।१७)।

संति—बहुवचनान्त अव्यय (आचूला १५।६५)।

संथड—१ राज्य–'संथड नाम राज्यं' (व्यभा ७ टी प ६१)। २ अविभक्त, सामान्य–'साहारण सामन्न अविभत्तमच्छिन्नसंथडेगट्ठं' (व्यभा ६ टी प ६)।

संथडिअ—तृप्त (बृचू प २०८)।

संथोभ—संक्रामण, परावर्तन–'सो णिज्जति गिलाणो, अतरसम्मेलणाए संथोभो' (निभा ३०८०)।

संदट्ट—१ संबद्ध। २ संघट्ट, संघर्षण (दे ८।१८ वृ)।

संदट्टय—संलग्न (दे ८।१८)।

संदुमिअ—प्रदीप्त (पा १६)।

संदेण—भोजन–'भिण्णदेसिभासेसु जणवदेसु एगम्मि अत्थे संदेण-वजण-कुसण-जेमणाति भिण्णमत्थपच्चायणसमत्थमविप्पडिवत्तिरूवेण' (दअचू पृ १६०)।

संदेव—१ सीमा, मर्यादा (दे ८।७)। २ नदी-संगम–'संदेवो सीमा, नदी-मेलक इत्येके' (वृ)।

संधारिअ—योग्य (दे ८।१)।

संधिअ—दुर्गन्ध (दे ८।८)।

संधुक्किअ—१ प्रदीप्त (पा १६)। २ उत्तेजित।

संपडिअ—लब्ध, प्राप्त (दे ८।१४)।

संपडिका—करधनी–'कंची व रसणा व त्ति, जवूका मेखल त्ति वा। कटिक त्ति व जो वूया तधा संपडिक त्ति वा॥ (अंवि पृ ७१)।

संपणा—घेवर बनाने के लिए तैयार किया हुआ गेहूं का आटा (दे ८।८)।

संपण्णा—घेवर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने के लिए तैयार किया हुआ गेहूं का आटा (दे ८।८)।

संपत्तिआ—१ बालिका, बाला (दे ८।१८)। २ पीपल का पत्ता—'पिप्पलीपत्रवाचकोऽपि संपत्तिआशब्दो लक्ष्येषु दृश्यते' (वृ)।

संपत्ती—भवितव्यता—'तेवि संपत्तीए सयाहि सयाहि गया' (आवहाटी २ पृ २२२)।

संपत्थिअ—शीघ्र (दे ८।११)।

संपर—१ नाई। २ वस्त्रशोधक (निभा ३७०८)।

संपा—काञ्ची, मेखला (दे ८।२)।

संपासंग—दीर्घ, लम्बा (दे ८।११)।

संफ—कुमुद, चन्द्रकमल (दे ८।१)।

संफाणि—प्रासुक शीत या उष्ण जल से प्रक्षालन—'सीतेण व उसिणेण व वियडेणं धोवणा तु संफाणि' (निभा १९३९)।

संफाणित—धुला हुआ (निभा १९४३)।

संफाणिय—धुला हुआ (नि ५।१४)।

संफाली—पङ्क्ति (दे ८।५)।

संफाह—बहुत दिनों के वस्त्र एकत्रित करके एक दिन धोना (निभा १९३९)।

संफोडिउं—संयुक्त करके, मिलाकर—'संफोडिउ मेलितुमित्यर्थः' (निचू २ पृ ३१४)।

संबर—कचरा उठाने वाला (व्यभा ७ टी प ८०)।

संबलिका—बांस की टोकरी—'वेणुफलाइं ति वेलुमयी संबलिका संकोसको पेलिया करण्डको वा' (सूचू १ पृ ११६)।

संभरण—संस्मरण, स्मृति (ज्ञाटी प ७६)।

संभराविअ—स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८।२५)।

संभली—१ दूती (व्यभा ५ टी प १७, दे ८।६)। २ कुट्टनी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग कराने वाली स्त्री।

संभव—प्रसव-जरा, प्रसवजन्य दौर्बल्य (दे ८।४)।

संभारिय—१ संस्मारित, याद कराया हुआ—'मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारिय-पुव्वभवे' (ज्ञा १।१।१९१)। २ संस्मृत याद किया हुआ—'संभारिअक्खणिहणो ओत्थरइ सरेहिं मारुइं धुम्मक्खो' (से १४।६५)।

संभुल्ल—दुर्जन (दे ८।७)।
संभोएत्ता—मिश्रण करके (आचूला १।१०२)।
संल—पत्नी का भाई, साला (अवि पृ २१६)।
संवट्टि—संवृत, सकुचित, एकत्रित (उशाटी प १६२)।
संवट्टिअ—सवृत, संकोचित (दे ८।१२)।
संवणिय—परिचित—'ताहे एगं रिसिआसमपयं दिट्ठ, सा तत्थ अल्लीणा सवणिया य अणाए रिसओ' (उशाटी प ५३)।
संवर—१ शौचवादी (बृभा ३८०४)। २ बारहसिंगा (प्रटी प ६)।
संवाअअ—१ नकुल, नेवला। २ बाज पक्षी (दे ८।४८)।
संविल्लिय—सकुचित—'संविल्लियग्गसोण्ड' (उपाटी पृ ११०)।
संवेल्ल—संकुचित (भटी पृ १३११)।
संवेल्लिअ—सवृत (राज ६९, दे ८।१२)।
संसप्पिअ—कूदकर जाना (दे ८।१५)।
संसाहण—अनुगमन (दे ८।१६)।
संसाहणा—अनुगमन (दनि ३२२)।
संसुरुला—कलह, लड़ाई (निचू ४ पृ २३४)।
संहिय—विरल (प्र ४।८)।
सकराह—१ एक बार। २ एक साथ—सकराह ति सकृत् अहवा सकराहति सववहारात् युगपत् स्याद्' (अनुद्वाचू पृ ५६)।
सकह—१ तापसों का उपकरण-विशेप—'सकह वक्कल ठाण सिज्जाभड कमंडलु' (भ ११।६४)। २ दाढा (जंबूटी प १५८)।
सकहा—अस्थि, हड्डी—'वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु वहुयाओ जिण-सकहाओ सनिखित्ताओ चिट्ठति (राज २४०)।
सकुचिक—जलचर-विशेष (अंवि पृ २२८)।
सकुलिया—शकुनिका (अनुद्वा ३२१)।
सगय—श्रद्धा (दे ८।३)।
सगल—बाहरी छाल—'सगल पुण तस्स वाहिरा छल्ली' (निचू ४ पृ ६६)।
सगलग—टुकड़ा—'मोदगच्छोडियतं उच्छुसगलगं' (आचू पृ ३६७)।
सगेट्ट—निकट, समीप (दे ८।६)।
सग्गह—मुक्त (दे ८।४ वृ)।
सचक्कार—सशकित, भयभीत—'पडिणीयापि दुज्जणो सचक्कारा य सासका भवति' (निभा १७३६)।

सचिल्लय—अपचक्षु, खराब आंख वाला (प्र १।३७)।

सच्चविय—१ देखा, प्राप्त किया—'जहा ण अम्हेहिं कोइ कहिंचि सच्चविओ' (उसुटी प १९३)। २ अभिप्रेत, इष्ट (दे ८।१७)।

सच्चिलल्लय—सत्य (दे ८।१४)।

सच्चेविअ—रचित, निर्मित (दे ८।१८)।

सच्छह—सदृश (उसुटी प ८७; दे ८।९)।

सज्ज—प्रत्युत्तर—'साहूहिं वा ओतप्रोतं सवाघुवस्सए या सज्ज अलभतो उल्लंघिउं वयंतस्स...(निचू ३ पृ १०)।

सज्जअ—१ नाई। २ धोबी। ३ आगे किया हुआ, पुरस्कृत। ४ दीप्त, चमकीला (दे ८।४७ पा)।

सज्जंतिया—भगिनी (व्यभा ४।३ टी प ५२)।

सज्जण—१ गच्छ—'सज्जणोत्र गच्छो' (वृचू प २०५)। २ वस्त्र मे मांड देना (निचू ३ पृ ५७३)।

सज्जाय—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

सज्जिअ—१ नापित नाई। २ रजक, धोबी। ३ पुरस्कृत, आगे किया हुआ। ४ दीप्त (दे ८।४७)।

सज्जुक्क—नया, तरोताजा (पा ४३७)।

सज्जोक्क—प्रत्यग्र, नवीन, ताजा (दे ८।३)।

सज्झंतिग—साधर्मिक (निचू २ पृ ३७९)।

सज्झंतिय—१ सहदीक्षित (वृभा ५४२१)। २ ब्रह्मचारी।

सज्झय—कल्यपाल, कलाल—'सज्झया कल्लालगिहा इति चूर्णी विशेषचूर्णौ च' (वृटी पृ १५९७ टि)

सज्झविय—साधर्मिक, पड़ोसी (निचू २ पृ ३७९)।

सज्झिअ—१ नाई। २ धोबी। ३ आगे किया हुआ, पुरस्कृत। ४ दीप्त, चमकीला (दे ८।४७ पा)।

सज्झिलक—१ सगा भाई—'एगाम्मि गामे दो सज्झिलका, भायरो इत्यर्थ' (वृटी पृ १६५२)। २ गुरुभाई—'गुरुसज्झिलकः गुरूणां सहाध्यायी पितृव्यस्थानीय.' (वृटी पृ १४३८)।

सज्झिलग—१ साधर्मिक (निभा २३६८)। २ भ्राता (वृभा ६२५८)।

सज्झिलगा—बहिन, भगिनी (पिनि ३१६)।

सज्झिलय—भ्राता—'गुरुसज्झिलओव्व तस्स सीसो वा' (पक २५९०)।

सज्झिलिया—बहिन (निभा ४४९४)।

ट्टती—बास की टोकरी—'कलिजो णाम वंसमयो कडवल्लो सट्टती वि भण्णति' (निचू ४ पृ १६२)।

ट्टर—ऊटपटाग बातें—'सट्टरं आलजालं कुर्वंत' (बृभा ५२८४ टी)।

ट्टुर—आलजाल, व्यर्थ (निभा ४१६३)।

डसडेंत—सडता हुआ (कु पृ २२५)।

डिका—पक्षिणी-विशेष—'सडिक त्ति बलाक त्ति चक्कवायि त्ति वा पुणो' (अवि पृ ६९)।

ढ—१ केश। २ विषम। ३ स्तम्ब, गुच्छा (दे ८।४६)। ४ पाल, जहाज का बादवान।

ढअ—१ स्तम्ब, गुच्छा (बृभा ४२३०)। २ फूल (दे ८।३)।

ढि—सिंह (दे ८।१)।

णालिय—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

णिअ—१ साक्षी, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८।४७)।

ण्णत्तिअ—परितापित (दे ८।१८)।

ण्णविअ—१ चिन्तित। २ सान्निध्य, निकटता (दे ८।५०)।

ण्णा—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

ण्णाड—उत्सर्ग की संज्ञा से युक्त—'जोयणमवि गच्छेज्जा सण्णाडो थंडिलऽसती' (पक १८७२)।

ण्णि—गीला (दे ८।५ पा)

ण्णिअ—आर्द्र, गीला (दे ८।५)।

ण्णुमिअ—१ सन्निहित। २ मापित। ३ अनुनीत, अनुनययुक्त (दे ८।४८)। ४ प्रच्छादित, ढका हुआ (वृ)।

ण्णेज्झ—यक्ष (दे ८।६)।

ण्हाई—दूती (दे ८।६)।

ण्होर—लज्जा-सहित—'धुत्तेण सण्होर जेमावेत्ता सगडभरो विसज्जितो' (दअचू पृ २८)।

तपत्त—पक्षी-विशेष—'वजुलो सतपत्तो त्ति उवो कपिलको त्ति वा' (अवि पृ ६२)।

तिर—तिरोहित—'अचित्त सचित्तेण, अतिर सतिरं च ज भवे पिहित' (जीभा १५५०)।

तीण—तुवरी, धान्य-विशेष (भ २१।१५)।

सतीहत्थ—शक्ति—'पुव्वं मए भणितं मम वहु सतीहत्थो इदाणि पच्चक्ख' (निचू १ पृ ११५)।

सतेरक—मुद्रा-विशेष, सिक्का—'काहापणो खत्तपको पुराणो·· सतेरको त्ति' (अवि पृ ६६)।

सत्तत्थ—अभिजात, कुलीन (दे ८।१०)।

सत्तल्ली—शेफालिका, सुगंधित फूल वाली लता-विशेष (दे ८।४)।

सत्तावीसंजोअण—चन्द्रमा (दे ८।२२)—'सत्तावीसंजोअणमुही समरसद्दहय तुह कए सा' (वृ)।

सत्ति—१ तिपाई, तीन पाया वाला गोल काष्ठ-विशेष (दे ८।१)—'पल्लङ्क-पायसरिस तिदारुअं उद्धणिमिअआयरिसं, तं जाणसु सत्ति। २ घड़ा रखने का ऊंचा काष्ठ-विशेष—'सत्ती कलसाधारो दारु भवेत्तल्पसमसमुच्छ्रयणम्' (वृ)।

सत्तिअणा—कुलीनता (दे ८।१६)।

सत्थ—१ लीला—'ताहे देवा सत्थं साहरित्ता' (ओटी पृ ३५६)। २ गत, गया हुआ (दे ८।१)।

सत्थइअ—उत्तेजित (दे ८।१३)।

सत्थर—१ समूह (दे ८।४)। २ शय्या (वृ)।

सदुम्मणिआ—रूपवती स्त्री (दे ८।४० वृ)।

सदुय—वाद्य-विशेष (नि १७।१३६)।

सद्द—उद्भिज्ज जंतु-विशेष—'तत्थ उब्भिज्जा संखणा काकुथिका वडका······ पयुमका सद्दा तीलका इति' (अवि पृ २२६)।

सद्दाल—नूपुर (दे ८।१०)।

सन्नाड—१ मलोत्सर्ग की इच्छा—'सन्नाडोप्पीलितेण सिग्घं वोसिरित्ता' (दअचू पृ २४)। २ शौचसंज्ञाकुल (आवहाटी १ पृ २४७)।

सन्निर—पत्र-शाक—'कंदं मूलं पलवं वा, आमं छिन्नं व सन्निरं' (द ५।१।७०)।

सप्पक—बालक—'सप्पक-वच्छक-वालक-साडक' (अवि पृ १७०)।

सप्फ—१ कुमुद, कैरव—'चंदुज्जयं च कुमुयं गद्दहयं केरवं सप्फ' (पा ५८)। २ बाल तृण (कु पृ १६१)।

सप्फाय—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

सफा—वनस्पति-विशेष (भ २३।४)।

सव्वल—१ गदा (प्र ३।५)। २ भाला (प्रटी प ४८)।

समर—गीध पक्षी (दे ८।३)।

समइंछिय—अतिक्रांत (से १२।७२)।

समइच्छमाण—अतिक्रात करते हुए (भ ६।२०६)।

समइच्छिअ—अतिक्रात (दे ८।२०)।

समगुण्हिक—भोज्य पदार्थ–'समगुण्हिक त्ति वा बूया जागु त्ति कसरि त्ति वा' (अवि पृ ७१)।

समर—१ लोहार की शाला। २ स्त्रियों के साथ सम्पर्क—संबध स्थापित करने का गुप्त स्थान–'समर नाम जत्थ हेट्ठा लोहयारा कम्म करेति। अहवा समर नाम दिट्ठादिट्ठी संबंधो तासिं' (उचू पृ ३७)। ३ खरकुटी, नाई की दुकान (उसुटी प १०)।

समरसद्दहय—समवयस्क (दे ८।२२)।

समसीस—१ सदृश। २ निर्भर (दे ८।५०)। ३ स्पर्धा (से ३।८)।

समसीसी—स्पर्धा (दे ८।१३)।

समहुत्त—अभिमुख–'केई पुरिसे परसु गहाय अडवीसमहुत्तो गच्छेज्जा' (अनुद्वाहाटी पृ ४१)।

समाय—उत्सव–'उस्सय वा समायं वा' (अवि पृ १३४)।

समायोग—सैनिकवर्दी–'परिहिज्जंति समायोगे' (कु पृ १९८)।

समास—उत्सव–'उस्सयो त्ति समासो त्ति विहि जण्णो छणो त्ति वा' (अंवि पृ १२१)।

समिला—युग-कीलक, गाडी की धोंसरी मे दोनो ओर डाला जाता लकड़ी का कीलक (उ २७।४)।

समीखल्लय—छोंकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट (दश्रुचू पृ ८)।

समीज्झुक्खर—शमी वृक्ष की शाखा (आवहाटी २ पृ १६)।

समुइ—१ अभ्यास–'समुइ ति देशीवचनत्वाद् अभ्यासम्' (वृटी पृ ४१४)। २ स्वभाव (व्यभा ७ टी प २१)।

समुग्गिअ—१ प्रतीक्षित (दे ८।१३)। २ प्रतिपालित (वृ)।

समुच्छणी—संमार्जनी, झाडू (दे ८।१७)।

समुच्छिअ—१ तोषित, सतुष्ट किया हुआ। २ समारचित। ३ अंजलिकरण (दे ८।४९)।

समुत्तइत—गर्वित (निचू २ पृ १००)।

समुत्तइय—गर्वित–'ओच्छाहिओ परेण व, लद्धिपससाहि वा समुत्तइओ। अवमाणिओ परेण य, जो एसइ माणपिंडो सो॥ (पिनि ४६५)।

समुद्दणवणीअ—१ अमृत। २ चन्द्र (दे ८।५०)।

समुद्दहर—जलगृह (दे ८।२१)।

समुद्देस—१ भोज। २ सूर्यमडल (जीचू पृ ६)।

समुप्पिजल—१ अयश। २ रज (दे ८।५०)।

समोसिअ—१ पड़ोसी। २ प्रदोष, सायंकाल। ३ वध्य (दे ८।४६)।

समोसितग—पडोसी (निचू २ पृ १५४)।

समोसितिया—पडोसिन (दअचू पृ ५२)।

समोसियग—साधर्मिक, पड़ोसी–'सेज्जगो समोसियगो' (निचू २ पृ २७२)।

सम्म—भुजपरिसर्प की एक जाति–'देशविशेषतो वेदितव्याः' (जीवटी प ४०)।

सम्मिका—कान का आभूषण-विशेष–'सासा-सम्मिका-वतसक-ओवास-कण्णपीलक' (अंवि पृ १८३)।

सयक्खगत्त—द्यूतकार, जुआरी (दे ८।२१)।

सयग्घी—घरट्टी, चक्की (दे ८।५)–'रदसंफालिसयग्घी ण हु थक्कइ सण्णिअम्मि सुक्के अ' (वृ)।

सयज्झिया—पडोसिन (पिनि ३४२)।

सयढा—लबे बालों वाली (दे ८।११)।

सयत्त—मुदित, प्रसन्न (दे ८।५)।

सयराह—एक साथ, युगपत्–'सयराहेण पणट्ठाइ जाण चत्तारि पुव्वाइ' (ति ८०२)।

सयराहं—१ युगपत्–'सयराहमिति देशीवचन युगपदर्थाभिधायकम्' (आवहाटी १ पृ १००)। २ एकबार (अनुद्वामटी प १६३)। ३ शीघ्र (दे ८।११)। ४ अकस्मात्–'अक्खसोयप्पमाणमेत्तपि जलं सयराह उत्तरित्तए' (औप १२२)।

सयराहा—युगपत् (विभा ६५६)।

सयराहु—१ एकसाथ। २ शीघ्र–'सयराहु–युगपत्तूर्णं वा' (आवदी प ७४)।

सरंड—भुजपरिसर्प की एक जाति (जीवटी प ४०)।

सरग—बास के छीके के आकार का भाजन (जीव ३।५८७)।

सरड-सरड—भोजन करते समय होने वाला शब्द (ओटी प १८७)।

सरडीभूत—वह फल जो पकता नही (निचू ३ पृ ४८५)।

सरडु—कोमल–'पुप्फाण पत्ताण सरडुफलाणं तहेव हरियाणं' (पिनि ४५)।

सरडुय—वह फल जिसमे अभी गुठली न बनी हो (आचूला १।११०)।

सरत्ति—सहसा, अभी (दे ८।२)।

सरभेअ—स्मृत, याद किया हुआ (दे ८।१३)।

सरल—वृक्ष-विशेष, चीड (प्रज्ञा १।४३)।

सरली—चीरिका, भींगुर (दे ८।२)।

सरलीआ—१ श्वावित् नाम का प्राणी, साही (दे ८।१५)। २ कीटविशेष (वृ)।

सरह—१ वेतसवृक्ष। २ सिंह (दे ८।४७)।

सरा—माला (दे ८।२)।

सराह—गर्व से उद्धत (दे ८।५)।

सराहअ—सर्प (दे ८।१२)।

सरिका—भाजन-विशेष—'करोडी कसपत्ति त्ति पालिका सरिक त्ति वा' (अवि पृ ७२)।

सरिभरी—समानता—'तओ जाया दोण्ह वि सरिभरी' (उसुटी प १९१)।

सरिया—मोतियों की माला—'वरमउड-सरिय-कुडल' (प्र ४।४)।

सरिवाअ—आसार, तेज वर्षा (दे ८।१२)।

सरिसाहुल—सदृश (दे ८।९)।

सरेवअ—१ हंस। २ घर का जल बहने का नाला, मोरी (दे ८।४८)।

सरोडुअ—वह फल जिसमे अभी गुठली न पड़ी हो (आचू पृ ३४१)।

सरोडुग—काष्ठपात्र, दर्वी (आचू पृ ३४१)।

सलली—सेवा (दे ८।३)।

सलहत्थ—कड़छी आदि का हत्था (हस्तक) (दे ८।११)।

सलेट्ठुग—समूल, मूल-सहित—'ततो गोपालेण असद्दहंतेण ओसरिऊण सलेट्ठुगो उप्पाडिओ एगंते पडिओ' (आवहाटी १ पृ १४२)।

सल्ल—सर्प की एक जाति (सू २।३।८०)।

सल्लग—सर्प की जाति-विशेष (प्र १।८)।

सल्लिका—साली—'रमा त सुण्ह सावत्ती सल्लिका मेघुण त्ति वा' (अंवि पृ ६८)।

सल्ली—१ भुजपरिसर्पिणी (जीव २।९)। २ साली (अवि पृ २१९)।

सवडंमुह—अभिमुख, सम्मुख—'सवडमुह वलंतो कालो व्व अकारणे कुद्धो' (उसुटी प ८५, दे ८।२१)।

सवडहुत्त—सम्मुख—'सा तस्स निवट्टमाणो दंडियस्सेव सवडहुत्तो गओ' (उसुटी प ५५)।

सवडी—उत्तरीय वस्त्र–'संघाडी णाम सवडी' (निचू २ पृ ३१२)।

सवलाहिका—जलचर प्राणी-विशेष (अवि पृ २२७)।

सवाअ—बाज पक्षी (दे ८।७)।

सवार—प्रातःकाल (बृटी पृ ५७६)।

सवास—ब्राह्मण (दे ८।५)।

सविस—सुरा, मदिरा–'बुद्धिविहूणा संभवगयव्व सविसं विसं ति ण मुणन्ति' (दे ८।४)।

सविहोढ—चोरी के माल से युक्त (निचू ३ पृ ५०२)।

सव्वल—कुत, वर्छा (कु पृ ४०)।

सव्वला—कुशी, लोहे का अस्त्र-विशेष (प्र १।२८; दे ८।६)।

सव्वावंति—सर्व, सब–'एआवन्ती सव्वावन्ती ति एतौ द्वौ शब्दौ मागधदेशीभाषाप्रसिद्धया एतावन्त सर्वेऽपीत्येतत्पर्यायौ' (आ १।७ टी प २६)।

ससबिंदु—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

ससबिंदुक—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

ससराइअ—निष्पिष्ट, पिसा हुआ (दे ८।२०)।

सह—१ सहायक, समर्थ (सू १।३।२३)। २ योग्य (दे ८।१)।

सहउत्थिआ—दूती, संदेशवाहिनी (दे ८।६)।

सहगुह—उल्लू (दे ८।१६)–'संखलयदंत हिण्डसि जं बाहिं सहगुहो व्व राईसु' (वृ)।

सहज्झय—पड़ोसी (कु पृ २२४)।

सहण—साथ–'सहणं ति देसीभासा सहेत्यर्थः' (सूचू १ पृ १०७)।

सहत्थकारी—दक्ष, निपुण (अवि पृ ६८)।

सहरला—महिषी, भैंस (दे ८।१४)।

सहिणग—वस्त्र-विशेष (जीव ३।५६५)।

सहोढ—चोरी की वस्तु-सहित–'सहोढ गहितो पलंवठाणेसु' (निभा ४७८२)।

साइ—कमल-केसर, किंजल्क (दे ८।२२)–'सालतले सारिठिआ अन्चइ चण्डि ससाइपउमेहिं' (वृ)।

साइअ—१ सस्कार (दे ८।२५)। २ आलिगन।

साइज्जिअ—अवलम्बित (दे ८।२६)।

साइतंकार—स-प्रत्यय, विश्वस्त—'जं च राएण उल्लवियं साइतकारो तेण तं पत्तए लिहियं' (आवहाटी २ पृ १४२)।

साइयंकार—विश्वस्त—'पुच्छा समणे कहण साइयंकारसुमिणाई' (पिभा ३३)।

साउल्ल—अनुराग, प्रेम (दे ८।२४)।

सांड—सांड, वृषभ (व्यभा ४।२ टी प २०)।

साकिज—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

सागारिय—मैथुन—'जे छेए से सागारियं ण सेवए—सागारियं मेहुणं ससमयवण्णो वा' (आ ५।१० चू)।

साडक—बालक—'सिगक-खुद्दक-बालक-साडक' (अंवि पृ १६६)।

साणइअ—उत्तेजित (दे ८।१३)।

साणुप्पग—प्रभात—'सानुप्रगे—प्रत्यूषवेलाया लभ्यते या भिक्षा' (वृभा १६७६ टी)।

साणुप्पय—दिन का अन्तिम प्रहर—'साणुप्पओ णाम चउभागावसेसचरिमाए' (निचू २ पृ २६७)।

साणुप्पाय—दिवस का अन्तिम प्रहर (नि ४।१०८ पा)।

साणुवेला—प्रभात—'जाव जणो ण सचरति ताव साणुवेलाए दोसीणं तक्कं वा गेण्हति' (निचू ४ पृ १२२)।

साणूर—देवालय, देवमदिर (दे ८।२४)।

साधी—क्रम, पंक्ति (निचू ४ पृ २३८)।

साभरग—रुपया, सिक्का—'साभरग त्ति देशीवचनाद् रूपकाः' (वृटी पृ १८६)।

सामंती—समभूमि (दे ८।२३)।

सामग्गिअ—१ चलित। २ अवलम्बित। ३ पालित, रक्षित (दे ८।५३)। ४ आलिंगित (पा १५१)।

सामच्छण—मत्रणा, पर्यालोचन (वृभा ११६१)।

सामच्छिय—पर्यालोचित, सुचिंतित (उसुटी प ७)।

सामत्थ—मंत्रणा, पर्यालोचन (व्यभा ४।३ टी प ५२)।

सामत्थण—पर्यालोचन—'सामत्थणं देशीवचनतः पर्यालोचनं भण्यते' (आवहाटी १ पृ ७३)।

सामरि—शाल्मली, सेमर का पेड़ (दे ८।२३)।

सामाइत—१ वह व्यक्ति जिसको रात्री में नहीं दिखता, रात्री-अन्धक।
२ कृपक (दअचू पृ ५१)।

सामिअ—दग्ध (दे ८।२३)।

सामिणी—स्त्री का संबोधन (द ७।१६)—'सामिणित्ति सव्वदेसेसु, सामिणीगोमिणीओ चाटुवयणं' (दअचू पृ १६८)।

सामुंडुय—तृणविशेष, वरु (पा ३७३)।

सामुद्द—इक्षु-सदृश तृण (दे ८।२३)।

साय—१ महाराष्ट्र का एक नगर। २ दूर (दे ८।५१)।

सायंकार—सत्यंकार, सत्य-करण (स्था १०।९६)।

सायंदूर—महाराष्ट्र का एक नगर (दे ८।५१ वृ)।

सायंदूला—केतकी, केवडे का गाछ (दे ८।२५)।

सायमंडुक्कि—वनस्पति-विशेष (भ २१।२०)।

सारमिअ—स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८।२५)।

सारवण—१ समारचन, सम्मार्जन। २ निष्क्रिय (ओटी प ४१)।

सारविय—साफ किया हुआ (वृभा १५५१, दे ८।४६)।

सारा—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)।

साराडि—आटी पक्षी, शरारी पक्षी (दे ८।२४)।

सारि—ऋषि का आसन-विशेष (पा ६५४)।

सारिकह—गृहस्थ, शय्यातर—'सारिकह त्ति सागारिकः—शय्यातर.' (वृटी पृ ३९३)।

सारिच्छिआ—दूर्वा, दूब (दे ८।२७)।

सारित—आहूत, आकारित—'आरिओ आगारितो सारितो वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ २४४)।

सारी—१ वृसी, ऋषियों का आसन (दे ८।२२)। २ मिट्टी—'सारी मृत्तिकेत्यन्ये' (वृ)। ३ मैना, पक्षि-विशेष (अवि पृ २५८)।

साल—१ छाल—'वाहिरा छल्ली साल भण्णइ' (निचू ३ पृ ४८१)।
२ अच्छिन्न छल्ली—'नखादिभि अक्खुण्णं साल भणति' (निचू ३ पृ ४८२)।

सालंकी—सारिका, मैना (दे ८।२४)।

सालंगणी—अधिरोहिणी, सीढी (दे ८।२६)।

सालग—१ रस, गिरी (आचूला ७।२९)। २ बाहरी छाल (निचू ४ पृ ६५)। ३ लम्बी शाखा।

सालहिया—सारिका, मैना (प्रश्नटी प ६३, दे ८।२४)।

सालही—सारिका, मैना (दे ८।२४)।

साला—शाखा (सू २।२।२३; दे ८।२२)।

सालाका—पक्षिणी-विशेष–'कीरी मदणसलाग त्ति सालाका कोकिल त्ति वा' (अंवि पृ ६९)।

सालाकालिक—गोल खाद्यपदार्थ–'पेंडिका वा पप्पडे वा मोरेंडकाणि वा सालाकालिकं वा अबट्टिकं वा' (अंवि पृ १८२)।

सालाणअ—१ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह (दे ८।२७)। २ स्तुत्य, स्तुति-योग्य (वृ)।

सालिंगणवट्टिय—शरीर-प्रमाण वाले उपधान वाला–'सहालिंगनवर्त्या-शरीरप्रमाणोपधानेन यत् तत् सालिंगन-वर्त्तिकम्' (ज्ञाटी प १७)।

सालिका—एक प्रकार की नौका–'णावा पोतो कोट्टिम्रो सालिका तप्पको' (अंवि पृ १६६)।

सालिभ—पर्वत की गुफा में रहने वाला प्राणी-विशेष–'अच्छभल्ला तरच्छा सालिभा सेधका' (अंवि पृ २२७)।

सालुअ—१ शम्बूक, शंख। २ शुष्क यव आदि धान्य का अग्रभाग (दे ८।५२)।

सालुग—शालि, यव आदि का अग्रभाग–'सालि-जव-अच्छि-सालुग, णिस्सरणं मासमुग्गमादीसु' (बृभा ३३०७)।

सावअ—१ शरभ, श्वापद पशु-विशेष (दे ८।२३)। २ बालों की जड़ में होने वाला क्षुद्र कीट विशेष।

सासवुल—कपिकच्छू, कवाछ का पौधा (दे ८।२५)।

सासा—कान का आभूषण–'सासा-सम्मिका-वतंसक-ओवास-कण्णपीलक' (अंवि पृ १८३)।

सासेरा—यान्त्रिक नर्तकी–'देशीपदत्वाद् यन्त्रमयी नर्त्तकी' (बृटी पृ १६४५)।

साह—१ बालू। २ उल्लू। ३ दधिसर, दही की मलाई (दे ८।५१)। ४ प्रिय, पति।

साहंजण—गोक्षुर, गोखरू (दे ८।२७)।

साहंजय—गोक्षुर, गोखरू (दे ८।२७)।

साहणा—कथन (व्यभा ६ टी प १९)।

साहरअ—मोहरहित (दे ८।२६)।

साहरक—रुपया–'साहरको णाम रूपक.' (निचू २ पृ ९५)।

साहस—परदारगमन—'साहसमिति परदारगमनम्' (सूचू १ पृ १०५) ।

साहि—१ ईरान देश का सामन्त—'तत्थ एगो साहिन्नि राया भण्णति' (निचू २ पृ ५९) । २ राजमार्ग—'साहिशब्दो राजमार्गे देशी' (से १२।६२) ।

साहिअय—कथित, प्रतिपादित । (पा १४५) ।

साहिणिया—गीतिका—'तरुणा सूरजुवाणा इमं साहिणिय गायति' (आवहाटी २ पृ ४५) ।

साहिय—कथित (आ ८।८।१२) ।

साहिलय—मधु, शहद (दे ८।२७) ।

साही—१ छोटा दरवाजा, खिडकी—'साही पुरोहडे वा उवस्सए मत्तगम्मि वा णिग्गिरे' (ओनि ६२२) । २ मार्ग, रास्ता—'नोघरंतरऽणेगविह वाडग साही निवेसण गिहेसु' (पिनि ३३४) । ३ मुहल्ला, रथ्या (दशचू पृ ४७; दे ८।६) । ४ गृहपक्ति—'घरपंती साही भण्णति' (निचू २ पृ २०६) ।

साहीय—गृहपंक्ति (बृभा २२१०) ।

साहुली—१ शाखा (निचू १ पृ ८५; दे ८।५२) । २ वस्त्र । ३ भौंह, भ्रू । ४ भुजा । ५ सदृश । ६ कोयल । ७ सखी (दे ८।५२) । ८ कटिवस्त्र (पा ११७) । ९ मयूर-पिच्छ ।

साहेज्जअ—अनुगृहीत (दे ८।२६) ।

सिअ—चवर—'से सिएण वा विहुयणेण वा....न फुमेज्जा' (द ४ सूत्र २१) ।

सिअंग—वरुण, जलदेवता (दे ८।३१) ।

सिआली—डमर, राष्ट्रविप्लव (दे ८।३२) ।

सिइ—सीढी (पिनि ४७३) ।

सिउंठा—साधारण वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३५) ।

सिउंढि—साधारण वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४८।१) ।

सिखल—नूपुर, घुघरू (दे ८।१०) ।

सिग—कृश, दुर्बल (दे ८।२८) ।

सिगक—बालक (अंवि पृ १६९) ।

सिगग—पानी छिड़कने का पात्र-विशेष—'सिंचिज्जइ सिगगादिणा' (निचू ४ पृ ४७) ।

सिगणा—१ याचना । २ पहचान—'मा तस्स पुव्वसामी मिगणं करिस्सति' (निचू ३ पृ ४६२) ।

सिंगनाइय—संघ का कार्य (नदीटि पृ १६२) ।

सिंगय—तरुण (दे ८।३१) ।

सिंगरेवाणिय—कर्माजीवी (अवि पृ १६०) ।

सिंगा—फली (आचू पृ ३४१) । सिंगा (गुजराती, मराठी, कन्नड़) ।

सिंगाडय—गले का हार, आभूषण (कु पृ ८३) ।

सिंगालक—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३८) ।

सिंगिका—बालिका—'दारिया बालिया व त्ति सिंगिका पिल्लिक त्ति वा' (अंवि पृ ६८)

सिंगिणी—गाय (दे ८।३१) ।

सिंगिरिड—चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५१) ।

सिंगिरीडि—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१४७) ।

सिंगेरिवम्म—वल्मीक (दे ८।३३) ।

सिंगुग्गु—वनस्पति-विशेष (अवि पृ २३२) ।

सिंघाडय—राहु का नाम—'राहुस्स ण देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—सिंघाडए जडिलए' (भ १२।१२३) ।

ि अ—राहु (दे ८।३१) ।

सिंटी—नाक छीकने का शब्द (आवचू १ पृ ३०) ।

सिंड—मोटित, मोडा हुआ (दे ८।२९) ।

सिंढ—मयूर, मोर (दे ८।२०) ।

सिंढा—नासिका-नाद, नाक की आवाज (दे ८।२९) ।

सिंढिय—श्लैष्मिक (व्यभा १० टी प ३) ।

सिंद—खजूर (आवहाटी १ पृ १४८) ।

सिंदवासि—वृक्ष-विशेष (अवि पृ ७०) ।

सिंदि—खजूरी—'सिंदि—खज्जूरी' (आवचू १ पृ ३१६) ।

सिंदी—खजूरी—'सिंदिकंदयेण आहणामित्ति पहावित्तो, सिंदी—खजूरी' (आवहाटी १ पृ १४८; दे ८।२९) ।

सिंदीर—नूपुर (दे ८।१०) ।

सिंदु—रस्सी (दे ८।२८) ।

सिंदुरय—१ राज्य । २ रज्जु (दे ८।५४) ।

सिंदुवण—अग्नि (दे ८।३२) ।

सिदोल —खजूर (पा ३६८)।
सिदोला—खजूरी, खजूर का पेड़ (दे ८।२९)।
सिपुअ—भूतगृहीत, भूताविष्ट (दे ८।३०)।
सिवलि—शाल्मली वृक्ष (भ ७।१३)।
सिवलिगि—शाल्मली वृक्ष—'सिवलिगि विरुव्वित्ता तयाऽभिळणं कड्ढेंति' (सूचू १ पृ १२६)।
सिवाडी—नाक से होने वाली आवाज (दे ८।२९)।
सिवीर—पलाल (दे ८।२८)।
सिभ—श्लेष्म, कफ (प्र १०।६)।
सिव—नाव के बीच का स्तंभ जहां पाल बांधा जाता है (निचू १पृ७४)।
सिहलिआ—शिखा, चोटी (पा ६४)।
सिकुत्थी—जलचर परिसर्प-विशेष (अंवि पृ ६९)।
सिकूवाली—जलचर परिसर्प-विशेष (अंवि पृ ६९)।
सिक्क—छींका (कु पृ २२)।
सिक्कगणंतम—छींके का आच्छादन—'सिक्कगणंतओ उ पोणओ उच्छादणं भण्णति' (निचू २ पृ ३८)
सिक्कगणंतग—छींके का आच्छादन (नि १।१३)।
सिक्कडि—डाकिनी (तसुटी प ८०)।
सिक्कणंतग—छींके का आच्छादन (निचू २ पृ ३७)।
सिक्कयंतय—छींके का ढक्कन,—'अह सिक्कयंतयं पुण, सिक्कतओ पोणओ मुणेयव्वो' (निभा ६४५)।
सिक्कर—खंड, टुकड़ा—'सयसिक्करे गओ' (उसुटी प ४२)।
सिगिला—जलचर परिसर्प-विशेष (अंवि पृ ६९)।
सिगिलि—प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३७)।
सिग्ग—१ परिश्रम—'सिग्गत्ति देशीपदमेतत् परिश्रम इत्यर्थः' (व्यभा ४।४ टी प ९)। २ श्रांत, थका हुआ (ओनि २४;दे ८।२८)।
सिग्गअ—श्रम (ओटी प ६२)।
सिग्गड—कला-विशेष (कु पृ १५०)।
सिचकत—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ १४१)।
सिज्जूर—राज्य (दे ८।३०)।

सिज्झिया—साथ मे रहने वाली, पड़ोसिन (बृभा १७२५) ।

सिट्टर—चेष्टा—'छेदणादिसिट्टरेहिं अच्छति' (निचू २ पृ ५) ।

सिण्हक—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३) ।

सिण्हा—१ ओस, कुहरा (पव ८०; दे ८।५३) । २ हिम (दे ८।५३) ।
३ शिशिर—'सिण्हा शिशिरे देशी' ।

सिण्हालय —फल-विशेष (अनु ३।५१) ।

सित—चंवर—'सितं चामरं' (दअचू पृ ८९) ।

सिति—सीढी (जीभा ३२९) ।

सितीय—१ शिविका । २ निश्रेणी (अंवि पृ ३१) ।

सित्थ—१ जीवा, धनुष्य की डोरी—'सित्थं जीवा गुणो पडंचा य'
(पा २७७) । २ मत्स्य की जाति-विशेष (अंवि पृ २२८) ।

सित्था—१ लार, लाला । २ जीवा, धनुष की डोरी (दे ८।५३) ।

सित्थि—मत्स्य (दे ८।२८) ।

सिद्ध—परिपाटित, विदारित (दे ८।३०) ।

सिद्धत्थ—रुद्र, महादेव (दे ८।३१) ।

सिप्प—पलाल, तृण-विशेष (दे ८।२८) ।

सिप्पिका—सीप, घोंघा (अंवि पृ २६७) ।

सिप्पिय—पलाल, तृण-विशेष (भ २१।१९) ।

सिप्पिर—तृण-विशेष (प्रज्ञाटी प ३३) ।

सिप्पिसंपुड—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४९) ।

सिप्पी—सूई (निचू १ पृ ५२) ।

सिब्भ—श्लेष्म (भ ७।११९) ।

सिय—चामर (द ४।२१) ।

सियलिया—रोग-विशेष (निचू २ पृ २१५) ।

सियवल्ली—वृक्ष-विशेष (आचू पृ ३७३) ।

सियाण—श्मशान (व्यभा ७ टी प ७६) ।

सिंरिग—विट, लम्पट (दे ८।३२) ।

सिरिद्दह—पक्षियो का पान-पात्र (राजटी पृ १०५) ।

सिरिद्दही—पक्षियों का पानपात्र (दे ८।३२) ।

सिरिमुह—मदमुख, जिसके चेहरे पर नशे की झलक हो (दे ८।३२) ।

सिरियक—गुल्म-विशेष (अंवि पृ १४१) ।

सिरिली—कन्द-विशेष (भ ७।६६)।

सिरिवअ—हंस (दे ८।३२)।

सिरिवच्छीव—गोपाल, ग्वाला (दे ८।३३)।

सिरिवेट्ठक—उद्भिज्ज जंतु-विशेष (अवि पृ २२६)।

सिलअ—उञ्छ, गिरे हुए अन्नकणों का ग्रहण (दे ८।३०)।

सिलंब—बालक, बच्चा (पा ६५)।

सिलिका—शलाका—'दढवज्जसिलिकाणिम्मवियं पिव तुह हियय'
(कु पृ २३)।

सिलिंब—शिशु (दे ८।३०)।

सिलेच्छिय—मत्स्य की एक जाति (जीवटी प ३६)।

सिल्लि—रज्जु, रस्सी (उसुटी प ३१६)।

सिल्हा—शीत—'सिल्हा शीते देशी' (से १२।७)।

सिव्वणी—१ सिलाई (निचू ३ पृ ६०)। २ सूची, सूई (नंदीटि पृ १३८)।

सिव्विणी—सूची, सूई (दे ८।२९)।

सिव्वी—सूई (दे ८।२९)।

सिसिर—दही (दे ८।३१)।

सिस्सिरिली—कन्द-विशेष (उ ३६।९७)।

सिहंड—चोटी (पा ६४)।

सिहंडइल्ल—१ बालक। २ दधिसर, दही की मलाई। ३ मयूर (दे ८।५४)।

सिहरिणी—सिखरन, दही-चीनी से बना खाद्य-विशेष (प्र १०।६;
दे ८।३३)।

सिहरिल्ला—सिखरन, दही-चीनी से बना खाद्य-विशेष (दे ८।३३)।

सिहि—कुक्कुट, मुर्गा (दे ८।२८)।

सिहिण—स्तन (दे ८।३१)।

सिहिरिणी—दही और चीनी से बना खाद्य-विशेष (आचू पृ ३३६)।

सीअ—सिक्थक, मोम (दे ८।३३)।

सीअउरय—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३२)।

सीअणय—१ दुग्धपारी, दूध दोहने का पात्र। २ श्मशान (दे ८।५५)।

सीअल्लि—१ हिमकाल मे होनेवाला मेघाच्छन्न दिन। २ झाड़ी, लतागहन
(दे ८।५५)।

सीआलोयय—१ चन्द्रमा। २ हिमऋतु (से ३।४७)।

सीइआ—झड़ी, निरन्तर वृष्टि (दे ८।३४)।

सीई—सीढी, नि.श्रेणी (पिनि ६८)।

सीउक—मस्तक का आभूषण-विशेष (अवि पृ ६४)।

सीउग्गय—सुजात, कुलीन (दे ८।३४)।

सीकवल्लोकी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

सीकुंडी—छोटा मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

सीकूणिक—जलज प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२९)।

सीडा—फल-विशेष—'रातण-तोडण-सीडा लउसु तुबुरु पिप्पलफलेसु' (अंवि पृ २३८)।

सीत—चामर—'सीतं चामरं भण्णइ' (दजिचू पृ १५६)।

सीता—शरीर का अवयव-विशेष—'णासिका कण्णपालीओ थूणा सीता य तालुका' (अवि पृ ६६)।

सीताण—श्मशान (निभा ६११२)।

सीतिय—सोपान, सीढी—'सोमाणे सीतिय वा वि' (अवि पृ ३३)।

सीपिंजुला—पक्षिणी-विशेष—'उलुकी मालुका व त्ति सेणा सीपिंजुल त्ति वा' (अंवि पृ ६९)।

सीभर—१ समान, तुल्य—'तत्थवि सीभरमेव उवदिसियव्वं' (आचू पृ २६२)। २ बोलते हुए थूक उछालने वाला (व्यभा ४।३ टी प २९)।

सीभरग—बोलते समय थूक उछालने वाला (व्यभा ४।३ टी प २९)।

सीमंतय—सीमंत—बालों की रेखा-विशेष (मांग) मे पहना जाने वाला अलंकार-विशेष (दे ८।३५)।

सीय—१ शिविका—'सीय त्ति शिविका कूटाकारेणाच्छादितो जम्पानविशेष' (भटी पृ ७३०)। २ मोम (आवचू १ पृ ५)।

सीयउरय—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।३)।

सीयाण—श्मशान (व्यभा ७ टी प ५५)।

सीयालु—जिसे सर्दी अधिक लगती हो वह (निचू २ पृ ४२८)।

सीरिय—भिन्न (पा ९२४)।

सीरोवहासिआ—लज्जा (दे ८।३६)।

सीलुट्ट—खीरा, ककडी (पा ४७७)।

सीलुट्टय—त्रपुस, खीरा (दे ८।३५)।

सीवणी—सूई—'तेण सीवणीए सीविऊण विसज्जिय' (आवहाटी १ पृ २८५)।

सीसक्क—शिरस्त्राण, शिर की रक्षा के लिए पहना जाने वाला फौलादी टोप (दे ८।३४)।

सीसपुच्छ—पीठ की चमड़ी (सूनि ६८)।

सीसय—प्रवर, श्रेष्ठ (दे ८।३४)।

सीहुंडअ—मत्स्य (दे ८।२८)।

सीहकेसरय—विशेष प्रकार के मोदक (पिनि ४६१)।

सीहणही—१ करमन्दिका, करौंदी का वृक्ष (दे ८।३५)। २ करौंदी का पुष्प—'सीहणही करमन्दिका। तत्कुसुममित्यन्ये' (वृ)।

सीहपुच्छ—पीठ की चमड़ी—'कप्पति कागणीमंसगाणि छिदंति सीहपुच्छाणि' (सूनि ७७)।

सीहरअ—आसार, तेजवर्षा (दे ८।१२)।

सीहलय—वस्त्र आदि को धूपित करने का यन्त्र (दे ८।३४)।

सीहलिआ—१ शिखा, चोटी। २ नवमालिका, नवारी का गाछ (दे ८।५५)।

सीहलिपासग—वेणी बांधने के लिए काम मे आने वाला ऊन या स्वर्ण का कंकण (सू १।४।४२)।

सुअणा—अतिमुक्तक वृक्ष (दे ८।३९)।

सुई—बुद्धि (दे ८।३६)।

सुंकय—किशारु, जौ आदि का अग्रभाग (दे ८।३८ वृ)।

सुंकल—किशारु, धान्य आदि का अग्रभाग (दे ८।३८)।

सुंकलि—तृण-विशेष (भ २१।१६)।

सुंकलिकडय—क्रीडा-विशेष—यह खेल वृक्ष को केन्द्र मानकर खेला जाता है। खेलने वाले सभी बच्चे वृक्ष की ओर दौड़ते हैं। जो बच्चा सबसे पहले वृक्ष पर चढ़कर उतर आता है, वह विजेता माना जाता है। विजेता बच्चा पराजित बच्चों के कंधों पर बैठकर दौड़ के प्रारम्भ बिन्दु तक जाता है—'भगवं च पमदवणे चेडरूवेहिं समं सुंकलिकडएण अभिरमति' (आवचू १ पृ २४६)।

सुंग—वर्षात्राण के उपकरण का एक प्रकार—'वालो सुत्तो सुंगो' (जीविप पृ १७)।

सुंघिअ—घ्रात, सूंघा हुआ (दे ८।३७)।

सुंठय—पकाने का भाजन-विशेष–'मीरासु सुठएसु य कडूसु य पयणगेसु य पयंति' (सूचू १ पृ १२४)।

सुंडक—पकाने का भाजन-विशेष–'मीरासु सुडएसु य कडूसु पयणगेसु य पयंति' (आवहाटी २ पृ १०७)।

सुंभल—चोटी, शेखरक (ज्ञा १।८।७२ पा)।

सुंभलग—मदिरा-विशेष (अंवि पृ २४७)।

सुंसुमारित—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९)।

सुकुमालिअ—सुघटित (दे ८।४०)।

सुक्ख—कंडा–'गोव्वरो त्ति करीसो त्ति सुक्खं वा छगण पुणो' (अंवि पृ १०६)।

सुग—सूची, सूई–'तण सुगादी साधू अणाभोगेण अणणुण्णवित गेण्हेज्ज' (दअचू पृ ८४)।

सुगिम्हअ—फाल्गुन का उत्सव (दे ८।३९ वृ)।

सुग्ग—१ आत्मकुशल। २ निर्विघ्न। ३ विसर्जित (दे ८।५६)।

सुघर—गोत्र-विशेष (अवि पृ १५०)।

सुजड्डिय—भली भाति बंद किया हुआ–"चाणक्कघरमणुप्पविट्ठो ओव्वरगं सुजड्डियं दट्ठु चिंतेति' (दअचू पृ ४२)।

सुज्झ—धातु-विशेष (राज १७४)।

सुज्झय—१ रौप्य, चादी। २ धोबी (दे ८।५६)।

सुज्झरअ—रजक, धोबी (दे ८।३९)।

सुढिअ—१ श्रान्त, थका हुआ (दे ८।३६)। २ सकुचित अंग वाला (बृभा ३४९)।

सुढित—चरणों मे गिरा हुआ–'छन्नालयम्मि काऊण कुडियं अभिमुहंजली सुढितो' (बृभा ३७४)।

सुणेलग—श्रोता, सुनने वाला (सूचू १ पृ १८५)।

सुण्हसिअ—स्वपनशील, सोने की आदत वाला (दे ८।३९)।

सुत्त—१ काजी (बृभा ८०१)। २ मद्य के नीचे का कर्दम। ३ द्रव्य-विशेष–'सुत्तं मदिराखोल देशविशेपप्रसिद्धो वा-कश्चिद् द्रव्यविशेषः' (वृटी पृ १५५७)।

सुत्तजगलिका—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष–'सुत्तजगलिका कुथू उरणी सुयम्मुत्ता' (अवि पृ २३७)।

सूरंग—प्रदीप (दे ८।४१)।

सूरण—कन्द-विशेष (भ ७।६६; दे ८।४१)।

सूरणय—कन्द-विशेष, सूरन (उ ३६।६८)।

सूरद्धय—दिन (दे ८।४२)।

सूरमल्लि—तृण-विशेष (राजटी पृ १६८)।

सूरल्लि—१ मध्याह्न। २ ग्रामणी नामक तृण। ३ मशक की आकृति वाला कीट (दे ८।५७)।

सूरिल्लि—ग्रामणी नामक तृण (राज १८४)।

सूरुल्लिया—वनस्पति-विशेष (जीवटी प ३५१)।

सूलच्छ—पल्वल, छोटा तालाब (दे ८।४२)।

सूलत्थारी—चण्डी, दुर्गा (दे ८।४२)।

सूला—वेश्या (दे ८।४१)।

सूहव– सुभग (दे ८।४२ वृ)।

से—इन अर्थों का सूचक अव्यय–१ अथ (भ १।४२८)। २ प्रश्न (भ १।४५)। ३ अनन्तरता–'आनन्तर्यार्थ· से शब्दार्थः'· (स्था १०।६६ टी प ४६६)। ४ तत्, वह–'से शब्द मागधदेशीप्रसिद्धो निपातस्तच्छब्दार्थः' (आवहाटी २ पृ २२१)। ५ प्रस्तुत वस्तु का परा-मर्श, उपन्यास–'से नूणं मए पुव्वं–'सेशब्दो मागधप्रसिद्ध्याऽथशब्दार्थ उपन्यासे' (उ २।४० शाटी प १२६)।

सेआल—१ ग्रामप्रधान। २ सांनिध्यकर्त्ता यक्ष आदि (दे ८।५८)। ३ कृपक (पा १२२)।

सेआली—दूब (दे ८।२७)।

सेआलुअ—मनौती की सिद्धि के लिए उत्सृष्ट बैल (दे ८।४४)–'सेआलुओ उपयाचितसिद्ध्यर्थं वृषभः। उपयाचितं केनापि कामेन देवताराधनम्' (वृ)।

सेइआ—परिमाण-विशेष, दो प्रसृति का एक नाप (अनुद्वामटी प १३६)।

सेइंगाल—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

सेंगलिया—फली (आवमटी प २८७)।

सेंगा—१ शंख की तरह बजाया जाने वाला वाद्य (आवचू १ पृ ३०६)। २ फली (निचू २ पृ २३७)।

सेंटा—नाक छींकने का शब्द–'छेलिय सेंटा भणति' (जीभा १७२३)।

सेंदसप्प—फण वाले सर्प की एक जाति (प्रज्ञा १।७०)।

सेंवाइअ—चप्पुटिकानाद, चुटकी की आवाज (दे ८।४३)।

सेवक—छीक (कु पृ २२)।

सेज्जारिअ—आदोलन, झूलना (दे ८।४३)।

सेज्झंतिय—सहायक–'तम्हा तस्सायरिओ, मग्गति सेज्झतिआदी वा' (पंक १११४)।

सेज्झगा—पड़ोसिन (बृभा २३४६)।

सेट्ठि—ग्रामेश, गांव का अधिपति (ज्ञा १।१।२४; दे ८।४२)।

सेट्ठिणी—सेठानी (निचू ३ पृ ४०८)।

सेडंगुलि—खाद्य वस्तु-विशेष–'सेडगुलिमादीहिं णाएहिं एत्थ भत्तट्ठं' (जीभा १३९७)।

सेडंगुली—पत्नी के अधीन पति की एक अवस्था–'जदा इत्थी भणिता रंधेहि, तदा भणति–अह उट्ठेमि, ताव तुम अधिकरणीतो छारं अवणेहि त्ति। तस्स छारे अवणीते सेडंगुलीतो भणति' (निचू ३ पृ ४२०)।

सेडि—सफेदी, चूना (अंवि पृ १०४)।

सेडिय—तृण-विशेष (भ २१।१९)।

सेडिया—खड़िया मिट्टी (आचूला १।७६)।

सेडीका—पक्षि-विशेष (अंवि पृ २३८)।

सेडीवड—पचेन्द्रिय लोमपक्षी (जीवटी प ४१)।

सेडुअ—कपास–'सेडुओ कप्पासो' (निचू २ पृ ३२६)।

सेडुकारी—भ्रमरी–'हितणट्ठजाणणट्ठा, विच्छुय तह सेडुकारी य' (निभा १४३६)।

सेडुग—कपास (निभा १९९२)।

सेडुयारिया—भ्रमरी (निचू २ पृ १९७)।

सेढिया—सफेद मिट्टी (दजिचू पृ १७९)।

सेण—रक्षक–'ताओ गुत्तो य सेणो य रक्खितो य परक्कमा' (अंवि पृ १५७)।

सेतगुलिका—बिल मे रहने वाला प्राणी-विशेष–'तत्थ, विलासएसु कण्हगुलिका सेतगुलिका खुल्लिका आहाडका' (अंवि पृ २२९)।

सेतिया—परिमाण-विशेष–'द्वे प्रसृती सेतिका, सा च नेह प्रसिद्धा गृह्यते, मागधदेशप्रसिद्धस्यैवात्र मानस्य प्रतिपिपादयिषितत्वाद्' (अनुद्वामटी प १४०)।

सेधक— पर्वतीय पशु-विशेष–'तत्थ सेलविलासया'अच्छमल्ला तरच्छा सालिभा सेधका दीपिका' (अंवि पृ २२७)।

सेधा—साही, जाहक (जीव २।६)।

सेय—१ कीचड़ (ज्ञा १।१।१६०)। २ गणेश, गणपति (दे ८।४२)।

सेयाल—१ भविष्यत् काल (उ २६।७१)। २ कृपक (पा १२२)।

सेरडी—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

सेराह—अश्व की एक उत्तम जाति (कु पृ २३)।

सेरिभ—१ महिष, भैंसा (उसुटी प १३०; दे ८।४४ वृ)। २ धुर्य वृषभ, गाड़ी का बैल (वृ)।

सेरिभअ—धुर्य वृषभ (दे ८।४४)।

सेरिय—१ गुल्म-विशेष (जीवटी प १४५)। २ वाद्य-विशेष।

सेरियक—वनस्पति-विशेष (भ २२।५)।

सेरियय—गुल्म-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८।२)।

सेरिही—महिषी, भैंस (पा ६७०)।

सेरी—१ यंत्र-निर्मित नर्तकी–'देशीवचनमेतत् यंत्रमयी नर्तकी' (व्यभा ४।२ टी प ३४)। २ दीर्घा। ३ भद्र आकृति (दे ८।५७)। ४ रथ्या।

सेलु—श्लेष्मनाशक वृक्ष-विशेष (भ ८।२१६)।

सेलूडक—फल-विशेष–'तिंदुकं वदरं व त्ति तधा सेलूडकं ति वा' (अंवि पृ ६४)।

सेलूस—द्यूतकार, जुआरी (दे ८।२१)।

सेलेसिंद—सर्प की एक जाति (जीवटी प ३६)।

सेल्ल—१ शलाका (निभा ५१३)। २ मृगशिशु। ३ बाण, शर (दे ८।५७)। ४ कुन्त, भाला (प्रा ४।३८७)।

सेल्लय—शाकभाजी–'सासवनालसेल्लयं' (जीविप पृ ५६)।

सेल्लि—रज्जु, रस्सी–'छिन्नाले छिंदइ सेल्लिं' (उ २७।७)।

सेवपूति—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

सेवाल—पंक (दे ८।४३)।

सेह—१ जिसके शरीर में कांटे होते हैं वह प्राणी, साही (प्र १।८)। २ रोमपक्षी-विशेष (प्रज्ञा १।७६)।

सेहरअ—चक्रवाक (दे ८।४३)।

सेहि—गत, गया हुआ–'तं च निग्गंथीओ नो इच्छेज्जा, सेहिमेव नियं ठाणं' (व्य ७।३)।

सेहिअ—गत, गया हुआ (दे ८।१)।

सेही—साध्वी–'दुट्ठा सेहि ! कत्तो सि आगया' (उसुटी प ५४)।

सेहुलक—साही, ऐसा जन्तु जिसके शरीर में कांटे होते हैं (नदीटि पृ १०७)।

सोअ—निद्रा, स्वपन (दे ८।४४)।

सोअमल्ल—सुकुमारता (दे ८।४५ वृ)।

सोइल्लिय—सुप्त (ओटी पृ ४६५)।

सोंडियालिंछ—विशेष प्रकार का चूल्हा (जीव ३।११८)।

सोगिल—सूजन-रोग से ग्रस्त (विपा १।७।७)।

सोज्झय—धोबी (पा ७७३)।

सोट्ट—सूखी लकडी–'सोट्टा नाम शुष्ककाष्ठानि' (बृटी पृ ९७९)।

सोणंद—त्रिपादिका–'साहतसोणंद-मुसल-दप्पण—सोणदं त्रिकाष्ठिका' (प्र ४।७ टी प ८०)।

सोत्ती—नदी (दे ८।४४)।

सोमइअ—स्वपनशील (दे ८।३९)।

सोमंगल—द्वीन्द्रिय जतु-विशेष (उ ३६।१२८)।

सोमंगलग—द्वीन्द्रिय जतु-विशेष (प्रज्ञा १।४९)।

सोमहिंद—उदर, पेट (दे ८।४५)।

सोमहिड्ड—पक (दे ८।४३)।

सोमाण—१ श्मशान (दे ८।४५)। २ सोपान (अवि पृ ३१)।

सोमाल—१ मास (दे ८।४४)। २ सुकुमार (दे ८।४५ वृ)।

सोमित्तिकी—वस्त्र-विशेष (अवि पृ ७१)।

सोल—१ अश्वपाल–'सोला तुरगपरियट्टगा' (निचू २ पृ ४४०)। २ प्रिय–'सोलवादो प्रियभाप इव' (सूचू १ पृ १८१)।

सोलग—घोडो की देखरेख करने वाला (बृभा २०६६)।

सोलहावत्त—शख (दे ८।४६ वृ)।

सोलहावत्तअ—शख (दे ८।४६)।

सोल्ल—१ पक्व (विपा १।२।२४)। २ अश्वपाल–'मेंठ-आरामिय-सोल्ल-घोड-गोवाल-चक्किय' (निचू ३ पृ २४५)। ३ मास (उपाटी पृ १४७; दे ८।४४)। ४ कलाल (आवहाटी २ पृ ६८)।

सोल्लय—मांस (उपाटी पृ १४७)।

सोल्लित—उछालना, फेकना–'सो सूतियाए गावीए सोल्लितो पडिततो' (आवचू १ पृ २३१)।

सोल्लिय—१ पकाया हुआ–'पचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठुसोल्लियं' (भ ११।५९)। २ पुष्प-विशेष (औप १९४)।

सोवण—१ वासगृह, शय्यागृह। २ स्वप्न। ३ मल्ल (दे ८।५८)।

सोवणमक्खिआ—मधुमक्षिका (दे ८।४६)–'चालुक्क सोलहावत्तसेअजस भग्गरज्जमहुछत्ता। सोवणमक्खिआउ व दिसो दिसं जन्ति वेरिणो तुज्झ ॥' (वृ)।

सोवत्थ—१ उपकृति, उपकार (दे ८।४५)। २ उपभोग्य–'सोवत्थ उपभोग्यमित्यन्ये' (वृ)।

सोवीरिणी—काजिका–'कल्लं ठवेहि अन्नं महल्ल सोवीरिणिं गेहे' (वृभा १७५०)।

सोव्वअ—दंतहीन (दे ८।४५)।

सोसण—वायु (दे ८।४५)।

सोसणी—कटी, कमर (दे ८।४५)।

सोहंजण—शिग्रु, सहिजना का पेड़ (दे ८।३७)।

सोहणी—समार्जनी, झाड़ू (दे ८।१७)।

सोहि—१ भूतकाल। २ भविष्य काल (दे ८।५८)।

ह

हंजअ—शरीर-स्पर्शपूर्वक किया जाने वाला शपथ—सौगन्ध (दे ८।६१)।

हंजे—१ दासी का संबोधन (प्रा ४।२८१)। २ सखी का आमन्त्रणसूचक अव्यय।

हंदि—इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ उपदर्शन–'हंदि धम्मत्थकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे' (द ६।४)। २ आमंत्रण–'हंदि णमो साहाए' (स्था ८।२४)। ३ खेद–'खेआइसु अव्वो हंदि उ त्ति' (पा ९९५)। ४ विषाद। ५ विकल्प। ६ पश्चात्ताप। ७ निश्चय। ८ यह सत्य ही है (प्रा २।१८०)। ९ ग्रहण करो (प्रा २।१८१)।

हंभी—हंभी नामका रसायनशास्त्र (सूचू १ पृ १६६)।

हंस—१ आसन-विशेष–'पावीढ भिसिय करोडियाओ पल्लकए य पडिसिज्जा। हंसाईहिं विसिट्ठा आसणभेया उ अट्ठट्ठ ॥' (ज्ञाटी प ४७)। २ रजक, धोबी–'वत्थधुवा हवंति हंसा वा' (सू १।४।४८)। ३ पतंग, चतुरिन्द्रिय जंतु (अनुद्वामटी प ३१)।

हंसोलीण—पीछे से आकर लिपट जाना (निचू १ पृ १७)।

हंसोवल्लीली—पीछे से आकर लिपट जाना–'तुज्झं रममाणस्स तुट्ठीए हंसोवल्लीली काही त जाणिज्जासि' (आवहाटी २ पृ २१७)।

हकुव—वनस्पति-विशेष (अनु ३।४५)।

हकुवी—वनस्पति-विशेष (अनुटी पृ ५)।

हक्कविऊण—बुलाकर (आवहाटी २ पृ १२४)।

हक्कार—दुःख से निकलने वाली 'हाय-हाय' की आवाज (निभा २७२१)।

हक्कारिय—आकारित, बुलाया हुआ–'हक्कारिया आयाया' (ओटी प १६८)।

हक्कारेमाण—बुलाता हुआ, पुकारता हुआ (ज्ञा १।१८।४५)।

हक्कोद्ध—अभिलषित (दे ८।६०)।

हक्खुत्त—उत्पाटित, उखाड़ा हुआ (आवहाटी १ पृ ६७; दे ८।६०)।

हगे—१ मैं। २ हम (प्रा ४।२६६)।

हट्ठमहट्ठ—१ स्वस्थ, नीरोग। २ दक्ष (दे ८।६५)। ३ स्वस्थ युवा।

हड—१ जलकुम्भी, अबद्धमूल जलीय वनस्पति–'वायाइद्धो व्व हडो अट्ठियप्पा भविस्ससि' (द २।६)। २ हृत, हरण किया हुआ (द ७।४१, दे ८।५९)।

हडकारक—अपहरण करने वाला चोर (प्र ३।३)।

हडक्क—पागल (कुत्ता) (बृटी पृ ८२६)।

हडप्प—१ सिक्के रखने का पात्र। २ ताम्बूल-पात्र (भ ६।२०४)। ३ आभूषण-पेटी–'आभरणभडय हडप्पो' (निचू २ पृ ४६६)। हडप–ताम्बूल रखने की छोटी थैली (कन्नड)।

हडप्फ—१ आभरण का करण्डक (आचू पृ ७१)। २ द्रम्म आदि का पात्र। ३ ताम्बूल-पात्र–'हडप्फो द्रम्मादिभाजनम्, ताम्बूलार्थं पूगफलादिभाजनं वा' (औपटी पृ १३१)।

हडहड—१ अनुराग। २ ताप (दे ८।७४)।

हडाहड—अत्यन्त–'फुट्ट-हडाहड-सीसा' (ज्ञा १।१६।२६) हाडोहाड (राज)।

हडि—१ बंधन-विशेष, काठ की बेड़ी—'इमं हडिबंधण करेइ' (दश्रु ६।३)।
२ हड-हड की आवाज—'छु त्ति हडि त्ति अनुकरणशब्दावेतौ' (वृभा २३४८ टी)। ३ हट, दूर हो—ललकार भरा स्वर—'पासति सीहं आगच्छमाण। तेण हडि त्ति जंपियं, ण गतो' (निचू १ पृ १०१)।
४ कारावास (व्यभा १० टी प ६३)।

हड्ड—हड्डी, अस्थि (नि ७।१; दे ८।५६)।

हड्डमालिया—हड्डियों की माला—'सिगमालियं वा संखमालियं वा हड्डमालियं वा भिंडमालिय वा कट्ठमालिय वा' (नि ७।१)।

हड्डसरक्ख—शैव मतावलंबी—'चरग-परिव्वायग-हड्डसरक्खादिएहिं तडिय-कप्पडिएहिं य जा आइण्णा आकुला' (निचू २ पृ २०७)।

हड्डागिद्धिसी—कटि के अधोभाग में होने वाला संधि-वायु (निचू ४ पृ १०८)।

हढ—जल में होनेवाली वनस्पति, जलकुम्भी (भ २३।८)।

हण—दूर (दे ८।५९)।

हणु—सावशेष, बाकी बचा हुआ (दे ८।५९)।

हणुदाणि—उसके पश्चात्, अब—'वाइज्जति अपत्ता, हणुदाणि वयं वि एरिसा होमो' (वृभा ५२०९)।

हत्थ—१ शीघ्र (औप ५७)। २ जल्दी करने वाला (दे ८।५९)।

हत्थखड्डुग—हाथ की अंगूठी (अवि पृ ६५)।

हत्थच्छुहणी—नववधू (दे ८।६५)।

हत्थल—१ चोर (प्रटी प ४३)। २ क्रीडा के लिए हाथ में लिया हुआ पदार्थ। ३ चंचल हाथ वाला (दे ८।७३)।

हत्थल्ल—क्रीडा के लिए हाथ में लिया हुआ (दे ८।६०)।

हत्थल्लिअ—हस्तापसारित, हाथ से हटाया हुआ (दे ८।६४)।

हत्थल्ली—हाथ में ले जाया जाने वाला आसन-विशेष (दे ८।६१)।

हत्थार—सहायता, मदद (दे ८।६०)।

हत्थिअच्चक्खु—वक्र अवलोकन (दे ८।६५)।

हत्थिमल्ल—ऐरावण हाथी (दे ८।६३)।

हत्थियार—१ शस्त्र (अनुद्वाचू पृ १२)। २ युद्ध।

हत्थिवअ—ग्रह-भेद (दे ८।६३)।

हत्थिहत्थ—दुस्तर—'संसारहत्थिहत्थ पावति'—'दुस्तरं संसारमापततीति भावः' (व्यभा ३ टी प ६३)।

हत्थिहरिल्ल—वेष, पोशाक (दे ८।६४)।

हत्थेव्वग—हाथ मे पहनने योग्य—'हत्थेव्वगा आभरणगा कडगादी पादे करेति' (निचू ३ पृ ४०७)।

हत्थोडी—१ हाथ का आभूषण। २ हाथ से दिया जाता उपहार (दे ८।७३)।

हत्थोपक—हाथ का आभूषण (अंवि पृ १६२)।

हद—बालक का मलमूत्र (पिटी प ८६)।

हदन्नय—बालक का मल-मूत्र साफ करने वाला (पिनि ४७१)।

हद्धअ—हास, हंसी (दे ८।६२)।

हप्पिच्छ—अश्व का प्रिय खाद्य-धान्य-विशेष—'आसो हप्पिच्छं (हरिमत्थं) मुग्गमादि मधुरं' (निचू २ पृ २४७)।

हम्मिअ—गृह, घर (आचूला २।१८; दे ८।६२)।

हयमार—कणेर का गाछ (पा ३७४)।

हरतणु—भूमि को भेदकर निकलने वाले जलबिंदु—'हरतणू महिया हिमे' (उ ३६।८५)।

हरतणुग—भूमि को भेदकर निकले हुए जल-बिंदु—'किंचि सणिद्धं भूमिं भत्तूण कहिंचि समस्सयति सफुसितो सिणेहविसेसो हरतणुतो' (दअचू पृ ८८)।

हरतणुय—भूमि को भेदकर निकले हुए जलबिंदु—'हरतणुओ भूमिं भेत्तूण उट्ठेइ, सो य उवुगाइसु तिताए भूमीए ठविएसु हेट्ठा दीसति' (दजिचू पृ १५५)।

हरपच्चुअ—१ स्मृत, याद किया हुआ। २ नामोल्लेखपूर्वक दिया हुआ (दे ८।७४)।

हरहरा—उचित अवसर, युक्त प्रसंग—'निद्धूमग च गाम महिलाथूभं च सुन्नयं दट्ठु। नीअं च कागा ओलिति जाया भिक्खस्स हरहरा॥' (विभा २०६४)।

हरि—शुक, तोता (दे ८।५९)।

हरिआली—दूर्वा (दे ८।६४)।

हरिचंदण—कुंकुम (दे ८।६५)।

हरिडय—कोंकण देश मे प्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (प्रज्ञाटी प ३१)।

हरितग—कोंकण देश मे प्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।

हरिमंथ—चना (उसुटी प ५९)।

हरिमिग्ग—लाठी, डंडा (दे ८।६३)।

हरिमेला—वनस्पति-विशेष (औप ६४)।

हरियवण्णी—१ वैसा प्रदेश जहा प्रायः दुर्भिक्ष होता हो और वहा के लोग हरित शाक आदि खाकर जीते हो। २ वैसे प्रदेश मे राजा किन्ही घरों मे दंड देकर पुरुष की वलि देता है। उस घर पर आर्द्र वृक्ष की शाखा का चिह्न कर दिया जाता है, ताकि वहा कोई भिक्षा के लिए न जाए (व्यभा ४।४ टी प ७०)।

हरियालिया—दूर्वा—'सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा' (भ ११।१४०)।

हरियाहडिया—चोरों द्वारा अपहृत (वृ १।४५)।

हरिसय—आभूषण-विशेष (जीव ३।५९३)।

हलप्प—वहुभाषी, वाचाल (दे ८।६१)।

हलप्फलिअ—१ शीघ्र (दे ८।५९)। २ आकुलता (वृ)।

हलवंभ—हलकर्ष, हल से विदारित भूमी-रेखा—'एक्केक्कं हलवंभं देह' (उशाटी प ११९)।

हलवोल—कोलाहल (कु पृ १९८; दे ८।६४)।

हलवोलिय—कोलाहल—'हलवोलिए वट्टमाणे' (कु पृ १३५)।

हलमलि—प्रसिद्ध (से १२।८६ टी)।

हलहल—१ कोलाहल। २ कुतूहल (दे ८।७४)। ३ युद्ध की उत्कंठा—'हलहलशब्दो युद्धोत्कण्ठायां देशी' (से १२।८६)। ४ क्षोभ-विशेष—'शब्दोऽयं देशी' (से १५।३३)।

हलहलय—१ हलचल—'हियउग्गयहलहलयं वियरंतं परियणं पुरओ' (कु पृ २००)। २ त्वरा (पा ८२७)।

हलहला—हडवडी, कोलाहल (कु पृ १९८)।

हलहलि—प्रकंपित—'ताव य हलहलीहूओ परियणो, खुहिया णयरी' (कु पृ १८०)।

हला—सखी का सम्बोधन (उसुटी प ६१)।

हलाहला—वाम्हणी, जन्तु-विशेष (दे ८।६३)।

हलि—स्त्री का संवोधन—'लाडविसए समाणवयमण्णं वा आमंतणं जहा हलि त्ति' (दअचू पृ १६८)।

हलिया—१ छिपकली (दश्रु ८।२६८)। २ वाम्हणी, कीट-विशेष (दअचू पृ १८८)।

हलूर—सतृष्ण, तृष्णा-सहित (दे ८।६२)।

हले—तरुणी का संबोधन (द ७।१६)—'हले त्ति मरहट्ठेसु तरुणित्थीसाऽऽमंतणं, हले हलित्ति अण्णेत्ति एयाणी वि देसं पप्प आमंतणाणि, तत्थ वरदातडे हले त्ति आमंतणं' (दअचू पृ १६८)।

हल्ल—गोपालिका नामक तृण के आकार वाला कीट-विशेष (भटी पृ १२५८)।

हल्लप्फल—चचल, कपित (कु पृ ८३)।

हल्लप्फलिअ—१ शीघ्र। २ आकुलता (दे ८।५९)। ३ व्याकुल।

हल्लप्फुल्ल—हलफल, आकुल-व्याकुल (कु पृ ८३)।

हल्लफल—१ शीघ्रता, हड़बडी (दजिचू पृ १२)। २ आकुल-व्याकुल (कु पृ ५८)।

हल्ला—एक प्रकार का कीट (भ १५।१२८)।

हल्लिअ—चलित, हिला हुआ (दे ८।६२)।

हल्लिया—छिपकली (दश्रुचू प ६८)।

हल्लिर—चंचल, चलनशील (कु पृ ४१)।

हल्लिस—मंडलाकार होकर स्त्रियों का नाचना (अंवि पृ २४३)।

हल्लीस—रास, स्त्रियों का मडलाकार नृत्य (दे ८।६१)।

हल्लोहल—१ कोलाहल। २ आकुलता (उसुटी प १९५)। ३ चंचल। ४ त्वरा।

हल्लोहलि—गिरगिट (दअचू पृ १८८)।

हल्लोहलिय—१ गिरगिट (दश्रु ८।२६८)। २ शीघ्र। ३ व्याकुल। ४ व्याकुलता।

हल्लोहली—व्याकुल (उसुटी प २३८)।

हविअ—चुपडा हुआ (दे ८।६२)।

हव्व—१ अर्वाक्, इस ओर—'णो हव्वाए णो पाराए' (आ २।३४)। २ शीघ्र (भ ७।१८४)। ३ सहसा (निचू १ पृ ४३)। ४ गृहवास।

हसिरिआ—हास, हंसी (दे ८।६२)

हसुडोलक—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

हाडहड—तत्काल—'हाडहड देशीपदमेतत् तत्कालमित्यर्थः' (व्यभा २ टी प ३०)।

हाडहडा—ओरापणा, प्रायश्चित्त का एक प्रकार (स्था ५।१४९)।

हियउड्डावण—१ मंत्र-तंत्र से चित्त को आकृष्ट करना (ज्ञा १।१४।४३)।
२ चित्त को शून्य करने का प्रयोग (विपा १।२।७२)।

हिरडिक्क—पाणजातीय लोगो का यक्ष-विशेष (व्यभा ७ टी प ५५)।

हिरडी—शकुनिका, चील-पक्षी (दे ८।६८)।

हिरिव—छोटा तालाव (दे ८।६९)।

हिरिवेर—खस-खस के दाने–'हिरिवेरं णाम उसीरं' (सूचू १ पृ ११६)।

हिरिमंथ—चना (निभा १०३०; दे ८।७०)।

हिरिमिंथ—चना (दनि १५६)।

हिरिमिक्क—मातंगों का यक्ष-विशेष–'मातंगा तेसिं आडंवरो जक्खो हिरिमिक्को वि भण्णति' (निचू ४ पृ २३८)।

हिरिलि—कन्द-विशेष (भ ७।६६)।

हिरिवंग—लाठी, डंडा (दे ८।६३)।

हिला—१ वालू, रेती (दे ८।६६)। २ भुजा, हाथ।

हिलिमित्थ—चना (दअचू पृ १९२)।

हिलिहलय—ज्वालारहित अंगारे–'णिज्जाया हिलिहलया इंगाला ते भवे मुणेतव्वा' (जीभा १५३१)।

हिल्ला—वालुका, वालू (दे ८।६६)।

हिल्लिय—कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (प्रज्ञा १।५०)।

हिल्लिरी—जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

हिल्लूरी——लहरी, तरंग (दे ८।६७)।

हिल्लोडण—खेत मे पशुओं को रोकने के लिए की जानेवाली आवाज (दे ८।६९)।

हिसोहिसा—स्पर्धा (दे ८।६९)।

हीर—१ सूई-की भांति तीक्ष्ण नोक वाला काष्ठ आदि पदार्थ (वृ ६।३; दे ८।७०)। २ भस्म–'केचित् हीरशब्दं भस्मन्यपि प्रयुञ्जते' (वृ)। ३ अन्त-भाग।

हीरणा—लज्जा (दे ८।६८)।

हीरय—वारीक छोटा तृण (जीव ३।६२२)।

हीसमण—ह्रेषा, अश्व की आवाज, हिनहिनाहट (दे ८।६८)।

हुअहुअंत—अव्यक्त ध्वनि करता हुआ, वड़वड़ाता हुआ–'मूयव्व हुअहुअंतो तहेव छिज्जंतमाईसु' (आवहाटी २ पृ २०५)।

हुंकअ—अंजलि (दे ८।७१)।

हुंकुरुव—अंजलि (दे ८।७१)।

हुंडी—घटा, समूह (पा ६३६)।

हुंबउट्ठ—वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप ९४)।

हुड—१ मेष (दे ८।७०)। २ कुत्ता।

हुडुअ—प्रवाह (दे ८।७०)।

हुडुक्क—वाद्य-विशेष, मृदंग (भ ६।१८२)।

हुडुक्की—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

हुडुम—पताका, ध्वजा (दे ८।७०)।

हुड्डा—शर्त, दाव (प्रसा ४३५, दे ८।७०)।

हुत्त—अभिमुख, सम्मुख (प्र ३।२३, दे ८।७०)।

हुत्ति—अभिमुखा–'उत्तराहुत्ति पवहित्ता' (सम ७४।२)।

हुरत्था—१ बाहर–'हुरत्था णाम देसीभासातो बहिद्धा' (आचू पृ १६१), 'हुरत्था देशीपदं बहिरर्थाभिधायकम्' (बृटी पृ ६५२)। २ गाव के बाहर उद्यान आदि स्थान–'हुरत्थं बहिता गामादीणं देसीभासा उज्जाणादिसु' (आचू पृ २६१)। ३ उपाश्रय–घर के बाहर का परिक्षेप, वगडा–'देसीभासाइ कय जा बहिया सा भवे हुरत्था उ' (बृभा ३४०४), 'या विवक्षितोपाश्रयाद् बहिर्वर्तिनी वगडा सा 'हुरत्था' इति शब्देनोच्यते' (बृटी पृ ६५२)।

हुरब्भ—१ वाद्य-विशेष (उपाटी पृ ६७)। २ मेष (प्रटी प ६)।

हुरवत्था—बाहर (आटी प ३३०)।

हुरुडी—विपादिका, विवाय (दे ८।७१)।

हुलायक—बाज पक्षी (बृटी पृ १०२७)।

हुलि—शीघ्र, तेज (कु पृ १३६)।

हुलित—शीघ्र (प्र १।२३)।

हुलिय—१ शीघ्र (प्र ३।७; दे ८।५९)। २ क्षिप्त।

हुलियक—शीघ्र (प्र ३।७ पा)।

हुलुक—लघु, हलका (पवटी प १२४)।

हुलुव्वी—निकट भविष्य मे प्रसव करने वाली स्त्री (दे ८।७१)।

हुहुय—संख्याविशेष (जीव ३।८४१)।

हुहुयमाण—अत्यन्त जाज्वल्यमान (जीव ३।११८)।

हूम—लोहकार, लोहार (दे ८।७१)।

हूहूय—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

हूहूयंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

हेआल—हाथ की विशेष आकृति से निषेध, सांप के फण की भांति किए हुए हाथ से निवारण। (दे ८।७२)—यदाह भरतः—
'अंगुल्यः संहिता सर्वा. सहांगुष्ठेन यस्य तु।
तथा निम्नतलश्चैव स तु सर्पशिराः कर.' (वृ)।

हेट्ठ—नीचे (सू १।६।१०)।

हेट्ठाहुत्त—नीचे की ओर (उसुटी प २७)।

हेट्ठाहुत्ती—नीचे (आवहाटी २ पृ १२३)।

हेट्ठिल्ल—अधस्तन (सम ७६।१)।

हेडित—प्रेरित (अवि पृ १४८)।

हेमप्प—वस्त्रविशेष (जीव ३।५९५)।

हेरंग—मत्स्य से बना खाद्य-विशेष (विपा १।८।१२)—'हेरंगाणि य त्ति रूढिगम्यम्' (टी)।

हेरंब—१ महिष, भैंसा। २ डिंडिम, वाद्य-विशेष (दे ८।७६)।

हेरिंब—गणेश, विनायक (दे ८।७२)—'हेरिंब पूअन्ती अम्त्रा वाले करेइ हेआलं' (वृ)।

हेरिका—कारावास, अवरोधक स्थान (सूचू १ पृ १३२)।

हेरु—हेरुताल-वृक्ष (जीव ३।६३१)।

हेला—१ वेग, तीव्रता—'कहिंचि वीईहेलुल्लालिओ' (कु पृ ६७)। २ सरलता (से १।५६)। ३ स्त्री की शृंगारसंबंधी चेष्टा (कु पृ ८३)।
४ ताप—'तुज्झाणुरायहुयवहजालाहेलाहि सा विलुट्ठंगी'
(कु पृ २३६)।

हेलिअ—पालित-पोषित—'एसो माणुसाणं हेलिओ' (कु पृ २४१)।

हेलिय—मत्स्य की जाति-विशेष (जीवटी प ३६)।

हेलुअ—छींक (दे ८।७२)।

हेलुक्का—हिचकी (दे ८।७२)।

हेल्ल—१ पुकार—'सितालो आगतो, हेल्लं दाऊण धाडितो'
(दअचू पृ ५५)। २ लाटदेश में प्रयुक्त समवयस्क का आमंत्रण-शब्द—'यथा लाटाना 'काइ रे हेल्ल त्ति' (...

हेल्ला—१ पुकार–'णवर एगाए चेव हेल्लाए आविहितो' (आवचू १ पृ ११४)। २ वेग, तीव्रता (दे ८।७१)।

हेल्लि—सखी का आमंत्रण (प्रा ४।४२२)।

हेल्लुसित—फिसला हुआ (बृचू प १४१)।

हेहंभूत—गुण-दोष के ज्ञान से विकल और निर्दम्भ–'हेहंभूतो नाम गुणदोष-परिज्ञान-विकलोऽशठभाव' (व्यभा १ टीप ५६)।

होक्कार—हुंकार (आवहाटी १ पृ १८२)।

होडिअ—लुटेरा सैनिक–'सा सह धूयाए एगेण होडिएण गहिया' (आवहाटी १ पृ १४६)।

होडीय—लुटेरा–'होडीओ नाम लूषक पुरुष.' (आवटि प २७)।

होड्डु—स्पर्धा (जीविप पृ ४६)।

होढ—१ चोरी का माल (निचू ३ पृ ५०२)। २ झूठा आरोप–'होढं दाऊण य पलादी' (बृभा ६१२२)–'होढ गाढमलीकं दत्त्वा पलायन्ते' (टी पृ १६१८)।

होढक—चोर, तस्कर (अंवि पृ २५३)।

होढा—दे ही दिया, कर ही दिया–'होढा' इति देशीपदमेतत् दत्तमेव कृतमेवेत्यर्थः' (व्यभा ३ टी प ६६)।

होण—हूण देश, अनार्य देश (प्रसा १५८३)।

होत्तिय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

होद्द—होड, बाजी, शर्त (ज्ञाटी प १०२)।

होरंभ—वाद्य-विशेष, महाढक्का (भ ५।६४)।

होरण—वस्त्र, कपडा (दे ८।७२)।

होल—१ अवज्ञासूचक तुच्छ संबोधन–'होले त्ति निट्ठुरमामंतणं देसीए भविलवचनमिव' (दअचू पृ १६८)। २ विभिन्न देशो मे प्रयुक्त आदर एवं अनादरसूचक संबोधन–'पुरुषाद्यामंत्रणवचनं गौरवकुत्सादिगर्भाणि' (ज्ञाटी प १७४)। ३ वाद्यविशेष–'आढत्तं मज्जपाणं, वायावेइ होल' (उसुटी प ५८)। ४ पक्षि-विशेष।

होला—१ समवयस्क का सबोधन-शब्द–'होला इति देसीभाषात. समवया आमन्त्र्यते' (सूचू १ पृ १८१)। २ झल्लरी (आवहाटी १ पृ २६०)।

होलावाय—ओछे शब्दो से पुकारना (सू १।६।२७)।

होले—स्त्री के लिए प्रिय सम्बोधन (द ७।१६)।

परिशिष्ट

१. अवशिष्ट देशी शब्द
२. देशी धातु-चयनिका

अवशिष्ट देशी शब्द

[प्रस्तुत ग्रन्थ 'देशी शब्दकोश' के मूलभाग मे हमने जैन आगमों, उनके विभिन्न व्याख्या-ग्रन्थो तथा आचार्य हेमचन्द्रकृत 'देशी नाममाला' के शब्दों का सप्रमाण और ससन्दर्भ संग्रहण किया है। लेकिन इनके अतिरिक्त उत्तरकालीन प्राकृत ग्रन्थो मे प्रयुक्त देशी शब्द अवशिष्ट रह जाते हैं। उन अनेक ग्रन्थो के विद्वान् सपादकों ने अपने-अपने संपादित उन प्राकृत ग्रन्थो मे देशी शब्दों का अलग से परिशिष्ट भी दिया है। उन शब्दों का हमने ज्यो का त्यों इस परिशिष्ट मे संग्रहण किया है। हमने मूल देशी शब्द तथा उसके अर्थ/अर्थो का निर्देश मात्र किया है। 'पाइअसद्दमहण्णवो' मे सगृहीत उत्तरवर्ती प्राकृत ग्रन्थों के देशी शब्दो का भी इसमे संग्रहण किया है। यह परिशिष्ट शोधकर्त्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।]

अ

अ—१ उपमा। २ सादृश्य। ३ उत्प्रेक्षा—इन अर्थो का सूचक अव्यय

अइअड्ड—अतिविकट—अड्ड विकटार्थे देशी

अइणिरुत्त—अति निश्चित

अइणीय—आनीत, लाया हुआ

अइन्नदुवार—विना दरवाजा वंद किए

अइभल्ल—अतिभद्र

अइरवण्ण—अतिरम्य

अइरिप्प—कथाबंध

अइरुंद—विपुल

अउस—उपासक, पुजारी

अं—स्मरणद्योतक अव्यय

अंकिइल्ल—नट, नर्तक

अंगुमिय—पूरित

अंगुलिय—ईख का टुकड़ा

अंघो—भयसूचक अव्यय

अंछविअंछी—आकर्षण-विकर्षण

अंतल्ली—१ पेट। २ लहर का मध्य

अंदुया—शृंखला

अंबभित्त—आम का टुकडा

अंबुपिसाय—राहु

अंभु—पत्थर

अकासिअ—पर्याप्त

अकोप्प—अपराध

अक्कसाल—वलात्कार

अक्का—माता

अक्खण—आसक्ति

अक्खणिय—व्याकुल

अखंपण—स्वच्छ, निर्मल

अखुट्ट—अखूट

अखुट्टिअ—अखूट, परिपूर्ण

अगंडिगेह—यौवन का उभार

अगिल—अविच्छिन्न स्वर से रुदन

अग्गल—अधिक
अग्गलय—अधिक
अग्गहणिया—सीमतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाने वाला एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला उत्सव
अग्गहर—घर का अगला भाग
अग्गहिय—१ निर्मित, विरचित। २ स्वीकृत
अग्गिआय—इन्द्रगोप, क्षुद्रकीट-विशेष
अग्गीवय—घर का एक भाग
अग्गुच्छ—प्रमित, निश्चित
अग्गोयर—उपहार
अच्चियंत—अनिष्ट, अप्रीतिकर
अच्छक्क—असमय, अनवसर
अच्छरा—चुटकी, चुटकी की आवाज
अच्छुक्क—अक्षि-कूप-तुला, आख का कोटर
अच्छुद्धसिरि—इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ
अच्छोडाविय—वंधित, वंधाया हुआ
अच्छोडिय—आकृष्ट, खीचा हुआ
अजड—१ शीघ्र करने वाला। २ जार, उपपति
अजणिक्क—सायंकालीन भोजन
अजम—१ सरल। २ अजवाइन
अज्जम—ऋजु
अज्झोलिया—बार-बार दोहन करने योग्य गाय
अट्टण—आर्तज्ञ
अट्टल—अनपराध
अट्टवसट्ट—अत्यन्त खिन्न
अट्टिलिय—अस्थि
अड—उद्यान, बगीचा
अडपल्लण—वाहन-विशेष
अडयण—कुलटा, व्यभिचारिणी
अडवडण—स्खलना, रुक-रुककर चलना
अडा—प्रलंबित केश
अडाल—बलात्
अडुवियड्ड—अस्त-व्यस्त
अडुय—शस्त्र-विशेष
अड्डाय—वक्र
अड्डिम्म—अतिरिक्त
अणउंछिय—अपृष्ट, अनपूछा
अणक्ख—१ लज्जा। २ क्रोध। ३ अपवाद
अणखालय—अस्खलित
अणग्गपल्लट्ट—पुनरुक्त
अणड—अनृत, झूठा
अणरहू—नववधू
अणहवणय—तिरस्कृत, भर्त्सित
अणहुल्लिय—जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह
अणालि—वक्रता
अणिअ—मुख, मुह
अणियच्छिय—देखने मे असमर्थ
अणिरिक्क—परतंत्र, पराधीन
अणुअज्झिय—प्रयात, प्रतिजागरित,
अणुअत्थ—प्रचुर
अणुज्झिअअ—१ प्रयत, प्रयत्नशील। २ सावधान

अणुत्तुण—निरभिमानी
अणुदिव—प्रभात, प्रातःकाल
अणुमग्ग—पीछे-पीछे
अणुव्वाय—अखिन्न
अणुहुंडिय—अनुभुक्त
अणोलिया—गिल्ली, डोली
अण्णसअ—आस्तृत
अण्णासय—विस्तृत, बिछाया हुआ
अण्णोल—प्रभात
अत्तिल्ल—अत्यन्त
अत्तिहरी—दूती, समाचार पहुचाने वाली स्त्री
अत्थक्क—अनवसर
अत्थक्कि—अकस्मात्
अत्थाइया—गोष्ठी-मण्डप
अत्थोडिय—आकृष्ट, खींचा हुआ
अथक्क—अस्थिर
अद्दुमाअ—पूर्ण, भरा हुआ
अद्धघरणी—नववधू
अद्धच्छिपेच्छिअ—इधर-उधर दृष्ट
अद्धच्छिपेच्छिरि—इधर-उधर देखना
अद्धद्धा—दिन अथवा रात्रि का एक भाग
अद्धर—प्रच्छन्न, गुप्त
अन्नाहुत्त—पराङ्मुख
अपंडिअ—विद्यमान
अपिट्ठ—पुनरक्त, फिर से कहा हुआ
अपुण्ण—आक्रान्त
अप्पाअप्पि—उत्कण्ठा, औत्सुक्य
अप्पाण—निर्बल
अप्पुण—स्वयं
अप्पुण्ण—पूर्ण
अप्फरिअ—अधिक खाने से होने वाला पेट का उभार—आफरा इति भाषाया—'अप्फरियपोट्टो'
अप्फाहेंत—सदेश देता हुआ
अबहिट्ठ—मैथुन
अब्बा—माता
अब्बो—माता का सम्बोधन
अब्भडवंच—पहुंचाने जाना
अब्भहर—अभ्रक
अब्भिट्ट—अभिगत
अब्भिट्ठ—सगत, सामने आकर भिडा हुआ
अब्भिड—संग्राम
अब्भिडिअ—समागत
अभिणिव्वागड—भिन्न परिधि वाला
अभिमर—हत्या
अभुल्ल—अभ्रान्त—अभ्रान्त इत्यर्थे देशी
अमयघडिय—चन्द्रमा, चाद
अमल—तेजहीन
अमार—१ नदी के मध्य का द्वीप। २ कमठ
अम्मच्छ—असबद्ध
अम्मण—कितना
अम्माहीरय—राग, ध्वनि-विशेष
अम्हत्त—प्रमृष्ट, प्रमार्जित
अयंगम—शिथिल शरीर
अयडणा—कुलटा
अयुजरेवइ—अचिर-युवति, नवोढा
अरणि—१ रास्ता। २ पंक्ति

अरणेट्टय—पत्थरों के टुकड़ों से मिली हुई सफेद मिट्टी
अरलाअ—१ चिरिका। २ मशक
अरि—चक्र
अरोर—धनाढ्य, दरिद्रता से मुक्त
अलंड—आरोप
अलवलवसह—दुष्ट बैल
अलियल्ल—व्याघ्र
अलियल्लि—व्याघ्री
अलिल्लह—१ छन्द-विशेष। २ अप्रयोजक, नियम रहित
अलिसार—क्षीर
अलीढा—मिथ्याचारिणी कुलटा
अल्ल—१ कम्प—कम्पे देशी। २ आलीन
अल्लय—आवला
अल्लविअ—दिया गया
अल्लि—व्याघ्र
अल्लिय—भौंरा
अल्लिल्ल—भ्रमर
अवअण्ह—उलूखल
अवआर—लोकयात्रा
अवइज्झिय—त्यक्त
अवउडग—गले को मरोड कर बाधना, वधन का एक प्रकार
अवऊढ—व्यलीक
अवंग—अपामार्ग
अवंगु—खुला, अनावृत
अवकुम्माणिका—विलास
अववख—निस्तेज
अवखा—चिंता
अवगद—आक्रान्त
अवगल—आक्रान्त
अवगिच्चण—पृथक्करण
अवडुविक्कय—कूप मे गिरकर मरा हुआ
अवडल्लिय—कूप आदि मे गिरा हुआ
अवमिच्चअ—उधार पर खरीदा गया
अवरज्ज—गत दिवस
अवरत्तय—अनुताप, पश्चात्ताप
अवरिज्ज—१ अद्वितीय। २ उत्तरीय
अवरुंडिय—आलिङ्गित, व्याप्त
अवरुप्पर—परस्पर
अवरोप्पर—परस्पर
अवलुय—चित्तभेद
अवसण्ण—झरा हुआ, टपका हुआ
अवसरिअ—विरह
अवसेरी—चिंता
अवहाडिय—उत्कृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह
अवहिट्ठ—१ अभिमानी। २ मैथुन
अवहोअ—विरह, वियोग
अवाडिअ—वञ्चित, प्रतारित
अवाहिय—अध्यासित
अविउत्थग—स्थान-विशेष
अविउल—अनुद्विग्न
अवियज्झ—आयत्त, प्राप्त
अविरिक्क—सायंकालीन भोजन
अविहंग—स्वभाव से—स्वभावतः इत्यर्थे देशी
अविहंडिय—परिपूर्ण
अविहिअ—मत्त, उन्मत्त

अव्वारिट्टि—नटखटपन
अव्वो—अहो
असआणा—बुभुक्षा, भूख
असइ—अभाव, अविद्यमानता
असराल—१ विकराल । २ अश्वशाला
असालिय—सर्प की एक जाति
असाहार—अतुल, अनुपम
असुहावणय—अशोभन
अस्संगिअ—आसक्त
अहट्ट—प्रपंच
अहद्ध—स्नेह-रहित
अहासंखड—निष्कम्प, निश्चल
अहिउत्त—व्याप्त, खचित
अहिट्टिय—हर्षित
अहिरिअ—शोभाहीन, विच्छाय
अहिरीमाण—१ अमनोहर । २ अलज्जाकारक
अहिरेइअ—परिपूर्ण
अहिरोइय—पूर्ण
अहिहरअ—देवालय
अहेल्ल—ईश्वर

आ

आ—१ स्मरण, याद । २ समन्तात्, चारों ओर
आअ—दही
आअट्टिआ—१ परायत्त । २ नववधू
आअर—मुसल
आअलण—रतिगृह
आअल्ल—केशबंध
आअल्लय—आकांक्षा
आअल्लियय—उत्कण्ठित
आइंधण—परिधान
आउल्लय—जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण-विशेष
आकड्ढिय—बाहर निकाला हुआ
आकासिय—पर्याप्त, काफी
आगमेसि—आगामी
आडंबर—पटह
आडविअ—चूर्णित
आडियत्तिय—१ शिविका-वाहक पुरुष । २ सुभट
आडुंभण—गडबड़
आडोर—चडाल, श्वपच
आणक्क—तिर्यक्, तिरछा
आणिक्क—तिर्यक्–तिर्यगर्थे देशी
आदअ—दर्पण
आप्पण—पिष्ट, आटा
आब्भिट्ट—भिडना
आभिट्ट—१ प्रवृत्त । २ समभिगत, जाना हुआ
आभिड्ड—भिडना
आभिडिय—१ भिड़ा हुआ । २ प्रवृत्त
आभेडिय—प्रवृत्त
आमल्लअ—धम्मिल्ल-रचना, जूडा बाधने की कला
आयल्ल—१ व्याकुल । २ चाह । ३ कामपीडा
आयल्लया—बेचैनी
आयल्लिय—१ आक्रान्त, व्याप्त । २ उत्कठित । ३ पीडित
आरंतिअ—मालाकार
आरायण—युद्धरचना

आरोग्गरिअ—रक्त, रंगा हुआ
आरोढ—१ प्रवृद्ध, बढा हुआ। २ गृहागत, घर मे आया हुआ
आलक्क—पागल कुत्ता
आलत्थअ——मयूर
आलस—विच्छू
आलिद्ध—१ आलिङ्गित। २ व्याप्त
आलिसिंदय—धान्य-विशेष
आलुंखिय—आस्वादित
आलुंघिअ—स्पृष्ट—स्पृष्टार्थ देशी
आलुयार—निरर्थक, व्यर्थ
आलोल—केशबंधन
आवग्ग—१ आरूढ। २ स्वाधीन
आवग्गी—स्वाधीना
आवरिल्ल—१ आवृत। २ चंचल
आवसण—रतिगृह
आवाह—इक्षुवाटी
आविलिअ—कुपित, क्रुद्ध
आवील—शिरोभूषण, माला
आवुत्त—भगिनी-पति, बहनोई
आवेढिअ—आवेष्टित
आवेवअ—१ विशेष आसक्त। २ प्रवृद्ध, बढा हुआ
आसंघ—आस्था
आसंघिय—आश्रित
आसकलिय—प्राप्त
आसगलिअ—१ प्राप्त। २ आक्रान्त
आहट्ट—१ आडंबर। २ उपाधि
आहुड—सीत्कार
आहर-जाहर—गमनागमन
आहविअ—चूर्णित
आहित्थ—व्याकुल, त्रस्त
आहित्थविहत्थ—आकुल-व्याकुल
आहिद्ध—१ रुद्ध, रुका हुआ। २ गलित, गला हुआ
आहुट्ट—साढे तीन
आहुट्ठ—अर्धचतुर्थ, साढे तीन
आहुत्त—सम्मुख, सामने

इ

इक्कुसी—नील कमल
इच्छाउत्त—१ योगिनी-पुत्र। २ ईश्वर
इदुर—१ गाड़ी के ऊपर लगाने का आच्छादन-विशेष। २ ढकने का पात्र-विशेष
इद्धग्गिधूम—हिम
इल्लपुलिंद—व्याघ्र
इल्लिय—आसिक्त
इव्वहि—अभी
इसअ—विस्तीर्ण

ई

ईरिण—स्वर्ण
ईसीसि—अल्प

उ

उअआर—समूह
उअविअ—उच्छिष्ट
उइत्तण—वस्त्र, निवसन
उएट्ट—शिल्प-विशेष
उओग्गिअ—संबद्ध, संयुक्त
उं—१ निंदा, क्षेप। २ विस्मय। ३ खेद। ४ वितर्क। ५ सूचन—इन अर्थो का सूचक अव्यय
उंगाहिअ——उत्क्षिप्त

उंबरय—कुष्ठ रोग का एक भेद
उकुरुडिया—कूडा डालने का स्थान
उक्कअ—प्रसृत, फैला हुआ
उक्कंछण—काठ पर काठ के हाते से घर की छत बाधना, घर का संस्कार-विशेष
उक्कंडिअ—१ आरोपित। २ खण्डित
उक्कंद—विप्रलब्ध, ठगा हुआ
उक्कंपिय—धवलित, सफेद किया हुआ
उक्कंवण—घर का सस्कार-विशेष, काठ पर काठ के हाते से घर की छत बांधना
उक्कग्ग—अनवस्थित
उक्कज्ज—अनवस्थित, चञ्चल
उक्कट्टी—कूपतुला
उक्कनाह—उत्तम अश्व की एक जाति
उक्करड—१ अशुचि-राशि। २ जहां मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान
उक्करिअ—१ विस्तीर्ण। २ आरोपित। ३ खडित
उक्कास—१ उत्कृष्ट। २ उत्कृष्ट
उक्कासार—भीरु
उक्किअ—प्रसृत, फैला हुआ
उक्कुइय—ऊचा उठाया हुआ
उक्कुंड—ठगा हुआ, विप्रलब्ध
उक्कुरड—कूड़े-कचरे का स्थान—उत्करसमूहस्थाने देशी
उक्कोइय—उत्पादित—उत्पादित इत्यर्थे देशी
उक्कोट्टिय—अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ
उक्कोडिय—रिश्वतखोर, घूसखोर
उक्कोसिअ—पुरस्कृत, आगे किया हुआ
उक्खय—उद्गत
उक्खुत्त—काटा हुआ
उक्खुडिय—उखडा हुआ
उग्गाल—लघु स्रोत
उग्गाविर—उद्गमक
उग्गाहिअ—उत्क्षिप्त
उग्घक्क—प्रलपित
उग्घय—विस्तीर्ण
उग्घवियय—पूर्ण
उग्घोसिय—मार्जित
उघूण—पूर्ण, भरपूर
उच्चंड—पराक्रम से रचित चरित
उच्चंडिग—१ निःसीम। २ प्रचुर
उच्चंडिय—ऊंचा चढाया हुआ
उच्चंत—गाढ
उच्चत्ता—थोक मे वेचना
उच्चदिअ—मुषित, चुराया हुआ
उच्चल्ल—१ दृष्ट। २ अभ्यासित। ३ विदारित
उच्चाइय—उत्थापित, उठाया हुआ
उच्चाडल—१ उपवन। २ शीत
उच्चुग—अनवस्थित
उच्चुरण—उच्छिष्ट, जूठा
उच्चोड—शोषण
उच्चोली—कटि-वस्त्र
उच्छड्डिअ—चुराया हुआ, मुषित
उच्छलय—गृह, घर

उच्छलल—उत्क्षुब्ध
उच्छललणा—अपवर्त्तना, अपप्रेरणा
उच्छिरण—उच्छिष्ट, जूठा
उच्छुण्ण—परिपूर्ण
उच्छुरिअ—आपूर्ण
उच्छूढ—आरूढ, ऊपर बैठा हुआ
उच्छूरण—उच्छिष्ट
उच्छोला—प्रभूत जल
उज्जगिर—उजागर
उज्जाडिअ—उजाड किया हुआ
उज्जाविय—विकसित
उज्जोगल—भट
उज्झ—अरम्य
उज्झंसिय—तिरस्कृत
उज्झणिअ—१ विक्रीत, बेचा हुआ।
२ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ
उज्झमाण—पलायित, भागा हुआ
उज्झल—प्रबल, बलिष्ठ
उज्झलिअ—१ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ।
२ विक्षिप्त
उज्झसिअ—उत्कृष्ट, उत्तम
उज्झिय—१ शुष्क, सूखा हुआ।
२ नीचा किया हुआ
उट्टेट—उन्मत्त
उट्ठुद्ध—नियन्त्रित
उडंब—लिप्त, पोता हुआ
उडाहिअ—उत्क्षिप्त, फेंका हुआ
उडिअ—अन्विष्ट, खोजा हुआ
उडिल्लय—उरद, माष
उड्डमर—उद्भट, उत्कृष्ट
उड्डामर—सुंदर, उत्कृष्ट
उड्डाहिअ—उत्क्षिप्त
उड्डिय—उत्क्षिप्त
उड्डुइय—डकार
उड्ढंक—मार्ग का उन्नत भूभाग
उड्ढण—उत्तरीय वस्त्र
उड्ढि—गाडी का एक अवयव
उड्ढिया—१ पात्र-विशेष।
२ कंबल आदि वस्त्र
उणाइ—प्रिय, पति
उणिआ—कृसरा, यवागू
उण्णाह—तीव्र प्रवाह
उण्हालय—ग्रीष्मकाल
उत्त—वनस्पति-विशेष
उत्तण—गर्वित
उत्तत्त—अध्यासित, आरूढ
उत्तह—तत्र, उधर
उत्ताणफल—एरंड
उत्तार—आवास-स्थान
उत्ताल—गर्वित
उत्तावलय—उतावल, शीघ्रता
उत्तावलिय—त्वरणशील
उत्तिरिविडिअ—एक के ऊपर एक चिना हुआ
उत्तिवडा—एक के ऊपर एक रखे हुए भाजनों का ढेर
उत्तुप्पिय—लिप्त, चुपड़ा हुआ
उत्तेडिय—बूंद-बूंद कर फैला हुआ
उत्तोलिय—छुटकारा
उत्थय—आच्छादित
उत्थार—आक्रमण
उत्थिअ—रण मे प्राप्त
उथाउ—अथवा
उदूग—पृथ्वी-शिला

उद्दलिय—अवनत
उद्दअ—श्रान्त, थका हुआ
उद्दच्छिअ—निषिद्ध
उद्दाण—१ कुरर। २ सगर्व। ३ प्रतिध्वनि
उद्दारिअ—उत्खात
उद्दालिअ—१ रणद्रुत। २ झपटना
उद्धअ—शान्त, ठंडा
उद्धच्छ—लिप्त
उद्धण—उद्धत, अविनीत
उद्धरिअ—१ पीडित। २ विनाशित
उद्धल—दोनो तरफ की अप्रवृत्ति
उद्धव—प्रमोद, उत्सव
उद्धारय—उधार पर खरीदना
उद्धुंधलिय—धुधलाया हुआ
उद्धुंधुल—धुधला
उद्धुसिअ—रोमाचित
उद्धूलिअ—अवनत
उप्पंग—समूह, राशि
उप्पक्किअ—धोबिन
उप्पड्डिअ—नष्ट
उप्पत्त—१ गलित। २ विरक्त
उप्पट्ट—घर, गृह
उप्परवट्ट—श्रेष्ठ
उप्पा—मणि आदि रत्नों पर 'ओप' चढाना
उप्पालअ—रणरणक, कामदेव
उप्पिअ—१ अपहृत। २ रुष्ट। ३ वियुक्त
उप्पिंगरिअ—हस्तोत्क्षेप
उप्पिणिर—शून्य
उप्पुलपोलिअ—कुतूहलपूर्वक त्वरा
उप्पेत्थ—उन्मत्त
उप्पेलिअ—उन्नमित
उप्फाल—पटह-ध्वनि
उप्फालिअ—१ कथित। २ सूचित
उप्फेर—भय
उप्फोडिआ—संवारी हुई
उब्बाल—अध्यासित, सहन किया हुआ
उब्बिबिर—खिन्न, उद्विग्न
उब्बुड्डणिब्बुड्डण—उन्मज्जन-निमज्जन
उब्भग्ग—मुंडित
उब्भिमट्ट—उच्छिन्न
उब्भिय—ऊंचा किया हुआ
उम्मंथिय—दग्ध, जला हुआ
उम्मत्तय—धतूरे का फल
उम्माहय—अत्याकाक्षा से उत्पन्न व्याकुलता
उम्माहिअ—उत्साहित, उत्कठित
उम्मिंठ—हस्तिपक-रहित, महावत-रहित
उम्मिट्ट—बाहर निकला हुआ
उम्मेंठ—महावत-रहित
उम्मेट्ठ—महावतरहित
उय्यकिअ—इकट्ठा किया हुआ
उरअ—ऋजु
उरणी—पशु
उरविय—१ आरोपित। २ खण्डित
उरितिय—त्रिसरा हार, तीन लड़ वाला हार
उरुमल्ल—प्रेरित
उलुओसिअ—रोमाञ्चित, पुलकित
उलुकुसिअ—रोमाचित
उलुहंडिय—हिनहिनाहट

उलुहुलअ—अवितृप्त, तृप्तिरहित
उलुहुलिअ—अवितृप्त
उल्ल—ऋण, कर्जा
उल्लवक—१ भग्न, टूटा हुआ। २ स्तब्ध
उल्लविकअ—त्रोटित, तोड़ा हुआ
उल्लट्ट—उल्लुंठित, खाली किया हुआ
उल्लट्टिय—भाराक्रान्त, जिस पर बोझा लादा गया हो
उल्ललण—उत्प्लवन
उल्लाय—रोग-मुक्त
उल्लाय—लात मारना, पाद-प्रहार
उल्लालिय उन्नमित
उल्लिचिय—उद्रिक्त, खाली किया हुआ
उल्लिवक—दुश्चेष्टित
उल्लिया—राधावेध का निशाना
उल्लिर—गीला
उल्लिहड—आसक्त
उल्लुअ—१ पुरस्कृत, आगे किया हुआ। २ रक्त, रगा हुआ। ३ उदय-प्राप्त
उल्लुक—स्तब्ध
उल्लुज्झण—पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ-पांव की फिर से उत्पत्ति
उल्लुसिअ—रोमांचित
उल्लुहुंडिअ—उन्नत, उच्छ्रित
उल्लूरिय—हलवाई
उल्लोक—त्रुटित, छिन्न
उल्हविय—बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ

उवइय—त्रीन्द्रिय जीव-विशेष
उवक्खेव—बालउत्पाटन, मुण्डन
उवज्झिय—आकारित, बुलाया हुआ
उवडिअ—अवनत, नमा हुआ
उवडिडिम—डुगडुगी
उवयासिय—आलिङ्गित
उवरिहुत्त—ऊर्ध्वाभिमुख
उवलंडंत—चूडावलय
उवसट्ठु—सारथि
उवसेर—रथ के योग्य
उवह—'देखो' अर्थ को बताने वाला अव्यय
उविय—शीघ्र
उव्वत्ताल—अविच्छिन्न स्वर से रोदन
उव्वरियय—अवशिष्ट
उव्वस—उजड़ जाना
उव्वार—उद्धरण, रक्षण, उबारना
उव्वारुय—अवशिष्ट
उव्वाहुल—उत्सुक
उव्वाहुलिय—उत्सुक, उत्कण्ठित
उव्विवक—प्रलपित, प्रलाप
उव्विड—१ चकित, भीत। २ क्लान्त, क्लेशयुक्त
उव्विल—१ चकित। २ क्लान्त
उव्वेल—कौशल
उसड्ड—ऊंचा
उसलिअ—रोमाञ्चित, पुलकित
उस्सिंघिय—आघ्रात, सूंघा हुआ
उस्सिक्किअ—मुक्त, परित्यक्त
उहर—अवाङ्मुख, अधोमुख
उहार—जन्तुविशेष
उहिंजल—चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष

ऊ

ऊगिय—अलंकृत
ऊढ—त्यक्त
ऊमिणिय—प्रोञ्छित, पोछा हुआ
ऊमिण्ण—प्रोंखणक, चूमना
ऊरिसंकिअ—रुद्ध, रोका हुआ
ऊससिअ—तकिया
ऊसाअत्त—खेद से शिथिल
ऊसुग—मध्यभाग
ऊसुम्मिअ—तकिया

ए

एक्कंतर—संग्राम
एक्कक्कम—परस्पर, अन्योन्य
एक्कट्टय—एक ओर
एक्कल—प्रबल
एक्कल्ल—१ बलवान् । २ अकेला
एक्कल्लपुडिंगय—फुहार, बूंदाबूंदी
एक्कसिरिआ—शीघ्र, जल्दी
एक्कोवर—सहोदर
एत्तूण—अधुना, इस समय
एलविल—धनवान्, पुण्यवान्

ओ

ओअंदण—१ नाश । २ जबरदस्ती से छीनना
ओअम्मअ—अभिभूत, पराभूत
ओअल्ल—अवनत–अवनते देशी
ओअल्लअ—विप्रलब्ध, प्रतारित
ओअल्लिअ—कंपित
ओअल्लिय—आर्द्रित
ओआमिअ—अभिभूत, पराजित
ओइल्लअ—वंचित, विप्रलब्ध
ओउल्लिय—पुरस्कृत, आगे किया हुआ
ओऊल—प्रलंब
ओंदुर—चूहा
ओक्खलिअ—त्रुटित
ओग्गालिर—पगुराने वाला, चबाई हुई वस्तु को पुनः चबाने वाला
ओग्गिव—नीहार
ओच्छंदिअ—१ अपहृत । २ व्यथित, पीडित
ओच्छल्ल—चोर
ओच्छोअअ—घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी
ओज्जर—भीरु
ओज्झरय—निर्झर
ओज्झरिअ—१ प्रक्षिप्त । २ विक्षिप्त
ओट्टअ—अभिभूत
ओट्टुद्धय—नियंत्रित
ओड्डिगा—ओढ़नी
ओढण—१ वस्त्र । २ अवगुठन
ओढिय—ओढा हुआ
ओणल्लिय—अवनत
ओप्प—ओप, चमक
ओमंस—अपसृत, अपगत
ओमल्ल—घनीभूत, कठिन
ओमहिअ—पुरस्कृत
ओमिस—अप्रवृत्त
ओम्माहिय—उत्कण्ठित
ओरल्लि—मधुर-दीर्घ शब्द
ओराल—सिंहनाद
ओरालिय—आक्रन्दन

ओराली—दीर्घ आवाज

ओरिल्ल—पश्चात्

ओरी—समीप

ओलअण—१ पत्नी । २ नववधू

ओलगा—सेवा, भक्ति

ओलग्गा—सेवा

ओलग्गिय—सेवित

ओलाव—बाज पक्षी

ओलुक्की—आंखमिचौनी

ओलुग्ग—शोभाशून्य

ओलुग्गाविय—१ बीमार । २ विरह-पीड़ित

ओल्ली—पनक, काई

ओवग्गिअ—अवगृहीत

ओवरिय—राशीकृत

ओवाअअ—जल-समूह की गरमी

ओवारिअ—ढेर किया हुआ, राशीकृत

ओसक्कण—अपसरण, पीछे हटना

ओसक्किअ—मुक्त

ओसट्ट—विकसित, प्रफुल्ल

ओसडिअ—आकीर्ण, व्याप्त

ओसत्त—अवनत

ओसत्थ—आलिंगन

ओसरी—अलिंदक

ओसविअ—अवसन्न

ओसाअण—१ महीशान, जमीन का मालिक । २ आपोशान

ओसिरण—व्युत्सर्जन, परित्याग

ओसुद्ध—निपतित, अवपतित

ओहली—ओघ, समूह

ओहल्ली—दूर हटना, अपसृति

ओहामिय—१ तुलित । २ अभिभूत

ओहारइत्तु—दूसरे पर मिथ्याभियोग लगाने वाला

ओहिअ—अधोमुख

ओहुल्ल—१ खिन्न । २ अवनत, नीचे झुका हुआ

ओहुल्लिय—म्लान

क

कइवार—स्तुति-पाठ

कउड—ककुद, बैल के कंधे का कूबड

कउसीस—मंदिर का शिखर

कओहुत्त—किस तरफ

कंकअसुकअ—अल्प सुकृत-लभ्य

कंकर—कंकर

कंकसी—कंघी

कंकाल—वर्षाकाल

कंगणी—वल्ली-विशेष

कंचीरय—पुष्प-विशेष

कंछुल्ली—हार

कंटी—उपकण्ठ, पर्वत की निकटवर्ती भूमि

कंटोल्ल—वनस्पति-विशेष

कंठाल—कडाह

कंडच्छारिय—१ गांव । २ ग्राम-प्रमुख । ३ देश । ४ देश-प्रमुख । ५ लुटेरा, हत्यारा । ६ लुटेरों का सहायक

कंडदीणार—बाड का विवर

कंडपडव—चंदोवा

कंडारिय—कुपित

कंडोहिय—मथित-मथित इत्यर्थे देशी
कंद—मेघ, बादल
कंदल—शोरगुल
कंदुब्बय—कन्द-विशेष
कंधार—स्कन्ध
कंपर—विज्ञान, निपुणता
कंबिया—यष्टि
ककाणि—मर्मस्थान
कक्कड—कर्कश
कक्कर—पर्वत-शिखर
कक्काल—ककाल
कक्कोलय—फल-विशेष
कक्खड—कठोर
कचोर—काचरी, कच्चरा
कच्च—काच
कच्चरा—१ कचरा, कच्चा खरबूजा। २ कचरे को सुखाकर, तलकर और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य-विशेष
कच्चवार—कतवार, कूड़ा
कच्चोल—कटोरा-पात्रविशेषे देशी
कच्चोलिय—थाली, पात्रविशेष
कच्छकर—काछिआ, सब्जी बेचने वाला
कच्छट्टी—कछोटी, लगोटी
कच्छादब्भ—रोग-विशेष
कच्छुट्टिया—कछोटी, लगोटी
कच्छोटी—कछोटी
कच्छोट्ट—लगोटी
कच्छोट्टय—लंगोटी
कटुयाविय—व्यथित
कट्टराय—छुरी, शस्त्र-विशेष
कट्टोरग—कटोरा
कड—घर के पीछे का आगन
कडउल्ला—आभूषण-विशेष
कडक्क—'कडाक' से टूटना
कडत्तय—क्षीणत्व
कडत्तरिअ—दारित, विदारित
कडद्दरिअ—१ छिन्न, काटा हुआ। २ छिद्र
कडमड—उद्वेग
कडयड—वृक्ष के गिरने की आवाज
कडयडंत—कडकडाता हुआ
कडयडिअ—परावर्तित, फिराया हुआ
कडा—कड़ी, जजीर की लड़ी
कडिअ—खुश किया हुआ
कडिभिल्ल—शरीर के एक भाग मे होने वला कुष्ठ रोग
कडिल्लिय—१ कटी-वस्त्र। २ जंगल
कडुयाविय—१ प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह। २ व्यथित। ३ हराया हुआ। ४ विपदा मे फसा हुआ
कड्डय—चुम्बक-पाषाण
कड्ढाकड्ढि—परस्पर आकर्षण-विकर्षण
करसी—श्मशान
करिठाण—पैतरा
करिमरि—बदिनी स्त्री
करीट—हाथी का प्रतिक्षेपक
कलंतराजीवअ—रुपये उधार देकर

आजीविका करने वाला
कलवू—तुम्बा
कलमल—१ कामपीडा। २ कंपन, थरथराहट
कलमलय—कालुष्य, ईर्ष्याजनित खेद (मराठी—कलमल-तलमल)
कलय—अर्जुन-वृक्ष
कलयज्जल—ओष्ठ-लेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष
कलरोल—मधुर रव
कलवलय—कलरव
कलि—बेहडा
कलिय—पोतना
कलुयाल—छोटी मछली
कल्ल—१ अनिश्चित बोलने वाला। २ लज्जा। ३ कल
कल्लवण—सीमित खाद्य पदार्थ
कल्लाविअ—तरल पदार्थ से मिश्रित
कल्लूरिय—हलवाई
कल्लोडय—दमनीय बैल
कवण—कौन
कवलिआ—ज्ञान का एक उपकरण
कवसीस—मंदिर-शिखर
कविलडोला—क्षुद्र जन्तु-विशेष
कवुड्डी—कौडी
कव्वट्ठ—बालक
कव्वाडिअ—कावर उठाने वाला, वहंगी से भार ढोने वाला
कसक्किसिर—जकड़ा हुआ
कसमस—कसमसाहट
कड्ढिअ—बाहर निकला हुआ
कड्ढोयडिढ—कर्षण-विकर्षण
कणआ—नीवी
कणई—शाखा
कणखल—उद्यान-विशेष
कणवी—कन्या
कण्णमाण—विनयशील
कण्णारय—१ तीखी आर। २ पशुओं को तीखी आर लगाने वाला
कण्णाराम—मुकुट
कण्णोविआ—१ चंचु। २ मुकुट
कत्त—नारी, पत्नी
कत्तर—कूड़ा-कचरा
कत्ति—'अंधिका' नामक द्यूत में प्रयुक्त होने वाली कौडी
कत्तिवविय—कृत्रिम
कत्तोच्चय—कहां से
कथ—१ मृत। २ क्षीण, दुर्बल
कन्नारिय—विभूषित
कव्वड—वसति-विशेष
कव्वाड—कवाडखाना
कव्वाडभयय—ठेके पर जमीन खोदने का काम करने वाला मजदूर
कमड—भिक्षा-पात्र
कमल—१ मुह। २ चोर
कम्मंत—कर्म-बन्धन का कारण
कम्मरिअ—कर्मकर
कयर—धूलि
कयरस—स्वर्ण
कयवरुज्झिया—कूड़ा साफ करने वाली दासी
कयसेहर—कूकड़ा, मुर्गा
करअड—स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा

करअडी—स्थूल वस्त्र

करंड—१ शार्दूल। २ कौआ। ३ अर्गला

करकट्ट—ले जाने योग्य पदार्थ

करकड—कठिन

करकडी—चिथड़ा जो प्राचीन काल मे वध्य पुरुष को पहनाया जाता था

करचंड—अनर्थ करने वाला

करट्ट—अपवित्र अन्न को खाने वाला ब्राह्मण

करड—कठिन—कठिन इत्यर्थे देशी

करणिल्ल—समान

करतक्कड—ध्वनिपरक सादृश्य

करयरंत—करकर आवाज करना—शब्दानुकरणे देशी

करल्ल—अवशुष्क

करव—जलपात्र

करविया—पान-पात्र-विशेष

कसर—१ बलीवर्द, बैल। २ पाडुर

कसरक्क—कुड्मल, अर्ध विकसित फूल

कसार—एक प्रकार की मिठाई

कसेर—तृण-विशेष

कसेरु—तृण-विशेष

कसोति—खाद्य-विशेष

कहकहंत—कह-कह की आवाज—शब्दानुकरणे देशी

कहोड—तरुण

काउल—कौल जाति

काऊसाय—कायोत्सर्ग

काणड्डी—परिहास

काणि—वैर

काणिक्क—बडी ईट

कायपिउला—कोकिला

कायमाण—आसन

कारंड—नीड़

कारट्टय—मृत भोज

कारायणी—शाल्मली-वृक्ष

कारिल्ली—वल्ली-विशेष

कालक्खरिअ—१ उपालब्ध, निर्भर्त्सित। २ निर्वासित

कालण—मनुष्य

कालिबअ—१ शरीर। २ मेघ

कालिया—१ ऋणवृद्धि। २ मेघमाला

कालियावअ—तूफान

कालुय—अश्व की एक उत्तम जाति

कावंजुय—पक्षी-विशेष

कावड—कातर

कावडिअ—कावर से भार ढोने वाला

कावाइय—चालाकी

काहल—अधीर, उतावला

किंकिय—सफेद, धवल

किंजुक्ख—शिरीष का वृक्ष

किक्किडी—सर्प

किडिकिडिजंत—किड-किड की आवाज करता हुआ

किणइय—शोभित

किणो—प्रश्नवाचक अव्यय

किण्णरस—वाद्य-विशेष

किण्हग—वर्षाकाल मे घड़े आदि में होने वाली एक तरह की काई

किपाड—स्खलित, गिरा हुआ

किमिघरवसण—रेशम का वस्त्र
किम्मिय—जड़ता
किम्मीर—विचित्र
किर—संबंधार्थक अव्यय
किरिकिरिआ—१ कर्णोपकर्णिका । २ कुतूहल
किरी—वराह, सूअर
किलिंचिअ—छोटी लकड़ी
किलिकिंचिअ—रमण, क्रीड़ा
किलिकिलित—बन्दरों का किलकिलाना
किलिगिलिय—अनुकरणवाची शब्द
किलिणी—१ प्रतोली । २ गली
किवाड—स्खलित
कीव—पक्षि-विशेष
कीस—प्रश्नसूचक अव्यय
कुइमाण—म्लान,शुष्क
कुई—बलाका
कुंट—१ कुब्ज । २ हस्त-विकल
कुंठी—चिमटा
कुंडभी—छोटी पताका
कुंडिय—खरण्टित
कुंढ—१ हस्तहीन । २ वामन
कुंभी—कपड़े मे बांधा हुआ स्वर्ण आदि द्रव्य
कुंयरी—कुमारी
कुक्क—कुत्ता
कुक्कयय—आभरण-विशेष
कुक्की—कुत्ती
कुक्कु—अग्नि
कुक्कुडिया—खाद्य-विशेष
कुच्छिणी—वाड का छिद्र
कुट्ट—१ कोट, किला । २ नगर, शहर
कुट्टण—कूटना
कुट्टमिअ—महिष
कुट्टवाल—कोतवाल, नगररक्षक
कुट्टार—चर्मकार
कुट्टोअर—कूटादर, शयनागार
कुडंबोअ—सुरत, संभोग
कुडुंग—लतागृह
कुडुंगण—लतागृह-लतागृहमित्यर्थे देशी
कुडुंविय—मैथुन
कुडुंवीय—रतिक्रीड़ा-विशेष
कुडुव—बजाने का काष्ठ
कुड्ड—कुतूहल
कुड्डाल—हल के ऊपर का विस्तृत अंश
कुढ—पीठ
कुढिलग्ग—न्यायालय मे जिसकी जांच हो रही हो वह
कुण्हरिया—वनस्पति-विशेष
कुत्ती—कुत्ती, कुतिया
कुद्दहीर—१ बालक । २ चन्द्रमा
कुप्पास—चोली
कुबड—कूबड़ा, कुब्ज
कुरुमालण—खुजलाना
कुरुया—शरीर-प्रक्षालन
कुरुलिअ—कौए की आवाज
कुरूढ—१ पवित्र । २ निपुण
कुललय—कुल्ला, गंडूप
कुलुक्किय—जला हुआ
कुल्लुरिय—हलवाई
कुवलय—बदर

कुवली—वृक्ष-विशेष
कुविल—चोर
कुहणी—१ रथ्या । २ कोहनी, कूर्पर
कुहाडय—कुठार
कुहिण—कूर्पर, कोहनी
कुहिणी—मार्ग
कूर—ओदन–ओदनार्थे देशी
कूरपिउड—भोजन-विशेष
कूवार—१ चिल्लाहट । २ पुकार
केआ—क्रीडा
केऊरपुत्त—गाय तथा भैंस का बच्चा
कंजू—१ रज्जु । २ असती । ३ कन्द
केक्कार—पक्षियों का शब्द-विशेष
केडु—१ व्यापकता २ । फेन । ३ साला । ४ दुर्बल
केणअ—पूजाद्रव्य
केत्तडय—कितना
केयरी—वृक्ष-विशेष
केर—१ सेवा । २ आज्ञा
केरअ—यह उसका है–इस अर्थ मे प्रयुक्त अव्यय
केवइय—कितना
कोकाविअ—'को' शब्द से आहूत
कोक्कंत—'को' ऐसा शब्द करने वाला
कोक्कय—आमंत्रित करने वाला
कोक्काविअ—आहूत, आकारित
कोक्किय—आहूत
कोच्छभास—काक, कौआ
कोच्छर—१ कुशल । २ कुत्सित
कोज्जरिअ—पूरित
कोट्ट—प्राकार-भित्ति, कोट
कोट्टमिय—रतिक्रीड़ा-विशेष
कोट्टवाल—नगररक्षक
कोट्टा—प्राकार
कोड—कौतुक
कोडमिय—रतिक्रीड़ा-विशेष
कोडि—मुर्गा
कोडिय—पिशुन, चुगलखोर
कोड्डमिय—रतिक्रीड़ा-विशेष
कोड्डय—आश्चर्य
कोड्डावण—कौतुक करना–कौतुक-करणं इत्यर्थे देशी
कोड्डावणय—कौतुकोत्पादक
कोड्डावणिय—कौतुक करने वाला–कौतुककारक इत्यर्थे देशी
कोड्डिय—कुतूहली
कोड्डी—कुतूहली
कोणाली—गोष्ठी
कोणेट्टिया—गुञ्जा
कोण्णाअ—म्लान
कोत्थुअवत्थ—नीवी
कोदूमिय—सुरत, सभोग
कोद्दाल—कुदाल
कोप्पर—१ वर्णसंकर । २ जाल
कोमाणय—म्लान
कोर—अनुपभुक्त वस्त्र
कोव—ईषत्, थोड़ा
कोसिअ—जुलाहा
कोह—कोथली, थैला

ख

खंचण—कर्षण, खींचना
खंडपयार—एक प्रकार की मिठाई
खंडसोल्ल—चीनी से बना खाद्य पदार्थ
खंडिआ—माप-विशेष, बीस मन का एक माप
खंडीधारा—अति उष्ण पानी की धारा
खंडुअ—हाथ का आभूषण-विशेष, बाजूबंद
खंदजी—स्थूल इन्धन की अग्नि
खंधलट्ठि—हाथ, भुजा
खंपण—कलक
खंपणय—वस्त्र
खक्खरग—सूखी रोटी
खगउड—पक्ष-पुट
खट्टावण्ण—खट्टा तीमन
खट्टिक्क—कसाई
खट्टिग—कसाई
खडक्क—पर्वत, शिलाखंड
खडट्टोविल—एक म्लेच्छ-जाति
खडफड—छटपटाहट
खडयासी—तृणभक्षक
खडरिअ—कलुषित
खडहडरव—बादलों का गर्जारव
खडहडिय—शिथिल किया हुआ
खडहार—तृणभार
खडिअ—दवात, स्याही का पात्र
खड्ड—खेल
खड्डिक्क—कसाई
खड्डोलय—खड्डा, गर्त्त
खत्ति—एक म्लेच्छ-जाति
खत्थ—सतप्त
खत्थय—भीत
खन्नवाइ—वह व्यक्ति जो यह मानता हो कि खान से बहुमूल्य रत्न आदि निकालने से वह धनाढ्य होगा
खप्पिअ—परिपूर्ण
खब्बण—दक्ष
खयाल—१ वस-जाल, झाड़ी। २ पर्वत-गर्त्त
खरंसूया—वनस्पति-विशेष
खरडिय—खरटित
खरुण्णा—विषम भूमि
खलभल—खलबलाहट, क्षोभ
खलभलिअ—क्षुब्ध
खलहल—क्षुब्ध
खलि—संबोधन-सूचक अव्यय
खलिण—लगाम
खलियारिय—कदर्थित
खली—चीनी
खल्लि—सिर की वह चमड़ी जिसमें बाल पैदा न हों
खल्लिहडअ—खल्वाट, गंजा
खल्ली—खाली
खवल—क्षोभ, खलबलाहट
खसर—कर्कश
खसिअ—१ आपूर्ण। २ खिसका हुआ
खसु—रोग-विशेष
खाण—एक म्लेच्छ-जाति
खारिक्क—फल-विशेष, छुहारा
खिल—१ ऊषर भूमि। २ अकृष्ट भूमि

खिल्लहड—कन्द-विशेष
खिल्लहल—कन्द-विशेष
खिल्लुहड—कंद-विशेष
खीसण—खीसना, झूरना
खुइय—१ विच्छिन्न । २ विख्यात, ज्ञात
खुंगाह—अश्व की एक उत्तम जाति
खुंट—१ स्तम्भ–स्तम्भ इत्यर्थे देशी । २ खूंटी
खुंटण—त्रोटन, खोंटना
खुंटमोडय—१ खूंटे को मोडने वाला । २ इस नाम का एक हाथी
खुज्जुल्लिय—कुब्ज
खुडिया—स्वल्प रति-क्रीडा
खुडुक्किअ—१ शल्य की तरह चुभा हुआ । २ रोष-मूक, गुस्से मे मौन धारण करने वाला
खुडुक्खिय—शल्य की भांति चुभा हुआ
खुड्डमड्डा—१ बहु, अत्यन्त । २ पुनः-पुनः
खुत्त—क्षिप्त, प्रहृत
खुप्पण—निमज्जन
खुरप्प—खुरपा, क्षुरप्र (मराठी–खुरपे)
खुरहखुडी—प्रणय-प्रकोप
खुरुप्प—शस्त्र-विशेष
खुलुखो—मिथ्या घटित होना
खुल्लासय—खलासी, जहाज का कर्मचारी-विशेष
खेआलुअ—१ हास । २ हास्य के समय हंसना
खेड—आलिङ्गन
खेडय—अग्राहार, बलि
खेड्डिया—१ बारी, दफा । २ खिड़की
खेर—१ एक म्लेच्छ-जाति । २ द्वेष
खेरि—द्वेष
खेल—जहाज का कर्मचारी-विशेष
खेव—आलिङ्गन
खेह—धूलि
खोंटग—खूंटी
खोंटय—खूंटा, खूंटी
खोंडग—खूंटी
खोज्ज—मार्ग-चिह्न
खोट्टिय—बनावटी लकड़ी
खोट्टिया—कुट्टिनी, दासी
खोड्डी—दासी
खोर—१ कलुषित, तुच्छ । २ मार्मिक
खोल—लघु, तुच्छ
खोल्ल—गंभीर–गम्भीर इत्यर्थे देशी । (मराठी खोल)
खोसला—दन्तुल स्त्री, वह स्त्री जिसके दांत बाहर निकले हुए हों
खोहत्त—हाथो से आहत पानी

ग

गउसाउल्ल—विरक्त
गंगली—मौन, चुप्पी
गंजुल्लिय—पुलकित
गंजोल—पीड़ित

गंजोलिय—रोमाञ्चित

गंजोल्लिय—क्षुब्ध–क्षुब्ध इत्यर्थे देशी

गंडधारा—गाड़ी का मार्ग

गंडपव्भालण—गंडमाला-रोग

गंडलय—टुकड़ा

गंडली—गंडेरी, इक्षु-खण्ड

गंडिली—इक्षु-खण्ड

गंधिल्ली—छाया

गंधुत्तमा—मदिरा

गग्गर—गद्‌गद् आवाज वाला

गज्जिलिअ—१ अंग-स्पर्श से होने वाला हास्य। २ पुलक

गज्जिल्लिअ—१ गुदगुदी। २ अंगस्पर्श से होने वाला रोमांच

गडयड—गड़गड़ाहट

गडवड—गड़बड़, गोलमाल

गडियड—गर्जन

गड्डुरियपवाह—गड्डुरिका-प्रवाह, गतानुगतिकता

गड्डुरिया—भेड़ी

गड्डुल—कर्दम से निःसृत

गणियारी—हथिनी

गद्द—गाढ

गद्दहिला—बैल आदि को चलाने के लिए आजन मे लगाई जाती आर, लोहे की कील

गमरोट्ट—शेखरक, शिरोमाल्य

गमार—अविदग्ध, मूर्ख

गमिअ—अवधूत

गमिद—१ अपूर्ण। २ गूढ। ३ स्खलित

गरुड—एक प्रकार का व्रीहि धान

गरुलिया—शास्त्राभ्यास की स्थली

गलगिज्ज—घुंघुरावलि, किंकिणीपंक्ति

गलच्छण—फेंका हुआ

गलच्छिय—पीड़ित, प्रेरित–प्रेरित इत्यर्थे देशी

गलत्थ—१ क्षेपक, विनाशक। २ ग्रस्त

गलत्था—प्रेरणा

गलत्थिय—कदर्थित

गलद्धअ—प्रेरित, क्षिप्त

गलमोडी—गले की वक्रता

गलहत्थण—ग्रसित करना

गल्लक्क—स्फटिक मणि

गल्लूरण—मांस खाते हुए कुपित शेर की आवाज

गवत्थिय—आच्छादन

गवार—ग्रामीण

गविअ—अवधृत, निश्चित

गविल—उत्तम कोटि की चीनी, शुद्ध मिश्री

गव्विय—कथित

गहगह—आनन्द से आप्लावित

गहणय—गहना, आभूषण

गहर—गृध्र

गहिलिय—उन्मत्त

गहिल्लिय—आवेशयुक्त, पागल

गहेर—वन्दी

गाउय—गव्यूति, दो कोस

गांडी—मंजरी

गामण—भू-सर्पण, भूमि मे गमन

गामणह—ग्राम-स्थान
गामरेड—जो छलपूर्वक ग्राम का उपभोग करता है वह
गामहण—सामान्य
गामार—ग्रामीण, गंवार
गालवाहिया—छोटी नौका, डोंगी
गाव—गत, गया हुआ
गिभारि—वर्षाऋतु
गिरिडी—पशुओ के दांत बांधने का उपकरण-विशेष
गिलोइया—गृह-गोधा, छिपकली
गिलोई—छिपकली
गिल्लगंड—गीला—आर्द्र इत्यर्थे देशी
गीढ—धृत, व्याप्त
गीर—गुदा, गिरि
गुंजाविअ—हासित, हंसाया हुआ
गुंजोल्लिअ—विकसित
गुंदल—१ आनन्द-ध्वनि। २ आनन्द-वृद्धि। ३ आनन्द-मग्न
गुंदवडय—एक प्रकार की मिठाई
गुंदि—मंजरी
गुंफण—गोफन, पत्थर फेकने का शस्त्र-विशेष
गुज्जणिअ—संघटित
गुज्जलिअ—संघटित
गुडसोल्ल—गुड से बना भोज्य-पदार्थ
गुडिअ—सन्नद्ध
गुडुर—वस्त्र-गृह, तबू
गुड्डुर—शोर मचाना
गुणा—मिष्टान्न-विशेष
गुत्तिय—आसक्त-सक्त इत्यर्थे देशी (मराठी-गुतलेली)
गुत्थिअ—उन्मूलित
गुप्पी—इच्छा
गुमिअ—भ्रमित, घुमाया हुआ
गुमुगुमुगुमंत—भिनभिनाना
गुम्मडिअ—मुग्ध, मोहित
गुम्मिअ—मूल से उत्सन्न
गुरुहार—गर्भवती
गुलिणी—लतागृह
गुलियारय—मधुरतर
गुवालिया—वर्षा-ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष
गेज्ज—ग्रैवेयक, गले का आभूषण
गेडण—१ फेकना। २ दे देना
गेड्डा—यव, जौ धान्य
गेड्डी—गेंद खेलने की लकड़ी
गोंछ—गुच्छ
गोंजल—गले से संबंधित
गोंदल—१ संग्राम (मराठी-गोंधल)। २ समूह। ३ व्यापार
गोंदलिय—मिलित
गोच्छड—गोबर
गोजा—कलशी
गोड—गोडा, पैर
गोड्डु—१ स्तनो पर दी जाने वाली वस्त्र की गाठ। २ पंक
गोणत्तय—वैद्य का औजार रखने का थैला
गोदा—नदी-विशेष, गोदावरी
गोद्दहिल्ल—नागरिक
गोप्पी—बाला

गोमिआ—कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष

गोय—उदुम्बर, गूलर आदि का फल

गोर—१ ग्रीवा। २ आंख। ३ हल की रेखा, सीता

गोरडित—त्रस्त, ध्वस्त

गोरप्पडिआ—गोधा

गोरिहिअ—त्रस्त

गोला—गाय

गोसाविआ—१ वेश्या। २ मूर्ख-जननी

गोसिय—प्राभातिक, प्रातःकाल-सम्बन्धी

गोहत्तण—पौरुष

गोहली—गोधूमाली

घ

घअअंद—दर्पण

घइं—शीघ्रवाची अव्यय

घंघलिअ—घबराया हुआ

घंचिय—तेली (घांची—गुज)

घग्घत्यण—खेद

घग्घर—१ घरघराहट। २ क्षुद्र घंटिका। ३ घाघरा

घग्घरय—क्षुद्रघण्टिका

घग्घरा—क्षुद्र घंटिका—किंकिणी शब्दार्थ देशी

घट्टंसुअ—वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ-वस्त्र

घट—मृष्टीकृत, बनाया हुआ

घडइय—संकुचित

घडाघडी—गोष्ठी, सभा

घण—बहुत

घणंवाहिअ—इन्द्र

घणघण—सातिशय

घणघणा—रथ के चक्कों की ध्वनि

घत्ति—शीघ्र

घत्तिय—प्रेरित

घत्थ—ग्रस्त

घरघरग—ग्रीवा का आभूषण

घरप्फरि—घरपटक करना

घलंजिया—गृहदासी—गृहदासीत्यर्थे देशी

घल्लय—द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति

घल्लियय—क्षिप्त

घल्लोय—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष

घवक्कड—उद्दीप्त

घसणिअ—अन्विष्ट, गवेषित

घाडेरुय—१ खरगोश की एक जाति। २ बन्धन-च्युत

घाणय—कोल्हू, घाणी

घार—१ गीध। २ प्राकार

घारिअ—जहर आदि के कारण होने वाली सुषुप्ति

घित्त—१ गृहीत। २ क्षिप्त

घित्तय—क्षिप्त

घिरिहोल—मक्खी

घिवण—क्षेपण

घुंघुस्सिअ—निःशंक कथन

घुग्घुरय—उल्लू की आवाज

घुग्घुरुड—राशि, ढेर

घुग्घुस—घू-घू शब्द करने वाला

घुग्घुस्सुअ—निःशंक होकर गया हुआ

घुणहुणिय—कर्णोपकर्णिका
घुत्तिअअ—गवेषित
घुम्ममाण—घूमता हुआ
घुयग—वह पत्थर जो पात्र आदि को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है
घुरुक्क—सिंहनाद
घुरुक्कार—सूअर आदि की आवाज
घुरुघुरुघुरंत—घुर्राना
घुरुल्लय—खिलौने का छोटा घर
घुरुहुरिअ—घरघराहट
घुलिकि—हाथी की आवाज
घुलिय—१ चंचल। २ घूर्णित
घुसिम—१ चन्दन। २ कुंकुम
घुयड—उल्लू
घेउर—घेवर, घृतपूर
घोडि—वदरीफल
घोणस—सर्प-विशेष
घोलवडय—दही-बडा
घोस—गुच्छ—गुच्छार्थे देशी (मराठी—घोस)
घोसय—दर्पण रखने का उपकरण-विशेष

च

चउक्किआ—आगन
चउज्झाइया—नाप-विशेष
चउरय—चबूतरा
चउरि—लग्नमडप—लग्नमण्डप इत्यर्थे देशी
चउरिया—विवाह-मण्डप
चउरी—विवाह-मण्डप
चउसर—चार लड़ी वाला हार
चउहट्ट—शहर का चौराहा
चओर—पात्र-विशेष
चंगत्तण—चारुत्व, सौन्दर्य
चंगय—उत्तम
चंचिक्किय—विभूषित
चंचुप्पर—मिथ्या
चंचेल—वक्र
चंटिअ—आच्छादित
चंडार—भडार
चंद—स्वर्ण
चंदकव—मयूर
चंदणया—शौचालय
चंदिण—चन्द्रिका
चंदुज्जय—कुमुद
चंदेरी—नगरी-विशेष
चंदोयय—चदोवा
चंपडण—प्रहार।
चंपण—चापना, दबाना
चक्कग्गह—मगरमच्छ
चक्कडिअ—प्रीणित
चक्कम्मविअ—घुमाया हुआ
चक्कयर—भिक्षुक
चक्कलिय—वक्रीकृत
चक्कहय—चक्रवाक
चक्खुरक्खणा—लज्जा
चच्चरिय—भौरा
चच्चिक्किय—चर्चित, लिप्त
चट्टण—१ नाशक, भक्षक—भक्षक इत्यर्थे देशी। २ चाटना
चट्टय—उत्पूत—उत्पूत इत्यर्थे देशी
चट्टी—चाट
चडआणा—केश, कुतल
चडक्का—१ विद्युत्। २ आघात

छ

छइल्ल—विद्वान्

छंडिआ—मुक्त

छंडिय—१ छन्न, गुप्त । २ छोडा हुआ

छकण्ण—एक प्रकार का जूता

छच्छुंदर—छछुंदर, चूहे की एक जाति

छज्ज—शोभा—शोभायां देशी

छट्ट—मर्म

छट्टा—छटा

छट्ठा—जल का छीटा

छडउल्लय—संमार्जन, पानी छिड़कना

छडय—१ उपलेप—उपलेप इत्यर्थे देशी । २ समूह

छडयण—भ्रमर

छड्डणय—आच्छादन

छड्डय—आच्छादन

छड्डाविअ—छुडाया, मोचित

छणयंद—पूर्णिमा का चांद

छणिज्जंत—निरंतर ताडित

छत्तरिय—विस्तारित

छन्नाल—तापस का उपकरण-विशेष

छप्पत्तिआ—१ चपेटा, थप्पड़ । २ चपाती, रोटी

छप्पन्नय—शृंगार गाथा का कोश-विशेष

छयल्ल—चतुर, विदग्ध

छव्वग—वंशपिटक, घृत आदि छानने का उपकरण

छह—षट्, छह

छायणिया—डेरा, पडाव

छायणी—पडाव, छावनी

छाली—अजा, बकरी

छाह—गगन, आकाश

छाहि—छाया, छांह

छिउर—वुझाना

छिक—छीक

छिक्किय—छीकना

छिच्छअ—नयनों की प्रीति के अयोग्य होने के कारण अक्षि-क्षत

छिच्छअण—असहिष्णु

छिच्छई—कुलटा, असती

छिच्छि—धिक्-धिक्

छिच्छिणरमण—आंखमिचौनी की क्रीडा

छित्तरय—छाज, सूप

छित्तिर—जीर्ण छाज

छिरि—भालू की आवाज

छिविअ—समूह

छिवोल्लअ—१ निन्दार्थक मुख विकूणन । २ विकूणित मुख

छिव्वर—चिपटा

छिहंडहिल्ल—दही

छीद—छेद, विवर

छुज्जत—पीडित

छुट्टहीर—मणिजटित हीरा

छुट्टिय—मुक्त

छुट्ठ १ लिप्त । २ फेका हुआ

छुडुछुडु—१ हड़बडी । २ पुनः पुनः

छुडु—शीघ्र

छुत्ति—अस्पृश्य का स्पर्शन, छूत

छुद्ध—क्षिप्त, प्रेरित

छुप्पलय—शेखर, शिरोमाल्य
छुरमट्ठी—नाई
छुल्लुच्छुलय—अधीर, शीघ्र
छुहइद्धिआ—१ द्वेष्या। २ अस्पृश्या
छूहिअ—पार्श्व का परिवर्तन
छेअ—विदग्ध
छेछई—कुलटा
छेण—चोर
छेत्तसोवणी—खेत मे जागने वाला
छेय—हानि
छेलग—अज, वकरा
छेलिआ—थोड़े फूलो की माला
छेव—प्रात, अत
छोक्करी—लड़की
छोट्टिय—छोटा, लघु
छोडण—छोडना
छोडय—१ छोटा। २ भूल
छोडाविय—छुड़ाया
छोडि—छोटी
छोडिय—छोड़ा हुआ, मुक्त
छोत्ति—छूत, अस्पृश्य
छोप्प—स्पृश्य, स्पर्श-योग्य
छोयर—छोकरा, लड़का
छोल्लिया—छोटी वालिका
छोहर—लड़का
छोहिय—१ क्षुब्ध, व्याकुल। २ जुए मे पराजित

ज

जअल—छन्न, ढका हुआ
जंगल—मास
जंपाण—यान-विशेष, शिविका
जंपेक्खिरमग्गिर—जिसको देखे उसी की याचना करने वाला
जंभणंभण—स्वतत्र भाषण
जगड—कलह, झगड़ा
जगडण—१ झगडा करने वाला। २ कदर्थना करने वाला
जगडणा—१ झगड़ा। २ कदर्थना, पीडा
जगडावण—पीडक
जडिल—कुकुम
जडु—इव, तरह
जड्डा—जाडा, शीत
जणंगम—चाडाल
जणयत्ता—बरात, विवाह-यात्रा
जणयत्तिय—वराती, वर के साथ जाने वाले लोग
जणु—इव
जत्ति—१ चिंता। २ सेवा
जद्दर—वस्त्र-विशेष, चद्दर
जन्नत्ता—बरात
जन्ना—बरात, जान
जन्नावास—जानिवास, दुलहे के संबंधियों को दिया जाने वाला निवास-स्थान
जमण—ज्वालशिखा
जव—पुमान्, पुरुष
जवण—१ अश्व। २ चन्द्रमुखी
जवणि—जीमनवार का निमंत्रण
जवली—वेग
जववारय—जव का अंकुर
जहणूसुअ—अर्धोरुक, आधी साथल तक पहनने का वस्त्र
जाउंड—मंत्रकार्य, जादूटोना

जाएवय—गमन
जांवाय—जामाता
जाणण—बारात
जालवणी—संवाद, खबर
जाला—जब
जिम—यथा, जैसे–यथा इत्यर्थे देशी
जीरवण—जीरण, पाचन
जीविअमई—मृग को आकृष्ट करने के लिए व्याध की कृत्रिम मृगी
जुअण—युवा, जवान
जुआरि—जुआरी, अन्न-विशेष
जुंजम—हरा तृण-विशेष
जुंजुमय—एक प्रकार की हरी घास जिसे पशु इच्छापूर्वक खाते हैं
जुट्ठ—झूठ
जुडिअ—आपस मे जुटा हुआ, भिड़ा हुआ
जुयगेहकसकरण—संयुक्त परिवार से अलग होकर नया घर बसाना
जुयलुल्ल—युगल
जूरवणी—खेद करने वाली
जूराविअ—क्रुद्ध किया हुआ
जूरिअ—खेदित–खेदित इत्यर्थे देशी
जूरिय—निर्भत्सित
जूसअ—उत्क्षिप्त
जूसिअ—क्षिप्त
जेवणय—दायां हाथ
जेवनार—जीमनवार
जोअंगण—कीट-विशेष, इन्द्रगोप
जोअड—खद्योत, कीट-विशेष
जोइअ—व्याध
जोक्कारिय—प्रशंसित
जोक्खिय—तोलित
जोडि—युग्म
जोडिऊण—जोड़कर
जोविय—दृष्ट
जोव्वणजोअ—बुढापा, जरा
जोव्वणणी—जरा, बुढापा
जोव्वणिर—जरा, बुढापा
ज्जिअ—निश्चयसूचक अव्यय
ज्जेअ—निश्चयसूचक अव्यय
ज्झहुराविअ—निवासित

झ

झंकोलिय—झकझोरित
झंज्झडिय—झगडालू
झंटण—परिभ्रमण
झंटिलिया—चक्रमण, गमन
झंदिय—प्रद्रुत, पलायित
झंपड—१ विकराल । २ अर्ध निमीलित नयन
झंपडिय—मुक्त, विरल–मुक्तविरल इत्यर्थे देशी
झंपण—१ अपकीर्ति । २ पर्यटन । ३ पर्यटक
झंपिअ—आच्छादित
झगड—झगडा
झगडअ—कलह करने वाला, झगडालू
झग्गुली—अभिसारिका
झड—प्रहार
झडक्क—आकस्मिक प्रहार
झडक्किय—झिडका हुआ
झडप्प—१ शीघ्रता । २ आक्रमण

झडप्पण—१ आक्रमण। २ ताडन
झडप्पिय—झडप, झपट
झडा—झपट
झडी—गुल्म
झपिअ—पर्यस्त, उत्क्षिप्त
झल—उष्मा–उष्मा इत्यर्थे देशी
झलकंत—झालर वाला छत्र
झलक्क—१ पूर्णाञ्जलि। २ उष्णता
झलझलिय—ध्वन्यात्मक अनुकरण शब्द
झलहलिय—क्षुब्ध
झलुक्किअ—संतापित
झल्लरी—१ गुल्म। २ बाड, वृति। ३ वकरी
झल्लिर—धारायुक्त–धारायुक्त इत्यर्थे देशी
झल्लोज्झल्लिअ—संपूर्ण
झव्वरी—अजा, बकरी
झसर—शस्त्र-विशेष
झिंकिरी—वाद्य-विशेष
झिंखण—१ गुस्सा। २ क्रोधी
झिंझिणी—लता-विशेष
झिंझिरी—लता-विशेष
झिंडुअ—गेंद
झिंदुवय—गेंद
झिक्किरि—वाद्य
झिलिअ—पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो
झिल्लिर—झींगुर
झुंबक—झूमका, गुच्छा
झुंबिर—लम्बमान
झुंबुक—स्तवक, गुच्छा
झुंबुक्क—स्तबक
झुट्ठ—झूठ
झुणक्क—वाद्य-विशेष
झुणिअ—निन्दित, घृणित
झुम्मुक्क—झूमका, गुच्छा
झुलिक्किअ—दग्ध
झुलिक्किल—झुलसा हुआ
झुलुंकिय—झुलसा हुआ
झुलुक्क—अकस्मात् प्रकाश
झुलुक्किअ—१ आन्दोलित। २ झुलसा हुआ
झुलुक्की—दग्ध स्त्री
झुल्लंत—कापता हुआ
झुल्लण—छन्द-विशेष
झेंदुय—कन्दुक
झेंदुलिया—कुलटा
झोटिंग—देव-विशेष
झोल्लिआ—झोली, थैली
झोसिय—१ त्यक्त। २ ध्वस्त

ट

टउया—पुकारने की आवाज
टंकवत्थुल—कन्द-विशेष
टंकार—तेज
टक्कर—शिला का टुकड़ा
टच्चक—लकड़ी आदि के आघात की आवाज
टट्टरी—वाद्य-विशेष
टणटणंत—टन-टन आवाज करता हुआ
टमालिअ—इन्द्रजालिक
टलिअ—टला हुआ, हटा हुआ
टहरिय—ऊचा किया हुआ

टालिय—विनाशित
टिंटा—१ कुलटा। २ जुआखाना, द्यूतगृह
टिंबरुणी—तेंदू का पेड़
टिल्ल—तिलक
टिल्लिक्किय—विभूषित
टिविल—वाद्य-विशेष
टिविला—वाद्य-विशेष
टुंबय—आघात-विशेष
टुप्परग—जैन साधु का एक छोटा पात्र
टेंट—१ मध्यस्थित मणि-विशेष। २ द्यूत-गृह। ३ वृन्त
टेबरूय—फल-विशेष
टेवंत—तीक्ष्ण करता हुआ
टोपरी—टोपी, टोप
टोपिआ—१ टोपी। २ पात्र-विशेष
टोप्प—श्रेष्ठि-विशेष
टोप्पर—शिरस्त्राण-विशेष, टोपी
टोप्परिया—नारियल की कच्चोलिका, टोपसी
टोप्पी—टोपी
टोल—रहने के मकान
ट्ठग—ठग

ठ

ठउंड—वाद्य-विशेष
ठउल—द्यूत मे दाय-भाग
ठग—ठग, वञ्चक
ठगिय—वंचित, ठगा हुआ
ठट्ठार—ताम्र, पीतल आदि धातु के वर्तन वनाकर जीविका चलाने वाला, ठठेरा
ठलिय—खाली
ठवल—क्रीत
ठाकुर—ठाकुर
ठिक्करिआ—ठीकरी
ठेण—१ स्थासक, हस्तविम्ब। २ गुप्तचर। ३ चोर
ठोक्कर—ठाकुर
ठोड—१ ज्योतिषी, दैवज्ञ। २ पुरोहित

ड

डक—काक
डंकिय—दष्ट
डंगा—डाग, लाठी
डंडर—ईर्ष्या से होनेवाला कलह
डंडरिआ—कर्दम
डंडसिअ—ग्राम-वृक्ष
डंडा—कर्दम
डक्क—१ युद्ध का कोलाहल। २ वाद्य-विशेष
डक्कार—लीला-गर्जित
डक्खर—युवा, तरुण
डड्ड—त्रस्त
डमडक्किय—डक्का वाद्य का शब्द
डमडमिअ—डमरू का शब्द
डर—भय
डरिअ—भयभीत
डल्लिर—पीने वाला
डवडव—ऊंचा मुह करके वेग से इधर-उधर गमन
डसरी—१ उष्ण जल। २ स्थाली
डहरक—१ वृक्ष-विशेष। २ पुष्प-विशेष

डावि—मुद्रा, मुद्रिका
डाहर—देश-विशेष
डाहाल—देश-विशेष
डिखा—आतंक, त्रास
डिंड—फेन
डिंडव—जल मे पतित
डिढअ—जल मे गिरना
डिमिल—वाद्य-विशेष
डिल्ली—जल-जन्तु-विशेष
डिवअ—वाम हाथ
डिविडिक्किय—अलंकृत
डुंडुक्का—वाद्य-विशेष
डुंग—समूह
डुंबडअ—डोम, चांडाल
डुंभिय—आन्दोलित
डुज्जय—कपडे का छोटा गट्ठा, वस्त्र खण्ड
डुलि—कच्छप, कछुआ
डुल्लरय—कपर्दिकाओं का आभरण
डेडी—बलाका
डेडुह—मेढक
डेकुण—मत्कुण, खटमल
डेंड—डेढ
डेडुरी—क्रीडा
डेड्डुर—दर्दुर, मेढक
डेर—केकराक्ष, नीची-ऊंची आंख वाला
डेविय—प्रीणित
डोबलिय—चण्डाल-संबंधी
डोक्क—कूपतुला
डोक्करी—बूढी स्त्री, बुढिया
डोड्डु—एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण
डोड्डि—दुष्टा ब्राह्मणी
डोढिणी—ब्राह्मणी
डोबरुय—गुरुहारिक, अधिक भार ढोने वाला
डोमणिया—डोमिनी
डोर—१ सूत्र, धागा। २ कांची, मेखला
डोल्लिय—डोली, शिविका
डोसिणी—ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश
डोहंत—गहरा पानी

ढ

ढंकिय—आच्छादित
ढंख—१ शुष्क—शुष्क इत्यर्थे देशी २ पुष्प-फलरहित वृक्ष। ३ कौआ
ढंखर—पत्र-पुष्प-विहीन शाखा
ढंखरय—ढेला
ढंढ—दाम्भिक, कपटी
ढंढल्लिअ—भ्रान्त
ढक्क—ढक्कन
ढक्करी—वाद्य-विशेष
ढग्गढग्गा—ढग-ढग की आवाज
ढड्ढ—किवाड बंद करने का बाहर साधन
ढड्डर—राक्षस आदि
ढड्डस—साहस, ढाढस
ढड्डिय—वाद्य-विशेष
ढड्डिया—वाद्य-विशेष
ढणिय—शब्दित, ध्वनित
ढलंत—झुकता हुआ
ढलहलय—मृदु, कोमल
ढलहलिय—चालित
ढलिअ—१ झुका हुआ। २ गिरा हुआ

ढस—धस्, गिरने से होने वाली आवाज
ढसर—१ भ्रान्ति। २ भ्रान्त वचन
ढालण—नीचे गिराना
ढालिअ—नीचे गिराया हुआ
ढाव—आग्रह, निर्बन्ध
ढिक—पक्षि-विशेष
ढिंकण—क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ आदि के लगने वाला कीट-विशेष
ढिकलीआ—पात्र-विशेष
ढिंवायरिय—दांभिक, कपटी
ढिंवारिय—कपटी, दांभिक
ढिड्डिस—पिष्ट
ढिल्ल—ढीला, शिथिल
ढिविय—उपस्थिति
ढुंग—समूह, ढेर
ढुंढुल्लण—खोज
ढुक्क—१ उपस्थित। १ मीलित। ३ प्रवृत्त
ढुक्कलुक्क—चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य-विशेष
ढुक्काढुक्कि—निकटता से लडना
ढुलिय—गिरा हुआ
ढेक्कुण—खटमल
ढोर—पशु
ढोरि—पशु

ण

णं—प्रश्न और उपमासूचक अव्यय
णंगअ—रुद्ध, रोका हुआ
णंगल—चञ्चु, चोंच
णंडिक्क—व्याध
णक्खन्नण—नख काटने और कांटा निकालने का शस्त्र-विशेष
णग्गठ—निर्गत, बाहर निकला हुआ
णग्गुड—नग्न
णग्गुडि—चारण आदि—चारणादिवन्दिवर्ग इत्यर्थे देशी
णग्गोर—कर्पूर
णढरी—क्षुरिका
णलुअ—१ बाड का छिद्र। २ कर्दमयुक्त। ३ निमित्त। ४ प्रयोजन
णवरि—शीघ्र, जल्दी
णसा—नस, नाड़ी
णहरण—१ श्वापद पशु। २ नाखून काटने का शस्त्र
णाइं—समानता का द्योतक अव्यय
णाइत्त—जहाज द्वारा व्यापार करने वाला सौदागर
णाइत्तग—सांयात्रिक, सामुद्रिक व्यापारी
णाडय—रस्सी, नाडा
णाणावट्ट—रुपये उधार देने वालों की दूकान (गुज—नाणावट)
णामण—नाक मे डाला जाने वाला बिन्दु
णाममंतक्ख—अपराध, गुनाह
णायत्त—समुद्र-मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक्
णायत्तग—सायात्रिक, सामुद्रिक व्यापारी
णारियर—नारियल
णाल—त्रस्त

णालि—स्रस्त, गिरा हुआ

णावइ—उपमा और उत्प्रेक्षा के अर्थ मे प्रयुक्त अव्यय

णाहल—शवर, भील—अरण्य-चाण्डाल इत्यर्थे देशी

णिअद्धण—परिधान, पहनने का वस्त्र

णिअरण—दण्ड, शिक्षा

णिआर—१ ऋजु । २ रिपु । ३ प्रकट

णिउड्ड—निमग्न

णिउत्त—निमग्न

णिउत्तउ—शाल्मली वृक्ष

णिउल—गाठ, गठरी

णिदणिआ—लोच कराया हुआ

णिक्कसरिअ—गलितसार, सार रहित

णिक्कुण—गुपचुप

णिक्खंत—आरोपित

णिक्खाविअ—शान्त, उपशम-प्राप्त

णिक्खुत्त—निश्चित, अवश्य

णिक्खुभ—निरन्तर

णिगमिअ—निवासित

णिच्चणिआ—पानी से धोया हुआ

णिच्चोइय—निचोडा हुआ

णिच्छड्ड—निर्दय

णिच्छूट्ट—निर्मुक्त, छूटा हुआ

णिज्जर—१ जीर्ण । २ खिन्न

णिज्जीवय—गोताखोर

णिज्जूहग—गवाक्ष

णिज्झूण—छुपना

णिड्डुरिय—१ भयोत्पादक । २ निष्काशित

णित्तल—अनिवृत्त

णित्तुलिय—निश्चय

णिद्धाडिय—निष्काशित

णिपट्ट—गाढ

णिपत्तउ—शाल्मली वृक्ष

णिप्पणिअ—जल-धौत, पानी से धोया हुआ

णिप्फंस—निर्दय

णिब्भिट्ट—आक्रान्त

णिमिअ—निहित, न्यस्त

णिम्मिअ—स्थापित

णिम्मीसुअ—१ युवा । २ बिना दाढी-मूछ वाला

णियच्छिय—दृष्ट

णिययणी—रज्जु

णिरारिअ—१ निरंतर । २ अतिशय । ३ निरर्थक

णिरास—नृशस

णिरित्त—नत

णिरु—१ निरन्तर । २ निश्चय । ३ अतिशय

णिरुत्तिय—निश्चित रूप से

णिरोव—आदेश, आज्ञा

णिरोविय—अर्पित

णिरोसह—घर-रहित

णिलाड—ललाट

णिलाप—पात्र

णिल्लुक्क—निलीन, प्रच्छन्न

णिल्लुहण—परिमार्जन

णिल्लूरिय—छिन्न

णिवली—आवात

णिविड्ड—सोकर जागा हुआ

णिव्वक्कर—परिहास-रहित, सत्य

णिव्वरण—दुःख-निवेदन
णिव्वाइय—प्रसारित
णिव्वाणि—विकास
णिव्विच्च—विस्तृत कर
णिव्विर—चपटा, दबा हुआ
णिव्वोलण—क्रोध से होठ मलिन करना
णिसा—हल्दी
णिसाड—निशाचर, राक्षस
णिसायर—कपूर
णिस्सीमिअ—निर्वासित
णिहल—कुल
णिहव—सुप्त, सोया हुआ
णिहेल—नील रत्न
णिहोडण—निवारक, निषेधक
णीअअ—समीचीन, सुन्दर
णीरण—घास, चारा
णीलुय—अश्व की एक उत्तम जाति
णीसंक—वृष
णीसाम—विनाशक
णीसावण्ण—समस्त
णुज्जिय—बन्द किया हुआ, मुद्रित
णेलंछण—नपुसक
णेलच्छिआ—कूपतुला
णेवत्थ—वस्त्र
णेवत्थण—उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल
णेव्व—तीव्र
णेसणय—वस्त्र
णेसर—सूर्य
णेसरी—सूर्य
णेसु—१ होठ। २ पांव
णेहीर—कुकुम
णो—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ वितर्क। ४ विचित्रता। ५ प्रकोप—इन अर्थो का सूचक अव्यय
णोक्ख—अनोखा
णोखी—अपूर्वा, अनोखी
ण्हु—निश्चयसूचक अव्यय

त

तंडय—समूह
तंती—चिन्ता
तंबटंकारि—शेफालिका की लता
तंबार—मृत्यु, विनाश
तंबालुय—भाजन-विशेष
तंवुक्क—वाद्य-विशेष
तक्कारि—सारथि
तक्कुय—स्वजन-वर्ग
तक्कोडिण—स्वजन-वर्ग
तक्खड—उद्यत
तच्छिल—तत्पर
तट्टवट्ट—आभरण, आभूषण
तट्टय—घृष्ट—घृष्ट शब्दार्थे देशी
तडकडिअ—१ अनवस्थित। २ व्याकुल
तडयड—क्रियाशील, सदाचारी
तडहडिअ—अनवस्थित
तड्डु—१ पिशाच। २ शलभ
तणय—'यह उसका है' इस अर्थ मे प्रयुक्त प्रत्यय—तस्येदमित्यर्थे देशी प्रत्ययः
तणव—वाद्य-विशेष
तत्तिया—तत्परता, चिन्ता

तत्तिल—तत्पर
तत्तुरिअ—रञ्जित
तत्तोहुत्त—तदभिमुख, उसके सामने
तप्पणग—जैन मुनि का पात्र-विशेष, तरपणी
तप्पणाडुआलिआ—सत्तुमिश्रित भोजन
तभत्ति—शीघ्र
तमणी—१ लता । २ व्यधिकरण
तमुय—१ जन्मान्ध, जात्यन्ध । २ अत्यन्त अज्ञानी
तम्मि—वस्त्र, कपड़ा
तम्मिर—खेद करनेवाला
तरंडय—नौका
तरट्ट प्रगल्भ, समर्थ, चतुर
तरट्टा—प्रगल्भा, प्रौढा नायिका
तरट्टिया—विदग्ध स्त्री
तरट्टी—चतुर स्त्री
तरिडी—अनुष्ण वायु, शीत पवन
तरिया—दूध आदि का सार, मलाई
तरु—शीघ्र
तलपत्त—योनि । २ वराग, मस्तक
तलप्प—कर-प्रहार
तलप्पंत—उछल कर आते हुए
तलवट्ट—तलपत्र, आस्तरण-विशेप
तलवाहय—तलस्पर्शी गति से तैरना
तलहट्टिया—पर्वत का मूल, तलहटी
तलारक्ख—नगर-रक्षक
तलेर—नगर-रक्षक
तल्लवग—सेवक
तल्लवेल्ल—व्याकुलता
तल्लुव्वेल्ल—अकुलाहट
तल्लूविल्लि—तडफड़ना
तल्लोविल्लि—तडफडाहट, अकुलाहट
तल्लोवेल्लि—१ निरतर पार्श्व-परिवर्तन करना । २ व्याकुलता, तड़फड़ाहट
तवंग—ऊपर का भाग, गृहविभाग-विशेप
तव्वन्निग—तृतीय वर्णिक, वानप्रस्थी
तसरी—एक प्रकार का रेशम
तहल्ली—अपसृति
तारय—कर्णधार
तालफली—दासी
ताला—तव
तिउक्खर--वाद्य-विशेप
तिउडय—१ लौग । २ मालव देश मे प्रसिद्ध धान्य-विशेप
तिगआ—पुष्परज
तिंगिछा—मकरन्द, पराग
तिगिच्छ—कमलरज, पराग—'पद्मरज इत्यर्थे देशी'
तिंदुइणी—वृक्ष-विशेष
तिट्टा—सेवा
तिडिक्क—स्फुलिङ्ग
तिडिक्किय—छीटो से युक्त
तिडिपिडंत—तड़फडाते हुए
तिड्डिक्क—स्फुलिग
तित्त—आर्द्र
तित्ति—अल्प, थोडा
तित्तिरिअ—निरन्तर
तित्तिल्ल—द्वारपाल, प्रतीहार
तिमिरिस—वृक्ष-विशेप
तिमिल—वाद्य-विशेष
तिम्मण—आचार, चटनी

तियाउस—भस्म
तिरिडिक्किया—वाद्य-विशेष
तिलवट्टी—तिलपपडी, खाद्य-विशेष
तिलमअ—स्नेहिल
तिलिम—वाद्य-विशेष
तिविडी—सूई
तिहासरी—वाद्य-विशेष
तीरिया—तरकश, तूणीर
तीरी—तूणीर
तुंड—मुख—मुखशब्दार्थे देशी
तुंदाहि—गण्डूपद
तुक्खार—एक उत्तम जाति का अश्व
तुडी—शीघ्र
तुप्पइअ—घृत से अवलिप्त
तुप्पलिअ—घृत से सलिप्त
तुप्पविअ—घृत से संलिप्त
तुलग्गा—स्वेच्छा, अभीप्सा
तुलाकोडि—नूपुर
तुसलो—धान्य-विशेष
तुहारी—तुम्हारी
तूरी—एक प्रकार की मिट्टी
तेआलीसा—तयालीस की सख्या
तेरसया—जैन मुनियो की एक शाखा
तेवण्णा—तिरेपन
तोंड—मुख
तोंतडिल्ल—मिश्रण
तोंद—उदर
तोखार—अश्व-विशेष
तोडर—टोडर, माल्य-विशेष
तोडी—चंचु
तोमर—मधुमक्खी का छत्ता
तोरा—तुम्हारा
तोरामदा—नेत्र का रोग-विशेष
तोल—१ पिशाच । २ शलभ

थ

थंत—स्थित
थक्क—स्तब्ध—स्तब्धः स्थित इत्यर्थे देशी
थक्कय—रखा हुआ
थक्किअ—१ थका हुआ । २ स्थित
थट्ट—१ भीड़ । २ आडम्बर । ३ पक्ति
थड—१ यूथ, समूह । २ पक्ति । ३ वन
थडा—समूह
थड्ढ—घन
थड्ढिम—गर्व
थणुल्लय—बाल-स्तन
थत्ति—१ स्थान—स्थान इत्यर्थे देशी । २ विश्राम
थप्पड—चपेटा
थब्भर—अयोध्या नगरी के समीप का एक ह्रद
थरहरंत—कम्पायमान
थरहरण—कम्पन
थलहिगा—मृतक-स्मारक, शव को गाड़कर उस पर किया गया एक प्रकार का चबूतरा
थल्लिया—थलिया, छोटा थाल
थव—स्तवक
थवक्क—थोक, समूह

थागत्त—जहाज के भीतर घुसा हुआ पानी

थाणग—१ चौकी, पहरा। २ पहरेदार, चौकीदार

थामलय—स्थान

थाला—धारा

थाव—स्थान

थावर—दो हलों से बोने जितना खेत

थास—पृथु, बड़ा

थाहिअ—आलाप, स्वर-विशेष

थिउल्लिया—पुत्तलिका, गुडिया

थिंदिणी—छन्द-विशेष

थिप्पमाण—गलित होता हुआ

थिप्पिर—विगलित

थिरणास—चलचित्त, चंचल

थिरण्णेस—अस्थिर

थिल्ल—गुप्त

थुडुक्किय—मौन, चुप्पी

थूण—अश्व—अश्व शब्दार्थे देशी

थूथू—घृणा-सूचक अव्यय

थेंभ—बिन्दु

थेट्ट—गृह, घर

थेणिल्लअ—अपहृत

थेव—थोड़ा

थोट्ट—१ टूटे हुए हाथ वाला—छिन्नहस्त इत्यर्थे देशी। २ स्थाणु, ठूठ

थोर—१ सुडौल। २ विस्तीर्ण

थोरिय—भैंसों की देखभाल करने वाला

थोरियगरिल्ल—गोलाई से मोटा और ऊंचा लपेटा हुआ शिरोवस्त्र

थोवड—स्थूल

द

दअर—१ पिशाच। २ ईर्ष्या

दंडवण—घृत

दंडिक्किअ—अपमानित

दंतिक्कग—मांस

दंतुल्लि—छोटा दांत

दंसण—कवच

दडक्क—दहाड़

दडत्ति—१ झटपट, तुरन्त। २ अनुकरणवाची शब्द

दडि—वाद्य-विशेष

दडिक्क—वाद्य-विशेष

दड्डालि—दव-मार्ग

दबक्किय—द्रुतकृत, दुबकना

दमदंड—भ्रमर

दम्म—दाम

दयावणिय—दयनीय

दरमलिअ—आहत, चूर्णित

दरवलिअ—उपभुक्त

दलवट्टण—१ निर्दलन। २ विनाशक

दलवट्टिय—निर्दलित

दवक्कडी—वज्रपात

दवट्टि—शीघ्र

दवत्ति—शीघ्र

दवहवस्स—शीघ्रता से

दहिय—पक्षि-विशेष

दाढा—दाढा—दंष्ट्रा शब्दार्थे देशी

दाढियाल—दाढ़ीवाला

दाणि—शुल्क, चुंगी

दाव—१ दास । २ गर्दभ
दाविअ—दर्शित
दिक्करिया—कन्या
दिरिआ—कृत्रिम मृगी
दिलंदिलिअ—बालक, शिशु
दिसेव—पथिक
दीयड—सर्पविशेष जो अष्टमी और चतुर्दशी के अतिरिक्त शेष दिनों में विष रहित होता है
दीवड—सर्प-विशेष
दुक्कह—अरुचिवाला
दुक्खित्त—कंपन
दुगुंछिय—जुगुप्सित
दुग्गुच्छ—भ्रमित
दुग्घोट्ट—हाथी
दुघोट्ट—हाथी
दुच्चवण—दुर्भणित
दुद्दुहण—चोर
दुणास—डाकिनी
दुद्दोलणा—बार-बार दुहने योग्य गाय
दुन्नियत्थ—निंदनीय वेष धारण करने वाला
दुप्परिल्ल—दुराकर्ष
दुब्बोलिय—दुर्वचन
दुब्भ—भ्रमर
दुरिअ—द्रुत, शीघ्र
दुवालि—नटखटपन
दुव्वाइय—शुष्क
दुव्विवरेरय—जो कठिनता से मोड़ा जाए
दुसुरुल्लय—गले का आभूषण-विशेष
दुहरोण—खिन्न-खिन्नार्थे देशी
दूयडिया—दूतिका
दूयाकार—कला-विशेष
दूसंथवय—दुष्कर
देंट—वृन्त
देक्खालिअ—दिखाया हुआ
देखण—प्रेक्षण
देवरिअ—पुत्रोत्सव पर बजाया जाने वाला तूर्य
देसिय—पथिक, प्रवासी
देसियाली—देशाटन
देहलिय—मर्यादा
दोग्घट्ट—हाथी
दोच्छिय—तिरस्कृत
दोडि—सायंकालीन भोजन
दोबुर—स्वर्ग-गायक, तुम्बुरु
दोरी—छोटी रस्सी
दोसारअण—चन्द्रमा
दोसिय—वस्त्र का व्यापारी

ध

धगधगंत—धगधगायमान
धग्गीकय—जलाया हुआ
धड—धड़
धडहडिअ—गर्जना, गर्जारव
धडि—कुण्डल
धणि—तृप्ति
धन्नाउसदाण—आशीर्वचन
धम—विलास
धय—तृप्ति
धवक्क—धौंकना
धवक्कय—समूह
धवक्किय—धड़का हुआ, भय से

व्याकुल बना हुआ

धसक्क—हृदय की घबराहट की आवाज

धसक्किय—अत्यन्त घबराया हुआ

धाडय—डाका डालने वाला (राज) धाडेती

धारायर—निशाचर

धाह—आक्रोश, क्रन्दन (मराठी-धाय)

धाहाविय—शोकयुक्त

धाहिय—पलायित, भागा हुआ

धिज्जाइय—ब्राह्मण

धिरत्थु—धिक्कार है

धिसि-धिसि—धिक्-धिक्

धीया—पुत्री (पंजाबी–धी)

धुअराय—भ्रमर, भौरा

धुंधुमारि—१ कोलाहल। २ धूल-धक्कड

धुक्कोडिअ—संशय

धुक्कोडिया—शंका

धुड्की—मौन

धुत्तीरय—धतूरे का पौधा

धुत्तीरिअ—धतूरे के पान से ग्रस्त

धुम्मुक्क—वाद्य-विशेष

धुवगाय—भ्रमर

धुहअ—पुरस्कृत, आगे किया हुआ

धूमद्धमअहिसीअ—कृत्तिका नक्षत्र

धूमवत्ति—सुगंधित पानी

धूलिहडी—पर्व-विशेष

धोरण—वाहन

धोरणी—पंक्ति

धोवी—धोबी, रजक

प

पइ—'तुमने' अर्थ का द्योतक अव्यय

पइअ—विस्तीर्ण

पइद—प्रवृत्त

पइसइ—कोमल

पओलि—मार्ग

पओलिय—पक्व

पंगुत्त—१ ढका हुआ–प्रावृत्त इत्यर्थे देशी। २ प्रावरण

पंगुरण—प्रावरण

पंगुरुण—प्रावरण–प्रावरण इत्यर्थे देशी

पंचरिअ—जहाज का कर्मचारी-विशेष

पंचावण्णा—पचपन की संख्या

पंचेडिम—विनाशित

पंजिअ—यथेच्छ दान, मुह मांगा दान

पंजोहार—धान्यादि प्रदेश

पंडरंगु—ग्राम का अधिपति

पंडार—ग्वाला

पंभल—सुन्दर अक्षि-लोम वाला

पकोक्किय—आहूत, बुलाया हुआ–आहूत इत्यर्थे देशी

पक्कड्डिअ—प्रस्फुरित

पक्कण—१ अति शोभावान्। २ भग्न। ३ श्लक्ष्ण

पक्खखारिय—सन्नद्ध

पक्खुलिया—दासी

पक्खोडिय—कम्पित

पगल—पग, पांव

पग्गल—पागल

पच्चल—प्रचुर

पच्चार—उपालम्भ
पच्चारिअ—उपालंभ-प्राप्त
पच्चालिय—प्लावित
पच्चावेणिअ—सम्मुख आगत
पच्चुअ—दीर्घ
पच्चुच्छाहण—मदिरा, सुरा
पच्चुडरिअ—प्रत्युद्गत
पच्चोल्लिड—प्रत्युत
पच्छल—पश्चात्
पज्झामुर—वृद्ध
पट्ट—वस्त्र
पड—ग्राम की सीमा का स्थान
पडअसाइमा—भील के सिर पर पहनी जाने वाली पत्रपुटी
पडंसुआ—प्रतिध्वनि
पडंसुगा—मौर्वी, धनुष्य की डोरी
पडड्डाली—क्रीडा
पडमा—तवू
पडहच्छ—१ समूह। २ प्रतिपूर्ण
पडहत्थ—प्रतिपूर्ण
पडार—चोरों का समूह
पडिअ—१ मंगलपाठक। २ आचार्य
पडिउंचण—प्रतिकार
पडिक्किआ—प्रतिकृति
पडिज्झय—विसर्जक
पडिपल्लिल—पूजनीय
पडिरिग्गअ—भग्न
पडिसिद्धि—प्रतिस्पर्धा
पडिसोत्त—प्रतिकूल
पडिहत्थिय—परिपूर्ण
पडुज्जइणी—युवती, तरुणी
पडोल्लिय—अत्यन्त आकृष्ट

पड्डु—बायां हाथ
पड्डुल्ल—निर्धन
पढुक्क—प्रवृत्त-प्रवृत्त इत्यर्थे देशी
पत्तण्णी—रथ्या
पत्तल—१ पतला, कृश, छोटा-यवीयस इत्यर्थे देशी। २ सुन्दर
पत्तलि—पत्तो का बना भाजन
पत्तलिया—दुबली-कृशा इत्यर्थे देशी
पत्तुट्ठ—प्रवीण
पत्थण—मोटा वस्त्र
पत्थर—मौर्वी, प्रत्यंचा
पत्थरी—१ बिछौना। २ समूह
पत्थी—पात्र, भाजन
पत्थेवाअ—पाथेय
पथिप्पिर—गलता हुआ
पवोल्लिअ—प्रकथित, कहा हुआ
पमय—मर्कट
पम्हलिअ—धवलित, सफेद किया हुआ
पम्हुट्ठ—१ प्रमुषित। २ प्रमृष्ट
परइ—प्रभात
परट्ट—१ भीत। २ पतित। ३ पीडित
परभत्त—१ भीरु। २ निष्पीड
परय—१ प्रभात। २ आने वाला दिन
परवाली—पर स्त्री
परिअंभअ—कर्मकृत्
परिअट्टविअ—परिच्छिन्न
परिअट्टिअ—प्रकटित, व्यक्त
परिअड्डिअ—प्रकटित

परिअम्मिअ—अलंकृत
परिअल—थाल
परिआल—परिवृत
परिआली—भोजन-पात्र
परिओस—विद्वेष-विशेष
परिक्खाइअअ—परिक्षीण
परिचड्डुण—१ परिमर्दक।
२ परिमर्दन
परिचड्डिय—१ आस्वादित।
२ आरूढ
परिचुक्किय—परिभ्रष्ट-परिभ्रष्ट इत्यर्थे देशी
परिच्चूड—उत्क्षिप्त
परिछंडिय—परित्यक्त
परिणडिअ—वंचित
परिमोक्कल—स्वैर, स्वच्छन्द
परियंदणय—लोरी
परियल—थाली
परिसक्किर—चलित
परिहाइअ—परिक्षीण
पलहिअअ—मूर्ख, पाषाण-हृदय
पलिहइ—क्षेत्र, खेत
पल्लक—लम्पट
पल्लट्टिय—परिवर्तित
पल्लिअ—१ आक्रान्त। २ ग्रस्त।
३ प्रेरित
पल्लत्त—पर्यस्त
पल्लीवण—चोरों की पल्ली
पल्हत्थ—पर्यस्त
पवट्ठ—दक्ष
पवत्तिया—संन्यासी का एक उपकरण
पविग्घ—विस्मृत
पविसट्ट—विकसित
पव्वंचलक्क—अशक्त
पसव—नकुल—नकुल इत्यर्थे देशी
पसविय—नकुल—नकुल इत्यर्थे देशी
पसाइमा—भील के सिर पर पर्णपुटी
पसुल—जार
पहिल—पहला, प्रथम
पहिल्लय—प्रथम, पहला
पहुत्त—प्राप्त
पहुल्ल—प्रभूत
पाइक्क—पदाति
पाउरण—कवच, वर्म
पाउल—१ प्रसन्न स्त्रियों का समूह।
२ याचक
पाउहारी—भातपानी लाने वाली
पाडय—उपनगर
पाडहुअ—साक्षी, प्रतिभू
पाडहुक—प्रतिभू, मनौतिया
पाडिग्गह—विश्राम
पाडिहेर—प्रातिहार्य
पाडी—भैंस की बछिया
पाडुअ—प्रिय, पंडा
पाडोस—पडोस
पाडोसिअ—पडोसी
पाढा—शोभा
पाणट्ठी—रथ्या
पाणाअ—दोनों हाथों का आघात
पादुग्ग—सभ्य
पामर—किसान
पाम्मि—पाणि, हाथ

फिक्कार—फेत्कार, सर्प की फूकार
फिट्टा—मार्ग, रास्ता
फिरक्क—भार ढोने वाली गाडी
फिरिक्का—गाडी
फिल्लुस—फिसलना
फीणिया—एक प्रकार की मिठाई
फुंका—फूक, मुह से हवा निकालना
फुड्ड—स्पष्ट
फुन्न—छिपा हुआ
फुल्लंधअ—भ्रमर
फुल्लुड्डुय—भ्रमर
फेंद—नर्तक
फेडावणिय—विवाह-समय की एक रीति, वधू को प्रथम वार लज्जा-परिहार के वक्त दिया जाता उपहार
फेप्फस—फेफडा
फेरण—फेरना, घुमाना
फेरिअ—घुमाया हुआ
फेला—जूठन, उच्छिष्ट
फेलिय—उच्छिष्ट धान्य
फोणिया—एक प्रकार की मिठाई

ब

बंकड—वकरा
बंडि—१ अपहृत स्त्री। २ कैदी
बंद—कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य
बंदिण—वन्दी
बंदिर—समुद्रवाणिज्य-प्रधान नगर, वदरगाह
बंबुल—वबूल का वृक्ष
बंहल—आवेश
बग्गड—देश-विशेष
बट्टार—वटोही, पथिक
बड—महान्
बडहिला—धुरा के मूल में दी जाती कील
बत्तीस—वत्तीस
बप्प—१ पुत्र का सम्वोधन-शब्द। २ मूर्ख
बप्पडय—वेचारा
बप्पही—चातक
बप्पीहय—चातक
बबूल—ववूल-वृक्ष
बब्बरिया—चेटी
बब्भासा—नदी-भेद, वह नदी जिसके पानी मे धान्य वोया जाता है
बम्हहर—कमल
बम्हाणी—गोधा
बम्हाल—अपस्मार, वायु-रोग विशेष
बम्ही—वाणी
बलय—वैल
बलहट्टुया—चने की रोटी
बलायण—१ उद्यान आदि मे मनुष्यो के वैठने के लिए बनाया जाता स्थान। २ द्वार, दरवाजा
बलिआ—सूर्प, अन्न को तुषादि रहित करने का एक उपकरण
बलिद्द—वृषभ, वैल
बलिमड्डा—वलात्कार
बलिवंडा—वलात्कार
बलीमुह—वानर, वंदर
बहिअ—मथित, विलोडित
बहिणुल्ली—छोटी वहिन
बहिहुत्त—वहिर्मुख
बहुजाण—१ चोर। २ धूर्त्त
बहुधारिणी—नववधू

बहुरा—सिआरिन
बहुराण—असिधारा
बहुली—माया, कपट
बहुल्लिआ—बड़े भाई की स्त्री
बहुल्ली—क्रीडोचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली
बाअ—बाल, शिशु
बाइगा—माता
बाइया—मा, माता
बाउल्लय—१ भित्तिचित्र। २ खिलौना। ३ गुड़िया
बाउल्लया—पञ्चालिका, पुतली
बापीकी—पैतृकी
बारह—द्वादश, बारह
बालालुंबी—तिरस्कार
बाल्ल—बोल
बाहिरि—बाहर
बाहुडिय—लज्जित, भयभीत
बीयत्तिय—१ बीज बोने वाला। २ पिता
बुंध—मूल
बुंबा—चिल्लाहट, पुकार
बुक्कार—बूत्कार, पुकार
बुक्कावण—मुष्टि-प्रक्षेप
बुड्डिर—महिष, भैसा
बुड्ढ—बूढा
बुर—बुरादा, काठ का चूरा
बुल—बोड, धार्मिक
बुलबुल—बुलबुला
बुलुबुल—बुद्बुद
बुल्लाविय—कथित
बढउ—बूढा
बूल—मूक, वाग्शक्ति से शून्य
बूहक्क—चिल्लाहट
बे—दो
बेट्टिका—बेटी, राजकन्या
बेडय—नौका, जहाज
बेडिया नौका, जहाज
बेडी—नौका, जहाज
बेण्णि—दो
बेल्ल—बैल
बेल्लग—बलीवर्द, बैल
बोगुवारिय—विभूषित
बोज्झ—भार
बोट्ट—जूठा करना, उच्छिष्ट
बोलण—डूबना
बोलिंदी—लिपि-विशेष, ब्राह्मी-लिपि का एक प्रकार
बोलिय—व्याप्त
बोलीण—व्यतिक्रान्त
बोल्ल—कोलाहल
बोल्लाविअ—१ बुलाया हुआ। २ भाषित, उक्त
बोल्लिअ—कथित
बोहित्थिय—नौका-स्थित

भ

भइल—भया, जात (?)
भंगोठण—व्रणित, व्रणयुक्त
भंभेरी—वाद्य-विशेष
भंवरि—विवाह मे फेरे देना
भंहलअ—मूर्ख
भगुंडिय—उद्धूलित
भग्गलअ—अप्रिय
भच्च—भागिनेय, भानजा

भडक्क—आडंबर, ठाठबाट
भडभेडी—दास-दासी
भडारी—भट्टारिका
भडित्त—पका हुआ
भडिल—संबोधनसूचक शब्द
भत्थ—तूणीर, तरकस
भद्दुलय—चूहा
भप्पर—भस्म—भस्म इत्यर्थे देशी
भमरटेंटा—१ भ्रमर की तरह अक्षिगोलक वाली। २ भ्रमरवत् अस्थिर आचरण वाली। ३ शुष्क व्रण के धब्बे वाली
भम्म—सुवर्ण
भरवसय—भरोसा
भलहुल्ल—भौंकने वाला, कुत्ता
भलावण—दायित्व देना
भलिम—भलाई
भल्ल—भद्र, भला
भल्लार—अधिक भद्र, भद्रतर
भल्लारय—शुभ, उत्तम
भल्लोड—शर का अग्रभाग
भसआ—शृगाली
भसत्त—१ अग्नि। २ दीप्त
भसल—भौंरे का शब्द—भृगशब्दार्थे देशी
भाउल—भ्रम से आकुल
भाण—म्लेच्छ जाति-विशेष
भाणवी—शनिश्चर
भाल्ल—मदन-वेदना, काम-पीडा
भावई—गृहिणी
भावुक—वयस्क, मित्र
भिउड—शरीर का अवयव-विशेष
भिंटिया—भंटा का गाछ
भिब्भल—विह्वल
भिट्टण—भेट, उपहार
भिट्टा—भेट, उपहार
भिडंत—युद्ध
भिडण—लडाई, मुठभेड़
भिडिअ—आक्रान्त
भिडिय—जिसने मुठभेड़ की हो वह, लडा हुआ
भिलिंगु—धान्य-विशेष, मसूर
भिल्ल—भील—शवरजातिविशेषे देशी
भिसया—आसन-विशेष
भीड—मिलना, सटना
भीडिअ—जिसने मुठभेड की हो वह
भीतर—दरवाजा
भीयर—भयंकर
भीसावण—भीषण
भुंगल—वाद्य-विशेष
भुंभुरभोलय—अत्यन्त भोला
भुंभुरभोलिया—अत्यंत भोली
भुत्थल्ल—बिल्ली को फेंका जाता भोजन-विशेष
भुरकुंडिय—लम्पट
भुरुट्ट—कंटीला पौधा, भरूंट
भुल्ल—भूला हुआ
भुल्लय—भ्रान्त—भ्रान्त इत्यर्थे देशी
भुसुंढि—शस्त्र-विशेष
भूमणया—स्थगन, आच्छादन
भूहरी—तिलक-विशेष
भेक्खस—१ राक्षस, भयदाता। २ राक्षस का प्रतिपक्षी

भेखस—राक्षस
भेज्जलल—भीरु, डरपोक
भेडचित्त—भीरुचित्त, कायर
भेल—अतिवृद्ध
भोट्टण—भृतक
भोल—१ भद्र, सरल चित्तवाला । २ मूढ
भोलवणा—वञ्चना, प्रतारण
भोलविय—वञ्चित, ठगा हुआ

म

मइअ—विस्तीर्ण
मइयवट्ट—विनाशक, मर्दक
मइलण—मलिनीकरण
मइलपुत्ती—पुष्पवती, रजस्वला
मइलल—मलिन
मइव्वण—क्षेत्रपाल
मंकण—बंदर
मंकुस—नेवला
मंगि—स्त्री
मंजर—मार्जार
मंजीरय—पैर का आभूषण-विशेष
मंट—१ मूक । २ आलसी । ३ बौना
मंटिय—बौना
मंठ—१ ऊंचा-नीचा । २ मद । ३ मृष्ट
मंठुवयंठ—समीपस्थ प्रदेश
मड—बलात्कार
मंडय—चपाती, मांडा
मंडल—काक
मंडिअ—१ रचित, बनाया हुआ । २ बिछाया हुआ । ३ आगे धरा हुआ । ४ आरब्ध
मंतक्खर—लज्जा
मंदीरय—मंथानक
मंभीस—अभय देना
मक्खण—नवनीत
मडक्क—१ गर्व । २ मटका
मडक्किया—छोटा मटका
मडप्पर—गर्व, अभिमान
मडहिय—अल्पीकृत, न्यून किया हुआ
मडहुल्ल—लघु
मड्ड—अलस
मड्डुल्ल—गर्वित
मढिगा—कुटीर
मदोली—दूती
मद्द—बलात्कार
मद्दणसलागा—सारिका, मैना
मन—निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं
मन्नुसिय—उद्विग्न
मप्प—माप, बाट
मप्पा—आज्ञा
मब्भक्खर—सुरा
मब्भीसिय—डरो मत—ऐसा अभय वचन
मम्मक्क—१ गर्व । २ उत्कंठा
मम्मण—अव्यक्त वचन
मम्मीस—अभय वचन
मयण—१ मैना, सारिका । २ मोम, सिक्थ
मयहरिगा—वेश्यामाता
मयासि—देव
मरजीव—मोती के लिए समुद्र मे गोता लगाने वाला

मरजीवय—समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह
मरट्ट—उत्कर्ष
मरट्टिय—गर्वित
मरह—गर्व
मरिअ—१ टूटा हुआ, त्रुटित। २ विस्तीर्ण
मरुकुंद—मरुआ, मरुवे का गाछ
मलइअ—१ हत। २ तीक्ष्ण
मलहुड—१ तुमुल ध्वनि। २ गर्जित। ३ शोक
मलहल—कलकल, कोलाहल
मलिय—मर्दित
मल्हंत—मौन करता हुआ
मल्हण—मदयुक्त
महइ—१ श्मशान। २ इच्छा
महण—पूजक
महप्पुर—प्रभाव, माहात्म्य
महल्लिया—अंतःपुर की महत्तरिका
महाइय—१ महात्मा। २ महर्द्धिक
महारअण—वस्त्र
महारुंद—परिपूर्ण—पूर्ण इत्यर्थे देशी
महिअद्दुअ—घी का किट्ट
महिड—कर्दम
माअली—मृदु
माइय—समाविष्ट, समाया हुआ
माउच्चा—सखी
माउसिआ—फूफी
मांड—मंडी, कलप
माडा—समकाल
माढी—कवच—'माढी सन्नाहिका इति देशीसारः, देश्यां लौहाङ्गुलीय-घटितो जिरह इति रामदास-टीकायाम्
माण—परिमाण-विशेष, दस सेर का माप
माभीस—अभय वचन
माम—१ आमन्त्रणसूचक अव्यय। २ मामा। ३ श्वसुर
मामि—आवा
मायइ—वृक्ष-विशेष
मायण्हिया—मृगतृष्णा
मायवप्प—माता-पिता
मारिव—गौरव
माला—डाकिनी
माहुंडल—सर्प-विशेष
मिअ—१ अलंकृत। २ विघटित
मिंढ—हस्तिपालक, महावत
मिंढय—मेष, भेड—मेषशब्दार्थे देशी
मिंढी—मेषी, मेढी—मेषस्त्री इत्यर्थे देशी
मिरिक्क—मत्सरी
मिलाअ—बलात्कार
मिल्लिय—मुक्त, रहित
मिसिमिसिय—उद्दीप्त, उत्तेजित
मीण—सिक्थ, मोम
मुअग्ग—आत्मा बाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलों से निर्मित है—ऐसा मिथ्या ज्ञान
मुंकुरुड—राशि, ढेर
मुंगुरुड—राशि, ढेर
मुंट—हीन शरीर वाला
मुंडिय—अश्वशाला के दोनों ओर गाडा जाने वाला काष्ठद्वय
मुकुडी—जूडा

मुक्कोट्टिय—उद्वेष्टित
मुग्गरय—मुग्धा के साथ रमण
मुग्गुअ—न्यौला, नकुल
मुचमुंड—जूडा
मुट्टिम—गर्व
मुद्दंग—१ उत्सव । २ सम्मान
मुद्धड—१ उद्धत । २ अकुटिल, प्राजल
मुद्धयंद—पूर्णिमा मे उदय काल का भास्वर चाद
मुम्मिअ—शीलित
मुयंगलिया—चीटी
मुरुअ—त्रुटित
मुरुंडी—शृगाली
मुरुक्क—मुडा हुआ
मुरुक्कि—पक्वान्न-विशेष
मुल्लिअ—शीलित
मुसमूरण—भजन, दलन
मुसल—मासल, पुष्ट
मुसुमूरण—भंजन, दलन
मुसुमूरविअ—भगाया हुआ
मुसुमूरिअ—भागा हुआ
मुहला—कोलाहल
मुहुल—बन्दी
मूअल्लिअ—मूक बना हुआ
मूरविअ—तापित
मेइणी—चडालिनी
मेंढअ—मेष, मेंढा
मेक्ख—पास का खेत आदि
मेट्ठ—महावत
मेठिअ—गृह, घर
मेडय—मजिल, तला
मेमण—मे मे शब्द करना
मेम्मायंत—अनुकरणवाची शब्द
मेर—मर्यादा, सीमा
मेरय—मर्यादा
मेलय—समूह
मेलावक्क—सगम
मेल्लअ—मोचक
मेल्लाविय—मोचित
मेल्लिय—मुक्त—मुक्त इत्यर्थे देशी
मेहरि—काष्ठ-कीट, घुण
मेहरिया—मेहरी, गाने वाली स्त्री
मेहलिया—भार्या
मेहली—भार्या
मोइल—मत्स्य-विशेष
मोकल्लिअ—मोचित
मोक्कलिय—मुक्त, मोचित
मोक्कल्ल—भेजना
मोट्टाइय—रति-क्रीडा, मैथुन
मोट्टाविय—बलात्कारपूर्वक रति-क्रीडा
मोट्टिम—बलात्कार
मोट्टिया—मोटी स्त्री
मोट्टियार—मोटे आकार वाला
मोडी—भगिनी
मोड्डिय—भग्न
मोणावणा—प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सवपूर्वक निमन्त्रण
मोरअ—अपामार्ग
मोरट्ट—अपामार्ग
मोरुल्ल—मयूर
मोलग—बाधने के लिए गाडा हुआ खूटा

लहग—बासी अन्न मे पैदा होने वाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष
लहरी—१ तरंग। २ प्रवाह
लाग—चुंगी, लगान
लाड—वस्त्र-विशेष
लाणि—१ मर्यादा। २ अन्त
लावणा—भोजन जो उपहाररूप में घर-घर भेजा जाता है
लासअविम्हअ—मयूर
लाहिल्ल—लम्पट
लिंबोहली—निम्ब-फल
लिज्जिअ—गृहीत
लिल—यज्ञ
लिल्लिर—१ हरा। २ हरे रंगवाला
लिल्लिरय—वस्त्र-खण्ड
लिहअ—सुप्त
लीह—रेखा
लुक्क—सुप्त
लुक्किअ—१ टूटा हुआ। २ छिपा हुआ
लुच्छी—बाल, कुतल
लुट्ट—लूटा गया
लुणालुणि—वह क्रीडा जिसमे परस्पर पेतरे बदले जाते है
लुलिअ—लेटा हुआ
लुल्लक्क—यमदूत
लुहण—शुद्धि, मार्जन
लूड—लूटनेवाला
लूडण—लूट, चोरी
लूरिअ—काटा हुआ, छिन्न
लूह—रूक्ष
लेवि—पक्षी
लेसुरुडयतरु—लसोडा, गूदा
लेहाल—लम्पट
लोअग—गुण-रहित अन्न, खराब अनाज
लोट्ट—१ अति आसक्त। २ स्मृत
लोट्ठ—स्मृत
लोडाविअ—घुमाया हुआ
लोण—घृत
लोर—१ नेत्र। २ आगृ
लोहल—शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द
ल्हसण—खिसकना, स्रंसन
ल्हसिअ—१ हर्षित। २ त्रस्त, खिसका हुआ
ल्हिक्कविअ—छिपाया हुआ

व

वअणीअ—१ उन्मत्त। २ दुःशील
वअल—१ कलकल। २ वट वृक्ष
वइ—१ वदि, कृष्ण पक्ष। २ मर्यादा
वइरिक्क—विजन, एकान्त
वइसणय—आसन-विशेष
वउवलअ—विषरहित सर्प
वंजर—मार्जार
वंडइअ—पीडित
वंदणिया—शौचगृह
वक्क—पिष्ट, पिसान
वक्खल—आच्छादित
वक्खलिअ—पुरस्कृत
वग्घसिअ—युद्ध
वच्छीत—नापित
वच्छीपुत्त—नाई
वच्छुद्धलिय—प्रत्युद्धत
वच्छोमी—काव्य की एक रीति
वज्जघट्टिता—मंदभाग्य स्त्री
वज्जिर—बजने वाला

वट्टइ—निश्चित
वट्टउ—कटोरी
वट्टमग—मार्ग
वट्टाविअ—समापित
वट्टु—पात्र-विशेष
वट्टुत्तिविडि—वर्तनों या घड़ों को एक पर एक चिनना (वडेर—राजस्थानी)
वडप्फर—बड़ा फलक
वडलसर—जपवान्
वडिणाय—घर्घर कण्ठ
वडिया—उद्देश
वडिसाअ—टपका हुआ
वडुमग—मार्ग, रास्ता
वड्डइअ—चर्मकार
वड्डारय—महत्तर
वड्डिम—१ टपका हुआ। २ वड़ाई, श्लाघा
वाडुल—बडा, महान्
वड्डुअ—बड़ा
वड्डुल—बड़ा
वड्डया—वाटिका
वड्डारय—बडा
वड्ढुअर—बृहत्तर
वढ—१ मूक। २ मूढ। ३ वट
वढत्तण—मूढता
वणनत्तडिअ—पुरस्कृत, आगे किया हुआ
वणसुणअ—भेड़िया
वत्तारुहण—रस्सी पर नाचने वाला नट
वन्द्र—समूह
वपज्झअ—भार
वप्प—१ पिता। २ बाप रे
वप्पाहय—चातक पक्षी
वप्पिअ—परिपूर्ण
वप्पिक्की—पैतृकी
वप्पिवअ—खेत
वप्पीह—कुमार
वम्मल—कोलाहल
वम्मीसण—कामदेव
वम्मुल्लूरण—मर्मवेधक
वम्मुल्लूरिय—मर्मविद्ध
वयंग—फल-विशेष
वयणुल्ल—मुख
वयाल—कोलाहल
वयालिय—व्याप्त
वरंडिया—छोटा बरडा
वरडा—१ तैलाटी, कीट-विशेष। २ दंश-भ्रमर
वरत्त—१ पीत। २ पतित। ३ पेटित, सहत
वरय—वराक, वेचारा
वरह—रज्जु
वरालय—वाहन-विशेष
वराहव—राहु
वरिल्ल—वस्त्र
वरुय—वृक, भेड़िया
वलइल्ल—वल्लभ
वलक्किअ—उत्संगित, उत्संग-स्थित
वलत्थ—पर्यस्त
वलविअ—जपवान्
वलहिय—बरामदा
वलाएल्लण—वल्लभ

वलाणय—द्वार
वलिअ—मौर्वी, प्रत्यंचा
वलिमंड—वलात्कार
वलिवंड—वलात्कार
वलुंकी—ककडी
वल्लंक—भीषण
वल्लव—गायों का समूह
वल्लविअ—लाक्षा से रंगा हुआ
वल्लूरय—खाद्य-विशेष
वल्लूरिय—मासपेशी
ववडअ—ब्राह्मण
वव्वीस—वाद्य-विशेष
वव्वीह—चातक पक्षी
वसचोप्पड—वसा से लिपटा हुआ—वसावलिप्त इत्यर्थे देशी
वसतुंड—काक
वसुआविअ—शुष्क किया गया
वसेरय—वसेरा, निवास-स्थान
वसेरी—गवेषणा
वस्सोक—एक प्रकार की क्रीडा
वहअ—मणिकार
वहइअ—पर्याप्त
वहलप्पण—मूर्ख
वहिअ—मथित
वहिय—अवलोकित
वहियवड—वही-खाता
वहिया—वही, हिसाव लिखने की किताव
वहिलग—ऊंट, वैल आदि पशु
वहुज्जा—छोटी सास
वहुणिआ—वडे भाई की पत्नी
वहोलिया—छोटा जल-प्रवाह
वाइअ—मंत्रवादी
वाइगा—माता
वाउलिआ—छोटी खाई
वाउल्ल—पुतला
वाउल्लआ—पुतली
वाओलि—झंझावात
वाखरु—वाखर
वाघेल—एक क्षत्रियवंश
वाड—रहने का स्थान
वाडुंवी—घोडे का आभूषण
वाणुंजुअ—वणिक्
वामरोर—वल्मीक
वामलूर—वल्मीक
वायड—१ एक श्रेष्ठि-वंश। २ तोता
वारड्ड—अभिपीड़ित
वाराय—अतिथि
वारूया—हस्तिनी, हथिनी
वालाहिय—सरोवर, झील
वालिअ—गर्वित
वावंफिर—श्रमशील
वावल—व्यापृत
वावल्ल—१ शस्त्र-विशेष, भाला। २ वावला, पागल
वासण—पात्र, वरतन
वासिया—स्त्री
वासी—कर्दम
वासूया—हथिनी
वाहडिया—कावर, वहंगी
वाहयाली—अश्वखेलनभूमि
वाहलिय—खेलने का मैदान
वाहलिया—छोटा जल-प्रवाह
वाहस—अजगर
वाहियालि—अश्व-वाहन-मार्ग

वाहुडण—गमन
वाहुडिअ—गत, चलित
वाहोलिया—छोटा जल-प्रवाह
विअंटूत—१ अवरोपित। २ मुक्त
विआलिउ—व्यालू, सायंकाल का भोजन
विउंचिआ—पामा-रोग
विउडण—१ विनाश। २ विनाशक
विउडिअ—विनाशित
विउल—१ क्षीर। २ आविग्न
विओलय—उद्विग्न
विंटलिआ—गठरी
विंढिया—अंगूठी
विंदुरिल्ल—१ उज्ज्वल। २ कलकंठ। ३ म्लान। ४ विस्तृत
विंभइय—विस्मित—विस्मितार्थे देशी
विंभय—विस्मय
विक्खणय—कार्य
विगिंचणया—१ परित्याग। २ विनाश
विगत्त—पीडित
विग्गुत्त—व्याकुल किया हुआ
विग्गोवय—व्याकुलता
विच्चल—नंगा, वस्त्र-रहित
विच्छड्ड—१ वैभव। २ विस्तार
विच्छड्डी—वैभव
विच्छुअ—पिशाच
विच्छुरिअ—अपूर्व
विच्छूढ—विरहित
विच्छोइय—विरहित
विच्छोम—विदर्भ नगर
विच्छोय—विरह
विच्छोलिअ—कंपित
विजयाइ—खाद्य-विशेष
विज्ज—देश-विशेष
विज्जे—१ रास्ते से। २ लिए
विज्झ—धक्का
विज्झड—समूह
विट्टलय—अपवित्र—अपवित्रार्थे देशी
विट्टालि—अपवित्र करने वाला
विट्टालिअ—उच्छिष्ट किया हुआ
विड्ढत—अर्जित
विडत्त—अर्जित
विडाविड—निर्मित
विडिरिल्ल—भयंकर
विडुच्छअ—निषिद्ध
विडुविल्ल—भीषण
विड्डुम—भय
विड्डुय—चमत्कार
विड्डुर—१ विस्तार। २ असभावित आपदा
विड्डुरिल्ल—१ आटोप, आडबर। २ आटोपित
विड्डुरी—आडबर
विड्डिरिआ—रात्री
विड्डिरिल्ल—आडवर
विड्डुरी—आडंवर
विढवण—उपार्जन
विणड—१ व्याकुल। २ विडम्बना
विणडिय—वंचित—वचित इत्यर्थे देशी
वित्थक्क—१ विरोधी के रूप मे प्रस्तुत। २ आक्रमण। ३ निरुद्ध
वित्थिर—विस्तार, फैलाव
विद्धवयण—विदग्ध वचन

विप्पत्ती—१ व्रत । २ उत्सव-विशेष
विप्पलय—विविधता, विचित्रता
विप्फइ—विशाल
विब्भाडण—१ विनाश । २ विनाशक
विब्भाडिय—१ नाशित । २ अपमानित
विभिय—विस्मय
विम्हरावण—स्मरण कराने वाला
वियज्झ—परवश
वियड्ढ—विशेषरूप से शीतल
वियाइय—बच्चे देना
वियारिय—१ कान मरोडना । २ चपेटा देना
विरण्णिअ—आर्द्र, गीला
विरहि— वृक्ष-विशेष
विरामइल्ली—विराम करने वाली
विरिचर—धारा
विरिचिर—धारा से विरेचन करने वाला
विरुवय—कुत्सित
विरोलण—१ विलौना करने वाला । २ विनाशक
विरोल्लिय—कदर्थित
विल—योनि
विवरम्मुह—पराङ्मुख
विवराहुत्त—विपराङ्मुख
विवरेर—वर्णन करने वाला
विवरेरय—विपरीत
विवाविड—अतिशय गौरव
विवोल—विशेष कोलाहल
विवोलिअ—व्यतिक्रान्त

विव्वोयण—उपधान
विसंभर—तन्तुवाय
विसग्ग—व्युत्सर्ग
विसट्टंत—१ विकसित । २ उत्थित । ३ विघटित
विसट्टण—विकास
विसट्टय—विकसित
विसड्ढ—शोभित
विसद्धंत—पतन
विसरय—वाद्य-विशेष
विसार—सेना
विसिड—१ विरत । २ विसंस्थुल, चंचल
विसुराविय—खिन्न किया हुआ
विस्साणिज्जंत—मृष्ट
विस्सुअ—उन्मत्त
विहडण—अनर्थ
विहडप्फड—विस्फुरित–विस्फुरित इत्यर्थे देशी
विहल - मौर्वी
विहलंखल—विह्वल
विहाणय—प्रभात
विहिम—जंगल, अरण्य
विहिमिहिय—विकसित, प्रफुल्लित
विहोय—वैभव
वीअदुहिय—भृत
वीबी—तरंग
वीवी—वीचि, तरंग
वीसालिअ—मिश्रित
वुक्करंत—भौंकता हुआ
वुक्करिय—शब्दित, शब्द किया हुआ
वुक्कारिय—गर्जना

वुज्जण—स्थगन, आच्छादन
वुड्ड—विनष्ट
वुणण—बुनना
वुणिय—बुना हुआ
वुण्णउ—दीन, उद्विग्न
वुण्णिय—भयभीत
वुल्लाह—अश्व की एक उत्तम जाति
वुल्लीण—व्यतीत
वूणक—बालक
वूय—बुना हुआ
वेइड्ड—१ तनु । २ शिथिल । ३ आविद्ध । ४ ऊर्ध्वीकृत । ५ विसस्थुल, विषम, चचल
वेइल्ल—विचकिल का पुष्प
वेउव्विया—पुन पुन
वेड—सुराविष्ट
वेभल—विह्वल
वेखास—विरूप
वेखासअ—विरूप
वेगड—पोत-विशेष
वेगर—द्राक्षा, लोग आदि से मिश्रित चीनी आदि
वेच्छिल्ल—कोरंट-वृक्ष
वेज्झ—धक्का
वेट्टिअ—वेष्टित
वेड—श्मश्रु
वेडूणी—लज्जा
वेणुसाअ—भौरा
वेण्ण—आक्रान्त
वेमइअ—भग्न
वेयडिय—खचित
वेययंड—हाथी
वेला—मर्यादा
वेल्लंत—व्याकुल होता हुआ
वेल्लडिया—वल्लरी
वेल्लरिअ—बाल, केश
वेल्लरिया—वल्ली, लता
वेल्लव—१ विलास । २ लता
वेल्लवल्ल—१ कोमल । २ विलासी । ३ सुन्दर
वेल्लहल्ल—सुन्दर
वेसंत—पल्वल, छोटा तालाब
वेसिणी—वेश्या
वेहाविद्ध—कोपाविष्ट
वेहाविद्धय—कोपाविष्ट
वेहाविय—वञ्चित
वेहियर—जहाज
वोक्क—यकृत्, कलेजा
वोक्कअ—१ अनिमित्त । २ तात्पर्य
वोक्कड—बकरा-अज इत्यर्थे देशी
वोक्का—१ वाद्य-विशेष । २ पुकार, व्याहृति
वोक्खारिय—विभूषित
वोग्गिण्ण—अलकृत
वोट्टि—आसक्त, लीन
वोड—१ दुष्ट । २ छिन्न-कर्ण
वोडही—१ तरुणी । २ कुमारी
वोढ—१ दुष्ट । २ छिन्न-कर्ण
वोद्दही—तरुणी
वोल—१ आर्द्र-आर्द्र इत्यर्थे देशी । २ समूह
वोलाविअ—अतिक्रामित
वोल्लिय—आर्द्र किया हुआ
वोसट्टिअ—विकसित

सिंथ—धनुप की डोरी
सिंदाण—विमान
सिंदुर—रज्जु
सिंदूरिआ—राज्य
सिंधुवणअ—अग्नि
सिंबासिंबि—अतिशीघ्र, चटपट
सिंहलअ—वस्त्र आदि को धूपित करने का यंत्र
सिक्कड— खटिया
सिक्करिअ—शृंगार से उत्पन्न कुतूहल
सिक्करिआ—जहाज का आभरण-विशेष
सिक्किरि—छत्र
सिग्गरि—ध्वज-चिन्ह
सिग्गिरि—१ पताका। २ छीका। ३ नीलवर्ण—नीलवर्ण इत्यर्थे देशी
सिज्जमाण—पकता हुआ—पच्यमान इत्यर्थे देशी। (सीजना-राज)
सिट्टा—सोए हुए व्यक्ति के नाक का शब्द
सिट्ठ—सोकर उठा हुआ
सिंडिग—विदूषक, प्रहासक
सिड्ढी—सीढी, नि.श्रेणी
सिणिसिव—तन्तुवाय
सिणी—लज्जा
सिप्पि—शुक्ति
सिप्पीर—तुप, पलाल—धान्यादीना तुपमित्यर्थे देशी
सिंलिधय—वालक
सिंलिप—वालक, वच्चा
सिल्ल—१ भाला। २ जहाज का एक प्रकार
सिहंडहिल्ल—वालक
सिहुड—सोए व्यक्ति का नामा-शब्द
सीउग्ग—शीतकाल का दुर्दिन
सीउट्ट—हिमकाल का दुर्दिन
सीउल्लि—शीत ऋतु का दुर्दिन
सीकोत्तरी—महिला
सीसक्क—तुप
सीसम—शिंशपा, सीसम का गाछ
सीहली—१ शिखा। २ नवमालिका
सुइयाणिया—सूति-कर्म करने वाली स्त्री
सुंकाणिअ—पतवार खेने वाला व्यक्ति
सुंचल—काला नमक
सुक्कड—शुष्क—शुष्क इत्यर्थे देशी
सुक्कतरु—अगरु
सुक्काणय—जहाज के आगे का ऊंचा काष्ठ
सुज्झुअ—धोबी
सुढिय—दुखित—दुःखित इत्यर्थे देशी
सुदारुणी—चाडालिन
सुप्पाडोस—अच्छा पडोस
सुमंठ—घुटा हुआ, सुमृष्ट
सुरावण—कुत्रिकापण
सुलोस—कुसुम्भ वस्त्र
सुवन्नालुगा—दतवन करने का पात्र, लोटा आदि
सुवासिणी—जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सुहागिन
सुविसत्थ—व्यभिचारी
सुव्विजा—माता

सुहच्छी—आसन-विशेष, सुखासिका
सुहाग—सौभाग्य (सुहाग-राज)
सुहावण—सुहावना
सुहिल्ल—सुखी, आनन्दित
सुहेल्लिय—सुखपाल
सूडिय—भांगा हुआ
सूणार—१ वधस्थान । २ वध
सूरिल—श्वसुरपक्ष
सेआलिआ—दूर्वा
सेर—परिमाण-विशेष, सेर
सेलग–भाला
सेहली—गणिका
सेहीर—सिंह
सोअण—मल्ल
सोआल—देवता को भेंट
सोज्झिअ–निद्रालु
सोण्णार—स्वर्णकार
सोमालिया—हाथी की सूंड
सोरी—कसाई
सोलत्तग—अपहृत धन के साथ
सोवणय—१ शयनगृह । २ शयन
सोहल—उत्सव (सोहलो-गुज)
सोहलय—उत्सव
सोहिल्ल—पिष्ट

ह

हंसल—आभूषण-विशेष
हक्क—१ निषेध । २ हाक । ३ ललकार, पुकार
हक्कंत—निषेधमान
हक्का—१ पुकार । २ प्रेरणा
हक्कारअ—दूत, हलकारा
हक्किऊण—हांक कर
हक्किय—१ हाका हुआ । २ प्रेरित । ३ निषिद्ध । ४ आहूत । ५ उन्नत
हक्खुविअ—उत्पाटित
हच्छं—शीघ्र
हडहड—१ अत्यत विखरे वालो वाला । २ भोजन-वस्त्र आदि से रहित
हडाविय—हटाना–दूरोत्सारित इत्यर्थे देशी
हडि—अभ्यस्त, हठी–अभ्यस्त इत्यर्थे देशी
हड्डुव—कलह
हड्डाल—अस्थियुक्त–अस्थियुक्त इत्यर्थे देशी
हणिअ—सुना हुआ
हत्थर—सहायता
हत्थावार—सहायता
हत्थिहार—युद्ध
हत्थुत्थल्ल—हाथ के इशारे से आज्ञा देना
हथलेव—पाणि-ग्रहण
हद्धिण—आखमिचौनी
हर—तृण
हरण—१ स्मरण । २ ग्रहण । ३ वस्त्र
हरहाइ—चरागाह
हरिकिडि—वराह
हरिवर—मण्डूक
हरिसोल्लिय—उल्लसित
हरे—सबोधन-सूचक अव्यय
हलप्फलय—प्रक्षोभ
हलबोलिय—त्वरा, हलफल

अक्खड—(**आ+स्कन्द्**) आक्रमण करना।

अक्खुंद—१ चखकर छोड़ना। २ नखों से कुरेदना (निचू २ पृ १२४)।

अक्खोड (**आ+स्फोटय्**)—थोड़ा या एक वार झटकना (द ४ सू १९)।

अक्खोड (**कृष्**)—तलवार को म्यान में से खींचना (प्रा ४।१८८)।

अग्गुम (**पृ**)—पूरित करना।

अग्घ (**अर्ह्**)—प्राप्त होना (उ ९।४४)।

अग्घ (**राज्**)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

अग्घव (**पूर्**)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अग्घाड (**पूर्**)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अग्घोड (**पृ**)—पूर्ण करना।

अच्चुक्क (**वि+ज्ञापय्**)—विज्ञापन करना।

अच्छ (**कृष्**)—खींचना।

अच्छ (**आस्**)—बैठना, ठहरना (उशाटी प १४७)।

अच्छिज्ज—आच्छादन करना (से १४।७)।

अच्छुर—बिछाना—'सथारयं अच्छुरंति' (ओटी प ८३)।

अट्ट (**क्वथ्**)—उबालना, पकाना (प्रा ४।११९)।

अट्ट (**शुष्**)—सूखना—'अट्टंति णहअले च्चिअ मारुअभिण्णलहुआ सलिल-कल्लोला' (से ५।६१)।

अड—वंदना करना (आवचू १ पृ २७१)।

अडखम्म—देखभाल करना—'अडखम्मिज्जंति सवरिआहि वणे' (दे १।४१ वृ)।

अड्डक्ख (**क्षिप्**)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।

अड्डव—गिरवी रखना।

अड्ड—रोकना (आवहाटी २ पृ ८७)।

अणच्छ (**कृष्**)—खेती करना (प्रा ४।१८७)।

अणुचिट्ठ (**अनु+स्था**)—१ स्थिर रहना, टिकना—'सामण्णमणुचिट्ठइ' (द ५।१३०)। २ अनुष्ठान करना। ३ करना।

अणुवज्ज—सेवा-शुश्रूषा करना (दे १।४१ वृ)।

अणुवज्ज (**गम्**)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अणुसंभर (**अनु+स्मृ**)—याद करना।

अण्ण (**भुज्**)—खाना।

अण्ह (**भुज्**)—१ भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना (प्रा ४।११०)।

अदुयाल—मिश्रित करना (आवमटी प ४५२)।

अद्धुम (**पृ**)—पूर्ण करना, भरना।

अप्पाह (**अधि+आपय्**)—पढाना, सिखाना (से १०।७४)।

अप्पाह (**आ+भाष्**)—सभाषण करना।

अप्पाह (**सं+दिश्**)—संदेश देना (व्यभा ७ टी प ७६)।।

अप्फड—आहत होना–'पाएण वा खाणुए अप्फडइ' (निचू ३ पृ १२२)।

अप्फुंद (**आ+क्रम्**)—१ जाना (से ६।५७)। २ आक्रमण करना।

अप्फोड—१ ताली बजाना (कु पृ १३२)। २ ताडन करना।

अब्बुत्त (**प्र+दीप्**)—जलना।

अब्भड—पीछे जाना।

अब्भिड (**सं+गम्**)—संगति करना (प्रा ४।१६४)।

अब्भुत्त (**स्ना**)—स्नान करना (प्रा ४।१४)।

अब्भुत्त (**उत्+क्षिप्**)—फेंकना।

अब्भुत्त (**प्र+दीप्**)—१ प्रकाशित होना। २ उत्तेजित होना। (प्रा ४।१५२)।

अम्माहि—काटना, पकडना, पीछा करना–'न मे सो सप्पो अम्माहिती' (व्यभा ४।१ टी प १३)।

अयंछ (**कृष्**)—१ खेती करना। २ खींचना। ३ रेखा करना (प्रा ४।१८७)।

अलिल्ल (**कथय्**)—कहना।

अल्ल—चिल्लाना।

अल्ल (**नम्**)—नीचे झुकना।

अल्लत्थ (**उत्+क्षिप्**)—ऊंचा फेंकना (प्रा ४।१४४)।

अल्लव—समर्पण करना।

अल्लि (**आ+ली**)—१ आना। २ प्रवेश करना। ३ जोडना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ सगत होना (प्रा ४।५४)।

अल्लिय (उप+सृप्)—समीप मे जाना (आवचू १ पृ २१२)।

अल्लिय (आ+ली)—आलिङ्गन करना (प्रा ४।५४)।

अल्लिव (अर्पय्)—अर्पण करना (प्रा ४।३९)।

अव—कहना।

अवअच्छ (ह्लाद्)—आनन्द पाना, खुश होना (प्रा ४।१२२)।

अवअच्छ (ह्लादय्)—खुश करना (प्रा ४।१२२)।

अवआस (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

अवंगुण—खोलना—'दुवारवयणाइं अवंगुणंति' (भ १५।१४२)।

अवक्ख (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

अवखेर—खिन्न करना।

अवज्जस (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अवज्झ (दृश्)—देखना।

अवडक्क—आत्महत्या करना।

अवडाह (उत्+क्रुश्)—ऊंचे स्वर से रुदन करना (दे १।४७वृ)।

अवपंगुण—खोलना—'णो पीहे ण यावपंगुणे' (सू १।२।३५)।

अवपंगुर—खोलना (द ५।१।१८)।

अवपुस—संयुक्त करना।

अवयक्ख (अव+ईक्ष्)—१ देखना। २ पीछे मुड़कर देखना (ओभा १८८)।

अवयच्छ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

अवयक्ख (अप+ईक्ष्)—अपेक्षा करना।

अवयज्झ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

अवयास (श्लिष्)—गले लगाना (प्रा ४।१९०)।

अवरुंड—आलिंगन करना (दे १।११ वृ)।

अववाह (अव+गाह्)—अवगाहन करना।

अवसिज्ज (अव+सद्)—हारना, पराजित होना (विभा २४८४)।

अवसेह (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अवसेह (नश्)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।

अवह (रच्)—निर्माण करना (प्रा ४।९४)।

अवहर (नश्)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।

अवहर (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अवहाड—आक्रोश करना (दे १।४७वृ)।

अवहाव (कृप्)—दया करना (प्रा ४।१५१)।

अवहेड (मुच्)—छोडना (प्रा ४।६१)।

अवुक्क (वि+ज्ञपय्)—विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना (प्रा ४।३८)।

अहिऊल (दह्)—जलाना (प्रा ४।२०८)।

अहिखीर—१ पकडना। २ आघात करना।

अहिपच्चुअ (आ+गम्)—आना (प्रा ४।१६३)।

अहिपच्चुअ (ग्रह्)—ग्रहण करना (प्रा ४।२०६)।

अहिरेम (पूरय्)—पूरा करना (प्रा ४।१६६)।

अहिलंख (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

अहिलंघ (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

अहिलक्ख (कांक्ष्)—इच्छा करना।

आ

आअंछ (कृष्)—१ खीचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना।

आअच्छ (कृष्)—खीचना।

आअड्ड (व्या+पृ)—व्यापृत होना (प्रा ४।८१)।

आअड्ड—परवश होकर चलना।

आअव्व (वेप्)—कापना।

आइंच—आक्रमण करना।

आइंछ (कृष्)—खेती करना (प्रा ४।१८७)।

आइग्घ (आ+घ्रा)—सूंघना (प्रा ४।१३)।

आउंट (आ+कुञ्च्)—संकोचना।

आउट्ट (आ+वृत्)—१ करना, व्यवस्था करना (उशाटी प ३२६)। २ भूलना। ३ तत्पर होना। ४ निवृत्त होना। ५ घूमना।

आउड (लिख्)—लिखना (जंबूटी प २५०)।

आउड (आ+जोडय्)—संबंध करना।

आउड्ड (मस्ज्)—डूबना, मज्जन करना (प्रा ४।१०१)।
आऊड—जुए में शर्त लगाना (दे १।६६ वृ)।
आओड (आ+खोटय्)- प्रवेश कराना।
आओडाव—प्रवेश कराना—'आओडावेइ त्ति आखोटयति प्रवेशयति' (विपाटी प ७२)।
आखंच (आ+कृष्)—पीछे खींचना।
आगंप (आ+कम्पय्) —कंपाना, हिलाना।
आघव (आ+ख्या)—१ निरूपण करना (नन्दी ८१)। २ ग्रहण करना।
आघुम्म—डोलना, हिलना, कांपना।
आचिक्ख—कथन करना (अवि पृ ८३)।
आजत्थ (आ+गम्)—आना।
आडुआल—मिश्रण करना (दे १।६६ वृ)।
आडोह—भीतर घुमकर गड़बड़ी करना।
आढप्प (आ+रभ्)—शुरू करना (प्रा ४।२५४)।
आढव (आ+रभ्)—आरम्भ करना (निचू १ पृ ६)।
आढा (आ+दृ)—आदर करना (विपा १।६।१४)।
आणक्ख (परि+ईक्ष्)—परीक्षा करना (निभा ४२५३)।
आणच्छ (कृष्)—खींचना।
आयंब (वेप्)—कांपना (प्रा ४।१४७)।
आयज्झ (वेप्)—कापना (प्रा ४।१४७)।
आयड्ड—परवश होकर चलना (दे १।६६ वृ)।
आरड—१ चिल्लाना। २ रोना।
आराअ—१ ग्रहण करना। २ प्राप्त करना।
आरुण्ण (आ+श्लिष्)—आलिंगन करना।
आरेअ—पुलकित होना।
आरोअ (उत्+लस्)—खुश होना (प्रा ४।२०२)।
आरोक्क—रोकना।
आरोग्ग—भोजन करना (दे १।६६ वृ)।
आरोड—आक्रमण करना।
आरोड (नि+रुध्)—रोकना।

आरोल (पुञ्ज्)—एकत्र करना (प्रा ४।१०२)।
आलिह (स्पृश्)—स्पर्श करना (प्रा ४।१८२)।
आलुंख (स्पृश्)—स्पर्श करना (प्रा ४।१८२)।
आलुंख (दह्)—जलाना (प्रा ४।२०८)।
आलुंघ (स्पृश्)—छूना।
आलुक्ख (स्पृश्)—छूना।
आलुक्ख (दह्)—जलाना।
आव (आ+या)—आना, आगमन करना।
आवआस (उप+गूह्)—आलिंगन करना।
आसंघ—आश्रय लेना—'आ+श्रि इत्यर्थे देशी।'
आसंघ (सं+भावय्)—१ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ निश्चय करना (से १५।६०)।
आसगल—१ आक्रान्त करना। २ प्राप्त करना।
आसर—सम्मुख आना।
आह (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।
आह (ब्रूज्)—कहना।
आहम्म (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
आहल्ल—हिलना, चलना।
आहुड—गिरना (दे १।६९ वृ)।
आहोड (ताडय्)—ताडन करना (प्रा ४।२७)।

इ

इंघ—सूघना।
इग्घ—तिरस्कृत करना।
इज्झा (इन्ध्)—चमकना (प्रा २।२८)।
इल्ल—आसिक्त करना, सीचना।

ई

ईजिह—तृप्त होना।
ईस—वश मे करना।

उ

उअ—विलोकन करो, देखो (दे १।८६ वृ)।

उंघ—ऊंघना, नीद लेना—'सो उंघेउं पवत्तो' (निचू १ पृ १०६)।

उंच (वञ्चय्)—ठगना।

उंछ—खोज करना—'उंछति-गवेसतेत्यर्थः' (सूचू १ पृ १०७)।

उंज (सिच्)—सीचना, प्रदीप्त करना—'सुद्धागणि वा उक्कं वा न उंजेज्जा, न घट्टेज्जा' (द ४ सू २०)।

उक्कंक—धनुष्य पर डोरी चढाना।

उक्कुक्कुर (उत्+स्था)—उठना (प्रा ४।१७)।

उक्कुर (उत्+स्था)—उठना।

उक्कुस (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

उक्खंभ—उत्पाटित करना, उखाड़ना (से ६।३३)।

उक्खण—खाडना, निस्तुप करना (दे १।११५ वृ)।

उक्खलुंप—खुजलाना (आचूला १।६२)।

उक्खिल्ल—उखाड़ना।

उक्खुड (तुड्)—तोड़ना (प्रा ४।११६)।

उक्खुड्ड—उखाडना, तोड़ना (कु पृ १२६)।

उक्खुलुंप—खुजलाना (आचूला १।६२)।

उग्ग (उद्+घाटय्)—खोलना (प्रा ४।३३)।

उग्ग (उद्+गम्)—उगना, उदित होना।

उग्गलच्छाव—खोलना (राज ७५४)।

उग्गह (रचय्)—निर्माण करना (प्रा ४।९४)।

उग्घ (नि+द्रा)—ऊघना।

उग्घस (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।

उच्चंप—कहना (अंवि पृ १०७)।

उच्चाड—१ रोकना, निवारण करना। २ अफसोस करना (प्रा २।१९३ टी)।

उच्चिट्ठ (उत्+स्था)—खडा होना।

उच्चिड—लगना, चिपकना।

उच्चुप्प—(चट्) चढना (प्रा ४।२५९)।

उच्छिद—उधार लेना।

उच्छुभ (अप+क्षिप्)—आक्रोश करना (प्र १।२७)।

उच्छोड—खोलना—'उवहीए दोरय उच्छोडेंति' (ओटी प ८३)।

उच्छोल (उत्+क्षालय्)—प्रक्षालन करना—'उच्छोलेंति पधोवेति सिचंति सिणावेंति' (आचूला ७।१९)।

उच्छोल (उत्+मूलय्)—उखाड़ना।

उज्जीर—अपमानित करना—'उज्जीरेइ सहीओ कुसुमसरोवखंडिआ कए तुज्झ' (दे १।११२ वृ)।

उज्जुर—क्षीण करना।

उज्झ—बुझाना (निचू ४ पृ ३५४)।

उज्झर—१ टेढी नजर से देखना। २ फेंकना।

उट्ठ (उत्+स्था)—उठना (प्रा ४।१७)।

उड्ड—१ वन्दन करना (आवनि ११०९)। २ उड्डाह करना, उपहास करना (निचू ३ पृ २९)।

उड्डुरुस्स—प्रद्वेष करना—'दाउ व उड्डुरुस्से' (बृभा ६२२)।

उड्डुयाल—मथना (दहाटी प ६०)।

उण्णाल (उद्+नमय्)—ऊंचा करना।

उत्तुण—गर्व करना (व्यभा ५ टी प १९)।

उत्थंघ (उद्+नमय्)—उठाना (प्रा ४।३६)।

उत्थंघ (रुध्)—रोकना (प्रा ४।१३३)।

उत्थंघ (उत्+क्षिप्)—ऊचा फेंकना (प्रा ४।१४४)।

उत्थग्घ (उत्+क्षिप्)—फेंकना।

उत्थल (उत्+चल्)—चलना।

उत्थल्ल (उत्+शल्)—उछलना, कूदना (प्रा ४।१७४)।

उत्थार (आ+क्रम्)—आक्रमण करना (प्रा ४।१६०)।

उद्दा—निर्माण करना।

उद्दाय (शुभ्)—शोभित होना।

उद्दाल (आ+छिद्)—हाथ से छीन लेना (उशाटी प ३०१)।

उद्धुम (पूरय्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

उद्धुमा (उद्+ध्मा)—१ प्रदीप्त करना। २ आवाज करना (प्रा ४।८)।

उप्पण (उत्+पू)—धान्य को सूप आदि से साफ करना (आचूला १।८२)।

उप्पाल (कथ्)—कहना (प्रा ४।२)।

उप्पुस—पोछना (से १।३३)।

उप्पेल (उद्+नमय्)—ऊंचा करना (प्रा ४।३६)।

उप्फाल (उत्+पाटय्)—१ उखाडना। २ उठाना (प्रा २।१७४)।

उप्फाल (कथ्)—कहना।

उप्फिण—उफनना।

उप्फुस—मिटा देना।

उप्फुस (उत्+स्पृश्)—खीचना।

उप्फोस—त्रस्त करना (निचू २ पृ २०८)।

उबुस (मृज्)—मांजना, परिमार्जन करना।

उब्भाल—सूप से धान्य साफ करना।

उब्भाव (रम्)—क्रीड़ा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।

उब्भुत्त (उत्+क्षिप्)—ऊंचा फेंकना (प्रा ४।१४४)।

उमच्छ (वञ्च्)—ठगना (प्रा ४।९३)।

उमच्छ (अभ्या+गम्)—सामने आना।

उम्मंथ—जलाना।

उम्मत्थ (अभि+आ+गम्)—सामने आना (प्रा ४।१६५)।

उयध—देखें (बृभा ४१५६)।

उयह—देखे—'उयह—पश्यत मदीयानि वस्त्राणि इति' (बृभा ४१५६ टी)।

उलंड—उल्लंघन करना, लांघना (दजिचू पृ ९१)।

उलूव—बुझाना।

उल्ल—१ उपसर्पण करना। २ चीरना। ३ उलाहना देना।

उल्लाल (उद्+नमय्)—१ ऊंचा करना। २ ऊपर फेंकना (प्रा ४।३६)।

उल्लिंच (उद्+रिच्)—निकालना, उलीचना—'उल्लिचइ ओयणाइ' (पिनि ३९९)।

उल्लुंट—खड-खंड करना।

उल्लुंड (वि+रेचय्)—झरना (प्रा ४।२६)।

उल्लुक्क (तुड्)—तोड़ना (प्रा ४।११६)।

उल्लुड्ड (वि+रेचय्)—विरेचन करना ।

उल्लुह (निस्+सृ)—निकलना ।

उल्लुहुंड—१ उन्नत होना । २ उन्नत करना ।

उल्लूढ (आ+रुह्)—१ चढ़ना । २ अंकुरित होना ।

उल्लूर (तुड्)—१ तोडना । २ नाश करना (प्रा ४।११६) ।

उल्हव (वि+ध्मापय्)—गीला करना, बुझाना (प्रा ४।४१६) ।

उल्हा (वि+ध्मा)—१ बुझना । २ तमतमाना ।

उल्हाव (निर्वापय्)—बुझाना ।

उवग्घ—अवगाहन करना, परीक्षा करना (निचू ३ पृ ३७३) ।

उववुत्थ—उपाय करना (कु पृ १५०) ।

उवसंखड (उपसं+कृ)—राधना, पकाना (आचूला १।४४) ।

उवहट्ट (समा+रभ्)—आरम्भ करना ।

उवहत्थ (समा+रच्)—१ रचना, बनाना । २ उत्तेजित करना (प्रा ४।९५) ।

उवेल्ल (प्र+सृ)—पसरना (प्रा ४।७७) ।

उव्वक्क—उबाक आना, वमन करना ।

उव्वर—उबरना, शेष रहना ।

उव्वाल (कथ्)—कहना ।

उव्वाल (छादय्)—आच्छादित करना ।

उव्विल्ल (प्र+सृ)—फैलना ।

उव्वेल (प्र+सृ)—फैलना ।

उव्वेल्ल—उद्घाटित करना, परतें उतारना–'कयलीखंभो व जहा, उव्वेल्लेउं सुदुक्करं होति' (बृभा ४१२८) ।

उव्वेल्ल (उद्+नमय्)—ऊँचा करना ।

उस्सर—१ बोना (बृभा ४०३५) । २ चढना-उतरना (बृभा ४२२२) ।

उस्सिक्क (मुच्)—छोडना (प्रा ४।९१) ।

उस्सिक्क (उत्+क्षिप्)—ऊंचा फेकना (प्रा ४।१४४) ।

ऊ

ऊढ—आच्छादित करना ।

ऊमिण—पोछना ।

ओसीस (अप+वृत्)—१ पीछे हटना। २ घूमना (दे १।१५२ वृ)।

ओसुंख—उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना।

ओसुंभ (अव+पातय्)—१ गिराना। २ नष्ट करना (से ४।५४)।

ओसुक्क (तिज्)—तीक्ष्ण करना (प्रा ४।१०४)।

ओसुब्भ (अव+पातय्)—नष्ट करना।

ओह (अव+तृ)—नीचे उतरना (प्रा ४।८५)।

ओहच्छ (अव+आस्)—बैठना।

ओहट्ट—१ पीछे हटना। २ ह्रास पाना, कम होना। ३ हटाना। ४ तिरस्कृत होना।

ओहर (अव+तृ)—अवतरित होना।

ओहाड—बंद करना (निचू ३ पृ ४८४)।

ओहाम (तुलय्)—तुलना करना (प्रा ४।२५)।

ओहाव (आ+क्रम्)—आक्रमण करना (प्रा ४।१६०)।

ओहिर (नि+द्रा)—नींद लेना।

ओहीर (सद्)—खिन्न होना (पा ५०७)।

ओहीर (नि+द्रा)—निद्रा लेना (वृभा १२८)।

क

कंठाल—गले मे बांधना (कु पृ १३५)।

कज्जल—पानी से भर जाना—'कज्जलेतित्ति पाणिते भरिज्जति' (आचू पृ ३५७)।

कज्जलाव (ब्रुड्)—डूबना—'उवरुवरि वा णावा कज्जलावेति' (आचूला ३।२२)।

कट्ट (कृत्)—काटना।

कडयड—कटकट आवाज करना।

कड्ढ (कृष्)—१ बाहर निकालना (उशाटी प १९३)। २ पढना, उच्चारण करना (पंवटी पृ ७९)। ३ खेती करना। ४ रेखा करना (प्रा ४।१८७)।

कण्णाहिड—कान लगाकर सुनना—'पिण्डेन सूत्रकरण मा भूत् कश्चित् पदं वाक्यं वा कण्णाहिडिस्सति' (आटी प ९२)।

कमवस (स्वप्)—शयन करना (प्रा ४।१४६)।

कम्म (क्षु)—हजामत करना (प्रा ४।७२)।

कम्म (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०)।

कम्मव (उप+भुज्)—उपभोग करना (प्रा ४।१११)।

करंज (भञ्ज्)—भांगना (प्रा ४।१०६)।

करयर—'कर' 'कर' की आवाज करना, चहचहाना—'करयरेंति सउणया' (कु पृ १९८)।

कसमस—कसमसाना।

काण—काना करना, छेद करना—'कीस मे कोलालाणि काणेसि।' (आवचू १ पृ ६१४)।

कालक्खर—१ निर्भर्त्सना करना। २ निर्वासित करना।

किलकिल—किलकिल करना।

किलिंकिच (रम्) क्रीडा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।

किलिकिल—किलकिल आवाज करना।

कुंट—पैर मे चुभे कांटे आदि को खोदना—'अण्णत्तो च्चिय कुटसि, अण्णत्तो कओ खतं जातं' (बृभा ६१६७)।

कुट्ट—पीटना (निचू २ पृ९)।

कुण (कृ)—करना (प्रा ४।६५)।

कुण—नकल करना (निचू ३ पृ ३९)।

कुरकुर—बडबडाना—'भातुजायाओ य कुरकुरायति' (आवचू १ पृ ५२६)।

कुरुड—काटना।

कुवार—पुकार करना।

केलाय (समा+रच्)—रचना, बनाना (प्रा ४।९५)।

केवलाअ (सम्+आ+रच्)—रचना करना।

केवलाअ (समा+रभ्)—आरम्भ करना।

कोआस (वि+कस्)—विकसित होना (प्रा ४।१९५)।

कोक्क (व्या+हृ)—पुकारना, बुलाना (प्रा ४।७६)।

कोट्ट—कूटना, पीटना (आवहाटी १ पृ २६४)।

कोट्टुम (रम्)—क्रीडा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।

कोड्डुम (रम्) खेलना, क्रीडा करना।

कोर—पात्र के किनारा लगाना, बांधना (निचू ४ पृ २१७)।

ख

खउर (क्षुभ्) क्षुब्ध होना (प्रा ४।१५४)।

खंकार—खेंखारना।

खंच (कृष्)—१ खींचना। २ वश मे करना।

खंप (सिच्)—छिड़कना।

खडखड—खटखटाना—'पाएहिं खडखडेइ' (उशाटी प १३८)।

खडखडाव—बजाना—'सव्वाउज्जाणिय खडखडावेह'
(आवहाटी १ पृ १३६)

खडुक्क (आविस्+भू) प्रकट होना।

खड्ड (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६)।

खरंट—भर्त्सना करना (आवहाटी १ पृ २६७)।

खरड (लिप्)—लीपना।

खरवड—कुरेदना, इधर-उधर करना—'तं गंतूण पाएहिं खरवडेइ'
(उसुटी प ५४)।

खरियाल—कदर्थना करना।

खलहल—'खलखल' शब्द करना।

खलाहि—दूर हटो—'गच्छक्खलाहि किमिहं ठिओसि ?' (उ १२।७);
'देशीपदमपसरेत्यस्यार्थे' (उशाटी प ३५६)।

खस—खिसकना, गिरना।

खिज्ज—१ खेद करना। उद्विग्न होना।

खिर(क्षर्)—गिरना, टपकना (प्रा ४।१७३)।

खिल्ल (खेल्)—क्रीडा करना।

खिल्ल (कीलय्)—रोकना।

खिस—खिसकना, सरकना।

खील—कीलना।

खुंद (क्षुद्)—१ जाना। २ पीसना।

खुंद (क्षुध्)—भूख लगना।

खुज्ज (परि+अस्)—१ फेंकना। २ निरसन करना।

खुट्ट (तुड्)—१ तोडना। २ खूटना, क्षीण होना। ३ टूटना
(प्रा ४।११६)।

खुड (तुड्)—तोड़ना (प्रा ४।११६)।

खुडुक्क (खुट्शब्दं कृ)—खुट् शब्द करना।

खुडुक्क—१ शल्य की तरह चुभना, खटकना (आटी प २२)।
२ गुस्से से मौन रहना। ३ नीचे उतरना। ४ स्खलित होना।
५ प्रारंभ करना।

खुडुक्क (अप+क्रमय्)—हटाना।

खुड्ड (तुड्)—तोड़ना–'से तिलसंगलियं खुड्डइ' (भ १५।७४)।

खुड्ड (मृद्)—मसलना।

खुड्डुक्क—१ नीचे उतरना। २ स्खलित होना। ३ शल्य की तरह चुभना।
४ गुस्से से मौन होना।

खुप्प (प्लुष्)—जलाना।

खुप्प (मस्ज्)—मज्जन करना, डूबना (ओनि २४)।

खुप्प—फेकना।

खुम्म (क्षुध्)—भूख लगना।

खुव्व—डरना, घबराना (अवि पृ २४५)।

खेड—१ हांकना, ले जाना–'सगडाइं उप्पहेण खेडंति' (उसुटी प ५१)।
२ खेती करना। ३ शिकार करना[1]।

खेड्ड (रम्)—क्रीडा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।

खेव—नौका को खेना (नि १८।१३)।

खोक्ख—वानर का बोलना।

खोट्ट—खटखटाना, ठकठकाना।

खोड—१ छोड़ देना, निषेध करना–'सेसाओ खोडेयव्वाओ'
(भ १२।१७५)। २ स्खलित करना (आवहाटी १ पृ २१५)।
३ फोडना, खंडित करना (अवि पृ१४८)।

खोहिव—विचलित करना (कु पृ १०१)।

ग

गउड (गम्)—जाना–'........थलपहेण गउडइ' (निचू १ पृ ७२)।

गंज—१ पराजित करना। २ तिरस्कार करना। ३ मर्दन करना। ४ उल्लघन
करना।

गंठ (ग्रन्थ्)—गूथना (प्रा ४।१२०)।

गडयड—गर्जन करना।

चंप (आ+रुह्)—आरोहण करना, चढ़ना।
चंप (चर्च्)—चर्चा करना।
चक्कम (भ्रम्)—घूमना (दे ३।६ वृ)।
चक्कम्म (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।
चक्ख (आ+स्वादय्)—चखना (उसुटी प ११८)।
चक्ख (आ+चक्ष्)—कहना।
चच्चार (उप+आ+लभ्)—उपालंभ देना।
चच्चुप्प (अर्पय्)—अर्पण करना (प्रा ४।३९)।
चच्छ (तक्ष्)—काटना (प्रा ४।१९४)।
चज्ज (दृश्)—देखना (दे ३।४ वृ)।
चट्ट—चाटना—'न य अलोणिय सिलं को वि चट्टेइ' (उसुटी प ६१)।
चड (आ+रुह्)—आरोहण करना (निचू ३ पृ ५०१)।
चडचड—चड-चड की आवाज करना।
चडपड—छटपटाना, क्लेश पाना।
चडप्फड—छटपटाना, क्लेश पाना (उसुटी प ३०५)।
चडाव—चढ़ाना।
चड्ड—खिन्न होना (दअचू पृ ५५)।
चड्ड (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०)।
चड्ड (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६)।
चड्ड (पिष्) पीसना (प्रा ४।१८५)।
चढ (आ+रुह्)—चढना (व्यभा ३ टी प २७)।
चप्प (आ+क्रम्)—आक्रमण करना, दवाना।
चप्प (चर्च्)—१ कहना। २ अध्ययन करना। ३ भर्त्सना करना। ४ चन्दन आदि से विलेपन करना।
चप्पड—१ आक्रान्त होना (सूचू १ पृ १९१)। २ तेल की मालिश करना—'तैलाभ्यङ्गने देशी।'
चबचब—चबाना, चब-चब शब्द करना (ओटी प १८७)।
चमड (भुज्)—भोजन करना।
चमढ (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०)।
चमढ—१ मर्दन करना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थना करना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ खिन्न करना।

चय (शक्)—समर्थ होना (सू १।३।१८)।

चय (त्यज्)—छोडना (आ ६।२६)।

चव (कथय्)—कहना (प्रा ४।२)।

चहुट्ट—चिपकना, लगना।

चाह (वाञ्छ्)—१ चाहना। २ अपेक्षा करना। ३ याचना करना।

चिंच (मण्डय्)—विभूषित करना (प्रा ४।११५)।

चिंचअ (मण्डय्)—विभूषित करना (प्रा ४।११५)।

चिंचिल्ल (मण्डय्)—मंडित करना (प्रा ४।११५)।

चिच्च (त्यज्)—छोडना (उ १४।५०)।

चिट्ठ (स्था)—ठहरना (आ २।६६)।

चिड्डु—गीला होना।

चिप्प—१ कूटना (बृभा ३६७५)। २ दबाना।

चिम्मक—१ चमत्कृत करना। २ घूमना।

चिरमाल (प्रति+पालय्)—परिपालन करना।

चिराव—विलंब करना।

चिलिचिल—पक्षी का आवाज करना (कु पृ ८२)।

चिलिस—घृणा करना।

चिल्लुंप (कांक्ष्)—इच्छा करना।

चीर—चीरना।

चुक्क (भ्रंश्)—१ स्खलित होना (उशाटी प १४६)। २ वञ्चित होना। ३ नष्ट करना (प्रा ४।१७७)।

चुण (चि)—चुगना, पक्षियों का खाना (प्रा ४।२३८)।

चुमचुम—तोते का शब्द करना।

चुलचुल—१ स्पंदित होना, फडकना (कु पृ २२१)। २ उत्सुक होना।

चुलुचुल (स्पन्द्)—फरकना, स्पन्दित होना (प्रा ४।१२७)।

चुलुवुल—स्फुरित होना—'कुऊहल चुलुवुलेइ' (कु पृ ११६)।

चुल्लुच्छल—छलकना, उछलना (सूचू १ पृ १६४) देखें—छुल्लुच्छुल।

चुहुट्ट—चिपकना, लगना।

चेव—जागना।

चोंपय—चुगली करना (दश्रुचू प ४०)।

चोप्पड (म्रक्ष्)—स्निग्ध करना (प्रा ४।१९१)।

छ

छंट (सिच्)—पानी के छींटे देना, छिडकाव करना (आवहाटी २ पृ २०७)।

छंट—छांटना, छड़ना (प्रसाटी प १५२)।

छंटय—छाटना, चावल आदि को छिलके रहित करना (प्रसाटी प १५२)।

छंड (मुच्)—छोड़ना।

छज्ज (राज्)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

छज्ज—छप्पर डालना, घर छवाना—'गामेसु घराइं छज्जंति' (कु पृ १०१)।

छड (आ+रुह्)—आरूढ होना, चढ़ना।

छड्ड (मुच्)—१ छोड़ना (प्रा ४।९१)। २ गिराना। ३ वमन करना।

छमछम—छम-छम की आवाज करना।

छिक्क—छीक करना।

छिग्ग (छुप्)—छूना।

छिप्प (स्पृश्)—छूना, स्पर्श करना (प्रा ४।२५६)।

छिव (स्पृश्)—स्पर्श करना (प्र ७।५)।

छिव—धारण करना (प्रटी प ११५)।

छिह (स्पृश्)—स्पर्श करना (प्रा ४।१८२)।

छुंद (आ+क्रम्)—आक्रमण करना (प्रा ४।१६०)।

छुक्क (भ्रंश्)—नष्ट होना।

छुछुकार—छु-छु की आवाज करना (आ ६।३।४)।

छुट्ट—छूटना (निचू ३ पृ १४४)।

छुर—१ ढकना। २ लेप करना। ३ छेदन करना। ४ व्याप्त करना।

छुल्ल (भ्रंश्)—नष्ट होना।

छुल्लुच्छुल—छलकना, उछलना—'छुल्लुच्छुलेति जं होति ऊणयं रित्तयं कणकणेइ। भरियाइं ण खुब्भंती सुपुरिसविण्णाणभंडाइं॥' (सूचू १ पृ १६४)।

छुह (क्षिप्)—डालना, रखना—'प्रस्तरान शून्यगृहस्यान्तः छुहइत्ति प्रवेशयति' (व्यभा ३ टी प १०२)।

छेर—१ लीद करना, शौच करना (उशाटी प १६९)। २ चिल्लाना।

छोड—१ छीलना—'उच्छुखंडियाओ छोडेतु चाउज्जातएणं वासेतु' (दअचू पृ ५५)। २ आहत करना, विदारित करना (निचू २ पृ २२४)। ३ छोडना (उसुटी प ६२)। ४ गांठ खोलना।

छोल्ल (तक्ष्)—छीलना—'सा (सालिअक्खए) छोल्लेइ, छोल्लेत्ता अणुगिलइ' (ज्ञा १।७।८)।

ज

जअड (त्वर्)—शीघ्रता करना (प्रा ४।१७०)।

जंप (कथय्)—कथन करना (सू १।१।१०)।

जगजग (चकास्)—चमकना।

जगड—१ उत्तेजित करना। २ कदर्थना करना। ३ झगडना (चं १४१)। ४ पीटना। ५ उठाना, जागृत करना।

जड—बाधना, संलग्न करना—'भाणं सिक्कएण जडिज्जइ' (आवहाटी २ पृ ८७)।

जड (त्वर्)—शीघ्रता करना।

जप्प (कथय्)—कहना।

जम—जमना—'फणिगाए वाला जमिज्जंति' (सूचू १ पृ ११७)।

जम्म (जन्)—उत्पन्न होना (प्रा ४।१३६)।

जम्म—खाना, भक्षण करना।

जर—छुपाना—'हाउ वा जरेउं वा' (बृभा ४७४८)।

जव (यापय्)—१ गमन करवाना, भेजना (प्रा ४।४०)। २ काल-यापन करना (पिनि ६१६)। ३ व्यवस्था करना।

जा (जन्)—उत्पन्न होना (प्रा ४।१३६)।

जाण (ज्ञा)—जानना (आ १।३)।

जाम (मृज्)—मार्जन करना।

जिंघ (घ्रा)—सूघना।

जिम (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०)।

जिम्म—भोजन करना—'भुज् धात्वर्थे देशी।'

जीरव—पचाना।

जीह (लस्ज्)—लज्जा करना (प्रा ४।१०३)।

जुंज (युज्)—जोडना (प्रा ४।१०९)।

जुज्ज (युज्)—जोड़ना (प्रा ४।१०९)।

जुप्प (युज्)—जोड़ना (प्रा ४।१०९)।

जुप्प—जोतना।

जूर (क्रुध्)—गुस्सा करना (प्रा ४।१३५)।

जूर (खिद्)—खेद करना, अफसोस करना (प्रा ४।१३२)।

जूर (गर्ह्)—निंदा करना (सू २।१।४२)।

जूर—१ झूरना, सूखना। २ वध करना।

जूरव (वञ्च्)—ठगना (प्रा ४।९३)।

जूह—लाना, आनयन—'देशीशब्दत्वाद् आनयन्ति' (बृटी पृ १९३०)।

जेंव—भोजन करना।

जेम (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०)।

जो (दृश्)—देखना।

जोअ—१ निरूपण करना—'जोएइत्ति देशीवचनमेतत् निरूपयति' (व्यभा १ टी प ३०)।

जोअ (द्युत्)—प्रकाशित होना (सू १।६।१३)।

जोक्ख—तोलना (मराठी—जोखणे)।

जोड—जोडना, युक्त करना।

जोय (दृश्)—देखना।

जोव (दृश्)—देखना (उसुटी प ८७)।

जोहार—जुहारना, प्रणाम करना (जुहार—राजस्थानी)।

झ

झंख—१ क्रुद्ध होना (अनुद्वाहाटी पृ २९)। २ बार बार कहना (पिनि २८६)। ३ स्वीकार करना। ४ आच्छादन करना।

झंख (सं+तप्)—संताप करना (प्रा ४।१४०)।

झंख (उपा+लभ्)—उलाहना देना (प्रा ४।१५६)।

झंख (वि+लप्)—विलाप करना (प्रा ४।१४८)।

झंख (निर्+श्वस्)—निःश्वास लेना (प्रा ४।२०१)।

झंट (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

झंट (गुञ्ज्)—गुञ्जारव करना।

झंप (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

झंप (आ+क्रामय्)—आक्रमण करना।
झंप (आ+च्छादय्)—झापना, ढकना।
झंप—गोता लगाना।
झड (शद्)—१ झडना, टपकना, फल आदि का गिरना। २ हीन होना (प्रा ४।१३०)।
झड—भगाना—'झड विद्रावणे देशी।'
झडप्प—आक्रमण करना।
झडप्प (आ+छिद्)—झपटना, छीनना।
झण (जुगुप्स्)—घृणा करना।
झणज्झण—झन-झन आवाज करना।
झप्प (जुगुप्स्)—घृणा करना।
झर (स्मृ)—याद करना, परावर्तन करना (व्यभा ४।४ टी प १०३)।
झर—ध्यान करना (आवचू १ पृ ४१०)।
झर (क्षर्)—गिरना, झरना (प्रा ४।१७३)।
झलक्क (दह्)—जलना।
झलज्झल (जाज्वल्)—झलकना, चमकना।
झलझल (जाज्वल्)—झलकना, चमकना।
झलहल (जाज्वल्)—झलकना, चमकना।
झलहल—विचलित होना, क्षुब्ध होना।
झलुंक—जलना।
झलुंस—जलना।
झल्लोज्झल्ल—परिपूर्ण होना, भरपूर होना।
झा (ध्यै)—चिंतन करना, ध्यान करना (आ ६।१।५)।
झाम (दह्)—जलाना।
झिंख—झीखना, गुस्सा करना (विभाकोटी पृ २६३)।
झिंझ—झनझनाना।
झिज्झ (क्षि)—१ क्षीण होना (उ २०।४६)। २ झेंपना।
झिल—झेलना, पकडना।
झिल्ल (स्ना)—झीलना, स्नान करना।
झुंब—लवा होना।

झुण (जुगुप्स्)—घृणा करना (प्रा ४।४) ।

झुलुक्क—चमकना ।

झुल्ल (अन्दोल्)—झूलना, डोलना ।

झूण (जुगुप्स्)—घृणा करना ।

झूर (जुगुप्स्)—निन्दा करना ।

झूर (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४) ।

झूर (क्षि)—झुरना, क्षीण होना ।

झूर—खेद करना—'खेदे देशी धातु ।'

झूरव (खिद्)—झुरना, क्षीण होना ।

झोड (शाटय्)—पेड़ आदि से पत्र वगैरह को गिराना ।

झोस—दूर करना (जीत ७८) ।

झोस (गवेषय्)—खोज करना, अन्वेषण करना—'झोसेह त्ति देशीवचनत्वाद् गवेपयत' (वृभा ३३३५ टी) ।

ट

टंक—फैलना ।

टक्कर—ठोकर लगाना ।

टरटर—टरटराना, मेढक का शब्द करना ।

टल—१ हिलना । २ टलना ।

टलटल—टल-टल आवाज करना ।

टलवल—१ तडपना । २ घबराना ।

टहर—ऊंचा करना ।

टाल—टालना, हटाना ।

टिटियाव—'टि-टि' की आवाज करना (उसुटी प २८९) ।

टिक्क—टीका लगाना, तिलक लगाना ।

टिट्टियाव—१ टिट्-टिट् की आवाज करना—'मयूरीअंडयं……कण्णमूलंसि टिट्टियावेइ' (ज्ञा १।३।२१) । २ वोलने की प्रेरणा करना ।

टिरिटिल्ल (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१) ।

टिल्लिक्क—विभूषित करना ।

टिविडिक्क (मण्डय्)—मंडित करना (प्रा ४।११५) ।

टुंटुण्ण—टुन-टुन आवाज करना ।

टुट्ट (त्रुट्)—टूटना (से ६।६३) ।

ठ

ठग—ठगना, वंचित करना।

ठर—आदर करना।

ठल—खाली करना।

ठा (स्था)—ठहरना (प्रा ४।१६)।

ठाअ (स्था)—ठहरना (प्रा ४।१६ टी)।

ठिव्व (वि+घुट्)—मोड़ना।

ठुक्क (हा)—त्याग करना।

ड

डंडल्ल (भ्रम्)—घूमना।

डंडोल (गवेषय्) गवेषणा करना।

डंभ—दागना (आवहाटी २ पृ ८८)।

डक्क—लूटना, डाका डालना (निचू ३ पृ ८७)।

डक्क (छादय्)—आच्छादित करना।

डक्कुर—पीडित होना।

डगमग—हिलना, डगमगाना।

डमडम—डमडम आवाज करना।

डर (त्रस्)—भय खाना (प्रा ४।१९८)।

डल्ल (पा)—पान करना (प्रा ४।१०)।

डव (आ+रभ्)—आरंभ करना।

डिफ—जल मे गिरना।

डिंभ (स्रंस्)—खिसकना (प्रा ४।१९७)।

डिक्क (वृषकर्तृकं गर्ज्)—वृषभ का गर्जना।

डिप्प (वि+गल्)—१ सड जाना। २ गिरना।

डिप्प (दीप्) चमकना।

डिव—लांघना (व्यभा १ टी प ३५)।

डुंडुल्ल (भ्रम्)—घूमना।

डुंडुल्ल (गवेषय्)—गवेषणा करना।

डुम (भ्रम्)—घूमना।

डुल—डोलना, कापना।

डुल्ल—कंपित होना।

डुस (भ्रम्)—घूमना।

डेव—१ उल्लंघन करना (व्यभा १० टी प ८२)। २ संभोग करना–'डेवेंति-परिभुंजंतीत्यर्थः' (निचू ४ पृ ३)।

डोल्ल—कंपित होना, डोलना।

डोह—अवगाहन करना।

ढ

ढंक—ढांकना–'ढंक-आच्छादने देशी।'

ढंढल्ल (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

ढंढुल्ल—घूमना।

ढंढोल (गवेषय्)—खोजना (प्रा ४।१८९)।

ढंढोल्ल (गवेषय्) अन्वेषण करना।

ढंस (वि+वृत्)—धसना, गिरना (प्रा ४।११८)।

ढक्क (छादय्)—आच्छादित करना (वृभा ३३७७)।

ढक्क—वृषभ का आवाज करना।

ढग्गढग्ग—ढग-ढग शब्द करना।

ढण—शब्द करना।

ढल—१ टपकना, नीचे पड़ना। २ झुकना। ३ क्षीण होना–'ढल हाने देशी।'

ढाल—१ नीचे गिराना–'ढालइ सिहरीण सिहराइं' (उसुटी प २४६)। २ झुकाना। ३ चंवर डुलाना। ४ फेंकना–'ढाल क्षेपणे देशी।'

ढिढ—जल मे गिरना।

ढिक्क (गर्ज्) वृषभ का शब्द करना (प्रा ४।९९)।

ढिल्ल—शिथिल होना।

ढुंढुल्ल (गवेषय्)—खोजना (प्रा ४।१८९)।

ढुंढुल्ल (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

ढुक्क (प्र+विश्)—१ जाना, प्रवेश करना (आवहाटी २ पृ १२८)। २ प्रवृत्त होना (वृटी पृ ४६६)। ३ छूना–'मा मे ढुक्कह' (वृटी पृ १५४५)।

न (भ्रम्) घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

ढुल्ल (भ्रम्)—घूमना।

प (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

क (गर्ज्)—वृषभ का आवाज करना।

क—धूपित करना, धूप देना।

ंघ—भ्रमण करना।

ोक्क—बंद करना (आवहाटी २ पृ ४८)।

ोल—नीचे गिराना (आवचू १ पृ १२३)। (ढोलना–राज)।

ण

ाज्ज (ज्ञा)—जानना (प्रा ४।२५२)।

ाड (गुप्)—१ व्याकुल करना, बाधित करना (आवहाटी १ पृ १४६)।
२ व्याकुल होना (प्रा ४।१५०)।

ात्थ—नाक मे नथ डालना (निभा ४३३०)।

ाप्प (ज्ञा)—जानना (निचू २ पृ २४)।

ावज्ज--नमस्कार करना।

ावर (कथय्)—कहना।

ाव्व (ज्ञा)—जानना (प्रा ४।२५२)।

णि (गम्)—जाना।

णिअ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

णिअंस (नि+वस्)—पहनना।

णिअक्क (दृश्)—देखना।

णिअच्छ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

णिअच्छ (नि+गम्)—१ अनुभव करना, भोगना (सूचू १ पृ २५)।
२ अवश्य प्राप्त करना (सूटी १ प २०)।

णिअड्ढ (नि+कृष्)—खीचना।

णिआर (काणेक्षितं कृ)—कानी नजर से देखना (प्रा ४।६६)।

णिउड्ड (मस्ज्)—मज्जन करना, डूबना (प्रा ४।१०१)।

णिक्कल (निर्+कस्)—बाहर निकलना—'वसहीपालो बाहिं णिक्कलिस्सति' (निचू २ पृ १७४)।

णिक्काल (निर्+कासय्)—बाहर निकालना।

णिलेज्ज—करना (सूच १ पृ १२०)।
णिल्लस (उत्+लस्)—खुश होना (प्रा ४।२०२)।
णिल्लुंछ (मुच्)—छोडना (प्रा ४।९१)।
णिल्लूर (छिद्)—छेदना, खण्डित करना (प्रा ४।१२४)।
णिवज्ज (नि+सद्)—१ सोना—'एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जई' (उ २७।५)। २ बैठना।
णिवह (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
णिवह (नश्) पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।
णिवह (पिष्)—पीसना (प्रा ४।१८५)।
णिव्वड (भू)—१ पृथक् होना। २ स्पष्ट होना (प्रा ४।६२)।
णिव्वड (मुच्)—दुःखमुक्त होना।
णिव्वड (निर्+पद्)—निष्पन्न होना, बनना।
णिव्वण्ण—देखना (से ३।४४)।
णिव्वम—परिभोग करना।
णिव्वर (कथय्)—दु.ख प्रकट करना (प्रा ४।३)।
णिव्वर (छिद्)—छेदना, खण्डित करना (प्रा ४।१२४)।
णिव्वल—पृथक् होना (से ६।८०)।
णिव्वल (मुच्)—दुःख को छोडना (प्रा ४।९२)।
णिव्वल (निर्+पद्)—निष्पन्न होना (प्रा ४।१२८)।
णिव्वल (क्षर्)—क्षरित होना (प्रा ४।१७३ टी)।
णिव्वव (निर्+वापय्)—बुझाना।
णिव्वह (उद्+वह्)—१ धारण करना। २ ऊपर उठाना।
णिव्वा (वि+श्रम्)—विश्राम करना (प्रा ४।१५९)।
णिव्वुड्ड (नि+मस्ज्)—निमज्जन करना।
णिव्वुब्भ (निर्+वह्)—निर्वाह करना।
णिव्वेढ—त्याग करना।
णिव्वोल—डुबोना—'अंतोजलंसि निव्वोलेमि' (ज्ञा १।८।७४)।
णिव्वोल (ओष्ठमालिन्यं कृ)—क्रोध से होठ मलिन करना (प्रा ४।९९)।
णिसम्म (नि+सद्)—१ बैठना। २ रखना, स्थापित करना (से ६।१७)।
णिसर (रम्)—क्रीडा करना।

णिसव्व—बैठना (व्यभा ८ टी प ५)।
णिसिक्क (नि+सिच्)—प्रक्षेप करना।
णिसुड (नम्)—झुकना।
णिसुढ (नम्)—झुकना (प्रा ४।१५८)।
णिसुढ (नि+शुम्भ्)—मारना।
णिसुढ—गिरना (निचू ३ पृ १५६)।
णिसुम्म—गिराना—'तुग तट णिसुम्मइ ण अ णइवप्पं समत्थलिं व वणगओ' (से १५।५७)।
णिसूड (नि+शुम्भ्) मारना।
णिसूढ (नि+सह्)—सहन करना।
णिस्सम्म (निर्+श्रम्)—बैठना (से ९।३८)।
णिह— छलना करना—'तं आइइत्तु ण णिहे' (आ ४।५)।
णिहम्म (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
णिहर (आ+क्रन्द्)—चिल्लाना, आक्रन्दन करना।
णिहर (निर्+सृ)—बाहर निकलना।
णिहव (कामय्)—सभोग की इच्छा करना।
णिहा (दृश्)—देखना।
णिहाल—देखना।
णिहुव (कामय्)—संभोग की अभिलाषा करना (प्रा ४।४४)।
णिहोड (नि+वारय्) —निवारण करना (बृभा ३९०)।
णिहोड (पातय्)—१ गिराना। २ नाश करना (प्रा ४।२२)।
णी (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
णीण (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
णीरंज (भञ्ज्)—तोडना (प्रा ४।१०६)।
णीरव (आ+क्षिप्)—दोषारोपण करना (प्रा ४।१४५)।
णीरव (बुभुक्ष्)—खाने की इच्छा करना (प्रा ४।५)।
णील (निर्+सृ)—बाहर निकलना (प्रा ४।७९)।
णीलुंछ (कृ)—१ गिरना। २ कूदना (प्रा ४।७१)।
णीलुक्क (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
णीव—१ शीतल होना। २ बुझाना।

णीसर (रम्)—क्रीडा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।

णीहम्म (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

णीहर (निर्+सृ)—बाहर निकलना (प्रा ४।७९)।

णीहर (निर्+सारय्)—बाहर निकालना—'तं सल्लं णो सयं णीहरति' (सू २।२।१३)।

णीहर (आ+क्रन्द्)—चिल्लाना (प्रा ४।१३१)।

णुज्ज—बन्द करना, मुद्रित करना।

णुम (छादय्)—आच्छादित करना (प्रा ४।२१)।

णुम (नि+अस्)—स्थापना करना (प्रा ४।१९९)।

णुमज्ज (नि+सद्)—बैठना (प्रा ४।१२३)।

णुमज्ज (शी)—सोना, शयन करना।

णुल्ल (क्षिप्)—फेंकना।

णुवज्ज (नि+सद्)—बैठना—'उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ' (ज्ञा १।१६।५९)।

णुव्व (प्रकाशय्)—प्रकाशित करना (प्रा ४।४५)।

णूम (छादय्)—आच्छादित करना—'एगट्ठियं णूमेति, णूमेत्ता कण्हं वासुदेवं.........' (ज्ञा १।१६।२८२)।

णोल्ल (क्षिप्)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।

णोल्लस (क्षिप्)—कंपित करना, प्रेरित करना—'अंचेति कंपेति णोल्लसति' (सूचू १ पृ २४०)।

त

तक्क—ताकना [illegible] —'परलाभं नो आसाएइ नो तक्केइ' (उ २९।३[illegible])

ग्रह्)— —विश्राम १ —निमज्जन क

तड—चढना—'आरुह् [illegible] तु।'

तड (तन्)—विस्तार करना (प्रा ४।१३७)।

तडप्फड—व्याकुल होना, तड़फडना (निचू २ पृ २२३)।

तडफड—तड़फना।

तड्ड—लगाना—'तड्डेति लाएत्ति (लग्गइ) वुत्त भवति' (निचू २ पृ ५१)।

तड्ड (तन्)—विस्तार करना (प्रा ४।१३७)।

तड्डव (तन्)—विस्तार करना (प्रा ४।१३७)।

तमाड (भ्रमय्)—घुमाना (प्रा ४।३०)।

तर (शक्)—समर्थ होना (ओनि ३२४)।

तर—कुशल रहना (पिनि ४१७)।

तल—घी, तैल आदि मे तलना (विपाटी प ५८)।

तलअंट (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

तलप्प (तप्)—तपना, गरम होना।

तलहट्ट (सिच्)—सीचना।

तालिअंट (भ्रमय्)—घुमाना (प्रा ४।३०)।

तिउट्ट (त्रुट्)—१ टूटना (सू १।१।१)। २ मुक्त होना (सू १।१५।५)।

तिक्खाल (तीक्ष्णय्)—तीक्ष्ण करना, तीखा करना।

तिडितिड—१ बकवास करना, टनटनाहट करना। २ अग्नि जलने का शब्द, तड तड आवाज—'तेदुरुयदारुयं पिव अग्गिहितं, तिडितिडेति दिवस पि' (निभा ६१९९)।

तिड्डव (ताडय्)—ताडन करना।

तिण्ण (तिम्)—१ आर्द्र होना। २ आर्द्र करना।

तिप्प—१ देना। २ झरना, चूना। ३ रोना। ४ पीडित करना।

तिम्म—१ आर्द्र होना। २ आर्द्र करना।

तिम्मिर—आर्द्र होना, लथपथ होना।

तिय—दूर रखना।

तीर (शक्)—सकना—'घरे न तीरइ पढिउं' (उसुटी प २३)।

तुंग—घूमना।

तुट्ट (तुड्) १ टूटना, खंडित होना (प्रा ४।११६)। २ खूटना, घटना।

तुट्ठ—सहन करना—'चाएति साहति सक्केइ वासेइ तुट्ठाएति वा धाडेति वा एगट्ठा' (आचू पृ १०७)।

तुप्प—१ स्निग्ध होना। २ स्निग्ध करना।

तुवर (त्वर्)—शीघ्रता करना (प्रा ४।१७०)।

तूमण—स्थगित करना।

तेअव (प्र+दीप्)—१ प्रकाशित होना। २ जलाना (प्रा ४।१५२)।

तेड—बुलाना, न्योता देना (तेडना-राज)।

तोड (तुड्)—तोडना (प्रा ४।११६)।

तोप्प—चुपडना—'ण य तोप्पिज्जइ घयं व तेल्लं वा' (सूचू १ पृ १०९)।

थ

थंग (उद्+नामय्)—ऊचा करना।

थक्क (स्था)—रहना, स्थिर होना–'अणत्थमिए आदिच्चे थक्कति' (निचू ४ पृ ११३)।

थक्क (फक्क्) नीचे जाना (प्रा ४।८७)।

थक्क (श्रम्)—श्रान्त होना, थकना।

थक्कव (स्थापय्)—स्थापित करना।

थगथग—धडकना, कांपना।

थग्घ—थाह लेना, जल की गहराई को नापना।

थणिल्ल (चोरय्)—चुराना, चोरी करना।

थप्प—थप्पी करना, स्थापित करना।

थम—विस्मृत करना।

थरत्थर—थरथराना, कांपना।

थरथर—थरथराना, कापना।

थरहर—कम्पित होना—'कंपने देशी धातु।'

थाण—रक्षा करना, पहरा देना।

थिंप (तृप्)—तृप्त होना।

थिज्ज—सघन होना (आवहाटी १ पृ २२८)।

थिप्प (वि+गल्) गल जाना (प्रा ४।१७५)।

थिप्प (तृप्)—सतुष्ट होना (प्रा ४।१३८)।

थिम्म—१ आर्द्र करना। २ आर्द्र होना।

थिविथिव—थिव-थिव आवाज करना।

थुक्क—१ थूकना। २ तिरस्कार करना।

थुण (स्तु)—स्तुति करना (प्रा ४।२४१)।

थुव्व—१ स्तुति करना (दअचू पृ ४)। २ परिभ्रमण करना (भटी पृ १२३६)।

थेणिल्ल—१ छीनना। २ डरना।

थेप्प—१ तृप्त होना, सतुष्ट होना। २ विगलित होना।

द

दंस (दर्शय्)—दिखलाना–'काये अहे वि दंसंति' (सू १।४।३)।

दक्ख (दृश्)—देखना (भ ५।८०)।

दक्ख (दर्शय्)—दिखलाना।

दक्खव (दर्शय्)—दिखलाना (प्रा ४।३२)।

दच्छ (दृश्)—देखना।

दड—दहाडना।

दरमल (मर्दय्)—१ विदारित करना। २ आहत करना।

दल (दा)—देना–'भद्दा देवदिन्नं........पंथगस्स हत्थे दलाइ' (ज्ञा १।२।३१)।

दलय (दा)—देना–'भूमिचवेडयं दलयइ' (भ ३।११२)।

दलय (दापय्)—दिलाना।

दलवट्ट (निर्+दल्)—दलन करना।

दलवट्ट (मर्दय्)—चूर्णित करना।

दलाव (दापय्)—दिलाना।

दवाव (दापय्)—दिलाना।

दाअ (दर्शय्)—दिखलाना।

दाक्खव (दर्शय्)—दिखलाना।

दाढ (निर्+सृ)—निकलना।

दाव (दृश्)—देखना।

दाव (दर्शय्)—दिखलाना (प्रा ४।३२)।

दिसड (मुच्)—छोडना।

दीस (दृश्)—देखना।

दुउंछ (जुगुप्स्)—घृणा करना।

दुउच्छ (जुगुप्स्)—घृणा करना।

दुगुंछ (जुगुप्स्)—घृणा करना (प्रा ४।४)।

दुगुच्छ (जुगुप्स्)—घृणा करना (प्रा ४।४)।

दुम (धवलय्)—सफेद करना (प्रा ४।२४)।

दुरुदुल्ल (भ्रम्)—भ्रमण करना।

दुरुह—आरोहण करना–'दुरुह् आरोहणे देशी' (निरटी पृ २२)।

दुरूह (आ+रुह्)—आरोहण करना (भ ७।१६६)।

दुलुदुल—इधर-उधर घूमना—'मा मुयमाउयरढिभयं पिव इओ तओ दुलुदुलेमो' (निचू ३ पृ ३४)।

दुहाव (छिद्)—छेदना, खण्डित करना (प्रा ४।१२४)।

दूइज्ज (द्रु)—चलना, विहार करना (आ ५।८२)।

दूम (दावय्) पीड़ा पहुंचाना (प्रा ४।२३)।

दूम (धवलय्)—चूने से पोतना, सफेदी करना (प्रा ४।२४)।

देक्ख (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

देह (दृश्)—देखना—'मुञ्चेज्ज पयपासाओ, त तु मंदो ण देहई' (सू १।१।३५)।

ध

धंसाड (मुच्)—छोड़ना (प्रा ४।६१)।

धगधग—१ तीव्रता से जलना। २ धग्-धग् आवाज करना।

धगधग्ग—अतिशय जलना।

धवक्क—धडकना, भय से व्याकुल होना।

धाड – सहन करना—'चाएति साहति सक्केइ वासेइ तुट्टाएति वा धाडेति वा एगट्ठा' (आचू पृ १०६)।

धाड—एक स्थान से दूसरे स्थान मे जाना—'धाडेंति त्ति प्रेरयन्ति-स्थानात् स्थानान्तरं प्रापयन्तीत्यर्थः' (सूटी १ प १२४)।

धाड (निर्+सृ)—बाहर निकलना (वृटी पृ १३९७)।

धाड (निर्+सारय्)—बाहर निकालना (निचू २ पृ ५४)।

धाह—१ रोना। २ पुकारना। ३ पलायन करना।

धाहाव—हाहाकार मचाना।

धिप्प (दीप्)—दीप्त होना, चमकना।

धुक्क (क्षुध्)—भूख लगना।

धुक्काधुक्क (कम्प्)—कापना।

धुगधुग—धुग्-धुग् आवाज करना।

धुट्ठुअ (शब्दाय्)—शब्द करना।

धुद्धुअ (शब्दाय्)—आवाज करना।

धुप्प (दीप्)—चमकना।

धुव (धू)—कम्पित करना (प्रा ४।५९)।

धुव—धोना।

धुव्व—धोना।

धोअ (धाव्)—धोना, शुद्ध करना।

न

निअ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

निअच्छ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

निम्मव (निर्+मा)—निर्माण करना (प्रा ४।१९)।

निम्माण (निर्+मा)—निर्माण करना (प्रा ४।१९)।

निरंज (भञ्ज्)—तोड़ना।

निरप्प (स्था)—ठहरना (प्रा ४।१६)।

निरुवार (ग्रह्)—ग्रहण करना (प्रा ४।२०९)।

निल (निर्+सृ)—निकलना।

निलुक्क (नि+ली)—छिपना—'पडिसुणेत्ता कवाडतरेसु निलुक्कंति' (अंत ६।२२)।

निव्वल (निर्+पद्)—निष्पन्न होना (प्रा ४।१२८)।

निव्वोल—डुबोना—'अंतो जलंसि निव्वोलेमि' (ज्ञा १।८।७४)।

निव्वोल—क्रोध से होठ मलिन करना।

निसुड (भाराक्रान्तः नम्)—भार से आक्रान्त हो नीचे झुकना।

निहर (निर्+सृ)—बाहर निकलना।

नीरंज (भञ्ज्)—भांजना (प्रा ४।१०६)।

नील (निर्+सृ)—बाहर निकलना (प्रा ४।७९)।

नुम (छादय्)—आच्छादित करना।

नूम (छादय्)—आच्छादित करना (प्रा ४।२१)।

प

पअव—पीना (से २।२४)।

पइर (वप्)—बोना, वपन करना (आचूला १०।१६ पा)।

पइसर—प्रवेश करना।

पइसार (प्र+वेशय्)—प्रवेश कराना।

पउल (पच्)—पकाना (प्रा ४।९०) ।

पउल्ल (पच्)—पकाना ।

पंग (ग्रह्)—ग्रहण करना (प्रा ४।४०६) ।

पंगुर (प्रा+वृ)—ढकना, आच्छादित करना ।

पंताव—ताडन करना, मारना (पिनि ३२५) ।

पक्खर (सं+नाहय्)—सन्नद्ध करना ।

पक्खोड (वि+कोशय्)—खोलना (प्रा ४।४२) ।

पक्खोड (शद्)—झड़ना, टपकना (प्रा ४।१३०) ।

पक्खोड (प्र+छादय्)—ढकना ।

पगंथ—गाली देना (आ ६।४२) ।

पग्ग (ग्रह्)—ग्रहण करना ।

पघोल (प्र+घूर्णय्)—मिलना ।

पच्चड (क्षर्)—गिरना, टपकना (प्रा ४।१७३) ।

पच्चड्ड (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२) ।

पच्चार (उपा+लभ्)—उलाहना देना (प्रा ४।१५६) ।

पच्छंद (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२) ।

पज्ज—१ कराना । २ पिलाना—'पज्जेइ त्ति पाययति खादयतीत्यादिलौकिकी भाषा कारयतीति तु भावार्थः' (विपाटी प ७२) ।

पज्जर (कथय्)—कहना (प्रा ४।२) ।

पज्झर (क्षर्)—गिरना, टपकना (प्रा ४।१७३) ।

पज्झल (क्षर्)—झरना ।

पझंझ—शब्द करना (जीव ३।२६५) ।

पट्ट (पा)—पान करना (प्रा ४।१०) ।

पट्ठव (प्र+स्थापय्)—स्थापित करना (प्रा ४।३७) ।

पड—विघटित होना ।

पडिअग्ग (अनु+व्रज्)—अनुसरण करना (प्रा ४।१०७) ।

पडिउंच—अपकार का बदला लेना ।

पडियासूर—चिडना, गुस्सा होना ।

पडिसा (शम्)—शान्त हो जाना (प्रा ४।१६७) ।

पडिसा (नश्)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८) ।

पडिहत्थ—प्रत्युपकार करना (से १२।६६)।
पड्डुह (क्षुभ्)— क्षुब्ध होना (प्रा ४।१५४)।
पणाम (अर्पय्)—अर्पित करना—'....कुतग्गेण लेहं पणामेइ' (ज्ञा १।१६।२४४)।
पणाम (उप+नी)—उपस्थित करना।
पण्णप्प—पनपना, स्वस्थ होना—'इमो रोगो... ....कहेहि मे जेण पण्णप्पामि' (निचू ३ पृ ४१७)।
पतणतणाय—जोर से गर्जना (भटी पृ १२२१)।
पतिरि (वप्)—बोना, वपन करना—'कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, पतिरिंसु वा पतिरिंति वा पतिरिस्सति वा' (आचूला १०।१६)।
पत्तवास—बांधना (निभा ६०४०)।
पत्ताण—मिटाना।
पदअ (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
पदेक्ख (प्र+दृश्)—विशेष रूप से देखना।
पधोव (प्र+धाव्)—धोना।
पन्नाड (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६)।
पबोल्ल—बोलना—'वद् धात्वर्थे देशी।'
पब्बाल (छादय्)—आच्छादित करना।
पमेल्ल—छोडना—'मुच् इत्यर्थे देशी।'
पम्मेल—छोड़ना।
पम्हस (वि+स्मृ)—विस्मृत करना।
पम्हुस (वि+स्मृ)—भूलना (प्रा ४।७५)।
पम्हुस (प्र+मुष्)—चोरी करना (प्रा ४।१८४)।
पम्हुस (प्र+मृश्) स्पर्श करना (प्रा ४।१८४)।
पम्हुह (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४)।
पयंस (प्र+दर्शय्)—दिखलाना (कु पृ २४६)।
पयर (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४)।
पयल्ल (कृ)—१ शिथिल करना। २ लटकना (प्रा ४।७०)।
पयल्ल (प्र+सृ)—पसरना (प्रा ४।७७)।
पर (भ्रम्)—घूमना (प्र ३।६)।

परिअंज (परि+भञ्ज्)—तोड़ना ।

परिअंत (श्लिष्)—१ गले लगाना । २ संसर्ग करना (प्रा ४।१९०) ।

परिअल (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२) ।

परिअल्ल (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२) ।

परिआल (वेष्टय्)—वेष्टित करना (प्रा ४।५१) ।

परिघुम (परि+घूर्ण)—झूलना, घूमना (अंवि पृ ८०) ।

परिघोल (परि+घूर्ण्)—परिभ्रमण करना (अंत ६।४३) ।

परिणाव—विवाह करना ।

परिनिय (परि+दृश्)—देखना ।

परिभुज्ज—१ बांधना । २ मुक्त करना—'बध्यते छोड्यते च'(पिटी प ६७) ।

परियंद—कंपित करना ।

परियच्छाव—दलाल होना (स्थाटी प ३९) ।

परिल्हस (परि+स्रंस्)—खिसकना (प्रा ४।१९७) ।

परिवाड (घटय्)—१ निर्माण करना । २ संगत करना (प्रा ४।५०) ।

परिसाम (शम्)—शान्त हो जाना (प्रा ४।१६७) ।

परिहट्ट (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६) ।

परिहर—करना (भटी पृ १२२७) ।

परी (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१) ।

परी (क्षिप्)—फेंकना (प्रा ४।१४३) ।

पलोट्ट—परिवर्तित होना, पलटना—'—अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ' (भ १।४४०) ।

पलोट्ट (प्रत्या+गम्)—वापिस आना (प्रा ४।१६६) ।

पलोट्ट (परि+अस्)—१ फेंकना । २ मार गिराना । ३ प्रवृत्ति करना । ४ गिरना (प्रा ४।२००) ।

पलोट्ठ—आगे बढना ।

पल्लट्ट—पलटना ।

पल्लट्ट (परि+अस्)—फेंकना (प्रा ४।२००) ।

पल्हत्थ (परि+अस्)—फेंकना (प्रा ४।२००) ।

पवड्ढ—पोढना, सोना—'जाव राया पवड्ढइ ताव कहेहि किंचि अक्खाणयं' (उसुटी प १४२) ।

पविरंज (भञ्ज्)—भागना, तोडना (प्रा ४।१०६)।

पविरज्ज (भञ्ज्)—तोड़ना।

पवोल्ल—बोलना—'वद् इत्यर्थे देशी धातुः।'

पव्वाय (म्लै)—मुरझाना (प्रा ४।१८)।

पव्वाल (छादय्)—आच्छादित करना (प्रा ४।२१)।

पव्वाल (प्लावय्)—खूब भिगोना (प्रा ४।४१)।

पहम्म (गम्)—गमन करना (प्रा ४।१६२)।

पहल्ल (घूर्ण्)—घूमना, कापना (प्रा ४।११७)।

पहाड—इधर-उधर घुमाना—'पहाडेति त्ति स्वेच्छयेतश्चेतश्चानाथ भ्रमयन्ति' (सूटी १ प १२४)।

पहिल्ल—पहल करना, आगे करना।

पहुच्च (प्र+भू)—पहुंचना, प्राप्त करना—'गामे य कालभाणे पहुच्चमाणे हवंति भंगट्ठा' (ओनि ५०५)।

पहुच्च (पर्याप्त्यर्थे भू)—पर्याप्त होना।

पहुप्प (प्र+भू)—१ पहुचना, प्राप्त करना—'काले अपहुप्पते नियत्तई सेसए भयणा' (ओनि ५०५)। २ समर्थ होना (प्रा ४।६३)।

पाउण (प्र+आप्)—प्राप्त करना (उ १६।४)।

पांगु—धारण करना, ढकना (अवि पृ ८४)।

पामिच्च—उधार लेना—'दारुयाइ भिंदेज्ज वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा' (आचूला २।२९)।

पार (शक्)—समर्थ होना (प्रा ४।८६)।

पाराव—पारणा कराना, भोजन कराना (ओनि १४२)।

पासल्ल—वक्र होना—'पासल्लंति महिहरा' (से ६।४५)।

पिअरंज (भञ्ज्)—भांगना, तोडना।

पिच्च—पकना।

पिज्ज (पा)—पान करना—'पिज्जंतो तरुणियणणयणमालाहिं' (कु पृ १८३)।

पिट्ट (भ्रंश्)—नीचे गिरना।

पिडव (अर्ज्) उपार्जन करना।

पिड्ड (भ्रंश्)—नीचे गिरना।

पिण—प्राप्त करना, एकत्रित करना (आवचू १ पृ ४४८)।

पिप्पड—बकवास करना, बडबडाना—'सा तुह विरहुम्मत्ता पिहोअरा पिप्पडइ निच्चं' (दे ६।५० वृ)।

पिसुण (कथय्)—कहना (प्रा ४।२)।

पुंछ (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।

पुंस (मृज्)—मार्जन करना (बृभा ४५६)।

पुक्क—चीत्कार करना (प्र ३।५)।

पुक्कर—पुकारना।

पुच्छ (प्रच्छ्)—पूछना (प्रा ४।९७)।

पुट्ट (भ्रंश्)—नीचे गिरना।

पुट्ट (प्र+उञ्छ्)—पोंछना।

पुड (भ्रंश्)—नीचे गिरना।

पुढक्क—प्रसरित होना।

पुणअ (दृश्)—देखना।

पुम्म (दृश्)—देखना।

पुल (दृश्)—देखना।

पुलअ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

पुलआअ (उत्+लस्)—खुश होना (प्रा ४।२०२)।

पुलोअ (दृश्)—देखना (व्यभा ५ टी प ६)।

पुव (प्लु) गति करना।

पुव्व—कूदना, जाना (भटी पृ १२३६)।

पुस (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।

पूस—पूछना—'प्रच्छ्धात्वर्थे देशी।'

पेंडव (प्र+स्थापय्)—१ स्थापित करना। २ प्रस्थान कराना (प्रा ४।३७)।

पेच्छ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

पेट्ट—पीटना।

पेट्ठव (प्र+स्थापय्)—प्रस्थापित करना।'

पेड्डव (प्र+स्थापय्)—प्रस्थापित करना।

पेल्ल (क्षिप्)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।

पेल्ल (पीडय्)—पीलना ।
पेल्ल (पूरय्)—भरना ।
पेल्ल (प्र+ईरय्)—प्रेरित करना (व्यभा ७ टी प ६५) ।
पोअ (प्र+वे)—पिरोना ।
पोर—करना–'आहेवच्च पोरेवच्चं पोरेति' (आचू पृ ३४६) ।
पोलंड (प्रोत्+लङ्घ्)—उल्लंघन करना (ज्ञा १।१।१५३) ।

फ

फंफ (उद्+गम्)—उछलना ।
फंस (विसम्+वद्)—अप्रमाणित होना (प्रा ४।१२९) ।
फंस (स्पृश्)—स्पर्श करना (प्रा ४।१८२) ।
फरिस (स्पृश्)—स्पर्श करना (प्रा ४।१८२) ।
फणिल्ल (चोरय्)—चोरी करना ।
फव्व—प्राप्त करना (आवहाटी १ पृ २७०) ।
फव्वीह (लभ्)—यथेष्ट लाभ प्राप्त करना–'फव्वीहामोत्ति देशीपदत्वाद् यदृच्छया भक्तपानं लभामहे' (वृटी पृ ६३३) ।
फसफस—फुस-फुस करना (कु पृ २२५) ।
फसल—विभूषा करना ।
फसलाण—विभूषा करना ।
फास (स्पृश्)—१ स्पर्श करना । २ पालन करना (प्रा ४।१८२) ।
फिक्कर—पिशाच का चिल्लाना ।
फिट्ट (भ्रंश्)—फटना, नष्ट होना (निचू १ पृ ९) ।
फिट्ट—१ दूर जाना (उसुटी प २६९) । २ एकमेक करना (उसुटी प ७४) । ३ नीचे गिरना । ४ टूटना । ५ भागना ।
फिड (भ्रंश्)—फटना, नष्ट होना (प्रा ४।१७७) ।
फिर (गम्)—चलना ।
फिर—परावर्तन करना–'परावर्तने देशी ।'
फिल्लस—फिसलना (वृटी पृ ९२९) ।
फिल्लुस—फिसलना ।
फुंफुल—१ उत्पाटन करना । २ कहना ।
फुंफुल्ल (कथय्)—कहना (प्रा २।१७४) ।

फुंफुल्ल—१ कहना। २ उखाड़ना (प्रा २।१७४)।
फुंस (मृज्)—मार्जन करना।
फुक्क—फूक देना।
फुट (भ्रंश्)—फटना, नष्ट होना।
फुट्ट (भ्रंश्)—फटना, नष्ट होना (प्रा ४।१७७)।
फुड (भ्रंश्)—फटना (प्रा ४।१७७)।
फुप्फुय—चिल्लाना।
फुम (फूत्+कृ)—मुह से हवा करना (द ४।२१)।
फुम (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।
फुर (अप+हृ)—अपहरण करना।
फुराव—अपहरण कराना–'फुरावेंति देशीपदमेतद् अपहारयन्ति' (व्यभा ४।३ टी प ४१)।
फुरुफुर—तडफड़ाना (प्र ३।५)।
फुस (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।
फुस (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।
फुस्स (मृज्)—माजना।
फूम—फूक मारना (निचू १ पृ ८४)।
फेक्कार—शृगाल का आवाज करना।
फेड—१ खोलना, उद्घाटन करना (आवचू १ पृ ५५४)। २ छोड़ना–'मुच् इत्यर्थे देशी।'
फेर—फिराना, घुमाना–'रासहारूढो काऊण फेरितो सव्वत्य' (उसुटी प २८६)।
फेल्ल (क्षिप्)—फेंकना।
फेल्लुस—फिसलना, खिसकना (दे ६।८६ वृ)।
फोल्ल—छीलना (ज्ञाटी प १२५)।

ब

बइस (उप+विश्)—बैठना।
बइसार (उप+वेशय्)—बैठाना।
बइसावय—बैठाना–'उपवेशय् इत्यर्थे देशी।'
बडबड (वि+लप्)—बडबडाना।

बल (ज्वल्)—जलना।

बल (ग्रह्)—ग्रहण करना।

बल (खाद्)—खाना (प्रा ४।२५६)।

बिबुल—बोलना।

बीह (भी)—डरना (प्रा ४।५३)।

बुंब—चिल्लाना।

बुक्क (गर्ज्)—गरजना (राज २८१)।

बुक्क (भष्)—भौंकना।

बुक्कर—शब्द करना।

बुक्कार—गर्जन करना (राज २८१)।

बुज्झ—बुझना (भ १।४४)।

बुडबुड—बुडबुड की आवाज करना (निचू ३ पृ २५४)।

बुड्ड (मस्ज्)—मज्जन करना (प्रा ४।१०१)।

बुण्ण—बोलना।

बुल्ल (कथय्)—बोलना, कहना।

बुल्लुबुल—छलकना, उछलना (सूचू १ पृ २०६)। देखें—छल्लुच्छुल।

बोक्किज्ज—वमन करना।

बोज्ज (त्रस्)—भय खाना (प्रा ४।१९८)।

बोट्ट—१ चखना, उच्छिष्ट करना। २ धान्य रधा या नहीं, उसका परीक्षण करना—'रधंतीओ बोट्टिति वजणे…' (बृभा १७४६)।

बोट्टि—भ्रष्ट करना (निचू ३ पृ ४४२)।

बोल (ब्रोडय्)—डुबाना (बृभा १६६७)।

बोल (व्यति+क्रम्)—१ पसार होना। २ उल्लंघन करना।

बोल्ल (कथय्)—बोलना (निचू २ पृ २७)।

बोल्लाव—बुलाना।

भ

भंड—कलह करना (बृभा ३०१३)।

भमड (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

भमाड (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

भम्मड (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१)।

भर (स्मृ) - स्मरण करना (प्रा ४।७४) ।

भल (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४) ।

भल—स्खलित होना, गिरना ।

भलीह—मिलना, सम्मिलित होना (कु पृ १२२) ।

भा (भी)—डरना (प्रा ४।५३) ।

भासुंड—बाहर निकलना (दे ६।१०३ वृ) ।

भिज्ज—भीगना (निचू ३ पृ ३७३) ।

भिट्ठ—भेंटना ।

भिड (आक्रम्)—भिडना ।

भिड—अभिगमन करना–'अभिगमने देशी धातु ।'

भिणिभिण—भिनभिनाना–'भिणिभिणेंत मच्छियं' (कु पृ २२५) ।

भिणिहिण—भ्रमर का गुंजारव करना ।

भिलिंग—मालिश करना ।

भिस (भास्)—चमकना (प्रा ४।२०३) ।

भिसण—फेंकना ।

भीसाव—डराना ।

भुंज (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०) ।

भुकुंड—लिप्त करना–'दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गंधेहिं गाताइं भुकुंडेति' (जीव ३।४५१) ।

भुक्क (भष्)—भौंकना (प्रा ४।१८६) ।

भुम (भ्रम्)—घूमना, फिरना (प्रा ४।१६१) ।

भुरुंड—उद्धूलित करना, लिप्त करना ।

भुरुकुंड—लिप्त करना–'चुण्णाणि जेण गायाइं भुरुकुंडेत्ता'(सूचू १ पृ ११६)।

भुरुहुंड—लिप्त करना ।

भुल्ल (भ्रंश्)—१ भ्रष्ट होना, च्युत होना–'विसएहिं भुल्लउ हियय ! काइं परमत्थु मुणतउ' (उसुटी प ५५) । २ भूलना ।

भेल—मिश्रित करना (भेलना–राज) ।

भोल—ठगना ।

भोलव—ठगना ।

म

मइल—निस्तेज होना (से ३।४७)।

मंड—१ आगे धरना। २ रचना करना। ३ बिछाना। ४ प्रारंभ करना।

मंभीस—अभय देना।

मग—गमन करना।

मघमघ (प्र+सृ)--गंध फैलना (भ ११।१३३)।

मच्च—१ मलिन होना। २ गर्व करना।

मज्ज—१ अवलोकन करना। २ पीना।

मज्ज (नि+सद्)—बैठना।

मड (मृद्)—मसलना।

मडमड—मड-मड की आवाज करना।

मड्ड (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६)।

मढ (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६)।

मणाव—मनाना (निचू १ पृ १२०)।

ममाय—ग्रहण करना—'जे नियागं ममायंति' (द ६।४८)।

ममीकर—ग्रहण करना—'ममीकरेति गेण्हति' (दअचू पृ १५३)।

ममूर (चूर्णय्)—चूर्ण करना।

मर—१ टूटना। २ विस्तृत होना।

मरह (मृष्)—क्षमा करना।

मल (मृद्)—मर्दन करना (प्रा ४।१२६)।

मलवल—मुह बनाना।

मल्ह—मौज मानना, लीला करना (दे ६।११६ वृ)।

मसमसाविज्ज—जलकर राख हो जाना (भ ३।१४८)।

मसरक्क—सकुचना, सिमटना।

मह (काङ्क्ष्)—चाहना (प्र ३।५)।

महमह (प्र+सृ)—गन्ध फैलना, महकना (प्रा ४।७८)—'गन्धोद्‌वाने देशी।'

महम्म—आघातित होना।

महुण (मथ्)—१ विलोडन करना। २ विनाश करना।

माण—अनुभव करना।

मिट—मिटाना।

मिलिमिलिमिल— चमकना।
मिल्ल —छोडना।
मिसमिस—१ अत्यंत चमकना। २ खूब जलना।
मिसिमिस—चमकना (आचूला १५।२८)।
मीसाल (मिश्रय्)—मिश्रित करना।
मुकलाव—भिजवाना।
मुक्कल—बन्धनमुक्त करना।
मुग्गाह (प्र+सृ)—फैलना।
मुण (ज्ञा)—जानना (प्रा ४।७)।
मुणमुण—गुनगुनाहट करना, बड़बड़ाना (उसुटी प १४३)।
मुम्मुर (चूर्णय्)—चूर्ण करना।
मुर (स्फुट्)—मुस्कराना (प्रा ४।११४)।
मुर—१ विलास करना। २ उत्पीड़न करना। ३ व्याप्त करना। ४ बोलना। ५ फेंकना। ६ टूटना। ७ मुड़ना।
मुव्वह—उद्वहन करना (प्रा २।१७४)।
मुसुमूर (भञ्ज्)—भागना (प्रा ४।१०६)।
मूयल—मूक होना (कु पृ १३५)।
मूर (भञ्ज्)—भागना (प्रा ४।१०६)।
मेल—छोडना।
मेलव (मिश्रय्)—मिलाना (प्रा ४।२८)।
मेल्ल (मुच्)—छोड़ना (प्रा ४।९१)।
मेल्लाव—छुडाना।
मेल्ह—छोड़ना (आवहाटी १ पृ २३४)।
मोकल्ल—भेजना।
मोक्कल—भेजना।
मोग्गाह—फैलना।
मोट्टाय (रम्)—क्रीड़ा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।

र

रइआव (रचय्)—बनवाना।

रंखोल (दोलय्)—१ झूलना, हिलना। २ कांपना (प्रा ४।४८)।

रंध—पकाना, रांधना—'पच्छा घन्नं रंधेंति' (आचू पृ ३३०)।

रंप (तक्ष्)—छीलना, काटना (प्रा ४।१९४)।

रंफ (तक्ष्)—काटना (प्रा ४।१९४)।

रंभ (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

रंभ (आ+रभ्)—प्रारंभ करना।

रक्खोल (दोलय्)—झूलना।

रच्च (रञ्ज्)—राचना, आसक्त होना।

रप्प (आ+क्रम्)—आक्रमण करना।

रप्प—खेलना।

रम्ह (तक्ष्)—छीलना।

रव—आर्द्र करना।

रह—रहना।

रा (ली)—श्लेष करना।

रा—१ बुलाना (अंवि पृ १०७) २ देना।

राण (वि+नम्)—विशेष नमना।

राव—आर्द्र करना—'से उदगबिंदू जेणं तं मल्लगं रावेहिति' (नंदी ५३)।

राव (रञ्जय्)—खुश करना (प्रा ४।४९)।

रिअ (प्र+विश्)—प्रवेश करना (प्रा ४।१८३)।

रिअ—गमन करना।

रिंक—रेंकना।

रिक्क—छोडना (आ ६।१।४)।

रिग्ग (गम्)—गति करना (प्रा ४।२५९)।

रिग्ग (प्र+विश्)—प्रवेश करना (प्रा ४।२५९)।

रिज्ज—रीझना।

रिड (मण्डय्)—विभूषित करना।

रिर (राज्)—शोभित होना।

रिल्ल—शोभना।

रिह (प्र+विश्)—प्रवेश करना।

रिह (राज्)—शोभित होना।

रीड (मण्डय्)—मंडित करना (प्रा ४।११५)।

रीर (राज्)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

रुंज (रु)—आवाजकरना (प्रा ४।५७)।

रुंट (रु)—आवाज करना, चिल्लाना (कु पृ ७७)।

रुंभ—स्थिर होना।

रुंव—पीसना—'रुविज्जतासु कणिक्कासु' (कु पृ १००)।

रुच—पीसना।

रुच्च—१ पीसना—'खेट्टादि भज्जति रुच्चति वा' (आचू पृ ३३८)।
२ व्रीहि आदि को यंत्र मे निस्तुप करना।

रुणरुण—करुण क्रन्दन करना (कु पृ २९)।

रुणरुंट—गुजारव करना।

रुल (लुठ्)—लेटना।

रुल—भटकना—'नट्ठअडवीए रुलंतं अच्छेज्ज' (निचू २ पृ ३१७)।

रुलघुल—नि:श्वास डालना।

रुलुघुल—नि:श्वास डालना।

रुहरुह—मन्द मन्द वहना।

रूस—खोज करना, गवेषणा करना—'रूसेह त्ति देशीवचनत्वाद् गवेपयत' (वृटी पृ ८५३)।

रेअव (मुच्)—छोड़ना (प्रा ४।९१)।

रेल्ल (प्लावय्)—सरावोर करना।

रेल्ल—१ शोभना, चमकना—'शुभ् धात्वर्थे देशी। २ वोलना—'भाष् धात्वर्थे देशी।'

रेह (राज्)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

रोच (पिष्)—पीसना (प्रा ४।१८५)।

रोक्किर—दात पीसना—'सीहो गज्जइ रोक्किरइ य'(व्यभा ४।३ टी प ८)।

रोड—१ स्खलित करना, अटकाना, रोकना (आवचू १ पृ ४५०)।
२ अनादर करना। ३ हैरान करना (आवहाटी २ पृ १४२)।

रोव—गीला करना।

रोसाण (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।

ल

लअ—पहनना, मंडित करना—'लएज्जत्ति अप्पणो आभरेज्ज' (निचू ४ पृ ३)।

लट्ट—विकसित होना।

लढ (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४)।

लद्द—भार लादना, बोझ डालना।

लय (ला) ग्रहण करना।

लल (लड्)—१ विलास करना। २ झूलना।

लव (प्र+वर्तय्)—प्रवृत्ति कराना—'णो विज्जू लवंति' (सूर्य २०)।

लाढ—यापन करना—'लाढयन्ति यापयन्ति' (वृटी पृ ११२६)।

लालंप (वि+लप्)—विलाप करना।

लिंप (लिप्)—लीपना (प्रा ४।१४९)।

लिक्क (नि+ली)—छिपना (प्रा ४।५५)।

लिज्ज—ग्रहण करना।

लिस (स्वप्)—शयन करना (प्रा ४।१४६)।

लीस—जोडना, सांधना—'लीसएज्जा वि वत्थं' (सूचू १ पृ १५९)।

लुंचपलुंच—पीडित करना।

लुंछ (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।

लुक्क (तुड्)—टूटना (प्रा४।११६)।

लुक्क (नि+ली)—छिपना (प्रा ४।५५)।

लुच्छ (मृज्)—मांजना।

लुढ (स्मृ)—याद करना।

लुभ (मृज्)—मार्जन करना।

लुह (मृज्)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।

लूड (लुण्ठ)—लूटना।

लूर (छिद्)—छेदना, खण्डित करना (प्रा ४।१२४)।

लोट्ट (स्वप्)—शयन करना (प्रा ४।१४६)।

लोट्ट (लुठ्)—१ प्रवृत्त होना—'चक्कं अतेण लोट्टति' (सू १।१५।१४)। २ लेटना।

लोड—घुमाना।

लोढ—१ निकालना, अवतारण करना (आवहाटी २ पृ ९०)। २ कपास निकालना, लोढना।

लोल (लुठ्)—१ लेटना (पिनि ४२२)। २ विलोडन करना।

ल्हस—हर्षित होना।

ल्हस (स्रंस्)—खिसकना (प्रा ४।१९७)।

ल्हसाव (स्रंसय्)—खिसकाना।

ल्हिक्क (नि+ली)—छुपना (प्रा ४।५५)।

व

वअल (प्र+सृ)—फैलना।

वअल्ल (प्र+सृ)—फैलना।

वइसर—वैठना।

वंच (उद्+नमय्)—ऊंचा उठाना।

वंफ—१ उल्लाप, बोलना—'णो य वंफेज्ज मम्मयं' (सू १।९।२५); 'वफेति णाम देसीभासाए उल्लावो वुच्चति' (सूचू १ पृ १८०)। २ खाना, भोजन करना।

वंफ (वल्)—लौटना, वापिस आना (प्रा ४।१७६)।

वंफ (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

वक्कार—गर्जन करना (राज २८१ पा)।

वग्गाल (रोमन्थय्)—उगाली करना।

वग्गोल (रोमन्थय्)—पगुराना (प्रा ४।४३)।

वच्च (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

वच्छड्ड (गम्)—जाना।

वज्ज (त्रस्)—भय खाना (प्रा ४।१९८)।

वज्ज (वद्)—बजना, वाद्य आदि की आवाज होना (प्रा ४।४०६)।

वज्ज (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

वज्जर (कथय्)—कहना (उसुटी प १३९)।

वट्ट—बांटना, पीसना।

वडअ (गम्)—जाना।

वडवड (वि+लप्) विलाप करना (प्रा ४।१४८)।

वड्ड—कलह करना—'वड्डेति—कलहयति' (उशाटी प १७९)।

वड्ड—कलह करना—'ताहे मातरं वड्ढति ममवि पायसं देहि' (आवचू १ पृ ४६६)।

वड्डाव—१ बधाई देना। २ समाप्त करना।

वढार (वर्धय्)—बढाना। (वधारवु-गुज)।

वप्प—ढकना, आच्छादित करना।

वप्फ—भोजन करना (अंवि पृ १०७)।

वमाल (पुञ्ज्)—एकत्र करना (प्रा ४।१०२)।

वरहाड (निर्+सृ)—बाहर निकलना (प्रा ४।७९)।

वरिअल (गम्)—जाना।

वरिअल्ल (गम्)—जाना।

वरिसण—हाहाकार ध्वनि करना।

वल (आ+रोपय्)—ऊपर चढाना (प्रा ४।४७)।

वल (ग्रह्)—ग्रहण करना (प्रा ४।२०९)।

वलग्ग (आ+रुह्)—आरोहण करना (प्रा ४।२०६)।

वलवल—चमकना—'विज्जुला वलवलेइ' (कु पृ १०१)।

वल्लव—लाक्षा से रंगना।

वसुआ (उद्+वा)—शुष्क होना, सूखना (प्रा ४।११)।

वसुआअ (उद्+वा)—शुष्क होना।

वह—अवलोकन करना।

वा (म्लै)—मुरझाना (प्रा ४।१८)।

वाडि—तेज गति से दौडना (जीभा १७२०)।

वाडु—भाग जाना—'देशीवचनमेतत् नशनं करोति नश्यतीत्यर्थः' (व्यभा ३ टी प १०३)।

वाण (वि+नम्)—विशेष झुकना, नत होना।

वापम्फ (श्रमं कृ)—श्रम करना।

वाय (म्लै)—सूखना।

वावंफ (श्रम कृ)—श्रम करना (प्रा ४।६८)।

वावाअ (अव+काश्)—अवकाश पाना, स्थान पाना।

वास (अव+कास्)—खांसना।

वाह (अव+गाह)—अवगाहन करना।

वाहिप्प (व्या+हृ)—आह्वान करना (ति ७२५)।

वाहुड—चलना।

विअक्ख (वि+ईक्ष्)—देखना (ओभा १८८)।

विअट्ट (विसं+वद्)—अप्रमाणित करना (प्रा ४।१२९)।

विअल (ओजय्)—मजबूत होना।

विआय (वि+जनय्)—जन्म देना। (वियावु-गुज)।

विउड (वि+नाशय्)—विनाश करना (प्रा ४।३१)।

विंचिण—विदारित करना।

विंछ (वि+घट्)—अलग होना।

विंट (वेष्टय्)—वेष्टन करना, लपेटना। (विंटवुं-गुज)।

विकड्ढ—खींचना।

विक्के (वि+क्री)—बेचना (प्रा ४।५२)।

विक्खर (वि+कृ)—१छितरना। २ बिखेरना। ३ इधर उधर फेंकना।

विक्खिर (वि+कृ)—बिखेरना, फैलाना (वृचू प १४१)।

विक्खोड—निन्दा करना। (वखोडवु-गुज)।

विखुड्ड—क्रीडा करना (आवहाटी २ पृ १४७)।

विग्गोव—निंदा करना।

विघुम्म (वि+घूर्णय्)—डोलना।

विच्च (वि+अय्)—व्यय करना।

विच्च—समीप में आना।

विच्छ—विदारित करना।

विच्छिप्प (वि+स्पृश्)—विशेष रूप से स्पर्श करना (भ ६।२०६)।

विच्छिव (वि+स्पृश्)—विशेष रूप से स्पर्श करना।

विच्छुह (वि+क्षिप्)—फेंकना (से १०।७३)।

विच्छोल (कम्पय्)—कंपित करना (प्रा ४।४६)।

विच्छोव—वियुक्त करना, विरहित करना।

विज्झ (वि+घट्)—अलग होना।

विट्टाल—अपवित्र करना, भ्रष्ट करना—'अहो इमे असुइणो सव्वलोग विट्टालेति' (निचू २ पृ २२६)।

विट्ठ—अर्जित करना।

विडव (अर्जय्)—अर्जित करना।

विडविड (रचय्)—निर्माण करना।

विडविड—छटपटाना, बिलबिलाना।

विडविड्ड (रचय्)—निर्माण करना (प्रा ४।९४)।

विडस—स्वाद लेकर खाना।

विढज्ज (वि+दह्)—जलाना।

विढप्प—अर्जन करना—'विढप्पंति गुणा' (से १।१०)।

विढप्प (व्युत्+पद्)—व्युत्पन्न होना।

विढव (अर्ज्)—अर्जन करना, उत्पन्न करना—'ताहे केणावि उवायेण विढविज्जा सुवण्णं' (उशाटी प १४६)।

विण—फटकना, बीनना, छाज से अलग करना—'एगा थेरी सुप्प गहाय ते विणेज्जा' (उशाटी प १४६)।

विणड (वि+गुप्)—व्याकुल करना।

विणभ (खेदय्)—खिन्न करना।

वितुट्ठ—प्रतिषेध करना।

वित्थक्क (वि+स्था)—१ स्थिर होना। २ विलम्ब करना। ३ विरोध करना।

विद्द—बुझाना—'सो ते डहिउं अपच्चलो सिग्घं विद्दाति—उज्झाति त्ति वुत्तं भवति' (निचू ४ पृ ३५४)।

विप्फाड—फाडना, नष्ट करना।

विप्फाल—प्रश्न करना, पूछना—'विप्फालेइ देशीवचनमेतत् पृच्छतीत्यर्थः' (व्यभा २ टी प २१)।

विफाल—पूछना।

विब्भाड—नष्ट करना।

विभर (वि+स्मृ)—भूलना।

विम्हर (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४)।

विम्हर (वि+स्मृ)—भूलना (प्रा ४।७५)।

विर (भञ्ज्)—भाजना, तोडना (प्रा ४।१०६)।

विर (गुप्)—व्याकुल होना (प्रा ४।१५०)।

विरमाण (प्रति+पालय्)—पालन करना, रक्षण करना।

विरमाल (प्रति+ईक्ष्)—राह-देखना (प्रा ४।१९३)।

विरल्ल (तन्)—विस्तार करना (प्रा ४।१३७)।

विरा (वि+ली)—१ पिघलना, द्रवित होना–'ततो सा उण्हेण नवणीयमिव विराओ' (आवमटी प ३९६)। २ नष्ट होना। ३ निवृत्त होना (प्रा ४।५६)।

विराव—१ द्रावित करना। २ आहत करना, पराजित करना–'पुक्खल-संवट्टओ भणति जहा णं एगाए धाराए विरावेमि' (आवचू १ पृ १२१)। ३ भोजन करना–'विरावेमि—भक्षयामि।'

विरिंच (वि+भज्)—भाग लेना, बाट लेना।

विरिल्ल (वि+स्तृ)—फैलाना।

विरीह (प्रति+पालय्)—रक्षण करना।

विरोल (वि+लग्)—१ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना।

विरोल (मन्थ्)—विलोडन करना (प्रा ४।१२१)।

विल (व्रीड्)—लज्जित होना।

विलभ (खेदय्)—खिन्न करना।

विलिज्ज—पिघलना–'अग्गिसमीवे व घयं विलिज्ज चित्तं तु अज्जाए' (ग ६६)।

विलुंप—कवलित करना, खाना।

विलुंप (काङ्क्ष्)—चाहना, अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

विलोट्ट (विसं+वद्)—१ अप्रमाणित होना (प्रा ४।१२९)। २ विपरीत होना।

विवोल—१ कोलाहल करना। २ गुजरना, वीतना।

विसट्ट (वि+कस्)—खिलना, विकसित होना (स्था ४।५१४)।

विसट्ट (वि+कासय्)—विकसित करना।

विसट्ट (पत्)—गिरना–'फुट्टंता तडत्ति विसट्टंति महीयले' (उसुटी प ३९)।

विसट्ट (दल्)—फटना, टूटना (प्रा ४।१७६)।

विसुयाव—शोषण करना (बृभा २०७४)।

विसुराव—खिन्न करना।

विसूर (वि+स्मृ)—भूल जाना।

विसूर (खिद्)—खेद करना–'विले य जाणामि अदुट्ठ दुट्ठे, मा ता विसूराहि अजाणि एव' (बृभा ३२४८)।

विहर (**प्रति+ईक्ष्**)—प्रतीक्षा करना।

विहल्ल—आवाज करना।

विहिमिह—विकसित होना।

विहिविल्ल (**वि+रचय्**)—निर्माण करना।

विहीर (**प्रति+ईक्ष्**)—राह देखना (प्रा ४।१९३)।

विहोड (**ताडय्**)—ताडन करना (प्रा ४।२७)।

विहोढ—जुगुप्सा करना, विडंबित करना (बृभा ६२३)।

वीण (**वि+चारय्**)—विचार करना।

वीसर (**वि+स्मृ**)—भूलना (प्रा ४।७५)।

वीसाल (**मिश्रय्**)—मिश्रण करना (प्रा ४।२८)।

वीसुंभ—१ मरना, मृत्यु प्राप्त करना—'आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुभेज्जा' (स्था ५।१००)। २ पृथक् होना, अलग होना।

वुंज (**उद्+नमय्**)—ऊचा करना।

वुक्कार—गर्जन करना।

वुज्ज (**त्रस्**)—डरना।

वुण—बुनना।

वेअड (**खच्**)—जडना (प्रा ४।८९)।

वेआर—ठगना, प्रतारण करना।

वेंटल—जादूटोना करना (आचू पृ ३३७)।

वेढ—वेष्टित करना, लपेटना।,

वेढ (**वेष्ट्**)—लपेटना (प्रा ४।२२१)।

वेमय (**भञ्ज्**) भांगना (प्रा ४।१०६)।

वेलव (**वञ्च्**)—१ ठगना (प्रा ४।९३)। २ पीडित करना।

वेलव (**उपा+लभ्**)—उलाहना देना (प्रा ४।१५६)।

वेलव—१ कपाना। २ व्याकुल करना। ३ व्यावृत्त करना, हटाना। ४ मजाक करना।

वेलाव (**वि+लम्बय्**)—विलम्व करना।

वेल्ल (**रम्**)—क्रीड़ा करना (प्रा ४।१६८)।

वेहव (**वञ्च्**)—ठगना (प्रा ४।९३)।

वोक्क (**व्या+हृ, उद्+नद्**)—पुकारना।

वोक्क (उद्+नट्)—अभिनय करना।
वोक्क (वि+ज्ञपय्)—विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना ((प्रा ४।३८)।
वोक्ख (उद्+नद्)—आह्वान करना।
वोक्खार—विभूषित करना।
वोज्ज (वीजय्)—हवा करना (प्रा ४।५)।
वोज्ज (त्रस्)—डरना (प्रा ४।१९८ टी)।
वोज्झ—धारण करना।
वोल (गम्)—१ अतिक्रमण करना (वृभा १५३९)। २ मिश्रण करना (उसुटीप २५०)। ३ गुजरना। ४ गुजारना, पसार करना।
वोलट्ट (व्युप+लुट्)—छलकना।
वोलाव—जाने के लिए प्रेरित करना।
वोल्ल (आ+क्रम्)—आक्रमण करना।
वोसग्ग (वि+कस्)—विकसित होना।
वोसट्ट (वि+कस्)—१ विकसित होना (प्रा ४।१९५)। २ वढना।
वोसट्ट (वि+कासय्)—१ विकास करना। २ वढाना।
वोहार—वुहारना।

स

संकेल्ल—संकुचित करना।
संखा (सं+स्त्यै)—संहत होना, सघन होना (दे ८।११ वृ)।
संखुड्ड (रम्)—क्रीड़ा करना, खेलना (प्रा ४।१६८)।
संगल (सं+घटय्)—संघटित करना (प्रा ४।११३)।
संघ (कथय्)—कहना (प्रा ४।२)।
संचाय (सं+शक्)—सकना, समर्थ होना—'एगमवि रोगायक····नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए' (विपा १।१।५५)।
संचिक्ख (सं+स्था)—१ रहना। २ अनुशीलन करना—'जे अचेले परिवुसिए संचिक्खति ओमोयरियाए' (आ ६।४०)।
संछिव—स्पर्श करना।
संछुह (सं+क्षिप्)—एकत्रित कर रखना (पिनि ३११)।
संजत्त—तैयार करना।
संजम—छिपाना (दे ८।१५ वृ)।

संजव—छिपाना।

सजोअ (सं+दृश्)—निरीक्षण करना।

संठव—१ तीक्ष्ण करना। २ संवारना (निचू २ पृ २२०)। ३ रखना।
४ आश्वासन देना।

संतुम (छादय्)—आच्छादित करना।

सदाण (कृ)—अवलम्बन करना (प्रा ४।६७)।

सदुक्ख (स+दीप्)—जलना।

संदुम (प्र+दीप्)—जलाना, प्रकाशित करना (प्रा ४।१५२)।

संधुक्क (प्र+दीप्)—जलाना, प्रकाशित करना (प्रा ४।१५२)।

संधुम (प्र+दीप्)—प्रदीप्त करना।

संनाम (आ+दृ)—आदर करना।

संपणोल्ल (संप्र+नुद्)—प्रेरणा करना, चालित करना (द ५।१।३०)।

संपसार—मन्त्रणा करना (व्यभा ४।३ टी प ८)।

संफाण—धोना, प्रक्षालन करना (नि ५।१४)।

संफोड—मिलाना (निचू २ पृ ३१४)।

संभर (सं+स्मृ)—स्मरण करना।

संभाव (लुभ्)—आसक्ति करना (प्रा ४।१५३)।

संवेल्ल—सकेलना, समेटना।

सक्क (सृप्)—सरकना।

सक्खुड्ड (रम्)—क्रीडा करना।

सग्घ (कथ्)—कहना।

सच्चव (दृश्)—देखना।

सच्छर (दृश्)—देखना।

सज्ज—शक्ति ग्रहण करना—'णाणुज्जोया साहू, दव्वुज्जोतंमि मा हु सज्जित्था'
(निभा २२५)।

सज्झव—ठीक करना, स्वस्थ करना—'ममं चेव ओलग्गसि तो ते सज्झवेमि'
(उसुटी प २७)।

सड्डिअग्ग—बढाना।

सद्दह (श्रद्+धा)—श्रद्धा करना (प्रा ४।९)।

सन्नाम (आ+दृ)—आदर करना (प्रा ४।८३)।

सन्नुम (छादय्)--आच्छादित करना (प्रा ४।२१)।

समइच्छ (समति+क्रम्)—१ उल्लंघन करना। २ गुजरना।

समच्छ (सम्+आस)—१ बैठना। २ अवलम्बन करना।
३ अधीन रखना।

समब्भिड—भिडना, लडना।

समराअ—पीसना।

समाढप्प—आरंभ करना (कु पृ १९९)।

समाण (भुज्)—भोजन करना (प्रा ४।११०)।

समाण (सम्+आप्)—समाप्त करना (प्रा ४।१४२)।

समार (समा+रचय्)—रचना, बनाना (प्रा ४।९५)।

समार (समा+रभ्)—प्रारंभ करना।

समुच्छ (समुत्+छिद्)—१ प्रमार्जन करना (सू १।२।३५)।
२ उन्मूलन करना (सू २।१।२२)।

समुच्छ—१ संतुष्ट करना। २ ठीक करना।

समुत्तअ—गर्व करना।

समुप्फुंद (समा+क्रम्)—आक्रमण करना (से ४।४३)।

समुस्सिणा (समुत्+श्रु)—निर्माण करना–'आवसहं वा समुस्सिणासि'
(आ ८।२२)।

समोलय—उठाकर फेंकना।

समोसव—टुकड़े-टुकडे करना।

सर—पर्याप्त होना।

सरास—कहना–'कथ् इत्यर्थे देशी।'

सलह (श्लाघ्)—प्रशंसा करना (प्रा ४।८८)।

सलिस (स्वप्)—सोना।

सल्ल—प्रिय लगना।

सव्वव (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।

सह (राज्)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

सह (आ+ज्ञा)—आदेश देना।

साअड्ढ (कृष्)—१ खेती करना (प्रा ४।१८७)। २ खींचना।

साण—शान्त होना।

सामग्ग (श्लिष्)—गले लगाना (प्रा ४।१९०)।

सामच्छ—मन्त्रणा करना ।

सामत्थ—पर्यालोचन करना ।

सामय (प्रति+ईक्ष्)—प्रतीक्षा करना (प्रा ४।१६३) ।

सार (प्र+हृ)—प्रहार करना (प्रा ४।८४) ।

सारव (समा+रच)—ठीक करना; दुरुस्त करना (प्रा ४।९५) ।

सारव—गोपन करना, संरक्षण करना–'तेण तं पत्तए लिहियं सो सारवेइ' (उशाटी प १४६) ।

सारव (समा+रभ्)—प्रारम्भ करना ।

सास (कथय्)—कथन करना ।

साह (कथय्)—कथन करना–'साहइ त्ति देशीवचनत कथयति' (आवहाटी १ पृ १६०) ।

साहट्ट (सं+वृ)—सवरण करना (प्रा ४।८२) ।

साहर (सं+वृ)—संवरण करना (प्रा ४।८२) ।

साहस—अविचारित कार्य करना–'मा साहस' (कु पृ १३७) ।

सिंच (सिच्)—सीचना (प्रा ४।९६) ।

सिंप (सिच्)—सीचना (प्रा ४।९६) ।

सिज्ज—प्राप्त होना ।

सिप्प (सिच्)—सीचना (प्रा ४।२५५) ।

सिप्प (स्निहय्)—प्रीति कराना (प्रा ४।२५५) ।

सिमसिम—उबलने के समय होने वाला शब्द–'क्वथनशब्दानुकरणे देशी ।'

सिरिहाय—सराहना करना ।

सिह (स्पृहय्)—इच्छा कराना (प्रा ४।३४) ।

सिह (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२) ।

सिहरवय—इच्छा करना, आकांक्षा करना (आचू पृ ३३६) ।

सीतिज्ज—निमज्जन करना (बृभा ६१८८) ।

सोमंत—बेचना ।

सीय—फलित होना (पिनि ८२) ।

सीस (कथय्)—कहना (निभा १२५४) ।

सुंघ—सूघना ।

सुग्गाह (प्र+सृ)—फैलना ।

सुज्झ—सूझना, दीखना ।

सुढ (स्मृ)—याद करना ।

सुणसुणाय—सुन्-सुन् आवाज करना ।

सुप (मृज्)—मार्जन करना ।

सुमर (स्मृ)—स्मरण करना (प्रा ४।७४) ।

सुम्म—सुनना–'सुम्मइ वहुसो घुणाहुणी' (उसुटी प १९२) ।

सुरसुर—सुर-सुर की आवाज करना ।

सूअर—यन्त्र-पीडन करना ।

सूख—सूखना, शुष्क होना–'फूमंतस्स मुहं सूखति' (निचू १ पृ ८६) ।

सूड (भञ्ज्)—भांगना (प्रा ४।१०६) ।

सूर (भञ्ज्)—भांजना (प्रा ४।१०६) ।

सूसुव—सू-सू करना ।

सेह (नश्)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८) ।

सो—१ दारु वनाना । २ पीडा करना । ३ मन्थन करना । ४ स्नान करना ।

सोग्गह (प्र+सृ) फैलना ।

सोच—सोचना ।

सोल्ल (पच्)—पकाना (विपा १।३।२१) ।

सोल्ल (क्षिप्)—फेंकना (प्रा ४।१४३) ।

सोल्ल (ईर्, सम्+ईर्)—प्रेरणा करना ।

सोह—पीसना, चूर्ण करना ।

ह

हंग—मलोत्सर्ग करना (वृचू प १४२) ।

हंद (ग्रह्)—ग्रहण करना (आचूला १।१३८) ।

हंदोल—झूलना, घूमना (अंवि पृ ८०) ।

हंफ—गलहत्था देना–'किं म हंफेह' (वृभा ६०८३) ।

हक्क—१ खदेडना (उसुटी प ५८) । २ प्रेरणा करना । ३ पुकारना । ४ ऊंचा करना ।

हक्क (नि+षिध्)—निवारण करना (प्रा ४।१३४) ।

ह[illegible]कार (आ+कारय्)—वुलाना ।

[illegible]—ऊंचे फैलाना ।

हक्खुव (उत्+क्षिप्)—१ ऊंचा फेंकना। २ ऊंचा उठाना (प्रा ४।१४४)।

हग—शौच करना, विष्ठा करना—'छगलओ हगति' (आवचू १ पृ ४६४)।

हडहड—हडहड ध्वनि करना।

हण (श्रु)—सुनना (प्रा ४।५८)।

हम्म (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

हम्म—पीटना (विपा १।२।१४)।

हर (ग्रह्)—ग्रहण करना (प्रा ४।२०६)।

हर—स्मरण करना।

हरुयाल—क्रोध उपजाना, कुपित करना (ज्ञाटी प १५५)।

हलबोल—कोलाहल करना—'हलबोलिज्जइ जणेण सव्वेण' (कु पृ १८५)।

हलहल—१ हलफल करना (कु पृ ८३)। २ कम्पित होना। ३ कोलाहल करना।

हलहलाय—उत्सुक होना—'हलहलायइ कुमारदंसणूसवपसरमाणुक्कठणिब्भरो णायरलोओत्ति' (कु पृ १६६)।

हल्ल—१ हिलना, चलना। २ नृत्य करना।

हल्लपव—त्वरा करना।

हल्लप्फल—१ त्वरा करना। २ आकुल होना।

हल्लफल—१ शीघ्रता करना। २ व्याकुल होना।

हल्लाव—हिलाना।

हल्लुत्ताल—उतावल करना।

हव (भू)—होना (प्रा ४।६०)।

हव—१ चुपडना। २ प्राप्त करना।

हसहस—दीप्त होना (बृभा २०६६)।

हाक—बुलाना।

हाव—द्रुतगामी होना।

हिंच—एक पैर से चलना।

हिंड—घूमना।

हिंद (ग्रह्)—ग्रहण करना।

हिण्ण (ग्रह्)—स्वीकार करना।

हिलिहिल—अश्व का हिनहिनाना।

हुण्णिप्प—सुनना—'हुण्णिप्पउ पुव्वपक्खो' (कु पृ १७२)।
हुप्प (**प्र+भ**)—समर्थ होना।
हुल (**मृज्**)—मार्जन करना (प्रा ४।१०५)।
हुल (**क्षिप्**)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।
हुल—शीघ्रता करना।
हुल्ल (**लक्ष्यात् स्खल्**)—लक्ष्य से च्युत होना।
हुव (**भू**)—होना (प्रा ४।६०)।
हेर—१ देखना, निरीक्षण करना। २ अन्वेषण करना।
हेरुयाल—क्रोध उपजाना, कुपित करना (ज्ञा १।८।१४६)।
हेस—चीत्कार करना।
हो (**भू**)—होना (प्रा ४।६०)।
होक्ख—होना (अंवि पृ ८४)।
होप्पे—गला पकड़कर निकालना (वृभा ६०७९)।
होल—डोलना, संदेह करना (ज्ञाटी प १४५)।
होस (**भू**)—होना।